नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो

२

आगम-सागर-कोषः

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

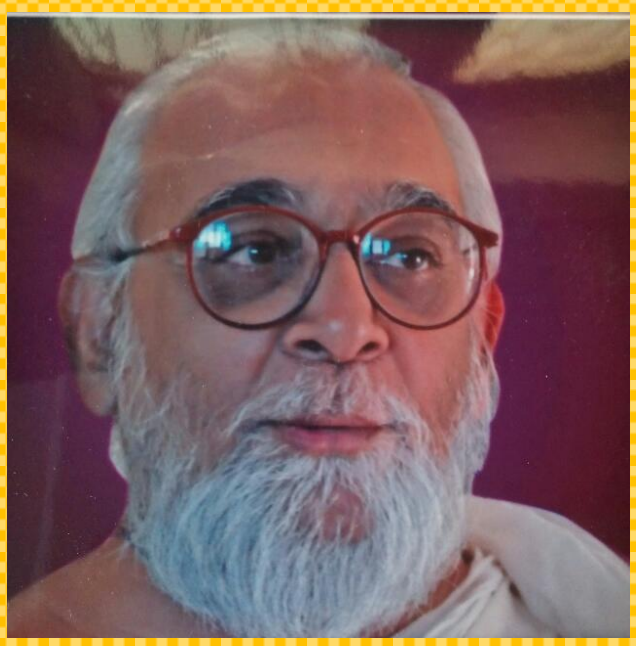

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष–रचयिता

मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोषः-२

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी

..पूज्यपाद् आचार्य श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज..

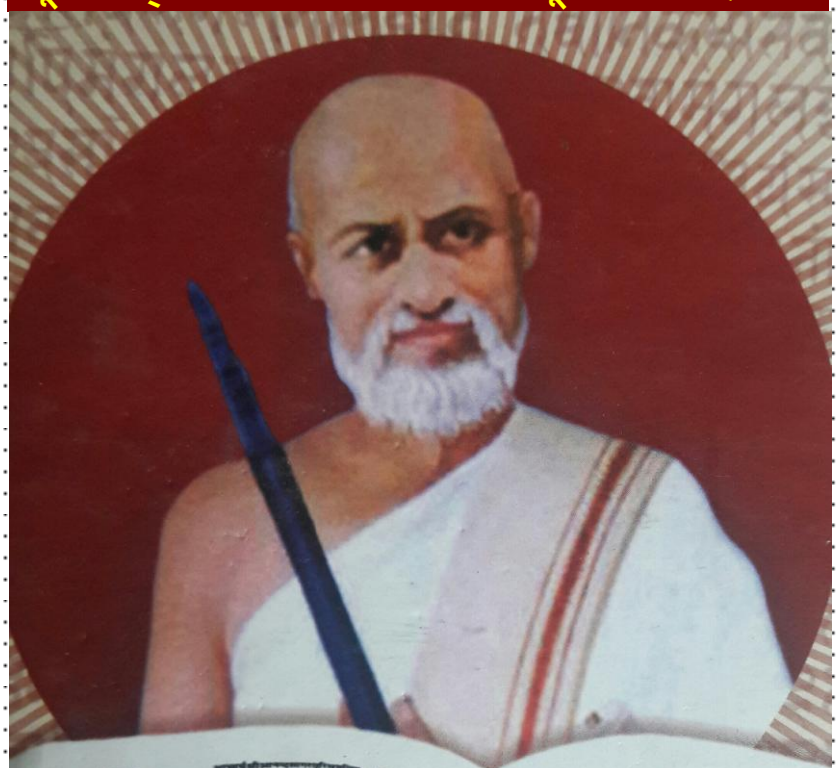

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

मुनिश्री दीपरत्नसागरजी महाराज

[M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि]

12/11/2018 सोमवार, २०७५ कारतक सुद ५

Type Setting: - आशुतोष प्रिन्टर्स, जेतपुर Mobile: 9925146223

It's a Net publication of 'jainelibrary.org' [North America]

"आगम-सागर-कोष:" विषयक किञ्चित् स्पष्टीकरण

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने अपने युगमे आगमो के बहोत से शब्दो एवं उन की व्याखाओ का चयन किया था, किन्तु ईसे शब्दकोष के रुपमे संकलन और मुद्रण पूज्य आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजी आदिने करवाया | ईस कोष का नाम 'अल्प-परिचित-सैद्धान्ति-शब्दकोष:' रक्खा. परन्तु इसमे शब्दार्थ भी है, बहोत स्थान पर शब्दो की आगमिक व्याख्याए भी है और शब्दो के बीच अनेक स्थान पर खास नाम भी है |

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य सूर्योदयसागरसूरिजी कि सूचना एवं उनसे हुए विचार-विमर्श अनुसार हमने ईस 'कोष' के अध्ययनमे देखा की –कई जगह पर सिर्फ़ शब्द है, कई जगह शब्द और संदर्भ है मगर अर्थ नहि है, कई जगह पर संदर्भ के नाम है मगर पृष्ठांक नहि है तो कहीं कहीं शब्दो के अ-कारादि क्रममे गलति दिखी है | ऐसी अनेक मर्यादाओ का उल्लेख स्वयम् आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजीने 'अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' भाग -१ मे किया है |

हमने ईस कोष की रचना करते वक्त सिर्फ़ पूज्यपाद आनन्दसागर सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संचित शब्दो एवं व्याख्याओ को ध्यानमे ले कर ईस 'कोष' की रचना की है | रचना करते वक्त विशेषावश्यकभाष्य, उपदेशमाला, तत्त्वार्थसूत्र और पउमचरियं के शब्द निकाल कर सिर्फ़ आगमो के शब्दो को हि स्थान दिया है | अनेक स्थानो पर प्रत्यय या विभक्ति को हटा कर 'शब्दकोष' के नियमानुसार मूल शब्द रख दिये है, परिणाम स्वरुप जहा जहा समान शब्द प्राप्त हुए, उन शब्दो को एकसाथ रख कर उन के संदर्भ वहि नीचे जोड दिये है, कहीं कहीं एक हि शब्द की व्याख्या से पता चलता है की ये शब्द भले एक है मगर 'अर्थ' कि द्रष्टि से वे शब्द भिन्न भिन्न है, तो उन शब्दो को अलग अलग भी कर दिया है | जहा प्राकृत और संस्कृत दोनो शब्द है, वहा प्राकृत शब्द को पीछे से आगे ले कर बोल्ड टाईपमे रक्खे है | ऐसे अनेक परिवर्तन कर के कोष का उपोगिता मूल्य बढाकर हमने ईस कोष की रचना की है |

हमने ईस 'कोष' का नाम **"आगम-सागर-कोष:"** पसंद किया है | यहा सिर्फ़ आगमिक शब्दो को हि स्थान दिया है इसिलिए 'आगम' शब्द पसंद किया, सागरजी महाराज द्वारा शब्द संचित हुए इसिलिए 'सागर' शब्द लिया, ईस कोषमे शब्द, खासनाम और व्याखयाए तिनो का समावेश हुआ है इसिलिए शब्दकोष नाम कि जगह सिर्फ़ कोष [Dictionary] शब्द रक्खा है |

ईस 'कोष' को हमने पांच भागोमे प्रगट किया है, करीब 1200 पृष्ठोमें रहे हुए ईस ग्रन्थमे 41,000से ज्यादा शब्दो [+नामो+धातु]का समावेश हुआ है | अनेक शब्दो की व्याख्याए भी है और इन शब्दो या व्याख्याओ के आगमसंदर्भ भी दिये है | इस के साथ हम एक मर्यादा का भी स्वीकार कर लेते है- इस कोष के मूल संपादनमे बहोत से शब्द और अनेक व्याख्याए समाविष्ट नहीं हुइ है, इसिलिए यहा पर भी अनेक शब्द और व्याख्याए छूट गए है | शब्दो और खास-नामो के लिए आप हमारा [१] आगम सद्दकोसो भाग १ से ४ और [२] आगम नाम एवं कहाकोसो देख शकते है, और व्याख्याओ के लिए हम भविष्यमें **'जैन आगम कोष:'** बनाने का आयोजन कर रहे है | परमात्मा की कृपा हुइ तो मेरे पांच-सो नब्बे [590] प्रकाशनो की तरह 'जैन-आगम-कोष:' भी अवश्य आप के कर-कमलोमें समर्पित हो जायेगा |

...**मुनि दीपरत्नसागर.....**

← संक्षेप-सूचि →

क्रम	आगम का नाम	संक्षेप	क्रम	आगम का नाम	संक्षेप
०१	आचाराङ्ग	*आचा॰*	२४	चतु:शरणप्रकीर्णक	*चतु॰*
०२	सूत्रकृताङ्ग	*सूत्र॰*	२५	आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*आतु॰*
०३	स्थानाङ्ग	*स्था॰*	२६	महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*महाप॰*
०४	समवायाङ्ग	*सम॰*	२७	भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक	*भक्त॰*
०५	भगवती(अङ्ग)	*भग॰*	२८	तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णक	*तन्दु॰*
०६	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग	*ज्ञाता॰*	२९	संस्तारकप्रकीर्णक	*संस्ता॰*
०७	उपासकदशाङ्ग	*उपा॰*	३०	गच्छाचारप्रकीर्णक	*गच्छा॰*
०८	अन्तकृद्दशाङ्ग	*अन्त॰*	३१	गणिविद्याप्रकीर्णक	*गणि॰*
०९	अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग	*अनुत्त॰*	३२	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	*देवे॰*
१०	प्रश्नव्याकरणाङ्ग	*प्रश्न॰*	३३	मरणसमाधिप्रकीर्णक	*मरण॰*
११	विपाकश्रुताङ्ग	*विपा॰*	३४	निशीथछेदसूत्र	*निशी॰*
१२	औपपातिकोपाङ्ग	*औप॰*	३५	बृहत्कल्पछेदसूत्र	*बृह॰*
१३	राजप्रश्नीयोपाङ्ग	*राज॰*	३६	व्यवहारछेदसूत्र	*व्यव॰*
१४	जीवाजीवाभिगमोपाङ्ग	*जीवा॰*	३७	दशाश्रुतस्कन्धछेदसूत्र	*दशाश्रु॰*
१५	प्रज्ञापनोपाङ्ग	*प्रज्ञा॰*	३८	जीतकल्पछेदसूत्र	*जीत॰*
१६	सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*सूर्य॰*	३९	महानिशीथछेदसूत्र	*महानि॰*
१७	चन्द्रप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*चन्द्र॰*	४०	आवश्यकमूलसूत्र	*आव॰*
१८	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*जम्बू॰*	४१	ओघनिर्युक्तिमूलसूत्र	*ओघ॰*
१९	निरयावलियकोपाङ्ग	*निर॰*	४१	पिण्डनिर्युक्तिमूलसूत्र	*पिण्ड॰*
२०	कल्पवतन्सिकोपाङ्ग	*कल्प॰*	४२	दशवैकालिकमूलसूत्र	*दशवै॰*
२१	पुष्पिकोपाङ्ग	*पुष्पि॰*	४३	उत्तराध्ययनमूलसूत्र	*उत्त॰*
२२	पुष्पचूलिकोपाङ्ग	*पुष्प॰*	४४	नन्दीचूलिकासूत्र	*नन्दी॰*
२३	वृष्णिदशोपाङ्ग	*वृष्णि॰*	४५	अनुयोगद्वारचूलिकासूत्र	*अनुओ॰*
---	देशीय शब्द	*दे॰*	---	चूर्णि	*चू॰*

सूचना- [१] उपरोक्त ४५ आगमो के जो शब्द या व्याख्या संदर्भ ईस कोषमे शामिल किये है, उसमें ६ छेदसूत्रो और चन्द्रप्रज्ञप्ति के अलावा बाकी सभी आगमो श्री सागरानन्दसुरिजी महाराज संपादित प्रतो से है, चन्द्रप्रज्ञप्ति के संदर्भ सूर्यप्रज्ञप्ति अनुसार है, सिर्फ़ ६ सूत्र के संदर्भ हस्तपोथी से लिए है

[२] यहां आगमो के जो संदर्भ दिये है, वे उन आगमो की प्रत या पोथी के पृष्ठ-अंक है |

[३] हमारा प्रकाशन "सवृत्तिक आगम सुत्ताणि" भाग १ से ४० मे ये सभी आगम मुद्रित है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारीश्री नेमिनाथाय नमः

पूज्य–आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

ककारः

कंकटुकदेश्य– काङ्कटुकतुल्यः। *आचा॰ २२२।*

कंकडइयो– कण्टकितः। कृतकवचः। *प्रश्न॰ ४७।*

कंकडेओ– यस्य व्यवहारः काङ्कटुकमाष इव न सिद्धिमुपयाति स काङ्कटुकव्यवहारयोगात् काङ्कटुकः। *व्यव॰ २५५* आ।

कंकडुगो– काङ्कटुकः। *आव॰ ८५५।*

कंकडो– कङ्कटः। कवचः। *भग॰ ३२२, ४८१। जीवा॰ १९३। जम्बू॰ ३७।* आज॰ ७७।

कंकणो– संज्ञाविशेषः। नि॰चू॰ ५५ आ।

कंकतकी– फणिहः। 'कांसती'ति लोके। *अनुयो॰ २४।* फणिहम्। *सूत्र॰ ११७।*

कंकतिका– 'कांसकी'इति लोके। *नन्दी॰ १५२।*

कंकदीवियो– वनजीवः। *मरण॰।*

कंकलोहकत्तिया– कङ्कलोहकर्तरिका। शस्त्रविशेषः। *आव॰ ६९०।*

कंका– लोमक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।* कङ्काः–दीर्घपादाः। *जम्बू॰ १७२।*

कंकायः– शस्त्रविशेषः। *स्था॰ ४५६।*

कंकावंसे– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कंको– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।* कङ्कः–पक्षिविशेषः। *जीवा॰ २७७। प्रश्न॰ २१।* एतदभिधानाऽसिः। *आव॰ ३७४।* पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८२। स्था॰ २६४। जम्बू॰११७।* प्रश्न॰ ८२।

कंखंति– काङ्क्षन्ते प्राप्तं सद् विमोक्तुं नेच्छन्ति। *औप॰ २२।*

कंखणं– काङ्क्षणं–अपेक्षा। *भग॰ ९३।*

कंखपओसे– काङ्क्षाप्रदोषः। भगवत्याः प्रथमशतके तृतीयोद्दे–शकः। काङ्क्षा–मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थोऽन्यान्यदर्शन-ग्रहरूपो जीवपरिणामः। स एव प्रकृष्टो दोषो–जीवदूषणं काङ्क्षाप्रदोषः। *भग॰ ६।* इदमित्थं इत्थं च ममाध्येतुमुचितमि-त्यादिका वाञ्छा। *उत्त॰ ५८४।*

कंखा– काङ्क्षणं–अपेक्षा। *भग॰ ९४।* कंखणं कंखा अभिलासो अन्नोन्नदंसणगहो। चि॰ ११ आ॰। काङ्क्षा–परद्रव्येच्छा, तृतीयाऽधर्मद्वारस्य चतुर्विंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ४३।* अन्यान्यादर्शनग्रहः। *भग॰ ५२।* गृद्धिः-आसक्तिः। *भग॰ ८९।* दर्शनान्तरग्रहो गृद्धिर्वा। *भग॰ ९७।* अप्राप्ता-र्थाशंसा। *भग॰ ५७३।* सुगतादिप्रणीतदर्शनेष्वभिलाषः। *आव॰ ८११।*

कंखापदोस– दर्शनान्तरग्रहरूपो गृद्धिरूपो वा प्रकृष्टो दोषः काङ्क्षाप्रदोषः, काङ्क्षाप्रद्वेषं वा रागद्वेषौ। *भग॰ ९७।*

कंखामोहणिज्ज– काङ्क्षामोहनीयम्। काङ्क्षाया मोहनीयं मिथ्या-त्वमोहनीयमित्यर्थः। *भग॰ ५२।* काङ्क्षा–इदमित्थमित्थं च ममाध्येतुमुचितमित्यादिका वाञ्छा, सैव मोहयतीति काङ्क्षा-मोहनीयं कर्म अनभिग्रहिकमिथ्यात्वरूपम्। *उत्त॰ ५८४।*

कंखिए– काङ्क्षितः, उत्तरलाभाकाङ्क्षावान्। *भग॰ ११२।*

कंखिते– काङ्क्षितः। मतान्तरमपि साध्वितिबुद्धिः। *स्था॰ २४७।* तत्फलाकाङ्क्षावान्। *ज्ञाता॰ ९५।* मतान्तरस्यापि साधुत्वेन मन्ता। *स्था॰ १७६।*

कंगु– धान्यविशेषः। *भग॰ ८०२।* कङ्गवाः–पीततण्डुलाः। *जम्बू॰ १२४।*

कंगुपलालं– रालओ। *निशी॰ ६१* अ।

कंगू– औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* धान्यविशेषः। *सूत्र॰ ३०९।* कङ्गुः–उदकङ्गुः। *दशवै॰ १९३।* कङ्गुः–कोद्रवौदनः। *पिण्ड॰ १६८।* बृहच्छिरा कंगू। *निशी॰ १४४* आ।

कंगूया– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कंचणं– काञ्चनकूटं–सौमनसवक्षस्कारकूटनाम। *जम्बू॰ ३४३।*

कंचणकोसी– काञ्चनकोशी–सुवर्णखोला। *जम्बू॰ २६५।*

कंचणपव्वए– उत्तरकुरुषु शीतानदी सम्बन्धिनां पञ्चानां नील-वदादिह्रदानां क्रमव्यवस्थितानां प्रत्येकं पूर्वापरतटयोर्दश दश काञ्चनाभिधाना गिरयः। *भग॰ ६५५।*

कंचणपुर– काञ्चनपुरं कलिङ्गदेशे नगरम्। *व्यव॰ ४१३।* आ। काञ्चनपुरं कलिङ्गजनपदे नगरम्। *ओघ॰ २१।* कलिङ्गेषु आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५।* द्रव्योत्सर्गे नगरम्। *आव॰ ७१८।* करकण्डुराजधानीः। *उत्त॰ ३०२।*

कंचणपुरी– नगरविशेषः। *निशी॰ ५५* अ।

कंचणमाला– कञ्चनमाला शिक्षायोग्यदृष्टान्ते प्रद्योतराजपुत्र्या वासवदत्ताया दासी अम्बधात्री च। *आव॰ ६७४*।

कंचणा– काञ्चनाः काञ्चनमयपर्वताः। *प्रश्न॰ ९६*।

कंचणियं– रुद्राक्षकृता काञ्चनिका। *भग॰ ११३*।

कंचणिया– काञ्चनिकां रुद्राक्षमय मालिकाः। *औप॰ ९५*।

कंचिक्को- कञ्चित्कः, नपुसंकम्। *बृह॰ १०२* आ।

कंचिपुरी– नगरविशेषः। *निशी॰ १३९* आ।

कंची– काञ्ची कट्याभरणविशेषः। *प्रश्न॰ १५९*। भूषणविधि–विशेषः। *जीवा॰ २३९*।

कंचुइओ– कञ्चुकिनामान्तः पुरप्रयोजननिवेदकः प्रतिहारो वा। *ज्ञाता॰ ४१*।

कंचुइज्जो– कञ्चुकी। *आव॰ २२५*।

कञ्चुकः– संघात्यम्। *दशवै॰ ८७*। कञ्चुकः– छिन्नसन्धानो वस्त्रविशेषः। *आचा॰ ८९*।

कंचुग– कञ्चुकं–अधःपरिधानं, पुरुषस्याधस्तनं स्यूतं वस्त्रम्। *आव॰ ४३४*। *ओघ॰ २०९*।

कंचुय– कञ्चुकी–वारबाणः। *अन्त॰ ७*। कञ्चुको वारबाणः। *भग॰ ४६०*।

कंजिक– काञ्जिकं–सौवीरम्। *पिण्ड॰ १६८*।

कंजिगं– अवश्रावणम्। *निशी॰ २०३* आ।

कंजिया– अवश्रावणम्। *बृह॰ १२९* आ। *निशी॰ ३२९* अ। (देशी०) आरनालं। *निशी॰ ४७*। अ *बृह॰ २५३* अ।

कंट– कण्टकः। *निशी॰ ३२* अ।

कंटइल्ल– कण्टकितो बदरीबब्बूलप्रभृतयः। *व्यव॰ ६१* आ। कण्टकवान्। *प्रश्न॰ २०*।

कंटए– कण्टकः, गोत्रजवैरी। *जम्बू॰ २७७*।

कंटकादिप्रभवः– आगन्तुको व्रणः। *आव॰ ७६५*।

कंटगापह– कण्टकपथः कण्टकाश्च द्रव्यतो बब्बूलकण्टकादयः, भावतस्तु चरकादिकुश्रुतयः तैराकुलः पन्थाः। *उत्त॰ ३४०*।

कंटय– कण्टकः–बाधकः–शत्रुः। *भग॰ १०१*। कण्टकाः दायादाः। *स्था॰ ४६३*। देशोपद्रवकारिणश्चरटाः कण्टकाः। *राज॰ ११*। कण्टकः–प्रतिस्पर्द्धिगोत्रजः। *औप॰ १२*। कण्टकः। *जीवा॰ २८२*।

कंटिया– कण्टिका–कण्टकशाखा। *बृह॰ २५* अ। कण्टकः। *आव॰ १९५, ३४२*।

कंठ– कण्ठः–गलः। *उत्त॰ ३४९*।

कंठतो– सूत्रपदैः साक्षात्। *बृह॰ २२६* अ।

कंठमुरविं– कण्ठमुरवी, कण्ठासन्नं मृदङ्गाकारमाभरणम्। *जम्बू॰ २७५*।

कंठलं– ग्रैवेयकम्। *औप॰ ५५*।

कंठविशुद्धं– कण्ठे यदि स्वरो वर्तितोऽस्फुटितश्च, ततः कण्ठ-विशुद्धम्। *स्था॰ ३९६*। *जम्बू॰ ४०*। *अनुयो॰ १३२*।

कंठसद्द– कण्ठैकपार्श्वः कण्ठशब्द इति, कण्ठे परिवृत्त्येति। *उत्त॰ ३५९*।

कंठसमुद्दिठा– कण्ठसिद्धाः निगदसिद्धाः। *आव॰ ७२७*।

कंठसुत्तं– कण्ठसूत्रं–गलावलम्बि सङ्कलकविशेषः। *औप॰ ५५*। *भग॰ ४५९*।

कंठसुत्तग– कण्ठसूत्रम्। *जम्बू॰ १०५*।

कंठाकंठियं– कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कृतं युद्धं कण्ठाकण्ठि। *ज्ञाता॰ ८९*।

कंठाणुवादिणीछाया– छायाविशेषः। *सूर्य॰ ९५*।

कंठिया– कण्ठिका, कण्ठः। *गच्छा॰*।

कंठुग्गए– कण्ठश्चासावुग्रकश्च–उत्कटः कण्ठोग्रकः, कण्ठस्य वोग्रत्वं कण्ठोग्रत्वम्, कण्ठाद्वा यद् उद्गतम्– उद्गतिः स्वरोद्गमलक्षणा क्रिया कण्ठोद्गतः। *स्था॰ ३९५*।

कंठोट्ठविप्पमुक्कं– बालमूकभाषितवद् यद् अव्यक्तं भवती-त्यर्थः। *अनुयो॰ १६*।

कंड– काण्डम्–धनुष्काण्डम्। *आव॰ ६१३*। मण्डलाद् बृहत्तरं देशखण्डम्। *आव॰ ६३६*। काण्डम्–शरम्। *आव॰ ९३*। रत्नकाण्डादि। *अनुयो॰ १७१*। मण्डलाद् बृहत्तरं देशखण्डम्। *बृह॰ १४९* आ। काण्डः–बाणः शरः। *भग॰ १९४*। काण्डं–धनुः। *दशवै॰ १०४*। *भग॰ २९०*। काण्डं-विशिष्टो भूभागः। *जीवा॰ ८९*। काण्डं–विभागः द्वितीयं काण्डं–विभागोऽष्टात्रिंशद् योजनसहस्राण्युच्चत्वेन भवतीति। *सम॰ ६५*।

कंडए– कण्डकं–कालखण्डम्। *भग॰ १७८*। अवयवः। *भग॰ ६१६*। कण्डकः। *आव॰ ४२७*। राक्षसानां चैत्यवृक्षाः। *स्था॰ ४४२*।

कंडक– तन्तुः। *नन्दी॰ १६५*। *आचा॰ १७२*। *प्रज्ञा॰ ५६१*। *ओघ॰ १३१*।

कंडग– क्षतम्। *निशी॰ ११८* आ। कण्डकं–समयपरि–

भाषयाऽङ्गुलमात्रक्षेत्राऽसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा सङ्ख्या। *पिण्ड॰ ३९*।
सङ्ख्यातीतसंयमस्थानसमुदाय-रूपः। *पिण्ड॰ ३८*।

कंडच्छारिउ– ग्रामो, ग्रामाधिपतिर्देशो देशाधिपतिर्वा लूम्पका वा। *व्यव॰ २२३* आ।

कंडपुंख– बाणपृष्ठः। *आव॰ ६९७*।

कंडपोंखो– शरपुङ्खः। *आव॰ ४२५*।

कंडफल– शस्त्रविशेषः। *व्यव॰ १७* आ।

कंडयं– अङ्गुलाऽसंख्येयभागप्रदेशमानानि स्थानानि। *बृह॰ १५* आ।

कंडरिए– कण्डरीकः–अलोभोदाहरणे साकेतनगरे युवराजः। *आव॰ ७०१*।

कंडरिओ– कण्डरीकः–औत्पात्तिकीबुद्ध्या दृष्टान्तः। *आव॰ ४२०*। अहोरात्रेणाऽधोगामी। *मरण०*।

कंडरिय– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४*।

कंडरीए– कण्करीकः–महापद्मराजस्य लघुसुतः। *ज्ञाता॰ २४३*। *उत्त॰ ३२६*। पुण्डरिकिण्यां युवराजः। *आव॰ २८८*।

कंडरीक– असदनुष्ठानपरायणतयाऽशोभनत्वे उपमा। सदसद-नुष्ठानपरायणतया शोभनाऽशोभनत्वमवगम्य तदुपमयाऽन्य-दपि यच्छोभनं तत्। महाराजपुत्रः। *सूत्र॰ २६८*। नाम विशेषः। *आचा॰ २४१*। *सूत्र॰ १९४*। देशीयः। *आचा॰ ११२*।

कंडा– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। काण्डं नाम विशिष्टपरिणा–मानुगतो विच्छेदः पर्वतक्षेत्रविभागः। *जम्बू॰ ३७४*।

कंडिंतिया– अनुकम्पिता कण्डयन्तीति–तन्दुलादीन् उद्ख-लादौ क्षोदयन्तीति कण्डयन्तिका। *ज्ञाता॰ ११७*।

कंडिया– इह ये तण्डुलाः प्रथमतः साध्वर्थमुप्ताः, ततः क्रमेण करटयो जाताः, ततः कण्डिताः। *पिण्ड॰ ६५*।

कंडिल्ला– गोत्रविशेषः। *स्था॰ ३९०*।

कंडुइया– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

कंडुइस्सामि– कण्डूयिष्ये। *ज्ञाता॰ ६५*।

कंडुयं– कन्दुकं–नारकपचनार्थं भाजनविशेषः। *सूत्र॰१२५*। कण्डूः–कण्डूति। *ज्ञाता॰ ११३*। कन्दुः–मण्डकादिपचन–भाजनम्। *विपा॰ ४९*।

कंडुलोहकुंभी– कन्दूलोहकुम्भी–नारकाणां हननस्थानम्। *आव॰ ६५१*।

कंडुसोल्लियं– कन्दूपक्वम्। *औप॰ ९१*।

कंडू– कण्डूः–कण्डूतिः। *उत्त॰ ७८*। खर्जुः। *ज्ञाता॰ १८१*। कन्दूः–नारकाणां पचनस्थानम्। *आव॰ ६५१*। कण्डूः–पाकस्थानम्। *जीवा॰ १०५*।

कंडूइअ– कण्डूयितं–खर्जुकरणम्। *जम्बू॰ १७०*।

कंडूसंठिओ– कण्डूसंस्थितः–पाकस्थानसंस्थितः। आवलिकाबाह्यस्य तृतीयं संस्थानम्। *जीवा॰ १०४*।

कंडूसगपट्टओ– कंडूसगबंधो णाम जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएणा वा चीरेणं वेढियं भवति ताहे उण्णिदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कंडूसगपट्टओ भण्णति। *निशी॰ २४६* अ।

कंडूसगबंधो– खोहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवतिण ताहे उण्णिदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कंडूसगबंधो। *निशी॰ २४६* अ।

कंडे– कण्डयन्ती। *ओघ॰ १६५*।

कंत– कान्तं कमनीयम्। *ज्ञाता॰ १६७*।

कंता– कान्ताः कमनीयशब्दाः। *जम्बू॰ १४३*।

कंतारं– अध्वानं जत्थ भत्त–पाणं ण लब्भति। *निशी॰ १०२* अ।

कंतारभत्त– कान्तारभक्तं कान्तारं–अरण्यं तत्र भिक्षुकाणां निर्वाहणार्थं यत् संस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम्। *औप॰ १०१*। कान्तारं–अरण्यं, तत्र भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं यद् विहितं भक्तं तत् कान्तारभक्तम्। *भग॰ २३१*। कान्तारं अरण्यं, तत्र यद् भिक्षुकार्थं संस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम्। *भग॰ ४६७*। कान्तारं–अटवी, तत्र भक्तं–भोजनं यत् साध्वाद्यर्थम्। *स्था॰ ४६०*।

कंतारवित्ति– कान्तारवृत्तिः शणपल्ल्यादिवृत्तिः। *आव॰ ८४४*।

कंतारो– निर्जलः सभयस्त्राणरहितोऽरण्यप्रदेशः कान्तारः। *सूत्र॰ ३४१*।

कंति– कान्तिः। *ज्ञाता॰ २२०*।

कंतिमइ– कान्तिमतिः, मायोदाहरणे कोशलपुरे नन्दनेभ्यस्य द्वितीया पुत्री। *आव॰ ३९४*।

कंते– कान्तियोगात् कान्तः। *स्था॰ ४२०*। कान्तिमान्। *सूर्य॰ २९२*। घृतोदसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३५५*। कमनीयः–सामान्यतोऽभिलषणीयः। *प्रज्ञा॰ ४६३*।

कंथए– कन्थकः प्रधानोऽश्व। *उत्त॰ ३४८।*

कंथका– कन्थकाः अश्वविशेषाः। *स्था॰ २४८।*

कंथग– कन्थकः। जात्याश्वः। *उत्त॰ ५०७।*

कंथरं– सकण्टकम्। *आव॰ ६७०।*

कंद– कन्दं–मूलस्कन्धान्तरालवर्ति स्वावयवम्। *उत्त॰ २४।* कन्दः–मूलनालमद्यवर्ती ग्रन्थिः। *जम्बू॰ २८४।* साधारण–बादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।* कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।* वज्रकन्दादिः। *दशवै॰ १९८।* मूलानामुपरि वृक्षावयव–विशेषः। *औप॰ ७।* मूलोपरिवर्ती। *जीवा॰ १८७।* स्कन्धा-धोभागरूपः। *प्रश्न॰ १५२।* गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* कन्दः–सूरणादिलक्षणः। *दशवै॰ २७६।* मूलानामुपरिवर्तनः कन्दः। *जम्बू॰ २९।* सूरणकन्दादिः। *आचा॰ ३०।*

कंदणता– क्रन्दनता–महता शब्देन विरवणम्। *स्था॰ १८९।*

कंदणया– महता शब्देन विरवणम्। *भग॰ ९२६।*

कंदणा– नष्टमृतादिषु कंदणा–मोहनोद्भवकारिका। *निशी॰ ७१* आ।

कंदप्प– कन्दर्पः–परिहासः। *भग॰ ५०।* अतिकेलिः। *भग॰ १९८।* ये कन्दर्पभावनाभावितत्वेन कान्दर्पिकदेवेषूत्पन्नाः कन्दर्पशीला देवाः। *भग॰ १९८।* कन्दर्पः–परिहासः। *बृह॰ २१३।* कन्दर्पः–कामः, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगश्चः, रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपको नर्मेत्यर्थः। *आव॰ ८३०।* कामोद्दीपनं वचनं चेष्टा च। *प्रज्ञा॰ ९६।* *जीवा॰ १७३।* कान्दर्पिका देवविशेषः, हास्यकारिणो भाण्डप्रायाः। *प्रश्न॰ १२१।* कन्दर्पकथावान्। *स्था॰ २७५।* अट्टट्टहासहसनम् अनिभृतालापाश्च, गुर्वादिनाऽपि सह निष्ठुरवक्रोक्त्यादिरूपाः कामकथोपदेशप्रशंसाश्च। *उत्त॰ ७०।* कामः, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्पः। *उपा॰ १०।* कन्दर्प्प कामः तत्प्र-धानाः षिङ्गप्राया देवविशेषः कन्दर्पा उच्यन्ते, तेषामियं कान्दर्प्पी। *बृह॰ २१२* आ।

कंदप्पभावणा– कन्दर्पभावना। *उत्त॰ ७०७।*

कंदप्परई– कन्दर्परतिः–केलिप्रियः। *ज्ञाता॰ ६७।*

कंदप्पा– अनेकक्रीडासु अंदोलकादिप्पललिया घइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेंता कंदप्पा। *निशी॰ ९* अ।

कंदप्पिआ– कान्दर्प्पिकाः।–कामप्रधानकेलिकारिणः। *जम्बू॰ २६४।* कान्दर्पिकः। *आव॰ २०५।*

कंदप्पिया– कन्दर्पः परिहासः, स येषामस्ति तेन वा ये चरन्ति ते कन्दर्पिकाः। कान्दर्पिका वाः। व्यवहारतश्चरणवन्त एव कन्दर्प्प–कौकुच्यादिकारकाः। *भग॰ ५०।*

कंदभोयणं– कन्दः सूरणादिः, तस्य भोजनं कन्दभोजनम्। *स्था॰ ४६०।* *भग॰ ४६७।*

कंदमाण– शोकाद् महाध्वनिं मुञ्चन्। *ज्ञाता॰ १५९।*

कंदमूले– कन्दमूलम्। *प्रज्ञा॰ ३४।*

कंदरं– गिरिगुहा। *आचा॰ ३६६।* गिरिगुहा। *निशी॰ ७०* अ। कुहरम्। *विपा॰ ५५।*

कंदरगिह– कन्दरगृहम्। गुहा। *भग॰ २००।* गिरिगुहा गिरिक-न्दरं वा। *स्था॰ २९४।*

कंदरा– कन्दरा। दरी। *प्रश्न॰ १२७।* गुहा। *ज्ञाता॰ ३३।*

कंदराणि– भूमिविवराणि। *भग॰ ४८३।*

कंदर्प– रागसंयुक्तोऽसभ्यो वाक्प्रयोगो हास्यं च। *तन्दु॰ ७।*

कंदल– कन्दलानि–प्ररोहाः। *ज्ञाता॰ २६।* प्रत्यग्रलताः। *ज्ञाता॰ १६१।*

कंदलगा– एकखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।* कन्दलकः–एक–खुरश्चतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।*

कंदली– कन्दली–कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।* तक्कली। *आचा॰ ३४९।*

कंदलीऊसुयं– कन्दलीमध्यम्। *आचा॰ ३४९।*

कंदलीकंदए– कन्दलीकन्दकः–वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३७।*

कंदलीसीस– कन्दलीशीर्षम्–कन्दलीस्तबकः। *आचा॰ ३४९।*

कंदा– कन्दाः। *प्रज्ञा॰ ३१।*

कंदाहारा– कन्दभोजिनस्तापसाः। *निर॰ २५।*

कंदिय– क्रन्दितम्–आक्रन्दः। *प्रश्न॰ १६०।* वाणमन्तर–विशेषः। *प्रज्ञा॰ ९५।*

कंदियसद्दं– क्रन्दितशब्दं प्रोषितभर्तृकादिकृताऽऽक्रन्दरूपम्। *उत्त॰ ४२५।*

कंदिया– क्रन्दिताः–व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो व्यन्तर–जातिविशेषः। *प्रश्न॰ ६९।*

कंदु– कन्दुः–लोही–(लोहमयी) *प्रश्न॰ १४।*

कंदुकुम्भी– पाकभाजनविशेषरूपा लोहादिमयी। *उत्त॰ ४५९।*

कंदुक्क– कन्दुकः–साधारणवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४०।* कन्दुक्कः–वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३७।*

कंदुसोल्लियं– कन्दुपक्वम्। *भग॰ ५१९।*

कंपणवाइओ– कम्पनवातिकः–कम्पनवायुरोगवान्। *अनुत्त॰ ६।*

कंपिलपुरे– अम्बडपरिव्रजकस्थानम्। *भग॰ ६४३।*

कंपिल्ल– काम्पिल्यम्–विमलनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०।* जितशत्रुराज्ञो राजधानी। *ज्ञात॰ १४४।* चित्रसम्भूतिभ्र–मणस्थानम्। *उत्त॰ ३७९।* पाञ्चालेषु आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५।* नगरविशेषः। *उत्त॰ ३२३।* कंपिल्लः–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य सप्तममध्ययनम्। *अन्त॰ १।* काम्पिल्यः–ब्रह्मदत्तराज्ञ्या मलयवत्याः पिता। *उत्त॰३७९।* काम्पिल्यम्–ब्रह्नदत्तराजधानी। *आव॰ १६१।* हरिषेणराजधानी। *आव॰ १६१।* पञ्चालदेशे नगरम्। ब्रह्मराजधानी। *उत्त॰ ३७७।*

कंपिल्लपुरं– काम्पिल्यपुरम्। पञ्चालेषु दुर्मुखराजधानी। *उत्त॰ ३०३।* खण्डरक्षाणां श्रमणोपासकानां स्थानम्। *आव॰ ३१७।* ब्रह्मदत्तराजधानी। *निशी॰ ११३* आ। काम्पि-ल्यपुरं-अम्बडपरिव्राजकस्थानम्। *भग॰ ६५३।* द्रुपदराज्ञो राजधानी। *ज्ञाता॰ २०७।* नगरविशेषः। *ज्ञाता॰ २५३।*

कंबलं– कम्बलः–उपकरणविशेषः। *आव॰ ७९३।* वासो–विशेषः। *प्रश्न॰ १३५।* कम्बलमित्यनेन आविकः पात्रनिर्योगः कल्पश्च गृह्यते। *आचा॰ १३४।* और्णिकं कल्पं पात्रनिर्योगं वा। *आचा॰ २४०।* वर्षाकल्पादि। *दशवै॰ १९९।*

कंबल– कम्बलः–मथुरायां जिनदासस्य वृषभजीवः। *बृह॰ १६०* आ। नौरक्षकः। *आव॰ १९७, १९९।*

कंबलकडे– कम्बलमेव। *स्था॰ २७३।* कम्बलकटः। *आव॰ २८९।*

कंबलकिड्डं– ऊर्णमयं कम्बलं जीनादि। *भग॰ ६२८।*

कंबलगाणि– वस्त्रविशेषः। *आचा॰ ३९३।*

कंबलरयणं– कम्बलरत्नम्। *उत्त॰ १०५।* कम्बलरत्नं वस्त्र–विशेषः। *व्यव॰ १९४* अ। पञ्चेन्द्रियनिष्पन्नं चक्रवर्तिरत्नम्। *आचा॰ ३९२।*

कंबलसाडए– कम्बलरूपः शाटकः कम्बलशाटकः। *प्रज्ञा॰ ३०६।*

कंबला– वस्त्रविशेषः। *अनुयो॰ २५३।* सास्ना। *विपा॰ ४९।*

कंबिया– कम्बिका। *आव॰ ४१७।* कंबिका–पुष्टका। *जीवा॰ २३७।*

कंबिसंस्तारक– शय्यासंस्तारके द्वितीयो भेदः। *व्यव॰ २८४* अ।

कंबुं– विमानविशेषः। *सम॰ २२।*

कंबुग्गीयं– विमानविशेषः। *सम॰ २२।*

कंबुवरसरिसा– कम्बुवरसदृशी–उन्नततया वलियोगेन च प्रधानशङ्खसन्निभा। *जीवा॰ २७२।*

कंबुयं– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।*

कंबोय– काम्बोजः–कम्बोजदेशोद्भवोऽश्वः। *उत्त॰ ३४८।*

कंमं– आहाकम्मं। *निशी॰ ९३* अ।

कंमंतसाला– छुहादिया जत्थ विज्जंति सा कम्मंतसाला गिहं वा। *निशी॰ २६५* अ।

कंमादि– कर्मादिना। *स्था॰ ३३१।*

कंमिया– कर्मणो जाता कर्मजा–बुद्धेः तृतीयभेदः। *आव॰ ४१४।*

कंमोवधी– पहाणा तीव्रकर्मोदये वर्तमाना इत्यर्थः। *निशी॰ २८९* अ।

कंस– कांस्यम्–कांस्यभाजनम्। *उत्त॰ ३१६।* अष्टाशीति–महाग्रहेषु द्वाविंशतितमः। *जम्बू॰ ५३५। स्था॰ ७९।* कंसम्–करोटकादि। *दशवै॰ २०३।* कंसः–कृष्णवैरी। *प्रश्न॰ ७५।* मथुरायां राजा। *दशवै॰ ३६।* कांस्यः–द्रव्यमानविशेषः। *उत्ता॰ ४८।* कांस्यभाजनजातिः। *जीवा॰ २८०। ज्ञाता॰ ४९।* त्रपुकः–ताम्रसंयोगजम्। *प्रश्न॰ १५२।* देवकीसुतघातको मथुराधिपतिः। *सूत्र॰ ३०८।*

कंसकारे– अष्टादशश्रेणिषु चतुर्दशः। *जम्बू॰ १९४।*

कंसणाभे– कंसनाभः। अष्टाशीतौ महाग्रहेषु त्रयोविंशतितमः। *जम्बू॰ ५३५।*

कंसताला– कंस्यतालाः।–कंसालियाः। *जीवा॰ ३६६।*

कंसपाए– कंसपात्रम्–तिलकादि। *दशवै॰ २०३।*

कंसवण्णाभे– कंसवर्णाभः। अष्टाशीतौ महाग्रहेषु चतुर्विंश–तितमः। *जम्बू॰ ४३५।*

कंसवण्णे– अष्टाशीतिमहाग्रहेषु त्रयोविंशतितमः *स्था॰ ७९।*

कंसवन्नाभे– अष्टाशीतिमहाग्रहेषु चतुर्विंशतितमः। *स्था॰ ७९।*

कंसालिया– कांस्यतालाः। *जीवा॰ ३६६।*

कंसिकाः– लत्तिया–वाद्यविशेषः। *स्था॰ ६३।*

क– कः–आत्मा। *भग॰ २६९।*

कइ– कति–कतिविधम्। *भग॰ १४२।* कियन्तः। *अनुयो॰ २५९।* क्वचित्–संयमस्थानावसरे धर्मोपधिप्रत्युपेक्षणादौ। *दशवै॰ २८३।*

कइए– क्रयिकः–ग्राहकः। *भग॰ २२९।*

कइखुत्तो– कतिकृत्वः–कियतो वारान्। *उत्त॰ २३०।*

कइतवियं– कृत्रिमम्। *आचा॰ १७८।*

कइत्थो– कतिथः। *आव॰ ५५९।*

कइभाग– कतिभागः–कतिथो भागः। *प्रज्ञा॰ ५०३।*

कइया– क्रयिकाः। *दशवै॰ ६१।*

कइयवं– कैतवम्। *आव॰ ६३२।*

कइरसारए– करीरसारः। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

कइल्लए– कृते। *बृह॰ ६२अ।*

कइल्लिया– कृता। *उत्त॰ ८६।*

कइवयं– कतिपयम्। *आव॰ २९२।*

कइसिरं– कतिशिरः–कति शिरांसि तत्र भवन्ति। *आव॰ ५११।*

कउ– क्रतुशब्देनेह प्रतिमा–अभिग्रहविशेषः। *उपा॰ २६।*

कउओ– कायाको वेषपरावर्तकारी नटः। *बृह॰ १२७आ।* ककुदम्–स्कन्धदेशविशेषः। *ज्ञाता॰ १६१।*

कउह– ककुदम्–स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणम्। *अनुयो॰ १४३* प्रधानः। *ज्ञाता॰ २३३।*

कउही– ककुदम्–स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणमस्यास्तीति ककुदी–वृषभः। *अनुयो॰ १४३।*

कए– कृतानि–भावितानि। *बृह॰ १३३अ।* कृते–अर्थाय। *दशवै॰ ६५।*

कएण– कृते हेतोः। *प्रश्न॰ १२०।*

कएणुय– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

कएल्लओ– कृतः। *आव॰ ३५९, ६६९।*

कओ– कृतः। विहितः। *ज्ञाता॰ ७०, १९२।*

कओगो– छत्तो। *निशी॰ २८४अ।*

ककाणओ– मर्माणि। *सूत्र॰ १३९।*

ककार–खकार–गकार–घकार–ङकार–प्रविभक्तिनामा– पञ्चदशो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४७।*

ककुयं– ककुदम्–अंसकूटम्। *जम्बू॰ ५२९।*

ककुष्ठा– तृतीयं क्षुद्रकुष्ठम्। *प्रश्न॰ १६१। आचा॰ २३५।*

ककुहं– ककुदम्–स्कन्धशिखरम्। *विपा॰ ४९।*

ककुहा– ककुदानि–निहनानि। *स्था॰ ३०४।*

कक्कं– कल्कम्–पापं माया वा। *प्रश्न॰ २७।* लोध्रादिद्रव्यसमुदायेन शरीरेद्वर्तनकम्। *सूत्र॰ १८१।* उव्वलणयं द्रव्य-संयोगेन वा कक्कं। *निशी॰ ११६आ।* कल्कः–प्रसूत्यादिषु रोगेषु क्षारपातनम्, अथवा आत्मनः शरीरस्य देशतः सर्वतो वा लोध्रादिभिरुद्वर्तनम्। *व्यव॰ १६३अ।* कल्कः–चन्दकल्कादिः। *दशवै॰ २०६।* कल्कम्–मायाकपटम्। *सम॰ ७१।* हिंसादिरूपं पापम्। *भग॰ ५७३।* कर्कः–ब्रह्मदत्तस्य तृतीयः प्रासादः। *उत्त॰ ३८५।*

कक्कगुरुगं– कल्कगुरुकम्–माया। *प्रश्न॰ ३०।*

कक्कणा– कल्कं–पापं माया वा तत्करणं कल्कना। *प्रश्न॰ ३६।*

कक्करणता– कर्करणता–शय्योपध्यादिदोषोद्भवनगर्भं प्रलप-नम्। *स्था॰ १४९।*

कक्करणया– जो घडीजंतगं व वाहिज्जमाणं करगरेइ सा कक्करणया। *दशवै॰ १५।*

कक्कराइयं– कर्करायितम्–'विषमा धर्मवती' इत्यादि–शय्या-दोषोच्चारणम्। *आव॰ ५७४।*

कक्करि– कर्करी–कलशो महाघटः, करकः, प्रतीतः, कर्करी–स एव विशेषः। *जम्बू॰ १०१।*

कक्करी– कर्करी–भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ ३६६।*

कक्करे– कर्करः–कर्करायितकारी। *उत्त॰ ४८६।*

कक्कस– कर्कशाम्–चर्विताक्षराम्। *आचा॰ ३८८।* जो सीउण्हकोसादिफासो सो सरीरं किसं कुव्वई ति कक्कसो। *दशवै॰ १२३।* कर्कशाम्–कर्कशद्रव्योपमाम्–अनिष्टा–मित्यर्थः। *भग॰ २३१।* रौद्रदुःखम्। *भग॰ ३०५।* कर्कश–द्रव्यमिव कर्कशोऽनिष्ठ इत्यर्थः। *भग॰ ४८४।* कर्कशः–अतिदुस्सहः। *जीवा॰ १०३।* कर्कशा-अतिशयोक्त्या मत्सर पूर्वा भाषा। *दशवै॰ २१३।*

कक्कावंस– वंशवृक्षविशेषः। *भग॰ ८०२।*

कक्केय– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।*

कक्को– सो दव्वसंजोगेण वा असंजोगेण वा भवति। *निशी॰ ११८* आ। उव्वलयं अट्टगमादी। *दशवै॰ १०१।*

कक्कोडई– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कक्कोडए– चतुर्थोऽनुवेलन्धरनागराजः तस्यैवाऽऽवासपर्वतः। *स्था॰ २२६।* कर्कोटकः– अनुवेलन्धरनागराजाऽऽवासभूतः। पर्वतः लवणसमुद्रे ऐशान्यां दिश्यस्ति, तन्निवासी नागराजः, वरुणस्य पुत्रस्थानीयदेवः। *भग॰ १९९।* प्रथमोऽनुवेलन्धर– नागराजः, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च। *जीवा॰ ३१३।*

कक्कोलं– औषधिविशेषः। *आव॰ ८११।*

कक्कोलयं– स्वादिमे दृष्टान्तः। *निशी॰ ६०* अ।

कक्ख– कक्षा। *जीवा॰ २७५।* भुजमूलम्। *प्रश्न॰ ८४।*

कक्खड– कर्कशम्–कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टम्। *प्रश्न॰ १५६।* रुक्षादिगुणसमन्वितम्। *ओघ॰ ५०।* कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टे–त्थर्यः। *ज्ञाता॰ ६८।* निष्ठुरो बलवत्वात्। *ज्ञाता॰ १६२।* अवमौदर्यम्। *बृह॰ १२७* आ। पासट्ठितेहिं विओसविज्जं-तिंमाणा वि नोवसमंति। *निशी॰ २१६* आ।

कक्खडिया– करकडिया–करकटिका–निन्द्यचीवरिका। *विपा॰ ४७।*

कक्खडो– तिव्वकम्मोदए वट्टमाणो। *निशी॰ २७६* अ।

कड्कट– कवचः। *भग॰ ३१८।*

कड्कटुकरूपम्– कड्कटुकतुल्यम्। *उत्त॰ ३४७।*

कच्चगे– चडुगे। *व्यव॰ ३०२* आ।

कच्चातणा– कात्यायनः–कौशिकगोत्रविशेषभूते पुरुषे, तदपत्यसंतानेषु च। *स्था॰ ३९०।*

कच्चायण– कात्यायनम्–मूलगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००।*

कच्चायणसगोत्ते– कात्यायनसगोत्रम्–मूलनक्षत्रस्य गोत्रम्। *सूर्य॰ १५०।*

कच्छ– कच्छः। नदीजलपरिवेष्टितो वृक्षादिमान् प्रदेशः। *भग॰ ९२। सूत्र॰ ३०७।* कच्छदेशः। *जम्बू॰ २२०।* कक्षाउरो–बन्धनम्। *भग॰ ३१८।* हृदयरज्जुः। *भग॰ २१७।* शरीराऽव–यवविशेषो वनगहनं वा। *भग॰ १९८।* समूहः। *स्था॰ ४०७।* विजयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७३।* श्रीऋषभस्वामिनो महासामन्त–नाम। *जम्बू॰ २५२।* हृदयरज्जुः। *औप॰ ६२। जम्बू॰ ५२८।* कच्छो नाम चक्रवर्तिविजेतव्य भुविभागरूपो विजयः। *जम्बू॰ ३४०।* दक्षिणकच्छार्धकूटम्। उत्तरकच्छार्धकूटम्। *जम्बू॰ ३४१।* कच्छ–इहलोकगुणे देशविदेशः। *आव॰ ८२४।* ऋषभदेवस्य पौत्रः। *आव॰ १४३।* क्षेमायां राजधान्यां कच्छो नाम राजा चक्रवर्ती। *जम्बू॰ ३४४।*

कच्छउडियो– गृहीतोभयमोट्टाकः। *बृह॰ १९०* आ।

कच्छकरा– अष्टादशश्रेणिषु अष्टमी श्रेणिः। *जम्बू॰ १९३।*

कच्छकूडे– कच्छकूटम्। *जम्बू॰ ३४४।* कच्छविजयाऽधि– पकूटम्। *जम्बू॰ ३३७।*

कच्छकोह– कक्षाकोथः कक्षकोथो वा–कक्षाणां– शरीरावयव–विशेषाणां वनगहनानां वा कोथः–कुथितत्वं शटितं वा कक्षा-कोथः कक्षकोथो वा। *भग॰ १९८।*

कच्छगावती– कच्छा एव कच्छकाः मालुकाकच्छकादयः सन्त्यस्यामतिशायिन इति कच्छकावती, विजयनाम। महा-विदेहे कच्छगावती नाम विजयः। *जम्बू॰ ३४६। स्था॰ ८०।*

कच्छटं– अन्ध्रदेशीयस्त्रीनेपथ्यविशेषः। *आव॰ ५८१।*

कच्छपुड– कच्छपुटः। *व्यव॰ २०७* आ।

कच्छपुडओ– कक्खपदेसे पुडा जस्स स कच्छपुडओ। *निशी॰ १५८* अ।

कच्छभरिंगियं– कच्छपरिङ्गितम्। येन कच्छपवद् रिङ्गन् वन्दते तत्। कृतिकर्मणि सप्तमदोषः। *आव॰ ५४३।*

कच्छभा– कच्छपाः–कूर्माः। *उत्त॰ ६९९। आव॰ ५४३।* कच्छपाः। *प्रज्ञा॰ ४३।* राहो अष्टमं नाम। *भग॰ ५७५।* कच्छपः। *सूर्य॰ २८७।* मांसकच्छपाऽस्थिकच्छपभेदभिन्नो जलजन्तुविशेषः। *प्रश्न॰ ७।*

कच्छभाणी– कच्छभानी–साधारणवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४०।* जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कच्छभी– कच्छपी। भारती वीणा। *जम्बू॰ १०१।* कच्छभी। वाद्यविशेषः। *प्रश्न॰ १५९।* पुस्तकपञ्चके द्वितीयम्। *निशी॰ १८१* अ। वादिन्त्रविशेषः। *जीवा॰ २६६।* चतुरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृती। *निशी॰ ६१* अ।

कच्छभीए– कच्छपिका। उपकरणविशेषः। *ज्ञाता॰ २२०।*

कच्छवि– कच्छपी। पुस्तकपञ्चके द्वितीयम्, यद् अन्ते तनुकं मध्ये पृथु। *स्था॰ २३३। आव॰ ६५२।*

कच्छवी– अन्ते तनुकं मध्ये पृथुलं पुस्तकम्। *बृह॰ २१९* आ।

कच्छा– बन्धविशेषः। *सम॰ १२७। स्था॰ ८०।* कक्षा-उरोबन्धनम्। *विपा॰ ४७।* इक्खुपदी। *निशी॰ ७०।*

कच्छाणि– कच्छाः। नद्यासन्ननिम्नप्रदेशा मूलकवालुङ्कादिवा–टिका वा। *आचा॰ ३८२।*

कच्छावईए– कच्छा एव कच्छका–मालुकाकच्छादयः सन्त्य-स्यामतिशायिन इति। *जम्बू॰ ३४६।*

कच्छावईकुडे– कच्छावतीकूटम्। महाविदेहस्य पद्मकूटस्य चतुर्थं कूटम्। *जम्बू॰ ३४६।*

कच्छु– पामा। *व्यव॰ १९२* अ। *निशी॰ १२७* आ।

कच्छुंभरि– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ २३।*

कच्छुल्ल– कण्डूमान्। *विपा॰ ७४।* पामावान्। *बृह॰ २२२।* आ। कण्डूतिमान्। *प्रश्न॰ १६१।*

कच्छुल्लणारए– एतन्नाम्ना तापसः। *ज्ञाता॰ २२०।*

कच्छू– कच्छूः–पामणा(मा)। *जीवा॰ २८४, ३०८। आव॰ ३७८।* पामा *बृह॰ २२२* अ। *जम्बू॰ १७०। निशी॰ ६२* अ। *व्यव॰ १९२* अ।

कच्छोटकः– चरकः। *भग॰ ५०।*

कच्छोटग– कच्छोटकः। *आव॰ ४१३।*

कज्ज– असिवादियं कज्जं भण्णति। *निशी॰ ४२* आ। अपवादकारणम्। अहवा कज्जंति णाण–दंसण–चरणा। *निशी॰ १२* आ। कार्यः–कर्तव्यः समुपस्थितः। *आचा॰ ११६।* अशिवादिनिस्तरणलक्षणः प्रयोजनः। *व्यव॰ ९* अ। गृहकरण–स्वजनसन्मानादिकृत्यः। *भग॰ ७३१।*

कज्जइ– फलं भवतीत्यर्थः। *भग॰ ३७३।* क्रियते–व्यथते। यथा शूलं क्रियते–व्यथते (पीडयति)। *आव॰ ४३३।*

कज्जकोडुंवं– कुटुम्बे भवं कौटुम्बं–स्वराष्ट्रविषये कार्यम्। *जीवा॰ १६६।*

कज्जति– क्रियते। (कर्मकर्तरि) भवति। *स्था॰ २४७।*

कज्जत्थोकुरटिकास्थानम्– स्थानविशेषः। *ओघ॰ १६२।*

कज्जमाणा– क्रियमाणा–ईर्यापथिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः। *आव॰ ६१५।*

कज्जलंगी– कज्जलाङ्गी। कज्जलगृहम्। *ज्ञाता॰ ६।*

कज्जल– कज्जलं। मषी। *भग॰ १०।* कृष्णवर्णपरिणतः। *प्रज्ञा॰ १०।*

कज्जलप्पभा– कज्जलप्रभा। अपरदक्षिणस्यां पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३३७।*

कज्जलमाणं– भरिज्जमाणं। *निशी॰ ६४* अ।

कज्जलायमाणं– प्लाव्यमानम्। *आचा॰ ३७९।*

कज्जलेइ– कज्जलमिति। कज्जलं–दीपशिखापतितम्। *जम्बू॰ ३२।*

कज्जसेणे– तृतीयायामवसर्प्पिण्यां भारतवर्षे पञ्चमः कुलकरः। *सम॰ १५०।*

कज्जोयए– अष्टाशीत्यां पञ्चदशो महाग्रहः। *स्था॰ ७८।*

कज्जोवए– कार्योपगः। अष्टाशीत्यां षोडशो महाग्रहः। *जम्बू॰ ५३४।*

कटक– गिरिपादः। दुर्ग्गः। *व्यव॰ ४२* आ। सैन्यम्। *नन्दी॰ १६१।* सैन्यं किलिञ्जं वा। *प्रश्न॰ ६।* उपकरणभेदः। *आचा॰ ६०।*

कटकमर्द– कटकमर्दन मारणमादिश्य। *स्था॰ ४१२।*

कटकितः– काष्ठादिभिः कुड्यादौ संस्कृतः। *आचा॰ ३६१।*

कटादिकाराः– छर्विकाः। *प्रज्ञा॰ ५८।*

कटासनम्– कटासनमित्येतस्माच्छय्येति। *आचा॰ ३२०।*

कटाहक– पात्रविशेषः। *आचा॰ ३४६।*

कटुः– रसस्य द्वितीयभेदः। *प्रज्ञा॰ ७४३।*

कटुकाः– सुण्ठ्यादिवत्। *उत्त॰ ६७७।*

कटुका– औषधिविशेषः। *उत्त॰ ६५३।*

कट्ठं– खण्डम्। *अनुत्त॰ ५।*

कट्ठर– तीमनोन्मिश्रवृतवटिकारूपो भोज्यविशेषः। *पिण्ड॰ १७२।*

कट्ठरादिकम्– क्वथितम्। *बृह॰ २३४* आ।

कट्ठारिगा– शस्त्रविशेषः। क्षुरिका। *निशी॰ ३०४* आ।

कट्टु – कृत्वा। *उत्त॰ ७०६, २४९, २५३।*

कट्ठं– काष्ठम्। फलकादि। *प्रश्न॰ १६०।* कष्टं–दुःखम्। *ज्ञाता॰ १६७।* काष्ठम्। *आचा॰ ३३।* श्रीपर्ण्यादिफलकादि। *दशवै॰ १९३।* स्थूलमायतमेव। *स्था॰ ४६६।* कृट्टिमम्। *आव॰ ७६७।*

कट्ठकम्मंताणि– काष्ठकर्मगृहाणि। *आचा॰ ३६६।*

कट्ठकम्म– कोट्टिमादि। *निशी॰ ७१* अ। काष्ठकर्म– काष्ठनिकुट्टितं रूपकम्। *अनुयो॰ १२।* काष्ठकर्मप्रतिमास्त–म्भद्वारशाखादि। *आचा॰ ६१।*

कट्ठकम्माणि– काष्ठकर्माणि–रथादीनि। *आचा॰ ४१४।* दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि। *ज्ञाता॰ १८०।*

कट्ठकरणं– काष्ठकरणम्। क्षेत्रम्। *आव॰ २२७। आचा॰ ४२४।*

कट्ठकारे– काष्ठकारः। शिल्पविशेषः। *अनुयो॰ १४९।*

कट्ठणिप्फण्णं– काष्ठनिष्पन्नम्। मद्यविशेषः। *आव॰ ८५४।*

कट्ठपाउयारा– काष्ठपादुकाकाराः। *प्रज्ञा॰ ५८।*

कट्ठपेज्जा– मुद्गादियूषो घृततलिततण्डुलपेया वा। *उपा॰३।*

कट्ठमुद्दा– काष्ठं–काष्ठमयः पुत्तलको न भाषते एवं सोऽपि मौनावलम्बी जातः। यद्वा मुखरन्ध्राच्छादकं काष्ठखण्डम्, उभयपार्श्वच्छिद्रद्वयप्रेषितदवरकान्वितं मुखबन्धनं काष्ठामुद्रा। *निर॰ २७।*

कट्ठविरूढगो– काष्ठविरूढः। *आव॰ ४१३।*

कट्ठसगडिया– काष्ठानां शकटिका। गन्त्री। *ज्ञाता॰ ७६।*

कट्ठसेज्जा– काष्ठशय्या। फलकादिशयनम्। *प्रश्न॰ १३७।*

कट्ठसेट्ठी– अर्थजातगृहणेऽयशः। *बृह॰ १९१* अ।

कट्ठहारा– त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त॰ ६९५। प्रज्ञा॰ ४२। जीवा॰ ३२।*

कट्ठाओ– काष्ठात्–मध्यसारात्। *प्रज्ञा॰ ३६।*

कट्ठावसेसो– काष्ठावशेषः। शुष्कवृक्षः। *उत्त॰ ३०४।*

कट्ठिया– काष्ठिकाः। *औप॰ ६९।*

कट्ठो– काष्ठः–श्रेष्ठिविशेषः। पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *आव॰ ४२८।*

कट्ठोले– कृष्टः। हलविदारितः। *पिण्ड॰ ८।*

कट्ठोल्लो– हलकृष्टो यः पृथिवीकायस्तत्क्षणादेव आर्द्रश्च शुष्कश्च क्वचिन्मिश्रः पृथिवीकायः। *ओघ॰ १२९।*

कठिणगं– कठिनकम्। *प्रश्न॰ १२८।*

कडंगर– फलशून्यधान्यम्। *स्था॰ ४१९।*

कड– छावणथूणादियाण एवमादि कडं भण्णति। *निशी॰ २३०* आ। कृतम्–सिद्धम्–पूर्णम्। *भग॰ ७४५।* भावितम्–संस्कृतम्। *भग॰ ६९१।* कटः–विदलवंशादिमयः। *समं॰ १२६।* कृतः–निष्पादितः–राद्धः। *पिण्ड॰ ६५।* निष्ठितभक्तः। *ओघ॰ १८८।* निकाचितम्–सर्वकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्था–पितम्। *भग॰ ९०।* चतुष्कम्। *सूत्र॰ ६७।* निकाचितम्–स–कलकरणाऽयोग्त्वेन व्यवस्थापितम्। *प्रज्ञा॰ ४०३।* कृतम्। *आव॰ ४१३।* कर्तुं प्रारब्धम्। *पिण्ड॰ ६३।* कटम्। *ओघ॰ १५३। अनुयो॰ १५४।* यत् पुनरुद्धरितं सत् शाल्योदनादिकं भिक्षाचरदानाय करम्बादिरुपतया कृतं तत्। *पिण्ड॰ ७७।* निष्ठितम्–पक्वम्। *निशी॰ ९२* अ। कटः–भोजन-विधिः। *आव॰ ८५९।* धन्नभायणा। *निशी॰ १४७।*

कडइत्तओ– कटकस्वामी। *आव॰ ५६०।*

कडओ– कटकः। काशीजनपदाऽधिपः। *उत्त॰ ३७७।*

कडकरणं– कटकरणम्। कटनिवर्त्तकं–चित्राकरमयोमयं पाइल्लगादि। *उत्त॰ १९५।* कृतकरणम्–मुद्रा। *बृह॰ ३२।*

कडक्ख– कटाक्षः–आविर्भावकः। *जम्बू॰ ४२।*

कडक्खचिट्ठिएहिं– कटाक्षचेष्टितैः। शृङ्गाराविर्भावकक्रियावि-शेषः–कटाक्षचेष्टितम्। *जं॰ ५२।*

कडग– कटकः। नितम्बभागः। *जम्बू॰ १९६।* गिरिनितम्बः। *जम्बू॰ २३७। आव॰ ५६०।* कटकं–वंशदलमयम्। *अनुत्त॰ ६।* कलाचिकाऽऽभरणम्। *प्रज्ञा॰ ८८। जीवा॰ १६२, २५३।* अनीकम्। *उत्त॰ ४३८।* भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८। आव॰ ७५६।* कलाचिकाऽऽभरणविशेषः। *भग॰ ४७७।* कटकानि–कङ्कणविशेषाः। *उपा॰ २६।* पर्वतैकदेशाः। *ज्ञाता॰ २६।* गण्डशैलाः। *ज्ञाता॰ १००।* कटकः–भित्तिप्रदेशः। *जम्बू॰ २३०।* वलयाकारं हस्ता-ऽऽभूषणम्। *आव॰ ७०२।* कृतकः–अपेक्षितव्यापारः स्वभावनिष्पतौ भावः। *सूत्र॰ २८३।* खंधावारो। *निशी॰ ५* अ।

कडगतड– कटतटानि–वैभारगिरेरेकदेशतटानि। *ज्ञाता॰ ३६।*

कडगमद्दं– कटकमर्दम्। *आव॰ ६३२।* कटकमर्दः–पर राष्ट्रे स्कन्धावारकृतो जनविमर्दः। *बृह॰* वि॰ *४६* अ। *निशी॰ ४५* आ।

कडगमद्दो– पाककुम्भी। *निशी॰ ६३२* अ। पर विसय-माइण्णो, एगस्स रण्णो अभिणिवेसेण अकारिणो वि गामणग-रादिसव्वे विणासेइ ता एगेण कयमकज्जं सव्वे बालवड्ढादी जो जत्थ दीसइ सो तत्थ मारिज्जति एस कडगमद्दो। सह तेण-कारिणा मोत्तुं वा तं कारिं–जो तस्सम आयरिओ गच्छो वा कुलं वा गणो वा तं वा वादेति। *निशी॰* प अ।

कडगाई– कैतवानि। *बृह॰ ८८* अ।

कडग्गिदाहणं– कटानां विदलवंशादिमयानामग्निः कटाग्निः, तेन दाहनं कटाग्निदाहनम्; कटेन परिवेष्टितस्य बाधनमित्यर्थः। *सम॰ १२६।*

कडच्छुत्ता– दर्वी। *निशी॰ २०२* आ।

कडच्छेअ– कटकच्छेदः। *ओघ॰ १८७।*

कडच्छेज्जं– कटच्छेद्यम्। कटवत् क्रमच्छेद्यं वस्तु यत्र विज्ञाने तत्तथा। इदं च व्यूतपटोद्वेष्टनादौ भोजनक्रियादौ चोपयोगि। *जम्बू॰ १३९।*

कडच्छेज्ज– द्वासप्ततौ कलासु नवषष्टितमा कला। *ज्ञाता॰ ३६।*

कडजुम्म– कृतयुग्मः। यो हि राशिश्चतुष्काऽपहारेण अपह्रियमा–णश्चतुःपर्यवसितो भवति स कृतयुग्मः। *स्था॰ २३७, २३८।* कृतं–सिद्धं–पूर्णम्, ततः परस्य राशिसंज्ञान्तरस्याऽभावेन त्र्योजःप्रभृविवदपूणं यद् युग्मम्–समराशिविशेषस्तत् कृत-युग्मम्। *भग॰ ७४४।* त्रैतौजसि एकत्रिशत् कृतयुग्मे नास्ति प्रक्षेपः। *सूर्य॰ १६७।*

कडजुम्मकडजुम्मे– यो राशिः सामयिकेन चतुष्काऽपहारेणाऽ–पह्रियमाणश्चतुष्पर्यवसितो भवति, अपहारसमया अपि चतु-ष्कापहारेण चतुष्पर्यवसिता एव; असौ राशिः कृतयुग्म–कृतयुग्म इत्यभिधीयते। *भग॰ ९६४।*

कडजुम्मकलियोगे– कृतयुग्मकल्योजे सप्तदशादयः। *भग॰ ९६४।*

कडजुम्मतेओगे– यो राशिः प्रतिसमयं चतुष्कापहारेणाऽपह्रिय–माणस्त्रिपर्यवसान्ते भवति, तत्समयाश्चतुष्पर्यवसिता एवाऽसौ अपह्रियमाणापेक्षया त्र्योजः; अपहारसमयापेक्षया तु कृतयुग्म एव; इति कृतयुग्मत्र्योज इत्युच्यते। *भग॰ ९६४।*

कडजुम्मदावरजुम्मे– पूर्वोक्तराशिभेदसूत्राणि तद्विवरणसूत्रेभ्यो–ऽवसेयानि। इह च सर्वत्रापि अपहारकसमयापेक्षमाद्यं पदम्, अपह्रियमाणद्रव्यापेक्षं तु द्वितीयमिति। इह च तृतीयादारभ्यो-दाहरणानि कृतयुग्मद्वापरे राशौ अष्टादशादयः। *भग॰ ९६४।*

कडजोगिं– कृतो योगो–घटना ज्ञानदर्शनचारित्रैः सह येन स कृतयोगी–गीतार्थः। *ओघ॰ ९८।*

कडजोगी– कृतयोगी। सूत्रतोऽर्थतश्च छेदग्रन्थधरः। *व्यव॰ १२३* अ। प्रत्युच्चारणे समर्थः कृतयोगी। *निशी॰ ३२२* आ। चउत्थादितवे कतजोगा। *निशी॰ २६* आ। गीतार्थेत्यर्थः। वेयावच्चे वा जेणऽण्णतावि कडो जोगो सो वा कडजोगी। *निशी॰ २०१* आ। गार्हस्थ्ये येन कर्त्तनं कृतम्। *बृह॰ ११६* आ। कृतयोगी–गीतार्थः। *बृह॰ १६५* आ।

कडड– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

कडणं– कटकमर्दः। *बृह॰ १९* अ।

कडणा– त्रट्टिका। *भग॰ ३७६।*

कडतड– कटतटम्। गण्डतटम्। *ज्ञाता॰ ६९।*

कडपल्ला– उद्धदरा, धन्नभायणा। *निशी॰ १७* आ।

कडपूतना– व्यन्तरीविशेषः। विशे॰ *१०१९।*

कडपूयणसिवो– कडपूतनाशिवः। *दशवै॰ १०४।*

कडपूयणा– कटपूतना। महावीर स्वामिन उपसर्गकृद् व्यन्तरी। *आव॰ २१०।* कटपूतना– तपस्विनामवन्दनकारिका व्यन्तरी। *दशवै॰ ३८।*

कडपोत्ती– यदि कटोऽस्ति ततस्तमन्तराले ददति, अथ स नास्ति ततः पोत्तिं–चिलिमिनीं ददति। *ओघ॰ ९२।*

कडभू– रुक्खो। *निशी॰* पू॰ *१२२* अ।

कडय– कटकम्। *ओघ॰ १८०।* पर्वततटम्। *ज्ञाता॰ ६३।*

कडयपल्ललं– कटकपल्वलम्। पर्वततटव्यवस्थितजलाशय-विशेषः। *ज्ञाता॰ ६७।*

कडलां– आभरणविशेषः। कनकनिगडः–निगडाकारः पादा–भरणविशेषः। सौवर्णः सम्भाव्यते, लोके च 'कडलां' इति प्रसिद्धः। *जम्बू॰ १०६।*

कडवल्लो– सट्टती। *निशी॰ ५९* अ।

कडवा– कराटिका। *राज॰ ५०।*

कडवाई– कृतवादी। ईश्वरेण कृतोऽयं लोकः प्रधानादिकृतो वा, यथा च ते प्रवादिन आत्मीयमात्मीयं कृतवादं गृहीत्वोत्थिता-स्तथाकृतवादिनो भण्यन्ते। *सूत्र॰ १२।*

कडवाणि– इक्षुयोन्नलकादिदण्डकाः। *आचा॰ ४११।*

कडवालए– अजङ्गमत्वेन गृहपालकाः। *बृह॰ १०५* अ॰।

कडसलागा– कटशलाका। *आव॰ २२६।*

कडसीस– कटशीर्ष। पलाशपत्रमयम्। *बृह॰ २५३* अ।

कडहू– वृक्षविशेषः। *बृह॰* वि॰ *२८* आ।

कडा– पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथात्वाऽवाप्तेः कृताः। *सम॰ १०९।*

कडाइं– पूर्वपरिणामापेक्षया परिणामान्तरेण कृतानि। *भग॰ ५६६।*

कडाईहिं– इह पदैकदेशात् पदसमुदायो दृश्यस्ततः कृतयोग्या –दिभिः। कृता योगाः–प्रत्युपेक्षणादिव्यापारा येषां सन्ति ते कृतयोगिनः। *भग॰ १२७।* कृतयोग्यादिभिः *ज्ञाता॰ ७७।*

कडाली– कटालिका। अश्वानां मुखसंयमनोपकरणविशेषो लोहमयः। *अनुत्त॰ ६।*

कडासणं– कटः–संस्तारः, आसनं–आसन्दकादिविष्टरम्। *आचा॰ १३४।*

कडाह– बहुपांशुलिकः। *तन्दु॰* कटाहं–कच्छपपृष्ठं भाजनविशेषो वा। *अनुत्त॰ ६।*

कडाहसंठितो– कटाहसंस्थितः। आवलिकाबाह्यस्य पञ्चमं संस्थानम्। *जीवा॰ १०४।*

कडि– कटी। *आचा॰ ३८।* कटिः–मध्यभागः कटीरिव। *जीवा॰ १८७।*

कडिई– कृतयोगी। *निशी॰ १०२* अ।

कडिणा– वनस्पतिविशेषः। *सूत्र॰ ३०७।*

कडिपट्टइल्ल– कटिपट्टकवान्। *उत्त॰ ९८।*

कडिपट्टए– करिपट्टकः। *आव॰ ६२६।*

कडिपट्टओ– कटिपट्टकः। *उत्त॰ ९८।* अणच्छादनम्। *बृह॰ १०२* अ।

कडिबंधणं– कटिबन्धनम्। चोलपट्टकः। *आचा॰ २८७।*

कडिय– शरीरमध्यभागो कटिः, ततोऽन्यस्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरिति। *जम्बू॰ २८।* कटः संजातोऽस्येति कटितः–कटान्तरेणोपरि आवृतः। *जीवा॰ १८७।*

कडियडं– कटितटम्। मध्यभागः। *जीवा॰ १८७।*

कडिल्ल– कटाहः। *ओघ॰ ५०।* गहनम्। *बृह॰ १५६* आ। *व्यव॰ १७५* आ। उपकरणभेदः। *दशवै॰ १९४।* मण्डका-दिपचनभाजनम्। *उपा॰ २१।* महागहनम्। *व्यव॰ १७८।*

कडिल्लकं– मृन्मयं चनकादिभर्जनपात्रम्। *पिण्ड॰ १६४।*

कडिल्लगं– गहनम्। *व्यव॰ २५७।*

कडिल्लदेसं– कडिल्लदेशः। गहनप्रदेशः। *व्यव॰ २०५* आ।

कडु– कटुः। तीक्ष्णः। *उत्त॰ ६५३।*

कडुअंफलं– कटुकफलम्। अशुभफलं विपाकदारुणमित्यर्थः। द॰ *१५६।*

कडुअ– कटुकं। आर्द्रकतीमनादि। *दशवै॰ १८०।*

कडुए– कटुकः। रोगविशेषः। कटुकं नागरादि, तदिव यः स कटुकोऽनिष्ट एवेति। *भग॰ ४८४।* वैषद्यच्छेदनकृत् कटुकः। *स्था॰ २६।* कटुकम्–अनिष्टम्। *औप॰ ४२।* *भग॰ २३१।*

कडुओ– अपराधापन्नस्य गोष्ठिकस्य यो दण्डपरिच्छेदकारी स कटुको भण्यते । *बृह॰ १९१।* कटुकः–शीतातपरोगादि–दोषबहुलतया परिणामदारुणः। *सूर्य॰ १७२।*

कडुग– कटाहः। *आव॰ १९८।* दोसावण्णस्स गोट्ठियस्स दंडपरिच्छेयकारी कडुगो भण्णति। *निशी॰ १५८* आ।

कडुगतुंबिफलं– कटुकतुम्बीफलम्। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

कडुगतुंबी– कटुकतुम्बी। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

कडुगफलविवागो– कटुकफलविपाकः। *उत्त॰ ३०३।*

कडुच्छिका– दर्वी। *ओघ॰ १६९।*

कडुच्छुअं– कडुच्छुकम्–धूपाधानकम्। *जम्बू॰ १९३।*

कडुच्छुकं– दर्वी। *ओघ॰ १६१।*

कडुच्छुग– कडुच्छुकः। तापसभिक्षामाजनविशेषः। *आव॰ ३५६।*

कडुच्छुय– परिवेषणाद्यर्थो भाजनविशेषः। *भग॰ २३८।*

कडुभंग– वेसणं हिंगु–मरिचादि, कटुकं शुण्ठ्यादिभाण्डं घटादि; इति कटुभाण्डम्। *बृह॰ २७१* अ।

कडुयं– कटुकम्। दारुणम्। *प्रश्न॰ १६।* अनिष्टार्थम्। *प्रश्न॰ ११९।* लवणसमुद्रस्य उदके पञ्चमभेदः। *जीवा॰ ३७०।* कटुकाम्–चित्तोद्वेगकारिणीम्। *आचा॰ ३८८।*

कडुयदोद्धियं– कटुकं दौग्धिकम्। भाषायां 'दूधी–कदूः नामक शाकविशेषः। *आव॰ ७२३।*

कडुया– कटुका। तीक्ष्णा। *जीवा॰ ३५१।*

कडुहडं– *निशी॰ २०२* आ।

कडेवरसेणि– कलेवरश्रेणिः। कलेवराणि– एकेन्द्रियशरीराणि तन्मयत्वेन तेषां श्रेणिः कलेवरश्रेणिः वंशादिविरचिता प्रासा–दादिष्वारोहणेतुः। *उत्त॰ ३४१।*

कड्ढन्ति– निन्दयन्ति। *आव॰ ३४३।*

कड्ढिंति– कर्षयन्ति। *उत्त॰ १४८।*

कड्ढिऊण– कर्षयित्वा। *आव॰ २०५।*

कड्ढिओ– क्षिप्तः। *आव॰ ४२५।*

कड्ढिज्जमाणो– आकृष्यमाणः। *प्रश्न॰ ६२।*

कड्ढिय– कृष्टः। *उत्त॰ २१५*। उक्तम्। *बृह॰ १४२*अ। कृष्टः–आकर्षितः। *प्रश्न॰ २१*।

कड्ढेमि– क्वथयिष्यामि। *आव॰ ३६९*।

कड्ढोकड्ढाहिं– कर्षणापकर्षणैः परमाधार्मिककृतैः। *उत्त॰ ४५९*।

कढिअ– क्वथितः। निष्पक्वः। *जम्बू॰ १०५*।

कढिण– कठिनम्। वंशकटादि। *आचा॰ ३७२*। तृणविशेषः। *बृह॰ ५२*आ। वंसो। *निशी॰ १३४*आ।

कढिणियं– अतिशयेन घनम्। *बृह॰ ५५*अ।

कढियं– क्वथितम्। *जीवा॰ २७८*।

कढियाई– क्वथितादयः। क्वथितं तीमनादि तदादयः। *पिण्ड॰ १६८*।

कणं– शाल्यादेः। *आचा॰ ३४९*। कणः–तन्दुलः। *उत्त॰ ४५*।

कणइरगुम्मा– कणवीरगुल्माः *जम्बू॰ ९८*।

कणइरा– कणयरा। अतिस्निग्धतया श्लक्ष्णश्लक्ष्णस्वेदकणा–कीर्णा। *जीवा॰ २७६*।

कणए– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। अष्टाशीत्यामष्टमो महाग्रहः। *सूर्य॰ २९४*। *जम्बू॰ ५३४*। *स्था॰ ७८*।

कणओ– कनकः। श्लक्ष्णरेखः प्रकाशरहितश्च। *आव॰ ७५२*।

कणक– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*। बाणविशेषः। *प्रश्न॰ २१*। कनकः–बाणाः। *सम॰ १५७*।

कणकणए– अष्टाशीत्यां नवमो महाग्रहः। सूर्य *२९५*। *जम्बू॰ ५३४*। *स्था॰ ७८*।

कणकनिज्जुत्त– कनकनियुक्तानि। हेमखचितानि। *ज्ञाता॰ ५८*।

कणकीटकः– निष्ठुरः कृमि। *उत्त॰ ४५७*।

कणकुंडगं– कणिककुण्डम्। कणिकाभिर्मिश्राः कुक्कुसाः। *आचा॰ ३४९*। *आव॰ ८१४*।

कणग– कनकतिकलम्। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २३९*। कनकं देवकाञ्चनम्। *आव॰ १८४*। कनके भवः कानकः। *आव॰ २३१*। कनकः बाणविशेषः। *बृह॰ २३३*आ। कनकः बिन्दुः शालाका वा। कनकं सुवर्णमेव। *औप॰ ५२*। तारकपातः। *ओघ॰ २०१*। घृतवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३५४*। कनकं–पीतरूपः सुवर्णविशेषः। *जम्बू॰ २३*। धान्यम्। *भग॰ ४७०*। कनकः–रेखारहितः। *व्यव॰ २५४*आ।

कणगकंताणि– कनककान्तीनि। कनकस्येव कान्तिर्येषां तानि। *आचा॰ ३९४*।

कणगकूडे– कनककूटम्। विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते पञ्चमकूटस्य नाम। *जम्बू॰ ३५५*।

कणगकेउ– कनककेतुः। अहिच्छत्रानगर्यां नृपतिः। *ज्ञाता॰ १९३*। हस्तिशीर्षनगरे नरपतिः। *ज्ञाता॰ २२७*।

कणगखइयाणि– कनकखचितानि। कनकरसस्तबकाञ्चितानि। *आचा॰ ३९४*।

कणगखचितं– कणगसुत्तेण फुल्लिया जस्स पाडिया तं कणग-खचितं। *निशी॰ २५५*अ।

कणगखचियं– कनकखचितम्। विच्छुरितम्। *जीवा॰ २५३*।

कणगखलं– कनकखलम्। आश्रयपदम्। *आव॰ १९५*।

कणगजालं– कनकजालम्। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८*।

कणगज्झय– कनकध्वजः। कनकरथराजपुत्रः। *आव॰ ३७३*। कनकध्वजः–कनकरथराजपुत्रः। *ज्ञाता॰ १८९*।

कणगणिगरमालिया– कनकनिगरमालिका। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*।

कणगणिगल– कणकनिगडः। निगडाकारः। पादाभरणविशेषः। सौवर्णः संभाव्यते। लोके च 'कडलां' इति प्रसिद्धः। *जम्बू॰ १०६*।

कणगणिज्जुत्त– कनकनियुक्तम्। कनकविच्छुरितं, कनकपट्टि-कासंवलितमित्यर्थः। *जम्बू॰ ३७*।

कणगतिंदूसेणं– कनकतिन्दूषेण। स्वर्णकन्दुकेन। *विपा॰ ८४*।

कणगतिलक– कनकतिलकम्। ललाटाभरणम्। *जम्बू॰१०६*।

कणगनिगरणं– कनकस्य निगरणं कनकनिगरणम्, गालितं कनकमिति भावः। *जीवा॰ २६७*।

कणगनिगल– कनकनिगलानि। निगडाकाराः सौवर्णपादाभ–रणविशेषः। *औप॰ ५५*।

कणगनिज्जुत्तं– कनकनियुक्तम्। कनकविच्छुरितम्। *जीवा॰ १९२*।

कणगपट्टं– कणगेण जस्स पट्टा कता तं कणगपट्टं। मिगा। *निशी॰ २५५*अ।

कणगपट्टाणि– कनकपट्टानि। कृतकनकरसपट्टानि।

आचा० २९४।

कणगपट्ठा– कनकपृष्ठान्। कांश्चिदिति रूपकम्। *ज्ञाता० २३१।*

कणगपिट्ठी– कनकपृष्ठिः। एतादृशो मृगः। *ओघ० १५८।*

कणगपुरं– कनकपुरम्। प्रियचन्द्रराजधानी। *विपा० ९५।*

कणगप्पभा– धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य षोडशममध्ययनम्। *ज्ञाता० २५२।*

कणगप्पभो– कनकप्रभः। घृतवरद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३५४।*

कणगफुल्लियं– कणगेण जस्स फुल्लिताओ दिण्णाओ तं कणगफुल्लियं। *निशी० २५५ अ।*

कणगफुसियाणि– कनकस्पृष्टानि। *आचा० ३९४।*

कणगरहे– कनकरथः। विजयपुरनगराधिपतिः। *विपा० ७५।* तेतलिपुरनगरे राजा। *ज्ञाता० १८४। आव० ३७३।*

कणगलता– चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *स्था० २०४।*

कणगलया– चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग० ५०३।*

कणगवत्थु– कनकवस्तु। द्विषष्ठवासुदेवनिदानभूमिः। *आव० १६३।*

कणगसंताणे– कनकसन्तानकः। अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रहः। *सूर्य० २९४।*

कणगसनामा– कनकेन सह एकदेशेन समानं नाम येषां ते कनकसमाननामानः। *सूर्य० २९५।*

कणगा– धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य पञ्चदशमध्ययनम्। *ज्ञाता० २५२।* चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *स्था० २०४। भग० ४०३।* भीमस्य राक्षसेन्द्रस्य तृतीया-ऽग्रमहिषी। *स्था० २०४। भग० ५०४।* चतुरिन्द्रियजीव-विशेषाः। *प्रज्ञा० ४२। जीवा० ३२।* कणगा–सण्हरेहा पगासविरहिता य। *निशी०* आ।

कणगाणि– कनकानि। कनकरसच्छुरितानि। *आचा० ३९४।*

कणगावलि– कनकावली। सौवर्णमणिकमयी। *भग० ४७७।*

कणगावलिभद्दो– कनकावलिभद्रः। कनकवलिद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिमहाभद्दो– कनकावलिमहाभद्रः। कनकावलिद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरमहावरो– कनकावलिवरमहावरः। कनकावलि–वरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरावभासभद्दो– कनकावलिवरावभासमहाभद्रः। कनकावलिवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरावभासमहाभद्दो– कनकावलिवरावभासमहाभद्रः। कनकावलिवरावभासे द्वीपे अपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरावभासमहावरो– कनकावलिवरावभासमहावरः। कनकावलिवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरावभासवरो– कनकावलिवरावभासवरः। कनकावलिवरावभासे समुद्रे पूर्वार्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावलिवरावभासो– कनकावलिवरावभासः। द्वीपविशेषः। समुद्रविशेषश्च। *जीवा० ३६८।*

कणगावलिवरो– कनकावलिवरः। द्वीपविशेषः। समुद्रविशेषश्च। *जीवा० ३६८।* कनकावलिसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३६९।*

कणगावली– कनकावलिः। कनकमयमणिकमयो भूषणविशेषः। कल्पनया तदाकारं यत्तपस्तत्। तपोविशेषः। *औप० २९।* तपोविशेषः। *निशी० ३०६* आ। कनकावली–कनक-मयमणिकरूप आभरणविशेषः। तपोविशेषश्च। *अन्त० २७।* कनकमणिमयी। *जीवा० २५३।* कनकावलिः–द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा० ३६८।* सुवण्णमणिएहिं कणगावली। *निशी० २५४* आ।

कणतो– कनकः। रेखारहितो ज्योतिष्पिण्डः। *ओघ० २०५।*

कणपूपलिय– कणपूपलिकाः, कणिकाभिर्मिश्राः पूपलिकाः कणपूपलिकाः। *आचा० ३४९।*

कणय– कणकाः, बाणविशेषः। *जम्बू० २०६।* प्रहरणविशेषः। *निशी० ५७* आ।

कणयमूलं– कनकमूलम्। बिल्वमूलम्। *उत्त० १४२।*

कणयर– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा० ३२।*

कणवित्ताणए– कणवितानकः। अष्टाशीत्यां दशमो महाग्रहः। *सूर्य० २९५। जम्बू० ५३४।* अष्टाशीत्यां दशमो महाग्रहः। *स्था० ७८।*

कणवीर– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५।*

कणसंताणए– अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रहः। *स्था॰ ७८। जम्बू॰ ५३४।*

कणिआरवणं– कर्णिकारवनम्। *आव॰ १८६।*

कणिक्क– धान्यविशेषः। *आव॰ १०२।* कणिक्कः। *आव॰ ८५५।*

कणिक्कमच्छा– मत्स्यविशेषाः। *जीवा॰ ३६। प्रज्ञा॰ ४४।*

कणितारुक्खे– दिक्कुमाराणां चैत्यवृक्षः। *स्था॰ ४८७।*

कणिया– क्वणिता, काचिद् वीणा। *जम्बू॰ १०१।* कणिक्का। *आव॰ ८५५।* तुसमुही। *निशी॰ १९६* अ।

कणियारय– कर्णिकारकः। कृत्सितवृक्षविशेषः। *आव॰ ५५७।*

कणियारे– दिशाचरविशेषः। *भग॰ ६५९।*

कणीयस– कनीयान्, कनिष्ठः, लघुरिति। *अन्त॰ ८।*

कणुओ– रजः, धूलिरजः। *दशवै॰ ४७।*

कणुय– कणुकम्, त्वगाद्यवयवः। *आचा॰ ३४७।*

कणे– कणः। अष्टाशीत्यां सप्तमो महाग्रहः। *जम्बू॰ ५३४। स्था॰ ७८।*

कणेरदत्त– कणेरुदत्तः, कुरुषु गजपुराधिपतिः। *उत्त॰ ३७७।*

कणेरुदत्ता– करेणुदत्ता, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये तृतीया। *उत्त॰ ३७९।*

कणेरुपइगा– करेणुपदिका, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये तुरीया। *उत्त॰ ३७९।*

कणेरुसेणा– करेणुसेना, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये षष्ठी। *उत्त॰ ३७९।*

कणो– कणः, अष्टाशीत्यां सप्तमो महाग्रहः। *सूर्य॰ २९४।*

कण्णंतेपुरं– अप्पत्तजोव्वणाण रायदुहियाण संगहो कन्नंतेपुरं। *निशी॰ २७१* अ।

कण्ण– कर्णः। *आव॰ १९२।* वित्थारकण्ण। *निशी॰ ४८* आ। कन्याः, कन्या इव कन्याः, सफला अथवा दूरफलाः। *जम्बू॰ २०९।* कोणं। *निशी॰ १२* आ। कर्णः– प्रथमकोटिभागरूपः। *सूर्य॰ ४९। आव॰ ६२१।* श्रवणः। *प्रश्न॰ ८।* कोटिभागः। *सूर्य॰ ८।*

कण्णकलं– कर्णकलम्, कर्णकलमिति च क्रियाविशेषणं द्रष्टव्यम्, तच्चैवं भावनीयम्–कर्णम्–अपरमण्डलगतप्रथम–कोटिभागरूपं लक्ष्यीकृत्याऽधिकृतमण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वं क्षणे क्षणे कलयाऽतिक्रान्तं यथा भवति तथा। *सूर्य॰ ४९।*

कण्णकला– कर्णकला, कर्णः–कोटिभागः, तमधिकृत्याऽपरेषां मतेन कला–मात्रा। *सूर्य॰ ८।*

कण्णगा– कन्यका, कन्या। *आव॰ ८६३।*

कण्णगूधा– कण्णमलो। *निशी॰ १९०* आ।

कण्णचवेडयं– दण्डविशेषः। *निशी॰ २९९* अ।

कण्णत्तिया– चर्मपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९। जीवा॰ ४१।*

कण्णधार– कर्णधारः। *आव॰ ३८७।* कर्णधारः, निर्यामक–विशेषः। *आव॰ ६०२।*

कण्णपाउरणा– कर्णप्रावरणनामा अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

कण्णपाली– कर्णपाली। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९।*

कण्णपावणो– कर्णप्रावरणः, अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४।*

कण्णपीढं– कर्णपीठम्, कर्णाभरणविशेषरूपम्। *जीवा॰ १६२। भग॰ १३२। प्रज्ञा॰ ८८। औप॰ ५०।*

कण्णपूर– कर्णपूरम्, कर्णाभरणविशेषः। *भग॰ ३१७।*

कण्णरोडयं– कर्णरोटकम्, राटिः। *आव॰ ८९।*

कण्णलोयण– शतभिषग्नक्षत्रस्य गोत्रम्। *सूर्य॰ १५०।*

कण्णवालि– कर्णवाली, कर्णोपरितनविभाग भूषणविशेषः। *जम्बू॰ १०६।*

कण्णसप्पे– राहोः नवमं नाम। *सूर्य॰ २८७।*

कण्णा– तरुणित्थी। *निशी॰ १६७* आ।

कण्णाकण्णिं– *निशी॰ ५५* अ। ण संघरिस्संति ताहे कण्णाकण्णिं भरेति। *निशी॰ ५०* आ।

कण्णाघातो– कर्णाघातः, कर्णयोराघातः। *उत्त॰ ३०३।*

कण्णागतं– कर्णायतम्, कर्णं यावद् आयतम्–आकृष्टम्। *भग॰ ९३।*

कण्णाायय– कर्णं यावदाकृष्टः कर्णायतः। *भग॰ २३०।* आकर्णमाकृष्टः। *भग॰ ३२३।*

कण्णाहुइं– पूर्णकर्णाम्। महा ।

कण्णिअ– कर्णिकाः, कोणाः। *जम्बू॰ २२६।* बीजकोशः। *जम्बू॰ २४२।*

कण्णिए– कर्णिकाः, कोणाः। *अनुयो॰ १७२।*

कण्णिगा– कर्णिका, बीजकोशः। *जम्बू॰ २८४।*

कण्णिते– कर्णिका, कोणविभागः। *स्था॰ ४३५।*

कण्णियार– कर्णिकारः, वृक्षविशेषः। *जीवा॰ ३५५।*

कण्णियारकुसुमं– कर्णिकारकुसुमम्, काञ्चनारककुसुमम्। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

कण्णिल्लं– पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् कण्णिलायनम्, शतभिषग्गोत्रम्। *जम्बू॰ ५००।*

कण्ह– कृष्णः, परिव्राजकविशेषः। *औप॰ ९१।* नवमो वासुदेवः। *आव॰ १५६।* साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।* बलदेववासुदेवयोर्धर्माचार्यनाम। *सम॰ १५३।* वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।* कृष्णः– पुरुषसिंहधर्माचार्यः। *आव॰ १६३।* वसुदेवपुत्रः। *दशवै॰ ३६।* हरितविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।* द्वारकायां वासुदेवः। *अन्त॰ २। ज्ञाता॰ १००।* वासुदेवनाम। *निर॰ ३९।*

कण्हकंद– कृष्णकन्दः। अनन्तकायवनस्पतिविशेषः। *भग॰ ३००। प्रज्ञा॰ ३६४।*

कण्हकणवीरए– कृष्णकणवीरः। वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

कण्हगोमी– कृष्णगोमी, कर्णशृगाली। *व्यव॰ १८७* अ।

कण्हदल– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

कण्हपक्खिय– कृष्णपाक्षिकः। अधिकतरसंसारभाग् जीवः। *प्रज्ञा॰ ११७।*

कण्हपरिव्वायगा– कृष्णपरिव्राजकाः। परिव्राजकविशेषः। नारायणभक्तिका इति केचित्। *औप॰ ९१।*

कण्हफुसिताओ– कर्णपृषतः। *निशी॰ ६०* आ।

कण्हबंधुजीवए– कृष्णबन्धुजीवः। वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

कण्हभूमी– कृष्णभूमिः। *आव॰ १०१।*

कण्हराई– ईशानेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५।* कृष्णपुद्गलरेखा। *भग॰ २७१।*

कण्हराती– कृष्णराजी, कृष्णपुद्गलपङ्क्तिरूपत्वात्। *स्था॰ ४३२।* धर्मकथाया दशमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५३।*

कण्हरातीते– उत्तरपूर्वरतिकरपर्वते ईशानेन्द्रस्याग्रमहिष्या राजधानी। *स्था॰ २३१।*

कण्हलेस्सा–कृष्णद्रव्यात्मिका लेश्या, कृष्णद्रव्यजनिता वा लेश्या कृष्णलेश्या। *प्रज्ञा॰ ३४४।*

कण्हवडेंसय– कृष्णावतंसकम्। ईशानकल्पे विमानविशेषः। *ज्ञाता॰ २५३।*

कण्हवेला– आभीरविसए नदी। *निशी॰ १०२* आ।

कण्हसप्प– कृष्णसर्पः। दर्वीकर–अहिभेदविशेषः। दर्वीव दर्वी–फणा, तत्करणशीलः। *जीवा॰ ३९। प्रज्ञा॰ ४६।* राहोः नवमं नाम। *भग॰ ५७५।*

कण्हसिरी– कृष्णश्रीः। दत्तगाथापतिभार्या। *विपा॰ ८२।*

कण्हसूरवल्ली– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कण्हा– कृष्णा। अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। अन्तः *२५।* कण्हा (कण्णा)–कृष्णा (कन्या)। आभीर–विषये नदीविशेषः। *आव॰ ४१२।* वासवदत्तराज्ञी। *विपा॰ ९५।* धर्मकथाया दशमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५३।* कृष्णा–आर्याविशेषः। *अन्त॰ २८।* ईशानेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५।* कृष्णा–योगद्वारविवरणेऽचल–पुरासन्ननदीविशेषः। *पिण्ड॰ १४४।*

कण्हाते– उत्तरपूर्वरतिकरपर्वते ईशानेन्द्रस्याऽग्रमहिष्या राज-धानी। *स्था॰ २३१।*

कण्हासोए– कृष्णाशोकः। वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

कण्हुइ– कुत्रचिद् देशे काले वा। *उत्त॰ १४०।*

कण्हुई– कस्मिंश्चित् सूत्रादौ वस्तुनि वा। *उत्त॰ १२६।*

कण्हुहरे– कण्हु–कस्यार्थं हरिष्यामि इत्येवमध्यवसायी। *उत्त॰ २७४।*

कण्हे– निरयावलिकानां प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। *निर॰ ३।*

कण्हो– बंभवत्त। कण्हो–क्रोधजयी। *मरण॰ ।*

कतं– कृतं ममानेन तत्प्रयोजनमिति प्रत्युपकारार्थं यद्दानं तत् कृतम् । *स्था॰ ४९६।*

कतकज्जो– कृतकार्यः। निष्ठिताखिलप्रयोजनः। *सूर्य॰ २९२।*

कतणासी– कृतनाशिनः, अकृतज्ञाः। *ओघ॰ ७२।*

कतपुण्णो– कृतपुण्यः, राजगृहे धनावहपुत्रः। *आव॰ ३५३।*

कतमाला– एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५।*

कता– कदा। *आव॰ ३४२।*

कतिकट्ठा– कतिकाष्ठा, किंप्रमाणा। *सूर्य॰ ७।*

कतिविया– कइविका–कलाचिका। *ज्ञाता॰ ४४।*

कतिसंचिता– कति–कतिसङ्ख्याताः, सङ्ख्याता एकैक–समये ये उत्पन्नाः सन्तः सञ्चिताः– कत्युत्पत्तिसाधर्म्याद् बुद्ध्या राशीकृतास्ते कतिसञ्चिताः। *स्था॰ १०५।*

कतिसंचिया– कतीति सङ्ख्यावाची, ततश्च कतित्वेन सञ्चिताः–एकसमये सङ्ख्यातोत्पादेन पिण्डिताः कतिस-ञ्चिताः। *भग॰ ७९६*।

कती– 'कति' इत्यनेन सङ्ख्यावाचिना द्व्यादयः सङ्ख्या–वन्तोऽभिधीयन्ते। *स्था॰ १०५*।
कृतमस्यास्तीति कृती–पुण्यवान् परमार्थपण्डितो वा। *सूत्र॰ २९८*। सङ्ख्यावाची। *भग॰ ७९९*।

कत्त– चर्म्मकम्। *निशी॰ ५६* आ।

कत्तरी– कर्त्तरी। *आव॰ ६२७*।

कत्तलिकारूवा– पञ्चलतिकाः। *जम्बू॰ २२३*।

कत्तविरिए– कार्त्तवीर्यः। सुभूमचक्रवर्त्तिपिता। *आव॰ १६२*। *स्था॰ ४३०*।

कत्तवीरिओ– सुभूमचक्रवर्त्तिनः पिता। *सम॰ १५२*।
कार्त्तवीर्यः–अनन्तवीर्यपुत्रः। *आव॰ ३९२*। कार्त्तवीर्यः–संजातकामः–जातेच्छः। *भग॰ १४*।

कत्ताविय– कर्त्तापितम्। कर्तनं कारितम्। *आव॰ ४१८*।

कत्ति– कत्तिकडं–क इति कृतम्। *आव॰ ७८२*। छदडिया (सादडी)। *निशी॰ ४२* अ।

कत्तिओ– कार्त्तिकः। राजाभियोगविषये हस्तिनापुरे श्रेष्ठी। *आव॰ ८११*। श्रेष्ठिविशेषः। निर॰ २२।

कत्तिय– कृत्तिका। प्रथमं नक्षत्रम्। *स्था॰ ७७*। भरतक्षेत्र आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतिकायां षष्ठतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। *सम॰ १५४*।

कत्तियाणक्खत्ते– कृतिकानक्षत्रम्। *सूर्य॰ १३०*।

कत्ती– कर्त्तरिका (कृत्तिका)। *स्था॰ २३४*। चम्मं। *निशी॰ १८* अ। कर्त्तरी, चर्मपञ्चके पञ्चमो भेदः। *आव॰ ६५२*।

कत्थं– यत्र कथिकादि गीयते तत् कथ्यम्। *जम्बू॰ ३९*।
कत्थः–अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *आचा॰ ५९*।

कत्थपुडिय– गान्धिकः। *निशी॰ ३५६* अ।

कत्थुरी– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

कत्थुल– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

कत्थुलगुम्मा– कस्तुलगुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

कत्थे– कथायां साधुकथ्यं ज्ञाताध्ययनवत्। *स्था॰ २८८*।

कथगो– कथकः। *जीवा॰ २८१*।

कथनम्– उपदेशः। *आव॰ ६०५*।

कदंबचीरिका– शस्त्रविशेषः। *स्था॰ २७३*।

कदंबपुप्फसंठिय– कदम्बपुष्पसंस्थितम्। कदम्बपुष्पवद् अधः सङ्कुचितम् उपरि विस्तीर्णमुत्तानीकृताऽर्द्धकपित्थसंस्थानसं–स्थितम्। *सूर्य॰ २७४*।

कदर्थितः– हीलितः। *आचा॰ ४३०*।

कदल– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*।

कदली– वल्लिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१, ३३*। *आचा॰ ३०*।
लतावलयभेदः। *उत्त॰ ६९२*। *नन्दी॰ २१५*।

कदलीथंभो– कदलीस्तम्भः। *प्रज्ञा॰ २६६*।

कदलीहरं– कदलीगृहम्। *आव॰ १२३*।

कदशनम्– निष्ठानं–सर्वगुणोपेतं संभृतमन्नम्, रसनिर्व्यूढम्– एतद्विपरीतं कदशनम्। *दशवै॰ २३१*।

कद्दम– कर्दमः। यत्र प्रविष्टः पादादिर्नाक्रष्टुं शक्यते कष्टेन वा शक्यते। *स्था॰ २३५*।
द्वितीयोऽनुवेलन्धरनागराजः। *जीवा॰ ३१३*। कर्दमो गोवाटादीनाम्। *स्था॰ २१९*। कर्दमः नदीवि-दरकलक्षणः। *ज्ञाता॰ ६७*।

कद्दमए– कमर्दमकः। *स्था॰ २२६*। आग्नेय्यां दिशि वर्तमाने विद्युप्प्रभपर्वते नागराजः। वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ १९९*।

कद्दमजलं– कर्दमजलम्। यद् घनकर्दमस्योपरि वहति। *ओघ॰ ३२*।

कद्दिवसं– कस्मिन् दिवसे। *मरण॰*।

कनंगरा– काय–पानीयाय नङ्गराः–बोधिस्थनिश्चलीकरणपा–षाणस्ते कनङ्गराः कानङ्गरा वा, ईषन्नङ्गर इत्यर्थः। *विपा॰ ७१*।

कनकरसस्तवकाञ्चितानि– कनकखचितानि। *आचा॰ ३९४*।

कनकालुकः– भृङ्गारकः। *जम्बू॰ ५६*। भृङ्गारः। *जम्बू॰ २६२*।

कनकावलि– तपोविशेषः। *व्यव॰ ११३* आ। कनकावलिः–आभरणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०७*।

कन्दलीकन्दक– सचित्तं तरुशरीरम्। *आव॰ ८२८*।

कन्दुकगतिः– सर्वेण सर्वत्रोत्पद्यते विमुच्यैव पूर्वस्थानम्। *भग॰ ८४*। गतिविशेषः। *स्था॰ ८९*।

कन्न– कर्णः। *पिण्ड॰ १५३*।

कन्नकुज्जं– कन्यकुब्जम्। यत्र मृगकोष्ठकनगरे जितशत्रुराज्ञः कन्या यामदग्न्येन पूर्वं कुब्जीकृताः।

पञ्चाद् अकुब्जीकृताः, अतः संवृत्तं तन्नगरमान। नगरविशेषः। *आव॰ ३९२।*

कन्नधार– कर्णधारः। निर्यामकः। *ज्ञाता॰ १३६।*

कन्नपाउरणदीवे– कर्णप्रावरणद्वीपः। अन्तर्द्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६।*

कन्नपालो– कर्णपालः। अलोभोदाहरणे मेण्ढः। *आव॰ ७०१।*

कन्नपीढ– कर्णावेव पीठे आसने–कण्डलाधारत्वात् कर्णपीठम्। *स्था॰ ४२१।*

कन्नवेयणा– कर्णवेदना। श्रोत्रपीडा। *भग॰ १९७।*

कन्नस– कनिष्ठम्। लघु, जघन्यम्। *उत्त॰ २३५।*

कन्नसर– कर्णसरः। कर्णगामी। *दशवै॰ २५३।*

कन्नाघाओ– कर्णाघातः। *आव॰ ७१९।*

कन्नामोडओ– कर्णामोटकः। *आव॰ ४८५।*

कन्नारोडयं– कर्णस्फोटम्। *बृह॰ २८* आ।

कन्नालीयं– कन्यालीकम्। कन्याविषयमनृतम्, अभिन्नकन्य–कामेव भिन्नकन्यकां वक्ति विपर्ययो वा। *आव॰ ८२०।*

कन्नाहाडिया– कर्णाहृता। *आव॰ ४११।*

कन्नाहेडयं– कर्णाहेटकम्। *आव॰ २९२।*

कन्निया– कर्णिका। बीजकोशः। *भग॰ ५१३।* मध्यगण्डिका। कर्णिका। कर्णिका नाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी। *प्रज्ञा॰ ८५।* कर्णिका–पत्राधारभूता। *प्रज्ञा॰ ३७।*

कन्नीय– कर्णिका। *भग॰ ५११।*

कन्नीरहो– कर्णीरथः। प्रवहणम्। *विपा॰ ४५।* प्रवहणविशेषः। *ज्ञाता॰ ९३।*

कन्नुक्कड– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।*

कन्नू– कांनु। कामपि। *उत्त॰ १९४।*

कन्याचोलकः– यवनालकः। *आव॰ ४२।* *नन्दी॰ ८८।* जवनालकः। *प्रज्ञा॰ ५४२।*

कन्हो– द्वारवत्यां वासुदेवः। *बृह॰* पृ॰ ५६ आ।

कपर्दक– वराटकः। *ओघ॰ १२९।* वराटः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

कपाल– रोगविशेषः। *आचा॰ २३५।*

कपिंजल– कपिञ्जलः। लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।*

कपिंजलक– कपिञ्जलकः। पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

कपिञ्चुः– चित्रपिच्छपक्षिविशेषः। *आचा॰ ६९।*

कपित्थं– कपेरिव लम्बते, 'त्थे'ति च करोतीति कपित्थम्। *अनुयो॰ १५०।* फलविशेषः। *प्रज्ञा॰ १०।* *दशवै॰ १००।*

कपिल– स्वयंबुद्धविशेषः। *बृह॰ १८७* आ। प्रत्येकबुद्ध–विशेषः। *उत्त॰ ५।* मतविशेषप्ररूपकः। *उत्त॰ २६६।*

कपिलदरिसण– मतविशेषः। *आचा॰ १६३।*

कपिहसितं– विरलवानरमुखहीसतम्। *ओघ॰ २०१।*

कपोत– पक्षिविशेषः। *आचा॰ ३१४।*

कपोय– कपोतः। लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।*

कपोलपाली– गण्डरेखा। *जीवा॰ २७६।*

कप्प– वत्थपुप्फचम्मादि वा कप्पं, रुक्खादि वा कप्पं। *निशी॰ ७१* अ। कल्पत इति कल्पः स्वकार्य करणसामर्थ्योपेतः। *भग॰ १५५।* कल्पः–बृहत्कल्पः। सप्तमनिर्युक्तिस्थानम्। *आव॰ ६१।* *आव॰ ७९३।* कल्पं–कम्बल्यादिरूपम्। *ओघ॰ ३४।* कल्पः। *अनुयो॰ १७१।* तथाविधसमाचारप्रतिपादकः। *ज्ञाता॰ ११०।* कल्पः–तथाविध-समाचारनिरूपकं शास्त्रम्। *औप॰ ९३।* कत्तव्वं। *निशी॰ २५* आ। कल्पः–विकल्पः। समाचारो वा। *औप॰ ३६।* छेदः। *स्था॰ ४९६।* दसाकप्पववहारा। *निशी॰ १००* आ। कल्पः–आचारः। *प्रज्ञा॰ ७०।* अपरिहार्यः। *निशी॰ १३२* आ। कल्पः–दशाश्रुत–स्कन्धकल्पव्यवहाराः। *व्यव॰ ६३* आ। आचारः। *आचा॰ १६८, २४४।* *स्था॰ २४४।* आचारो मर्यादेत्यर्थः। *स्था॰ ५११।* करणमाचारः। *स्था॰ १६७।* साध्वाचारः। *स्था॰ ३७१।* छेदः। *स्था॰ ४९७।* जिनकल्पिकादिसमाचारः। *भग॰ ६१।* यतिक्रिया-कलापः। *उत्त॰ ५०२।* यतिव्यवहारः। *उत्त॰ ६१६।* कल्पते–साध्वादिक्रियासु समर्थो भवतीति कल्पो-योग्यः। *उत्त॰ ६३६।* विधिः। *नन्दी॰ ६१।* व्यवस्था स्थविरक-ल्पादिरूपा यत्र वर्ण्यते ग्रन्थे सः। *नन्दी॰ २०६।* देवलोकः। *नन्दी॰ २०७।* कल्पसूत्रम्। *आव॰ ७२४।* दिवसः। *बृह॰ २२४* आ। क्वचित्करणे। *बृह॰ ३* अ। कल्पोक्त-साध्वाचारः। *स्था॰ ३७३।* कल्पाद्युक्तसाध्वाचारः सामायिक-च्छेदोपस्थापनीयादिः। *स्था॰ ३७४।* कल्प्यन्ते–इन्द्रसा-मानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पाः–देवलोकाः। *उत्त॰ ७०२।* कम्बल्यादिरूपम्। *ओघ॰ ३४।* *सम॰ ३८।* कृत्यम्। *आव॰*

७६१। कारणपुव्वगो। नि० *७९* अ। समाचारः। *प्रश्न० १०६*। अध्वकल्पः। *बृह० १२२* आ। समाचारो विकल्पो वा। *प्रश्न० १५७*। कल्पशा-स्त्रोक्तसाधुसमाचारः। *बृह० २४६* आ। औपम्यं, सामर्थ्यं, वर्णना, छेदनं, करणं, अधिवासश्च। *आव० ५००*। अध्व-कल्पः। *निशी० ४०* अ। *आव० ३२४*। योग्यः। *दशवै० ६*।

तथाविधसमाचारनिरूपकं शास्त्रम्। *भग० ११४*। कल्पः– यज्जिनकल्पिका अनवस्तृता रात्रावुत्कुटुकास्थिष्ठन्ति एष कल्पः। यत्कारणे समापतिते अज्झुषिराणि (अशुषि–राणि) तृणानि गृह्णन्ति एष कल्पः। *व्यव० २८७* अ। कल्पः– सदृशः। *उत्त० ४६५*। समाचारी। *व्यव० १३६* आ। कल्पाध्ययनम्। *व्यव० ४२०* अ। सामर्थ्ये वर्णनायां च, छेदने करणे तथा। औपम्ये चाऽधिवासे च, कल्पशब्दं विदेर्बुधाः ।।१।। *बृह० ३* अ। जिणकप्पियाण अत्थुरणव–ज्जो कप्पो। जिणकप्प–थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्झुसिरगहणे कप्पो भवति। *निशी० १६१* आ। *८,६४,००,००, ०००* वर्षात्मकः कालः। *आचा० १७*। वैमानिकदेवाऽऽवा-साभिधायकः। *भग० ९१*। देवलोकः। *भग० २२१*। स्वकार्यकरणसमर्थो वस्तुरूपः। *भग० २६९*। छेदः। *उत्त० ६३८*। उपधिः। *दशवै० २५०*। *पिण्ड० ७२*।

कप्पइ– कल्पते। युज्यते। *आचा० ४७*। कल्प्यते–वर्त्तते। *आचा० १४१*। कल्पते–युज्जते। *उपा० १३*। कल्पते–प्रभवति, पौनःपुन्येनोत्पद्यते। *आचा० १४१*।

कप्पओ– कल्पकः। कपिलब्राह्मणपुत्रः। *आव० ६९१*।

कप्पकरण– कल्पकरणम्। भाजनस्य धावनविधिलक्षणम्। *बृह० २५८* आ। *निशी० २८* आ।

कप्पकार– कल्पकराः। विधिकारिणः, परिकर्मकारिणः। *जम्बू० २४२*।

कप्पट्ठ– कल्पस्थः। समयपरिभाषया बालक उच्यते। *बृह० १४५* आ।

कप्पट्ठओ– बालकः। *पिण्ड० ९२*।

कप्पट्ठग– बालः। *निशी० ११९* आ। बालकः। *व्यव० ८* अ। कल्पस्थकाः–बालाः। *व्यव० ११६* अ।

कप्पट्ठगरूय– कल्पस्थकरूपः। शिशुः। *आव० ६३९*।

कप्पट्ठिता– जिणकप्पिया। *निशी० २६* आ।

कप्पट्ठिता– कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचारे स्थितिः– अवस्थानं कल्पस्य मर्यादा। *बृह० २५१* अ।

कप्पट्ठितो– आयरियाण पदाणुपालगो। *निशी० ३०७*।

कप्पट्ठिया– श्रेष्ठिवधूः। *स्था० २६६*। पञ्चयामधर्मप्रतिपन्नाः। *बृह० १२५* अ।

कप्पट्ठी– सेज्जायरधूया। *निशी० ७७* आ। तरुणी। *बृह० ७९* आ।

कप्पडप्पहारो– कर्पटप्रहारः। लकुटाकारवलितचीवरैस्ताडनम्। *प्रश्न० ५६*।

कप्पडिओ– कार्पटिकाः। *ओघ० ८९*। *सम० ३८*। कार्पटि–कः–ब्रह्मदत्तसेवकः। *आव० ३४१*। स्वप्नेदृष्टान्तः। *आव० ३४३*।

कप्पडिगो– कार्पटिकः। *आव० ३८४*।

कप्पडितो– ब्रह्मदत्तसेवकः। *उत्त० १४५*।

कप्पडिय– कार्पटिकः। *आव० १९१*। *दशवै० ५५*। दुर्बलः। *आव० ८१४*। भिक्षाचराणां सार्थः। *बृह० १२५* अ।

कप्पडिया– भिक्खायरा। *निशी० ३७* अ। *निशी० १८६* अ। कर्पटैश्चरन्तीति कार्पटिकाः। वा–कपटचारिणः। *ज्ञाता० १५२*।

कप्पणं– कल्पना–रचना। *जम्बू० २१२*।

कप्पणसत्थयं– शस्त्रविशेषः। *निशी० १८* आ।

कप्पणा– कल्पना क्लृप्तिभेदः। *औप० ६२*।

कप्पणाविगप्पा– कल्पनाविकल्पाः कृतिभेदाः। *भग० ३१७*।

कप्पणि– कल्पनी–कर्तिकाविशेषः। *प्रश्न० २१*। कल्पन्यः कृपाण्यः। *जम्बू० २०६*। कल्प्यते छिद्यते यया सा कल्पनी शस्त्रविशेषः। *आचा० ६१*।

कप्पणिज्जं– कल्पनीयं–उद्गमादिदोषपरिवर्जितम्। *आव० ८३७*। शस्त्रविशेषः। *आव० ६५०*।

कप्पति– कल्पते–युज्यते। *प्रश्न० १२४*।

कप्पतित्पे– पात्रक्षालनादौ। *गच्छा०*।

कप्पपालो– कल्पपालः। *जम्बू० १००*।

कप्पय– कल्प एव कल्पकः–छेदः खण्डं कर्परमिति। *उपा० २०*।

कप्पयति– कल्पयति–छिनत्ति। *निशी० १९०* अ।

कप्पर– कर्परम्। *आव० ६२०, ६२२, ३५२*। कवालं *निशी० १०६* अ। कपालम्। *बृह० ६८* आ। कर्प्परः। *आव० १०३, ४१२*।

कप्परुक्ख–

उक्तव्यतिरिक्तसामान्यकल्पितफलदायित्वेन कल्पना कल्पस्तत्प्रधाना वृक्षाः। *स्था॰ ३९९।*

कप्परुक्खग– चैत्यवृक्षः। *स्था॰ १४५।*

कप्पडिंसियाओ– उपाङ्गानां पञ्चमवर्गे द्वितीयम्। *निर॰ ३।*

कप्पविमाणोववत्तिआ– कल्पेषु–देवलोकेषु, न तु ज्योतिश्चारे, विमानानि, देवावासविशेषाः, अथवा कल्पाश्च सौधर्मादयो विमानानि च तदुपरिवर्तिग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्तिः–उपपातो–जन्म यस्याः सकाशात् सा कल्पविमा-नोपपत्तिका। *स्था॰ ९८।*

कप्पा– कल्पा। कल्पनीया। *प्रश्न॰ ५१।*

कप्पागं– दण्डम्। *आव॰ ७००।* कल्पाकं–सूत्रतोऽर्थतश्च प्राप्तं भिक्षुम्। *व्यव॰ ५९* आ।

कप्पातीत– जिनकल्पस्थविरकल्पाभ्यामन्यत्र। तीर्थकरः। *भग॰ ८९४।*

कप्पायं– कल्पः–उचितो य आयः–प्रजातो द्रव्यलाभः स कल्पायः। *विपा॰ ५७।* कल्पाकः–शिरोजबन्धकल्पज्ञः। *औप॰ ७७।*

कप्पासट्ठिमिंजिया– कर्पासास्थिमिञ्जिका–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

कप्पासिअ– त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त॰ ६९५।*

कप्पासिए– कार्पासिकः। *अनुयो॰ १४९।*

कप्पासिया– कर्मार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

कप्पासो– पोंडा वमणी तस्स फलं पम्हा कच्चणिज्जा सणो वणस्सति जाती, तस्स वग्गो कप्पणिज्जो कप्पासो भण्णति। एला लाडाणं गड्डरा भण्णंति तस्स रोमा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति। *निशी॰ १९१* आ।

कप्पिअ– कल्प्यम्। *आव॰ ११५।* कल्पितं स्वबुद्धिकल्पना–शिल्पनिर्मितम्। *दशवै॰ ३४।* कल्पितः–यथास्थानं विन्यस्तः। *जम्बू॰ १८९।* कल्पिकं, एषणीयम्। *दशवै॰ १६८।* कल्पिकः–सूत्रादिद्वादशविधः। *बृह॰ ६२* आ।

कप्पिआ– कल्पिका याः सौधर्म्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतयस्ताः कल्पिकाः। *नन्दी॰ २०७।*

कप्पिआकप्पिअं– कल्पाकल्पप्रतिपदिकमध्ययनं कल्पाकल्पम्। *नन्दी॰ २०४।*

कप्पिओ– कल्पितः। *विपा॰ ३८।* कल्पितो–भेदवान्। कल्पिकः–उचितः। *विपा॰ ४७।* कल्पितः–वस्त्रवत्। खण्डितः। *उत्त॰ ४६०।* कल्पितः–कल्पनीभिर्वस्त्रव–त्खण्डितः। *उत्त॰ ४६०।*

कप्पिते– कल्पिकं–कल्पनीयमुचितमभिग्रहविशेषाद्भक्तादि। *स्था॰ २९८।*

कप्पियं– कल्पितं–इष्टं, रचितं वा। *औप॰ ५९।*

कप्पिया- कल्पिता-व्यथस्थितिताः। *आचा॰ ३०५।*

कप्पियारं– कल्पिकं। *बृह॰ २०७* आ। कल्पितारं–मार्ग-दर्शकः। *बृह॰ १२१* आ।

कप्पूरं– तंबोलपत्तसहिया खायइ। *निशी॰ ६०* अ। कर्पूरः–घनसारः। *प्रश्न॰ १६२।*

कप्पूरपुड– गन्धद्रव्यः। *ज्ञाता॰ २३२।*

कप्पेऊणं– कल्पयित्वा प्रक्षाल्य। *ओघ॰ २२२।*

कप्पेति– कल्पयति–छिन्दति। *आव॰ १२३।*

कप्पमाणे– कल्पयन्–कुर्वाणः। *ज्ञाता॰ २३८।*

कप्पोवगा– कल्प्यन्ते–इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्र–कारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पाः–देवलोकास्तानुपगच्छन्ति उत्पत्तिविषयतया प्राप्नुवन्तीति कल्पोपगाः। *उत्त॰ ७०२।*

कप्पोववण्णे– कल्पेषु सौधर्मादिषु उपपन्नः। *जीवा॰ ३४६।*

कप्पोववन्नगा– सौधर्मादिदेवलोकोत्पन्नाः। *स्था॰ ५७।*

कप्पोववन्ने– कल्पेषु–सौधर्मादिषु उपपन्नः कल्पोपपन्नः। *सूर्य॰ २८१।*

कबंध– कबन्धं–शिरोरहितकडेवरम्। *प्रश्न॰ ५०।*

कब्बड– क्षुल्लप्राकारवेष्टितं–कर्बटम्। *प्रज्ञा॰ ४८। आचा॰ २८५। राज॰ ११४। जीवा॰ ४०, २७९।* कुनगरम्। *भग॰ ३६। प्रश्न॰ ६९, ३९, ४२। सूत्र॰ ३०९। स्था॰ २९४। अनुयो॰ १४२। औप॰ ७४। निशी॰ २२९* अ। कुनगरं, जत्थ जलथलसमुब्भवविचित्तभंडविणियोगो णत्थि। *दशवै॰ १५७।* कर्बटं–पांशुप्राकारनिबद्धं क्षुल्लकप्राकारवेष्टितम्। *व्यव॰ १६८* अ। *दशवै॰ १६३।* कर्बटानि–क्षुल्लकप्राकार–वेष्टितानि अभितः पर्वतावृतानि वा। *जम्बू॰ १२१।* कर्बटः–महाक्षुद्रसन्निवेशः। *दशवै॰ २७५।*

कब्बडए– अष्टाशीत्यां षोडशमहाग्रहः। *स्था॰ ७८।*

कब्बडमारी– मारीविशेषः। *भग॰ १९७*।

कब्बरूवं– नगरविशेषः। *भग॰ १९३*।

कब्बडाति– कुनगराणि। *स्था॰ ८६*।

कब्बडिया– अत्ताणा। *निशी॰ ११* अ।

कब्बड्ढ– बालकः। *गच्छा॰*।

कब्बालभयते– कब्बाडमृतकः–क्षितिश्वानक ओडादिः, यस्य स्वं कर्म्मार्प्यते द्विहस्ता त्रिहस्ता वा त्वया भूमिः खनितव्यै–तावत्ते धनं दास्यामीत्येवं नियम्येति। *स्था॰ २०३*।

कब्बुरए– कर्बुरकः–अष्टाशीत्यां महाग्रहे षोडशः। *जम्बू॰ ५३४*।

कभल्लं– कपालं, घटादिकर्परम्। *अनुत्त॰ ५*। कपालम्। *उपा॰ २१*।

कमं– अवतारं। *निशी॰ १०३* अ।

कमंडलु– भाजनविशेषः। *निशी॰ ३४७* आ।

कम– भगवत्यां त्रयोदशशतेऽष्टमोद्देशकः कर्म्मप्रकृतिप्ररूपणा–र्थकः। *भग॰ ५९६*। क्रम लङ्घय। *प्रश्न॰ २०*। क्रमः–यतिवि–हित आचारः। *उत्त॰ ५०५*। क्रमपरं तु द्रव्यादिचतुर्द्धा। *आचा॰ ४१५*। पाकस्य पेयादिपरिपाट्या प्रदानं क्रमः। *आव॰ ८३७*। क्रमः। *आचा॰ ४१५*।

कमइ– कामति–घटते। *पिण्ड॰ ७९*।

कमजोग– क्रमयोगः परिपाटीव्यापारः। *दशवै॰ १६३*।

कमढं– खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति। *निशी॰ १९०* आ। कमढं–पात्रविशेषः। *व्यव॰ २१८* आ।

कमढगं– कमढकं–पात्रविशेषः। *व्यव॰ ३२४* आ। साधुजनप्रसिद्धं भाजनम्। *निशी॰ ६१* अ। करोडगागारं। *निशी॰ ७१* आ। उड्डाहपच्छायणं। *निशी॰ १११* आ। सबाह्याभ्यन्तरं शुक्ललेपं कांस्य करोटकाकारं भाजनम्। *बृह॰ २९०* अ। कमढकं–आर्यि–कापात्रम्। *ओघ॰ २०९*। पात्रम्। *ओघ॰ ४४, ८२*।

कमढयं– अट्ठगमयं कंसभायणसंठाणसंठियं। *निशी॰ १७९* आ।

कमणिया– क्रमणिका–उपानहः। तलिका। *बृह॰ १०१* अ।

कमणी– पादप्रमाणं चर्म। *बृह॰ २२२* आ।

कमणीउ– उपानहौ। *निशी॰ १३७* अ।

कमणीओ– उपानहौ। *निशी॰ १८* अ।

कमती– क्रमते–घटते। *सम॰ १३९*।

कमभिण्णं– क्रमभिन्नं, यत्र यथासङ्ख्यमनुदेशो न क्रियते। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे त्रयोदशः। *आव॰ ३७५*।

कमभिन्न– क्रमभिन्नं–यत्र क्रमो नाराध्यते। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे त्रयोदशः। *अनुयो॰ २६२*। क्रमेण हि तिविहमित्येतन्न करोम्या–दिना विवृत्य ततस्त्रिविधेनेति विवरणीयं भवतीति, अस्य च क्रमभिन्नस्यानुयोगोऽयं यथाक्रमविवरणे हि यथासङ्ख्यदोषः स्यादिति तत्परिहारार्थं क्रमभेदः। *स्था॰ ४९५*।

कमल– नागपुरनगरे गृहपतिविशेषः। *ज्ञाता॰ २५२*। हरिण–विशेषः। *भग॰ १२७*। *राज॰ १४४*। *औप॰ २६*। रविबो-ध्यम्। *जम्बू॰ ११५*। सूर्यबोध्यम्। *ज्ञाता॰ १६८*। कमला-राजधान्यां कमलावतंसकभवने सिंहासनविशेषः। *ज्ञाता॰ २५२*। *प्रश्न॰ ८४*।

कमलदलो– शूलिहतश्चौरो नमस्काराद्यक्षः। *भक्त॰*।

कमलप्पभा– कालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। *भग॰ ५०४*। धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*।

कमलसिरी– महाबलस्य राज्ञी। *ज्ञाता॰ १२१*। कमलगृह–पतेर्भार्या। *ज्ञाता॰ २५२*।

कमलवडेंसए– कमलाराजधान्यां भवनम्। *ज्ञाता॰ २४२*।

कमला– कालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*। *स्था॰ २०४*। धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*। कमलकमलश्रियोः दारिका। *ज्ञाता॰ २५२*।

कमलामेलं– कमलामेलं, कमलीपीडं वा। *जम्बू॰ २३४*।

कमलामेला– द्वारिकायामन्यस्य राज्ञः दुहिता। *आव॰ ९४*। द्वारिकायां दारिका। *बृह॰ ३०* अ।

कमलावई– कमलावती, इषुकारनृपतिमहादेवी। *उत्त॰ ३९५*।

कमसो– क्रमतः। *उत्त॰ ७*।

कमा– धरणस्य प्रथमाग्रमहिषी। *ज्ञाता॰ २५१*।

कमिज्जणा– मुंडनादि। *निशी॰ १३७* आ।

कमेति– क्रमते–उत्सहते। *बृह॰ १६४* आ।

कम्बा– लता। *प्रश्न॰ १६४*।

कम्मंता– कर्याणि। कर्मकराः। *उत्त॰ २६३*।

कम्मंसि– सत्कर्माणि। *उत्त॰ ५९७, १८८*।

कम्मंसे– कर्माशान्मूलप्रकृतीः। *औप॰ ११३।*

कम्म– अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदायरूपं कर्म। *भग॰ ८२।* मदनोद्दीपको व्यापारः। *भग॰ १३४।* गमनादि। *भग॰ ३११।* ज्ञानावरणादि, क्रिया वा। *दशवै॰ ७०।* वानलक्षणं। *भग॰ ४७७।* क्रियत इति कर्म–क्रिया। *उत्त॰ २४६।* रक्षार्थं वसत्यादेः परिवेष्टनम्। *उत्त॰ ७१०।* क्रियते इति कर्म। *आव॰ ३५।* अनाचार्यकं सर्वकालिकं वा। *आव॰ ३५।* *नन्दी॰ १४४।* मनोवाक्कायक्रियालक्षणः। *उत्त॰ १८।* कर्म्मणाम्–सुखदुःखप्राप्तिपरिहारक्रियाणां कायिकाधिकरणिकाप्रादोषिक–कापारितापनिकाप्राणातिपातरूपाणां कृषिवाणिज्यादिरूपाणां वा। *आचा॰ १२९।* अनुष्ठानम्-ज्ञानावरणादि। *उत्त॰ ३४८।* ज्ञानावरणादि। *उत्त॰ ३८४।* ज्ञानावरज्ञादि। *ज्ञाता॰ २०५।* जीवनोपायः। *जम्बू॰ १३६।* कृषिवाणिज्यादि। *जम्बू॰ २५८।* यत्पुनर्विवाहप्रकरणादावुद्धरितं मोदकचूर्ण्यादि तद् भूयोऽपि भिक्षाचराणां दानाय गुडपाकदानादिना मोदकादि कृतं तत्कर्म्म। *पिण्ड॰ ७७।* कृषिवाणिज्यादि। *आव॰ १२९।* उत्क्षेपणापक्षेपणादि। *भग॰ ५७।* भ्रमणादिक्रिया। *स्था॰ २३।* अनाचार्यकं कादाचित्कं वा। *भग॰ ५७३।* *स्था॰ २८३।* कृष्याद्यानाचार्यकम्। *स्था॰ ३०४।* उद्देशकस्य–विभागस्य द्वितीयप्रकारः। *बृह॰ ८३।* कार्मणकरणं। *बृह॰ १२३ अ।* अष्टमपूर्वः। *स्था॰ १९९।* अक्षरलेखनादि–क्रिया। *प्रश्न॰ ११८।* अन्तर्यत्र सुधादिपरिकर्म्यते। *प्रश्न॰ १२७।* लौकिको व्यवहारः। *सूर्य॰ १६९।* उत्क्षेपणावक्षेप–णादि। *सूर्य॰ २८६।* वन्दनादिलक्षणम्। *सूर्य॰ २९६।* प्रज्ञा–पनायास्त्रयोविंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* कारकवाचकः कर्तुरीप्सिततमं, ज्ञानावरणीयादि वा, क्रिया वा। *आव॰ ५११।* ज्ञानावरणीयादि। *आव॰ ७८२।* आरेचनभ्रमणादि। *प्रज्ञा॰ ४६३।* हस्तकर्म, सावद्यानुष्ठानं वा। *सूत्र॰ १८०।* पृथिव्याद्यारम्भक्रिया। *प्रश्न॰ १२७।* कृष्यादिव्यापारः। *प्रश्न॰ ११७।* कृष्यादिकर्म। *उत्त॰ २०९।* अनुष्ठानम्। *आव॰ ४७८।* अनुष्ठानं–ज्ञानप्रशंसादि। *उत्त॰ १२७।* कुत्सिता–नुष्ठानम्। *उत्त॰ २०८।* अनाचार्यकं कादाचित्कं वा। *आव॰ ४९५।* कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा। *जीवा॰ ४६।* अनुष्ठानं, सम्यगुपयोगरूपं, मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादक-षाययोगरूपं वा । *सूत्र॰ ७१।* क्रिया, दशविधचक्रवाल सामाचारीप्रभृतिरितिकर्त्तव्यता। *उत्त॰ ६६।* यदानाचार्योपदेशजं सातिशयमनन्यसाधारणं गृह्यते भारवहनकृषि-वाणिज्यादि। *आव॰ ४०८।* कार्मणकरणं। *बृह॰ १२३ अ।* कृष्यादि। *पिण्ड॰ १२९।* अनावर्जकम्, अप्रीत्युत्पादकम्। *पिण्ड॰ १२९।* कृषिवाणिज्यादि, मोक्षानुष्ठानं वा। *प्रज्ञा॰ ५०।* उत्क्षेपणावक्षेपणादि गमनादि वा। *जम्बू॰ १३०।* अनाचार्योपदेशजं कर्म। *जम्बू॰ १३६।*

कम्मआसीविसा– कर्म्मणा–क्रियया शापादिनोपघातकर–णेनाशीविषाः–कर्माशीविषाः। *भग॰ ३४१।*

कम्मए– कर्मणो जातं कर्मजम्। *प्रज्ञा॰ २६८।* *जीवा॰ १४।* अष्टविधकर्मसमुदायनिष्पन्नमौदारिकादिशरीरनिबन्धनं च भवान्तरानुयायिकर्मणो विकारः कर्मैव वा कार्मणम्। *अनुयो॰ १९६।*

कम्मओ– कर्मतः–क्रियां जीवनवृत्तिम्– बाह्याभ्यन्तरभोज–नीयवस्तुप्राप्तिनिमित्तभूतामाश्रित्येत्यर्थः। *उपा॰ ९।*

कम्मकडा– नामकर्मनिर्वर्त्तिता, अथवा कर्म–कमनोद्दीपको व्यापारस्तत्कृतं यस्यां सा कर्मकृता। *भग॰ १३४।*

कम्मकर– किंकरादन्यथाविधाः कर्मकराः। *जम्बू॰ २६३।* कर्म्मकरः। *उत्त॰ २२५।* कर्मकरः। *आव॰ १९४।* नियत–कालमादेशकारी। *प्रश्न॰ ३८।* नायकाश्रितः कश्चिद्भोगपरः। *सूत्र॰ ३३१।*

कम्मकारो– कर्मकारः लोहारादिः। *जीवा॰ २८।* लोहकारो। *निशी॰ २१४ आ।*

कम्मगंथि– कर्मग्रन्थिः–अतिदुर्भेदघातिकर्मरूपः। *उत्त॰ ५९४।*

कम्मगंठिय– कार्मग्रन्थिकः। *प्रज्ञा॰ ३१९, ४२४।*

कम्मगुरू– कर्मगुरुः–कर्मणा गुरुरिव गुरुः अधोनरकगामितया। *उत्त॰ २७५।*

कम्मग्गहणं– कर्मग्रहणं, आधाकर्मिकग्रहणम्। *पिण्ड॰ ८६।*

कम्मचिट्ठे– कर्मचेष्टा–क्रियन्त इति कर्माणि–अग्नौ समित्प्रक्षे–पणादीनि तद्विषया चेष्टा। *उत्त॰ २६७।*

कम्मणकारिया– कार्मणकारिणी। *आव॰ ५६१।*

कम्मणजोए– कुष्ठादिरोगहेतुः। *ज्ञाता॰ १८८।*

कम्मणा– कार्मणं। तथाविधद्रव्यसंयोगः। *स्था॰ ३१४।*

कम्मदव्व– कर्मद्रव्यं–कर्मद्रव्यपरिच्छेदकोऽवधिः। *आव॰ ३६।* कर्मशरीरद्रव्यं। *प्रज्ञा॰ ३०४।*

कम्मधम्मसंजोगो– कर्मधर्मसंयोगः। *आव॰ ३८८।*

कम्मनरवइ– कर्मनरपतिः। *ज्ञाता॰ २३४।*

कम्मपगडी– कर्मप्रकृतिः–प्रज्ञापनायां त्रयोविंशतितमं पदम्। *भग॰ ६३।*

कम्मपट्ठवणसयं– कर्मप्रस्थापनाद्यर्थप्रतिपादनपरं शतं कर्म–प्रस्थापनशतम्। *भग॰ ९४२।*

कम्मपयडी– उत्तराध्ययने त्रयत्रिंशत्तममध्ययनम्। *सम॰ ६४।*

कम्मपुरिसा– कर्माणि–महारम्भादिसम्पाद्यानि नरकायुष्का-दीनीति पुरुषाः। *स्था॰ ११३।*

कम्मप्पवादो– कर्मप्रवादः–पूर्वविशेषः। *उत्त॰ १७४।*

कम्मप्पवाय– कर्मप्रवादः–ज्ञानावरणीयादिकर्मणो निदाना–दिप्रवदनमिति। *दशवै॰ १३।* ज्ञानावरणादि कर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति। *सम॰ २६।* कर्म्म–ज्ञानावरणीयादिक–मष्टप्रकारं तत्प्रकर्षेण–प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदैः सप्रपञ्चं वदतीति कर्म्मप्रवादम्। *नन्दी॰ २४१।*

कम्मप्पवायपुव्वं– कर्मप्रवादपूर्व–अष्टमपूर्वनाम। *आव॰ ३२१।*

कम्मभूमगपलिभागी– कर्मभूमगाः–कर्मभूमिजातास्तेषां प्रति-भागः–सादृश्यं तदस्यास्तीति–कर्मभूमगप्रतिभागी, कर्मभू-मगसदृश इत्यर्थः। *प्रज्ञा॰ ४९१।*

कम्मभूमगा– कर्म–कृषिवाणिज्जयादि मोक्षानुष्ठानं वा कर्म–प्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः, कर्मभूमा एव कर्मभूमकाः। *प्रज्ञा॰ ५०। जीवा॰ ४६।*

कम्मभूमा– कर्मभूमाः। *उत्त॰ ७००।* कर्म–कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा कर्मप्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः। *प्रज्ञा॰ ५०*

कम्मभूमि– कर्म्मभूमिः–कृष्यादिकर्म्मप्रधाना भूमिः कर्म्म–भूमिः–भरतादिका पञ्चदशधा। *स्था॰ ११५।* कृषिवाणिज्य–तपःसंयमानुष्ठानादिकर्मप्रधाना भूमयः कर्मभूमयो–भरतपञ्च-कैरावतपञ्चकमहाविदेहपञ्चकलक्षणाः। *नन्दी॰ १०२।*

कम्मभूमि– कर्मभूमिः–कृष्यादिकर्म्मस्थानभूता भरतादिका। *प्रश्न॰ ९६।*

कम्मभूमो– कर्मभूमः–कर्मप्रधाना भूमिर्यस्य सः। *जीवा॰ ४६।*

कम्ममासओ– त्रयो निष्पावा निष्पन्नः–कर्ममाषकः। *अनुयो॰ १५५।*

कम्ममाहूय– कर्म्माहूय–कर्मोपादाय। *आचा॰ १५८।*

कम्मयं– कर्मकम्–अनुष्ठानम्। *उत्त॰ २९०।* कार्मणं–यदु–दयात्कार्मणशरीरप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय कार्मणशरीर–रूपतया परिणमयति परिणमय्य च जीवप्रदेशैः सह परम्परा–नुगमरूपतया सम्बन्धयति तत्कर्मणशरीरनाम। *प्रज्ञा॰ ४६९।*

कम्मयणो– कम्मबहुलो। *निशी॰ २७६–अ।*

कम्मयर– कर्मकरः छगणपूञ्जाद्यपनेता। *जम्बू॰ १२२।*

कम्मया– कृषिवाणिज्यादिकर्मभ्यः सप्रभावा। *राज॰ ११६।*

कम्मरय– अष्टप्रकारं कर्मरजः–तत्र जीवगुण्डनपरत्वात्कर्मैव रजः कर्मरजः। *दशवै॰ १७।*

कम्मलेसा– कर्मलेश्या–कर्मस्थितिविधातृ तत्तद्विशिष्टपुद्गल–रूपा। *उत्त॰ ६५२।*

कमलेस्सं– कर्म्मणो योग्या लेश्या–कृष्णादिका कर्म्मणो वा लेश्या–'लिश श्लेषणे' इतिवचनात् सम्बन्धः कर्म्मलेश्या। *भग॰ ६५५।*

कम्मलेस्सा– कर्म्मणः सकाशाद्या लेश्या–जीवपरिणतिः सा कर्म्मलेश्या–भावलेश्येत्यर्थः। *भग॰ ६३१।*

कम्मविउसग्गो– ज्ञानावरणादिकर्म्मबन्धहेतूनां ज्ञानप्रत्यनी–कत्वादीनां त्यागः। *भग॰ ९२७।*

कम्मविगईए– कर्मणामशुभानां विगत्या–विगमेन स्थितिमा–श्रित्य। *भग॰ ४५६।*

कम्मविवेगो– कर्मविवेकः–कर्मनिर्जरा। *आव॰ ८५२।*

कम्मविसुद्धीए– प्रदेशापेक्षया। *भग॰ ४५६।*

कम्मविसोहीए– रसमाश्रित्य। *भग॰ ४५६।*

कम्मवेदए– कर्मवेदकः–प्रज्ञापनायाः पञ्चविंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।*

कम्मसंपया– कर्मसम्पत्, कर्म–क्रिया तस्याः सम्पत्–सम्पन्नता, कर्मणा वा ज्ञानावरणादीनां सम्पत्–

उदयोदीर–णादिरूपा। विभूतिः। *उत्त॰ ६६।*

कम्मसंवच्छरे– कर्मसंवत्सरः, कर्म–लौकिको व्यवहारस्त–त्प्रधानः संवत्सरः। *सूर्य॰ १६९। जम्बू॰ ४८७।*

कम्मसच्चा– कर्मणा–मनोवाक्कायक्रियालक्षणेन सत्याअ–विसंवादिनः कर्मसत्याः। *उत्त॰ २८१।*

कम्मसमज्जणसयं– कर्मसमर्जनलक्षणार्थप्रतिपादकं शतं कर्म्मसमर्जनशतम्। *भग॰ ९४०।*

कम्मसमारंभा– कर्मसमारंभाः क्रियाविशेषाः। *आचा॰ २३।* क्रियाविशेषाः, कर्मणो वा ज्ञानावरणीयाद्यष्टप्रकारस्य समारम्भा–उपादानहेतवः क्रियाविशेषाः। *आचा॰ २७।* कर्मसमारम्भाः पाकादयः क्रियन्ते। *आचा॰ १३०।* जीवानु-द्दिश्य य उपमर्दरूपः क्रियासमारम्भः। *आचा॰ २६९।*

कम्मसरीरगं– कर्म्मशरीरकम्–औदारिकादिशरीरम्। *आचा॰ १४३।*

कम्मसाला– घटादिनिष्पादनस्थानम्–कुम्भकारकुटी। *बृह॰ १७५ अ।* जत्थ कम्म कारेति। *निशी॰ २२१ ।*

कम्मस्सबंधए– कर्मणो बन्धकः–यथाजीवः कर्मणो बन्धको भवति तथा प्रतिपादकं–प्रज्ञापनायाश्चतुर्विंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।*

कम्महेउयं– सिक्खापुव्वगं। *दशवै॰ ११३।*

कम्मा– क्रिया। *आचा॰ २५।*

कम्माजोए– काम्ययोगः–कमनीयताहेतुः। *ज्ञाता॰ १८८।*

कम्माणुप्पेही– कर्म–क्रिया तदनुप्रेक्षत इत्येवंशीलः कर्मानुप्रेक्षी। *उत्त॰ २४६।*

कम्माणुभाव–
बाह्यतीर्थकरजन्मदीक्षाज्ञानापवर्ग्गकल्याणसम्भू–तिलक्षणबाह्यनिमित्तमधिकृत्य तथाविधस्य च सातवेदनीयस्य कर्म्मणोऽनुभावः–विपाकोदयः कर्म्मानुभावः। *जीवा॰ १३०।*

कम्मादाणं– कर्म्म–ज्ञानावरणादि आदीयते–स्वीक्रियतेऽनेन जन्तुभिरिति कर्मादानं–कर्मोपादानहेतुः। *उत्त॰ ३४३।*

कम्मादाणाइं– कर्म्माणि–ज्ञानावरणादीन्यादीयन्ते यैस्तानि कर्मादानानि, अथवा कर्माणि च तान्यादानानि च कर्मादानानि कर्महेतवः। *भग॰ ३७२।*

कम्मारगाम– कर्मारग्रामः। *आव॰ १८८।*

कम्मारदारए– कर्मारदारकः–लोहकारदारकः। *जीवा॰ १२१।*

कम्मारभिक्खू– कर्म्मकारभिक्षुकः–देवद्रोणीवाहकभिक्षुविशेषः। *बृह॰ २० अ, २८१ आ।*

कम्मारिया– कर्मायाः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

कम्मारो– कर्म्मारः–लोहकारः। *बृह॰ १०७ अ।*

कम्मावादी– कर्मवादी–कर्म ज्ञानावरणीयादि तद् वदितुं शीलमस्येति कर्मवादी। *आचा॰ २२।*

कम्मिणो– कर्म्मिणः–संक्लिष्टलेश्यास्थानवर्तिन आर्त्तध्या–यिनो रौद्रध्यायिनश्चेत्यर्थः। *व्यव॰ १८७ अ।*

कम्मिया– कार्मिका–कर्म्मणां विकारः कार्मिका तया–अक्षी–णेन कर्मशेषेण देवत्वावाप्तिरित्यर्थः। *भग॰ १३८।* कर्मिता–कर्म विद्यते यस्यासौ कर्मी तद्भावःकर्मिता। *भग॰ १३८।*

कम्मुणा– कर्मणा–मनोवाक्कायक्रिया। *दशवै॰ १६०।* सम्पूर्ण–मेव कर्मणा। *दशवै॰ १६२।* कायेन। *दशवै॰ २२९।* क्रियया। *दशवै॰ २३३।*

कयं– कृतम्–निर्वत्तितम्, अभ्यस्तम्। *आव॰ ५९३।* कार्यं, प्रयोजनम्। *प्रश्न॰ ३५।*

कयंगलं– कृताङ्गला, नगरीविशेषः। *आव॰ २०४।*

कयंगला– स्कन्दकचरित्रे नगरी। *भग॰ ११२, १२३।*

कयंत– कृतान्तं–दैवम्। *प्रश्न॰ ६४।* कृतघ्नः यमो वा। *बृह॰ ३०१ आ।*

कयंबे– कदम्बः–वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कय– कृतः–दत्तः। ओध॰ २१२। अनुज्ञातः। *बृह॰ ५।* कृतशब्दोऽत्रानुभूतवचनः। *दशवै॰ १३९।*

कयउस्सग्गो– कृतोत्सर्गः–कृतावश्यकः। *ओघ॰ २१।* कृतोपयोगः। *ओघ॰ १४०।*

कयकण्णचूलतो– कृतकर्णचूलकः। *उत्त॰ २७२।*

कयकरण– धणुवेदादिएसु सत्थेसु जेण सिक्खाकरणं कयं गिहिभावट्ठितेण सो साहू कयकरणो भण्णति। *निशी॰ १३ आ।* ये षष्ठाष्टमादितपोभावितास्ते कृतकरणाः। *व्यव॰ १२५ अ।* जेण चउत्थछट्ठमादीया कया। *निशी॰ १४३ अ।* धनुर्वेदे कृताभ्यासः। *बृह॰ ३८ आ।* कृतकरणं–कृतकपुत्रककरणम्। *आचा॰ ३२।* इषु शास्त्रे कृताभ्यासः। *बृह॰ ३११ आ।* कृतकरणः–बहुशो विहितचौरानुष्ठानः।

प्रश्न॰ ४६। धनुर्वेदादौ कृतपरिश्रमः। *बृह॰ ८५* अ।

कयकिच्चोवक्खरं– नगरे समानीय अस्थाने भाण्डक्षेपी भाटिकः। *बृह॰ ११* आ।

कयकुरुकय– कृतकुरुकुचः–कृतकुलः। *व्यव॰ १६१* आ।

कयगं– कृतकम्। *आव॰ १७३*।

कयग्गह– कचग्रहः–मैथुनसंरम्भे मुखचुम्बनाद्यर्थं युवत्याः पञ्चाङ्गुलिभिः केशेषु ग्रहणम्। *जम्बू॰ १९३*।

कयग्गाह– मैथुनसंरम्भे यत् युवतेः केशेषु ग्रहणं स कचग्रहः। *राज॰ २३*।

कयग्गाहगहियं– कचग्राहगृहीतं–मैथुनप्रथमसंरम्भे मुखचुम्बना-द्यर्थं युवत्याः पञ्चाङ्गुलिभिः केशेषु ग्रहणं तेन कचग्राहेण गृहीतम्। *जीवा॰ २५५*।

कयजोग्गो– कृतयोगः–कर्कशतपोभिरनेकधाभावितात्मा। *व्यव॰ ११३* अ।

कयत्तंतिया– कर्त्तनी। *बृह॰ २८* अ।

कयत्था– कृतार्थाः–कृतप्रयोजनाः। *ज्ञाता॰ २४*।

कयत्थिउ– कदर्थितुम्। *दशवै॰ ४१*।

कयत्थे– कृतार्थः। *उत्त॰ ३१९*। कृतस्वप्रयोजनः। *भग॰ ६६२*।

कयपंजली– कृतप्राञ्जलिः–पृच्छादिषु कृताः प्राञ्जलयो यैस्ते। *आव॰ १००*।

कयपंसु– कजप्रसवः–पद्मकुसुमः। *ज्ञाता॰ ६९*।

कयपज्जत्तिय– कृतपर्याप्तिकः–कृतकार्यः। *उत्त॰ २१०*।

कयपडिकिई– उपकृतस्य प्रतीकारः। *बृह॰ २९९* आ। कृतप्रतिकृतिर्नाम–प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादि दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदानम्। *सम॰ ९५*।

कयपडिकिरिया– कृतप्रतिक्रिया–अध्यापितोऽहमनेनेति–बुद्ध्या भक्तादिदानमिति। ओप॰ *४३*।

कयपडिक्किई– कृतप्रतिकृतिः–प्रसन्ना आचार्याः सूत्रमर्थं तदुभयं वा दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति आहारादिना यतितव्यम्। *दशवै॰ ३१*।

कयपुन्न– जन्मान्तरोपात्तसुकृतः। *ज्ञाता॰ २५*। कृतपुण्यः। *भग॰ ६६२*।

कयबलिकम्मा– स्वगृहे देवतानां कृतबलिकर्मा। *निर॰ ७*। कृतबलिकर्मा। *दशवै॰ ९८*।

कयमालए– कृतमालकस्तमिश्राधिपतिः। *जम्बू॰ ७४*।

कयमालक– तमिश्रागुहाधिपसुरः। *जम्बू॰ २५५*।

कयमालगो– कृतमालकः–कोणिकघातको देवः। *आव॰ ६८७*।

कयमालयं– कृतमाल्यं तमिश्रागुहाया देवः। *आव॰ १५०*।

कयमाला– कृतमाला–द्रुमजातिविशेषः। *जम्बू॰ ९८*।

कयरूवो– रुवगाभरणादि, कयरूपो। *निशी॰ ८७* अ।

कयरे– कतराणि। *अनुयो॰ ६७*।

कयरेहिंतो– कान्याश्रित्य। *अनुयो॰ ६७*।

कयलक्खण– कृतफलवल्लक्षणः। *भग॰ ६६२*। कृतलक्षणाः–कृतफलवच्छरीरलक्षणाः। *ज्ञाता॰ २५*। कृतलक्षणः। *उत्त॰ ३२९*।

कयलगं– चिब्भिडं, जरठ, तपुसावि वा। *निशी॰ १५७*।

कयलिसमागमो– कदलीसमागमः। *आव॰ २०७*।

कयली– कदली–वनस्पतिविशेषः। *ज्ञाता॰ ९५*।

कयल्लयं– कृतम्। *ओघ॰ ४६*।

कयवणमालपिया– कृतवनमालपिता–हस्तिशीर्षनगरस्य पुष्प-करण्डकोद्याने यक्षः। *विपा॰ ८९*।

कयवम्मा– कृतवर्मा–विमलजिनपिता। *आव॰ १६१*। *सम॰ १५१*।

कयवर– कचवरः। *उत्त॰ ५९२*। पत्रतृणधूलिसमुदायः। *आचा॰ ५५*।

कयवरुज्झिय– कचवरोज्झिका–अवकरशोधिका। *ज्ञाता॰ ११९*।

कयवरो– बहु झुसिरदव्वसंकरो कयवरो। *निशी॰ २५६*।

कयविक्कय– क्रयविक्रयौ। *भग॰ १९९*।

कयविहव– कृतविभवाः–कृतसफलसंपदः। *ज्ञाता॰ २५*।

कयवेयद्दिए– कृतवितर्दिकं–रचितवेदिकम्। *औप॰ ५*। कृतवितर्दिकम्–रचितवेदिकम्। *निर॰ १–१९*।

कयव्वय– कृतव्रता–उपस्थापिता इत्यर्थः। *व्यव॰ १००*।

कयव्वयकंमे– कृतं–अनुष्ठितं व्रतानां–अनुव्रत्तादीनां कर्मत–च्छ्रुणज्ञानवाञ्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येन प्रतिपन्नदर्शनेन स कृत-व्रतकर्मा प्रतिपन्नाणुव्रतादिरितिभावः। *सम॰ २९*।

कयव्ववसाअ- कृतव्यवसाय। *आव॰ २९०*।

कया– कृता–परिनिष्ठाता। *ओघ॰ १९९*।

कयाइ– कदाचिदित्ति–वितर्कार्थः। *भग॰ ६८३*।

कयाणुराग– कृतानुरागः–विहिताभिष्वङ्गः। *उत्त॰ ३८६*।

करं– करः–गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेयं द्रव्यम्। *जम्बू॰ १९४। भग॰ ५४४।*

करंज– करञ्जः; वृक्षविशेषः। *भग॰ ८०३।* नक्तमालः। *प्रज्ञा॰ ३१।*

करंड– भाजनविशेषः। *प्रश्न॰ ९३।*

करंडक– वंशग्रथितः। *ओघ॰ २११।* वेणुकार्यविशेषः। *सूत्र॰ ११७।* बहुपृथुलमल्पोच्छ्रयं मुखम्। *बृह॰ २४९* अ।

करंडगा– करंडकः–वस्त्राभरणादिस्थानम्। *स्था॰ २७२।*

करंडय– करण्डकं–पृष्ठवंशास्थिकम्। *जीवा॰ २७१।*

करंडादी– उलंबगं–समचउरंसं। *निशी॰ ५४* आ।

करंडुअ– करण्डकं पृष्ठवंशास्थिकम्। *जम्बू॰ १११।*

कर– करणं नाम नागरकादिप्रारम्भयन्त्रम्। संप्राप्तकामस्यएका–दशो भेदः। *दशवै॰ १९४।* अष्टाशीत्यां त्र्यशीतितमो महाग्रहः। *जम्बू॰ ५३५।* करः–क्षेत्राद्याश्रितराजदेयद्रव्यम्। *विपा॰ ३९*

करइल्ल– करकवान्। *उत्त॰ ९७।*

करए– करको–बादराप्कायविशेषः। *प्रज्ञा॰ २८।* करकाः–वार्घटिकाः। *उपा॰ ४०।*

करओ– जलगालनं–धर्म्मकरकः। *बृह॰ १००* आ।

करकंडु– प्रत्येकबुद्धनाम। *प्रज्ञा॰ १९।* द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे कलिङ्गेषु करकण्डुः–दधिवाहनराजपुत्रः। *आव॰ ७१६, ७१७। सम॰ १२४।* काञ्चनपुर नृपत्तिः। *उत्त॰ ३०१।* पउ–मावईए रायपुत्तो। *निशी॰ १९४* आ। करकण्डुः–कलिङ्गेषु दधिवाहनराजसुतो यो जीर्णं वृषभं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः। *उत्त॰ २९९।* आगन्तुके दृष्टान्तः। *निशी॰ २६९* आ।

करकंडे– करकण्डः माहणपरिव्राजके द्वितीयनाम। *औप॰ ९१।*

करक– हिमम्। *आचा॰ ४०।* भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६।* प्रलियशकलः। *पिण्ड॰ १०७।* करकः, पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८। अनुयो॰ १५२।*

करकचियं– क्रकचितम्, करपत्रविदारितं काष्ठादि। *अनुयो॰ १५४।*

करकपाल– चतुर्थं महाकुष्ठम्। *प्रश्न॰ १६१।*

करकय– क्रकचम्। *आव॰ ४२०।* करपत्रम्। *उत्त॰ ४५९। प्रश्न॰ २१। जीवा॰ १२०।* क्रकचः। *प्रज्ञा॰ ३६७।* क्रकचं–येन दारु विद्यते तत्। *स्था॰ २७३।*

करकरसद्दं– व्यक्तव्यक्तशब्दम्। *आव॰ २९२।*

करकरिए– अष्टाशीत्यां पञ्चाशीतितमो महाग्रहः। *स्था॰ ७९।*

करग– करकः। *जम्बू॰ १०१।* घंटी। *निशी॰ ६४* आ। करकः कठिनोदकरूपः। *दशवै॰ १५३।*

करगओ– करपत्रम्। *आव॰ ८०१।*

करगगीवा– वार्घटिका ग्रीवा। *अनुत्त॰ ५।*

करगतं– क्रकचम्। *आव॰ ६५१।*

करगय– क्रकचम्, करपत्रम्। *उत्त॰ ६५४।*

करगा– उदगपासाणा वासे पडंति ते करगा। *निशी॰ ४५*

करगे– करकः घनोपलः। *जीवा॰ २५।*

करगो– पाणियभंडयं। *निशी॰ ११७* आ। करकः–जलाधारो मदिराभाजनं वा। *सूत्र॰ ११८।*

करघातो– करस्य पीडा। *बृह॰ ७४* आ।

करचोल्लए– करभोजनम्। *आव॰ ३४१।*

करजर– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

करट– शरीरेण विमध्यमः। *निशी॰ ७१* अ।

करटी– वाद्यविशेषः। *जीवा॰ २६६।*

करडि– करटी। *जम्बू॰ १०१।*

करडुय– करडुकं–मृतकभक्तम्। *व्यव॰ ३४२* अ।

करडुयभत्त– घृतपूर्णः। *निशी॰ १००* आ। करडुकभक्तम्–मृतकभोजनं मासिकादि। *पिण्ड॰ १३४।*

करडो– कुरूटः–कुणालानगर्यां दोषार्ते उपाध्यायविशेषः। *आव॰ ४६५।*

करणं– अपूर्वप्रादुर्भावः। अन्योन्यसमाधानम्। *आव॰ ४५७।* पिण्डविशुद्ध्यादिः। *ज्ञाता॰ ७। उत्त॰ ५८०।* गुरूविषयं शिष्यविषयं च। *आव॰ ४७१।* गुरुशिष्ययोः सामायिकक्रिया–व्यापारणम्। *आव॰ ४७१।* यत् प्रयोजन आपन्ने क्रियत इति करणम्। *ओघ॰ ७।* कालविशेषरूपं चतुर्यामप्रमाणम्। *उत्त॰ २०२।* करणं न्यायालयम्। *निशी॰ ११२* अ। प्रति-लेखनादि। *भग॰ ७२७।* करणम्। *दशवै॰ ६१।* प्रयोगः। *ज्ञाता॰ ४१।* इन्द्रियम्। कृतकारितानुमतिरूपम्। *भग॰ ८९।* चारित्रम्। *बृह॰ ११८* अ। अपूर्वकरणम्। *उत्त॰ ५७९।* अवनामादिरावश्यकः। *बृह॰ १३* अ। गात्रम्। *आचा॰ ८६।* कृतिःस्वभावतः एव निर्वृतिर्गृह्यते, करणः–न्यायालयः। *आव॰ ५२०, ७१७, ८२१, ८२२। उत्त॰ ३०१। नन्दी॰ १६३।* परिणामविशेषः।

बृह॰ १७ अ। आरंभः। *बृह॰ १५८* अ। क्रिया। *नन्दी॰ १९०*। *आव॰ ८२१*। *उत्त॰ १४९*। खण्डनम्। *बृह॰ १७१* आ। *उत्त॰ २०४*। वैयावृत्त्यम्। *ओघ॰ ४५*। स्थापनम्। *बृह॰ २३८* अ। बवादिगणितः। *ओघ॰ ११५*। क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि। *आचा॰ ४१९*। पादकर्म। *बृह॰ २१८* आ। क्रियतेऽनेनेति करणं क्रियायाः साधकतमं कृतिर्वा करणं–क्रियामात्रम्। *भग॰ ७७३*। कर्म्म उत्प्लवनलक्षणं यत्करणं–क्रियाविशेषः। *भग॰ ९२८*। अवश्यं विपाक-दायित्वेन निष्पादनं निधत्तादिस्वरूपमिति। *भग॰ ९३८*। इन्द्रियं कृत्यं वा। *प्रश्न॰ ४१*। न्यायालयः। *बृह॰ ३३* अ। सधनम्। *औप॰ ४६*। अपवादः, विशेषवचनं च। *जम्बू॰ ५४१*। अभिधानम्। *जम्बू॰ १३४*। विवक्षितक्रि–यासाधकतमं करणम्। *अनुयो॰ १३४*। पिण्डविशुद्ध्यादि। *अनुयो॰* । मृत्पिण्डादि। *आव॰ २७८*। परिभोगो जो विवरीयभोगं करेति। *निशी॰ १२६* आ। पिण्डवि–शुद्धिसमित्याद्यनेकविधम्। *सम॰ १०९*। क्रियते येन तत्करणं मननादिक्रियासु प्रवर्तमानस्यात्मन उपकरणभूतस्तथा तथापरिणामवत्पुद्गलसङ्घात इति भावः। *स्था॰ १०७*। उल्लगकरणं। *निशी॰ ४२* आ। करणम्। *आव॰ ४२६*। अङ्गभङ्गविशेषो मल्लशास्त्रप्रसिद्धः। *औप॰ ६५*। करणं-विशिष्टिदिवसो दुर्दिनग्रहणोत्पातदिनादिभ्यो भिन्नदिवसः। *जम्बू॰ २७३*। उपधिः। *ओघ॰ २०७*। प्रयोगकरणं विश्रसाकरणं वा। *भग॰ ३६९*। इषु शास्त्रे संयमे वा कृतकरणः। *बृह॰ ३५* आ। आधाकर्म। *बृह॰ १२५* आ। शक्तिः। *आचा॰ ३०*। पिण्डविशुद्ध्यादि। *उत्त॰ ५८०*। *भग॰ १२२, १३६*। कुर्वत इत्यर्थः। *भग॰ १०४*। जीववीर्यम्। *भग॰ २५२*। कृतिः। *आव॰ ४५७*।

करणगुण– कलाकौशल्यम्। *आचा॰ १२*।

करणगुणसेढि– करणगुणेन–अपूर्वकरणादिमाहात्म्येन श्रेणिः करणगुणश्रेणिः प्रक्रमात्क्षपकश्रेणिरेव गृह्यते। *उत्त॰ ५८०*। करणेन–अपूर्वकरणेन गुणहेतुका श्रेणिः करण–गुणश्रेणिः–सर्वोपरितनस्थितेर्मोहनीयादिकर्मदलिकान्युपादायोदय सम–यात्प्रभृतिद्वितीयादिसमयेष्वसङ्ख्यातगुणपुद्गलप्रक्षेपरू–पाऽऽन्तर्मौहूर्तिकी। *उत्त॰ ५७९*।

करणपती– न्यायाधीशः। *निशी॰ १०१* अ।

करणया– करणानां–संयमव्यापाराणां भावः–करणता। *ज्ञाता॰ ५२*।

करणविहीणो– क्रियाहीनः। *मरण॰* ।

करणवीरिए– लब्धिवीर्यकार्यभूतो क्रियाकरणं तद्रूपं करण-वीर्यम्। *भग॰ ९५*।

करणवीरियं–क्रियावीर्यम्। *निशी॰ १९* अ।

करणसत्ती– करणं–क्रिया–तस्यां शक्तिः प्रवृत्तिः क्रियाशक्तिः। *नन्दी॰ १९०*। करणशक्तिः–तन्माहात्म्यात् पुराऽ नध्यवसत्तिक्रियासामर्थ्यरूपा। *उत्त॰ ५९१*

करणसच्चं–करणसत्यं, बाह्यं प्रत्युपेक्षणादि, त्रयोदशोऽ नगास्गुणः। *आव॰ ६६०*। यत्प्रतिलेखनादिक्रियां यथोक्तं सम्य–गुपयुक्तः कुरुते। *सम॰ ४६*। करणे सत्यं करणसत्यं यत्प्रति–लेखनादिक्रियां यथोक्तां सम्यगुपयुक्तः कुरुते। *उत्त॰ ५९१*। यथोक्तप्रतिलेखनाक्रियाकरणम्। *प्रश्न॰ १४५*।

करणसभा– महावीरस्वामिनो निर्वाणस्थानम्। *सम॰ ७३*।

करणसाला– करणशाला। *दशवै॰ १०८*।

करणसालाए– न्यायालयः। *निशी॰ १२* अ।

करणा– करणानि चक्षुरादीनीन्द्रियाणि। *जीवा॰ २७१*।

करणाए– उपकरणाय, उपकाराय। *आचा॰ २८२*। उप–करणार्थम्। *आचा॰ २८८*।

करणाणुओगे– क्रियते एभिरिति करणानि तेषामनुयोगः करणानुयोगः। *स्था॰ ४८१*।

करणाणुपालया– पूव्वरिसीहिं पालियं जे पञ्छा पालयंति ते करणाणुपालया। *निशी॰ ३६०* आ।

करणापर्याप्ताः– ये करणानि–शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्व–र्त्तयन्ति अथचावश्यं निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते। *जीवा॰ १०*। करणानि–शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति अथचावश्यं निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते करणापर्याप्ताः। *प्रज्ञा॰ २६*।

करणालसा– करणालसाः–चरणालसाः, चरणधर्मं प्रत्यनुद्यताः स्वस्य परेषां च चिन्ताश्चासननिमित्तमितिभावः। *प्रश्न॰ ३५*।

करणि– सादृश्यम्। *अनुयो॰ १२*। प्रशंसा, क्रिया। *आव॰ ३६९*। क्रिया। *आव॰ ८१८*।

करणिज्जकिरिया– करणीयक्रिया–यद् येन प्रकारेण करणीयं तत्तेनैव क्रियते नान्यथा सा। *सूत्र॰ ३०४*।

करणिज्जो– करणीयः–सामान्येन कर्त्तव्यः। *आव॰ ५७१*।

करणी– क्रिया। *अनुयो॰ १३८*। वर्गमूलमानीयते। *जम्बू॰ १९*।

करणीयाइं– करणीयानि–कादाचित्कानि। *ज्ञाता॰ ९१*।

करतलं– हस्तसंखं। *निशी॰ ६०* आ।

करतलपल्हत्थमुहे– करतले पर्यस्तं–अधोमुखतया न्यस्तं मुखं येन सः। *भग॰ १८०*।

करधाण– करध्मानम्–परस्परं हस्ततादनम्। *जम्बू॰ २०६*।

करपत्ते– क्रकचम्। *ज्ञाता॰ २०४*। *स्था॰ २७३*।

करपत्रम्– शस्त्रविशेषः। *आव॰ ८१९*।

करपल्लीवण– करप्रदीपनं–वसनावेष्टितस्य तिलाभिषिक्तस्य करयोरग्निप्रबोधनम्। *सम॰ १२६*।

करबोडिय– व्याप्त। *मरण॰* ।

करभी–घटसंस्थानकोष्ठिका। *बृह॰ १७९* अ।

करमंदि– करमर्दी गुल्मभेदः। *उत्त॰ ५४९*।

करमद्द– करमर्दम्। *आव॰ ६२२*। गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

करमोअणं– करमोचनं–यत् करं मन्यमानो वन्दते न निर्जराम्, कृतिकर्मणि पञ्चविंशतितमो दोषः। *आव॰ ५४४*।

करयलं– करतलं–हस्तः। *प्रश्न॰ ८*।

करयलत्थो– करतलस्थः–वशवर्ती। *आव॰ ७२१*।

करयलपरिग्गहिय– करतलपरिगृहीतः करतलाभ्यां परिगृहीतः–निष्पादितः। *जीवा॰ २४३*।

करवत्तं– करपत्रम्। *जीवा॰ ११७*। करपत्रं–क्रकचम्। *उत्त॰ ४५९*। करवतम्। *नन्दी॰ १५५*।

करवर– वनस्पतिविशेषः। पिण्ड *१२९*।

करालं– उन्नतम्। *अनुत्त॰ ६*।

करालो– युक्तः। *भक्त॰*।

करिंसुयसयं– करिंस इत्यनेन शब्देनोपलक्षितं। *भग॰ ९३८*।

करि– करोति। *ओघ॰ १११*।

करिए– करिकः–अष्टाशीत्यां चतुरशीतितमोग्रहः। *जं॰ ५० ५३५*।

करित्ता– करेत्ता। अभयवहृत्य। *ओघ॰ ४४*।

करिमकरा– मत्स्यविशेषः। *सम॰ १३५*।

करियातिओ– कृतवान्। *निशी॰ १०९* अ।

करिसग– कर्षकः। *नन्दी॰ १६४*।

करिसणं– कर्षणं। कृषिः। *प्रश्न॰ ८*।

करिसो– कर्षः– पलस्य चतुर्भागः। *अनुयो॰ १५४*।

करीर– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

करीरपाणगं– पाणकस्य अष्टादशो भेदः। *आचा॰ ३४७*।

करिलं– रागद्वेषाभावे दृष्टान्तविशेषः। *बृह॰ ३७* अ।

करीलो– वंशजातिविशेषः। *व्यव॰ २२५* आ।

करील्ल– शरीरं–प्रत्यग्रं कन्दलम्। *अनुत्त॰ ४*।

करीस– करीषम्। *भग॰ ३०६*। करीषम्–शुष्कछगणम्। *दशवै॰ ९२*।

करीसओण्हा– करीषोष्मा। *आव॰ ४१६*।

करिणी– करेणु। *उत्त॰ ६३४*।

करुडगादियं– हिंगोलं। *निशी॰ २२* अ।

करुणालंवणभूओ– करुणालम्बनभूतः। *आव॰ ४१३*।

करुल्लं– कपालम्। *आव॰ २०१*।

करेंतगो– कर्त्ता। *आव॰ २६२*।

करेइ– निर्मथ्यते। *ज्ञाता॰ २४२*।

करेणु– करेणुका–हस्तिनी। *उत्त॰ ३४९*।

करेणू– करेणुका। *ज्ञाता॰ ६४*।

करेमाणा– कुर्वाणाः। *ज्ञाता॰ ५७*।

करोटकं– कुप्यविशेषः। *आव॰ ८२६*।

करोटिका– भाजनविशेषः। *पिण्ड॰ ६८, १५५*। भाजनविधि–विशेषः। *जीवा॰ ३६६*। पात्रविशेषः। *आव॰ ४४३*। पात्र-विशेषः। पिण्ड *१०५*।

करोडग– भाजनविशेषः। *निशी॰ ७१* आ। *निशी॰ २५६* अ। *निशी॰ ९३* आ।

करोडि– करोडि। *जम्बू॰ १०१*। करोटिः। *आव॰ ६८९*।

करोडिआ– अतीवविशालमुखा कुण्डिकैव करोडिका। *अनुयो॰ १५२*। करोटिका–स्थगिका। *ज्ञाता॰ ४४*।

करोडिय– करोटिका–मृद्भाजनविशेषः। *भग॰ ११३*। करोटिकः–कपालिकः। *विपा॰ ७६*।

करोडिया– स्थगिका। *भग॰ ५४८*। कापालिका। *ज्ञाता॰ ५८*। करोट्या–कपालेन चरन्तीति करोटिका। *ज्ञाता॰ १५२*।

करोडी– करोटिका–कपालिका। *आव॰ ६८९*।

करोति– स्मरणे वर्तते न निष्पादने। *नन्दी॰ १७*।
कर्कटः– पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५*।
कर्कशः– स्पर्शस्य प्रथमभेदः। *प्रज्ञा॰ ४७३*।
कर्कशस्पर्शः– यदुदयाज्जन्तुशरीरेषु कर्कशः स्पर्शो भवति, यथा पाषाणविशेषादीनां तत्। *प्रज्ञा॰ ४७३*।
कर्केतन– रत्नविशेषः। *सम॰ १३९*।
कर्कोलकं– फलविशेषः। *जीवा॰ १३६*।
कण्ण- कर्णः–श्रवणः। *आचा॰ ३८*।
कर्णकं– भाजनस्योद्धर्वभागः। *ओघ॰ १६८*।
कर्णगति– कन्दादारभ्य शिखरं यावदेकान्तऋजुरुपायां दवरिकायां दत्तायां यदपान्तराले क्वापि कियदाकाशं तत्सर्वम्। *जम्बू॰ ३६३*।
कर्ण्णपर्पटका– शष्कुली। *नन्दी॰ ७५*।
कर्द्दमजलम्– यद् घनकर्दमस्योपरि वहति। *ओघ॰ ६२*।
कर्पूरं– निर्यासवस्तुविशेषः। *जीवा॰ १३६*।
कर्प्परः– घटखण्डम्। *नन्दी॰ ६३*।
कर्प्पासी– गुच्छविशेषः। *आचा॰ ३०*।
कर्बुर– कर्णविशेषः। *आचा॰ २९*। बकुशः–शबलो वा। *भग॰ ८९१*। *स्था॰ ३३६*।
कर्म–सिद्धशब्दपर्यायः। *स्था॰ २५*। आर्यभेदः। *सम॰ १३५*।
कर्मकल्क– कर्मसारः। *प्रज्ञा॰ ३३१*।
कर्मनिषेकः– तद्भवजीवितम्। *आव॰ ४८०*।
कर्मभूमिजा– भूमिविशेषजन्मा। *सम॰ १३५*।
कर्म्मक्षय– सिद्धशब्दपर्यायः। *स्था॰ २५*।
कर्म्मद्रव्यकषायाः– तत्रादित्सितात्तानुदीर्णाः पुद्गला द्रव्य–प्रधानात् कर्म्मद्रव्यकषायाः। *आचा॰ ९१*।
कर्म्ममास– त्रिंशदहोरात्रप्रमाणः। *सूर्य॰ २१*। *स्था॰ ३४५*।
कर्म्मसारः– कर्म्मणः सारः। *प्रज्ञा॰ ३३१*।
कर्षादीनि– मापविशेषः। *स्था॰ ८८*।
कलं– कलाम् भागम्। *उत्त॰ ३१६*। शोभाया अंशः। *ज्ञाता॰ १३१*।
कलंकं– कलङ्कं–दुष्टतिलकादिकं चित्रादिकं वा। *जीवा॰ २७७*। दुष्टतिलकादिकम्। *औप॰ १६*।
कलंकलियवायं– कलङ्कलिकावातम्। *आव॰ २१७*।
कलंकलीभागिणो– कलङ्कलीभावभाजः। *सूत्र॰ ३४१*।
कलंकलीभाव– कदर्थ्यमानता। *प्रज्ञा॰ १०८*। *उत्त॰ १८३*। *आचा॰ ११७*।
कलंत– उत्काल्यमानः। *मरण॰*।
कलंदे– दिशाचरविशेषः। *भग॰ ६५९*।
कलंपि– कलामपि–मनागपि। *व्यव॰ २२६* आ।
कलंबचीरपत्तं– कलम्बचीरः। शस्त्रविशेषः। *विपा॰ ७१*।
कलंबचीरिया– कदम्बचीरिका–तृणविशेषः, दर्भादप्यतीव–छेदकः। *जीवा॰ १०८*।
कलंबचीरियापत्तं– कदम्बचीरिकापात्रम्। *जीवा॰ १०६*।
कलंबवालुया– कदम्बपुष्पाकारा वालुका कदम्बवालुका। *प्रश्न॰ २०*।
कलंबाणं– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*।
कलंबुगा– कलम्बुका सन्निवेशविशेषः। *आव॰ २०६*।
कलंबुया– जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।
कलंबुयापुप्फं– कलम्बुयापुष्पं–नालिकापुष्पम्। *सूर्य॰ ७१*। *जीवा॰ ३३९*। *जम्बू॰ ४५३*। कलम्बुकापुष्पसंस्थानसं–स्थितं–श्रोत्रेन्द्रियम्। *प्रज्ञा॰ २९३*।
कलंबुवालुयापुट्ठं– कदम्बवालुकापृष्ठम्। *आव॰ ६५१*।
कलंबो– पिशाचानां चैत्यवृक्षः। *स्था॰ ४४२*।
कल– मधुरः। *जम्बू॰ २०६*। कलायास्त्रिपुराख्या वृत्तचणका वा। *जम्बू॰ १२४*। धान्यविशेषः। *भग॰ ६८४*। पङ्कजलम्। *उत्त॰ ३९१*। धनं। *निशी॰ २०५* आ। पङ्कः। *पिण्ड॰ १०२*। कर्दमः। *भक्त॰*। कलं– माधुर्यविशिष्ट ध्वनिविशेष–रूपम्। *प्रश्न॰ १५९*। कलाः– अत्यन्तश्रवणहृदयहरा अव्यक्त–ध्वनिरूपा, अथवा कलावन्तः–परिणामवन्त इत्यर्थः *ज्ञाता॰ २३३*। औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। कला–वृत्तचनकाः। *पिण्ड॰ १६८*।
कलकल– उपलभ्यमानवर्णविभागः। *औप॰ ५७*। उपलभ्य–मानवचनविभागः। *भग॰ ४६३*। कलकलशब्दयोगात् कल–कलम्। *प्रश्न॰ १९*। यत् कलकलशब्दं करोति तत् कलकलं अतितप्तमिति। *प्रश्न॰ १६४*। चूर्णादिमिश्रजलम्। *विपा॰ ७०*। *आचा॰ ३३१*। कलकलः व्याकुलशब्दसहूहः। *जम्बू॰ ४६३*। व्याकुलशब्दसमूहः। *सूर्य॰ २८१*।
कलकलंत– अतिक्वाथतः कलकलशब्दं कुर्वन्ति। *उत्त॰ ४६१*।
कलकलिंता– कलकलायमानाः–कोलाहलबोलं कुर्वाणाः। *प्रश्न॰ ५०*।

कलकलेइ– कलकलायति–भवजलधौ क्वथयति। *आव॰ ५६७*।

कलगिरः– व्यक्तवाचः। *जम्बू॰ १२७*।

कलणाय– कलनादः। *उत्त॰ १५०*।

कलत्तं– यस्मात् सर्वं आत्ते गृह्णाति तस्मात् कलत्रम्। *निशी॰ २०५* आ।

कलन्दं– कुण्डं–कलन्दम्। *उपा॰ २२*।

कलभा– बालकावस्थाः। *ज्ञाता॰ ६७*।

कलभाणिणी– कलभानना–स्वरमनोज्ञानना। *व्यव॰ २२६*।

कलमल– जठरद्रव्यसमूहः। *स्था॰ १४५*।

कलमलजंबाल– मूत्रादिकर्दमः। *मरण॰*।

कलमसालि– कलमशालिः, शालिविशेषः। *जम्बू॰ १०४*।

कलमा– तन्दुलाः। आ॰ २३८।

कलमाल– बिंदु। *निशी॰ ४५* अ।

कलमोडण– । *निशी॰ १६६* अ।

कलमोडियं– । *निशी॰ १३८* आ।

कलयल– कलकलः–अव्यक्तवचनः। *भग॰ ११५*। उपल–भ्यमानवचनविभागः। म*गच्छा॰ ११५*।

कलयलसद्द– कलकलशब्दः। *आव॰ २३१*।

कललं– प्रथमसप्ताहो गर्भावस्था। *तन्दु॰*।

कलशः– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६*।

कलस– कलशः–महाघटः। *जम्बू॰ १०१*। कलशः–तामा–दिकलशः–उपकरणवस्तु। *दशवै॰ १९४*।

कलसए– कलशकाः–आकारविशेषवन्तः। *उपा॰ ४०*।

कलसिंबलिया– कलसिंवलिका–कलायाभिधानधान्यफलिका। *भग॰ २९०*।

कलंसिअ– लघुतरकलश एव कलशिका। *अनुयो॰ १५३*।

कलसीपुरं– कलशीपुरं, कृतिकर्मदृष्टान्ते पुरम्। *आव॰ ५१४*।

कलहंस– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*। कलहंसः–लोमपक्षी–विशेषः। *जीवा॰ ४१*।

कलह– कलहः–वचनराटिः। *भग॰ १९८*। *जम्बू॰ १२५*। भण्डनम्। आ॰ ४९९। वाचिको विग्रहः। *उत्त॰ ३४७*। क्रोधः। *उत्त॰ २९१*। इह प्रेमहासादिप्रभवं युद्धम्। *भग॰ ५७३*। महता शब्देनान्योऽन्यमसमञ्जसभाषणम्। *भग॰ ५७२*। राटिः। *प्रज्ञा॰ ४३८*। *भग॰ ८०*। राटिः। *प्रज्ञा॰ ९६*। *स्था॰ २६*। विरोधवाचिकः। *उत्त॰ ४३५*। वादिगो। *निशी॰ ७१* आ। कलहः–राटिः। *जीवा॰ १७३*। वाग्युद्धम्। *ज्ञाता॰ २२०*। *जीवा॰ २८३*। वचनभण्डनम्। *प्रश्न॰ ९२*। द्वादशं पापस्थानकम्। *ज्ञाता॰ ७५*। वाचिककलहः। *प्रश्न॰ ९७*। भंडणं, विवादो। *निशी॰ ३५* अ।

कलहकर– कलहकरः–भण्डनकरणशीलः। *आव॰ ४९९*।

कलहकरत्वं– कलहहेतुभूतकर्त्तव्यकारित्वम्–षोडशममसमा–धिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४*।

कलहकारी– आत्मना कलहं करोति तत्करोति येन कलहो भवति, सप्तदशममसमाधिस्थानम्। *आव॰ ६५३*।

कलहगे– कलभकः। *ओघ॰ १५८*।

कला– मात्रा। *सूर्य॰ ८*। धनुर्वेदादिः। *प्रश्न॰६४*। अंशः। *स्था॰ ४९७*। योजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदनाः एकोनविं–शतिभागरूपा इति भावः। *सम॰ ३७*। विज्ञानम्। *सम॰ ८३*। वट्टचणया। *दशवै॰ ९२*। वट्टचणगा। *निशी॰ १४४*। *स्था॰ ३४४*। द्विसप्ततिसु निपुणा लेखादिका। *प्रश्न॰ ९७*।

कलाइरिय– कलाचार्यः। *उत्त॰ १४८*।

कलाओ– कलादः। *आव॰ ३७३*। कलनानि कलाः, विज्ञानानि। *जम्बू॰ १३६*।

कलाचिका– हस्तमूलम्, कटकं, आभरणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ८८*। कटकम्। *जीवा॰ १६२*।

कलाद– सुवर्णकारः। *निशी॰ ४३* अ। कलादो नाम्ना मूषिकारदारक इति पितृव्यपदेशेनेति। *ज्ञाता॰ १८७*।

कलाय– कलादः–सुवर्णकारः। *बृह॰ १०७* आ। *ज्ञाता॰ १४२*। *प्रश्न॰ ३०*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*। कलायाः–चणकाकारा धान्यविशेषाः। *उपा॰ ५*।

कलाया– कलायाः–वृत्तचणवादि । *भग॰ २७४*। कलायकाः– वृत्तचणकाः। *दशवै॰ १९३*। कलायाः–चणकाकारा धान्य–विशेषाः। *उपा॰ ५*।

कलालकुलं– कलालकुलम्। *आव॰ ३९६*।

कलाव– कलापः–ग्रीवाभरणविशेषः। *उपा॰ ४४*। कलापः–कण्ठाभरणविशेषः। *भग॰ ४५९*। कलापः–भूषणविधि–विशेषः। *जीवा॰ २६९*। कण्ठाभरणविशेषो मेखलाकलापः। *औप॰ ५५*।

कलावओ– कलापकः–अंशानां सवर्णनं सवर्ण, सवर्णः–सदृशीकरणं यस्मिन् सङ्ख्याने तत् कलासवर्णम्। *स्था॰*

४९६।

कलिं– कलिः–एककः। *सूत्र॰ ६७*।

कलिंगं– कलिङ्गं–जनपदविशेषः, करकण्डूत्पत्तिस्थानम्। *उत्त॰ २९९*। नैमित्तिकः। *आचा॰ ३५९*। कलिङ्गः–द्रव्य–व्युत्सर्गे देशविदेशेषः। *आव॰ ७१६*। जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*। देशविशेषः। *ओघ॰ २१*। शिल्पसिद्धदृष्टान्ते देशविशेषः। *आव॰ ४१०*। देशविशेषः। *व्यव॰ ४१४* अ।

कलिंगराया– कलिङ्गराजा-द्रव्यव्युत्सर्गेकरकण्डुः। *आव॰ ७१६*।

कलिंच- क्षुद्रकाष्ठरूपः। *भग॰ ३६५*। वंशकप्परी। *बृह॰ ६८* आ। वंसकपड्डी। *निशी॰ ११६* आ। *निशी॰ २२०* अ। *निशी॰ १०५* आ।

कलिंज– फलविशेषः। *ओघ॰ १८७*। वंसमयो कडवल्लो। *निशी॰ ५९* अ।

कलि– जधन्यः कालविशेषः। कलहो वा। *अनुयो॰ १३८*। प्रथमो भङ्गः *बृह॰ १८०* आ। एकः। *उत्त॰ २४८*। *भग॰ ७४५*।

कलिऊण– कलयित्वा–विज्ञाय। *दशवै॰ ५९*।

कलिओए– एकपर्यवसितः कल्योजः। *स्था॰ २३७*। कलिना–एकेन आदित एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिना ओजो–विषमराशिविशेषः कल्योजः। *भग॰ ७४५*।

कलिओग– कल्योजः पर्वराशौ चतुर्भिर्भक्ते सति यद्येकः शेषो भवति तदा स राशिः। *सूर्य॰ १६७*।

कलिओगकडजुम्मे– कल्योजकृतयुग्मे, चतुरादयः। *भग॰ ९६४*।

कलिकरंडो– कलिकरण्डः–कलीनां–कलहानां करण्ड इव भाजनविशेष इव। परिग्रहस्यैकोनविंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ९२*।

कलिकलंडो– कलिकारकः। *आव॰ ३९०*।

कलिकलहो– कलिकलहः–राटीकलहः। *प्रश्न॰ ४३*।

कलिकलुसं– कलिकलुषम्। *उत्त॰ ३३१*। कलहहेतु कलुषं मलीमसम्। *विपा॰ ४०*।

कलिका– मुकुलं, कुड्मलम्। *जीवा॰ १८२*।

कलितोए– एकपर्यसितः कल्योजः। *स्था॰ २३८*।

कलित्तं– कटित्रं–कृत्तिविशेषः। *औप॰ १०*। कडित्रं कृत्ति-विशेषः। *ज्ञाता॰ ६*।

कलिमलं– मलः। *तन्दु॰*।

कलियोगकलिओगे– कल्योजकल्योजे पञ्चादयः। *भग॰ ९६४*।

कलियोगतेओगे– कल्योजत्र्योजे राशौ सप्तादयः। *भग॰ ९६४*।

कलियोगदावरजुम्मे– कल्योजद्वापरेषडादयः। *भग॰ ९६४*।

कलुणा– करुणा–दयास्पदभूता, करुणं वा पालयतीति। *प्रश्न॰ १९*। कृपास्थानम्। *पिण्ड॰ १११*। दीना। *दशवै॰ २४८*। रङ्का। *निशी॰ १०६* अ।

कलुणो– कृत्सितं शैत्यनेनेति निरुक्तवशात् करुणः, करुणा–स्पदत्वात्, प्रियविप्रयोगादिदुःखहेतुसमुत्थः शोकप्रकर्षस्व–रूपः करुणो रसः। *अनुयो॰ १३५*।

कलुयावासा– द्वीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

कलुषसमापन्नः– नैतदेवमिति। विपर्यस्त इति। *स्था॰ २४७*।

कलुसमावन्ने– कलुषमापन्नः–नाहमिह किञ्चिज्जानामीत्येवं स्वविषयं कालुष्यं समापन्न इति। *भग॰ ११२*। नैतदेवमिति प्रतिपत्तिकः। *स्था॰ १७६*। मतिमालिन्यमुपगतः। *ज्ञाता॰ ९५*।

कलुससमावन्न– कलुषसमापन्नः। *भग॰ ५४*।

कलुसा– कलुषयन्त्यात्मानमिति–कलुषाः–कषायाः। *आव॰ ५८९*। कलुषयन्ति–सहजनिर्मलं जीवं कर्मरजसा मलिनयन्ति इति कलुषाः।कषायाः। *बृह॰ १४१* आ।

कलेवर– मनुष्यशरीरम्। *जीवा॰ १८०*। शरीरम्। *उत्त॰ ३४१*। शरीराणि। कलेवराणि– असङ्खयातखण्डीकृतवालुका–कणरूपाणि। *भग॰ ६७६*। कलेवराणि–मनुष्यशरीराणि। *जम्बू॰ २३*।

कलेवरसंघाडा– कलेवरसङ्घाराः–मनुष्यशरीरयुग्मानि। *जीवा॰ १८०*। कलेवरसङ्घाटाः–मनुष्यशरीरयुग्मानि। *जम्बू॰ २३*।

कलेसुयं– तृणविशेषः। *सूत्र॰ ३०९*।

कलो– चणओ। *निशी॰ ६३* आ। *निशी॰ ४०*।

कलोवाइओ– पिच्छी–पिटकं वा। *आचा॰ ३२७*।

कल्कः– कक्क–कषायद्रव्यक्वाथ। *आचा॰ ३६३*।

कल्पतपसा– तपविशेषः। *आचा॰ २०३*।

कल्काचारः– आचारविशेषः। *आचा॰ २०२*।

कल्पकः– वैनयिकीबुद्धौ अर्थशास्त्रे मन्त्री। *नन्दी॰ १६१।*

कल्पद्वयपर्युषितः– कल्पद्वयपर्युषितस्तु नियमाज्जिनकल्पि–कपरिहारविशुद्धिकयथालन्दिकप्रतिमाप्रतिपन्नानामन्यतमः। *आचा॰ २८०।*

कल्पनिका–शस्त्रविशेषः। *भग॰ १९८। सम॰ २९।*

कल्पनी– कर्त्री–शस्त्रविशेषः। *उत्त॰ ४६०।*

कल्पपालाः– सुरादिविक्रयकारिणः। मद्यपाः। *व्यव॰ ४२०*

कल्पस्त्रियः– कल्पयोः–देवलोकयोः स्त्रियः कल्पस्त्रियः–देव्यः। *स्था॰ १००।*

कल्पस्थितः– वाचनाचार्यो गुरुभूत इत्यर्थः। *स्था॰ ३२४।*

कल्पा– संविग्नविहारः। *बृह॰ ११३ अ।*

कल्पातीतः– साधुभेदविशेषः। *भग॰ ४।*

कल्पावतंसिका– कल्पावतंसकदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धतिः। *निर॰ २१। नन्दी॰ २०७।*

कल्पिका– या कारणे प्रतिसेवना क्रियते सा। *व्यव॰ ४७।*

कल्या– नीरोगी। *नन्दी॰ १६१।*

कल्याणकं– यदासनप्रकम्पप्रयुक्तावधयः सकलसुरासुरेन्द्रा जीतमितिविधित्सवो युगपत् ससम्भ्रमा उपतिष्ठन्ते। *जम्बू॰ १५६।*

कल्ल– कल्यः–अत्यन्तनीरुक्तया मोक्षः। *उत्त॰ १२८।* प्रत्यूषः। *आव॰ १४८।* नीरोगया मोक्खो। *दशवै॰ ७१।* कल्यं–श्वः, प्रादुः प्राकाश्ये च। *ओघ॰ २६।* सुखमारोग्यं शोभनत्वं वा। *सूत्र॰ ३८३।* कल्यं पूपकम्। *ओघ॰ १७२, १७३।* कल्ये। *आव॰ ८५।* कल्यं–आरोग्यम्। *आव॰ ७८८।* श्वः। *भग॰ १२७।* कल्यः, मोक्षः। *उत्त॰ १२८। दशवै॰ १५८।* कल्यो-नीरोगः। चिन्तादिनापेक्षया द्वितीयदिने। *उत्त॰ ४७६।*

कल्लसरीरा– कल्यशरीराः, पटुशरीराः। *स्था॰ २४७।*

कल्लाकल्लिं– प्रतिप्रभातम्। *उपा॰ ४०।* प्रतिदिनम्। *ज्ञाता॰ १४९।* कल्ये च कल्ये च अनुदिनमिति कल्याकल्यिं। *विपा॰ ५१, ५८।*

कल्लाणं– कल्यम्–आरोग्यं अणति–शब्दयतीति कल्याणं। *आव॰ ७८८।* कल्याणं–एकान्तसुखावहम्। *जीवा॰ २७८।* इष्टार्थफलसंप्राप्तिः। *सूत्र॰ ३८३।* कल्याणहेतुः। *सूर्य॰ २६७।* अर्थहेतुः। *औप॰ ५।* कल्याणप्रापकत्वात्–अहिंसाया एकोनत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९।* शुभम्। मुक्तिहेतुः। *उत्त॰ १२८।* तत्त्ववृत्तया तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशम–कारि वा कल्याणरूपं फलविपाकं वा। *जीवा॰ २०१।* कल्याणं–श्रेयः। *भग॰ ११९।* नीरोगताकारणम्। *भग॰ १२५।* अनर्थोपशमहेतुत्वम्। *भग॰ १६३।* कल्योमोक्षस्तमणति प्रापयतीति कल्याणं–दयाख्यं संयमस्वरूपम्। *दशवै॰ १५८।* गुणसम्पद्युपः संयमः। *दशवै॰ १८९।* तत्त्ववृत्या तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशमकारी। *जम्बू॰ ४७।* कल्याणं–समृद्धिः। *स्था॰ १११।* मंगलस्वरूपत्वात्–कल्याणम्। *स्था॰ २४७।* अर्थप्राप्तिः। *भग॰ ५४१।* एकान्तसुखावहम्। *जम्बू॰ ११९।* पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* कल्यः–अत्यन्तनीरुक्तया मोक्षस्तमानयति अणति प्रज्ञापयतीति कल्याणः मुक्तिहेतुः। *उत्त॰ १२८।* कल्यं आरोग्यं अणन्ति–शब्दयन्तीति कल्याणाः। *स्था॰ ४६४।* नीरोगताकरणम्। *ज्ञाता॰ ७६।*

कल्लाणकार– कल्याणकरणं, मङ्गलकरणम्। *ज्ञाता॰ २२०।*

कल्लाणग– णाम ओहारो। *निशी॰ ११३ आ। निशी॰ ७६ अ।* कल्याणकं–अनुपहतं प्रवरम्। *उपा॰ २६।*

कल्लाणपुक्खल– कल्यां–आरोग्यं कल्यमणतीति कल्याणं, पुष्कलं–सम्पूर्णं च कल्याणपुष्कलम्। *आव॰ ७८८।*

कल्लाणयं– कल्याणकं–कल्याणकारि। *जीवा॰ १६२।* परमवस्त्रलक्षणोपेतम्। *जीवा॰ २६९।*

कल्लाणी– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

कल्लालघर– कल्पपालगृहम्। *अनुयो॰ १४२।*

कल्लालत्तणं– कौलालत्वं–सुराविक्रेतृत्वम्। *आव॰ ८२९।*

कल्लुगा– कृन्तकाः। *निशी॰ ८० आ।* नदीपाषाणेषु उत्पद्यमाना द्वीन्द्रियविशेषाः। *बृह॰ १६२ आ।*

कल्लुयावासा– द्वीन्द्रियविशेषः। *जीवा॰ ३१।*

कल्लेदाणिं– नित्यं। *निशी॰ १४४ आ।*

कल्लोलं– फलविशेषः। *प्रश्न॰ १६२।*

कल्हाडए– कल्हाडकः। गोरथकाः। *बृह॰ १३८ आ।*

कल्हारे– जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कल्होडः– गोरथकः। *दशवै॰ २१७।*

कवइय– कवचिका–सन्नाहविशेषः। *औप॰ ६२। भग॰ ३१७।*

कवए– कवचः–कङ्कटः। *भग॰ ३१८।* तनुत्राणम्। *जम्बू॰ २१९।*

कवचं– कङ्कटं–आवरणं। *जीवा॰ १९३।* सन्नाहविशेषः। *ज्ञाता॰ २२१।*

कवड– कपटं–वेषपरावर्त्तादिर्बाह्यो विकारः। *आव॰ ५६६।* देशभाषानेपथ्यादिविपर्ययकरणम्। *सूत्र॰ ३२९।* वेषभाषावै–परीत्यकरणम्। *प्रश्न॰ ५८।* भाषाविपर्ययकरणम्। *प्रश्न॰ २७।* वेषाद्यन्यथात्वम्। *ज्ञाता॰ १५८।* वेषादिविपर्ययकरणम्। *ज्ञाता॰ २३८।* परवञ्चनाय वेषान्तरकरणम्। *जम्बू॰ १६९।* नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणम्। *ज्ञाता॰ ८०।* वञ्चनाय वेषान्त-रादिकरणम्। *भग॰ ३०८।*

कवडसड्ढओ– कपटश्राद्धः। *आव॰ ७९९।*

कवड्डगा– ताम्रमयं नाणकम्। *निशी॰ ३३० अ।*

कवय– कवचः–कङ्कटः। *भग॰ १९३।* सन्नाहविशेषः। *जम्बू॰ २०५।* तनुत्राणम्।*जीवा॰ २५९।* परिकरः। *प्रश्न॰ ७५।*

कवर्गप्रविभक्तिकं– पञ्चदशो नाट्यविधिः। *जम्बू॰ ४१७।*

कवल– आहारविशेषः। *स्था॰ ९३।* कुर्कुट्यण्डकमात्रा। *ओघ॰ १८२।* कवलः। *आव॰ ८४४।*

कवलकः– उपकणभेदः। *आचा॰ ६०।*

कवलग्गाहो– कवलग्राहः–गलकण्टकापनोदाय स्थूलकवलग्र–हण, मुखविमर्दनार्थं वा दंष्ट्राधःकाष्ठखण्डदानम्। *विपा॰ ८१।*

कवल्ली– कवली–गुडादिपाकभाजनम्। *विपा॰ ५८।*

कवल्लीओ– लोही। *निशी॰ ३१७ अ।*

कवाड– कपाटं–द्वारयन्त्रम्। *दशवै॰ १८४।* कपाटं–प्रतोलीद्वा–रसत्कम्। *जीवा॰ १५९।* कपाटानि–प्रतोलीद्वारसत्कानि। *प्रज्ञा॰ ८६।*

कवाडोब्भिन्न– यद् पिहितं कपाटं उद्भिद्य –उद्घाट्य साधुभ्यो दीयते तत् कपाटोद्भिन्नम्। *पिण्ड॰ १०५।*

कवाल– कपालं–कर्परम्। *सूत्र॰ २९८।* घटखर्प्परादि। *आचा॰ ३११।*

कविंजला– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

कविकं– खलिनम्। *आव॰ २६१। दशवै॰ ४९।*

कविकच्छु– कविकच्छूः–तीव्रकण्डूतिकारकः फलविशेषः। *प्रश्न॰ १६४।*

कविकच्छू– कपिकच्छूः–खर्ज्जुकारी। *ज्ञाता॰ २०४।*

कविचियाओ– कलाचिकाः। *भग॰ ५४८।*

कविट्ठ– कपित्थं फलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६४।* फलविशेषः। *आव॰ ७९८। प्रज्ञा॰ ३२८। भग॰ ८०३।* कपित्थफलम्। *दशवै॰ १८५।* बहुबीजफलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कविट्ठपाणगं– पानकभेदः। *आचा॰ ३४७।*

कविट्ठलता– कपित्थलता। *आव॰ १७३।*

कवित्थ– कपित्थं फलविशेषः। *उत्त॰ ६५३।*

कवियच्छू– कपिकच्छूः–कण्डूविजनको वल्लीविशेषः। *जीवा॰ १०७।*

कविल– कपिलः–पक्षविशेषः। *ज्ञाता॰ २३१। प्रश्न॰ ८।* सुस्थिताचार्याणां शिष्यः। *निशी॰ ३१।* ग्रन्थार्थ-परिज्ञानशून्यः। परिव्राजकविशेषः। *औप॰ ९१।* राजपुत्रविशेषः। मरीचिशिष्यः। *आव॰ १७०।* सुस्थि–ताचार्यशिष्यः वेदत्रयानुभववान्। *बृह॰ ९८ अ।* क्षुलक-श्रमणः। *निशी॰ ७८ अ।* राजगृहनगरे ब्राह्मणः। *व्यव॰ १६६।* नगरबाहिरिकायां ब्राह्मणः। *आव॰ ६९१।* कौशाम्ब्यां काश्यपपुत्रः। *उत्त॰ २८६।* लोभेदृष्टान्तः। क्षुल्लविशेषः। *निशी॰ ७८ अ।* कपिलः। *उत्त॰ २८६।* चम्पानगर्यां कपिलनामा वासुदेवः। *ज्ञाता॰ २२२।*

कविला– नामविशेषः। विनयबहुमानचुतर्थभङ्गे दृष्टान्तः। *निशी॰ ८ अ।* कपिला–दानस्यादात्री श्रेणिकस्य दासी। *आव॰ ६८१।*

कविलिए– कृष्णपुद्गलस्य भेदविशेषः। *सूर्य॰ २८७।*

कविल्ली– कटाहः–लोहभाजनविशेषः। *आव॰ ३६९।* मण्डनकादिपचनिका लोही। *अनुयो॰ १५९।*

कविसाणए– कपिशायनं–मद्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

कविसीसं– कपिशीर्षकं–प्राकाराग्रम्। *आव॰ २३१।*

कविसीसए– कपिशीर्षकः–प्राकाराग्रम्। *जम्बू॰ ३२०।*

कविसीसग– कपिशीर्षकः। *ज्ञाता॰ ९९। जीवा॰ २१९।*

कविहसितं– आगासे विकृतरूपं मुखं वाणरसरिसं हासं करेज्ज। *निशी॰ ७५ अ।*

कविहसियं– कपिहसितं, यदाकाशे वानरसदृशं विकृतं मुखं हासं कुर्यात्। *आव॰ ७५०।* अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्द–रूपम्। *जीवा॰ २८३।* कपिहसितं–अनभ्रे

या विद्युत् सहसा तत् कपिहसितम्। *भग॰ १९६।*

कविहसिया– कपिहसितानि, अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्द–रूपाणि। *अनुयो॰ १२१।*

कवेलुयं– कवेलुकम्। *जम्बू॰ २३।*

कवेल्ली– लोहकटाहम्। *भग॰ २३८।*

कवेल्लुकं– भाव्यम्। *आव॰ ५२१।*

कवेल्लुयं– कवेल्लुकं–मण्डनपचनिका लोही। *जीवा॰ १८०।*

कवोड– कपोतः–पक्षिविशेषः। *पिण्ड॰ ७६।*

कवोतक– कपोतकः। *प्रश्न॰ ८।*

कवोय– कपोतकः। पक्षिविशेषः। *भग॰ ६९१।* कपोतः–पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ४५६।*

कवोया– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

कवोलदेसो– कपोलदेशः–गण्डभागः। *जीवा॰ २७३।*

कव्व– काव्यः–
धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धग्रन्थः–संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसङ्कीर्णभाषानिबद्धः, समविषमार्द्धसमवृ–त्तबद्धतया गद्यतया चेति, गद्यपद्यगेयवर्णपदभेदबद्धः। *स्था॰ ४५०।* ग्रन्थः। *स्था॰ २८८।* कवेरभिप्रायः। *अनुयो॰ १३५।*

कव्वग– भाजनस्यावकल्पमपवृत्य। *व्यव॰ ३०२* आ।

कव्वडं– कुणगरो। *निशी॰ ७०* आ। वाडवोपमकूड–सक्खिसमुब्भावियदुक्खछलव्ववहारतं कव्वडं। *दशवै॰ १५७।*

कव्वालभयगो– तइओ भयगभेओ। *निशी॰ ४४* अ।

कव्वालो– खितिखाणतो उड्डमादी। *निशी॰ ४४* आ।

कशा– बन्धनविशेषः। *भग॰ १९३। दशवै॰ २६७।*

कषः– संसारः। *जीवा॰ १५।*

कषपट्टकं– सुवर्णपरीक्षकपाषाणविशेषः। *जीवा॰ १९१।*

कषायः– रसस्य तृतीयभेदः। *प्रज्ञा॰ ४७३।* पीतरक्तवर्णाश्रय–रञ्जनीयवस्तु। *जम्बू॰ १८९।*

कषायसमुद्घातः– कषायोदयेन समुद्घातः। *जीवा॰ १७।*

कस– कशः–वर्धविकारः। *उत्त॰ ३६४।* वर्षन्ति–हिंसन्ति परस्परं प्राणिनोऽस्मिन्निति कषः–संसारः। *प्रज्ञा॰ २८५।* कषः–चर्मदण्डः। *जम्बू॰ १४७।* कषः–वर्धः। *प्रश्न॰ १६४।* कष्यतेऽस्मिन् प्राणी पुनःपुनरावृत्तिभावमनुभवति कषोपल–कष्यमाणं कनकवदिति कषः संसारः। *उत्त॰ १९०।* कर्म भवो वा। *आव॰ ७७।* कषति–हिनस्ति देहिनः इति कषं कर्म्म। *स्था॰ १९३।* कसः–चर्मयष्टिका। *प्रश्न॰ २२।* कशा–आयुष उपक्रमे द्वितीयभेदः। *आव॰ २७३।* संसारः। *आचा॰ ६८।* कशः–चर्मयष्टिः। *उत्त॰ ४८।* चर्मदण्डः। *जम्बू॰ २३५।*

कसट्टं– कचवरं। *ओघ॰ १८४।*

कसट्टिया– कषपट्टः। *भग॰ २१३।*

कसप्पहारे– वर्धताडनानि। *ज्ञाता॰ ८७।*

कसर– कशरः–खशरः। *भग॰ ३०८।*

कसाइज्जति– कषायन्ते। *आव॰ ११९।*

कसाइययं– कषायितकः। *आव॰ २१९।*

कसाईओ– कषायितः। *आव॰ ३२३।*

कसाए– कषायः कषायोदयः। *प्रज्ञा॰ १३५।* कृषन्ति विलि–खन्ति कर्मरूपं क्षेत्रं सुखदुःखशस्योत्पादनायेति कषायाः, कलुषयन्ति शुद्धस्वभावं सन्तं कर्ममलिनं कुर्वन्ति जीवमिति वा। *प्रज्ञा॰ २९०।* कर्षन्ति–हिंसन्ति परस्परं प्राणिनोऽस्मि–न्निति कषः–संसारस्तमयन्ते–अन्तर्भूतण्यर्थत्वाद्गमयन्ति प्रापयन्ति ये ते कषायाः। *प्रज्ञा॰ २८५।* अन्नरुचिस्तम्भन–कृत्कषायः। *स्था॰ २६।*

कसाय– कषायं–प्रज्ञापनायाश्चतुर्दशं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* वल्लादि। *दशवै॰ १८०।*

कसायकलहो– कलहस्य द्वितीयो भेदः। *निशी॰ २५१।*

कसायकुसील– कषायैः कुशीलः–कषायकुशीलः। *भग॰ ८९०।* कषायकुशीलः–यस्य चञ्चसु ज्ञानादिषु कषायैर्विराधना क्रियते सः, कुशीलस्य द्वितीयो भेदः। *उत्त॰ २५६।*

कसायदुट्ठो– हंकारंतो। *निशी॰ ४०* अ। कसायदुष्टो यथा सर्षपनालिकाभिधानशाकमर्जिकाग्रहणकुपितो मृताचार्य–दन्तभञ्जकः। साधुः। *स्था॰ १६३।*

कसायपद– प्रज्ञापनायां चतुर्दशं पदम्। *भग॰ ७४४।*

कसायपच्चक्खाण– क्रोधादिप्रत्याख्यानं–तान् न करोमीति–प्रतिज्ञानम्। *भग॰ ७२७।*

कसायपायाल– कषाया एवागाधभवजननसाम्येन पातालमिव पातालं यस्मिन् सः–कषायपातालः। *आव॰ ६०१।*

कसायलोगो– कषायलोकः–औदयिकभावकषायलोकः। *आचा॰ ८४।*

कसायसंकिलेस– कषाया एव कषायैर्वा सङ्क्लेशः–

असमाधिः कषायसङ्क्लेशः। *स्था॰ ४८९।*

कसायसंलीणया– कषायसंलीनता, संलीनताया द्वितीयो भेदः। सा च तदुदयनिरोधोदीर्णविफलीकरणलक्षणा। उदयस्सेव निरोहो उदयं पत्ताणं वाऽफलीकरणं, जं इत्थ कसायाणं कसायसंलीनता एसा। *दशवै॰ २९।*

कसाया– कषः, संसारस्तस्मिन् आ समन्तादयन्ते–गच्छन्त्ये–भिरसुमन्त इति कषायाः, यद्वा कषाया इव कषायाः। *उत्त॰ १९०।* कृषन्ति–विलिखन्ति–कर्म्म–क्षेत्रं सुखदुःख–फल-योग्यं–कुर्वन्ति–कलुषयन्ति वा जीवमिति निरुक्तविधिना कषायाः। *स्था॰ १९३।* कलुषाः। *५८९।* कषः–संसार-स्तमयन्ते गच्छन्त्येभिर्जन्तव इति कषायाः–क्रोधादयः परिणामविशेषः। *जीवा॰ १५।*

कसाहीया– मुकुलिअहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।*

कसिण– कृत्स्नः–सम्पूर्णः। *आव॰ ४९२, ५००। दशवै॰ २३४। सूत्र॰ २७८। व्यव॰ ३०१* आ। कृत्स्नः। *भग॰ १४९। व्यव॰ ११८* आ। कृत्स्नं सर्वार्थग्राहकत्वात्। *ज्ञाता॰ १५३।* कृत्स्नं कृष्णं वा *उत्त॰ ४८५।* प्रधानभावम्। *निशी॰ १३६* आ। कृष्णं। क्लिष्टम्। *दशवै॰ २३४।* वण्णतो जुत्तप्पमाणा। *निशी॰ ४९* अ। सदसं प्रमाणातिरिक्तं। *निशी॰ १३८* आ।

कसिणखंध– कृत्स्नस्कन्धः–परिपूर्णस्कन्धः। *अनुयो॰ ४०।*

कसिणधवलपडिवज्जगो– कृष्णधवलप्रतिपत्ता। *आव॰ ३९४।*

कसिणा– यावतोऽपराधानापन्नस्तावतीनां तच्छुद्धीनामारोपणा कृत्स्नारोपणा। *सम॰ ४७।* कृत्स्ना यत्र झोषो न क्रियते। *व्यव॰ १२४* आ।

कसिणाओ– कृत्स्नाः, सम्पूर्णा अनुपहता। *आचा॰ ३२३।*

कसिणे– घनमसृणानि यैः सूर्यो न दृश्यते। *बृह॰ २४०* अ।

कसेरुगं– वनस्पतिविशेषः। *आचा॰ ३४८।*

कसेरुमती– नदीविशेषः। *व्यव॰ २२७* आ।

कसेरुया– जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कसेहि– परव्यतिरिक्त आत्मा शरीरं तत् कष्टतपश्चरणादिना कृशं करु, यदि वा "कष" कस्मै कर्म्मणेऽलमित्येवं पर्या–लोच्य यच्छक्नोषि तत्र नियोजयेरित्यर्थः। *आचा॰ १९१।*

कहं– कथा वाक्यप्रबन्धरूपा। *उत्त॰ ४२४।* कथं–केनप्रकारेण केनान्वर्थेनेति। *सूर्य॰ २९२।*

कहंतरं– कथान्तरम्। *आव॰ ५९२। उत्त॰ ४२५।* उच्चस्वरः। *बृह॰ २१३* अ।

कहकहकं– प्रमोदभरजनितकोलाहलम्। *जम्बू॰ ४१९।*

कहकहेंति– कहकहायमानं–प्रहसितविशेषः। *प्रश्न॰ ५२।*

कहग– कथकः सरसकथाकथनेन श्रोतृरसोत्पत्तिकारकः। *जम्बू॰ १२३।* कथकः। *अनुयो॰ ४६।*

कहणविहि– कथनविधिः, कथनप्रकारः। *आव॰ ८६२।*

कहणविही– कथनविधिः, कथनप्रकारः। *आव॰ ८०३।*

कहणा– धर्मकथालब्धिसंपन्नः। *ओघ॰ ९३।* कथनाकथनम्। *आव॰ २३४।*

कहरत्तो– कथासु रक्तः–सक्तः कथारक्तः। *ओघ॰ १२७।*

कहल्लो– कभेल्लः–कर्परः। *अन्त॰ १२।*

कहा– संयमाराधनी या वाग्योप्रवृत्तिः। *बृह॰ ४०* अ। वाइगजोगेण संयमाराहणी कहा। *निशी॰ १* आ। साधूवादं जल्पं वितडं वा एता तिण्णिवि कहा। *निशी॰ २४०* अ। आख्यानकानि। *सम॰ ११८।* वचनपद्धतिः, चरित्रवर्णनरूपा वा। *स्था॰ १५६।* ब्रह्मचर्यगुप्तेर्भेदः। *आव॰ ५७२।* कथा–वाक्यप्रबन्धः शास्त्रम्। *सम॰ ५५।* कथा–वार्त्ता। *दशवै॰ ११४।*

कहाहिगरणाइं– कथा–राजकथादिका–अधिकरणानि च यन्त्रादीनि कलहा वा कथाधिकरणानि। *सम॰ ५५।*

कहिंथ– कुत्रात्र। *उत्त॰ १६२।*

कहिय– कथितं–प्रबन्धेन प्रतिपादितम्। *उत्त॰ ३४१।*

कहियाइओ– कथितवान्। *आव॰ २३७।*

कांक्षा– ऐहलौकिकपारलौकिकेषु विषयेष्वाशंसा। *तन्दु॰ ७१८।*

कांचणय– यस्मादुत्पलादीनि काञ्चनप्रभाणि काञ्चननामानश्च देवास्तत्र परिवसन्ति ततः काञ्चनप्रभोत्पलादियोगात् काञ्चनकाभिधदेवस्वामिकत्वाच्च सः काञ्चनकः। *जीवा॰ २९१।*

कांचणिया– काञ्चनिका–राजधानीविशेषः। *जीवा॰ २९२।*

कांजिक– जहण्णेणं ज्ञावे कोदवोदणो जूहं, च तंदुलोदकं मुद्–गरसो। *निशी॰ ३२६* आ।

काइआण– निकाय। *जम्बू॰ ७५।*

काइओ– कायिकः। *आव॰ ७७८।*

काइमाईया– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

काइय– कायिकी–प्रश्रवणम्। *आव॰ ६३४।*

काइयसमाहि– कायिकीसमाधिः। *आव॰ ६१८।*

काइया– चीयत इति कायः–शरीरं यत्र भवा तेन वा निर्वृता कायिकी, क्रियायाः प्रथमो भेदः। *भग॰ १८१। आव॰ ६११।* चीयते इति कायः शरीरं काये भवा कायेन निर्वृत्ता कायिकी। *प्रज्ञा॰ ४३५।* क्रियाः–व्यापारविशेषः, तत्र कायेन निर्वृत्ता कायिकी कायचेष्टेत्यर्थः। *सम॰ १०।*

काइयामत्तो– कायिकीमात्रकम्। *आव॰ ६३३।*

काईया– कायिकी। *आव॰ ५६।*

काउंबरि– कादुम्बरि बहुबीजकवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

काउंबरिय– वृक्षविशेषः। *भग॰ ८०३।*

काउंबरो– काकोदुम्बरः–खादिमवृक्षविशेषः। *आव॰ ८२८।*

काउज्जुय– कायर्जुकः–कायेन ऋजुरेव ऋजुकः। *उत्त॰ ५९०।*

काउज्जुयया– ऋजुकस्य–अमायिनो भावः कर्म्म वा ऋजुकता कायस्य ऋजुकता कायर्जुकता। *स्था॰ १९६।*

काउड्डावणे– कार्याकर्षणहेतुः। *ज्ञाता॰ १९९।*

काउदर– काकोदरः–दर्वीकरसर्पविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

काउय– कपोतः–बहुकृष्णरूपः। *प्रज्ञा॰ ८०।*

काउलेसा– कपोतलेश्या–कपोतवर्णा लेश्या–धूम्रवर्णा। *स्था॰ १७५।*

काउस्सग्गो– कायस्योत्सर्गः कायोत्सर्गः। *आव॰ ७७८।*

काऊ– लोहे धम्यमाने यादृक् कपोतः–बहुकृष्णरूपोऽग्नेर्वर्णः। *जीवा॰ १०३।* लेश्या कायवान्। *आचा॰ २३१।*

काऊअगणि– कृष्णाग्निः। *सम॰ १३६।*

काऊअगणिवण्णाभा– कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषां ते कृष्णाग्निवर्णाभाः। *सम॰ १३६।*

काए– कायः–शरीरं, देहः, बोन्दी, चयः, उपचयः, सङ्घातः, उच्छ्रयः, समुच्छ्रयः, कडेवरं, भस्त्रा, तनुः, पाणुरिति । *आव॰ ७६७।* पर्यायः सामान्यरूपो निर्विशेषणो जीवत्व लक्षणः विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षणः। *प्रज्ञा॰ ३७५।* अष्टाशीतौ पञ्चत्रिंशत्तमो ग्रहः। *जम्बू॰ ५३८।* कापोतिका। *बृह॰ १०१ अ।* काकः–वायसः। *ज्ञाता॰ २०५।* कावोडी। *निशी॰ १८७ अ।* कवोडी। *निशी॰ १८ अ।* अष्टाशीत्यां पञ्चत्रिंशत्तमो महाग्रहः। *स्था॰ ७९।* कुहणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

काओ– कायः, जीवस्य विवक्षितः सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेषः। *जीवा॰ १४०।*

काओअरा– दर्वीकरसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।*

काओली– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३,।*

काकंदी– काकंदी–सुविधिनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०।*

काकंधे– अष्टाशीत्यां महाग्रहे षट्त्रिंशत्तमः। *स्था॰ ७९।*

काक– भिक्षायां दृष्टान्तः। *व्यव॰ १६३ आ।*

काकजंघा– काकजंघा–वनस्पतिविशेषः। सा हि परिदृश्यमानस्नायुका–स्थूलसन्धिस्थाना च भवति इति तया जङ्घ- योरुपमानम्। *अनुत्त॰ ४।*

काकणिरयणे– चक्रवर्त्तिनः सप्तमेकेन्द्रियरत्नम्। *स्था॰ ३१८।*

काकणी– सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनिः। *स्था॰ ४७१।*

काकतालीयम्– अवितर्कितसम्भवः, न्यायविशेषः। *आचा॰ १८।*

काकधट्ठो– काकधृष्टः। *आव॰ ५५४।*

काकनः– पञ्चमं महाकुष्ठम्। *प्रश्न॰ १६१।*

काकनाद– कुष्ठविशेषः। *आचा॰ २३५।*

काकमुख– रथाग्रभागः। *जम्बू॰ २४९।*

काकपद– मणिलक्षणविशेषः। *जम्बू॰ १३८।*

काकलि– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३।*

काकली– मनोज्ञगीतादि। *उत्त॰ ६३३।* सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनि। *स्था॰ ४७२।*

काकस्सर– श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम्। *स्था॰ ३९६। जम्बू॰ ४०।*

काकिणी– राज्यम्। *बृह॰ १५४ अ।*

काकुः– । *जीवा॰ २६१। प्रज्ञा॰ २४७।*

काकूद– तालुकः। *जम्बू॰ ११३ । जीवा॰ २७३।*

काकुयं– काकुदं–तालु। *प्रश्न॰ ८२।*

काकोदरो– काकोदरः, दर्वीकसरसर्पविशेषः। *जीवा॰ ३९।*

काकोली– साधारणवनस्पतिविशेषः। *आचा॰ ५७।*

कागंदी– काकन्दी–नगरीविशेषः। खेमतेऽवि गाहावतीनगरी। *अन्त॰ २३।* जितशत्रुराजधानी। *अनुत्त॰ २।* भद्रसार्थवाही–स्थानम्। *अनुत्त॰ ८।*

कागंदीए– काकन्दीनगरी तद्भवः। *ज्ञाता॰ १६३।*

कागजंध– जहिं मणीपडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणिताणि कायाणि भण्णंति। *निशी॰ २५४* आ।

कागणिमंसं– काकणीमांसं श्लक्ष्णमांसखण्डम्। *औप॰ ८७*। काकणीमांसं–तद्वेहोत्कृत्त ह्रस्वमांसखण्डम्। *विपा॰ ४७*। श्लक्ष्णखण्डपिशितम्। *प्रश्न॰ ५९*।

कागणिरयणं– काकणीरत्नम्। चक्रिणो रत्नविशेषः। *जम्बू॰ २३६*।

कागणिलक्खण– द्वासप्ततौ कलायां द्वाचत्वारिंशत्तमा। *ज्ञाता॰ ३८*।

कागणी– रज्जं। *निशी॰ २४३* आ। काकणी, चक्रिणो रत्नविशेषः। *जम्बू॰ १३८*। सपादा गुञ्जा। *अनुयो॰ १५५*। रुप्पमयं। *निशी॰ ३३०* अ।

कागणीरयणे– काकणीरत्नम्–सुवर्णाष्टकनिष्पन्नम्। *अनुयो॰ १७१*।

कागभुत्तं– काकभुक्तं यथा काक उच्चित्योच्चित्य विष्ठादे–र्मध्याद्वल्लादि भक्षयति, विकिरति वा काकवत्सर्वं, काकवदेव कवलं प्रक्षिप्य मुखे दिशो विप्रेक्षते। *ओघ॰ १९२*।

कागलि– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

कागवन्नो– काकवर्णः–शिल्पसिद्धदृष्टान्तः जितशत्रोरपरनाम। *आव॰ ४१०*।

कागस्सर– काकस्वरं श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम्। *अनुयो॰ १३२*। श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरम्। *जीवा॰ १९४*।

कागा– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*।

कागिणी– काकिणिः–विंशतिकपर्दकाः। *उत्त॰ २७२*। चक्रवर्त्तिरत्नम्। *उत्त॰ ६५०, २७६*।

कागिणीमंसगं– काकिणीमांसकं–श्लक्ष्णमांसखण्डम्। *सूत्र॰ १२५*। श्लक्ष्णमांसम्। *आव॰ ६५१*।

कागो– काकः–वायसः। *आव॰ ८५९*।

काङ्क्षावान्– गृद्धः–मूर्छितः। *आव॰ ५८७*।

काच– काचः–पाषाणविकारः। *औप॰ ९३*।

काचनं– बन्धनम्। *स्था॰ २२२*।

काञ्जिकं– आरनालं। *बृह॰ २६७* आ। सौवीरकम्। *स्था॰ १४८*। अम्लम्। *स्था॰ ४९२*। आरनालम्। *ओघ॰ १५४*।

काञ्जिकपत्रं– काञ्जिकेन बाष्पितम्। *बृह॰ २६७* आ।

काञ्जिका– आरनालम्। *ओघ॰ २१५*।

काडिअं– कौट्यौ, उभयप्रान्तौ। *जम्बू॰ २०१*।

काण– काणः, भिन्नाक्षः, स्फुटितनेत्रः। *दशवै॰ २१५*। आच॰ ३८९।

काणओ- चक्षुर्विकलः। *बृह॰ ११९* अ।

काणकक्रयी– बहुमूल्यमपि अल्पमूल्येन चौराहृतं काणकं हीनं कृत्वा क्रीणातीत्येवंशीलः। *प्रश्न॰ ५८*।

काणगं– व्याधिविशेषात्सच्छिद्रम्। *आचा॰ ३४९*।

काणग– काणकः–चोरितमहिषः। *व्यव॰ २३१* आ।

काणगमहिसो– जो चारिओ स काणगमहिसो। *निशी॰ ४३* आ।

काणच्छि– काणाक्षः। *निशी॰ २५७* अ। काणाक्षः। *आव॰ २१८*। काणाक्षि। *आव॰ २१८*।

काणण– सामान्यवृक्षजातियुक्तानि नगराभ्यर्णवर्त्तीनि। स्त्रीणां पुरुषाणां वा केवलानां परिभोग्यानि वा। येभ्यः परतो भूधरोऽटवी वा तानि सर्वेभ्योऽपि वनेभ्यः पर्यन्तवर्त्तीनि वा। शीर्णवृक्षकलितानि वा। *अनुयो॰ १५९*। स्त्रीपक्षस्य पुरुषपक्षस्य चैकतरस्य भोग्येषु वनविशेषेषु अथवा–यत्परतः पर्वतोऽटवी वा भवति तानि काननानि। *ज्ञाता॰ ६७*। नगराद् दूरवर्त्तिवनखण्डः। *भग॰ ४८३*। काननं–बृहद्वृक्षाश्रयैर्वनम्। *उत्त॰ ४५१*। सामान्यवृक्षवृन्दं नगरासन्नं काननम्। *राज॰ ११२*। काननं सामान्यवृक्षवृन्दं नगरासन्नम्। *जीवा॰ २५८*। सामान्यवृक्षोपेतं नगरासन्नं च। *प्रश्न॰ १२७*। सामान्यवृक्षो–पेतनगरासन्नवनविशेषः। *प्रश्न॰ ७३*। दूरवर्त्तिवनम्। *आव॰ ५६८*। सामान्यवृक्षसंयुक्तं नगरासन्नं वनम्। *भग॰ २३८*। सामान्यवृक्षवृन्दयुक्तानि नगरासन्नानि काननानि। *ज्ञाता॰ ३६*।

काणयं– काणकं–हीनम्। *प्रश्न॰ ५८*।

काणव– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*।

काणिट्ठ– लोहमय्य इष्टकाः। *व्यव॰ १०६* आ। पाषाणमय्यः पक्वेष्टिका वा बलिका महत्यश्च कणिका, तन्मयगृहकारापकः। *बृह॰ ५०* आ।

काणियं– काणितम्। *आव॰ ३९६*। अक्षिरोगः। *आचा॰ २३३*।

काणो– काणः–दीपकाणः, फरलः। *प्रश्न॰ २५*।

काण्डं– धनुः। *भग॰ ९३*।

कातिता– कायिकी, कायचेष्टा। *स्था॰ ३१७*।

कातिते– कायिकं–शारीरिकम्। इडापिङ्गलादि प्राणतत्त्वम्। *स्था॰ ४५२।*

कादंबक– कादम्बाः, हंसविशेषाः। *प्रश्न॰ ८।*

कादम्बा– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

कादूसणिया– कम्–आत्मानं दूषयति तमस्कायपरिणामेन परिणमनात् कदूषणा सैव दूषणिका। *भग॰ २६९।*

काननं– अरण्यम्। *दशवै॰ १४७।*

काननद्वीपः– जलपत्तनम्। *उत्त॰ ६०५।*

कापालिक– दृष्टान्तविशेषः। *निशी॰ १८० अ।* चरगविसेसो। *निशी॰ ३१ अ।*

कापालिका– अस्थिका। *व्यव॰ २०६ अ।*

कापिशायितं– मद्यविशेषः। *जीवा॰ २६५।*

कापिशायणं– कापिशयनं–मद्यविशेषः। *जीवा॰ ३५१।*

कापुरिसा– कापुरुषाः, कुत्सितनराः। *ज्ञाता॰ ५०।*

कापोती– भारकायः, क्षीरभृतकुम्भद्वयोपेता कापोती भण्यते। *आव॰ ७७०।*

काम– शब्दरूपगन्धाः। *आव॰ ८२५।* काम्यमानत्वात् कामाः–मनोज्ञशब्दादयः। *उत्त॰ ३१८।* विषयाः। *उत्त॰ २७७।* स्त्रीसंगः। *उत्त॰ २४३।* मैथुनसेवा। *जीवा॰ १७३।* मनोज्ञशब्दादिकः। *उत्त॰ १८८।* लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।* इच्छानङ्गरूपः। कामः। *आचा॰ ८९।* इच्छाकामः–अप्राप्तवस्तुकाङ्क्षारूपः। *उत्त॰ ६६४।* स्वेच्छा। *प्रज्ञा॰ ९६।* इच्छा। *आव॰ ३६५।* रोगः। *दशवै॰ ८६।* वाञ्छामात्रम। *भग॰ ८६।* मदनाभिलाषः। *स्था॰ २९१।* इच्छा–अनुमतो वा। *निशी॰ ७९।* अभिधारियो–अनुमयो वा। *निशी॰ १४।* अवधृतार्थे द्रष्टव्यः। *निशी॰ २३३ अ०।* कामं–अनुमतम्। *आव॰ ५२७।* सम्मतम्। *पिण्ड॰ ४५।* अभ्यु-पगमः। *सूत्र॰ ५३।* विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।* तवेच्छया। *आव॰ ४०३।* कामशब्दः–मकरध्वजे अवधृतौ च। *व्यव॰ १४५।* कामौ–शब्दरूपे। *उपा॰ ८।* कामः–इच्छा–मदनभे-दभिन्नो विषयः। *आव॰ ६६२।*

कामकंतं– कामकान्तं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामकमा– कामः–अभिलाषस्तेन क्रामन्तीति कामक्रमाः। *उत्त॰ ४१०।*

कामकहा– कामकथा–रूपं सुन्दरं, वयश्चोदग्रं, वेषः उज्वलः, दाक्षिण्यं, मार्दवं, शिक्षितं च विषयेषु, शिक्षा च कलासु दृष्टम–द्भुतदर्शनमाश्रित्य श्रुतं चानुभूतं च संस्तवः परिचयश्चेति कामकथा। *दशवै॰ १०९, १०७।*

कामकामे– कामकामः–कामेन–स्वेच्छया कामो–मैथुनसेवा यस्य सः–अनियतकाम इति। *प्रज्ञा॰ ९६।*

कामकूडं– कामकूटं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामगद्दहो– कामगर्दभः–मैथुने गर्दभ इवात्यन्तासक्तो जनः। *पिण्ड॰ १३१।*

कामगम– कामगमः–विमानविशेषः। *औप॰ ५२।* कामगमः–स्वेच्छाचारी। *प्रज्ञा॰ ९६।* कामगमः–यानविमानविकुर्वको देवविशेषः। *जम्बू॰ ४०५।*

कामगुण– काम्यन्त इति कामाः–शब्दरूपरसगन्धस्पर्शास्त एव स्वस्वरूपगुणबन्धेहेतुत्वाद् गुणाः कामगुणाः। *आव॰ ६१५।* कामस्य–मदनाभिलाषस्य अभिलाषमात्रस्य वा सम्पादका गुणाः–धर्म्माः पुद्गलानां, काम्यन्त इति कामाः ते च ते गुणाश्चेति वा कामगुणाः। *स्था॰ २९१।* शब्दादयः। *प्रश्न॰ ९७।* काम्यन्ते–अभिलाषन्ते इति कामगुणाः, कामस्य वा मदनस्योद्दीपका गुणाः कामगुणाः शब्दादय इति। *सम॰ ११।* कामगुणम्। *आव॰ २००।* कामगुणः। मकरकेतुकार्यम्। अब्रह्मणस्त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ६६।* *आचा॰ ९९।* *भग॰ ६६४।*

कामजलं– स्नानपीढम्। *आचा॰ ३९७।* ण्हाणपीढं। *निशी॰ ८३ आ।*

कामजाए– मनोज्ञशब्दादीनां प्रकारः समूहो वा। *उत्त॰ २९१।*

कामज्झयं– कामध्वजं, विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामज्झया– कामध्वजा–वणिग्ग्रामे गणिका। *विपा॰ ४५।*

कामड्ढितगणे– महावीरस्य नवगणेषु सप्तमः। *स्था॰ ४५१।*

कामत्थिआ– कामार्थिनः मनोज्ञशब्दरूपार्थिनः। *जम्बू॰ २६७।* शब्दरूपार्थिनः *ज्ञाता॰ ५८।*

कामदेव– उपासकदशायां द्वितीयमध्ययनम्। *उपा॰ १।* येन श्रुते सामायिकमवाप्तम्। *आव॰ ३४७।*

कामध्वजगणिका– गणिकाविशेषः। *स्था॰ ५०७।*

कामप्पभं– कामप्रभं विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामफासे– कामस्पर्शः–अष्टाशीतौ ग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः। *जम्बू॰ ५३५।*

कामभोग– काम्यन्त इति कामाः, भुज्यन्त इति भोगाः, ततश्च कामाश्च ते भोगाश्च कामभोगाः– अभिलषणीयशब्दादयः, यद्वा कामौ च शब्दरुपाख्यौ भोगाश्च स्पर्शरसगन्धाख्याः काम-भोगाः। *उत्त॰ २४३।* कामः–इच्छा भोगाः शब्दाद्यनुभवाः कामप्रतिबद्धा वा भोगाः कामयोगाः। *आव॰ ३६५।* कामेषु-स्त्रीसङ्गेषु भोगेषु धूपनविलेपनादिषु सः। *उत्त॰ २४३।* कामौ च शब्दरूपलक्षणौ भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः, अथवा काम्यन्त इति कामाः–मनोज्ञास्ते च ते भुज्यन्त इति भोगाः–शब्दादिभोगो मदनसेवा वा। *औप॰ ४३। भग॰ ९२५।* कामौ च शब्द रूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः, अथवा काम्यन्त इति कामा मनोज्ञा ते च ते भुज्यन्त इति भोगाश्च शब्दादय इति कामभोगा। *स्था॰ ९९।* कामभोगः, मदनकामप्रधानः शब्दादिविषयः। विपाककटुश्च। *दशवै॰ २७२।*

कामभोगतिव्वाभिलासे– काम्यन्त इति कामाः शब्दरूपगन्धा भुज्यन्त इति भोगाः–रसस्पर्शाः कामभोगेषु तीव्राभिलाषः तदध्यवसायित्वं कामभोग तीव्राभिलाषः। *आव॰ ८२५।*

कामभोगमारो– कामभोगैः सह मारो–मदनः मरणं वा कामभोगमारः–अब्रह्मण एकविंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ६६।*

कामभोगरसगिद्धो– कामभोगरसगृद्धः–कामभोगेषु अभिहित स्वरूपेषु रसः–अत्यन्तासक्तिरूपस्तेन गृद्धास्तेष्वभिका–इक्षावान्। *उत्त॰ २९५।*

कामभोगासंसप्पओगे– कामभोगाशंसाप्रयोगः– कामभोगा–भिलाषप्रयोगः। *आव॰ ८३९।*

काममहावण– वनविशेषः। *भग॰ ६७५।*

काममहावणे– काममहावनं–वाणारस्यां चैत्यविशेषः। *अन्त॰ २५। ज्ञाता॰ २५१।*

कामरए– कामलक्षणं रजः कामरजः। कामरतः। कामानुरागः। *भग॰ ४८३।*

कामरूवविउव्विणो– कामरूपविकरणाः, यथेष्टरूपाभिनिर्व–र्त्तनशक्तिसमन्विताः। *उत्त॰ १८७।*

कामरुविणो– कामरूपिणः–कामः–अभिलाषस्तेन रूपाणि कामरूपाणि तद्वन्तः। विविधवैक्रियशक्त्यन्विताः। *उत्त॰ २५२।*

कामल– और्णिकं, वस्त्रम्। *व्यव॰ १९२अ।*

कामलालसा– विषयलम्पटाः। *उत्त॰ ५३०।*

कामलेसं– कामलेश्यं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामवन्नं– कामवर्णं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामविणए– शब्दादिविषयसम्पत्तिनिमित्तं तथा तथा प्रवर्तनं कामविनयः। *उत्त॰ १७।*

कामवृक्षः– वृक्षोपरिजातो वृक्षः। *सूत्र॰ ३५२।*

कामसमणुन्ने– कामसमनोज्ञः कामाः–इच्छामदनरूपाः सम्यग् मनोज्ञा यस्य स, अथवा सह मनोज्ञैर्वर्त्तत इति समनोज्ञः, कामैः सह मनोज्ञः कामसमनोज्ञः, यदिवा कामान् सम्यगनु–पश्चात् स्नेहानुबन्धाज्जानाति सेवत इति कामसमनुज्ञः। *आचा॰ १२५।*

कामसिंगारं– कामशृङ्गारं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामसिट्ठं– कामशिष्टं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामा– काम्यन्त इति कामाः स्त्रीगात्रपरिष्वङ्गादयः। *सूत्र॰ २९५।* इच्छामदनरूपाः, गन्धालङ्कारवस्त्रादिरूपा वा। *सूत्र॰ १८४।*

कामावत्तं– कामावर्तं–विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

कामासंसपओग– कामाशंसाप्रयोगः– शब्दादावभिलाषकरणः। *स्था॰ २७५।*

कामिंजुया– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

कामियसर– सरःविशेषः। *बृह॰ ४७ आ।*

कामी– पंचविसयाकामेतित्ति कामी। *निशी॰ १६०अ।*

कामे– कामयते–सेवते। *दशवै॰ १९८।*

कामेयगो– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।*

कामोत्तरावडिंसए– कामोत्तरावतंसकः, विमानविशेषः। *जीवा॰ १३८।*

काम्पिल्य– अङ्गदेशे नगरी। *ज्ञाता॰ १२५।* पञ्चाला यत्र काम्पिल्यं–नगरम्। *ज्ञाता॰ १२५।*

काम्पिल्यपुरं– द्रुपदराजधानी। *प्रश्न॰ ८७।*

कायंदी– काकन्दी, पुरुषपुण्डरीकवासुदेवनिदानभूमिः। *आव॰ १६३।* नगरीविशेषः। *भग॰ ५०१।*

काय– जीवस्य निवासात् पुद्गलानां चितेः पुद्गलानामेव केषा-ञ्चित् शरणात्, तेषामेवावायवसमाधानात् कायः– शरीरम्। *आव॰ ४५६।* भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा॰ ५७।* औदारिकादित्रयं घातिचतुष्टयं वा, अथवा–चीयत इति कायः। *आचा॰ २५८।* प्रचयः। *स्था॰ २१७।* निकायः।

उत्त॰ ६९०। महाकायः। *सूत्र॰ २७७*। कायः–राशिः। प्रदेशराशिः। *भग॰ १४८*। निजदेहः। *आव॰ ५४७*। कापोती, यया स्कन्धारूढया पुरुषाः। पानीयं वहन्ति। *पिण्ड॰ ३६*। चीयत इति कायः निकाय इति। *उत्त॰ १८२*। कागः, काकविद्या। *आव॰ ३१८*। कायिकाभूमि गृहस्थसंबद्धां पश्यति। *ओघ॰ ५६*। निकायः, पृथिव्यादिसामान्यरूपः। *स्था॰ ६७*। औदारिकादिः शरीरः पृथिव्यादिषट् कायान्यतरो वा। *भग॰ ३४७*। वंसो। *दशवै॰ १३१*। द्विपदादीनां प्रतिरूपम्। *बृह॰ ६८* आ।

कायकालः– कायस्थितिः। *स्था॰ ३*।

कायकिलेसो– कायक्लेशः–बाह्यतपो विशेषः। वीरासनादिभे–दरूपः। *दशवै॰ २९*। बाह्यतपःपञ्चमभेदः। *भग॰ ९२१*।

कायकोक्कुईया– कायकौकुच्यम्, यत्स्वयमहसन्नेव भ्रूनयन–वदनादि तथा करोति यथाऽन्यो हसति। *उत्त॰ ७०९*।

कायकोडिया– काचो–भारोद्वहनं तस्य कोटी–भागः काचकोटी तथा ये चरन्ति काचकोटिकाः। *ज्ञाता॰ १५२*।

कायकं– काचकं–कचकवृक्षफलम्। *आव॰ ५३०*।

कायगुत्ती– गमणागमणपचलणादाणण्णसणप्फंदणादिकिरिया–णगोवणं कायगुत्ती। *निशी॰ १७* अ।

कायगो– क्रायकः। *आव॰ ९७*।

कायजोग– काययोगः–औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्य परिणतिविशेषः। *आव॰ ६०६*।

कायछक्कं– ककायषट्कं कायानां पृथिव्यादीनां षट्कं। सम्य–गनुपालनविषयतयाऽनगारगुणाः। *आव॰ ६६०*।

कायट्ठिई– कायो नाम जीवस्य विवक्षितः सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेषस्तस्तिन् स्थितिः कायस्थितिः, यस्य वस्तुनो येन पर्यायेण जीवत्वलक्षणेन पृथिवीकायादि–त्वलक्षणेन वाऽऽदिश्यते व्यवच्छेदेन यद्भवनं सा। *जीवा॰ १४०*।

कायट्ठिति– काये–निकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थितिः–कायस्थितिः असङ्ख्योत्सर्पिण्यादिका। सप्ताष्टभवग्रहणरूपा। *स्था॰ ६६*। काय इव कायः। तत्र सामान्यरूपो निर्विशेषणो जीवत्वलक्षणः, विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षणस्तस्य स्थितिः–अवस्थानं कायस्थितिः। सामान्यरूपेण विशेषरूपेण वा पर्यायेणादिष्टस्य जीवस्य यदव्यवच्छेदेन भवनं सा। *प्रज्ञा॰ ३७५*।

कायठिई– कायस्थितिः–काय इति पृथिवीकायस्तस्मिन् स्थितिः ततोऽनुद्वर्तनेनावस्थानम्। *उत्त॰ ६९०*। *आचा॰ ८८*। कायकालः। *स्था॰ ३*। कायस्थितिः–प्रज्ञापनाया–मष्टादशं पदम्। *भग॰ ३५७*। *प्रज्ञा॰ ६*। *जीवा॰ १४१*।

कायणुवाए– जहा दगतीरे असंघसंवातिमेसु कायणुवाए। *निशी॰ १४८* आ।

कायतिगिच्छा– कायस्य–ज्वरादिरोगग्रस्तस्य चिकित्सा प्रतिपादकं तन्त्रं कायचिकित्सा। *स्था॰ ४२७*।

कायदुक्कड– कायदुष्कृतः–आसन्नगमनादिनिमित्ता। *आव॰ ५४८*।

कायदुप्पणिहाणे– कायदुष्प्रणिधानम्–कृतसामायिकस्या–प्रत्युपेक्षितादिभूतलादौ करचरणादीनां देहावयवानामनि–भृतस्थापनम्। *आव॰ ८३४*।

कायपरित्तो– कायपरीत्तः प्रत्येकशरीरी। *जीवा॰ ४४६*।

कायपरीते– कायपरीतः यः प्रत्येकशरीरी स। *प्रज्ञा॰ ३९४*। प्रत्येकशरीरी। *प्रज्ञा॰ १३९*।

कायबलिआ– कायबलिकाः–क्षुधादिपरीषहेष्वग्लानीभव–त्कायाः। *औप॰ २८*।

कायबलिय– कायबलिकाः परीषहापीडितशरीरः। *प्रश्न॰ १०५*।

कायभव– काये–जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवः जन्म सः कायभवः। *भग॰ १३३*।

कायभावो– काचभावः–काचधर्मः। *आव॰ ५२१*।

कायमओ– काचमयः। *आव॰ ५५९*।

कायमणिआ– काचमणि–कायः। *आव॰ ७६६*।

कायमणीय– काचमणिकः–कुत्सितः काचमणिः। *आव॰ ५२१*।

कायमाणं– कायमानम्। *ओघ॰ ४६*।

काययोग– औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति–विशेषः। *आव॰ ५८३*।

कायरए– आजीविकोपासकः। *भग॰ ३७०*।

कायरा– कातराः–परीषहोपसर्ग्गोपनिपाते सति विषयलोलुपा वा। *आचा॰ १५३*। चितावष्टम्भवर्जिताः।

ज्ञाता॰ ५२।

कायरिए– वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ १९९।*

कायरिया– कातरिका–माया। *सूत्र॰ ५७।*

कायवरो– काचवरः–प्रधानकाचः। *प्रश्न॰ १५३।*

कायविसए– कायाणि–कायविसए। *निशी॰ २५४* आ।

कायसंकिलेसे– कायमाश्रित्व सङ्क्लेशः–असमाधिः काय सङ्क्लेशः। *स्था॰ ४८९।*

कायसंवेहो– विवक्षितकायात्–कायान्तरे तुल्यकाये वा गत्वा पुनरपि यथासम्भवं तत्रैवागमनम्। *भग॰ ८०९।*

कायसंसिओ– कायसंसृतः–देहसङ्गतः। *दशवै॰ १२७।*

कायसुखता– काये सुखं–यस्यासौ कायसुखस्तद्भावः कायसुखता। *प्रज्ञा॰ ४६२।*

कायाणि– जहिं मणी पडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि ताणि कायाणि भण्णंति। दुते वा काये रत्ताणि कायाणि। *निशी॰ २५४* आ। क्वचिद्देशे इन्द्रनीलवर्णः–कर्पासो भवति तेन निष्पन्नानि कायकानि। *आचा॰ ३९४।*

कायापरीत्त– काधारणशरीरी। *जीवा॰ ४४६।*

कायिका– उच्चारभूमिः। *आव॰ ७८१।* प्रश्रवणम्। *आव॰ ७९८।*

कारं–राजदेयं द्रव्यम्। *भग॰ ४८१।*

कारंडग– कारण्डकः–पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

कार– वैयावृत्यादिकरणः। *बृह॰ ४३* अ, *५२* आ।

कारओ– कारकः। विधायकः। *उत्त॰ ३१३।*

कारक– हेतुः। *नं॰ १६५।* कर्तारम्। *बृह॰ १५८* आ। हेतुर्व्यञ्जको वा। *आव॰ ५९७।* सिप्पी।

कारगं– करोतीति कारकं उदाहरणम्। *ओघ॰ ११।* साधुः। सम्यग्दर्शनाद्यनुष्ठाना। *आचा॰ ४१९।* क्रिया। *बृह॰ ५२।*

कारगसुत्तं– कारकसूत्रं। सूत्रस्य द्वितीयो भेदः। *बृह॰ ५०।*

कारगारी– अपराधी। *दशवै॰ ९८।*

कारण–उपपत्तिमात्रम्। *भग॰ ११६।* *आव॰ ६२।* अन्यथा-ऽनुपपत्तिमात्रम्। *उत्त॰ ३०८।* उपपत्तिमात्रं दृष्टान्तादि-रहितम्। *उत्त॰ ३०८।* परोक्षार्थनिर्णयनिभित्तमुपपत्तिमात्रं। *स्था॰ ४९३।* कारणं नामालम्बनं। *प्रज्ञा॰ ६७।* प्रयोजनम्। *आव॰ ५२४।* करोतीति कारणं, कार्यं निर्वर्त्तयतीति। *आव॰ २७७।* स्वेन व्यापारेण कार्ये यदुपयुज्यते। *आव॰ २७८।* बाह्यकारणम्। *प्रज्ञा॰ २२३।* करोतीति कारणं–परोक्षार्थ-निर्णयनिमित्तमुत्प–त्तिमात्रम्। *स्था॰ ४९२।* कारणं–ज्ञाना-दिव्यतिरिक्तं कारणमाश्रित्य वन्दते तत् कृतिकर्मणि पञ्चदशो दोषः। *आव॰ ५४४।* इष्टार्थानां हेतुः–कृषि पशुपोषण-वाणिज्यादिः। *भग॰ ७३९।* कारणः–हेतुः। *प्रज्ञा॰ १८०।*

कारणजाए– कारणजातः–कारणप्रकारः। *उत्त॰ २३५।*

कारणपडिसेवि– अकृत्यं यतनया प्रतिसेवते इत्येवंशीलः कारणप्रतिसेवी। *व्यव॰ ८* अ।

कारणभूता– प्रमाणभूताः। *निशी॰ ३२०* अ।

कारणविणासाभाव– कारणविनाशाभावः। *दशवै॰ १२८।*

कारणविभागाभाव– कारणविभागाभावः कारणविभागाभावत् न खलु जीवस्य पटादेरिव तन्त्वादिकारणविभागोऽस्ति कार–णाभावादेव। *दशवै॰ १२८।* कारणविरुद्धकार्योपलम्भानुमानम्। *स्था॰ २६३।* कारणविरुद्धोपलम्भावनुमानम्। *स्था॰२६२।*

कारणसूई– याः–परव्यपरोपणादिकारणमुद्दिश्य कारयित्वा परस्य नखमूलादौ कुट्यन्ते ताः। कारणसूच्यः। *बृह॰ २२३* आ।

कारणा– यातना। *व्यव॰ २१०* अ।

कारणाइं– कारणानि–विवक्षितार्थनिश्चयस्य जनकानि। *ज्ञाता॰ ११०।*

कारणानि– ज्ञातानि। *सम॰ ११८।*

कारणानुपलम्भानुमानम्– न्यायविशेषः। *स्था॰ २६३।*

कारणिक– विवादनिर्णायकः। *अनुयो॰ ३१।* राजपुरुषाः। *नन्दी॰ १५२, १५६।*

कारणिय– कारणिकः, न्यायकर्त्ता। *आव॰ ७१८।* गुरुवैया–वृत्यादिना व्यापृतः। *आव॰ ७७८।* न्यायालयसत्कः पुरुषः। *उत्त॰ ३०१।*

कारणिया– कारणिका। *आव॰ ९९।* कारणिका। *निशी॰ ११२* अ। *निशी॰ १३५* अ।

कारणे– वेदनादिकारणमन्तरेण भुञ्जानस्य कारणदोषः। ग्रासै-षणादोषे पंचमो दोषः। *आचा॰ ३५१।*

कारणेसु– कारणेसु–सिसाधयिषितप्रयोजनोपायेषु विषयभूतेषु ये मन्त्रादयो व्यवहारान्तास्तेषु। *विपा॰ ४०।*

कारवाहिआ– करं–राजदेयं द्रव्य वह न्तीत्येवंशीलाः कारवा–हिनस्त एव कारवाहिकाः कारबाधिता वा। *जम्बू॰*

२६७।

कारवाहिया– करपीडिताः, नृपाभाव्यवाहिनो वा। *औप० ७३।* कारं–राजदेयं द्रव्यं वहन्तीत्येवंशीलाः कारवाहिनस्त एव कारवाहिकाः, कारवाधिता वा। *भग० ४८१।*

काराग्रहम्– कारागारम्। *उत्त० ५५५।*

कारापकः– करणं कारस्तं कारयति कारापयतीति णके च कारापकः। *आव० २६०।*

कारियणिमित्तकरणं– कारितनिमित्तकरणम्– सम्यगर्थपद–मध्यापितमस्माकं विनयेन विशेषण वर्त्तितव्यं, तदनुष्ठानं च कर्त्तव्यम्। *दशवै० ३१।*

कारियनिमित्तकरणं– सम्यक् शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनये वर्त्तनं तदार्थानुष्ठानम्। *सम० ९५।*

कारियल्लई– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२।*

कारी– अपराधी। *आव० ३४९।* कार्त्तारः। अपराधिनः। *आव० ६७२।* अपराधिनी। *दशवै० ९९।*

कारीषाग्निसमानः– फुम्फुकाग्निसमानः परिमलमदनदाहरूपः। *जीवा० ६५।*

कारुइज्ज– कारुकः, कारुकजातिविशेषः। करुटच्छिम्पका-दिषु भवा कारुकीया। *प्रश्न० ३०।*

कारुय– कारुकः–वरुटच्छिम्पकादिकः। *प्रश्न० ३०।*

कारेल्लकं– वल्लीविशेषफलम्। *अनुत्त० ६।*

कारोडिआ– कारोटिकाः, कापालिकाः, ताम्बूलस्थगीवाहका वा। *जम्बू० २६७।* कापालिकाः। *भग० ४८१।*

कारोडिय– कारोटिकः। *आव० १९१।* कारोडिकः। कापा-लिकः। ताम्बूलस्थगिकावाहको वा। *औप० ७३।*

कार्त्तिकः– रोहितकेशचियभिन्नो मुनिः। *संस्ता०।*

कर्त्तिकश्रेष्ठी– शक्रस्य पूर्वभवः। *भग० ३२२।*

कार्पटिकः– दीनकृपणः। *दशवै० २६०। पिण्ड० १४०।*

कार्मणं– लक्षणतः संवत्सरं कार्मणं, यस्य ऋतुसंवत्सरः सावनसंवत्सरश्चेति पर्यायौ। *स्था०* ३४५।

कार्मणबन्धनाम– यदुदयात् कार्मणपुद्गलानां गृहीतानां गृह्यमाणानां च परस्परं सम्बन्धस्तत्कार्मणबन्धननाम। *प्रज्ञा० ४७०।*

कार्मणसङ्घातनाम– यदुदयवशात् कार्मणशरीररचनानुकारिस–ङ्घातरूपा (परिणतिः) जायते तत्। *प्रज्ञा० ४७०।*

कार्य– नेम (देशी)। *पिण्ड० २८।*

कार्यकारणभावः– न्यायविशेषः। *आचा० ९९।*

कार्यनिमित्तको विनयः– संग्रहमुपसंग्रहं वा मे करिष्यतीत्येवं बुद्ध्या यो विनयः क्रियते सः विनयस्य तृतीयो भेदः। *व्यव० २०* आ।

कार्यव्यासङ्गात्– न्यायविशेषः। *आचा० १०६।*

कार्यानुपलब्ध्यनुमानम्– न्यायविशेषः। *स्था० २६३।*

कार्यानुमानम्– न्यायविशेषः। *स्था० २६२।*

कार्षापण– माषः। *प्रज्ञा० २५७। उत्त० २७६।*

कालंजरवत्तिणी– कालञ्जरवर्त्तिनी– गङ्गामहानद्याविन्ध्यस्य चान्तरा अटवी। *आव० ३४८।*

कालंबवालुआ– कदंबवालुका–कदम्बवालुकानदीपुलिनम्। *उत्त० ४५९।*

काले– कालः–दक्षिणनिकायते प्रथमो व्यन्तरेन्द्रः। *भग० १५७।* तृतीयप्रथमप्रहरादिः। *विपा० ६९।* पिशाचेन्द्रः। *जीवा० १७४।* तमतमापृथिव्यां प्रथमो महानिरयः। *प्रज्ञा० ८३।* सप्तमः परमाधार्मिकः *सूत्र० १२४। आव० ६५०।* पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु सप्तमः। *उत्त० ६१४।* कालानुयोगः। गणितानुयोगश्चेत्यर्थः *दशवै० ४।* तृतीया पौरूषी। *बृह० ६८।* अधिकृतावसर्पिणीचतुर्थभागरूप। *सूर्य० १।* अष्टाशीत्यां महाग्रहे षट्पञ्चाशत्तमः। *जम्बू० ५३५।* कलनं–कालः कलासमूहो वा। *आव० ४६५, ६९१।* श्वा। स्वाध्याय-कालः। मरणम्। *आव० २७५।* कोणिकबन्धुः। *आव० ६८३, ६८४।* कोणिकस्य दण्डनायकः। *आव० ६८४।* कालः–कलासमूहो वा कालः। *निशी० ५* आ। स्थितिः, प्रमाणं वा। *स्था० ७६।* मरणं, मारणान्तिकसमुद्घातः। *भग० ६५०।* यः कण्डवादिषु पचति वर्णतः कालश्च स कालः। परमाधार्मिकसप्तमनाम। *सम० २८।* अष्टाशीत्यां महाग्रहे अष्टपञ्चाशत्तमः। *स्था० ७९।* पिशाचेन्द्रः। *स्था० ८५। ज्ञाता० २५२।* वेलम्बेन्द्रस्य लोकपालः। प्रभञ्जनस्य लोकपालः। प्रथमो वायुकुमारः। *स्था० १९८।* प्रथमस्य वडवामुखपातालकलशस्याधिष्ठाता देवः। *जीवा० ३०६। स्था० २२६।* नवमहानिधौ षष्ठनिधिः। *स्था० ४४८।* गणितानुयोगः। *जम्बू० २।* वर्तमानावसर्पिणीचतुर्थारक–विभागरूपः। *जम्बू० १३।*

प्रस्तावः। *उत्त० ४८६*। मृत्युः। *आचा० १२२*। अवसरादिः। *भग० ७७३*। कलनं–कालः, कलासमूहो वा कालः, तेण वा कारणभूतेन, दव्वादिचउक्कयं कलिज्झतीति कालः– ज्ञायत इत्यर्थः। *निशी० ५*। कालविषयम्। *बृह० २०१*। निरयावलिकानां प्रथम–वर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *निर० ३*। कल्यते–संख्यायतेऽ–सावनेन वा कलनं वा कला– समूहो वेति कालः वर्त्तनापरा–परत्वादिलक्षणः। *स्था० ५५*। समयः। *स्था० १९८*। *स्था० २०१*। अवस्थितिः। *भग० ५३३*। नारकादित्वेन स्थितिर्जीवानां सः। नारकादिभवेऽवस्थानं सः। *स्था० २०१*। सञ्ज्ञाकालः। *ओघ० १२२*। स्वाध्यायकालः। शुना। मरणम्। *आव० २७५*। सुभिक्षदुर्भिक्षादिः कालः। *आव० ८३७*। प्रक्रमात् पतनप्रस्तावः। *उत्त० ३३४*। कालः। दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षणः। *भग० २९२*। विमानविशेषः। *सम० ३५*। आमलकल्पानगर्यां गृहपतिविशेषः। कालवतंसकविमाने सिंहासनम्। *ज्ञाता० २४७*। मरणधर्मः। *जम्बू० १५८*। दीर्घकालिकसंज्ञा। मरणम्। *दशवै० ९*। *विपा० ८०*। क्षीयमा-णादिलक्षणः। *दशवै० ११५*। कूणिकराज्ञो भिन्नमातृको भ्राता। *भग० ३१६*। षष्ठो निधि–विशेषः। *जम्बू० २१५८*। गणितः। *आव० २९६*।

कालकंखी– कालम्–अनुष्ठानप्रस्तावं काङ्खत इत्येवंशीलः कालकांक्षी। *उत्त० २६९*।

कालक– विद्याप्रदानाय प्रशिष्यसकाशमागत आचार्यविशेषः। *आव० ५२३*।

कालकाचार्यः– गुणननिमित्तमनुयोगे दृष्टान्तः। *बृह० ३९ अ*। प्रवचनप्रत्यनीकशासकः। *बृह० १५६ अ*, *बृह० १५५ अ*।

कालकाल–अभीष्टवस्त्ववाप्त्यवसरः, कालो, मरणं। मरणक्रि-यायाः कलनं काल इत्यर्थः। *दशवै० ९*। मरणक्रियाकलनं काल–कालः। *आव० २५७*।

कालकूटं– कालकूटनामकं विषम्। *उत्त० ४७८*।

कालखमणो– कालक्षपणः–कालकाचार्यः। *उत्त० १२७*।

कालगज्ज– कालकाचार्यः। *निशी० ३०३ अ*।

कालगतिल्लतो– कालगतः। *उत्त० १६०*।

कालगय– कालगतः–मृतः। *आव० ६२९*।

कालगहिया– कालेन मृत्युना गृहीताः, पौनःपुन्यमरणभाज इत्यर्थः। धर्मचरणाय वा गृहीताः– अभिसन्धितः कालो यैस्ते कालगृहीताः। *आचा० १८४*।

कालग्गं– कालाग्रं–अधिकमासकः। यदिवाऽग्रशब्दः परिमाण–वाचकस्तत्रातीतकालोऽनादिरनागतोऽनन्तः सर्वाद्धा वा। *आचा० ३१८*।

कालग्गहो– कालग्राही। *व्यव० २५२ अ*।

कालचक्कं– कालचक्रं। *आव० २१७*।

कालचारी– कालचारिणी–एतादृशी संयती। कालचारिश्रमणी–युक्तः। *ओघ० ५७*।

कालच्छेदे– कालपर्यन्ते। *ओघ० २१३*।

कालण्णाण– कालज्ञानं– सकलज्योतिःशास्त्रानुबन्धिज्ञानम्। *जम्बू० २५८*।

कालदोस– कालदोषः–अतीतादिकालव्यत्ययः। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे एकविंशतितमः। *आव० ३७४*। *अनुयो० २६२*।

कालधम्मु– कालधर्म्मः–मरण। *स्था० १४३*।

कालनिषीथं– कृष्णरजन्योः यत्र वा काले निषीथं व्याख्यायत इति। *आचा० ४०८*।

कालपएसे– कालप्रदेशः–एकादिसमयः। *प्रज्ञा० २०२*।

कालपक्ख– कृष्णपक्षः। *आव० ३४९*।

कालपरियाए– मृत्युरवसरोऽत्रापि ग्लानावसरेऽसावेव काल-पर्याय इति। *आचा० २८२*।

कालपाले– धरणेन्द्रस्य प्रथमलोकपालः। *स्था० १९७*।

कालपोराणं– कृष्णपर्वणां उपरितनपत्रसमूहापेक्षया हरिता–लवत्पिञ्जराणां। *जीवा० ३५५*।

कालप्रत्युपेक्षणा– उचितानुष्ठानकरणार्थं कालविशेषस्य पर्यालोचना। *स्था० ३६१*।

कालप्रायश्चित्तं– त्रिविधप्रार्याश्चित्ते तृतीयम्। *बृह० ४८ आ*।

कालभूमी– कालभूमिः–कालमण्डलाख्या भूमिः। आ० *७८४*।

कालभेदः– अतीतादिनिर्द्देशे प्राप्ते वर्त्तमानादिनिर्द्देशः। *स्था० ४९६*।

कालभोइ– जो मज्झण्हे भुंजइ अणत्थमिए वा। *निशी० ३८ आ*।

कालमण्डला– कालमूभिः। *आव० ७८४*।

कालमरण– यस्मिन् काले मरणमुपवर्ण्यते क्रियते वा। *उत्त० २२९*।

कालमहं– कालमहत्–अनागताद्धा। *उत्त॰ २५५।*

कालमासा– मासाभेदः। *ज्ञाता॰ १०७।*

कालमासिणी– कालमासवती–गर्भाधानान्नवममासवतो। *दशवै॰ १७१।* नवमे मासे गब्भस्स वट्टमाणस्स। *दशवै॰ ७९।*

कालमासे– कालस्य–मरणस्य मासः। उपलक्षणं चैतत्पक्षाहो–रात्रादेस्ततश्च कालमासे–मरणावसर इति भावः। *स्था॰ ९९।*

कालमिगपट्ट– कालमृगपट्टः–कालमृगचर्म। *जम्बू॰ १०७। जीवा॰ २६९।*

कालमियचम्म– कालमृगभर्म। *ज्ञाता॰ २२०।*

कालमुही– कृष्णमुखी–उपद्रवकारिण्या विशेषम्। *ओघ॰ १७।*

कालमुहे– कालमुः। म्लेच्छविशेषः। *जम्बू॰ २२०।*

कालवडिंसगभवणे– चमरचञ्चाराजधान्यां भवनम्। *ज्ञाता॰ २४७।*

कालवत्तिणि– कालवर्त्तिनी–काले–भोगकाले यौवने वर्त्तत इति। *अन्त॰ १२।*

कालवादी– अस्ति जीवाः स्वतो नित्यश्च कालत इति वादी। *आव॰ ८१६।*

कालवादिनः– विद्यते खल्वात्मा स्वेन रूपेण नित्यश्च काल-वादिनः। *सम॰ ११०।* विद्यते खल्वयमात्मा स्वेन रूपेण न परापेक्षया ह्रस्वदीर्घत्वे इव नित्यश्च कालवादिनः। *स्था॰ २६८।*

कालवाल– नागकुमारेन्द्रस्य लोकपालः। *भग॰ ५०४।*

कालवासी– काले–प्रावृषि वर्षतीति एवंशीलः–कालवर्षी। काले जिनजन्मादिमहादौ वर्षतीतिकृत्वा। *भग॰ ६३४।* कालवर्षी–अवसरवर्षीति। *स्था॰ २७०।*

कालवेसि– जितशत्रुपुत्रः शृगालभक्षितः। *मरण॰ २०।*

कालवेसिय– कालवेसिकः। मथुरायां कालाभिधवेश्यायाः पुत्रः। *उत्त॰ ९२०।*

कालशौकरिकः– निरुपक्रमायुषि दृष्टान्तः। *भग॰ ७९६।* नरकादिकुगतिप्राप्तौ दृष्टान्तः। *उत्त॰ २७२।*

कालसंजोग– कालसंयोगः–समयक्षेत्रमध्ये आदित्यादिप्रकाश–सम्बन्धलक्षणः। *स्था॰ ३५९।*

कालसंदीवो– कालसन्दीपकः। *आव॰ ६८६।*

कालसंधिय– कालसन्धिता–काले स्वस्वोचिते सन्धानं सन्धा कालसन्धा सा सञ्जातैषामिति। *जीवा॰ २६५।*

कालसंयोगो– वर्त्तनादिकाललक्षणानुभूमिः मरणयोगो वा। *स्था॰ १३३।*

कालसमए– कालसमयः। *सूर्य॰ ९०।* कालेन–तथाविधेनो–पलक्षितः समयः–अवसरः कालसमयः। *सूर्य॰ २९४।*

कालसिरी– कालगृहपतेर्भार्या। *ज्ञाता॰ २४८।*

कालसीमा– तस्यामेव सार्द्धत्रयस्त्रिंशति त्रिंशतागुणितायां *१००५* सप्तषष्ट्या हृतभागायां यल्लब्धं तदेषां कालसीमा। *सम॰ ८०।*

कालसुणगो– कालसुनकाः–कालश्वानः। *जीवा॰ २८२।*

कालसूरियं– कालशौकारिकं, श्रेणिकस्य नरकनिवारणे दृष्टान्तः। *आव॰ ६८१।*

कालसोयरिय– विनयबहुमानचतुर्भङ्ग्यां चतुर्थे दृष्टान्तः। *निशी॰ ८अ।*

कालसौकरिकः– नामविशेषः। *सूत्र॰ १७८।* महदापद्गतोऽपि स्वतः महदापद्गतेऽपि च परे आमरणादसञ्जातानुतापः। *आव॰ ५९०।* अभव्यकुमुदम्। *बृह॰ १८८।*

कालहत्थी– कालहस्ती कलम्बुकायां प्रत्यन्तिकः। *आव॰ २०६।*

कालहय– कालहतः–ग्रामेयकविशेषः। *आव॰ ५५४।*

कालहेसिं– काले–अराजकानां राजनिर्णयार्थके अधिवासना–दिके समये हेषते शब्दादयतीत्येवंशीलं कालहेषि। *जम्बू॰ २३७।*

काला– कालार्थ एकादशः। *भग॰ ५११।* पिशाचभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।* मथारायां जितशत्रुराजवेश्या। *उत्त॰ १२०।* काला सन्निवेशः। सिंहविद्युन्मतीगोष्ठीस्थानम्। *आव॰ २०१।*

कालाइक्कमो– कालस्यातिक्रमः, कालातिक्रमः। *आव॰ ८३८*

कालाएस– कालप्रकारः। कालतः। *भग॰ ८०९।*

कालागुरु– गन्धद्रव्यविशेषः। *सम॰ ६१२।* कृष्णागुरुः। *प्रश्न॰ ७७।* गन्धद्रव्यविशेषः। कृष्णागुरुः। *सम॰ १३८।* कृष्णागुरुः। *जम्बू॰ ५१।* सुगन्धिद्रव्यविशेषः। *जीवा॰ १६०, २०६। प्रज्ञा॰ ८७।*

कालाणुट्ठाई– यद्यस्मिन् काले कर्त्तव्यं तत्तस्मिन्नेवानुष्ठातुं शीलमस्येति कालानुष्ठायी,

कालानतिपातकर्त्तव्योद्यतः। *आचा० १३२।*

कालातिक्कंत– कालं–दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षणं अतिक्रान्तः कालातिक्रान्तः। *भग० २९२।*

कालातिक्कंता– ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले च यत्र स्थितास्त–स्यामृतुबद्धे काले मासे पूर्णे वर्षाकाले चतुर्मासे पूर्णे यत् तिष्ठति सा कालातिक्रान्ता। *बृह० ९३* अ। तृष्णाबुभुक्षा–कालाप्राप्ताः। *ज्ञाता० ११३।*

कालापाय– काल इत्यत्रापि कालादपायः कालापायः, काल एव वा। *दशवै० ३६।*

कालायवसितो– कालादवैश्यः। *व्यव० ४३२* आ।

कालायस– लोहः। *जम्बू० ३७, २३८। जीवा० १९२।* लोहं। *निशी० ८७* अ। कालायसम्-लोहविशेषः। *औप० ७१। भग० ३२२, ४८१।*

कालालोणे– कृष्णलवणं–सैन्धवलवणपर्वतैकदेशजम्। *दशवै० ११८।*

कालावभासे– कालावभासः, कालदीप्तिर्वा। *भग० २६९।*

कालावीचिमरणं– थयाऽऽयुष्ककाले मरणम्। *उत्त० २३१।*

कालासवेसियपुत्ते– पाश्र्वापत्यीयः। *भग० ९९।* प्रथमशतकग–तदृष्टान्तः। *भग० ३२७।*

कालिंगं– कालिङ्गम्। *प्रज्ञा० ३७।*

कालिकाचार्यः– गर्दभिल्लस्य शिक्षादाता। *निशी० पू० ३०४* आ, *२५६।* अशठाचीर्णे दृष्टान्तः। *बृह० १४* अ।

कालिञ्जर– नगविशेषः। *उत्त० ३८३।*

कालिनी– आर्द्रादेवता, रौद्रीत्यपरनाम। *जम्बू० ४९९।*

कालिपोरेति– काकजङ्घावनस्पतिविशेषपर्व। *अनुत्त० ४।*

कालियं– काले–दिवसनिशाप्रथमपश्चिमपौरुषीद्वय एव पठ्यते तत्, तत्कालेन निवृत्तं कालिकम्, उत्तराध्ययनादि। *स्था० ५२। नन्दी० २०४।* कालेन निर्वृत्तं कालिकम्, प्रमाणकाले-नेति भावः *दशवै० २।*

कालियदीवे– द्वीपविशेषः। *ज्ञाता० २२८।*

कालियपुत्ते– कालिकपुत्रः। स्थविरविशेषः। *भग० १३८।*

कालियसुयं–कालिकश्रुतं एकादशाङ्गरूपः। *भग० ७९२।*

कालियसुयमाणुओगिए– कालिकश्रुतानुयोगे–व्याख्याने नियुक्ताः–कालिकश्रुतानुयोगिकाः, कालिकश्रुतानुयोग एषां विद्यते इति कालिकश्रुतानुयोगिनः। *नन्दी० ५१।*

कालिया– काले सम्भवन्तीनि कालिकाः– अनिश्चितकालान्त–रप्राप्तयः। *उत्त० २४३।* कालिका– श्रेणिकभार्या। *आव० ६८७।*

कालियावाए– कालिकावातः–प्रतिकूलवायुः। *ज्ञाता० १५८।*

कालियावायरहिए– कालिकावातरहितः। *आव० ३८७।*

काली– चमरेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *भग० ५०३।* काली-अन्तकृद्दशानां अष्टमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *अन्त० २५।* देवीविशेषः। *निर० १९।* धर्मकथायाः प्रथमवर्गस्य प्रथम-मध्ययनम्। *ज्ञाता० २४७।* कालगृहपतिकालश्रियोः दारिका। *ज्ञाता० २४८।*

कालीपव्वंगसंकासे– कालीपर्वाङ्गसङ्काशः कालीकाकजङ्घा तस्याः पर्वाणि स्थूराणि मध्यानि च तनूनि भवन्ति ततः, कालीपर्वा–णीव पर्वाणि– जानुकूर्परादीनि येषु तानि कालीपर्वाणि, तथाविधैरङ्गैः– शरीरावयवैः सम्यक्काशते तपःश्रिया दीप्यत इति कालीपर्वभिर्वा सङ्काशानिसदृशानि अङ्गानि यस्य सः। *उत्त० ८४।*

कालुट्ठिती– उग्गए आदिच्चे दिवसतो जो गच्छति। *निशी० ३८* आ।

कालुणितेति– कारुण्यं–शोकः। *स्था० ४९६।*

कालुद्देसे– कालोद्देशः। *आव० ८२२।*

कालुसभावो– कलुषभावः कालुष्यम्–दुष्टाभिसन्धिरूपम्। *दशवै० २१२।*

कालुस्से– कसाउप्पत्ती। *निशी० ३१* अ।

कालेज्ज– कालेयकम्। *संस्ता०*। कालेयकः। *आव० ६५१।*

कालेण– कालेन–प्रथमपश्चिमपौरुषीलक्षणेन हेतुभूतेनाधीयन्ते। *स्था० १२६।* दुष्षमसुषमादिना विशिष्टेन कालेन सतोत्प-त्त्यादिकमभूत्। *आचा० ४२५।*

कालोदाइ– कालोदधिः–अन्ययूथिकः। *भग० ३२७, ३२३।* रजन्यां भिक्षाग्राही बौद्धसाधुः। *बृह० ९३* अ।

कालोदायी– गुणशिलचैत्यनिकटवर्त्ती अन्ययूथिकः। *भग० ७५०।*

कालोय– धातकीखण्डपरितः शुद्धोदकरसास्वादः कालोदः समुद्रः। *अनुयो० ९०।* धातकीखण्डानन्तरं समुद्रः। *प्रज्ञा० ३०७।*

कालोवक्कम– कालस्योपक्रमः। कालोपक्रमः। यदिह नालि–कादिभिरादिशब्दात् शङ्कुच्छायानक्षत्रचारादिपरिग्रहस्तैः कालउपक्रम्यते स कालोपक्रमः। यत्तु नक्षत्रादिचारैः कालस्य विनासनं स

वस्तुनाशे कालोपक्रमः। *अनुयो॰ ४८।*

कालोवाय– कालोपायः–अपायभेदः। *दशवै॰ ४०।*

कावालिए– अस्थिसरजस्कः। *बृह॰ ९०।* कापालिकः– वृथाभागी। *आव॰ ६२८।*

काविट्ठं– महाशुक्रकल्पे विमानविशेषः। *सम॰ २७।*

काविलिज्जं– कापिलीयं, उत्तराध्ययनेष्वष्टमध्ययनम्। *उत्त॰ २८६।*

काविलियं– उत्तराध्ययनेषु अष्टममध्ययनम्। *सम॰ ६४।*

काविसायण– कपिशायनं–मद्यविशेषः। *जम्बू॰ १००।*

कावो– कावः–कापडिवाहकः। *जीवा॰ २८१।*

कावोडी– कापोती–तुलाकारं पानीयानयनसाधनम्। *दशवै॰ १३५। दशवै॰ ५७।*

कावोय– कावडिवाहकः। *अनुयो॰ ४६।*

कावोयलेस्सा– कापोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्याणि धूम्राणि इत्यर्थः, तत्साहाय्याज्जाता कापोतलेश्या मनाक् शुभतरा सा लेश्या येषां ते। *स्था॰ ३२।*

काशा– शर्कराः। *प्रज्ञा॰ ३६६।*

काशिमण्डलं– काशिदेशः। *उत्त॰ ४४८।*

काश्यपादीनि– गोत्रविशेषः। *सम॰ ११२।*

काष्टपादुके– मौञ्जे। *सूत्र॰ ११८।*

काष्टमूलं– चणकचवलकादिकं द्विदलम्। *बृह॰ २६७ आ।*

काष्टमूलरसं– चणकचवलकादिद्विदलं तदीयेन रसेन यत्परि-माणितम्। पानकम्। *बृह॰ २६७ आ।*

काष्ठश्रेष्ठी– पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६६।* श्रमण-विशेषः। *बृह॰ ९४ अ।*

काष्ठाशब्दः– प्रकर्षवाची। *सूर्य॰ १३।*

कासंकासे– कासंकषः। *आचा॰ १३९।*

कास– कासः–रोगविशेषः। *भग॰ १९७।* गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* अष्टाशीतौ महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः। *स्था॰ ७९।*

कासगो– कर्षकः। *निशी॰ १४३ आ।*

कासणं– काशनं–खाट्करणम्। *ओघ॰ ९२।*

कासय– कर्षकः–कृषीवलः। *उत्त॰ ३६१।*

कासरनालियं– सीवण्णिफलं। *दशवै॰ ८६।*

कासवं– काश्यपस्यापत्यं काश्यपः तं काश्यपगोत्रम्। *नन्दी॰ ४८।*

कासवे–स्थविरविशेषः। *भग॰ १३८।* कश्यपः– अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। *अन्त॰ १८।* राजगृहे गाथा-पतिः। *अन्त॰ २३।* उत्तराफाल्गुन्याः गोत्रनाम। *जम्बू॰ ५००।* काश्यपगोत्रो महावीरः। *उत्त॰ ८३।* ऋषभस्वामी वर्धमानस्वामी वा। *सूत्र॰ ६८।* कौशम्ब्यां राजबहुमतो ब्राह्मणः। *उत्त॰ २८६।* नापितस्य सम्बन्धिक्षुरगृहम्। *बृह॰ १८४ अ।*

कासवए– काश्यपः–नापितशिल्पः। *आव॰ १३२।*

कासवग– काश्यपः–नापितः। *भग॰ ४७२। सूत्र॰ ११६।*

कासवगा– षष्ठीश्रेणिविशेषः। *जम्बू॰ १९३।*

कासवगोत्ते– काश्यपगोत्रम्। *सूर्य॰ १५०।* आर्यजम्बुनामान–गारस्य गोत्रम्। *ज्ञाता॰ १३।*

कासवनालियं– श्रीपर्णीफलम्। *आचा॰ ३४९। दशवै॰ १८५।*

कासवसंट्ठियट्ठाण– यस्तु ग्राम एव त्रिकोणतया निविष्टः वृक्षा वा त्रयो यस्य बहिस्त्र्यस्त्राः स्थिताः एकतो द्वौ अन्यतस्त्वेकः काश्यपसंस्थितः। *बृह॰ १८४ अ।*

कासवा– कशे भवः काश्यः–रसस्तं पीतवानिति काश्यपस्त–दपत्यानि काश्यपाः। *स्था॰ ३९०।*

कासवी– पञ्चमतीर्थकरस्य प्रथमा शिष्या। *सम॰ १५२।*

कासाइअ– कषायेण–पीतरक्तवर्णाश्रयरञ्जनीयवस्तुना रक्ता काषायिकी शाटिकेत्यर्थः। *जम्बू॰ १८९।*

कासायं– काषायिकं–वस्त्रविशेषः। *आव॰ ३५२।*

कासि– काशीजनपदो यत्र वाणारसी नगरी। *ज्ञाता॰ १२५।*

कासिभूमि– काशीभूमिः–काश्यभिधानो जनपदः। *उत्त॰ ३८३।*

कासी– काशी–जनपदविशेषः। *ज्ञाता॰१४१। प्रज्ञा॰ ।* वाणारसी, तज्जनपदोऽपि काशी। *भग॰ ३१७।* अष्टाशीतौ महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः। *भग॰ ६८०।*

कासीअ– अकार्षीत्। *उत्त॰ ३२२।*

कासीस– रागद्रव्यः। *ज्ञाता॰ २३१।*

कासो– इक्खु। *दशवै॰ ५८।*

काह– कदा। *भग॰ ११६।*

काहए– अकथयत्। *उत्त॰ ४८०।*

काहरो– कापोतिकः–जलवाहकः। *दशवै॰ १३५।*

काहलं– फल्गुप्रायम्। *बृह॰ ४५ आ।*

काहला– खरमुही। *जम्बू॰ १९२।* तस्स मुहत्थाणे खर– मुहाकारं कट्ठमयं मुहं कज्जति खरमुखी। *निशी॰ ६२ अ।*

वाद्यविशेषः। *स्था॰ ६३।*

काहामि– करिष्यामि। *उत्त॰ ४३३।*

काहारो– जलवाहकः। *दशवै॰ ५७।*

काहावणं– कार्षापणम्। *उत्त॰ २७६।* कार्षापणः–द्रम्मः। *प्रश्न॰ ३०।*

काहितो– सज्झायादिकरणिज्जे जोगे मोत्तुं जो देसकहादिक–हीतो कहेति सो काहितो। *निशी॰ ९१ आ।*

काहिया– धम्मत्थकामेसु अण्णाओ विकहाओ कहेंता कहिया भवंति। *निशी॰ ९ अ।*

काहीआ– कथिका। *गच्छा॰ ।*

काहिउ– कथकः। *ओघ॰ १५०।*

काहिए– । *ओघ॰ १५०।* पासणिए। *निशी॰ २९२ अ।*

काहीति– करिष्यति। *स्था॰ ४९६।*

किं– प्रश्ने क्षेपे वा। *आचा॰ १६५।* प्रश्ने। *ज्ञाता॰ १४९।* क्षेप–प्रश्ननपुंसकव्याकरणेषु। *आव॰ ३७९।*

किंकमे– किंकमे, अन्तकृद्दशानां षष्टमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *अन्त॰ १८।*

किंकम्मय– किंकर्मकः। *आव॰ ४०९।*

किंकर– भार्यादेशकरः–अन्वर्थः पुरुषविशेषः। *पिण्ड॰ १३५।* किङ्कराः–प्रतिकर्मपृच्छाकारिणः। *जम्बू॰ २६३।* किङ्करा–किङ्करभूताः। *प्रज्ञा॰ ८६। जीवा॰ १६०।* प्रतिकर्मपृच्छा-कारिणः। *भग॰ ५४७।* आदेशसमाप्तौ पुनः–प्रश्नकारी। *प्रश्न॰ ३९।*

किंकिणी– किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका। *भग॰ ३२२। प्रश्न॰ ७५।* क्षुद्रघण्टा घण्टिका वा। *जम्बू॰ ४२९।*

किंकिन्धपुरं– आदित्यरथराजधानी। *प्रश्न॰ ८९।*

किंखाइंति– अथ किं पुनरित्यर्थः। *भग॰ १४९।*

किंगिरिडा– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

किंचनं– किञ्चनं–काञ्चनं–हिरण्यादि, अल्पमपि वा। *आव॰ १५५।*

किंचि– काञ्चिः मूशलमूलस्थलोहकटी। *पिण्ड॰ १६४।*

किंचूणा– किञ्चिदूना–एकत्रिंशत्कवला। *स्था॰ १४९।* ऊनोदरतायाः पञ्चमो भेदः। इत्थं पञ्चविंशतेरारभ्य याव–देकत्रिंशत्तावत्किञ्चिदूनोदरता। *दशवै॰ २७।*

किंचूणोमोअरिआ– किञ्चिन्न्यूनावमोदरिका–एकत्रिंशतो द्वात्रिंशत एकेनोनत्वात्। *औप॰ ३८।*

किंणापउल– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

किंते– तद्यथार्थः। *औप॰ ५४।* तद्यथा। *जम्बू॰ १९२। प्रश्न॰ १५९।* किंभूतान्। *ज्ञाता॰ २३०।*

किंत्थुग्घं– किंस्तुघ्नं–एकादशमं करणम्। *जम्बू॰ ४९३।*

किंनए– किण्वं–अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *आचा॰ ५९।*

किंनर– किन्नरेन्द्रः। *जीवा॰ १७४।* किन्नरः–दक्षिणनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्रः। *भग॰ १५८।* किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।* वाणव्यन्तरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* चमरेन्द्रस्य रथानीकाधिपतिर्देवः। *स्था॰ ३०२, ४०६।* इन्द्रनाम। *स्था॰ ८५।* किन्नरः–वाद्यविशेषः। देवविशेषो वा। *प्रश्न॰ ७०।* देवविशेषः। *भग॰ ४७८।*

किंनरकण्ठ– किन्नरकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा॰ २३४।*

किंनरी– देवीविशेषः। मैथुने दृष्टान्तः। *प्रश्न॰ ९०।*

किन्नरोत्तमा– किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

किंपगारे– किंप्रकारः–किंस्वरूपः। *जीवा॰ ६५।*

किंपत्तियं– कः प्रत्ययः कारणं यत्र तत् किम्प्रत्ययम्। *भग॰ १८१, १३८।*

किंपभासई– किं–कुत्सितं प्रकर्षेण भाषते इति किंप्रभाषते। *उत्त॰ ४४३।*

किंपाकफलः– फलविशेषः। *आचा॰ १६४।*

किंपाग– किम्पाकः बृक्षविशेषः। *उत्त॰ ६२८, ४५४।* फल-विशेषः। *आव॰ ३८५।*

किंपुरिसा– वाणव्यन्तरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* किंपुरुषः–उत्तरनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्रः। *स्था॰ ८५, ३०२। भग॰ १५८।* किंपुरुषः–किन्नरेन्द्रः। *जीवा॰ १७४।*

किंपुरुषकण्ठः– किंपुरुषकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा॰ २३४।*

किंपुरुषा– किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

किंपुरुषोत्तमा– किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

किंभयाः– कस्माद् भयं येषां ते, कुतो बिभ्यतीत्यर्थः। *स्था॰ १३५।*

किंमए– किंमयः–किंविकारः। *जीवा॰ ११०।*

किंमज्झं– किंमध्यं–किंशब्दस्य क्षेपार्थत्वात् असारम्। *प्रश्न॰ १३७।*

किंलेसे– का–कृष्णादिनामन्यतमा लेश्या येषां ते किंलेश्या। *भग॰ १८८।*

किंशुककुसुमं– पलासकुसुमम्। *जीवा॰ १९१।*

किंसंठिय– किं संस्थितम्-किमिव संस्थितम्। *जीवा० ३७८*। किमिवसंस्थिताः किंसंस्थिताः। *जीवा० १०४*। किं संस्थितं-संस्थानं यस्याः यदिवा कस्येव संस्थितं–संस्थानं यस्याः सा किंसंस्थिता। *सूर्य० ७३*।

किंसुकफुल्ल– किंशुकफुल्लंपलासकुसुमम्। *स्था० ४२०*।

किंसुयपुप्करासी- किंशुकपुष्पराशिः। *प्रज्ञा० ३६१*।

किइ– कृतिः–अवनामादिकरणं, मोक्षायावनामादिचेष्टैव वा। *आव० ५११*।

किइकम्म– कृतिकर्म–विश्रामणा। *आव० ११८*। कृतिकर्म, वन्दनं, कार्यकरणम्। *भग० ६३७*। वन्दनम्। *आव० ८०*। *सम० २३*। *ओघ० २२*। पादप्रक्षालनादि। *ओघ० ६३*। द्वादशावर्त्तवन्दनम्। *ओघ० १५६*।

किई– कृतिः–द्वादशावर्त्तादिवन्दनम्। *उत्त० १७*। कृतिकर्म वन्दनम्। *दशवै० २४१*।

किच्च– कृत्यः–आचार्याणां वैयावृत्यम्। *आव० २६०*। कृतिः–वन्दनकं–तदर्हतीति कृत्यः। *उत्त० ५४*। कृत्यं, आसेवनीयं कालस्वाध्यायादि। *आव० ५७३*। कृत्यं उचिता-नुष्ठानम्। *उत्त० ६५*। आचार्यादभिरुचितकार्यम्। *दशवै० २५०*। कृत्यः–आचार्यादिः। *दशवै० २५०*। आचार्यः। *दशवै० २३५*। माया। *निशी० ७७* आ।

किच्चकर– ग्रामकृत्ये नियुक्तः। ग्रामव्याप्तकः। *निशी० १७६* आ। कृत्यानि कुर्वन्ति–अनुतिष्ठन्ति कृत्यकराः नियोगिनः। *उत्त० ३०५*। ग्रामचिन्तानियुक्तः। *बृह० ३१३* आ। ग्रामकृत्ये नियुक्तः। *बृह० ३३* अ।

किच्चणं– तत्र दिवसे क्षणिका विमुक्तकृषिलवनव्यापारा। *ओघ० ७२*। कर्त्तनम्। *बृह० २४१* आ।

किच्चाइ– कर्त्तव्यानि यानि प्रयोजनानीत्यर्थः, अथवा कृत्यानि नैत्यिकानि। *ज्ञाता० ९१*।

किच्चिरस– कियच्चिरेण। आ० *५५९*।

किच्चोवएसगो– कृत्योपदेशिकः कृत्यं–कर्तव्यं सावद्यानुष्ठानं तत्प्रधानाः कृत्या–गृहस्थास्तेषामुपदेशः संरम्भसमारम्भरूपः स विद्यते यस्य सः। कृत्यं-करणीयं पचनपाचनखण्डनपे-षणादिको भूतोपमर्दकारी व्यापारस्तस्योपदेशस्तं गच्छतीति कृत्योपदेशगः कृत्योपदेशको वा। *सूत्र० ४७*।

किच्छं– कृच्छ्रम्। *आव० ३८४*।

किच्छदुक्ख– कृच्छ्रदुःखं–गाढशरीरायासः। *भग० ४७०*।

किच्छपाणो– कृच्छ्रप्राणः। *उत्त० ११८*।

किच्छोवगयप्पाण– कष्टगतजीवितव्यः। *ज्ञाता० २११*।

किटिभ– क्षुद्रकुष्ठविशेषः। *जम्बू० १७०*। नवमं क्षुद्रकुष्ठम्। *प्रश्न० १६१*। *आचा० २३५*।

किट्ट– लोहादिमलः। *आचा० ३२२*। अच्युतकल्पे विमान विशेषः। *सम० ३९*। ऊर्णाद्यवयवाः तन्निष्पन्नं वस्त्रम्। *बृह० २०१* आ।

किट्टइत्ता– कीर्त्तयित्वा–स्वाध्यायविधानतः संशुद्ध्य। *उत्त० ५७२*। गुरोर्विनयपूर्वकमिदमित्थं मयाऽधीतमिति निवेद्य। *उत्त० ५७२*।

किट्टति– अपगच्छति। *बृह० २३३* अ।

किट्टा– रोमविसेता। *निशी० १२६* अ।

किट्टिअं– कीर्त्तितम्–भोजनवेलायाममुकं मया प्रत्याख्यातं तत् पूर्णमधुना भोक्ष्य इत्युच्चारणेन। *आव० ८५१*।

किट्टिका– साधारणबादरवनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा० २७*।

किट्टिय– कीर्त्तितं–अन्येषामुपदिष्टम्। *प्रश्न० ११३*। कीर्त्तिता–पारणकदिने अयमयं चाभिग्रहविशेषः। कृत आसीद् अस्यां प्रतिमायां स चाराधित एवाधुना मुत्कलोऽहमिति गुरुसमक्षं कीर्त्तनादिति। *स्था० ३८८*।

किट्टिसं– ऊर्णादीनां यदुद्धरितं किट्टिसं तन्निष्पन्नं सूत्रमपि ऊर्णादीनामेव द्विकादिसंयोगतो निष्पन्नं सूत्रम्, उक्तशेषा–श्वादिलोमनिष्पन्नं वा किट्टिसम्। *अनुयो० ३५*। कुतवो वरक्को किट्टिसं। *निशी० १२६* अ। ऊर्णाद्यवयवनिष्पन्नं वस्त्रम्। *बृह० २०१* आ।

किट्टिसिय– किल्विषिका भाण्डादय इत्यर्थः। *भग० ४८१*।

किट्टी– किट्टिजमवयवनिष्पन्नः। *स्था० ३३८*।

किट्टीया– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा० ३४*।

किट्टेइ– कीर्त्तयति–पारणकदिने इदं चेदं चैतस्याः कृत्यं तच्च मया कृतमित्येवं कीर्त्तनात्। *भग० १२५*। *ज्ञाता० ७२*।

किट्टं– वाहितं। *निशी० २२* अ। कृष्टम्। *आव० ६३०*। कृष्टं कर्षणं लभ्यग्रहणायाकर्षणम्। *जम्बू० १९४*।

किट्ठ– देवविमानविशेषः। *सम० ९*। वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०४*।

किट्टिकूडं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टघोसं– देवविमानविशेषः। *सम॰ १२।*
किट्टिजुत्तं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिज्झयं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिप्पभं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिया– अनन्तकायविशेषः। *भग॰ ३००।*
किट्टियावत्तं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिलेसं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिवण्णं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिसाविया– । *निशी॰ ३२९* अ।
किट्टिसिंगं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टिसिट्ठं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किट्टुत्तरवडिंसगं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ९।*
किठी– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।*
किडए– पाककुम्भी। *निशी॰ ३०३* अ।
किडिकिडिया– किटिकिटिका–
निर्मांसास्थिसम्बन्ध्युपवेश- नादिक्रियासमुत्थः। शब्दविशेषः। *भग॰ १२५।* निर्मांसास्थि–सम्बन्धी उपदेशनादिक्रियाभावीशब्दविशेषः। *ज्ञाता॰ ७६।*
किडिभं– कुट्ठभेदो। *निशी॰ ६२* अ। जंघासु कालाभं रसियं वहति। *निशी॰ १२७* आ। शरीरैकदेशभाविकु-ष्ठभेदः। *बृह॰ २२२* अ। रोगविशेषः। *निशी॰ १८८।*
किडिम(भ)– किडिमः–क्षुद्रकुष्ठविशेषः। *भग॰ ३०८।*
किड्डंति– अन्तर्भूतकारितार्थत्वादन्यान् क्रीडयन्ति। *भग॰ ६१८।*
किड्डा– पाशककपर्दकैः क्रीडन्ति। *ओघ॰ ५६।* क्रीडाप्रधाना दशा क्रीड।, दशदशायां द्वितीयादशा। *स्था॰ ४१९।* क्रीडा-जन्तोर्द्वितीया दशा। *दशवै॰ ८।* द्वितीयादशा। *निशी॰ २८* आ।
किड्डावियाए– क्रीडापिका, क्रीडनधात्री। *ज्ञाता॰ २१९।*
किढ– वृद्धः। *बृह॰ २५६* आ।
किढग– किटकः–वृद्धः। *व्यव॰ २३४* अ।
किढिण– वंशमयस्तापसभाजनविशेषः। *निर॰ २६।*
किढिनं–वंशमयस्तापससम्बन्धोभाजनविशेषः। *भग॰ ३२२, ५२०।*
किढिणसंकाइयं– किढिणं–वंशमयस्तापसभाजनविशेषः, सांकायिकं–भारोद्वहनयन्त्रं किढिणसांकायिकम्। *निर॰ २६*
किढिणसंकाइयगं– किढिणं–
वंशमयस्तापसभाजनविशेषस्ततश्च तयोः साङ्कायिकं भारोद्वहनयन्त्रं किढिणसाङ्कायिकम्। *भग॰ ५१६।*
किढिणपडिरुवगं– कढिनप्रतिरूपकं–कढिनं वंशमयस्तापस–सबन्धीभाजनविशेषस्तत्प्रतिरूपकं तदाकारं वस्तु। *भग॰ ३२२।*
किढिदासी– काष्ठिकीदासी। *आव॰ २३७।*
किढिया– । *निशी॰ १३६* आ। स्थविरा माता। *बृह॰ ११४* अ।
किढी– थेरी। *बृह॰ १९८* आ। स्थविरा स्त्री। *बृह॰ १११* अ। काष्ठिकी। *आव॰ २३७।*
किणा– किञ्जिन्मात्रा। *पिण्ड॰ १७३।*
किणिऊणं– क्रीत्वा। *आव॰ १९८।*
किणित्ता– जातिजुंगितविसेसो। *निशी॰ ४३* आ।
किणिया– किणिका–ये वादित्राणि परिणह्यन्ति वध्यानां च नगरमध्ये नीयमानानां पुरतो वादयन्ति। *व्यव॰ २३१* अ।
किण्णं– कानि–किंविधानि। *भग॰ १०९।*
किण्णरछाया– किन्नरछाया–छायागतिभेदः। *प्रज्ञा॰ ३२७।*
किण्णा लद्धा– केन हेतुना लब्धा–भवान्तरे उपार्जिता। *ज्ञाता॰ २५०।*
किण्णे– केन हेतुना। *भग॰ १६३।*
किण्ह– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* कृष्णवर्णः–अञ्जनवत् स्वरूपेण। *ज्ञाता॰ ७८।*
साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।*
किण्हकेसरे– कृष्णकेशरः–कृष्णबकुलः। *प्रज्ञा॰ ३६२।* *जम्बू॰ ३२।*
किण्हगुलिया– उदायनदासी। *निशी॰ ३४६* आ।
किण्हचामरज्झय– कृष्णचामरध्वजा कृष्णचामरयुक्ता ध्वजा। *जीवा॰ १९९।*
किण्हपक्खिए– कृष्णपाक्षिका–शुक्लानां आस्तिकत्वेन विशुद्धानां पक्षो–वर्गः शुक्लपक्षस्तत्रभवाः शुक्लपाक्षिकाः तद्विपरीतास्तु कृष्णपाक्षिकाः। *स्था॰ ६१।*
किण्हपत्ता– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*
चतुरिन्द्रि–स्य य विशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*
किण्हसिरी– षष्ठं चक्रवर्त्तिनः स्त्रीरत्नम्। *सम॰ १५२।*

किण्हा– नदीविशेषः। *स्था॰ ४७७*। कृष्णा–ईशानदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *जीवा॰ ३६५*।

किण्होभासे– कृष्णप्रभः कृष्ण एव वाडवभासत इति कृष्णावभासः। *ज्ञाता॰ ४*। कृष्णवर्ण एवावभासते–दृष्टृणां प्रणिभातीति कृष्णावभासः। *ज्ञाता॰ ७२*।

कितिकंमं– वंदणं। *निशी॰ २३८* अ। वेयावच्चं। *निशी॰ ८०* आ। कृतिकर्म। *आव॰ ७९३*। विस्सामणं–*निशी॰ २१३* अ। कृतिकर्म–द्वादशावर्त्तवन्दनम्। *ओघ॰ १३९*। कृतिकर्म्म–वंदनकं, विश्रामणादिकं वा। *व्यव॰ ७२* अ। कृतकर्म्म–विश्रामणा। *व्यव॰ १८३* अ।

कितिकम्माति– कृतिकर्म्माणि–विश्रामणा। *व्यव॰ १७४*।

कित्तइस्सामि– कीर्तयिष्यामि–प्रतिपादयिष्यामि। *दशवै॰ १५*।

कित्तणं– कीर्त्यते–संशब्दयते येन कारयिता तत् कीर्त्तनं देवकुलादि। *प्रश्न॰ ९५*।

कित्तणयं– कीर्त्तनं शब्दनम्। *आव॰ १८१*।

कित्तणा– कीर्त्तना संशब्दना। *आव॰ ४९२*।

कित्ति– कीर्त्तिकूटं–केसरिह्रदसुरीकूटम्। *जम्बू॰ ३७७*। कीर्त्तिः एकदिग्व्यापी। *भग॰ ६७३*। *दशवै॰ २५७*। एक–दिग्गामिनी प्रख्यातिर्दानफलभूता वा। *भग॰ ६४३*। जातित–पोबाहु श्रुत्यादिजनिता। श्लाधा। दानसाध्या। *सूत्र॰ १८२*। दानपुण्यफला। *आव॰ ४९९*। प्रसिद्धिः। *प्रश्न॰ ३६*। केसरि–ह्रदे देवताविशेषः। *स्था॰ ७३*। सर्वदिग्व्यापी साधुवादः। *स्था॰ ५०३*। एकदिग्गामीनी प्रसिद्धिः। *भग॰ ५४१*। दान-पुण्यफला कीर्त्तिः। *स्था॰ १३७*। गुणोत्कीर्त्तनरूपा प्रशंसा, एकदेशगामिनी पुण्यकृता वा कीर्त्तिः *प्रज्ञा॰ ४७५*।

कित्ति(त्ती)– चतुर्थवर्गे चतुर्थमध्ययनम्। *निर॰ ३७*। प्रख्यातिः। *ज्ञाता॰ २२०*।

कित्तिकर– दानपुण्यफला कीर्त्तिस्तत्करणशीलः कीर्त्तिकरः। *आव॰ ४९९*।

कित्तिताइं– कीर्त्तितानि–संशब्दितानि नामतः। *स्था॰ २९७*।

कित्तिम– कृत्रिमः–योगेन निष्पन्नः। *ओघ॰ १६८*। कृत्रिमः–क्रमेण शिल्पिकर्षकादिप्रयोगनिष्पन्नः। *जम्बू॰ ६९*।

कित्तिमई– कीर्त्तिमती, कीर्त्तिसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी च। *उत्त॰ ३७९*। अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामजितसेनाचार्यस्य महत्त–रिका। आ॰ *७०१*।

कित्तिय– कीर्त्तितं–जनेन समुत्कीर्तितं कीर्त्तिदं वा। *औप॰ ५*। कीत्तितः स्वनामभिः प्रोक्तः। *आव॰ ५०७*।

कित्तिया– कीर्त्तिता प्रदर्शिता। *आचा॰ ४२*। कृत्तिका-अग्निभूतेर्जन्मक्षत्रम्। *आव॰ २५५*।

कित्तिसेणो– कीत्तिसेनः–ब्रह्मदत्तपत्न्याः कीर्त्तिमत्याः पिता। *उत्त॰ ३७९*।

कित्ती– कीर्त्तिः एकदिग्गामिनी। *प्रश्न॰ ८६*। कीर्त्तिः ख्याति-हेतुत्वात्। अहिंसायाः पञ्चमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*। दानपुण्यफ-लभूता, एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धिः। *प्रश्न॰ १३६*। दानकृता एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धिः। *औप॰ १०८*। एकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः। *बृह॰ ३६* आ।

कित्तीजीवियं– कीत्तिजीवितम्। *आव॰ ४८०*।

कित्तीपुरिसा– कीर्त्तिप्रधानाः पुरुषाः कीर्त्तिपुरुषाः *स्था॰ ४४८*।

कित्तीपुरिसो– कीत्तिपुरुषः वासुदेवः। *आव॰ १५९*।

कित्तेइ– कीर्त्तयति–तत्समाप्तौ इदमिदं चेहादिमध्यावसानेषु कर्त्तव्यं तच्च मया कृतमिति कीर्त्तनात्। *उपा॰ १५*।

किन्न– कीर्णः क्षिप्तः। *स्था॰ ४६४*।

किन्नग्गन्थे– कीर्णः–क्षिप्तः ग्रन्थो–धनधान्यादिस्तत्प्रतिबन्धो वा येन स किर्णग्रन्थः। *स्था॰ ४६४*।

किन्नपुडगसंठिओ– आवलिकाबाह्यस्य नवमं संस्थानम्। *जीवा॰ १०४*।

किब्बिस– किल्बिषस्य पापस्य हेतुत्वात्, द्वितीयाधर्मद्वार–स्याष्टादशं नाम। *प्रश्न॰ २६*। पापाः। *बृह॰ २१२* आ।

किब्बिसभावणा– किल्बिषभावना। *उत्त॰ ७०७*।

किब्बिसिआ– किल्बिषिकाः–परविद्वषकत्वेन पापव्यवहारिणो भाण्डादयः। *जम्बू॰ २६७*। पातकफलवन्तो निःस्वान्ध–पङ्गवादयः। *ज्ञाता॰ ५७*। किल्बिषं–पापं उदये विद्यते येषां ते किल्बिषिकाः पापाः। *स्था॰ १६२*।

किमंग पुण– किं पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थम् अङ्गेत्यामन्त्रणे यद्वा परिपूर्ण

एवायं शब्दो विशेषणार्थः। *निर० ७*।

किमाइया– किमादिका–उपादानकारणव्यतिरेकेण किमादिः मौलं कारणं यस्याः सा। *प्रज्ञा० २५६*।

किमाई– किमादिः–मौलं कारणम्। *प्रज्ञा० २५६*।

किमाहार– चतुर्दशशते षष्ठोद्देशः। *भग० ६३०*।

किमिकुट्ठ– कृमिसंकुलं कोष्टमुदरं कृमिकोष्ठः। *व्यव० ३५० अ*। कृमिकृष्ठः–रोगविशेषः आ० *११६*।

किमिच्छए– कः किमिच्छतीत्येवं यो दीयते स किमिच्छकः। *दशवै० ११७*।

किमिच्छय– यो यदिच्छति तस्य तद्दानं समयत एव किमि–च्छकम्। *आव० १३६*।

किमिण– कृपणः। *स्था० ३४२*। कृमयः– अशुच्यादिसम्भवाः। *उत्त० ६९५*। कतिपयकृमिवत्। *ज्ञाता० १७७*।

किमिणा– कृमिवन्तः। *प्रश्न० ६०*।

किमिय– कृमिकः जन्तुविशेषः। *आव० ११७*।

किमियडसंठितो– आवलिका बाह्यस्याष्टमं संस्थानम्। *जीवा० १०४*।

किमिरागकंबले– कृमिरागेण रक्तः कम्बलः कृमिरागकम्बलः। *प्रज्ञा० ३६१*।

किमिरागो– कृमिरागः। *जम्बू० ३४*।

किमिरासि– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०४*। साधारणबादर–वनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा० ३४*।

किमुलग– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*।

कियाडियाए– कर्णेन। *व्यव० ९ आ*।

किर– किल–परोक्षाप्तवादसूचकः। *उत्त० ३४३*,। अपारमा-र्थिकत्वख्यापकः। *उत्त० ३४३*। परोक्षाप्तवादसूचकः सम्भा-वने। *उत्त० ७१२*। परोक्षाप्तवादसूचकः। *उत्त० ६२०*। संशये। *आव० २४०*। परोक्षाप्तागमवादसंसूचकः। *आव० १३०*। किल–लक्षणमेवास्येदमभिधीयते न पुनस्तं कोऽपि छेत्तुं वाऽऽरभत इत्यर्थसंसूचनार्थः। *भग० २७६*।

किराइं– किल। *आव० ९१*।

किराडयं– किराटकं द्रव्यम्। *आव० ८२२*।

किरिकिरिया– तेषामेव वंशादिकम्बिकातोद्यम्। *आचा० ४१२*।

किरिमालए– किरिमालकः। *दशवै० ५१*।

किरिय– क्रिया–सम्यग्वादः। आ० *७६२*। चिकित्सा। *आव० ५६९*। कायिक्यादिक्रियाभिधानार्थः। अष्टमशते चतुर्थोद्दे-शकः। *भग० ३२८*।

किरियट्ठाणं– क्रियास्थानम्। *आव० ६५८*।

किरियठाणं– क्रियास्थानं– सूत्रकृताङ्गस्याष्टादशमध्ययनम्। *उत्त० ६१६*।

किरियवादी– क्रियावादी जीवादिपदार्थसद्भावोऽस्त्येवेत्येवं सावधारणक्रियाभ्युपगमो यस्य सोऽस्तीति। *सूत्र० २०२*। क्रियां–जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं यस्य सः। *सूत्र० २०८*।

किरियविसालं– क्रियाः–कायिक्यादिकाः विशालाः– विस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयन्ते तत् क्रियाविशालम्। *सम० २६*।

किरिया– अनुष्ठानम्। *स्था० ५०३*। क्रिया–सम्यक्संयमा–नुष्ठानम्। *प्रज्ञा० ५९*। कर्मबन्धः। *बृह० ७१ आ*। क्रियन्ते मिथ्यात्वादिक्रोडीकृतैर्जन्तुभिरिति क्रियाः। कर्मबन्धनिबन्ध–नभूताश्चेष्टाः। *उत्त० ६१३*। अस्ति परलोकोऽस्त्यात्माऽस्ति च सकलक्लेशाकलङ्कितं मुक्तिपदमित्यादिप्ररूणात्मिका क्रिया। *भग० ९२५*। आस्तिकता। *स्था० ४०८*। कायिक्यादिका आस्तिक्यमात्रं वा। *सम० ५*। कायिक्यादिः संयमक्रिया च। *नन्दी० २४१*। अनुष्ठानम्। *स्था० ५०४*। क्रिया–चारित्रम्। *व्यव० ४५७ आ*। वैद्योपदेशाद् औषधपानम्। *निशी० पू० १०१*। क्रिया-अस्तिवादरूपा। *दशवै० २४२*। सदनु-ष्ठानम्। *सूत्र० ३६१*। अस्ति परलोक इत्यादिप्ररूपणात्मिका। *उत्त० १७*। करणं क्रिया, कर्म-बन्धनिबन्धना चेष्टा। *आव० ६४२*। *भग० १२१*। प्राणा–तिपातादिका। *जीवा० १२८*। एतन्नामा भगवतीसूत्रस्य तृती–यशतकस्य तृतीयोद्देशकः। *भग० १८६*। क्रिया–करणं तज्जन्यत्वात् कर्मापि क्रिया। क्रियत इति क्रिया कर्म एव। *भग० १८२*। करणं क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धनचेष्टा। *प्रज्ञा० ४३५*। प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*। क्रिया। *आव० ११६* । अत्थिवादो। *दशवै० १३*।

किरियाठाणा– क्रियास्थानानि–करणं क्रिया–कर्मबन्धनि बन्धनचेष्टा तस्याः स्थानानि–भेदाः–पर्यायाः क्रियास्थानानि। *सम० २५*। सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्य–यनम्। *सम० ४२*। सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीय मध्ययनम्। *स्था० ३८७*।

किरियातीता– किरियाए कीरमाणीएवि जा ण पण्णपति सा। *निशी॰ २११* अ।

किरियारुइ– क्रिया–सम्यक्संयनानुष्ठानं तत्र रुचिर्यस्य स क्रियारुचिः। *प्रज्ञा॰ ५६*।

किरियारुई– क्रियारुचिः–दर्शनाद्याचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचिरस्तीति सः। *स्था॰ ५०४*। क्रिया–अनुष्ठानं तस्मिन् रुचिर्यस्य सः। *उत्त॰ ५६३*।

किरियावरण– क्रियामात्रस्यैव–प्राणातिपातादेर्जीवैः क्रिय–माणस्य दर्शनात्तद्धेतुकम्र्मणश्चादर्शनात् क्रियैवाचरणं–कर्म्म यस्य स क्रियावरणः। *स्था॰ ३८३*।

किरियावाई– क्रिया कर्तारं विना न संम्भवति सा चात्मसम–वायिनीति वदन्ति तच्छीलाश्च ते क्रियावादिनः। क्रियां जीवा-दिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रिया–वादिनः। क्रियाप्रधानम्। *भग॰ ९४४*। क्रियावादी–क्रियैवचैत्यकर्मा-दिका प्रधानं मोक्षाङ्गमित्येवं वदितुं शील यस्य सः। *सूत्र॰ ३७*। तत्र न कर्त्तारं विना क्रिया सम्भवति तामात्मसवायिनीं वदन्ति ये तच्छीलाश्च ते क्रियावादिनः। *सम॰ ११०*। नियत-शुक्लपाक्षिकाः। *दशाश्रु॰* । सकलमतसमवसरणे कथञ्चिदा-त्माद्यस्तित्वादि क्रियावादिनः सम्यग्दृशः। *भग॰ ९४४*।

किरियावादी– आत्मसमवायिनीं वदन्ति तच्छीलाश्च ये ते क्रियावादी। *नन्दी॰ २१३*। क्रियां वदतीति क्रियावादी वेज्जे-त्यर्थः। *निशी॰ ६६* आ। क्रियां–जीवाजीवादिरर्थोऽ-स्तीत्येवंरूपां वदन्तीति क्रियावादिनः आस्तिकाः। *स्था॰ २६८*। यतः कर्मयोगनिमित्तं बध्यते, योगश्च व्यापारः स च क्रियारूपः, अतः कर्मणः कार्यभूतस्य वदनात्तत्कारणभूतायाः क्रियाया अप्यसावेव परमार्थतो वादीति। *आचा॰ २२*।

किरियाविसालपुव्वं– त्रयोदशपूर्वम्। *स्था॰ १९९*।

किरियाविहाणं– क्रियाविधानं–सिद्धक्रियाविधिः। *प्रश्न॰ ११७*।

किलंत– क्लान्तः–ग्लानिमुपगतः। *जीवा॰ १२*। ग्लानिभूतः। *ज्ञाता॰ २८*।

किलकिलाइयरवे– किलकिलायितरवः सानन्दशब्दः। *जम्बू॰ ५३०*।

किलकिलायमानः– किलकिलशब्दं कृर्वाणः। *नन्दी॰ १५८*।

किलाम– क्लमः शरीरायासः। *भग॰ २९५*। देहग्लानिरूपः। *आव॰ ५४७*। ग्लानि। *स्था॰ १३*।

किलामणया– ग्लानिनयनम्। *भग॰ १८४*।

किलामिओ– क्लामितः समुद्घातं नीतः, ग्लानिमापादितः। *आव॰ ५७४*।

किलामेंति– क्लमयन्ति–मूर्च्छापन्नान् कुर्वन्ति। *प्रज्ञा॰ ५९२*।

किलामेइ– मारणान्तिकादिसमुद्घातं नयति। *भग॰ २३०*।

किलामेह– क्लमयथ–मारणान्तिकसमुद्घातं गमयथ। *भग॰ ३८१*।

किलिंच– शलाका। *भक्त॰*। किलिञ्चं–क्षुद्रकाष्ठरूपः। *दशवै॰ १५२*।

किलिकिञ्चतं– रोषभयाभिलाषादिभावानां युगपद्वा। *सम॰ ६४*।

किलिकिलाइतं– किलकिलायितम्। *आव॰ ३४८*।

किलिकिलिंतो– किलकिलायमानः। *आव॰ ४२२*।

किलिट्ठं– क्लिष्टं–बाधितम्। *उत्त॰ १२२*।

किलिन्नं– क्लिन्नं–निचितम्। *उत्त॰ १२२*।

किलीबे– क्लीबे–नपुंसकः। *आचा॰ ३३१*।

किलेसो– क्लेशः–रोगः। *पिण्ड॰ ७०*। क्लेशः शारीरी। *सूर्य॰ २९७*।

किवण– कृपणाः–रङ्कादयो दुःस्थाः। *स्था॰ ३४२*। दरिद्राः *आचा॰ ३२५*। अपरित्यागशीलः, अहवा दारिद्दोवहतो जायगो कृपणः। *निशी॰ ९८* आ। कृपणः–रङ्कः। *भग॰ १०१*। दीनो वराककः, इन्द्रियैः पराजितः। *सूत्र॰ ७२*। रङ्काः–रङ्कादयो दुःस्थाः। *स्था॰ ३४१*। *प्रश्न॰ २५*।

किवणकलुणो– कृपणानां मध्ये करुणः कृपणकरुणः। अत्यन्तकरुणः। *प्रश्न॰ ५९*।

किवणकुलाणि– कृपणकुलानि–तर्क्कणवृत्तीनि। *स्था॰ ४२०*।

किविणं– कृमिवत्। *प्रश्न॰ १६२*। कृपणः–पिण्डोलकः। *दशवै॰ १८४*।

किविणवणीमते– कृपणाः–रङ्कादयो दुस्थाः, परेषामात्मद्रु–स्थत्वदर्शनेनानुकूलभाषणतो यल्लभ्यते द्रव्यं सा वनी प्रतीतो तां पिबति–आस्वादयति पातीति वेर्ति वनीपः स एव वनीपकः–याचकः। *स्था॰ ३४१*।

किव्विस– किल्बिषं क्लिष्टतया निकृष्टमशुभानुबन्धि

अधमः *उत्त॰ १८३*। किल्बिषिकं कर्म। *दशवै॰ १८९*। किल्बिषं पापम्। *प्रज्ञा॰ ४०५*।

किव्विसत्तं– किल्बिषत्वं–चाण्डालप्रायदेवविशेषत्वम्। *प्रश्न॰ ११२*।

किस– कृशं स्तोकमपि तृणतुषादिकमपीत्यर्थः। कसनं-कसः परिग्रहग्रहणबुद्ध्या जीवस्य गमनपरिणामः। *सूत्र॰ १३*।

किसलय– किशलयः–अवस्थाविशेषोपेतः। पल्लवविशेषः। *जीवा॰ १८८*। किशलयः–अवस्थाविशेषोपेतः पल्लवविशेषः। *जम्बू॰ २९*। अतिकोमलः। *जम्बू॰ ५३*। अभिनवपत्रम्। *उत्त॰ ३३४*।

किसि– कृषिः–क्षेत्रकर्षणकर्म। *प्रश्न॰ ९७*।

किसिपरासरो– कृषिप्रधानः पारासरः कृषिपारासरः। *उत्त॰ ११८*। शरीरेण कृशस्तेन पारासरः कृशपारासरः। *उत्त॰ ११९*।

किसी– कृषिः–कृषिकर्मोपजीवी। *जीवा॰ २७९*।

किसीए– कृषीकरणम्। *आचा॰ ३२*।

किहं– केन प्रकारेण। *भग॰ ११६*।

कीअ– कीचकः वंशः। *दशवै॰ २४३*।

कीअगडं– क्रीतकृतं–द्रव्यभावक्रयक्रीतभेदम्। *दशवै॰ १७४*।

कीएइ– भोजनदोषः। *भग॰ ४६६*।

कीकशं– अस्थि। *प्रश्न॰ ११*।

कीटः– कचवरनिश्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५*।

कीटजं– यत्तथाविधकीटेभ्यो लालात्मकं प्रभवति यथा पटसूत्रम्। *उत्त॰ ५७१*।

कीड– कीटः कृमिः। *दशवै॰ १४२*। घुणादि। *बृह॰ १५२*। चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *प्रज्ञा॰ ४२*। *जीवा॰ ३२*। *उत्त॰ ६९६*।

कीडति– क्रीडति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृ–त्यादिविनोदेन वा तिष्ठति। *जीवा॰ २०१*।

कीडयं– वडयपट्टोति। *निशी॰ १२६ अ*।

कीडाए– क्रीडायै–लंघनवलग्नानस्फोटनक्रीडानां योग्यः। *आचा॰ १०६*।

कीते– द्रव्येण भावेन वा क्रीतं–स्वीकृतं यत्तत्क्रीतमिति। *स्था॰ ४६०*।

कीय– शबले षष्ठो दोषः। *सम॰ ३९*। क्रीतं–मूल्येन परिगृ-हीतम्, अष्टमदोषः।

कीयकडं– क्रीतेन–क्रयेण कृतं–साधुदानाय कृतं क्रीतकृतम्। *प्रश्न॰ १५४*।

कीयगड– क्रयणं क्रीतं तेन कृतं–निष्पादितं क्रीतकृतं, क्रीत-मित्यिर्थः। *पिण्ड॰ ९५*। *भग॰ २३१*। क्रीतकृतम्। *आचा॰ ३२९*। कयेण–कडं कीयकडं, कत्तिएण वा कडं–कीयगडं। *निशी॰ १०३ आ*।

कीयतिय– क्रीतत्रितयं–क्रयणक्रापणानुमतिरूपम्। *दशवै॰ १६८*।

कीरंत– क्रियमाणः। *ज्ञाता॰ १७३*।

कीर– शुकः। *जीवा॰ १८८*।

कीत्ति– नीलवर्षधरपर्वते पञ्चमकूटः। *स्था॰ ७२*।

कीलं– कीलकम्। *दशवै॰ १७६*। कण्ठः। *सूत्र॰ १३०*।

कीलंति– यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृत्यादिविनो–देन वाऽवतिष्ठन्ते। *जम्बू॰ ४६*। कामक्रीडां कुर्वन्ति। *भग॰ ६१८*।

कीलइ– क्रीडति। *आव॰ १९२*।

कीलओ– कर्पूराकारम्। *बृह॰ २४५ अ*।

कीलगसहस्सं– कीलकसहस्रं महत्कीलम्। *जीवा॰ १८९*।

कीलसंस्थाने– कीलवद्दीर्घमुच्चं गतं तस्मिन्। *ओघ॰ २११*।

कीलावणधाती– चउत्थी धाई। *निशी॰ ९३ आ*। क्रीडनकारिणी। *ज्ञाता॰४१*।

कीलिआइ– क्रीडितं–स्त्रीभिःसह तदन्य क्रीडेति। *सम॰ १६*।

कीलिका– यत्रास्थीनि कीलिकामात्रबद्धानि तत्। जीवा *१५, ४२*। अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि। *राज॰ ५७*। यत्रास्थीनि कीलिकमात्रबद्धान्येव तत्। *प्रज्ञा॰ ४७२*।

कीलिगा– अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि। *जम्बू॰ १५*।

कीलिय– क्रीडितं द्यूतादिक्रीडा। *प्रश्न॰ १४०*। कीलिका लोहरेखा। *दशवै॰ ९१*।

कीव– कीवः पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ २३*। मन्दसंहननम्। *भग॰ ४७१*। नामविशेषः। *ज्ञाता॰ २०८*। मैथुनाभिप्राये यस्याङ्गा-दानं विकारं भजति बीजबिन्दूश्च परिगलति स क्लीबः। *बृह॰ ९९ आ*। क्लीबः–असमर्थः। *स्था॰ १६४*। क्लीबः–निःसत्त्वः। *उत्त॰ ४५७*।

कीस– कस्मात्। *उत्त॰ १३५*। कीसत्ता–किंस्वता, किंस्व–भावता, कीदृशता वा कः प्रकारः–किंस्वरूपतेत्यर्थः। *भग॰ २२*। किम्। *व्यव॰ ६७ अ*।

कुंकण– चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त॰ ६१६*। कोकनदः। *प्रज्ञा॰ ३७*।

कुंकुम– केशरः। *अनुयो॰ १५४*। *आव॰ ८२३*। *जीवा॰ १९१*। कुङ्कुमं, जात्यघृसृणम्। *जम्बू॰ २१३*। कुङ्कुमं– कश्मीरजम्। *प्रश्न॰ १६२*। *निशी॰ २७६* आ, *१३९* अ।

कुंकंमकेसरं– पद्मकम्। *दशवै॰ २०६*।

कुंकुमपुड– गन्धद्रव्यः। *जाता॰ २३२*।

कुंच– क्रौञ्च–पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ४०७*। *सम॰ १५८*। *प्रश्न॰ २*।

कुंचवीरगो– सगडपक्खिसारित्थं जलजाणं कज्जति। *निशी॰ १७* अ।

कुंचिक– तापसविशेषः। *व्यव॰ ६४* आ।

कुंचिका– । *नन्दी॰ १६५*। तालोद्घाटिनी। *पिण्ड॰ १०६*।

कुंचितो– तावसविशेसो। *निशी॰ १०१* आ।

कुंचिय– कुञ्चितः–कुण्डलीभूतः। *भग॰ १०*। वक्रः। *प्रश्न॰ ८२*।

कुंची– कुडिलो, मायावी। *व्यव॰ ६३* आ।

कुंजरसेणा– कुञ्जरसेना–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्ये पञ्चमी। *उत्त॰ ३७९*।

कुंजरावत्त– वज्रस्वामिपूजास्थानम्। *मरण॰* ।

कुंजरो– कौजीर्यतीति कुञ्जरः कुञ्जे–वनगहने रमति–रतिमा–बध्नातीति कुञ्जरः। *जीवा॰ १२२*।

कुंट– हीनहस्तः। *निशी॰ ४३* आ। विकृतहस्तः। *प्रश्न॰ २५*। अवयवविशेषः। *आचा॰ ३८९*।

कुंटत्तं– कुण्टत्वं पाणिवक्रत्वादिकम्। *आचा॰ १२०*।

कुंटितो– कुण्टितः। *आव॰ ३९६*।

कुंडं– पुढविमयं। *दशवै॰ ९९*। गङ्गाकुण्डादि। *नन्दी॰ २२८*। कुलियं। *निशी॰ २४* आ। स्थलविशेषः। *भग॰ १४२*।

कुंडग– सण्हतंडुलकणियाओ कुकुसा य कुंडगा। *निशी॰ ३२* अ। कुडङ्गम्–जालिः। *आव॰ ६७०*। पानीयभाजनम्। *निशी॰ ६६* आ। कुण्डकः–कणक्षोदनोत्पन्नकुक्कुसः। *उत्त॰ ४५*।

कुंडग्गाम– कुण्डग्रामः, वर्धमानस्वामिविहारभूमिः। *आव॰ २१९*। ब्राह्मणकुण्डग्रामविषयोऽष्टमशते त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशकः। *भग॰ ४२५*। वैश्यायनतापसस्थानम्। *भग॰ ६६५*।

कुंडदोहणी– कुण्डदोहनी। *ओघ॰ ९७*।

कुंडधारपडिमाओ– कुण्डधारप्रतिमे–आज्ञाधारप्रतिमे। *जम्बू॰ ८२*।

कुंडधारी– तीर्यक्जृम्भकदेवविशेषः। *आचा॰ ४२२*।

कुंडपुरं– कुण्डपुरं–वर्द्धमानजन्मभूमिः। *आव॰ १६०*। प्रव्रज्यास्थानम्। *आव॰ ३१२*। सुदर्शनाया वास्तव्यस्थानम्। *उत्त॰ १५३*।

कुंडमोए– कुण्डमोदं, हस्तिपादाकारं मृन्मयं पात्रम्। *दशवै॰ २०३*।

कुंडरिया– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

कुंडल– कुण्डलं–कर्णाभरणविशेषरूपः। *प्रज्ञा॰ ८८*। कर्णाभ–रणविशेषः। *औप॰ ५०*। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८*। अरुणवरावभाससमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा॰ ३०७*। कुण्डलं– कर्णाभरणविशेषः। *भग॰ १३२*।

कुंडलजुअलं– कुण्डलयुगलं–कर्णाभरणम्। *आव॰ १८०*।

कुंडलभद्दो– कुण्डलभद्रः–कुण्डले द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलमहाभद्दो– कुण्डलमहाभद्रः–कुण्डले द्वीपेऽ□ परार्द्ध-धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलवर– द्वीपविशेषः। *अनुयो॰ ९०*। कुण्डलवरे समुद्रे पूर्वार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*। कुण्डलसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा॰ ३०७*। कुण्डलवराख्ये द्वीपे प्राकारकुण्डलाकृतिः–कुण्डलवरः। *स्था॰ १६६, १६७*। कुण्डलवरः कुण्डलसमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेषः। कुण्डलवर-द्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलवरभद्दो– कुण्डलवरभद्रः कुण्डलवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपति–र्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलवरमहाभद्दो- कुण्डलवरमहभद्रः कुण्डलवरे द्वीपेऽपरार्द्ध-धिपतिर्देव। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलवरमहावर– कुण्डलवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

कुंडलवरावभास– कुण्डलवरसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। *प्रज्ञा॰ ३०७*।

कुंडलवरावभासभद्द– कुण्डलवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः *जीवा॰ ३६८*। कुण्डलवरसमुद्रपरिक्षेपी द्वीपः, कुण्डलवरावभासद्वीपतत्परिक्षेपी समुद्रश्च।

जीवा॰ ३६८।

कुंडलवरावभासमहाभद्दः– कुण्डलवरावभासे द्वीपेऽपरार्द्धा–धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८।*

कुंडलवरावभासमहावर– कुण्डलवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धा–धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८।*

कुंडलवरावभासवर– कुण्डलवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधि–पतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८।*

कुंडला– कुण्डला सुकच्छविजये राजधानी *जम्बू॰ ३५२।*

कुंडलाओ– विदेहेषु राजधानी, विशेषनाम। *स्था॰ ८०।*

कुंडलिक– मात्रकं हस्तो वा। *ओघ॰ १६७।*

कुंडलो– कुण्डलः अरुणवरावभाससमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेषः। *ओघ॰ १६८।* कुण्डलद्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च। *जीवा॰ ३६८।* कुण्डलः जम्बूद्वीपादेकादशकुण्डलाभिधानद्वीपान्तर्वर्त्ती कुण्डलाकारपर्वतः। *प्रश्न॰ ९६।*

कुंडागं– कुण्डाकं सन्निवेशः। *आचा॰ २०९।*

कुंडिआ– कुण्डिका। *अनुयो॰ १५२।*

कुंडिका– कुण्डिका। *उत्त॰ ११३।*

कुंडिगा– कुमण्डलू। *बृह॰ २१ आ।*

कुंडिनी– भीष्मराजधानी। *प्रश्न॰ ८८।*

कुंडिय– कुण्डिका कमण्डलू। *भग॰ ११३।*

कुंडिया– कुण्डिका–कमण्डलू। *प्रश्न॰ १५२। औप॰ ९५। आव॰ ३०५।* आलुका। *अनुत्त॰ ५। भग॰ ६६३।*

कुंडी– पानीयभाजनविशेषः। *निशी॰ ६१ अ।*

कुंडुक्क– भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा॰ ५७।*

कुंडुल्कं– आलिन्दकम्। *अनुयो॰ १५३।*

कुंढो– कुण्ढः–मायावी। *उत्त॰ १०८।*

कुंत– भल्लः। *आव॰ ५८८। प्रज्ञा॰ ९७।* कुन्तम्। *जीवा॰ ११७।* कुन्तकं–एतावद्द्रव्यं त्वया देयमित्येवं नियन्त्रणया नियोगिकस्य देशादेर्यत्समर्पणम्। *विपा॰ ३९।* शस्त्रविशेषः। *जीवा॰ १९३।* कुन्तः–भल्लाभिधः शस्त्रविशेषः। *आव॰ ६५१।*

कुंतग्गं– कुताग्रं–भल्लाग्रम्।

कुंतफल– कुन्तफलम्। *आचा॰ ३११।*

कुंतल– शेखरकः। *ज्ञाता॰ १३८।*

कुंती– पाण्डुराजपत्नी। *प्रश्न॰ ८७।*

कुंथु– कुंथवः–सत्त्वाः। *ओघ॰ १२६।* अनुद्धरिप्रभृतिः। *उत्त॰ ६९५।* पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५।* गोमयनि-श्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५।* षष्ठः चक्रवर्त्तिनाम्। *निशी॰ २७६ आ।* कुन्थुः–सप्तदशो जिनः, मनोहरेऽभ्युन्नते महाप्रदेशे स्तूपं रत्नविचित्रं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा तेन तस्य कुन्थुरिति नामकृतम्। *आव॰ ५०५।*

कुंथू– कुः पृथ्वी तस्यां स्थितवानिति कुस्थः। *आव॰ ५०५।* षष्ठः चक्रवर्त्तिनामः। *सम॰ १५२। स्था॰ ३०२।* कुन्थुः षष्ठः चक्री। *आव॰ १५९।* त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

कुंथूपिवीलिया– कुन्थुपिपीलिका–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

कुंदं– कुन्दं कुसुमम्। *प्रज्ञा॰ ३६१। जीवा॰ २७२।* लता-विशेषः। *भग॰ ८०२।* पुष्पजातिविशेषः। *ज्ञाता॰ ६९।* पुष्पविशेषः। *जम्बू॰ ३५।*

कुंदकलिका– कवलपुष्पम्। *प्रज्ञा॰ ९१।*

कुंदगुम्मा– कुन्दगुल्माः। *जम्बू॰ ९८।*

कूंदरुक्क– चीडाभिधानगन्धद्रव्यः। *प्रश्न॰ ७७।*

कुंदु– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

कुंदुरुक्क– चीडा। *सम॰ १३८।* सिल्हकम्। *सूर्य॰ २९३।* कुक्कटरुत। *आव॰ ४०८।* चीडा। *ज्ञाता॰ ४०। औप॰ ५।* वनस्पतिवेशषः। *भग॰ ८०४।* कुन्दुरुकः–चीडाभिधं द्रव्यम्। *जम्बू॰ १४४।* चीडा। *प्रज्ञा॰ ८७।* कुन्दुरुष्कः–चीडा। *जीवा॰ १६०, २०६।*

कुंदुलता– लताविशेषः। *जीवा॰ १८२।*

कुंदो– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कुंभ– ललाटम्। *बृह॰ १३ अ।* आढकषष्ट्यादिप्रमाणतः। *स्था॰ ४६२।* कुंभ एव, अहवा चउकट्ठिं काउं कोणे कोणे धडओ बज्झति, तत्थ अवलंबिउं आरंभिउं वा संतरणं कज्जति। *निशी॰ ४४ आ।* एगो घडणा वा। *निशी॰ ७७ आ।* मुनिसुव्रतनाथस्य प्रथमशिष्यः। *सम॰ १५२।* एकोनविंशतितमः तीर्थंकरस्य पिता। *सम॰ १५१।* नवम-स्वप्नः। *ज्ञाता॰ २०।* नरके एकादशः परमाधार्मिकः। *उत्त॰ ६१४। आव॰ ६५०। सम॰ २९।* मल्लिजिनपिता। *ज्ञाता॰ १२४। आव॰ १६१। सूत्र॰ १२४।* आढकानां षष्ट्या जघन्यः कुम्भः अशीत्या मध्यमः शतेनोत्कृष्ट इति। *ज्ञाता॰ ११९।* घटः। *आव॰ २९५।*

कुंभकारकड– उत्तरापथे प्रत्यन्तनगरम्। *बृह॰ १५३* अ। अ। उत्तरापथे णगरं। *निशी॰ ४४* अ। कुम्भकारकटम्। *उत्त॰ ११४*।

कुंभकारुक्खेवो– कुम्भकारोत्क्षेपः–सेनापल्ल्यां पत्तनविशेषः। *आव॰ ५३८*।

कुंभग– मिथिलायां राजा। मल्लिपिता। *ज्ञाता॰ १२४*।

कुंभगारगड– कुम्भकारकृतः–नगरविशेषः। *व्यव॰ ४३२*

कुंभगारो– कुम्भकारकृतः–ढङ्काभिधो श्रमणोपासकः। *आव॰ ३१३*।

कुंभग्गं– कुम्भाग्रं–मगधदेशप्रसिद्धं कुम्भप्रमाणमुक्तामयं मु–क्तादाम। *जीवा॰ २१०*। कुम्भपरिमाणतः *ज्ञाता॰ १२६*।

कुंभग्गसो– कुम्भाग्रशः–अनेककुम्भपरिमाणानि। *जम्बू॰ १६२*।

कुंभबलि– कुम्भबलिका। आ॰ *६७५*।

कुंभार– प्रथमा श्रेणिविशेषः। *जम्बू॰ १९३*।

कुंभि– कुम्भी–पाकभाजनविशेषः। *प्रश्न॰ १६४*।

कुंभिका– कुम्भो मुक्ताफलानां परिमाणतया विद्यते येषु तानि कुम्भिकानि। *स्था॰ २३२*।

कुंभिक्का– कुम्भाग्रं–मगधदेशप्रसिद्धं कुम्भपरिमाणम्। *जम्बू॰ ५६*।

कुंभिपाग– कुम्भ्यां–भाजनविशेषे–पाकः कुम्भीपाकः। *सम॰ १२६*।

कुंभी– नरके–रत्नप्रभादिनरकपृथिव्यात्मके स्थानानिसीमन्त–काप्रतिष्ठानादीनि। *उत्त॰ २४७*। मुखाकारा कोष्ठिका। *बृह॰ १७९* अ। जस्स वसणा सुज्जंति। *निशी॰ ३३* अ। कुम्भी–उष्ट्रिकाकृतिः। *सूत्र॰ १२५*। पिठरक एव सङ्क-टमुखः कुम्भी। *आचा॰ ३२७*। कुम्भीनारकपचनस्थानम्। *आव॰ ६५१*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ५११*। कुम्भिकः नरकपालविशेषः। *आव॰ ६५१*।

कुउब– कुतुपं–चर्ममयं घृतभरणभाजनम्। *पिण्ड॰ १५४*।

कुऊहलं– कुतूहलं–इन्द्रजालाद्यवलोकनगोचरः। *उत्त॰ १५१*।

कुऊहल्ले– कुतूहलः–औत्सुक्यः। *सूर्य॰ ५*।

कुकुम्मा– मत्स्यबन्धवागुरिकादयः। *बृह॰ ५१* अ। कुकर्माणः–मात्स्यिकादयः। *ओघ॰ ७५*।

कुच्छियकम्मा– मच्छबंधगादयो। *निशी॰ १०७* अ।

कुकम्मो– कुकर्मी–अङ्गारदाहककुम्भकारायस्कारादिकः। *सूत्र॰ १६१*।

कुफुइया– भाण्डाः भाण्डप्रायाः। *भग॰ ४७९*।

कुकुच– भाण्डचेष्टः। *बृह॰ २१३* अ।

कुकुवित– कुत्सितं–अप्रत्युपेक्षितत्वादिना कुचितं– अधस्य-न्दितं यस्य सः कुकुचितः *स्था॰ ३७३*।

कुकुर– श्वा। *बृह॰ ८१* आ। श्वा। *आचा॰ ३१४*।

कुकुला– कुफुका। *दशवै॰ ११५*।

कुकुस– कुक्कसा–तुषप्रायः, धान्यक्षोदः। *आचा॰ ३४२*।

कुकूलानलो– कुकूलानलः। कारीषाग्निः *प्रश्न॰ १४*।

कुक्कडे– चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त॰ ६९६*।

कुक्कइआ– कौत्कुच्यकारिणो भाण्डाः। *जम्बू॰ ३६४*।

कुक्कुइए– कुत्सितसङ्कोचनादिक्रियायायुक्तः कुचः कुकुचस्तद्-भावः कौकुच्यम्। अनेकप्रकारा मुखनयनोष्ठकरचरणभ्रुविका– रपूर्विकापरिहासादिजनिका भाण्डादीनामिव विडम्बनक्रिया। *आव॰ ८३०*। कौकुचिकः–कुकुचा वा अवस्यन्दनं प्रयोजन-मस्येति। *स्था॰ ३७३*। कौत्कुच्यं– अनेकप्रकारा मुखनय-नादिविकारपूर्विका परिहासादिजनिका भाण्डानामिव विड-म्बनक्रिया। *उपा॰ १०९*।

कुक्कुइय– कुकुचेन–कुत्सितावस्पन्देन चरन्तीत कौकुचिकाः। *औप॰ ९२*। खुंखुणकम्। *सूत्र॰ ११७*।

कुक्कुओ– स्थानशरीरभाषाभिश्चपलः। *बृह॰ २४७* अ।

कुक्कुटमांसकं– बीजपूरककटाहम्। *स्था॰ ४५७*।

कुक्कुट्टी– कवलानां प्रमाणं कुक्कट्यण्डम्। शरीरम्। पक्षिणी। *पिण्ड॰ १७३*।

कुक्कुड– कुर्क्कुटं–विद्यादिना दम्भप्रयोगलक्षणम्। *व्यव॰ १६६* अ। कुर्क्कुटः–ताम्रचूडः। *ज्ञाता॰ १*। *प्रश्न॰ ८*। कुक्कुडप्रायः *ओघ॰ ५६*। चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*। कक्कटः–लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*। कुक्कटाः चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*।

कुक्कुडगो– कुर्क्कुटः। *आव॰ ४२८*।

कुक्कुडजाइयं– कुक्कटजातिकं, अनेन पक्षिजातिरुद्दिष्टा। *आचा॰ ३४०*।

कुक्कुडपोअ– कुक्कटपोतः–कुक्कटचेल्लकः। *दशवै॰*

२३७।

कुक्कुडमंसए– कुक्कटमांसकं–बीजपूरकं कटाहम्। *भग॰ ६९१*।

कुक्कुडलक्खण– द्वासप्ततौ कलायां सप्तत्रिंशत्तमा। *ज्ञाता॰ ३२*।

कुक्कुडसंडेयगामपउरा– कुक्कुडसम्पात्या ग्रामाः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च प्रचुरा यस्याः सा क्कुडसण्डेयग्रामप्रचूराः। *राज॰ २*।

कुक्कुडि– कुक्कटिः माया। *पिण्ड॰ ९३*। कुक्कटी–शरीरम्। *व्यव॰ ३३३* आ।

कुक्कुडिअंडो– कुक्कड्यण्डकम्। *व्यव॰ ३३३* आ।

कुक्कुडिअंडगपमाण– कुक्कट्यण्डकस्य यत् प्रमाणं मानं तत्। *भग॰ २९२*।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ता– कुक्कट्यण्डकप्रमाणमात्रा, कुक्क–ट्यडकस्य यत्प्रमाणं–मानं तत्परिमाणं–मानं येषां ते तथा, अथवा कुकुटीव–कुटीरमिव जीवस्याश्रयत्वात् कुटीशरीरं कुत्सिता अशुचिप्रायत्वात् कुटी कुकुटी तस्या अण्डकमि-वाण्डकं उदरपूरकत्वादाहारः कुकुट्यण्डकं तस्य प्रमाणतो–मात्रा द्वात्रिंशत्तमांशरूपा येषां ते। *भग॰ २९२*।

कुक्कुडिय– कोकुटिकाः–मातृस्थानकारिणः। *बृह॰ ३०५*।

कुक्कुडी– कुकुटी–कुटीरम्। *भग॰ २९२*।

कुक्कुययं– खुंखुणकम्। *सूत्र॰ ११७*।

कुक्कुरा– कुकुरीः–श्वानस्ते च जिहिंसुः। *आचा॰ ३१०*।

कुक्कुस– तुषप्रायो धान्यक्षोदः। *दशवै॰ १७०*।

कुक्कुसा– अतिगुलीकाः। *बृह॰ १९५* अ। कुक्कुसा-कणिक्का। *आव॰ ६२२*।

कुक्कुह– चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*। *जीवा॰ ३२*।

कुचरा– चौरपारदारिकादयः। *आचा॰ ३०८*। कुच्छियचरा कुचरा पारदाकादि। *निशी॰ ५८* अ।

कुचा– मृत्तिकाया उदकस्य च वधः। *बृह॰ २९४* आ।

कुचिकर्णः– मागधजनपदे धनपतिः। *आव॰ ३४*।

कुचेले– जीर्णकर्पटः। *ओघ॰ ७४*।

कुच्चं– कूर्चम्। *आव॰ ३९१*।

कुच्चंधरो– कूर्चधरः अन्तःपुराधिष्ठायकः। *ओघ॰ ७४*।

कुच्चगं– कूर्चकाः क्रियन्ते येन। *आचा॰ ३७२*।

कुच्चो– कूर्चाः-येन तृणविशेषणः कुविन्दाः कूर्यान् कुर्वन्ति, कुशदर्भयोराकारकृतो विशेषः। *प्रश्न॰ १२८*।

कुच्चिए– कूर्चधरः। *बृह॰ ९०* आ।

कुच्छणा– कुत्सना–अङ्गुल्यन्तराणां कोथः। *व्यव॰ ९* आ।

कुच्छलवाहगा– त्रीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

कुच्छा– कुत्सा-प्रतिषेधः। *दशवै॰ २७०*।

कुच्छि– कुक्षिः-द्विहस्तमानः *प्रज्ञा॰ ४८*। द्विहस्तप्रमाणा। नंदी। ९६।

कुच्छिकिमिया– कुक्षिकृमयः-कुक्षिप्रदेशोत्पन्नाः कृमयः। *जीवा॰ ३१*। कुक्षिप्रदेशोत्पन्ना कृमयः कुक्षिकृमयः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

कुच्छिधार– कुक्षिधारा-नौपार्श्वनियुक्तकाः आवेल्लकवाहका-दयः। *ज्ञाता॰ १३६*।

कुच्छिसूल– कुक्षिशूलं-रोगविशेषः। *ज्ञाता॰ १२१*।

कुच्छी– अष्टचत्वारिंशदङ्गुलप्रमाणा। *भग॰ २७५*। अष्टचत्वा-रिंशदङ्गुलानि कुक्षिः। *जम्बू॰ ९४*। कुक्षिः द्विहस्तमानाः। *जीवा॰ ४०*।

कुच्छेज्जा– कुथ्येत्-पूतिभावं यायात्। *अनुयो॰ १६२*।

कुज्जा– कुर्यात-करोतेः सर्वधात्वर्थत्वाद् गृहणीयात्। *उत्त॰ ५३९*।

कुटुंबिया– साधुसद्वेण विच्छुद्धा गच्छन्ति। *निशी॰ १०७*

कुटुंबी– प्रभूतपरिचारकलोकपरिवृतः। *बृह॰ २७६* आ।

कुट्टणी– कण्डनकारिणी। *बृह॰ ६५* अ।

कुट्टविंदो– वडपिप्पलआसत्थयमादिदाणवक्को मट्टियाए सह कुटिज्जति सो। *निशी॰ ६४* अ।

कुट्टा– चिञ्चतिका। *बृह॰ २६७* आ।

कुट्टितं- छिद्रितं। *निशी॰ ६५* अ।

कुट्टियं– पत्थरादिणा। *निशी॰ १७२* आ।

कुट्टेबं– कोट्टंबिनीं-गामित्यर्थः। *बृह॰ ९८* आ।

कुट्ठं– कष्टम्। *निशी॰ २८९* अ। रोगविशेषः। *निशी॰ १८८* अ। कुष्ठं-गन्धकहट्टविक्रेयो वस्तु विशेषः। *निशी॰ १०* आ।

कुंड– माया। *निशी॰ ६३* अ।

कुडुंग– वंशजालिका। *बृह॰ ९* अ। वनखण्डम्। *बृह॰ २४६* अ। वंशादिगहनम्। *ज्ञाता॰ २३९*। देवकुलं वृक्षविषमो वा। *व्यव॰ २०५* अ।

कुडंगीसरट्ठाणं– गन्धवदुज्जयिन्यां स्थानम्। *मरण॰*।

कुडओ– चतुःसेतिकः कुडवः। *ज्ञाता० ११९।*

कुडगं– तुसमुहीकणिया कुक्कससीमा कुडगं भण्णति। *निशी० १९६* अ।

कुडगफाणिए– कुटजफाणितं-कुटजक्वाथम्। *प्रज्ञा० ३६४।*

कुडगो– कुटः-कुम्भः। *आव० ३१०।*

कुडभी– लघुपताका। *जीवा० २२९। जम्बू० ४०३, आव० ७१९। जम्बू० ३२५।* पताका। *उत्त० ३०३।*

कुडमुहे– । *निशी० ३५७* आ।

कुडय– कुटजपुष्पाणि। *जम्बू० २१२।*

कुडयज्जुणणीव– कुटजार्जुननीपा-वृक्षविशेषास्तत् पुष्पाणि कुटजार्जुननीपानि। *ज्ञाता० १६१।*

कुडवं– मानविशेषः। *आव० ८२३।*

कुडा– कुण्डानि-गङ्गाकुण्डानि।

कुडागाराणि– कूटागारान्-पर्वतोपरिगुहाणि। *आचा० ३८२, नन्दी० २२८।*

कुडाविमा– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२।*

कुडाहच्चं– कूटाघातम्। *राज० १३४।*

कुडि– बृहती। *आव० २६२।* कुटी। *आव० ५२०।*

कुडिउ– बद्धाङ्गः। *निशी० १६१* आ।

कुडियंठो– कुण्डिकाण्ठः। *आव० २७३।*

कुडिय– हृतगवेषकः। *उत्त० १०९।*

कुडिलगइ– कुटिलगतिः-वक्रगतिः। *आचा० ४२।*

कुडिलो– कुटिलः वक्रः *प्रश्न० ३०।*

कुडिव्वय– कुटिव्रतः-परिव्राजकविशेषः। *औप० ९१।*

कुडी– कुटी-शरीरम्। *भग० २९२।* गृहः। *आव० ४८४।*

कुडीरग– कुटीरकं, तृणादिनिर्मितं लघुगृहम्। *दशवै० १६६।*

कुडीरी– ओरजम्। *तन्दु०* ।

कुडुंबजागरिय– कुटुम्बचिन्तायं जागरणं-निद्राक्षयः। कुटुम्बजागरिका। *ज्ञाता० ८३।*

कुडुंबिणीओ– पदातिरूपाः। *भग० ५४८।*

कुडुंबिया– कतिपयकुटुम्बस्वामिनः। *राज० १२१।*

कुडुंभगो– जलमंडुओ। *निशी० ४५* अ।

कुडुग– बहुबीजविशेषः। *भग० ८०३।*

कुड्डंतर– कुड्यान्तरं-कुडयं खटिकादिरचितं तेनान्तरं-व्यवधानं कुड्यान्तरम्। *उत्त० ४२५।*

कुड्ड– कुड्ड-भित्तिः। *आव० ६१९।* कुड्यम्। *ओघ० ९१, १५३।* कायोत्सर्गे चतुर्थो दोषः। *आव० ७९८।* कुड्यं-भित्तिः। *उत्त० ५३०।* खटिकादिरचितम्। *उत्त० ४२५।*

कुड्मलं– मुकुलं, कलिका। *जीवा० १८२।*

कुड्यैकदेशः– भित्तिमूलम्। *दशवै० १७८।*

कुढिय– हृतगवेषकः। *उत्त० ११०।* ग्रामाधिपः, आरक्षकः। *आव० २७२।*

कुढिया– कुविया। *निशी० ७७* अ।

कुढो– चौरहृतागवेषकः। *बृह० २२*अ। *दशवै० ४४। निशी० ६* आ।

कुणक्के– कुहणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३।*

कुणपनहो– कुणपे-मांसे सूक्ष्मो नखो नखावयवः स कुणपन-खावयवः। *व्यव० २५५* आ। जनपदविशेषः। *निशी० ८०* आ।

कुणाल– अशोकश्रीपुत्रः। *बृह० १५३* आ। कुणालः, भावप्रणिधावुदाहरणे दृष्टान्तः। *आव० ७१३।* असोगस्स पुत्तोः। *बृह० ४७* अ।

कुणालकुमार– पाडलिपुत्ते असोगसिरिराया तस्य पुत्तो कुणालो। *निशी० ४४* आ।

कुणाला– जङ्घार्धमानैरावतीकण्ठे नदी। *बृह० १६१* आ। एरवती नदी कुणाला जणपदे, जनपदविशेषः। *निशी० ८०।* जनपदः। *राज० ११६।* जनपदविशेषः। *प्रज्ञा० ५५। ज्ञाता० १४०।* कुणाला यत्र श्रावस्तीनगरी *ज्ञाता० १२५।*

कुणि– गर्भाधानदोषात् ह्रस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा कुणिः कुण्ट इति। *प्रश्न० १६१।* पाणिविकलः। *बृह० ११९* अ

कुणिए– कुणिक।। *राज० १४३।*

कुणिओ– कुणिकः-सेवकविशेषः। *प्रश्न० १५।*

कुणिमं– मांसम्। *तन्दु०* । *उपा० २९।* रुधिरम्। *आव० ५६१।* कुणपः-शवः। *अनुयो० १३८। प्रश्न० ५२।* मांसम्। *पिण्ड० ७१। जीवा० १०७।* शबस्तद्रसोऽपि वसादिः कुणपः। *जम्बू० १७१।*

कुणिमवावण्ण– व्यापन्नं-विशरारुभूतं कुणिमं-मांसं यस्य स । *जीवा० १०७।*

कुणिमाहरे– कुणपः-शबस्तद्रसोऽपि वसादिः-कुणपस्तदाहारः कुणपाहारः। *भग० ३०९।*

कुणियं– मरहट्ठविसए चोद्दिति कुणियं वा भणंतो। *निशी० २९४* आ। गर्भाधानदोषाद् ह्रस्वैकपादौ न्यूनैकपाणिर्वा कुणिः। *आचा० २३३।*

कुण्डकोलिए– रूपकान्तः। उपासकदसायां

षष्ठमध्ययनम्। *उपा० १*।

कुतप– बस्तिः। *नन्दी० १६२*। तैलादिभाजनविशेषः। *भग० ४७९*। चर्ममयं भाजनविशेषः। *बृह० २३६* अ।

कुतव– कुतपः-छागलम्। *स्था० ३३८*। भाजनविशेषः। *निशी० ३४५* अ।

कुतित्थ– कुतीर्थम्। *आव० ५६१*। कुत्सितानि च तानि तीर्थानि-कुतीर्थानि च शाक्यौलूक्यादिप्ररूपितानि तानि विद्यन्ते येषामनुष्ठेयतया स्वीकृतत्वात्ते कुतीर्थिनः। *उत्त० ३३७*।

कुतित्थियधम्मो– कुतीर्थिकधर्मः-चरकपरिव्राजकादिधर्मः। *दशवै० २३*।

कुतुंबक– कुस्तुम्बकः। *जीवा० १०५*।

कुतुंबकसंठिय– कुतुम्बकसंस्थितः-आवलिका बाह्यस्यैकविं-शतितमं संस्थानम्। *जीवा० १०४*।

कुतुप– पक्वतैलादिभाजनम्। *औप० ६९*। चर्मनिष्पन्नं घृतभरणपात्रम्। *पिण्ड० ३५*। चर्मकुम्भः। *पिण्ड० १०५*।

कुतूहलं– नटादिविषयम्। *आव० ३४६*।

कुत्तिय– स्वर्गमर्त्यपातालक्षणं भूमित्रयं तत्संभवं वस्त्वपि कुत्रिकम्। *भग० १३६*।

कुत्तियावण– कुत्रिकं-स्वर्गमत्त्र्यपातालक्षणं भूत्रयं तत्सम्भवि वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादको य आपणो-हट्टो देवाधिष्ठि-तत्वेनासौ कुत्रिकापणः। *भग० ४७२*। कृत्रिमापणः। *आव० ३२०*। देवाधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपातालक्षणभूत्रितयसं-भविवस्तुसंपादक आवणो-हट्टः कुत्रिकापणः। *ज्ञाता० ५६*। कुत्रिकं-स्वर्गमर्त्यपातालक्षणं भूमित्रयं तत्सम्भवं वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादक आपण-हट्टः कुत्रिकापणः। *भग० १३६*। *उत्त० १७१*।

कुत्तियावणचच्चरी– कुत्रिकापणचर्चरी । *दशवै० ५८*।

कुत्थुंभरि– कुस्तुम्भरि-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*।

कुत्सति– निन्दति। *आव० ५८७*।

कुथुंभरि– धाणगा। *निशी० १४४* आ।

कुदंडयं– कुदण्डकं-काष्ठमयं प्रान्तरज्जुपाशम्। *प्रश्न० ५६*।

कुदंडो– कुदण्डः-असम्यग्निग्रहः। *विपा० ६३*। बन्धनविशेषः। *प्रश्न० २२*।

कुदंसणं– मिथ्यादर्शनम्। *आतु०* । कुदर्शनाः शाक्यादयः। *प्रज्ञा० ६०*।

कुद्दव– कोद्रवः, सामायिकलाभे दृष्टान्तः। *आव० ७५*।

कुद्दाल– वृक्षविशेषः। *भग० २७८*। उपरितनो भागः। *उपा० २१*। कोद्दालः। *जम्बू० ९८*। खननशस्त्रम्। शस्त्रविशेषः। *आचा० ३३*। कुद्दालः-भूखनित्रम्। *प्रश्न० २४*।

कुद्ध– क्रुद्धः। *ज्ञाता० २१७*।

कुपक्ख– कुपक्षः-कुत्सितान्वयः। *आचा० ३८८*।

कुप्परा– कूर्पराविव कूर्परौ कूर्पराकारत्वात्। *जम्बू० २००*।

कुप्पावयणियं– कुत्सितं प्रवचनं येषां ते तथा तेषु भवं कुप्रावचनिकम्। *अनुयो० २९*।

कुप्पासओ– कुर्पासकः-कंचुकाः। *बृह० २३५* अ। *बृह० २५६* आ।

कुबेरदत्तो– निजसुतागामी। *भक्त०*।

कुब्जसंस्थानं– पञ्चमं संस्थानम्। *प्रज्ञा० ४७२*।

कुब्जिका– वक्रजङ्घा। *ज्ञाता० ४१*।

कुब्बं– निम्नं क्षाममित्यर्थः। *उपा० २१*।

कुब्बरो– कूबरः वैश्रमणलघुपुत्रः। *अन्त० ५*।

कुमार– दुःखमृत्युः। *उपा० ५१*। विरूपमारणप्रकारः। *ज्ञाता० १९२*। प्रत्यन्तान् सीमासन्धिवर्तिनः क्षुभ्यतोऽन्तर्भूतण्यर्थ-त्वात् समस्ता अपि सीमापर्यन्तवर्त्तिनीः प्रज्ञाः क्षोभयतो दुर्दान्तान् दुःशिक्षितान् संग्रामनीति कुशलः सर्वतः सर्वासु दिक्षु यो दमयन् वर्तते स एतादृशः कुमारः। *व्यव० १७०* अ। कुमारः-द्वितीयवयोवर्तिछात्रादिः। *उत्त० ३६४*। कुत्सिता माराः कुमाराः-सौकारिकाः *ओघ० ७५*। मोदक-प्रियकु-मारः। पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी० १६६*। अयस्कारः। *उत्त० ४६१*। कुमारः राज्यार्हः। *प्रश्न० ९६*। अमुक्तभोगी। *बृह० १३* आ।

कुमारगाह– कुमारग्रहः उन्मत्तताहेतुः। *भग० १९७*।

कुमारग्गहो– कुमारग्रहः। *जीवा० २८४*।

कुमारनंदी– कुमारनंदी चम्पायां सुर्वणकारः। *आव० २९६*। *बृह० १०८* आ।

कुमारपुत्तिय– कुमारपुत्रः निर्ग्रन्थविशेषः। *सूत्र० ४१०*।

कुमारभिच्चं– कुमाराणां-बालकानां भृतौ पोषणे साधु कुमारभृत्यं, तद्धि शास्त्रं कुमारभरणस्य क्षीरस्य दोषाणां संशोधनार्थं दुष्टस्तन्यनिमित्तानां व्याधीनामुपशमनार्थं चेति। आयुर्वेदस्य प्रथमाङ्गम्। *विपा० ७५*। *स्था० ४२७*।

कुमारमुत्ती– कुमारभुक्तिः। *आव॰ ३६६। निशी॰ २४३।*

कुमारसमण– कुमारश्चासावपरिणीततया श्रमणश्च तपस्वीरिव तया कुमारश्रवणः। *उत्त॰ ४९८।*

कुमारामच्च– कुमारामात्यः। *आव॰ ६७९, ४३६ नन्दी॰ १६३। दशवै॰ ५४।* कुमारामात्यः, असत्या सम्बद्धप्रलापित्वे उदाहरणम्। *आव॰ ८३९।*

कुमारामच्चतं– कुमारामात्यत्वम्। *उत्त॰ १०५।*

कुमारायं– कुमाराकं-सन्निवेशः। वर्धमानस्वामिविहारभूमिः। *आव॰ २०२।*

कुमारिए– सौकरिकः। *बृह॰ ५१* अ। मारेति तं कुमारिया। *निशी॰ १०७* अ।

कुमारिया– जे कुमारेण मारेति ते। *निशी॰ १०७* आ।

कुमारोलग्गएहिं– कुमारावलगकैः। *उत्त॰ ११५।*

कुमुअं– कुमुदं गद्दर्भकम्। *दशवै॰ १८५।* मुकुदं-चन्द्रबोध्यम्। *जम्बू॰ ११५।*

कुमुतं– कुमुदं-चन्द्रविकाश्यं पद्मम्। *प्रश्न॰ ८४।*

कुमुदं– सहस्रारकल्पे विमानविशेषः। *सम॰ ३३।* आनतकल्पे विमानविशेषः। *सम॰ ३५।* कुमुदः-चन्द्रबोध्यम्। *भग॰ ५२०।* कुमुदः दिग्हस्तिकूटनाम। *जम्बू॰ ३६०।* कुमुदो विजयः। *जम्बू॰ ३५७।* जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कुमुदगुम्मं– आनतकल्पे विमानविशेषः। *सम॰ ३५।*

कुमुदप्पभा– कुमुदप्रभा, पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३३५।*

कुमुदा– कुमुदा पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३३५।* अञ्जनकपर्वते पुष्करिणी। *स्था॰ २३०।*

कुमुदुगं– धान्यविशेषः। *सूत्र॰ ३०९।*

कुमुयं– कुमुदं चन्द्रविकासि। *जीवा॰ १७७। १९१।* कुमुदः। *राज॰ ८।* चन्द्रबोद्यादीनि। *ज्ञाता॰ ९८।*

कुमुयदल– कुमुददल। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

कुमुया– महाविदेहेषु राजधानीविशेषः। *स्था॰ ८०।* कुमुदा-पञ्चिमदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी। *जीवा॰ ३६४।*

कुमुयाइं– चन्द्रविकासीनि। *जम्बू॰ २६।*

कुम्म– कूर्मः षष्ठाङ्गे चतुर्थं ज्ञातम्। *आव॰ ६५३। सम॰ ३६। उत्त॰ ६९४। ज्ञाता॰ ९।* कच्छाः। *ज्ञाता॰ ९।* सावोरूपमा। आ॰ ६५३। कूर्मकः-कच्छपः। *प्रश्न॰ ७०।*

कुम्मगामं– कूर्मग्रामः-वर्धमानस्वामिविहारभूमिः। *भग॰ ६६६। आव॰ २१३।*

कुम्मारगामं– कूर्मारग्रामः वर्धमानस्वामिविहारभूमिः। *भग॰ ६६४। आव॰ २२२।*

कुम्मासा– कुल्माषाः सिद्धभाषाः, यवभाषा इत्यन्ये। *दशवै॰ १८१।* अर्द्धस्विन्ना मुद्गादयो माषा इत्यन्ये। *भग॰ ६६८।* कुल्माषाः-राजमाषाः। *उत्त॰ २९५।* कुपितः-मनसा कोप-वान्। *विपा॰ ५३।* माषविशेषाः। *आचा॰ ३१३।* कुल्माषाः-उडदाः। *पिण्ड॰ १६३* माषाः, ईषत्स्विन्ना मुद्गादयः। *प्रश्न॰ १५३।* गोन्नद्वितीयनाम। *आव॰ ८५४।*

कुम्मुण्णया– कूर्मषृष्ठमिवोन्नता कूर्मोन्नता, अर्हदादीनां मातृयोनिः। *प्रज्ञा॰ २२७।*

कुम्मुन्नये– कूर्म्मः-कच्छपः तद्वदुन्नता कूर्म्मोन्नता। *स्था॰ १२२।*

कुय– कुव्वं-शिथिलम्। *व्यव॰ २९७* आ।

कुयवाय– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कुरंग– द्विखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।* मृगभेदः श्रृङ्गवर्णादिविशेषः। *जम्बू॰ १२४।* कुरङ्गः मृगः। *प्रश्न॰ ७।* द्विखुरश्चतुष्पदवि-शेषः। *जीवा॰ ३८।*

कुरंटओ– संदंशकः पुतपृष्टजान्वाच्छादि। *बृह॰ २३७* आ।

कुरच्छा(त्था)– देवजाणरहो वा विविधा संवहणा गच्छंति सेसा कुरच्छा(त्था)। *निशी॰ ७१* आ।

कुरज्ज– कुराज्यं भिल्लादिराज्यम्। *जम्बू॰ २७७।*

कुरणं– राजकीयमन्यदीयं वाची तं। *व्यव॰ १७७* आ।

कुरत्था– कुरथ्या-कुमार्गः। आ॰ ७४०।

कुररी– पक्षिणी। *उत्त॰ ४८०।*

कुररो– कुररः उत्क्रोशः। *प्रश्न॰ २१।*

कुरल– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९। जीवा॰ ४१।*

कुराईण– कुराजानः-प्रत्यन्तराजानः। *आचा॰ ३३४।*

कुराया– कुत्थितो राया, पच्चंतणिवो। *निशी॰ २७७।*

कुरिणंमि– महति अरण्ये। *ओघ॰ १५८।*

कुरु– जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।* कुरुजनपदो यत्र हस्ति-नागपुरं नगरम्। *ज्ञाता॰ १२५।*

कुरुआ– कुरुकुचा-पादप्रक्षालनादिका। *ओघ॰ ८२।*

कुरुए– कुरुकम्। *सम॰ ७१।*

कुरुकुचा– पादप्रक्षालनाचमनरूपा। *ओघ॰ १२५।*

कुरुकुय– अचित्तपुढवी। *निशी॰ १५९* आ। कुरुकुच।

ओघ॰ १९८। आचा॰ २०३।

कुरुकुया– पादप्रक्षालनादिका। *बृह॰ २९०।*

कुरुकुरायंति– क्लिश्नीतः। *आव॰ ३९३।*

कुरुजणपदं– कुरुजनपदं देशविशेषः। *आव॰ १४५।*

कुरुजणवयं– कुरुजनपदं देशविशेषः। *उत्त॰ ३९५।*

कुरुटुक– काङ्कटुकबीजप्रायः। *प्रश्न॰ ४३।*

कुरुटुककडं– कुरुटुककृतं-कुरुटुकाः-काङ्कटुकबीजप्राया अयोग्याः सद्गुणानां तैः कृतं अनुष्ठितम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य क्वचित् चतुर्थं नाम। *प्रश्न॰ ४३।*

कुरुडः– कुणालायां स्थितमुनिः। *उत्त॰ २०४।*

कुरुदत्त– अग्निदग्धो मुनिः। *संस्ता॰।*

कुरुदत्तपुत्त– कुरुदत्तपुत्रः-ईशानसामानिकवक्तव्यतायां अनगारः। *भग॰ १५९।*

कुरुदत्तसुओ– कुरुदत्तसुतः-हस्तिनापुरे इभ्यपुत्रः। *उत्त॰ १०९।*

कुरुदत्तसुत– नैषेधिकीमाचरतां हतः। *मरण॰।*

कुरुभ– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

कुरुमई– कुरुमती, ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्येऽष्टमी, स्त्रीरत्नम्। *उत्त॰ ३७९। सम॰ १५२।*

कुरुया– देशतः सर्वतो वा शरीरस्य प्रक्षालनं कुरुका। *व्यव॰ १६३ आ।*

कुरूविंद– कुरुविन्दः-तृणविशेषः। *जम्बू॰ ११०।* तृणविशेषः। *आचा॰ ५७। प्रज्ञा॰ ३३।* तृणविशेषः। *प्रश्न॰ ८०।* कुटलिकः। *प्रश्न॰ ८०।*

कुरुए– कुत्सितं यथा भवत्येवं रूपयति-विमोहयति यत्तत् कुरूपं भाण्डादिकर्म। *भग॰ ५७३।*

कुर्यात्– आलोचयेद्। *आचा॰ ३३७।*

कुलं– उग्रादि। *पिण्ड॰ १२९।* वंशस्यावान्तरभेदम्। *ज्ञाता॰ २२०।* गृहम्। *आचा॰ ३२१। बृह॰ ८६ अ। निशी॰ १८५ अ। उत्त॰ ४०४।* गिहं। *निशी॰ ७० अ।* समूहः। *ज्ञाता॰ १६१।* स्थानीयादि। *आचा॰ ८१।* एगं कुटुंबं। *दशवै॰ १६३।* पितृसमुत्थं कुलम्। *पिण्ड॰ १२९। सूत्र॰ २३६। उत्त॰ १४५। आव॰ ३४१।* कुटुंबं। *निशी॰ ८३ अ। १५९ आ।* चान्द्रादिकं साधुसमुदायविशेषरूपं प्रतीतम्। *स्था॰ २९९।* कुटुम्बं, यूथं वा। *प्रश्न॰ ३७।* कृमि-कीटवृश्चिकादि। *जीवा॰ १३४।* पैतृकः पक्षः। *ज्ञाता॰ ७। प्रश्न॰ ११७।* गच्छसमुदायरूपं चन्द्रादिकम्। *प्रश्न॰ १२६।* नागेन्द्रादि। *बृह॰ ८४ अ।* विद्याधरादि। *आ॰ ५१०।* प्रख्यातं कुलम्। *ओघ॰ ४८।* अन्वयो गच्छः। *उत्त॰ ३४७।* पार्श्वनाथसन्तानम्। *उत्त॰ ५००।* कुलमदः, द्वितीयं मद-स्थानम्। *आव॰ ६४६।* आर्यद्वितीयभेदे तृतीयः। *सम॰ १३५।* नागेन्द्रकुलादि। *दशवै॰ २४२।*

कुलए– कुडवं चतुःसेतिकामानम्। *दशवै॰ १३४।*

कुलओ– चतस्रः सेतिका कुडवः। *अनुयो॰ १५१।* कूलतः कुडवः। *आव॰ ४२४।*

कुलकहा– उग्रादिकुलप्रसुतानामन्यतमा कथा कुलकथा। स्त्रीकथाया द्वितीयभेदः। *आ॰ ५८१।* स्त्रीकथाया द्वितीयभेदः। *स्था॰ २०९।* कुलसम्बन्धेन स्त्रीणां कथा कुलकथा। *प्रश्न॰ १३९।*

कुलक्ख– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।* कुलाक्षः-चिलातदेश-निवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

कुलगर– कुलकरः। *आव॰ ४९९।* कुलकराः-विशिष्टबुद्ध्यो लोकव्यवस्थाकारिणः कुलकरणशीलाः पुरुषविशेषाः। *जम्बू॰ १३२।* कुलकराः-विशिष्टबुद्ध्यो लोकव्यवस्थाकारिणः पुरुषविशेषाः। *स्था॰ ५१८।*

कुलगरकालो– कुललकरकालः। *आव॰ ११३।*

कुलघरं– पितृगृहम्। *ज्ञाता॰ ११९। औप॰ ८९। बृह॰ २०७ अ। निशी॰ १९४ अ।*

कुलच्चिया– कुलगता। *व्यव॰ २४८।*

कुलजः– कुलपुत्रकः। *बृह॰ १९५ आ।*

कुलजुत्तीए– आत्मकुलौचित्येनेत्यर्थः। *व्यव॰ २२४ अ।*

कुलत्थ– एकत्र कुले तिष्ठिन्ति इति कुलस्थाः। धान्यविशेषः। *निर॰ २४।* चवलिकाकाराः चिपिटिका भवन्ति। *भग॰ २७४।* धान्यविशेषः। *भग॰ ८०२।* औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* कुलत्थाः-चपलकतुल्याश्चिपिटा भवन्ति। *जम्बू॰ १२४।* कुलत्थाः धान्यविशेषः। *दशवै॰ १९३।* चवलगसरिसा चिप्पिडया भवन्ति। *स्था॰ ३४४।* एकत्र कुले तिष्ठन्तीति कुलस्थाः। अन्यत्र कुलत्थाः धान्यविशेषाः। *ज्ञाता॰ ११०।*

कुलथेरा– कुलस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्थाका-रिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते। *स्था॰ ५१६।*

कुलधमा– कुलधमगा-ये कुले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते। *निर॰ १५।*

कुलधम्मे– कुलधर्म्मः-उग्रादिकुलाचारः। कुलं-चान्द्रादिक-मार्हतानां गच्छसमूहात्मकं तस्य धर्म्मः-सामाचारी। *स्था॰ ५१५।*

कुलपव्वए– कुलपर्वतः हिमाचलादि। *जम्बू॰ ४११।*

कुलपव्वया– क्षेत्रमर्यादाकारित्वेन कुलकल्पाः पर्वताः-कुलपर्वताः, कुलानि हि लोकानां मर्यादानिबन्धनानि भवन्ति इतीह तैरूपमा कृता। *सम॰ ६६।*

कुलपुत्तओ– शय्यातरः। *बृह॰ ३१०* अ। कुलपुत्रकः। *आव॰ ८१६।*

कुलपुत्तगो– कुलपुत्रकः। आ॰ ४२२।

कुलपुत्तय– कुलपुत्रकः। *उत्त॰ ५०।*

कुलमसी– कुलमषी-कुलमालिन्यहेतुः, तृतीयाधर्मद्वारस्य त्रयोविंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ४३।*

कुलरोग– कुलरोगः-कुलजन्यरोगः। *भग॰ १९७।*

कुलल– गृध्रं, शकुनिका वा। *उत्त॰ ४१०।* पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।* कुररः-मार्जारनामा पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ५११।* मार्जारः। *दशवै॰ २३७।* मज्जारो। *दशवै॰ १२६।*

कुलवे– कुडवः। *भग॰ ३१३।* कुलशिकाचतुर्थांशरूपो धान्य-मानः। *बृह॰ २३६* अ।

कुलसरिसं– श्रीमद्वणिजां रत्नवाणिज्यमिव। *ज्ञाता॰ २०५।*

कुला– कुलानि, नक्षत्राणि। *सूर्य॰ १११।* कुला-कुलानि-गृहाण्यामिषान्वेषणार्थिनो नित्यं येऽटन्ति ते, मार्जाराः। *सूत्र॰ ८००।*

कुलाण– मृद्भावनं। *निशी॰ १०९* अ। भाजनानि। नि *३४४* आ। असोगस्स पुत्तो। *निशी॰ २४३।*

कुलाणुरूवं– कुलोचितम्। *ज्ञाता॰ २०५।*

कुलारिया– कुलार्याः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

कुलालचक्क– दृष्टान्तविशेषः। *प्रज्ञा॰ ११।*

कुलालया– कुलानि-क्षत्रियादिगृहाणि तानि नित्यं पिण्ड-पातान्वेषिणां परतर्कुकाणामालयो येषां ते कुलालयाः, निन्द्यजीविकोपगताः। *सूत्र॰ ४००।*

कुलिंग– पिपीलिकादि। *भग॰ ७५४।* कुलिङ्गं-तापसादि-लिङ्गम्। *आव॰ १३४।* त्रीन्द्रियादि मर्दितः। *ओघ॰ १६७।*

कुलिंगच्छाए– पिपीलिकासदृशः। *भग॰ ७५४।*

कुलिंगाले– कुलस्य-स्वगोत्रस्याङ्गार इवाङ्गारो दूषकत्वातुप-तापकत्वाद्वेति। *स्था॰ ९८४।*

कुलिंगे– द्वीन्द्रियादिः। *ओघ॰ २२०।*

कुलिअ– कुलिकं, लघुतरं काष्ठं तृणादिच्छेदार्थं यत्क्षेत्रे वाह्यते तत्, मरुमण्डलादिप्रसिद्धम्। *अनुयो॰ ४८।* क्षेत्रस्यास्थ्यादिश-ल्योद्धरणे साधनविशेषः। *आव॰ ५५४।* कुलिकं, क्षेत्रविदारणं कृषिसाधनम्। *दशवै॰ ४०।*

कुलिज्जं– कुलसमवायं। *निशी॰ २९१* अ।

कुलिय– कुलिकं-कडणकृतं कुड्यम्। *सूत्र॰ ५८।* हलप्रकारः। *प्रश्न॰ ८।* अलविशेषः। *प्रश्न॰ २४।* कुंडं। *निशी॰ ८४* अ। कुलिकम्। *आचा॰ ३३।*

कुलिया– कुड्यम्। *बृह॰ १५९* अ।

कुलीकोस– कुटीक्रोशः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

कुलोवकुला– कुलोपकुलानि। *सूर्य॰ १११।*

कुल्माषा– उडदा, राजमाषा वा। *बृह॰ २६७* आ।

कुल्लग– नितम्बः। *निशी॰ ६२* अ। कोल्लाकसन्निवेशः। *आव॰ १७१।*

कुल्लूरिकापण– खाद्यकापणः। *आव॰ २७५।*

कुवणउ– लउडगो। *निशी॰ १३३* आ।

कुवणओ– लगुडः। *बृह॰ ६८* अ।

कुवणय– लगुडः। *बृह॰ १५३* अ।

कुवलय– नीलोत्पलं पद्मम्। *प्रश्न॰ ८४।* कुवलयं तदेव नीलम्। *जम्बू॰ १९५।*

कुवलयनं– वस्त्रादिमयं कुवलयनम्। *व्यव॰ २७८* आ।

कुविंदवल्ली– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कुविंदाः– तन्तुवायाः। *प्रज्ञा॰ ५८।*

कुविए– कुपितः-प्रवृद्धकोपोदयः। *भग॰ ३२२। ज्ञाता॰ ६८। जम्बू॰ २०२।*

कुवितसाला– कुपितशाला-तूल्यादिगृहोपस्करशाला। *प्रश्न॰ १२७।*

कुवितो– कुविओ। *निशी॰ २८६* अ।

कुविय– कुप्यं-विविधं गृहोपस्कारात्मकम्। *उत्त॰ ३६२।*

कुप्यः– गृहोपस्करः स्थालकच्चोलकादि। *उपा॰ ८।* गृहोपस्करः। *प्रश्न॰ ९२।* आसनशयनभण्डककरोटकलोहा-द्युपस्करजातम्। *आव॰ ८२६।* कुपितः-जातकोपोदयः। *भग॰ १६७।* कुपितम्-घटितम्। *दशवै॰ ११५।*

कुवियपमाणाइक्कमे– कुप्यप्रमाणातिक्रमः। *आव॰ ८२५।*

कुवेणी– कुवेणी रूढिगम्याम। *प्रश्न॰ ४८।*

कुव्व– कुर्व-इत्यागमप्रसिद्धो। *व्यव॰ १०७* आ।
कुव्वकारिया– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।
कुव्वासह– सुभरो। नि॰ *३३२* आ।
कुशः– तृणविशेषः। *जीवा॰ २६*। *प्रज्ञा॰ ३०*।
कुशलानुष्ठानं– ब्रह्मचर्यम्। *समः ९६*।
कुशवच्चकम्– दुर्बलालम्बनः। *आव॰ ५३४*।
कुशाग्रीयया– शेमुष्या। *आचा॰ ११९*।
कुशूल– कोष्ठम्। *बृह॰ १६८* आ।
कुष्माण्डी– विद्यावशेषः। *आव॰ ४११*।
कुसं– द्रुमगणविशेषः। *जीवा॰ १४५*।
कुसंतो– कुशान्तः-दर्भपर्यन्तः। *जीवा॰ २१०*।
कुस– दर्भानेव निर्मूलान्। *निर॰ २६*। मूलभूतः। *ज्ञाता॰ ११४*। कुशः-छिन्नमूलो दर्भः। *भग॰ २९०*। निर्मूलः। *विपा॰ ७२*। दर्भः। *ज्ञाता॰ ७९*। *औप॰ ९*। *भग॰ २७८*। *जम्बू॰ ९८*। *प्रश्न॰ १२८*। दर्भसदृशस्तृणविशेषः। *उत्त॰ ३३४*।
कुसग्गं– कुशाग्रं, कुशाग्रपुरम्, अपरनाम प्रसेनजिद् राजधानी। *आव॰ ६७०*।
कुसग्गजलबिन्दुसन्निहे– कुशाग्रजलबिन्दुसंन्निभः। *उत्त॰ ३२९*।
कुसट्टा– जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।
कुसणं– द्विदलम्। *आव॰ ८४४*। कुशनं सूपः, व्यञ्जनं वा। *उत्त॰ १६०*। मुद्गदाल्यादि तदुदकं वा। *बृह॰ २४६* आ। कुसिणं-व्यञ्जनम्। *आव॰ ३१४, ८५६*।
कुसणातिओ– कुसणादिकः भिश्रितः। *आव॰ ८५७*।
कुसत्तो– कुसत्त्वः-तुच्छघृतिबलः। *बृह॰ २४१* आ।
कुसथंवो– कुशस्तम्बः-कुशसमूहः। *आव॰ ६७१*।
कुसपडिमा– कुशपडिमा। *आव॰ ६३०, ६३५*।
कुसुमघरगं– कुसुमगृहकं-कुसुमप्रकरोपचितं गृहकम्। *जीवा॰ २००*।
कुसमयमोहमोहमइमोहियाणं– कुत्सितः समयः-सिद्धान्तो येषां ते कुसमयाः-कुतीर्थिकास्तेषां मोहः-पदार्थेष्वयथावबोधः कुसमयमोहस्तस्माद्यो मोहः-श्रोतृमनोमूढता तेन मतिर्मोहि-ता-मूढतां नीता येषां ते कुसमयमोहमोहमतिमोहिताः। *समः ११०*।
कुसल– कुशलं-मिलितानां चौराणां सुखदुःखादितद्वार्ता प्रश्नः। *प्रश्न॰ ५८*। कुशलः-आश्रवादीनां हेयोपादेयतास्वरूपवेदी। *भग॰ १३५*। पंडितो। *निशी॰ १४६* आ। कुशलः-सम्यक्क्रियापरिज्ञानवान्। *जीवा॰ १२२*। *जम्बू॰ ३८८*। आलोचितकारी। *भग॰ ६३१*। गीतार्थः। *आचा॰ ४३०*। कुशलः-सम्बाधनाकर्मणि साधुः। *औप॰ ६५*। कर्म्मक्षपण-समर्थः, प्रधानो वा। *निशी॰ २५* आ। कुशलः-विधिज्ञः। अवाप्तज्ञानदर्शनचारित्रो मिथ्यात्वद्वादशकषायोप-शमसद्भावात्। *आचा॰ १४७*। क्षीणघातिकर्म्मांशो विवि-क्षितः। *आचा॰ १४७*। आलोचितकारी। *अनुयो॰ १७७*। श्रीवर्द्धमानस्वामी। *आचा॰ २१६*। कुशाः द्रव्यतो दर्भादयो भावतः कर्माणि तान् कर्मरूपान् कुशान् लुनन्ति-समूलानुत्पाटयन्तीति तीर्थंकराः। *बृह॰ १९३* अ। स्ववितर्काच्चिकित्सादिप्रवीणाः। *ज्ञाता॰ १८०*। तीर्थकृत्। *आचा॰ २११*।
कुसलत्तणं– कुशलत्वं-सम्यग्ज्ञानम्। *आव॰ ३४६*। प्रावीण्यरूपम्। *उत्त॰ १४३*।
कुसलदिट्ठ– कुशलदृष्टं-तीर्थकरोपलब्धम्। *दशवै॰ १०६*।
कुसलाणुबंधि– मोक्षानुकूलम्। *चतु॰ ३*।
कुसलोदंत– कुशलवार्ता। *ज्ञाता॰ १४९*।
कुसल्लियं– कुशल्यितं-अन्तःप्रविष्टतोमरादिशल्यशरीरमिव सञ्जातदुष्टशल्यम्। *प्रश्न॰ १३४*।
कुसवरो– कुशवरः-अपान्तरालद्वीपः। *जीवा॰ ३६८*।
कुसा– स्थावरजीवविशेषः। *सूत्र॰ ३०७*।
कुसिणं– दधिदुग्धादि। *ओघ॰ १६३*।
कुसिया– कुसिताः मोचयितुमसमर्थाः। *व्यव॰ १५९* अ।
कुसी– कुशी। *आव॰ ३९७*।
कुसीमूलियं– कुशीमूलिका। *आव॰ ८२६*।
कुसील– कुशीलः-निग्रन्थस्य तृतीयो भेदः। *व्यव॰ ४०२* अ। निर्ग्रन्थस्य तृतीयभेदः। कुत्सितं शीलं-चरणमस्येति कुशीलः। *भग॰ ८९०*। कुशीलः-परतीर्थकः, पार्श्वस्थादिर्वा स्वयूथ्या अशीलगृहस्थः। *सूत्र॰ १५३*। कुत्सितशीलः कुशीलः-कालविनयादिभेदभिन्नानां ज्ञानदर्शनचारित्राचाराणां विराधक इत्यर्थः। *ज्ञाता॰ ११३*। कुत्सितं शीलमस्येति कुशीलः। *आव॰ ५१७*। कुशीलः। *निशी॰ १६८* अ। कुशीलः-असंविग्नः। *ओघ॰ १२०*।

कुसीलओ– कुशीलवः-विदूषकः। आ० ३९८।

कुसीलपडिसेवणया– कुशीलप्रतिषेवणता-कुशीलं-अब्रह्म तस्य प्रतिषेवणं, तद्भावः। *स्था०* २८१।

कुसीलपरिभासिए– सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे सप्तम-मध्ययनम्। *सम०* ३१।

कुसीलवे– कुशीलवानां-नटानां। *बृह०* १०३ आ।

कुसीलाणपरिभासा– सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे सप्तम-मध्यनम्। *उत्त०* ६१४।

कुसीलाणपरिहासा– कुशीलपरिभाषा, सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। *आव०* ६५१।

कुसुंबए– वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा०* ३६।

कुसुंभ– औषधिविशेषः। *प्रज्ञा०* ३३। लट्टकाणाः। यत्पुष्पै-र्वस्त्रादिरागः। *जम्बू०* १२४। कुसुम्भं-तैलस्य तृतीयभेदः। *आव०* ८५४। धान्यविशेषः। *भग०* ८०२।

कुसुंभग– कुसुम्भकः-लट्टा। धान्यविशेषः। *भग०* २७४। उदगविशेषः। *निशी०* ५२ आ।

कुसुंभरागः– प्रायोगिकरागः। आ० ३८७।

कुसुंभवणे– कुसुम्भवनम्। *भग०* ३६।

कुसुंभिओ– कुशुम्भिका, अतसी। *ओघ०* १४६।

कुसुण– कुशनं, दध्यादि। *पिण्ड०* १६५, ९०।

कुसुणियं– कुसुणितं-करम्बादिरूपतया कृतम्। *पिण्ड०* ९१।

कुसुमं– पाटलिपुत्राभिधं नगरम्। *आव०* २९४। कुसुमसमूहः। *जीवा०* २५५। कुसुमजातम्। *जीवा०* २५६। अविकसितः। *औप०* ५६।

कुसुमकुंडलं– धत्तूरकपुष्पसमानाकृतिकर्णाभरणं, दर्भकुसुमं वा। *अन्त०* ५।

कुसुमघरए– कुसुमप्रायवनस्पतिगृहम्। *ज्ञाता०* ९५।

कुसुमघरगा– कुसुमप्रकरोपचितानि गृहकाणि कुसुमगृहकाणि। *जम्बू०* ४५।

कुसुमट्टिया– कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति। उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा। *निशी०* ६४ अ।

कुसुमपुर– मायापिण्डोदाहरणे सिंहरथराजस्य नगरम्। *पिण्ड०* १३९। चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तराजधानी। *पिण्ड०* १४३। पाटलीपुत्रमभिधीयते। *निशी०* १३९ आ। *बृह०* २२७ अ। मुरुण्डस्य राजधानी। *बृह०* २५६ आ।

कुसुमरसं– कुसुमरसः, कुसुमासवः। *दशवै०* ७२।

कुसुमसंभवे– कुसुमसम्भवः, दशम मास नाम। *जम्बू०* ४९०। *सूर्य०* १५३।

कुसुमा– कुसुमसदृशत्वात् सौकुमार्यादिगुणयोगेन कुसुमाः। *जम्बू०* १३१।

कुसुमानि– पद्मलक्षणानि जातानि यत्र तत्कुसुमितम्। *स्था०* ५०२।

कुसुमासव– किञ्जल्कः। *औप०* ८।

कुसुमासवलोला– किञ्जल्कपानलम्पटाः। *जीवा०* १८८। मकरन्दलम्पटाः। *ज्ञाता०* २७। किञ्जल्कलम्पटाः। *ज्ञाता०* ५।

कुसुमिय– कुसुमितं-सञ्जातकुसुमम्। *भग०* ३७।

कुस्तुम्बकः– वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा०* ३७।

कुस्स– कुशो-यो वेधे प्रान्तः प्रवेश्यते। *बृह०* ३६ आ।

कुहंडयकुसुमं– कूष्माण्डिकाकुसुमं, पुष्पा(पुंस्क)लिकापुष्पम्। *प्रज्ञा०* ३६१।

कुहंडिया– मुद्रितः। *आव०* २२४।

कुहंडे– कुहण्डः-वाणमन्तरविशेषः। *प्रज्ञा०* ९५।

कुह– कुहः-वृक्षः। *दशवै०* १७।

कुहए– कुहकं, इन्द्रजालादि। *दशवै०* २५४।

कुहकं– कुहकं, परेषां विस्मयोत्पादनप्रयोगः। *प्रश्न०* १०९। कुतूहलम्। *उत्त०* ६५६।

कुहकपरा– क्षेपकरणम्। *निशी०* ७ आ।

कुहण– भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा०* ५७। एक एवालापको द्रष्टव्यः, तद्योनिकानामपरेषामभावादिति भावः। *सूत्र०* ३५२। कुहणविशेषः। *प्रज्ञा०* ३३। कुहणः-चिलातदेशवासी। *प्रश्न०* १४।

कुहणया- कुधनता-दारिद्र्यभावः। क्रोधनता। *प्रश्न०* १०९।

कुहणा– कुहणाः-भूमिस्फोटकाभिधानाः ते चाप्कायप्रभृतयः। *प्रज्ञा०* ३०। कुहणा-भूमिस्फोटाभिधानास्ते चाप्कायप्रभृ-तयः। *जीवा०* २६। कुहणा-भूमिस्फोटकविशेषः। सर्पछत्र-कादिः। *उत्त०* ६९२।

कुहर– पर्वतान्तरालम्। *ज्ञाता०* ६३। *जम्बू०* १४४।

कुहव्वए– कन्दविशेषः। *उत्त०* ६९१।

कुहा– कुत्ति पुहवि तीए धारिज्जति तेणं कुहा। *दशवै०* ६।

कुहाड– प्रहरणविशेषः। *निशी०* १०५ अ।

कुहित– कुथितः-कोथमुपनीतः। *ज्ञाता॰ ६७।*

कुहिय– कुथितः-पूतिभावमुपगतः। *जीवा॰ १०७।* कोथमुपगत, ईषद्दुर्गन्धः। *ज्ञाता॰ १२९।*

कुहुंडियाकुसुमं– कूष्माण्डीकुसुमं-पुष्पफलीकुसुमम्। *जीवा॰ १९१।*

कुहुक– कुतूहलम्। *उत्त॰ ३४७।*

कुहुण– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।* भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा॰ ५७।*

कुहेडविज्जा– कुहेटविद्या-अलीकाश्चर्यविधायिमन्त्रतन्त्रज्ञा-नात्मिका। *उत्त॰ ४७९।*

कूअ– कुतपः-तैलादिभाजनम्। *जम्बू॰ २६४।*

कूअणता– कूजनता-आर्त्तस्वरकरणम्। *स्था॰ १४९।*

कूइआ– कूर्चिका। *आव॰ १०२।*

कूइए– कूजितम्-कासितम्। *आव॰ ५७४।*

कूइगादि– कूचिकादि। *आव॰ १९८।*

कूच्च– कूर्चः-गूढकेशोन्मोचको वंशमयः। *उत्त॰ ४९३।*

कूजणया– मातिपितिभातिभगिणीपुत्तदुहित्तमरणादीविं(सु) महइमहंतेण सद्देण रोवइति कूजणया। *दशवै॰ १५।*

कूजन्त– अव्यक्तं शब्दायमानम्। *ज्ञाता॰ १६७।*

कूजित– विविधविहगभाषयाऽव्यक्तशब्दं सुरतसमयभाविनम्। *उत्त॰ ४२५।*

कूटप्रयोगकारी– प्रच्छन्नपापः। *आव॰ ५८९।*

कूड– कूटं-शिखरं, स्तूपिकाः अथवा कूटं-सत्त्वबन्धनस्था-नम्। *स्था॰ २०५।* कूटं-शिखरम्। *जीवा॰ २०५।* परञ्चनार्थं न्यूनाधिकभाषणम्। *प्रश्न॰ २७।* मानादीनामन्य-थाकरणम्। *प्रश्न॰ ५८।* कार्षापणतुलाप्रस्थादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिककरणम्। *सूत्र॰ ३३०।* कार्षापणतुलादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकरणम्। *ज्ञाता॰ ८०।* कार्षापणतुलाव्यवस्थापत्रा-दीनाम्यथाकरणम्। *ज्ञाता॰ २३८।* रत्नकूटादि। *अनुयो॰ १७३।* असत्भूतम्। *आव॰ ८२१।* कूटं-भ्रान्तिजनकद्रव्यम्। *जम्बू॰ १६१।* महच्छिखरम्। *जम्बू॰ ४९।* मृगग्रहणकारणं गर्त्तादि। *भग॰ ९३।* शिखरं, हस्त्यादिबन्धनस्थानं वा। *भग॰ २३८।* माडभागः। रजतमय उत्सेधः। *जम्बू॰ ४९।* भ्रान्तिजनकद्रव्यम्। *भग॰ ३०८।* कूटः-सिद्धायतनकूटप्रभृतिः। *प्रज्ञा॰ ७१।* माडभागः। *जीवा॰ २०४, ३६०।* कुटकेषु-अधोविस्तीर्णेषूपरि संकीर्णेषु वृत्तपर्वतेषु हस्त्या-दिबन्धनस्थानेषु वा। *ज्ञाता॰ ६७।* कूटं-प्रभूतप्राणीनां यातनाहेतुत्वं नरक इत्यर्थः। *उत्त॰ २४३।* पर्वतः। *नन्दी॰ २२८।* माडभागः। *राज॰ ६२।* पाषाणमय-मारणमहायन्त्रम्। *भग॰ ३७३।*

कूडकवडमवत्थुगं– कूटकपटावस्तुकं-कूटं-परवञ्चनार्थं न्यू-नाधिकभाषणं, कपटं-भाषाविपर्ययकरणं। अविद्यमानं वस्तु-अभिधेयोऽर्थो यत्र तत्। समानार्थत्वादेकमधर्मद्वारस्य षष्ठं नाम। *प्रश्न॰ २६।*

कूडग्गाहो– कूटेन जीवान्। गृह्णातीति कूटग्राहः। *विपा॰ ४८।*

कूडछेलियहत्थो– कूटछेलिकाहस्तः-या च कूटेन स्थाप्यते चित्रकादिग्रहणार्थं छेलिका-अजा सा, कूटं-मृगादिग्रहणयन्त्रं च छेलिका चेति कूटछेलिका सा हस्ते यस्य सः। *प्रश्न॰ १३।*

कूडतुलकूडमाणे– कूटतुलाकूटमानं, तुलया कुडवादिमानेन च यन्न्यूनाधिकत्वम्। *आव॰ ८२२।*

कूडत्तं– कूटत्वं – न्यूनाधिकत्वम्। *आव॰ ८२३।*

कूडपासए– कूटपाशकः। *आव॰ ४३५।*

कूडया– कूटता-तुलादीनामन्यथात्वम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य द्वाविंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ ४३।*

कूडरूवग– कूटरूपकः। *आव॰ ४२१।* कूटरूपम। *आव॰ २००।*

कूडलेहकरणं– कूटं-असद्भूतं लिख्यत इति लेखः, तस्य करणं-क्रिया कूटलेखक्रिया-कूटलेखकरणं अन्यमुद्राक्षर-बिम्बस्वरूपलेखकरणमित्यर्थः। *आव॰ ८२०।*

कूडव– मानविशेषः। *आव॰ ८२३।*

कूडवाही– कूटवाही, बलीवर्दः। *आव॰ ७९७।*

कूडसक्खिज्जं– कूटसाक्षित्वम्-उत्कोचमात्सर्याद्यभिभूतः प्रमाणीकृतः सन् कूटं वक्ति, अविधवाद्यनृतस्यात्रैवान्तर्भावो वेदितव्यः। *आव॰ ८२०।*

कूडसामलिपेढे– कूटाकारा-शिखराकारा शाल्मली तस्याः पीठं-कूटशाल्मलीपीठम्। *जम्बू॰ ३५५।*

कूडसामली– कूटाकाराशिखराकारा शाल्मली कूटशाल्मली। *स्था॰ ६९, ७९।*

कूडा– कूटाः-नन्दनवनकूटादिकाः। *प्रश्न॰ ९६।*

कूडागारं– धन्नागारं। *निशी॰ २६५अ।* कूटागारं-सशिखरभवनम्। *प्रश्न॰ ८२।* पव्वतसंठितं उवरुवरिभूमियाहिं वट्टमाणं कुडागारं, कूडेवागारं कूडागारं पर्वते कुट्टितमित्यर्थः। *निशी॰ ६९आ।* कूटाकारः। *जीवा॰ २६९।*

कूडागारसंठिओ– कूटाकारसंस्थितः-शिखराकारसंस्थितः। *जीवा॰ २७९।*

कूडागारसाला– कूटाकारेण-शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला। *भग॰ १६३।* कूटस्येव-पर्वतशिखरस्ये-वाकारो यस्याः सा तथा, सा चासौ शाला च। *विपा॰ ६३।* कस्मिंश्चिदुत्सवे कस्मिंश्चिन्नगरे बहिर्भागप्रदेशे महती देशि-कलोकवसनयोग्या शाला-गृहविशेषः। *निर॰ २२।* कूटस्येव-पर्वतशिखर-स्येवाकारो यस्याः सा कूटाकारा यस्या उपरि आच्छादनं शिखराकारं सा कूटाकारेति, कूटा-कारा चासौ शाला च कूटाकारशाला, यदि वा कूटाकारेण शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला। *राज॰ ५८।*

कूडाहच्चं– कूटस्येव-पाषाणमयमारणमहायन्त्रस्येवाहत्या-आहननं यत्र तत् कूटाहत्यम्। *भग॰ ६७०।* कूटे इव तथा-विधपाषाणसम्पुटादौ कालविलम्बाभावसाधर्म्यादाहात्या आहननं यत्र तत् कूटाहत्यम्। *भग॰ ३२३।*

कूणिए– श्रेणिकचेल्लणयोः पुत्रः। *निर॰ ४।* श्रेणिकराजपुत्रः। *ज्ञाता॰ ६।* चम्पानगर्या राजा। *१९।* चम्पायां राजा। *भग॰ ६२०।*

कूणिओ– कूणिकः-चम्पायां राजा। *भग॰ ३२०।* शिक्षायोग-दृष्टान्ते श्रेणिकपुत्रः, अपरनाम ओशोकचन्द्रः। *आव॰ ६७९। भग॰ ५५६।* परकृतमरणे दृष्टान्तः। *भग॰ ७९६।*

कूंपिअं– कूपिका, सन्निवेशः। महावीरस्वामिविहारभूमिः। *आव॰ २०७।*

कूबरं– युगन्धरम्। *जम्बू॰ २९१।*

कूयरा– कूत्सितं शिष्टजनजुगुप्सितं चरन्ति इति। कुचराः-उद्भ्रामिका वा। *बृह॰ ६४अ।*

कूर– भक्तं। *बृह॰ २३६अ।* ओदनविशेषः। *ओघ॰ १३३।* कूरः। *आव॰ ३५२, ६२४।* धान्यविशेषः। *आव॰ ३१४।* परिकथनायां दृष्टान्तः। *ओघ॰ ६९।*

कूरओडिया– कूरकोटिका-क्षिप्रचटिका। *आव॰ ६२२।*

कूरकम्मा– क्रूरकर्माः, क्रूराणि कार्माणि यस्य सः। *प्रश्न॰ १३।*

कूरगडुकप्राय– सीयकूरभोई अन्तपन्ताहारो। *भग॰ ७०५।*

कूरपुवगादि– कूरसिस्थादि, (देशीवचनं)। *आव॰ ३१५।*

कूरभायण– कूरभाजनः, ओदनभाजनः। *दशवै॰ ३८।*

कूरविहाणं– कूरविधानम्। *आव॰ ८५५।*

कूरिकड– क्रूरिकृतं, क्रूरं चित्तं क्रूरो वा परिजनो यस्यास्ति स क्रूरी, तेन कृतं-अनुष्ठितम्। तृतीयाधर्मद्वारस्य चतुर्थं नाम। *प्रश्न॰ ४३।*

कूर्मापुत्रः– नामविशेषः। *औप॰ ११७।* कूर्मापुत्रः। *प्रज्ञा॰ १०९।*

कूर्मोन्नता– मनुष्ययोनिभेदः। *आचा॰ ६७।*

कूलधमग– कूले स्थित्वा। *भग॰ ५१९।*

कूलवारओ– कूलवारकः विशालभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः। *आव॰ ४३७।*

कूलवाल– श्रमणविशेषः। *सूत्र॰१०३।*

कूलवालओ– कूलवालकः, विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः। *आव॰ ४३७।*

कूलवालक– गुरूणामेव प्रत्यनीकः। *बृह॰ २१४अ।* विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६७।* शिलाक्षेपकः श्रमणः। *उत्त॰ ४४।* आचार्यादिप्रतिकूलत्वे निदर्शनीभूतः क्षुल्लकः। *उत्त॰ ५४९।*

कूलवालगो– कूलवालकः-शिलाऽक्षेपकः श्रमणः। *आव॰ ३८५।*

कूलवालो– श्रमणोऽविनीतः। *बृह॰ ५आ।*

कूव– कूपः। *आव॰ ५८१। प्रश्न॰ ८।* कूजकं-व्यावर्त्त-कबलम्। *ज्ञाता॰ २२१।* अन्धकूपादिः। *प्रश्न॰ ५६।* कूपः-रोमरन्ध्रः। *भग॰ ४६०।* कुतुपः। *ज्ञाता॰ ५७।*

कूवए– अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य एकादशमध्ययनम्। *अन्त॰ ३।*

कूवणय– कूपनयः-कुमारायां कूम्भकारः। *आव॰ २०२।*

कूवति– कूजति-शब्दं करोति। *आव॰ ८१९।*

कूवय– कूपकः, स्तम्भविशेषः। *औप॰ ४८।*

कूवयट्ठाणं– कूपकस्थानम्। *निशी॰ ४७अ।*

कूवर– कूबरं-तुण्डम्। *ज्ञाता॰ १५९।*

कूविए– चोरगवेषकः। *ज्ञाता॰ ७९।* कूपिका। *ज्ञाता॰ ७९।*

कूविय– कूजकः, व्याहारकारी, गवां व्यावर्त्तक इत्यर्थः। *पिण्ड॰ ४७।*

कूवियबल– निवर्त्तकसैन्यानि। *ज्ञाता॰ २३८।*

कूष्माण्डः– व्यन्तरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५१।*

कूष्माण्डा– पिशाचविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

कूष्माण्डी– वल्लीविशेषः। *जीवा॰ २६। प्रज्ञा॰ ३०।*

कूसेह– (देशी०) गवेषयत। *बृह॰ १२० अ।*

कूहंड– कृष्माण्डः, व्यन्तरनिकायामुपरिवर्त्तिनो जातिविशेषः। *प्रश्न॰ ६९।*

कृकलासः– अण्डविशेषः। *दशवै॰ २३०।*

कृतकुलः– कृतकुरुकुचः। *व्यव॰ १६१ आ।*

कृतनिष्ठितता– तन्दुलानां वपनमारभ्य यावद् वारद्वयं कण्डनं तावत् कृतत्वम्, तेषाञ्च तृतीयवारं तु कण्डनं निष्ठितत्वम्। *पिण्ड॰ ६६।*

कृतप्रतिकृतिकः– कृते-उपकृते प्रतिकृतं-प्रत्युपकारः तद् यस्यास्ति स। *स्था॰ २८५।*

कृतमालिक– यक्षविशेषः। *स्था॰ २५८।*

कृतमाल्यक– तमिस्रागुहायाः अधिष्ठायकदेवः। *स्था॰ ७१।*

कृतवीर्यः– कार्त्तवीर्यपिता क्षत्रियः। *सूत्र॰ १७०, १७८।* कार्त्तवीर्यपिता। *सूत्र॰ २६५।*

कृतिकर्म्म– द्वादशावर्त्तवन्दनकम्। *स्था॰ ४०८।* कर्मणोऽ–
पनयनकारकमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायविषयमवनामादिरूप-मिति। *आव॰ ९८।*

कृपणादि– द्रव्यशस्त्रम्। *आचा॰ १७४।*

कृमिः– पृथिव्यावश्रितो जीवविशेषः। कचवरनिश्रितो जीव। *आचा॰ १७०।*

कृमिराग– लोभस्य लक्षणसूचकः। *आचा॰ १७०। जीवा॰ १९१।*

कृमिरागपट्टसूत्रं–
मनुष्यादिशोणितोत्पन्नकृमिलालसमुत्पन्नम्। *अनुयो॰ ३५।*

कृषिवलः– कर्षकः। *आव॰ ८१५।*

कृष्णः– केवलसम्यग्दर्शनी। *आव॰ ८०५।* साधारणवनस्पति-विशेषः। *आचा॰ ५७।* साधारणवनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा॰ २७।* कृष्णकं, साधारणवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४०।*

कृष्णपाक्षिकः– संसारापरीत्तः। *जीवा॰ ४४६।*

कृष्णराज्ञी– ईशानदेवेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जीवा॰ ३६५।*

कृष्णसारः– नेत्रमध्यवर्त्तिनी कनीनिका। *उत्त॰ ६५२।*

कृष्णसुदेवः– द्वारिकाधिपतिः। प्रक्ष॰ ८८।

केइ– काश्चिन्न सर्वा इत्यर्थः। *ज्ञाता॰ २३१।*

केइत्थ– कांश्चिदत्र। *ज्ञाता॰ २३१।*

केउ– केतु-मेघवृष्ट्या निष्पद्यते तत्। प्रासादगृहादिकम्। *बृह॰ १३८।* वर्षावारिनिष्पाद्यं क्षेत्रम्। *बृह॰ ५०।*

केउते– पातालकलशविशेषः। *स्था॰ २२६।*

केउमती– धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य अष्टादशमध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२।*

केऊ– केतुः, जलकेत्वादिकः। *औप॰ ५२।* ज्योतिष्कविशेषः। *प्रश्न॰ ९५।*

केऊर– पातालकलशविशेषः। *स्था॰ ४८०।* केयूरं-अङ्गदम्। *जम्बू॰ १०६।*

केकई– अष्टमवासुदेवस्य माता। *सम॰ १५२।*

केकय– चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

केकयअद्धं– केकयार्द्धं, जनपदार्द्धविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।*

केकारवं– केकायितं-मयूराणां शब्दः। *ज्ञाता॰ ९६।*

केगमई– कैकेयी-लक्ष्मणवासुदेवमाता। *आव॰ १६२।*

केज्जगं– क्रय्यम्। *आव॰ ६७७।*

केतइ– वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

केतकी– वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१।* वलयविशेषः। *आचा॰ ३०।* सुरभिकुसुमविशेषः। *उत्त॰ ६५४। जीवा॰ १९१।*

केतनं– सामान्येन। *स्था॰ २१८।* संकेतः। *व्यव॰ १२५।*

केतु– आकाशपतितोदकनिष्पाद्यं क्षेत्रम्। *आव॰ ८२६।* ध्वजः। *जीवा॰ १८८।*

केतुकरे– चिह्नकरः अद्भूतकारित्वादिति। *स्था॰ ४६३।*

केतुमती– किन्नरेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४। स्था॰ २०४।*

केदारः– वप्रः, जलस्थानम्। *जीवा॰ १२३।*

केमहालए– किंमहालयः-कियान्। *जम्बू॰ ४५०।* किं महत्त्वं यस्यासौ किंमहत्त्वः। *भग॰ १५१।*

केमहालय– किंमहान्, कियत्प्रमाणमहत्त्वम्। *जीवा॰ १३८।*

केमहालिका– किम्महती। *जीवा॰ ३७२।*

केमहालिया– किम्महती। *सम॰ १४२।* कियन्महतीकिम्म-हत्त्वोपेता-कियती वा। *अनुयो॰ १६३।*

केमहिड्ढिए– केन रूपेण महर्द्धिकः। किंरूपा वा महर्द्धिरस्येति किंमहर्द्धिकः। कियन्महर्द्धिकः। *भग॰ १५४।*

केय– केतनं, केतः-चिह्नमङ्गुष्ठमुष्टिग्रन्थिगृहादिकम्। *स्था॰ ४९९।* केतं-चिह्नम। *आव॰ ८४१।* केतः-चिह्नम्। *भग॰ २९७।* केया-रज्जुः। *दशवै॰ १०६।* रज्जु। *निशी॰ २०।*

केयइ– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

केयइअद्धे– केकयीनामार्धं-अर्धमात्रमार्यत्वम्। *राज॰ ११३।*

केयइपुड– गन्धद्रव्यविशेषः। पुष्पजातिविशेषः। *ज्ञाता॰ २३२।*

केयण– कृतकम्। *निशी॰ ३५१ अ।* श्रृङ्गमयधनुर्मध्ये काष्ठमयमुष्ठिकात्मकम्। *उत्त॰ ३११।* केतनं-मत्स्यबन्धनम्। *सूत्र॰ ८२।*

केयकंदली– कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।*

केयति– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३।*

केयाघडिया– रज्जुबद्धघटिकाहस्तः सन्। विहायसि व्रजेदि-त्याद्यर्थप्रतिपादनार्थः, त्रयोदशशते नवम उद्देशकः। *भग॰ ५९६।* रज्जुप्रान्तबद्धघटिका। *भग॰ ६२७।*

केयार– अवन्तीजनपदे कूपविशेषः। *व्यव॰ १८ अ।* *निशी॰ ३५१ अ।*

केयावंती– केआवन्ति-केचन। *आचा॰ १८५।*

केयूरं– आभरणविशेषः। *आव॰ १८२।* भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९।* बाह्याभरणविशेषावित्यर्थः। *स्था॰ ४२१।*

केयूवो– केयूपः, मेरोर्दक्षिणस्यां पातालकलशः। *जीवा॰ ३०६।*

केलास– कैलासः-मेरुः। *निशी॰ ९९ अ।* कैलाशः राहोः कृष्णपुद्गलः। *सूर्य॰ २८७।* साकेतनगरे गाथापति-विशेषः। *अन्त॰ २३।* अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य सप्तमम-ध्ययनम्। *अन्त॰ १८।* *स्था॰ २२६।* कैलाशः, नन्दीश्वर-द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवविशेषः। *जीवा॰ ३६५।* तृतीयोऽनुवे-लन्धरनागराजः, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च। *जीवा॰ ३१३।*

केलासभवणं– कैलाशभवनं कैलासपर्वतरूपाश्रयः। *पिण्ड॰ १३२।*

केलाससमा– कैलाससमा-कैलासपर्वततुल्या। *उत्त॰ ३१६।*

केलि– परिहासः। *बृह॰ २६९ आ।* क्रीडा। *जीवा॰ १७३।* *प्रज्ञा॰ ९६, २५८।* केलिः, नर्म। *औप॰ ५२।*

केवइका– द्रुम्माः। *बृह॰ १३९ आ।*

केवइकालं– कियत्कालम्। *भग॰ १९।*

केवइकालस्स– कियता कालेन। *जीवा॰ १४१।*

केवगादि– द्रव्यविशेषः। *निशी॰ ४४ अ।*

केवच्चिरं– कियच्चिरं, कियन्तं कालं यावत्। *जीवा॰ ६७।* कियच्चिरं-कियत्कालम्। *भग॰ ११६।*

केवडिया– रूप्यकाः। *बृह॰ २९७ आ।*

केवलं– शुद्धम्। *आव॰ ७६९।* *स्था॰ ४६।* अकलङ्कम्। *उत्त॰ १८८।* सम्पूर्णज्ञेयविषयत्वात् सम्पूर्णम्। *अनुयो॰ २।* परिपूर्णं, विशुद्धं वा। *प्रश्न॰ १३५।* सकलजगद् भाविसमस्त-वस्तुसामान्यपरिच्छेदरूपम्। *प्रज्ञा॰ ५२७।* असहायं, मत्यादिज्ञाननिरपेक्षं, शुद्धं, तदावरणकर्ममलकलङ्काङ्करहितं, सकलं, तत्प्रथमतयैव अशेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेः, असाधारणं, अनन्यसदृशं, ज्ञेयानन्तत्वादनन्तं, यथावस्थि-ताशेषभूतभवद्भाविभावस्व भावावभासि वा। *आव॰ ८।* अद्वितीयम्। *आव॰ ७६०।* असहायं, मत्यादिनिरपेक्षत्वाद-कलङ्क वा आवरणमलाभावात, सकलं वा तत्प्रथमतयैवा-शेषतदावरणाभावतः। सम्पूर्णोत्पत्तेरसाधारणं वा, अनन्य-सदृशत्वादनन्तं वा। *स्था॰ ४७।* असहायं मत्यादि-ज्ञाननिरपेक्षत्वात् शुद्धं वा, आवरणमलकलङ्करहितत्वात्, सकलं वा तत्प्रथमतयैवाशेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेः असाधारणं वा, अनन्यसदृशत्वात् अनन्तं वा। *स्था॰ ३४८।* केवलः-शुद्धः, अन्यपदासंसृष्टः। *दशवै॰ १२६।* परिपूर्णः। *ज्ञाता॰ १८०।* *भग॰ १५५।* असहायं, शुद्धं, परिपूर्णं, असाधारणं, अनन्तं वा। *भग॰ ६६।* सुद्धो अण्णेण सह असंजुत्तो। *दशवै॰ ५४।*

केवलकप्प– केवलकल्पं, केवलं-केवलज्ञानं तत्कल्पं परि-पूर्णतया तत्सदृशं परिपूर्णमित्यर्थः। *प्रज्ञा॰ ६००।* परिपूर्णम्। *जीवा॰ १०९।* संपूर्णम्। *बृह॰ ५२ आ।* केवलज्ञान सदृशः संपूर्णपर्यायो वा केवलकल्प इति। *भग॰ १५५।* केवलः-परिपूर्णः स चासौ स्वकार्यसामर्थ्यात् कल्पश्च केवलज्ञामिव वा परिपूर्णतयेति, केवलकल्पः

समयभाषया परिपूर्णः। *स्था॰ ६१*। केवलः-परिपूर्णः स चासौ कल्पश्च स्वकार्यसमर्थ इति केवलकल्पः। *ज्ञाता॰ १८०*।

केवलकप्पा– केवलकल्पा-परिपूर्णा, परिपूर्णप्राया वा। *स्था॰ १६१*।

केवलदंसणं– केवलमेव दर्शनं-सकलजगद् भाविवस्तुसामान्य-परिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनम्। *जीवा॰ १८*।

केवलदंसणि– केवलं-सकलदृश्यविषयत्वेन परिपूर्णं दर्शनं केवलदर्शनी-तदावरणक्षयाविर्भूततल्लब्धिमतो जीवस्य सर्वद्र-व्येषु मूर्तामूर्तेषु सर्वपर्यायेषु च भवतीति। *अनुयो॰ २२०*।

केवलनाणं– केवलज्ञानं-पञ्चमकं ज्ञानं, अथवाऽनन्तराभिहि-तज्ञानसारूप्यप्रदर्शक एव। *आव॰ ८*। पञ्चमं ज्ञानम्। *स्था॰ ३३२*।

केवलवेयसो– केवलवेदसः-अवगततत्त्वः। *जीवा॰ २५६*।

केवलि– केवली-श्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानी। *स्था॰ ९८*।

केवलिआराहणा– केवलिनां-श्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानि-नामियं केवलिकी सा चासावाराधना चेति केवलिकाराधना। *स्था॰ ९८*।

केवलिइए– रूप्यकाः। *बृह॰ ९३* आ।

केवलिउवासग– केवलिनमुपास्ते यः श्रवणानाकाङक्षी तद् उपासनमात्रपरः सन्नसौ केवल्युपासकः। *भग॰ २२२*।

केवलिए– केवलं-अद्वितीयं केवलिप्रणीतत्वाद् वा कैवलिकम्। *ज्ञाता॰ ५१*।

केवलिकंमंसे– केवलिनः 'कम्मंस'त्ति कार्मग्रन्थिकपरिभाष-याऽशशब्दस्य सत्पर्यायत्वात् सत्कर्माणि केवलिसत्कर्माणि भवोपग्राहीणि। *उत्त॰ ५८९*।

केवलिकेवली– केवलिनस्तृतीयो भेदः *निशी॰ १३९*।

केवलिपन्नतो– केवलिप्रज्ञप्तः-सर्वज्ञदेशितः। *प्रज्ञा॰ ३९९*।

केवलिमरण– केवलिमरणम्। *समः ३३*। ये केवलिनः-उत्पन्नकेवलाः सकलकर्म्मपुद्गलपरिशाटतो म्रियन्ते तज्ज्ञे-यमिति। मरणस्य द्वादशो भेदः। *उत्त॰ २३४*।

केवलिय– केवलमद्वितीयं नापरमित्थम्भूतम्। *आव॰ ७६०*। कैवलिकं-परिपूर्णम्। *आव॰ ३२९*। केवलस्य भावः कैवल्यं-घातिकर्मवियोगः। *आव॰ ७३*।

केवलिसमुग्घाय– केवलिनि अन्तर्मुहूर्त्तभाविपरमपदे समुद्घातः केवलिसमुद्घातः। *जीवा॰ १७*।

केवलिसावग– जिनस्य समीपे यः श्रवणार्थी सन् शृणोति तद्वाक्यान्यसौ केवलिश्रावकः। *भग॰ २२२*।

केवली– सर्वज्ञः। *भग॰ ६७*। चतुर्दशशतके दशम उद्देशः। *भग॰ ६३०*।

केवलीणठाणं– केवलिनां स्थानं, केवलिनामहिंसायां व्यवस्थितत्वात्। अहिंसायाः षट्त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*।

केशर– पद्मपक्ष्मम्। *भग॰ १२*। *जम्बू॰ १३८*।

केशव– कृष्णः। *आचा॰ ३९०*।

केशि– उदायनभागिनेयः। *स्था॰ ४३१*।

केस– केशाः-शिरोजाः। *समः ६१*। शिरसिजाः। *उत्त॰ ३३८*। कः-अज्ञातकुलशीलसहजत्वादनिर्द्दिष्टनामकः सकारः प्राकृतशैलीभवः। *जम्बू॰ २०२*।

केसभूमी– केशभूमिः, केशोत्पत्तिस्थानभूता मस्तकत्वक्। *जीवा॰ २७३*।

केसमंसु– श्मश्रूणि, कूर्चकेशाः। *भग॰ ८८*।

केसर– किञ्जल्कः। *जम्बू॰ ४२*। *आचा॰ ८१*। वर्णविशेषः। *आचा॰ २९*। केशरम्। *आव॰ ४१९, ६३५*। *ज्ञाता॰ ९८*। केशरः-गन्धः। *आव॰ २७७*। केसरोपलक्षितः। *जीवा॰ १७६*। केसर-प्रधानम्। *जीवा॰ १२३*। काम्पील्यनगरे उद्यानविशेषः। *उत्त॰ ४३८*।

केसरचामरवाल– सिंहस्कन्धचमरपुच्छकेशाः। *ज्ञाता॰ २२२*।

केसरपाली– केसरपालिः-स्कन्धकेशश्रेणि। *जम्बू॰ ५३०*।

केसरा– केसराणिः-कर्णिकायाः परितोऽवयवाः। *जम्बू॰ २८४*।

केसरा– केसराणिः-कर्णिकायाः परितोऽवयवाः। *जम्बू॰ २८४*।

केसरि– द्रहविशेषः। *स्था॰ ७३*।

केसरिका– पात्रमुखवस्त्रिका। *ओघ॰ २१२*।

केसरिद्दहो– केसरद्रहो नाम द्रहः। *जम्बू॰ ३७७*।

केसरिया– केशरिका-प्रमार्जनार्थं चीवरणखण्डम्। *भग॰ ११३*। *औप॰ ९५*।

केसरी– चीवरखण्डं प्रमार्जनार्थम्। *ज्ञाता॰ ११०*। प्रतिवासु-

देवनाम। *समः १५४।*

केसव– केशवः-वासुदेवः। *आ० १६६। ज्ञाता० २१३। जीवा० १२९।* वसुदेवलघुसुतः वासुदेवः। *उत्त० ३८९।* अपरविदेहे जीर्णश्रेष्ठिपुत्रः, श्रेयांसजीवः। ऋषभपूर्वभववैद्य-पुत्रस्य मित्रम्। *आव० १४६।*

केसवाणिज्ज– केशवाणिज्यम्। दासीर्गृहीत्वाऽन्यत्र विक्रीणाति। *आव० ८२९।*

केसहत्थ– केशहस्तो-धम्मिल्लः *भग० ४६८।*

केसा– केशाः-शिरोजाः। *प्रश्न० ६०।*

केसि– कीदृशी स्त्री। *अनुयो० १३।*

केसिआ– केशा विद्यन्ते यस्याः सा केशिका। *सूत्र० ११६।*

केसिगोयमिज्जं– केशिगौतमीयं, उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशति-तममध्ययनम्। *उत्त० ९।* केशिगौतमीयं-उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशतितममध्ययनम्। *उत्त० ४९७।*

केसिसामि– केशिस्वामी। *भग० १३८।* केशिनामा आचार्यः। *भग० ५४८।*

केसी– पार्श्वपत्यः श्रमणः। *राज० ११८। निर० १, ४०।* केशी-विगतिद्वारे उदायनस्य भागिनेयः। *आव० ५७३।* केश्यभिधानः। *भग० ६१८।*

केसुअ– किंशुकं-पलाशपुष्पम्। *जम्बू० २१२।*

कैदारकः– मङ्खः। *पिण्ड० ९६।*

कोंकण– देशविशेषः। *आचा० ५। व्यव० १६८ अ। निशी० ६३ अ। निशी० ७९ आ।*

कोंकणकसाधुः– अपध्यानाचरिते साधुः। *आव० ८३०।*

कोंकणग– म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४। प्रज्ञा० ५५।* कोङ्कणकः-देशविशेषः। *आव० ९३।* प्राणातिपातदोषविषये उदाहरणम्। *आव० ८१८।*

कोंकणगखमणओ– कोङ्कणकक्षपकः-मनोदण्डे उदाहरणम्। *आव० ५७७।*

कोंकणगदेसो– कोङ्कणदेशः-कर्मसिद्धोदाहरणे देशविशेषः। *आव० ४०८।*

कोंकणगसावगो– कोङ्कणकश्रावकः-गुणोदाहरणे श्राद्धः। *आव० ८२१।*

कोंकारव– कोङ्कारवः, पुरद्वारस्योद् घाट्यमानस्याव्यक्तोऽयं शब्दः। *दशवै० ४८।*

कोंच– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५।* क्रौञ्चः-पक्षिविशेषः। *आव० ३६९।* क्रोञ्चः, लोमपक्षिविशेषः। *जीवा० ४१।* चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४।*

कोंचवरो– क्रौञ्चवरः, अपान्तरालद्वीपः। *जीवा० ३६८।*

कोंचवीरग– पेटासदृशं जलयानम्। *बृह० ३२ अ।*

कोंचस्सरा– क्रौञ्चस्वरा-विद्युत्कुमाराणां घण्टा। *जम्बू० ४०७।* क्रोञ्चस्वरः, क्रोञ्चस्येव स्वरो यस्य सः। *जीवा० २०७।*

कोंचा– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा० ४९।*

कोंचावली– क्रोञ्चावलिः। *जीवा० १९१।*

कोंचासणं– क्रौञ्चासनं, यस्यासनस्याधोभागे क्रोञ्चो व्यवस्थितः सः। *जीवा० २००।*

कोंची– द्रविडदेशे नगरी। *बृह० २२७ अ।*

कोंटलवेंटलं– कार्मणवशीकरणादि। *आव० १९३।*

कोंडग– क्षत्रियविशेषः। *निशी० १२ अ।*

कोंडलमेंढ– कुण्डलमेंढ-भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेषयात्रा-स्थानम्। *बृह० १३६ अ।* भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेषः। *बृह० १३६ अ।*

कोंडिण्णो– कौण्डिन्य-तापसविशेषः। *आव० २८७।*

कोंडियायण– चैत्यविशेषः। *भग० ६७५।*

कोंतियं– कौन्तिकम्-मधुविशेषः। *आव० ८५४।* महुस्स पढमो भेओ। *निशी० १९६ आ।*

कोंति– पाण्डुराज्ञो राज्ञी। *ज्ञाता० २१३।*

कोअगडं– पार्श्वजिनस्य प्रथमपारणकस्थानम्। *आव० १४६।*

कोआसिअ– कोआसिते-विकसिते। *जम्बू० ११३।*

कोआसिय– पद्मवद्विकसितम्। *औप० १७।*

कोइल– कोकिल-अन्यपुष्टः। *उत्त० ६५३।*

कोइलच्छद– कोकिलच्छदः-तैलकण्टकः। *उत्त० ६५३।*

कोइलच्छदकुसुमं– कोकिलच्छदकुसुमं-कोकिलच्छदः-तैलकण्टकः, तस्य कुसुमम् । *प्रज्ञा० ३६०।*

कोइला– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा० ४९।* कोकिला-परभृत्। *प्रश्न० ३७।*

कोइल्लं– कोल्लेरं-नित्यवासविषये सङ्गमस्थविरदृष्टान्ते नगरम्। *आव० ५३६।*

कोउअ– कौतुकं-रक्षा। *जम्बू० १८९।* अलङ्कारविशेषः। *आव० १८२।* मषीपुण्ड्रादि। *उपा० ४४।*

कोउगं– सौभाग्यादिनिमित्तं परेषां स्नपनादि। *औप० १०६।* सौभाग्याद्यर्थं स्नपनम्। *प्रज्ञा० ४०६।*

अवतारणकादि। *सूत्र० ३२५*। रक्षादिकम्। *प्रश्न० ३९*। कौतुकं-रक्षादि। *आव० १३०*। कौतुकं-समवसरणम्। *बृह० १९४* अ। मङ्गलकर्म। *उत्त० ७१०*।

कोउगामिगा– कौतुकात् मृगा इव मृगा। *उत्त० ५०१*।

कोउतं– कौतुकं-उत्सवः। *आव० ४३३*।

कोउय– कौतुकं-रक्षाविधानादि। *भग० ५४५*। ललाटस्य मुशलस्पर्शनादीनि। *उत्त० ४९०*। कौतुकानि-मषीपुण्ड्रा-दानि। *निर० ७*। कौतुकं-आश्चर्यम्। *व्यव० १६३* अ। मषीतिलकादिकम्। *भग० १३७*। मषीपुण्ड्रादि। *भग० ३१८*। सौभाग्याद्यर्थस्नपनकम्। *भग० ५१*।

कोउयकरण– कौतुककरणं-सौभाग्यादिनिमित्तं परस्नपनका-दिकरणम्। *स्था० २७५*।

कोऊहल– कौतुकं-अपत्याद्यर्थ स्नपनादि। *उत्त० ४७९*।

कोऊहलपडिया– को१हलप्रतिज्ञया-कौतुकेणेत्यर्थः। *निशी० १८४* अ।

कोऊहल्ल– कुतूहलं, नटादिषु कौतुकम्। *दशवै० २६७*। कौतूहलम्। *आव० ४१६*।

कोऊहल्लिलो– कुतूहलवान्। *ओघ० ९८*।

कोकंतिय– कोकन्तिकः-लोमटकः, यो रात्रौ कौ कौ एवं रौति। *प्रश्न० ७*। लोमटिकः, सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा० ३८*। काकन्तिका-लोमटका ये रात्रौ को को इत्येवं रवन्ति। *जम्बू० १२४*। श्रृगालाकृतिर्लोमटको रात्रौ को को इत्येवं रारटीति। *आचा० ३३८*।

कोकंतिया– सनखपदचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*। कोक-न्तिकाः-लुङ्कडिकाः। *जीवा० २८२*। लोमटकाः। *ज्ञाता० ७०*।

कोकणदे– जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

कोकासवड्ढई– कोकाशवर्द्धकी-शिल्पकर्मविषये दृष्टान्तः। *आव० ४०९*।

कोकासिअ– कोकासिते-विकसिते। *जम्बू० २३६*।

कोकासियं– कोकासितं-पद्मवद्विकसित्। *जीवा० २७३*। विकसितम्। *प्रश्न० ८२*।

कोकिला– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा० ४१*।

कोक्कंतिए– कोकंतिया-लुङ्कडी। *प्रज्ञा० २५४*।

कोक्कासो– कोकाशः-शिल्पेनार्थोपार्जने कोकाशः। *दशवै० १०७*। नामविशेषः। यन्त्रमयकापोतकारकः। *व्यव० १२७*।

कोक्कइय– भाण्डा भाण्डप्राया वा। *औप० ६९*। कौकुच्यम्। चेष्टाविशेषः। *उत्त० ७०९*।

कोच्चितो– शैक्षकः। *व्यव० १४७* अ।

कोच्छा– कुत्सा-शिवभूत्यादयः। *स्था० ३९०*।

कोच्छुभो– मणी। *निशी० ८१* आ।

कोज्जय– कुब्जकं, कुबो इति नाम्ना वृक्षविशेषः। *जम्बू० १९२*।

कोंटलय– कौटलं ज्योतिषं निमित्तं वा। *ओघ० १४९*।

कोटा– ग्रीवा। *प्रश्न० ५६*।

कोटिंबो– उडवो। *निशी० ७७* आ।

कोटिक– गणविशेषः। *आचा० ८१*। *दशवै० २४२*।

कोटिकादिः– गणविशेषः। *प्रश्न० १२६*।

कोटिमं– उपरिबद्धभूमिकं गृहम्। *व्यव० १०७* अ। *उत्त० ७०६*।

कोट्टंब– कौट्टम्बानि-गौडदेशोद्भवानि। *व्यव० २०४* अ।

कोट्ट– जं अडविमज्झे भिल्लपुलिंदचाउवण्णजणवयमिस्सं दुग्गं वसति वणिया च जत्थ ववहरंति तं कोट्टं भन्नति। *निशी० २१* अ। प्राकारः। *उत्त० ६०५*। *ओघ० २१०*। अटव्यां चतुर्वर्णजनपदयुतं भिल्लदुर्गम्। *बृह० १०५* अ। प्राकारः। *प्रश्न० १७*।

कोट्टकिरियं– कुट्टनक्रिया-रौद्ररुपा चण्डिका, महिषकुट्टनक्रि-यावतीमित्यर्थः। *भग० १६४*। तत्कुट्टनपरा कोट्टक्रिया। *अनुयो० २६*।

कोट्टगं– जत्थ लोगो अडवीए पउरफलाए गंतुं फलाइं सोसेति तं कोट्टगं भण्णति। *निशी० १२८* अ। कोट्टकं-पुलिं-दपल्ली। *बृह० १६५* आ। गन्त्रीपोट्टकलादिभिरानीय नग-रादौ विक्रीणाति। *बृह० १४७* आ। लोकः प्रचुरफलाया-मटव्यां गत्वा फलानि यावत्पर्याप्तं गृहीत्वा यत्र गत्वा शोषयति, पश्चाद् गन्त्रीपोट्टलकादिभिरानीय नगरादौ विक्रीणाति तत्। *बृह० २९०* अ।

कोट्टणि– कोट्टन्यः-याः कोट्टग्रहणाय प्रतिकोट्टभित्तय उत्थाप्यन्ते ताः। *जम्बू० २०९*।

कोट्टपाल– नगरं रक्खति जो सो नगररक्खिओ कोट्टपालो। *निशी० १९५* अ।

कोट्टबलिकरण– कोट्टाय-प्राकाराय बलिकरणम्। कोट्टाक्रीडा तेन बलिकरणं चन्दिकादेः पुरतो बस्तादेरिव

उपहारविधानम्। *प्रश्न॰ १४।*

कोट्टरं– छिद्रम्। *निशी॰ १६१* आ।

कोट्टवीर– कोट्टवीरः- शिवभूतेर्लघुशिष्यः। *उत्त॰ १८०।*

कोट्टा– कोट्टाः-क्रीडाः। *प्रश्न॰ १७।*

कोट्टागा– काष्ठतक्षकाः, वर्द्धकिनः। *आचा॰ ३२७।*

कोट्टिंतिय– कुट्टयन्तिका तिलादीनां चूर्णनिकारिका। *ज्ञाता॰ ११७।*

कोट्टिंबा– गोभक्तदानस्थानम्। *बृह॰ १३३* अ।

कोट्टिंवे– जत्थ गोभत्तं दिज्जति। *निशी॰ ४२* अ। उड्डप। *निशी॰ ४५* अ।

कोट्टिमं– कुट्टिमम्। *आव॰ ५५०।*

कोट्टिमकारे– शिल्पविशेषः। *अनुयो॰ १४९।*

कोट्टिल्लं– ह्रस्वमुद्गरविशेषः। *विपा॰ ७१।*

कोट्टिल्लयं– मुद्गरकः। *विपा॰ ७२।*

कोट्टेइ– कुट्टयति। *आव॰ ३९६।*

कोट्ठ– कोष्ठः-कुशूलः। *जम्बू॰ १५४।* कुशूलः। *जम्बू॰ १६।* गन्धद्रव्यविशेषः। *जीवा॰ १९१। जम्बू॰ ६०।* उपरितनगृहं, धान्यकोष्ठो वा। *जम्बू॰ २१०।* गन्धद्रव्यम्। *जम्बू॰ ३५।* कोष्ठः-कुशूलः। *भग॰ २७४। बृह॰ १६८* आ। *स्था॰ १२४। सूर्य॰ ५।* कोष्ठकः, अपवरकः। *जीवा॰ १६०।* गड्गासमुदायात्मकः। *भग॰ ६७६।* धान्यभाजनानि। *स्था॰ १७३।* कोष्ठान् आ-समन्तान् कुर्वते तस्मिन्निति। *उत्त॰ ३५१।* अविनष्टसूत्रार्थधारणम्। *नन्दी॰ १७७।* पुलिंदपल्ली। *निशी॰ १४४* अ। कोष्ठं, बुद्धिभेदः। *प्रज्ञा॰ ४२४।*

कोट्ठए– श्रावस्तीनगर्यां भैत्यः। *भग॰ ५५२, ६५९, ४८४। आव॰ ३१२। राज॰ १२६।* ज्ञाता *२५१। निर॰ २२।* श्रावस्तीनगर्यां चैत्यः। *उपा॰ ५३।* वाणारसीनगर्यां चैत्यः। *उपा॰ ३१, ३४। आव॰ ७१४।*

कोट्ठओ– वट्टमढो सुन्नओ। *दशवै॰ ८२।* अग्गिमालिंदओ। *निशी॰ १९२* अ।

कोट्ठग– कोष्टकं-श्रावस्यां तिन्दुकोद्याने चैत्यविशेषः। *उत्त॰ १५३।* कोष्ठकाः-अपवरकाः *प्रज्ञा॰ ८६। बृह॰ ३१४* अ। *जम्बू॰ ७६।* अध्ययनापवरकः। *बृह॰ १०७* अ। कोष्टकः-चट्टानां शाला। *व्यव॰ ४२०* अ। आवास-विशेषः। *ओघ॰ ८२।*

कोट्ठतो– कोष्ठकः। *बृह॰ ६२* अ।

कोट्ठपुड– कोष्टपुटः-गन्धद्रव्यपुटः। *जीवा॰ १९१।* कोष्ठपुटे ये पच्यन्ते ते कोष्ठपुटाः-वासविशेषाः। *ज्ञाता॰ २३२।* गन्धद्र-व्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०७।* कोष्ठं-गन्धद्रव्यं तस्य पुटाः। *जम्बू॰ ३५।* पुटैःपरिमितानि यानि कोष्ठादिगन्धद्रव्याणि तान्यपि परिमेये परिमाणोपचारात् कोष्ठपुटानि। *जीवा॰ १९२।*

कोट्ठबुद्धिणो– कोष्ठबुद्धयः-यथा कोष्टके धान्यं प्रक्षिप्तं तदव-स्थमेव चिरमप्यवतिष्टते न किमपि कालान्तरेऽपि गलति, एवं येषु सूत्रार्थौ निक्षिप्तौ तदवस्थावेव चिरमप्यवतिष्टतः। ते कोष्ठबुद्धयः। *बृह॰ १९३* आ।

कोट्ठबुद्धी– कोष्ठक इव धान्यं या बुद्धिराचार्यमुखाद्विनिर्गतौ तदवस्थानौ च सूत्रार्थौ धारयति न किमपि तयोः कालान्तरे गलति सा कोष्ठबुद्धिः। *प्रज्ञा॰ ४२४।* कोष्ठवत्-कुशूल इव सूत्रार्थधान्यस्य यथाप्राप्तस्याविनष्टस्याऽऽजन्मधरणाद् बुद्धिः-मतिर्येषां ते। *औप॰ २८।*

कोट्ठसमुग्गयं– कोष्ठसमुद्गकम्। *जीवा॰ २३४।*

कोट्ठागार– दब्भादितणट्ठाणं। *निशी॰ २६५* अ। जत्थ सणसत्तरसाणि धण्णाणिकोट्ठागारो। *निशी॰ २७२* आ। कोष्ठा-धान्यभाजनानि तेषामागारं-गृहं कोष्ठागारं धान्यगृहम्। *स्था॰ १७३।* कोष्ठा-धान्यपल्यास्तेषामगारं-तदाधारभूतं गृहम्। *उत्त॰ ३५१।*

कोट्ठारं– कोष्ठागारम्। *आव॰ ४३५।*

कोट्ठिया– पुरिसप्पमाणा हीणाधिया वा चिक्खल्लमती। *निशी॰ ५९* अ। कोष्ठिका-लोहादिधातुधमनाय मृत्तिकामयी कुशूलिका। *उपा॰ २१।*

कुट्ठियाओ– कोष्ठिकातः-मृन्मयकुशूलसंस्थानायाः *आचा॰ ३४४।*

कोडंड– कुदंड-कारणिकानां प्रज्ञापराधान्महत्यपराधिनोऽप-राधे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम्। *भग॰ ५४४।*

कोडंब– कोलम्बप्रान्तः, लोकेऽवनतं वृक्षशाखाग्रमुच्यते। *ज्ञाता॰ २३६।*

कोड– कुटिलः, क्रुद्धः। *आव॰ ४३६।*

कोडल्लय– णयवेसिय। *निशी॰ ९२* आ।

कोडालसगुत्तो– कोडालसगोत्रः-ऋषभदत्तब्राह्मणस्य

गोत्रः। *आव॰ १७८।*

कोडालसगोत्त– गोत्रविशेषः। *आचा॰ ४२१।*

कोडि– कोटिः-अस्त्रि, विभागः। *पिण्ड॰ ८३।* कोटयो-विभागः सूक्ष्मपल्योपमापेक्षयाऽसंख्येयखण्डानि बादरपल्योपमापेक्षया तु कोटयः-सङ्ख्याविशेषाः। *स्था॰ ९१।* विभागः। *स्था॰ ४५२।*

कोडिगारा– शिल्पार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

कोडिण्ण– कौडिन्यः-शिवभूतेर्ज्येष्ठशिष्यः। *उत्त॰ १८०।* नगरविशेषः। *ज्ञाता॰ ३०९।* कोडिन्यः-महागिर्याचार्यशिष्यः। *आव॰ ३१६।* कौण्डिन्यः-बोटिकशिवभूतेरादिशिष्यः। *आव॰ ३२४।*

कोडितगणे– महावीरस्य नवमो गणः। *स्था॰ ४५१।*

कोडिन्न– कोण्डिन्यः-मिथिलायां श्रीमहागिर्या-चार्यशिष्यः। *उत्त॰ १६३।* शिवमूतेः प्रथम शिष्यः। *उत्त॰ ३२१।*

कोडिपडागा– कोटिपताका। *आव॰ ३४२।*

कोडियं– गाढचम्पितम्। *बृह॰ २४३* आ।

कोडियसहियं– कोटीभ्या सहितं कोटीसहितम्। मिलितोभय-प्रत्याख्यानकोटि, चतुर्थादिकरणमेव। *आव॰ ८४०।*

कोडिसहियं– मीलितप्रत्याख्यानद्वयकोटि चतुर्थादि कृत्वाऽन-न्तरमेव चतुर्थादेः करणम्। *भग॰ २९६।*

कोडिसिला– कोटीशिला। *आव॰ १७६।*

कोडी– कोट्यौ-अग्रे प्रत्याख्यानाद्यन्तकोणरूपे। *उत्त॰ ७०६।* कोटि-पञ्चोत्तरं लक्षम् *१०५०००।* *जीवा॰ ३२५।*

कोडीए– कोट्या-अग्रभोगेन। *जम्बू॰ ६८।*

कोडीकरण– कोट्यौव कोटीकरणम्। *दशवै॰ १६२।*

कोडीणं– कोट्यः-अनेका कोटाकोटिप्रमुखाः सङ्ख्याः। *जम्बू॰ ९५।*

कोडीवरिसं– कोटिवर्षं, लाटजनपदे आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५।* कोटीवर्ष-मूलगुणप्रत्याख्यानोदाहरणे म्लेच्छनगरम्। *आव॰ ७१५।*

कोडीसहियं– कोटीभ्यां-एकस्य चतुर्थादेरन्तविभागोऽपरस्य चतुर्थादेरेवारम्भविभाग इत्येवंलक्षणाभ्यां सहितं-मिलितं युक्तं कोटीसहितं मिलितोभयप्रत्याख्यानकोटेश्चतुर्थादेः करणमि-त्यर्थः। *स्था॰ ४९८।*

कोडुंबं– कौटुम्बं-स्वराष्ट्रविषयम्। *जीवा॰ १६६।*

कोडुंबिअ– कौटुम्बिकाः-अधिकारिणः। *जम्बू॰ १८८।* कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगकाः। *जम्बू॰ १९०।* कौटु-म्बिकः-श्रेष्ठ्यादिः। *ओघ॰ १२०।* कौटुम्बिका महर्द्धिकाः। *बृह॰ ६५।* कौटुम्बिकः-कतिपयकुटुम्बप्रभुः। *जीवा॰ २८०।*

कोडुंबित– कौटुम्बिकः-कतिपयकुटुम्बप्रभुः। *स्था॰ ४६३।*

कोडुंबिय– कौटुम्बिकः-कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगकाः। *भग॰ ३१८।* *औप॰ १४।* कौटुम्बिकाः-कतिपयकुटुम्ब-प्रभवो राजसेवकाः। *भग॰ ११५।* कौटुम्बिकाः-ग्राममहत्तरा। *प्रश्न॰ ९६।* *भग॰ ४७४।* कौटुम्बिकाः-कतिपयकुटुम्बना-यकाः। *भग॰ ४६३।* *निशी॰ ७८* आ।

कोडुं– स्फुटम। *आव॰ ४२०।* कौतुकं-मनोरथः। *आव॰ ४३२।*

कोढ– कुष्टं-पाण्डुरोगः, गलत्कोष्ठं वा। *बृह॰ १७०* अ। रोगविशेषः। *ज्ञाता॰ १८१।*

कोढिउ– कुष्ठी। *आव॰ ६७४।*

कोढी– कुष्ठमष्टादशभेदं तदस्यास्तीति कुष्ठी। *आचा॰ २३३।*

कोणं– कर्णम्। *बृह॰ १०७* आ।

कोणंगुली– कोणेऽङ्गुलिः। *आव॰ ३७९।*

कोण– कोणः-वादनदण्डः। *जीवा॰ १९३।* *जम्बू॰ ३८।* कोणः। *आव॰ ८४२।*

कोणओ– लगुडो। *निशी॰ १०५* आ।

कोणा– अश्रयः। *जीवा॰ १२३।*

कोणालग– कोणालकः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

कोणिए– कूणिकः-चम्पानगर्यां राजा। *भग॰ ३२६।* कोणिकः-चम्पानगर्यधिपतिः। *अन्त॰ २५।* चम्पानगर्यां राजा। *प्रश्न॰ १।*

कोणिओ– कोणिकः, राजविशेषः। *विपा॰ ९०।* श्रेणिकपुत्रः। *दशवै॰ ५०।* शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकचेल्लणयोः पुत्रः। यः पूर्वभवे कुण्डीश्रमण आसीत्। *आव॰ ६७८।*

कोणिक– श्रेणिकपुत्रः। *व्यव॰ ४२६* अ। चम्पायां राजा। *ज्ञाता॰ ३।*

कोण्हुआ– जम्बूकः। *आव॰ ३५१।*

कोतव– उदररोगनिष्पन्नं कौतवम्। *अनुयो॰ ३५।* कोतवोवरको। *निशी॰ २५५* अ।

कोतालि– गोट्ठी। *निशी॰ १७* आ।

कोताली– गोष्ठी। *बृह॰ ३१* आ।

कोतुविआ– कुतुपेन बहिर्ग्रामे व्यवहारकृत्। *बृह॰ १९०।*

कोत्तिया– भूमिशायिनः। *भग॰ ५१९। निर॰ २५। औप॰ ९०।*

कोत्थ– जनपदविशेषः। *भग॰ ६८०।* उदरदेशः। *ज्ञाता॰ ६८।*

कोत्थल– वस्त्रकम्बलादिमयः। *उत्त॰ ४५७।*

कोत्थलकः– बस्तिः, अपाटितेनापनीतमस्तकेन निकर्षितच-
र्मान्तर्वर्त्तिसर्वास्थ्यादिकचवरेणापरभर्ममयस्थिग्गलक स्थगि तापानछिद्रेण
सङ्कीर्णमुखीकृतग्रीवान्तर्विवरेणाजापश्वोरन्यत-रस्य शरीरेण निष्पन्नश्चर्ममयः प्रसेवकः कोत्थलापरपर्यायो इतिः। *पिण्ड॰ १८।*

कोत्थलकारिया– कोत्थलकारिका, भ्रमरीविशेषः। गृहकारिका। *ओघ॰ ११७।*

कोत्थकलारी– भ्रमरी। *बृह॰ २७८* अ।

कोत्थलगारिअ– कोत्थलकारिका-गृहकारिका। *ओघ॰ ११८।*

कोत्थलगारिया– कोत्थलकारिका-भ्रमरीविशेषः। *आव॰ ६२५।*

कोत्थलवाहगो– त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

कोत्थुंभरि– कुस्तुम्भर्य्यो-धान्यककणाः। *जम्बू॰ २४३।*

कोथूभो– कौस्तुभो-वक्षोमणिः। *प्रश्न॰ ७७।*

कोदंड– धनुः। *भग॰ २९०। उत्त॰ ३११।* कुदण्डस्तु कारणिकानां प्रज्ञाद्यपराधात् महत्यप्यपराधिनोऽपराधे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम्। *जम्बू॰ १९४।* चापः। *जम्बू॰ २०६।*

कोदूसग– कोद्रवविशेषः। *भग॰ २७४।*

कोदूसा– धान्यविशेषः। *भग॰ ८०२।*

कोद्दंसा– औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

कोद्दव– कोद्रवः-धान्यविशेषः। *भग॰ ८०२। दशवै॰ १९३। सूत्र॰ ३०९।* धान्यविशेषः। तृणविशेषः। *स्था॰ २३४।* औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* कोद्रवः, धान्यविशेषः। तृण-पञ्चके तृतीयोभेदः। *आव॰ ६५२।*

कोद्दवकूरं– कोद्रवतन्दुलम्। *आव॰ २००।*

कोद्दवजाउलयं– कोद्दवोभज्झी। *ओघ॰ १९६।*

कोद्दवोदणसेइया– कोद्रवौदनसेतिका। *आव॰ ६९२।*

कोद्दवुब्भज्जी– कोद्दवोभज्झी कोद्दवजाउलयं। *ओघ॰ १९६।*

कोद्दालकः– एकोरूकद्वीपे वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५।*

कोद्दालिय– कुद्दालिकः, भूखनित्रविशेषः। *विपा॰ ५८।*

कोधे– क्रोधे निश्रितमिति सम्बन्धात् क्रोधाश्रितं-कोपाश्रितं मृषेत्यर्थः। *स्था॰ ४८९।*

कोप्पर– कूर्परः। *ओघ॰ ३१।* कूर्परम्। *प्रज्ञा॰ ४७३।* स्क-न्धावारः। *आव॰ ६६७।*

कोमल– श्रोत्रमनसां प्रह्लादकारि। *व्यव॰ २०* अ। मनोज्ञम्। *जीवा॰ १८८, २९५।* कोमलः-दृष्टिसुभगः। *जीवा॰ ४७४।*

कोमारा– मट्टिया, उल्लामट्टिया। *निशी॰ २५५* आ।

कोमुइजोगजुत्तो– कौमुदीयोगयुक्तः-कार्त्तिकपौर्णमास्यामुदितः। *दशवै॰ २४६।*

कोमुइया– कृष्णस्य प्रथमा भेरी। *बृह॰ ५६* अ।

कोमुइवारं– कौमुदीवासरम्। *आव॰ ८१६।*

कोमुई– कौमुदी। *ओघ॰ ९७।* कौमुदी-कार्त्तिकीपौर्णिमा। *जम्बू॰ ११५।*

कोमुतिआ– कौमुदीकी-वासुदेवस्य देवतापरिगृहीता गोशीर्ष-चन्दनमयी तृतीया भेरी। आ॰ ९७।

कोमुदि– कौमुदी-कार्त्तिकी। *प्रश्न॰ ८४।*

कोमुदितं– उत्सववाद्यम्। *ज्ञाता॰ १००।*

कोमुदियवारो– कौमुदीमहः। *आव॰ ५६२।*

कोमुदी– कौमुदी। *आव॰ ३५५।*

कोमुदीनिसा– कौमुदीनिशा, कार्त्तिकपौणमासी। *ज्ञाता॰ ३५।*

कोयव– रूतपूरितः पटः, या लोके 'माणिकी' इति प्रसिद्धा। *बृह॰ २२०* अ। कुतुपः। *स्था॰ २३४।*

कोयवगो– वरक्को। *निशी॰ ६१* अ। रूतपूरितपटः। *ज्ञाता॰ २३२।*

कोयवाणि– वस्त्रविशेषः। *आचा॰ २९३।*

कोयवि– कौतपी-दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके द्वितीयो भेदः। *आव॰ ६५२।*

कोरंग– कोरङ्कः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

कोरंट– कोरण्टकः-पुष्पजातिविशेषः। *जम्बू॰ ३४।*

कोरंटक– अग्रबीजः। *दशवै॰ १९३।* गुल्मविशेषः। *आचा॰ ३०।* स्थलजम्। *प्रज्ञा॰ ३७।* कोरण्टकः,

पुष्पजातिविशेषः। *जीवा॰ १९१।*

कोरंटगं– कोरंटकं-भरुकच्छे उद्यानम्। *व्यव॰ १७३* आ।

कोरंटय– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

कोरंटयगुम्मा– कोरण्टकगुल्माः। *जम्बू॰ ९८।*

कोरव– कोरकं-मुकुलम्। *स्था॰ १८५। जम्बू॰ ५२८।*

कोरव्व– कौरव्यः-कौरव्यगोत्रः। *जीवा॰ १२१।* कुलविशेषः। *आव॰ १७१।* कुरवः- कुरूवंशप्रसूता। *औप॰ २७।* कुरवः- आर्यभेदः। *स्था॰ ३५८।* कुरवः। *भग॰ ४८९।* कुलार्य-भेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

कोरिंट– कोरिण्टं-कुसुमविशेषः। *भग॰ ३१८।* कोरण्टकः- पुष्पजातिः। *ज्ञाता॰ २३।*

कोरिंटक– अग्रबीजाः। *स्था॰ १८६।*

कोरिंटमल्लदामं– कोरण्टकमाल्यदामं। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

कोलंबए– कोलम्बः-शाखिशाखानामवनतमग्रं भाजनं वा। *अनुत्त॰ ५।*

कोलंबो– कोलम्बः-प्रान्तः। *विपा॰ ५५।*

कोल– कोलः-घुणः। *आव॰ ६५६। दशवै॰ १५५।* शूकरः। *ज्ञाता॰ ७०। बृह॰ १४८* अ। बदरं। *दशवै॰ ८०। पिण्ड॰ १६१। दशवै॰ १७६, १८५।* बदरचूर्णम्। *बृह॰ २६८* अ। उन्दराकृतिर्जन्तुविशेषः। *प्रश्न॰ ७।* क्रोडः-शूकरः। *प्रश्न॰ ७।* कुवलं-बदरम्। *भग॰ २८५।*

कोलघरियाओ– कुलगृहात्-पितृगृहादागताः कौलगृहिकाः। *उपा॰ ४८।*

कोलगिणी– कोलिकी। *आव॰ ४२१।*

कोलचुण्णं– बदरचुण्णं। *दशवै॰ ८०।* बदरसक्तून्। *दशवै॰ १७६।*

कोलजुत्तो– कुलौचित्यः। *व्यव॰ २२४* अ।

कोलट्ठिय– कुवलास्थिकम्-बदरकुलकः। *भग॰ २८५।*

कोलपाणगं– पाणकविशेषः। *आचा॰ ३४७।*

कोलपाले– धरणेन्द्रस्य द्वितीयलोकपालः। *स्था॰ १९७।*

कोलवं– कौलवं-तृतीयं करणम्। *जम्बू॰ ३९३।*

कोलवालं– दवरकम्। *आव॰ ४२७।*

कोलवासंसि– कोला-घुणाः तेषामावासः। *सम॰ ३९।*

कोलसुणए– कोलशुनकः-मृगयाकुशलः श्वा। *प्रज्ञा॰ २५४।* सूकरस्वरूपधारी। *उत्त॰ ४६०।*

कोलसुणक– कोलश्वानः-महासूकरः। *प्रश्न॰ ७।*

कोलसुणग– सनखपदचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।* कोलशुनकाः-महाशूकराः। *जम्बू॰ १२४।* पाटयित्वा भक्षणम्। *निशी॰ १२९* अ।

कोलसुणयं– महासुकरं। *आचा॰ ३३८।*

कोला– घुणा। नि॰ *८३* अ। *निशी॰ २५५* आ। घुणाः- तदावासभूते जीवप्रतिष्ठितः। *आचा॰ ३३७।*

कोलाओ– कोलः। *तन्दु॰ ।*

कोलाल– मृद्भाजनविशेषः। *आव॰ ४८४।* कुलालाः- कुम्भकाराः। *उपा॰ ४२।*

कालालिए– कौलालानि-मृद्भाण्डानि पण्यमस्येति कौलालिकः। *अनुयो॰ १४९।*

कोलालिया– कर्मार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।* कोलालिकाः- कुलालक्रयविक्रयिणः। *बृह॰ १७५* अ।

कोलावास– कोला-घुणकीटकास्तेषामावासः। *आचा॰ २९३।* घुणावासः। *आचा॰ ४१०।* कोला-घुणास्तदावासभूतः कोलावासः। *आचा॰ ३३७।*

कोलाहल– विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकलः। *उत्त॰ ३०७।* बहुजनमहाध्वतिः। *ज्ञाता॰ २२०। जीवा॰ १७३।* बोलः। *प्रज्ञा॰ ९७।* आर्त्तशकुनिसमूहध्वनिः। *भग॰ ३०६।* आर्त्तशकुनसमूहध्वनिः। *जम्बू॰ १६७।*

कोलाहलभूत– कोलाहलः-विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकलः कोलाहल एव कोलाहलकः स भूत इति जातो यस्मिंस्तत् कोलाहलकभूतम्। *उत्त॰ ३०७।*

कोलाहलब्भूए– कोलाहलः-आर्त्तशकुनिसमूहध्वनिस्तं भूतः प्राप्तः कोलाहलभूतः। *भग॰ ३०६।*

कोलाहा– दर्वीकरअहिभेदविशेषः। *जीवा॰ ३९। प्रज्ञा॰ ४६।*

कोलिअतंतुयं– कोलिकतन्तुकम्। *ओघ॰ ११७।*

कोलिओ– कृतिकर्मदृष्टान्ते द्वारिकायां वासुदेवभक्तो वीरकाभिधः कोलिकः। *आव॰ ५१३।*

कोलिकपुटक– वाद्यविशेषः। *भग॰ २१६।*

कोलिग– कोलिकः-जीवविशेषः। *बृह॰ १६४* अ।

कोलिगजालग– कोलिकजालकानि-जालकाकाराः कोलिकानां लालातन्तुसन्तानाः। *बृह॰ २७८* अ।

कोलिय– कौलिकः-तन्तुवायः। *नन्दी॰ १६५।*

कोलियकः– लूता। *ओघ॰ १२६।*

कोलियकण्णा– कोलिककन्या विषभोजननिवृत्तौ दृष्टान्तः। *आव॰ ५५६।*

कोलियगो– कोलिकः। *उत्त॰ १००।*

कोलियापुडिगो– मक्कडसंताणओ। *निशी॰ २५५* आ।

कोलुणं– कारुण्यम्। *निशी॰ ५८* आ।

कोलेज्जाओ– अधोवृत्तखाताकाराद् असंयतः। *आचा॰ ३४४*।

कोल्लइर– संगमस्थविरविहारभूमिः। *निशी॰ ९५* आ।

कोल्लकिरं– क्रीडनधात्रीदोष विवरणे नगरम्। *पिण्ड॰ १२५*।

कोल्लगाणुगो– जो रयहरणणिसेज्जाए उवग्गाहियपादपुंछणे वा ठितो वा एति चिट्ठति वा। *निशी॰ १३७* अ।

कोल्लयग्गामे– वर्द्धमानजिनस्य प्रथमं पारणकस्थानम्। *आव॰ १४६*।

कोल्लयर– कुल्लयरं-नगरविशेषः। *उत्त॰ १०८*।

कोल्लर– हस्तिन उपरि कोल्लररूपा 'गेल्लि' या मानुषं गीलतीव। *भग॰ १८७, ३९९*।

कोल्लाए– सन्निवेशः। *उपा॰ २, १४*। सन्निवेशः। महावीरस्वा-मिविहारभूमिः। *भग॰ ६६२*।

कोल्लाकसन्निवेशं– वर्द्धमानजिनस्य विहारभूमिः। *आव॰ २००*।

कोल्लाग– कोल्लकः-सन्निवेशः। महावीरस्वामिविहारभूमिः। *आव॰ १८८*।

कोल्लागसन्निवेस– कोल्लागसन्निवेशः-व्यक्तसुधर्मगणधरयोर्ज-न्मभूमिः। *आव॰ २५५*।

कोल्लुकपरंपर– महाराष्ट्रसिद्धकोल्लुकचक्रपरंपरन्यायः। *बृह॰ ९०* आ।

कोल्लुगा– सिगाला। *निशी॰ १७५* अ।

कोल्हुकं– इक्षुयन्त्रम्। *बृह॰ १९९* आ।

कोल्हुगाणूगे– क्रोष्टुकानुगः। आचार्याणां तृतीया उपमा। भिक्षोः तृतीया उपमा। *व्यव॰ १२१* आ।

कोव– कोपः-क्रोधोदयात्स्वभावाच्चलनमात्रम्। *भग॰ ५७२*।

कोवघर– कोपगृहम्। *विपा॰ ८३*।

कोवडिओ– केतराती। दीणारो। *निशी॰ ३३०* अ।

कोवपिंड– कोपपिण्डः-कोहप्रसादात् पिंडं लभते स कोपपिण्डः। *निशी॰ १००* अ।

कोविए– कोविदः-पण्डितः। *उत्त॰ ४८२*। लब्धशास्त्रपर-मार्थः। *उत्त॰ ४१९*।

कोविओ– कोविदः-संसारविमुखप्रज्ञतया पण्डितः। *पिण्ड॰ ७२*।

कोवियप्पा– कोविदात्मा-कोविदः-लब्धशास्त्रपरमार्थ आत्माऽस्येति। *उत्त॰ ४२०*।

कोविया– खुडिया-नाशिता। *निशी॰ १०८* आ।

कोशलजनपदः– कोशलजनपदोऽप्यभिधीयते यत्र अयोध्या-नगरीति। *ज्ञाता॰ १२५*। *पिण्ड॰ ९८*।

कोशला– देशविशेषः। *पिण्ड॰ ९८*।

कोशातकी– तिक्तरसपरिणता। *प्रज्ञा॰ १०*। वल्लीविशेषः। *आचा॰ ३०*।

कोशिकारः– कीटविशेषः। *आचा॰ ७१*।

कोष्ठ– लक्षणहीनम्। *अनुयो॰ १०२*। वाससमुदायः। *भग॰ ७१३*। धान्यपल्यः। *उत्त॰ ३५१*।

कोष्ठबुद्धिता– ऋद्धिविशेषः। *स्था॰ ३३२*।

कोसं– कोषं-भाण्डागारं चर्मलताद्यनेकवस्तुरूपम्। *उत्त॰ ३१६*।

कोस– सरावं। *दशवै॰ ९९*। अहिं रयणादियं दव्वं सो। कोशः। *निशी॰ ३४* आ। कोशः-आश्रयः। *प्रश्न॰ ६४*। समुदायो। *निशी॰ ६२* आ। क्रोशः-गव्यूतम्। *उत्त॰ ६८६*। कोशः-वारकादिभाजनम्। *सूत्र॰ ११८*।

कोसंब– एकास्थिकवृक्षविशेषः। *भग॰ ७०५, ८०३*। *प्रज्ञा॰ ३१*।

कोसंबवण– कौशाम्बवनं-कृष्णस्य कालकरणस्थानम्। *अन्त॰ १६*।

कोसंबाहारं– आर्यसुहस्तिविहारभूमिः। द्रमकदीक्षास्थानम्। *निशी॰ २४३* अ।

कोसंबि– कौशाम्बी- वर्धमानस्वामिविहारभूमिः। *भग॰ ५५६*। *आव॰ २२१*। शतानीकराजधानी। *भग॰ ५५६*। *विपा॰ ६८*। *आव॰ २२२*।

कोसंबिय– कोशाम्बी, अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी। *आव॰ ६९९*।

कोसंबी– कौशाम्बी-नगरीविशेषः। *उत्त॰ २१४, १९३, ३७९*। यज्ञदत्तद्विजस्थानम्। *उत्त॰ १११*। वत्सदेशराज-धानी। *बृह॰ १६७* आ। द्रमकप्रव्रज्यास्थानम्। *बृह॰ १५३* आ। वर्द्धमानस्वामिपारणकस्थानम्। *आव॰ २२५*। दुर्गन्धायाः उत्पत्तिस्थानम्। *उत्त॰ १२३*। नगरीविशेषः। *ज्ञाता॰ २५३*। वत्थजणवए णगरी। *निशी॰ १६* अ। *भग॰*

५५६। नगरीविशेषः। *उत्त॰ ४४*। *दशवै॰ ४९*। तापस-श्रेष्ठिस्थानम्। *उत्त॰ २८६, २८७*। धनपालराजधानी। *विपा॰ ९५*। पद्मप्रभजन्मभूमिः। आव *१६०*। शिक्षायोगदृष्टा-न्ते नगरी। *आव॰ ४८५*। अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी। *आव॰ ७००*। संपइस्स उप्पत्तिट्ठाणं। *निशी॰ ४४*।

कोसंबीओ– कौशाम्बीकः। *आव॰ ६३*।

कोसकोट्ठागारकहा– कोशो-भाण्डागारं, कोष्ठागारं-धन्यागारं, तत्कथा कोशकोष्ठागारकथा। *स्था॰ २१०*।

कोसकोट्ठारे– कोशकोष्ठागारं, राज्ञाः कोशकोष्ठागारसम्बन्धी-विचारः। राजकथायाश्चतुर्थभेदः। *आव॰ ५८१*।

कोसग– कोशकः-चर्मपञ्चके चतुर्थो भेदः। *स्था॰ २३४*। कोशः-चर्मपञ्चके चतुर्थो भेदः। *आव॰ ६५२*। नखभंगरक्ष-कश्चर्मकोशः। *बृह॰ १०१* अ। अंगुलीनामगुष्ठस्य वा छादकः स कोशकः। *बृह॰ २२२* आ।

कोसयं– कोशः। *आव॰ ६२५*।

कोसल– देशविशेषः। *उत्त॰ ३७५*। *भग॰ ६८०*। कोशलकः-कोशलदेशोत्पन्न। *व्यव॰ २१९* आ।

कोसलग– कोशलकः-कोशलदेशीयः। *पिण्ड॰ १६७*।

कोसलपुरं– सुमतिनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०*।

कोसला– कोशला-अयोध्या, तज्जनपदोऽपि कोशला। *भग॰ ३१७*। अयोध्या। *जम्बू॰ १३६*। कोशला-जनपदविशेषः। *ज्ञाता॰ १३०*। *प्रज्ञा॰ ५५*। कोशला-अचलगणधरजन्म-भूमिः *आव॰ २५५*।

कोसलाउरे– कोशलपुरे-मायोदाहरणे नगरं, यत्र पूर्वभवे धनपतिधनावहभार्ये नन्दनेभ्यस्य श्रीमतिकान्तिमतिदुहितरौ जाते। *आव॰ ३९४*।

कोसलिए– कोशलदेशोत्पन्नत्वात्। कौशलिकः। *स्था॰ ३२७*। कोशलायां-अयोध्यायां भवः कौशलिकः। *जम्बू॰ १३६*। कोशलदेशे भवः कौशलिकः। *सम॰ ९०*।

कोसलियं– कौशलिकं-देशविशेषः। *उत्त॰ ३५४*।

कोसा– कोशा, पाटलिपुत्रे गणिका। *आव॰ ४२५*। वेश्या, यस्या गृहे स्थूलभद्रो द्वादशवर्षं यावत् स्थितः। *आव॰ ६९५*।

कोसातकी– तिक्तरसे दृष्टान्तः। *उत्त॰ ६७६*।

कोसि– कोशी-प्रतिमा। *ज्ञाता॰ ५७*।

कोसिओ– कौशिकनामा अश्ववणिक्। *आव॰ २२०*। कौशि-कनामा ब्राह्मणविशेषः। *आव॰ १७१*। कौशिकः-तापसपुत्रः। *आव॰ १७६*।

कोसिकारकीड– कोशिकारकीटः-आत्मवेष्टकः कीटविशेषः। *प्रश्न॰ ६१*।

कोसिता– कौशिकाः-षड्डुलकादयः। *स्था॰ ३९०*।

कोसियं– कौशिकं-हस्तगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००*।

कोसियगोत्ते– कौशिकगोत्रम्। *सूर्य॰ १५०*।

कोसियज्जो– कौशिकार्यः-आर्जवोदाहरणे चम्पायामुपाध्यायः। आ॰ *७०४*।

कोसी– नदीविशेषः। *स्था॰ ४७७*। कोशः-परिवारः। *सूत्र॰ २७६*। कोशी-प्रतिमा। *उपा॰ २४*।

कोसेज्ज– कौशेयकं-कौशेयककारोद्भवं वस्त्रम्। *प्रश्न॰ ७१*। वस्त्रम्। *औप॰ १०*। कौशेयं-त्रसरितन्तुनिष्पन्नम्। *जम्बू॰ १०७*। वेडयकारिणो। *निशी॰ ४३* आ। वस्त्रविशेषः। *जम्बू॰ २०२*।

कोसेयं– कौसेयं-त्रसरितन्तुनिष्पन्नं वस्त्रम्। *जीवा॰ २६९*।

कोहंडा– कूष्माण्डाः-पुंस्फलाः। *अनुयो॰ १९२*।

कोह– कारणेऽकारणे वाऽतिक्रूराध्यवसायः क्रोधः। *आचा॰ १९१*। तत्रात्मीयोपघातकारिणी क्रोधकर्म्मविपाकोदयात् क्रोधः। *आचा॰ १७०*। क्रोधनं-क्रुध्यति वा येन सः क्रोधः-क्रोधमोहनीयसम्पाद्यो जीवस्य परिणतिविशेषः क्रोधमोहनीय-कर्मैव। *स्था॰ १९३*। अप्रीतिलक्षणः। *उत्त॰ २६१*। क्रोधः-अप्रीतिपरिणामः। *जीवा॰ १५*। क्रोधः। *आव॰ ८४८*। क्रोधः-सप्तम उत्पादनदोषः। *पिण्ड॰ १२१*। षष्ठं पापस्था-नकम्। *ज्ञाता॰ ७५*। कोथः-कुथितत्वं शटितं वा। *भग॰ १९८*।

कोहणिस्सिया– क्रोधनिःसृता-क्रोधान्निःसृता, क्रोधाद्विनिर्ग-तेति। *प्रज्ञा॰ २५६*।

कोहण– क्रोधनः-सकृत् क्रुद्धोऽत्यन्तक्रुद्धो भवति। नवममस-माधिस्थानम्। *सम॰ ३७*। क्रोधनः-यः सकृत्क्रुद्धोऽत्यन्त-क्रुद्धो वा भवेत्। नवममसमाधिस्थानम्। *आव॰ ३५३*।

कोहनिस्सिया– क्रोधनिसृता-मृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २०९*।

कोहविवेग– क्रोधविवेकः-कोपत्यागः, तस्य दुरन्ततादिपरि-भावनेनोदयनिरोधः। *भग॰ ७२७*।

कोहसन्ना– क्रोधोदयादावेशगर्भा

प्ररूक्षनयनदन्तच्छदस्फुर-णादिचेष्टैव संज्ञायतेऽनयेति क्रोधसंज्ञा० *भग० ३१४*।
क्रोधवेदनीयोदयात्तदावेशगर्भा पुरुषमुखवदनदन्तच्छदस्फू-रणचेष्टा क्रोधसंज्ञा। *प्रज्ञा० २२२*।

कोहा– क्रोधा-क्रोधानुगता। *निशी० ३१ आ*।

कोहंडियाकुसुमेइ– कुष्माण्डिकाकुसुमं-पुंस्फलीपुष्पं। *जम्बू० ३४*।

कोहेतुः– को हेतुः- का उपपत्तिः। *सूर्य० २२*। किं कारणम्। *सूर्य० १३*।

कौटलं– अर्थशास्त्रम्। ज्योतिषं निमित्तं वा। *ओघ० १४९*।

कौटिल्यं– मायी। *दशवै० २५४*।

कौतुकं– थुथुकरणं, बन्धकडकादिबन्धनं, एतत् सर्वमपि कौतुकमुच्यते। *बृह० २१५अ*।

कौमोदकी– वासुदेवस्य गदा। *उत्त० ३५०*। गदाविशेषः। *प्रश्न० ७७*। गदा, लकुटविशेषः। *सम० १५७*।

कौलिकः– कोकिलजातीयः पुरुषविशेषः। *नन्दी० १५५*।

कौलिकी– कोकिलजातीया-म्रामरम्, उत्पातिकीबुद्धे-र्दृष्टान्तः। *नन्दी० १५५*।

कौशाम्बकानने– वनविशेषः। *स्था० ४३३*।

कौशेयकानि– वस्त्राविशेषभूतानि। *सम० १५८*।

कौसुंभ– रागविशेषः। रञ्जनविशेषः। *जम्बू० १८८*।

क्खायं– ख्यातं, कथितं, प्रसिद्धम्। *प्रज्ञा० ६८*।

क्रमभङ्गः– यथैको जीव एक एवाजीवेत्यादि। *आव० ५९६*।

क्रमभङ्गकाः– भङ्गस्य द्वितीयभेदः। *स्था० ४७८*।

क्रयाणकः– द्रव्यसमूहः। *नन्दी० १५०*।

क्राकचव्यवहारः– क्रकचेन काष्ठस्य तद्विषयं सङ्ख्यानं कल्प एव यत्पाट्यां क्राकचव्यवहारः। *स्था० ४९७*।

क्रियानयः– नयविशेषः। *दशवै० ८०*।

क्रियाविशालं– कायिक्यादिक्रियाविशालं संयमक्रियाविशालं च। *नन्दी० २४१*।

क्रियासिद्धिः– इहैव मोक्षावाप्तिलक्षणा। *आचा० ४१९*।

क्रीडारथः– क्रीडार्थं रथः रथस्य प्रथमो भेदः। *जीवा० १८९*।

क्रीत– साध्वकल्प्यमशनादि। *दशवै० २०३*। *प्रश्न० १४४*।

क्रूराणि– क्रूराणि, निर्दयानि निरनुक्रोशानि। *निशी० १९९*।

क्रोधकारणः– गर्वः। *आचा० १६४*।

क्रोधनत्वं– अत्यन्तक्रोधनत्वम्। नवममसमाधिस्थानम्। *प्रश्न० १४४*।

क्रोधादिपिण्डः– क्रोधमानमायालोभैरवाप्तः क्रोधादिपिण्डः। *आचा० ३५१*।

क्रोधादिमानं– क्रोधादीनां मानम्। *आचा० १६४*।

क्रौंचारिः– कार्त्तिकेयः। *आचा० २६*।

क्रौष्ठिकी– श्रीकृष्णस्य नैमित्तिकः। *उत्त० ४९०*।

क्वणितं– शब्दितम्। *आव० ६४६*।

क्वणिता– काचिद्वीणा। *जीवा० २६६*।

क्वथितं– प्रधानम्। *जीवा० २६८*।

क्वथितोदकं– उष्णोदकम्। *दशवै० २२८*।

क्वाथं– फाणितम्। *प्रज्ञा० ३६४*।

क्षणक्षयिभावप्ररूपकः– सामुच्छेदः। *आव० ३११*।

क्षणमात्रं– पलमात्रम्। *नन्दी० १५५*।

क्षणीभूतं– स्तिमितम्। *ओघ० १८४*।

क्षपकर्षि– भिक्षुविशेषः। *उत्त० ४१८*।

क्षपणं– अनारोपणम्, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव झाटनमित्यर्थः। *स्था० ३२६*।

क्षपणोपसम्पत्– चारित्रनिमित्तं क्वचित्क्षपणार्थम्। *आव० २७१*।

क्षयनिष्पन्न– तत्फलरूपो विचित्र आत्मपरिणामः, केवलज्ञान-दर्शनचारित्रादिः। *स्था० ३७८*।

क्षयोपशमं– अर्द्धविध्यातानलोद्घट्टनसमतां नीतम्। *आव० ७९*।

क्षान्तः– क्षामितसमस्तप्राणिगणः। *आचा० २९१*।

क्षात्रखानकः– सन्धिन्छेदकः। *प्रश्न० ४६*।

क्षारोदका– आमलकोदकाः। *पिण्ड० ६५*।

क्षाल– निर्द्धमनः। *स्था० २९४*।

क्षीरकाकोली– साधारणवनस्पतिविशेषः। *आचा० ५७*।

क्षोरबिडीलिका– साधारणवनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा० २७*।

क्षीररसा– वापीनाम। *जम्बू० ३७१*।

क्षीरवरः– द्वीपविशेषः। *अनुयो० ९०*।

क्षीराश्रवत्वं– ऋद्धिविशेषः। *स्था० ३३२*।

क्षीराश्रवः– क्षीरवन्मधुरवक्ता। *आचा० ६८*।

क्षीरिका– साधारणवनस्पतिकायिकभेदः *जीवा० २७*।

क्षीरोदः– क्षीररसास्वादः समुद्रः। *अनुयो० ९०*।

क्षुद्रिका– सर्वतोभद्राप्रतिमायाः प्रथमो भेदः। *स्था॰ २९२।*

क्षुद्रघण्टा– घण्टिकाः, किङ्किण्यः। *जम्बू॰ ५२९।*

क्षुभिताः– आकुलाः। *ओघ॰ ७१।*

क्षुरप्रसंस्थितं– रसनेन्द्रियसंस्थानम्। *भग॰ १३१।*

क्षुरिका– शस्त्रविशेषः। *जीवा॰ १९२। नन्दी॰ १६४।* आभरणविशेषः। *पिण्ड॰ १२४।*

क्षुल्लककुमारः– श्रमणविशेषः। *सूत्र॰ ७२।*

क्षुल्लहिमवत्– हिमवदृषधरपर्वते द्वितीयकूटम्। *स्था॰ ७२।*

क्षुल्लिका– भद्रोत्तरप्रतिमायाः प्रथमो भेदः। *स्था॰ २९३।*

क्षेत्रं– आर्यस्य द्वितीयभेदे प्रथमः। *सम॰ १३५।*

क्षेत्रगणितं– रज्जुगणितम्। *स्था॰ २६३, ४९७।*

क्षेत्रग्रहणलक्षणैका– सङ्ग्रहपरिज्ञासम्पतः, प्रथमो भेदः। *उत्त॰ ४०।*

क्षेत्रप्रत्युपेक्षणा– कायोत्सर्गनिषदनशयनस्थानस्य स्थण्डिलानां मार्गस्य विहारक्षेत्रस्य च निरूपणा। *स्था॰ ३६१।*

क्षेत्रमरणं– यस्मिन् क्षेत्रे मरणं इङ्गिनीमरणादि वर्ण्यते क्रियते वा, यदा वा तस्य शस्याद्युत्पत्तिक्षमत्वमुपहन्यते तदा तत्। *उत्त॰ २२९।*

क्षेत्रविज्ञानं– किमिदं मायाबहुलमन्यथा वा ? तथा साधुभिर-भावितं भावितं वा नगरादीति विमर्शनम्। प्रयोगमतिसम्पतः तृतीयो भेदः। *उत्त॰ ३९।*

क्षेत्रोपक्रमः– क्षेत्रविनाशः। *अनुयो॰ ४८।*

क्षेमं– तत्तदुपद्रवाद्यभावापादनम्। *राज॰ १०९।*

क्षेमङ्करः– आधायाः परिवर्तितद्वारे वसन्तपुरे निलयश्रेष्ठिपुत्रः। *पिण्ड॰ १००।*

क्षोभः– आकस्मिकः संत्रासः। *ओघ॰ १९।*

क्षौमकं– वस्त्राम्। *स्था॰ ५१२।*

- x - x - x -

ख

खं– आकाशम्। *आव॰ ८५०।*

खंघकरणी– कुडभकरणी साध्व्युपकरणम्। *बृह॰ ११९ अ।*

खंजणं– खञ्जनं-दीपमल्लिकामलः, स्न्नेहाभ्यक्तशकटाक्षघर्षणो-द्भवं वा। *प्रज्ञा॰ ३६१। जम्बू॰ ३२।* दीपमलः। *बृह॰ ९२ अ०।* खञ्जनः। *सूर्य॰ २८७। ज्ञाता॰ ६।*

खंजन– खञ्जनं दीपादीनाम्। *स्था॰ २१९।* दीपादिखञ्जन-तुल्यः पादादिलेपकारी कर्द्दमविशेषः एव। *स्था॰ २३५।* स्नेहाभ्यक्तशकटाक्षघर्षणोद्भूतम्। *उत्त॰ ६५२।* लोभस्य लक्षणसूचकः। *आचा॰ १७०।*

खंजरीट– जीवविशेषः। *दशवै॰ १४१।*

खंड– शर्करा। *बृह॰ ७५ आ। अनुयो॰ १५४।* भिन्नः। *जीवा॰ १३०।* इक्षुविकारः। *उत्त॰ ६५४।* मधु शर्करा वा। *जीवा॰ २६८।* लवणम्। *ओघ॰ १३७।* पव्वदेससहितं। *निशी॰ २३ अ०।* खण्डम् *प्रज्ञा॰ ३६४। आचा॰ ९७।*

खंडकण्णो– खण्डकर्ण्णः-अवन्तीपतेर्मन्त्रो। *व्यव॰ १४९।*

खंडकुटो– खंडकुटो नाम यस्य कर्णौ बोटौ स पानीयमूनं गृह्णाति। *बृह॰ ५४ अ।*

खंडकुडे– खण्डकुटः। *आव॰ १०१।*

खंडग– खण्डप्रपातगुहाकूटं, वैताढ्यकूटनाम। *जम्बू॰ ३४१।* खण्डप्रपाता नाम वैताढ्यगुहा। *स्था॰ ४५४।*

खंडगप्पवायगुहा– खण्डप्रपातगुहा। *आव॰ १५१।*

खंडगमल्लगं– खंडमल्लकं-खण्डशरावं भिक्षाभाजनम्। *ज्ञाता॰ २००, २०३।*

खंडघडगं– खण्डघटकः-पानीभाजनम्। *ज्ञाता॰ २००, २०३।*

खंडना– विराधना। *प्रश्न॰ ७।*

खंडपट्टे– खण्डपट्टः-धूर्त्तः। *विपा॰ ७२।* खण्डः-अपरिपूर्णः पट्टः परिधानपट्टो यस्य मद्यद्यूतादिव्यसनाभिभूततया परिपू-र्णपरिधानाप्राप्तेः ते खण्डपट्टाः-द्यूतकारादयः, अन्यायव्यव-हारिणः, धूर्त्ता वा। *विपा॰ ५६।*

खंडपाडिय– खण्डपाडितः। *विपा॰ ५६।*

खंडप्पवायगुहाकूड– खण्डप्रपातगुहाधिपदेवनिवासभूतं कूटं खण्डप्रपातगुहाकूटम्। *जम्बू॰ ७७।*

खंडप्रपाता– गुहाविशेषः। *स्था॰ ७१।*

खंडभेदः– क्षिप्तमृत्पिण्डस्येव। *स्था॰ ४७५।*

खंडभेय– खण्डभेदः-लोष्टादेरिव यः खण्डशो भवति। *भग॰ २२४।*

खंडरक्ख– खण्डरक्षः-दण्डपाशिकः। राय॰ २। खण्डरक्षः। *उत्त॰ १६५।* दण्डपाशिकः शूल्कपालो वा। *औप॰ २।* श्रम-णोपासकविशेषः। *आव॰ ३१७।* शुल्कपालः। *प्रश्न॰ ३०।* शुल्कपालः कोट्टपालो वा। *प्रश्न॰ ४६।*

खंडरक्खा– खण्डरक्षाः- दण्डपाशिकाः शुल्कपाला वा । *ज्ञाता॰ २।* दण्डपाशिकाः। *ज्ञाता॰ २३९।* हिंडिकाः। *बृह॰ १८० आ।*

खंडशर्करा– मत्स्यण्डी। *जम्बू॰ १०५। प्रज्ञा॰ ३६६। जीवा॰ २६८।*

खंडाखंडिकतो– खण्डखण्डीकृतः। *आव॰ ९३।*

खंडाखंडेहिं– खण्डशः। *आव॰ ३७०।*

खंडाभेद– खण्डभेदः। लोहखण्डादिवत्। *प्रज्ञा॰ ३६७।*

खंडिअं– खण्डितम्। देशतो भग्नम्। *आव॰ ५७२। आव॰ ७७८।*

खंडिए– खण्डिकः-छात्रः। *उत्त॰ ३६४।*

खंडिओ– छात्रः। *आव॰ ५६१।*

खंडित्तए– खण्डयितुं-देशतः भङ्क्तुम्। *ज्ञाता॰ १३९।*

खंडिय– खण्डितं-दण्ड इव विभागेन छिन्नम्। प्रश्न *१३४।* खण्डिकः-छात्रः। *आव॰ २४६। उत्त॰ ३६७।*

खंडी– खण्डिः-अपद्वारम्। *विपा॰ ५६।*

खंडीओ– प्राकारच्छिद्ररूपाः। *ज्ञाता॰ ८१।*

खंत– पिता। *बृह॰ ३२* आ। *पिण्ड॰ १२७।* क्षमोपेतः क्षान्तः। *सूत्र॰ २९८।* वृद्धः। *उत्त॰ १२८। पिण्ड॰ ३९६। दशवै॰ ८९।* पिता। *आव॰ ३०४।*

खंतपुत्तो– वृद्धपुत्रः। *आचा॰ ६४।*

खंति– क्रोधनिग्रहः। *ज्ञाता॰ ७।*

खंतिखमे– क्षान्त्या क्षमते न त्वसमर्थतया योऽसौ क्षान्तिक्षमः-अनगारः। *भग॰ १२२।*

खंतिखमाते– क्रोधनिग्रहेण क्षमा-मर्षणं न त्वशक्ततयेति क्षान्तिक्षमा। *स्था॰ १४९।*

खंतिया– जननी। *ओघ॰ १६३। पिण्ड॰ १२६, १२७।*

खंतिसुद्धि– क्षान्तिः-क्षमा शुद्धिः-आशयविशुद्धता, क्षान्तेः शुद्धिः-निर्मलता क्षान्तिशुद्धिः। *उत्त॰ ५८।*

खंती– क्षान्तिः-क्रोधनिग्रहः तज्जन्यत्वादहिंसाऽपि क्षान्तिः। अहिंसायास्त्रयोदशं नाम। *प्रश्न॰ ९९।*

खंतेण– पितरि गहिते। *निशी॰ १७६* अ।

खंद– स्कन्दः-कार्त्तिकेयः। *भग॰ १६४। जम्बू॰ १२३। ज्ञाता॰ ४६, १३९। जीवा॰ २८१।* पात्रालके ग्रामकूटपुत्रः। *आव॰ २०१।*

खंदए– स्कन्दणः श्रावस्तीनयर्गां कात्यायनगोत्रो गर्दभालिशिष्य स्कन्धकः परिव्राजकः। *भग॰ ११२, १२४।* स्कन्दकः-स्कन्दकसम्बन्ध्युद्देशकः। *भग॰ २१२। भग॰ ३२१, ३२४, ४५६, ५१९, ५२३, ५५२, ५५४, ६२४।* श्रावस्तीनगर्यां जितशत्रोः पुत्रः। *बृह॰ १५२* आ। जितशत्रुराजपुत्रः। *उत्त॰ ११४।* भगवत्यां द्वितीयशत उद्देशकः। *ज्ञाता॰ १२४, १९८।*

खंदगगच्छो– दृष्टान्तविशेषः। *निशी॰ ३०३* अ।

खंदगपडिमा– स्कन्दप्रतिमा। *आव॰ २२१।*

खंदगाह– स्कन्दग्रहः-उन्मत्ततताहेतुः। *भग॰ १९७।*

खंदगो– आयविशराहणाए दिट्ठंतो। *निशी॰ ४४* अ। स्कंदकः। *अन्त॰ १८।* चंपाणाम णगरी, तत्थ खंदगो राया। *निशी॰ ४४* अ।

खंदमह– स्कन्स्य-कार्तिकेयस्य प्रतिनियतदिवसभावी उत्सवः स्कन्दमहः। *जीवा॰ २८१।* कार्तिकेयोत्सवः। *ज्ञाता॰ ४६।*

खंदसिरी– स्कन्दश्रीः-विजयस्य चौरसेनापतेर्भार्या। *विपा॰ ५७।* राजगृहेऽर्जुनकमालाकारस्य भार्या। *उत्त॰ ११२।*

खंदिल– स्कन्दिलः तगरायामाचार्यशिष्यः, सद्व्यवहारका-चार्यः। *व्यव॰ २५६* आ।

खंध– स्तम्भः। *निशी॰ २१* अ। स्कन्धः-रूपवेद-नाविज्ञानसञ्ज्ञासंकाराख्यः। *प्रश्न॰ ३१।* स्कन्धः-अंशदेशः। *जम्बू॰ ११२।* स्कन्धः-स्थुडम्। राय॰ ९। स्थुडः। *दशवै॰ २४७। औप॰ ७। जीवा॰ १८७। उत्त॰ २४।* स्थुडं यतो मूलशाखाः प्रभवन्ति। *जम्बू॰ २९।* पागरी पेढं वा, घरो मृदिष्टकदारुसंघातो स्कन्ध इत्यर्थः। *निशी॰ ८४* अ। स्कन्धः-संहतानेकपरमाणुरूपः। *उत्त॰ ६७४।*

खंधगसीसा– कुम्भकारकटे यन्त्रपीलिताः। *मरण॰।*

खंधग्गहो– स्कन्धग्रहः। *जीवा॰ २८४।*

खंधदेसा– स्कन्धदेशाः। स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणामम-जहतां बुद्धिपरिकल्पिता द्व् यादिप्रदेशात्मका विभागाः। *जीवा॰ ७।*

खंधप्पएसा– स्कन्धप्रदेशाः-स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणाम-महजतां प्रकृष्टा देशाः-निर्विभागा भागाः परमाणवः। *जीवा॰ ७।* स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणामपरिणतानां बुद्धिपरिक-ल्पिताः-प्रकृष्टा देशा निर्विभागा भागाः परमाणव इत्यर्थः, स्कन्धप्रदेशाः। *प्रज्ञा॰ १०।*

खंधबीए– स्कन्धबीजः सल्लक्यादिः। *सूत्र॰ ३५०।*

खंधबीया– निहुशल्लक्क्यरणिकादयः स्कन्धबीजाः। *आचा॰ ५७।* स्कन्धबीजं शल्लक्यादि। *दशवै॰ १३९।*

खंधभूयं– स्कन्धभूतं-नालकल्पम्। *प्रश्न॰ १३४।*

खंधवसहो– स्कन्धवृषभः-ककुदधरः। *आव॰ ७१९।*

खंधा– खन्धः-थुडम्। राय॰ ६। स्कन्दन्ति-शुष्यन्ति धीयन्ते च-पुष्यन्ते पुद्गलानां विचटनेन चटनेन चेति स्कन्धाः। *प्रज्ञा॰ ९।* स्कन्धाः-स्थुडाः। *प्रज्ञा॰ ३१।* द्वीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१।*

खंधार– स्कन्धावारः सैन्यसंन्निवेशः। *आव॰ ४२४।* राजबिम्बयुतं स्वचक्रं परचक्रं वा। *बृह॰ २७३* आ।

खंधारमाणं– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८।*

खंधावार– स्कन्धावारम्। *आव॰ २१७।* स्कन्धावारः। हस्ती। *आव॰ ६७१। प्रज्ञा॰ ३००। निशी॰ ३५८* अ। *आव॰ २९९, ५५६।*

खंभ– स्तम्भः। औत्पातिकीबुद्धौ द्वादशमुदाहरणम्। *नन्दी॰ १५३। भग॰ २३८।* स्तम्भः-कायोत्सर्गस्य विंशतौ दोषे तृतीयो दोषः। *आव॰ ७९८।* सामान्यतः। *जीवा॰ १८२।* सुवर्णरूप्यमयं फलकम्। *जीवा॰ १८०।* औत्पात्तिकी बुद्धौ यस्य दृष्टान्तः। *आव॰ ४१९।*

खंभछाया– स्तम्भछाया, छायाभेदः। *सूर्य॰ ९५।*

खंभपुडंतरं– स्तम्भपुटान्तरं-द्वौ स्तम्भौ स्तम्भपुटं तेषामन्तरम्। *जीवा॰ १८२। जम्बू॰ २५।*

खंभबाहा– स्तम्भपार्श्वम्। *जीवा॰ १८२।*

खंभसीसं– स्तम्भशीर्षम्। *जीवा॰ १८२।*

खंभागरिसो– स्तम्भाकर्षः। *आव॰ ४१२।*

खंभूग्गया– स्तस्भोद्गता-स्तम्भोपरिवर्तिनी। *जम्बू॰ ४३।*

खंभोग्गया– स्तम्भोद्नता-स्तम्भोपरिवर्तिनी। *जीवा॰ १९९।*

खइअ– खचितानि-विच्छुरितानि। *जम्बू॰ २७५, ७९।*

खइए– क्षयाज्जातः क्षायिकः-अप्रतिपातिज्ञानदर्शनचारित्र-लक्षणः। *सूत्र॰ २३०।* क्षायिकः-क्षयः कर्मणोऽपगमः स एव तेन या निर्वृत्तः। *अनुयो॰ ११४।*

खइय– क्षापितं-प्रशस्तयोगैर्निर्वाणहुतभुक् तुल्यतां नीतम्। *आव॰ ७९।* ख्यातम्-प्रसिद्धम्। *आव॰ ७००।* खादितं-भक्षणम्। *स्था॰ २७६।*

खइया– असकृदासेविता। *बृह॰ १३* अ।

खइव– संवेगशून्यधर्म्मकथनलक्षणः। *स्था॰ २७६।*

खउर– खोरखदिरमादियाण खउरो। *निशी॰ २३* अ। खपुरं-चिक्कणद्रव्यम्। *बृह॰ २२०* आ। कठिनमतिश-येनघनम्। *बृह॰ ५५* अ। शुष्कः। *निशी॰ ६१* अ।

खउरंगे– व्याप्ताङ्गः। *मरण॰।*

खउरपुत्तो– क्षौरपुत्रः *आव॰ २११।*

खउरिता– खरण्टिता रोषेणेत्यर्थः। रुष्टाः। *निशी॰ २०७।*

खउरियाओ– कलुषितचेतसः कषायेणानालपनम्। *बृह॰ २०९* आ।

खओ– क्षयः यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशः। *जीवा॰ १८३।*

खओवसम– क्षयोपशमः-उदितानां क्षयोऽनुदितानां विष्क-म्भितोदयत्वम्। *ज्ञाता॰ ६४।*

खओवसमिए– क्षायोपशामिकः-क्रियामात्रं क्षयोपशमेन वा निवृतः। *भग॰ ६४९।* क्षयादुपशमाच्च जातः क्षायोपशामिकः देशोदयोपशमलक्षणः। *सूत्र॰ २३०।*

खओवसमिया– तथाऽवधिज्ञानावरणीयस्य कर्मण उदयावलि-काप्रविष्टस्यांशस्य वेदनेन योऽपगमः स क्षयोऽनुदयावस्थस्य विपाकोदयविष्कम्भणमुपशमः क्षयश्च उपशमश्च क्षयोपशमौ ताभ्यां निवृतं क्षायोपशमिकः। *प्रज्ञा॰ ४३१।*

खक्खरओ– खर्खरकः *आव॰ ४२४।*

खक्खरो– खर्खरः-अश्वोत्त्रासनाय चर्ममयो वस्तुविशेषः, स्फुटितवंशो वा। *विपा॰ ४७।*

खग्ग– खड्गः शस्त्रविशेषः। *उत्त॰ ७११।* आटव्यो जीवस्तस्य विषाणं-शृङ्गम्। *स्था॰ ४६४।* आयुधम्। *भग॰ ३१८।* खड्गः-एकशृङ्ग आटव्यस्तिर्यग्विशेषः। *बृह॰ १०६* अ। गण्डीपदचतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८।* खड्गः-अटव्यश्चतुष्प-दविशेषः। *औप॰ ५३। प्रज्ञा॰ १००।* कायोत्सर्गफले दृष्टान्तः। *आव॰ ८०१।* आटव्यश्चतुष्पदविशेषः। *प्रश्न॰ १५८।* यस्य पार्श्वयोः पक्षवच्चर्माणि लम्बन्ते शृङ्गं चैकं शिरसि भवति। *प्रश्न॰ ७।* एगसिंगी अरण्णे भवति। नि॰चू॰ *४७* आ। आटव्यचतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८६।* वनजीवः। *मरण॰।*

खग्गथंभणं– खड्गस्तम्भनं-कायोत्सर्गफले दृष्टान्तः। *आव॰ ७९९।*

खग्गपुरा– सुवल्गुविजये राजधानी। *जम्बू॰ ३५७।*

खग्गपुराओ– विदेहेषु राजधानीविशेषः। *स्था॰ ८०।*

खग्गा– गण्डीपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

खग्गि– यस्य गच्छतो द्वयोरपि पार्श्वयोश्चर्माणि लम्बन्ते स जीवविशेषः। कोऽपि श्रावकः

प्रथमयौवनमदमोहितमना धर्मकृत्वा पञ्चत्वमुपागतः। खड्गः समुत्पन्नः। *नन्दी॰ १६७*। खड्गिः-आरण्यपशुविशेषः। *ज्ञाता॰ १०४*।

खग्गी– खड्गी-श्वापदविशेषः। *आव॰ ४३७*। आटव्यो जीवः। *औप॰ ३५*। विजये राजधानी। *जम्बू॰ ३४७*।

खग्गीतो– महाविदेहे विजयराजधानी। *स्था॰ ८०*।

खग्गूड– कुटिलः। *पिण्ड॰ १००*।

खग्गूडप्रायाः– अवसन्नाः। *ओघ॰ १५६*।

खग्गूडा– इहालसाः। स्निग्धमधुराद्याहारलम्पटाः। खग्गूडा उच्यन्ते। *बृह॰ २४०* अ। अलसाः, निर्द्धर्मप्रायाः। *ओघ॰ ७१, १५३*।

खग्गूडी– निर्धर्मप्रायः। *ओघ॰ ४४*।

खग्गूडे– खग्गूडप्रायः। *ओघ॰ ७३*।

खग्गूडो– शठप्रायः। *ओघ॰ ४४*। निद्रालुः। *बृह॰ २४२* अ।

खचित– परिगतः। *औप॰ ११*।

खचिय– खचितं-मण्डितम्। *ज्ञाता॰ २७*। *भग॰ ४७७*।

खज्ज– खाद्यं-कूरमोदकादि। *ज्ञाता॰ २३*। खाद्यानि-अशो-कवर्त्तयः। *उपा॰ ५*। *प्रश्न॰ १५३*। खाद्यम्। *आव॰ २००*।

खज्जइ– खाद्यते-भक्ष्यते। *आव॰ ५६६*। खाद्यते खण्डखा-द्यादि। *उत्त॰ ३६०*।

खज्जगं– खाद्यकम्। *निर॰ ३४*।

खज्जगविही– खण्डसाद्यादिलक्षणभोजनप्रकारः। *भग॰ ६६२*। *आव॰ ३१४*।

खज्जगादि– खाद्यकादि। *आव॰ ८२२*।

खज्जगावणो– खाद्यकापणः कुल्लुरिकापणः। *आव॰ २७५*।

खज्जयं– खाद्यम्। *उत्त॰ १५९*।

खज्जुरी– वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

खज्जूरे– खर्जूरं-पिण्डखर्जूरादि। *उत्त॰ ६५४*।

खज्जूरपायगं– पानकभेदः। *आचा॰ ३४७*।

खज्जूरसारए– मूलदलखर्जूरसारनिष्पन्न आसवः खर्जूरसारः। *प्रज्ञा॰ ३६४*।

खज्जूरसारो– खर्जूरसारः। *जीवा॰ २६५*।

खज्जूरि– वृक्षविशेषः। *भग॰ ८०३*।

खज्जूरिवणं– खर्जूरिवनं-वृक्षविशेषवनः। *जीवा॰ १४५*।

खज्जूरिसार– खर्ज्जूरसारनिष्पन्न आसवविशेषः। *जम्बू॰ १००*।

खज्जोयग– खद्योतकः-प्राणिविशेषः। *आचा॰ ५०*।

खञ्जरीटः– जीवविशेषः। *दशवै॰ १४१*।

खटिका– वर्त्तिः। *बृह॰ २५* आ।

खट्ट– खट्वा। *आव॰ ३५४*।

खट्टमेहा– अम्लजलमेघाः। *जम्बू॰ १६८*। *भग॰ ३०६*।

खट्टा– खट्वा-तूल्यादि। *प्रश्न॰ ९२*।

खट्टामल्लो– अतिशयेन वृद्धः। खट्टामल्लो नाम प्रबलराजर्जरि-तदेहतया यः खट्वाया उत्थातुं न शक्नोति। *बृह॰ ५९*।

खट्टिका– कम्मजुंगितविसेसो। *निशी॰ ४३* आ।

खट्टीदए– खट्टोदकं-ईषदम्लपरिणाम्। *जीवा॰ २५*। *प्रज्ञा॰ २८*।

खड– तृणम्। *व्यव॰ १०७* अ।

खडखडावेह– वादयत। *आव॰ २०४*।

खडखडेइ– खटत्कारयति। *उत्त॰ १३८*।

खडपूलग– तृणपूलकः। *निशी॰ १२८* अ।

खडपूलय– तृणपूलिकाः। *मरण॰*।

खड्डग– खड्डुकः-टोलकः। *बृह॰ ९२* अ।

खड्डं– गर्त्तम्। *आव॰ ६२४*।

खड्ड– गर्त्तः। *आव॰ १९६, ३८४*।

खड्डा– गर्त्ता। *आव॰ ३६८, ६८५*।

खड्डुग– अङ्गुलीयकविशेषः। *औप॰ ५५*।

खड्डुय– खड्डुकः, टक्करः। *उत्त॰ ६२*।

खणं– क्षणं-स्तोककालम्। *दशवै॰ १८०*। क्षणः-समयः। *आव॰ ६१०*। पारणम्। *आव॰ ३२५*। क्षणं-अवसरः। *सूत्र॰ ७६*। परमनिरुद्धःकालः क्षणः। *सूत्र॰ २५*। बहुतरोच्छ्वास-रूपः। *ज्ञाता॰ १०४*। क्षणः-प्रस्तावः। *उत्त॰ ६३१*। परम निरुद्धकालः क्षणः अष्टप्रकारेण कर्म्मणा संसारबन्धनैर्वा विषयाभिष्वङ्गस्नेहादिभिः। *आचा॰ ११२*। क्षणनं क्षणो हिंसा। *आचा॰ २११*। मुहूर्त्तः। *स्था॰ ३४५*। क्षणं-अवसरम्। *आचा॰ १०९*।

खणजोइणो– परमनिरूद्धः कालः क्षणः, क्षणेन योगः-सम्बन्धः क्षणयोगः स विद्यते येषां ते क्षणयोगिनः। *सूत्र॰ २५*।

खणणं– खननम्। *आव॰ ६१९*।

खणभंगविघायत्थं– क्षणभङ्गविघातार्थं-

निरन्वयक्षणिकवस्तु-वादविघातार्थम्। *दशवै० १३०*।

खणयन्नो– क्षण एव क्षणकः-अवसरो भिक्षार्थमुपसर्प्पणादि-कस्तं जानातीति। *आचा० १३२*।

खणलव– कालोपलक्षणः क्षणलवादिषु संवेगभावनाध्यानासेव-नतश्च निर्वर्त्तितवान्। *ज्ञाता० १२२*।

खणसंखडी– क्षणसङ्खडी। *दशवै० ८९*।

खणाति– क्षणाः सङ्ख्यातानप्राणलक्षणः। *स्था० ८७*।

खणिए– क्षणिकः निर्व्याघातः। *ओघ० २००*।

खणित्तु– खनित्वा-समाकृष्य। *आचा० ४१७*।

खणीकरेंति– प्रक्षालयन्ती। *आव० २१५*।

खण्णा– (देशी०) सर्वात्मना लूषिता। *व्यव० १४०* आ।

खतं– स्वदेहोद्भवमेव क्षतम्। *अनुयो० २१२*।

खतए– राहवप्रलापाते कृष्णपुद्गलविशेषः। राहोः चतुर्थनाथ। *सूर्य० २८७*।

खतोवसम– क्षयोपशमः क्रियारूप एव। *स्था० ३७८*।

खत्तं– क्षत्रम्। *उत्त० २०७*। क्षत्रं-करीषविशेषः। *पिण्ड० ८*। *ओघ० १३०*।

खत्तए– खातः-गर्तः इत्यर्थः। खातकः क्षेत्रस्येति गम्यते चौर इत्यर्थः। *ज्ञाता० ७९*।

खत्तखणग– क्षात्रखानका-ये सन्धानवर्जितभित्तीः काणयन्ति। *ज्ञाता० २३९*।

खत्तमेहा– खात्रमेघाः-करीषसमानरसजलोपेतमेघाः। *जम्बू० १६८*। *भग० ३०६*।

खत्ता– क्षता-क्षत्रीयस्त्रीक्षुद्राभ्यां जातः। *आचा० ८*। क्षत्राः-क्षत्रियजातयो वर्ण्णसङ्करोत्पन्ना वा। तत्कर्मनियुक्ताः। *उत्त० ३६३*।

खत्तिआ– क्षत्रियाः-श्रेष्ठ्यादयः। *दशवै० १९१*। क्षत्रिया। *आव० १२८*। क्षणनानि क्षतानि तेभ्यस्त्रायत इति क्षत्रियः-राजा। *उत्त० १८२*। राजा। *भग० १०१*। राजकुलीनः। *भग० ११५*। इक्ष्वाकुवंशादिकः। *सूत्र० २३६*। कुलविशेषः। *आव० १७९*। राष्ट्रकूटादयः। *आचा० ३२७*। सामान्यराजकुलीनः। *औप० ५८*।

खत्तियकुंडग्गामं– क्षत्रियकुण्डग्रामं-सिद्धार्थराजधानी। *आव० १७९*। नगरविशेषः। *भग० ४६१*।

खत्तिया– सामान्यतो राजोपजीविनः। *बृह० १५२* अ। क्षत्रियाः-हैहेयाद्यन्वयजाः। *उत्त० ४१८*। चक्रवर्त्तिवासुदेव-बलदेवप्रभृतयः। *आचा० ३३३*। क्षत्रियः-सामान्य राजकु-लीनाः। राय० *१२१*। क्षत्रियाः-शेषप्रकृतितया विकल्पि-ताः। *जम्बू० १४५*। क्षत्रियाः-आरक्षिकाः। *निशी० २७७* अ।

खत्थो– विलक्षः। *दशवै० ५५*।

खदिरचञ्चुः– वञ्जुलः। *प्रश्न० १०*।

खदिरसारए– खदिरसारः। *प्रज्ञा० ३६०*।

खद्धं– त्वरितम्। *आचा० ३३७*। बृहच्छब्देन खरकर्कशनि-ष्ठुरम्। *आव० ७२६*। बहुः। *उत्त० १४६*। महाप्रमाणम्। *बृह० ६४* आ। प्रचुरम्। *आव० ३९३, ५६*। *बृह० २३५* अ। *बृह० २४८* आ। *ओघ० ६८, १२७*। *पिण्ड० ७०, १३९*। *आव० ७२६*। *प्रश्न० १२८*। *आचा० ३३९*। प्रचुरम्। *व्यव० १८०* अ। प्रभूतम्। *ओघ० ४८*। *प्रश्न० १४१*। *आचा० ३५३*। शीघ्रम्। *आचा० ३५२*। बृहता बृहता कवलेन भक्षणम्। *आव० ७२६*। बृहत्प्रमाणं। *ओघ० २१६, १२१*। *स्था० १३८*।

खद्धपलालितो– प्रचुरपलालितः-सुखीधनाढ्यः। *उत्त०२२५*।

खद्धवसभो– समर्थवृषभः। *उत्त० ३०३*।

खद्धादाणिअगामो– खद्धादानिकग्रामः-समृद्धग्रामः। *ओघ० ४८*।

खद्धादाणिओ– बहुदानीयः-श्रीमान्। *आव० ६७९*।

खद्धादाणिय– प्रचुरादानीयः-ऋद्धिमान् धनाढ्यः। *आव० ४३३*।

खद्धादाणियगिहा– ईश्वरगृहा इत्यर्थः। *निशी० ३५०* अ।

खनित्रम्– खननसाधनम्। शस्त्रविशेषः। *आचा० ३६*।

खन्ना– मत्स्यकच्छपविशेषः। *जीवा० ३२१*।

खपुसवग्गुरि– अद्धजंघातियाओ। *निशी० १८* अ।

खपुसा– हिमाहिकण्टकादिरक्षायै पादपरिधानम्। *बृह० १०१* अ। घुटकच्छादकं चर्म। या घुण्टकं पिदधाति सा खपुसा। *बृह० २२२* आ।

खमंत– क्षपयन, क्षपणम्। *पिण्ड० १६६*।

खम– क्षेम-सङ्गतत्वम्। क्षम-युक्तार्थः। *बृह० १०७* अ। क्षमा। *भग० ४६९*।

खमइ– क्रोधाभावात् क्षमते। *भग० ४९८*।

खमए– क्षपकः। *आव० २६३*। क्षपकः-विकृष्टतपस्वी। *बृह० २५९* आ।

खमओ– क्षपकः-श्रमणः। *दशवै० ३७*।

एकान्तरितादिक्षपण-कर्ता। *बृह॰ ९४* आ।

खमग– क्षपकं-मासक्षपकादिकम्। *ओघ॰ ६४*। अनशनी। *भक्त॰*। उपोषिताः। *बृह॰ २४४* आ। *निशी॰ ५५* अ। क्षपकः। आ॰ *१९५*।

खमणं– उपवासः। *बृह॰ ९४* आ। क्षपण-अभक्तार्थः। *व्यव॰ १९१* आ।

खमणाइयं– क्षापणादि-अनशनतादि। *आव॰ ८४०*।

खमया– क्षमा-क्रोधनिग्रहः। चतुर्दशोऽनगारगुणः। *आव॰ ६६०*।

खमसि– क्षमसे क्षोभाभावेन। *ज्ञाता॰ ७१*।

खमा– क्षमा-अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसञ्ज्ञितस्या-प्रीतिमात्रस्याभावः, अथवा क्रोधमानयोरुदयनिरोधः। *सम॰ ४६*। सङ्गतत्वम्। *औप॰ ५९*। रोसावगमो। *निशी॰ २१६* अ। क्षमत्वम्। *भग॰ ४५९*।

खमामि– आत्मनि परे वाऽविकोपतया क्षमे। *स्था॰ २४७*।

खमावणय– परस्यासन्तोषवतः क्षमोत्पादनम्। *भग॰ ७२७*।

खमाह– क्षमस्व, सहस्व। *उत्त॰ ३६७*।

खमिय– क्षपिकः। *बृह॰ २०५* अ।

खय– क्षयः राजयक्ष्मा। *बृह॰ १७०* अ। सर्वविनाशः। *भग॰ ५३९*।

खयक्का– कीलकः। *उत्त॰ ८५*।

खरं– कठिनम्। *जीवा॰ ८९*। उच्चेण महंतेण सरेण जं सरीसं उक्तं तं खरं। नि॰ *२९९* अ। खरस्थानम्। *अनुयो॰ १३३*। सरोसवयणमिव अकंतंखरं। *निशी॰ २७८* अ।

खरंटं– खरण्टयति-लेपवन्तं करोति यत् तत् खरण्टं अशुच्यादि। *स्था॰ २४४*।

खरंटणा– खिंसना। *ओघ॰ ४५*। णिप्पिवासा। *निशी॰ १३१* अ। प्रवचनोपदेशपूर्वकं परुषभणनम्। *ओघ॰ ४२*। खरंठनं-निर्भर्त्सनम्। *व्यव॰ १२०* आ।

खरंटना– निर्भर्त्सना। *बृह॰ १५०* आ।

खरंटि– खरण्टनम्, लेपविशेषः। *पिण्ड॰ ८७*।

खरंटिओ– तिरस्कृतः। *उत्त॰ १३९*।

खरंटिता– खउरिता रोसेणेत्यर्थः। रुष्टः। *निशी॰ २०७*।

खरंटेउं– निर्भर्त्स्य। *बृह॰ ३९* आ।

खरंटेति– भर्त्सयति। *निशी॰ २११* आ।

खरंटेहिंति– निर्भर्त्सयिष्यन्ति। *दशवै॰ ३८*।

खरंटो– उ जो मलो कमढं भण्णति। *निशी॰ १९०* आ।

खरंडिय– संतर्ज्य, निर्भर्त्स्य। *आव॰ ४३१*।

खर– खरस्थानम्। *स्था॰ ३९७*। निलम्। आ॰ *८५४*। गर्दभः। *प्रज्ञा॰ २५२*। *जीवा॰ २८२*। दासः। *बृह॰ १६७* अ। खरसन्नय। *ओघ॰ १४६*।

खरउ– शातवाहनस्यामात्यः। *व्यव॰ १९३* अ।

खरए– राहवाप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषाः। *सूर्य॰ २८७*। राहोः। चतुर्थनाम। *भग॰ ५७५*। राहो तृतीयनाम। *सूर्य॰ २८७*। दासदासीरूपं द्व्यरक्षकम्। *बृह॰ १६४* आ।

खरओ– द्व्यक्षरो वा कर्मकरः। *ओघ॰ १५६*। दासः *बृह॰ २२५* अ।

खरकंट– खरा-निरन्तरा निष्ठुरा वा कण्टाः-कण्टकाः यस्मिं-स्तत् खरकण्टं बुब्बूलादिडालम्। *स्था॰ २४४*।

खरकंटयसमाणे– यस्तु प्रज्ञाप्यमानो न केवलं स्वाग्रहान्न चलति अपितु प्रज्ञापकं दुर्वचनकण्टकैर्विध्यति स खरकण्ट-कसमानः। *स्था॰ २४३*।

खरकंडे– खरकाण्डम्। कठिनो विशिष्टो भूभागः। *जीवा॰ ८९*।

खरकम्मिअ– दण्डपासगः। *ओघ॰ ८९*।

खरकम्मिए– खरकर्मिकः-आरोग्याभिरतौ बीजपुरवनदृष्टान्ते कुम्भकाराद्यन्यतमः। *आव॰ ४५३*।

खरकम्मिओ– खरकर्मिकः-आरक्षकः। *बृह॰ १०२* आ।

खरकम्मिय– खरकर्मिकः। *आव॰ ६२७*।

खरकम्मिया– सन्नद्धपरिकराः। *बृह॰ १२९* अ। रायपु-रिसा। *निशी॰ २१०* अ। राजपुरुषाः। *बृह॰ २१३*।

खरकरं– श्लक्ष्णपाषाणभृतचर्मकोशकविशेषः, स्फुटितवंशो वा। *प्रश्न॰ ५९*।

खरग– खरकः-वैद्यविशेषः। *आव॰ २२६*। दासः। *निशी॰ १०५* आ।

खरणं– बब्बूलादिडालम्। *स्था॰ २४४*।

खरदूषणः– रावणभगिनीपतिः। *प्रश्न॰ ८७*।

खरपम्हं– खरा णिसड्ढा दासाओ जस्स तं खरपम्हं। *निशी॰ २४५* आ।

खरपिंड– कठिनपिण्डः। *आचा॰ ३६१*।

खरफरुस– खरपरुषः अतिकर्कशः। *आव॰ ६१७*। *ज्ञाता॰ ७९*। स्पर्शतोऽतीवकठोरः। *भग॰ ३०८*।

खरबायरपुढवी– खरबादरपृथिवी-मण्यादिषट्त्रिंशद्

भेदात्मिको पृथिवी। *आचा॰ २८।*

खरबादरपुढविक्काइया– खरा नाम पृथिवी संघातविशेषं काठिन्यविशेषं वाऽऽपन्ना तदात्मका जीवा अपि खराश्च ते बादरपृथिवीकायिकाश्च, खरा चासौ बादरपृथिवी च स कायाः-शरीरं येषां ते एव खरबादरपृथिवीकायिकाः। *जीवा॰ २२।*

खरमुखी– काहला, तस्स मुहत्थाणां खरमुहाकारं कट्टमयंमुहं कज्जति। *निशी॰ ६२ अ।*

खरमुहि– खरमुखी काहला। *भग॰ ४४७, २१६। जम्बू॰ १०१।*

खरमुही– काहला। *जीवा॰ २४५।* तोहाडिका। *आचा॰ ४१२।* खरमुखी-काहला। *औप॰ ७३। जीवा॰ २६६।* खरमुही-काहला। *जम्बू॰ १९२।* राय॰ २५।

खरवायं– खरवातम्। *आव॰ २१७।*

खरशानया– पाषाणप्रतिमावत्। *स्था॰ २३२।*

खरस्सरे– यो वज्रकण्टकाकुलं शाल्मलीवृक्षं नारकमारोप्य खरस्वरं कुर्वन्तं कुवन् वा कर्षति स खरस्वरः। चतुर्दशः पर-माधार्मिकः। *आव॰ ६५०।* चतुर्दशः परमाधार्मिकः। *उत्त॰ ६१४। सूत्र॰ १२४।*

खरा– कठिनाः। *उत्त॰ ६८९।* सङ्घातविशेषं काठिन्यविशेषं वाऽऽपन्ना पृथिवी। *जीवा॰ २२।* निरन्तरा निष्ठुरा वा। *स्था॰ २४३।*

खरावत्ते– खरो-निष्ठूरोऽतिवेगितया पातकश्छेदको वा आव-र्त्तनमावर्त्तः स च समुद्रादेश्चक्रविशेषाणां वेति खरावर्त्तः। *स्था॰ २८८।*

खरि– दुवक्खरिदा। *निशी॰ २० अ।*

खरिए– द्व्यक्षरिका। *ओघ॰ २२३।*

खरिका– कठोरकर्मा। *उत्त॰ १०७।*

खरिमुह– खरमुखी-नपुंसकी दासी वा। *व्यव॰ १५० अ।*

खरियत्ताए– नगरबहिर्वर्त्ति वेश्यात्वेन। *भग॰ ६९४।*

खरिया– द्व्यक्षरिका। दासी। *बृह॰ ४७ आ।* द्व्यक्षरिका *ओघ॰ ५६।* द्व्यक्षरिका-कर्मकरी। *ओघ॰ १५६।* दासी। *निशी॰ ३९ आ।*

खरोदी– लिपिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

खर्जु– कण्डूम्। *स्था॰ ५०५।*

खर्व्व– स ए उन्नतो जात्यादिना भावेनाशोकादिरिति। *स्था॰ १८२।*

खलं– कुथितादि विशिष्टम्, अल्पधान्यादि वा। *सूत्र॰ ३२४।* खलं-धान्यमेलनपचनादिस्थण्डिलम्। *जम्बू॰ १४९।* धान्यमेलनादिस्थण्डिलम्। *ज्ञाता॰ १०४।*

खलखलंति– खटत्खटदिति भवन्ति, खलखलशब्दं कुर्वन्ति। *आव॰ ७१९।*

खलखलिति– खलखलशब्दं करोति। *उत्त॰ ३०३।*

खलखिलं– निर्जीवमित्यर्थः। *व्यव॰ १९६ आ।*

खलगं– जत्थ मंसं सोसंति। *निशी॰ २२ आ।*

खलणा– स्खलना-प्रतिसेवणा, भङ्गो, विराधना, उपघातः अशोधिः, शबलीकरणं, मइलणा च। *ओघ॰ २२५।*

खलपुरिसो– खलपुरुषः। राजपुरुषविशेषः। *आव॰ ८२१।*

खलमत्स्य– मत्स्यविशेषः। *प्रश्न॰ ९।*

खलयं– खलकं-धान्यमेलनस्थण्डिलम्। *ज्ञाता॰ ११६।*

खलयारिओ– स्खलीकृतः। *आव॰ २९४।*

खलाहि– (देशी) अपसर। *उत्त॰ ३५९।*

खलिणं– कायोत्सर्गस्य एकोनविंशतौ दोषेयोदशमदोषः। *आव॰ ७९८।* अस्सरस्सी। *दशवै॰ १५४।* खालिनं-कविकम्। *आव॰ २६१।* खलिनः-कविकः। *ज्ञाता॰ २२०।*

खलियं– स्खलितं-छलितम्। *ओघ॰ २२५।* विनष्टम्। *बृह॰ १०२ आ।*

खलियाइ– स्खलितादि। *भग॰ ८९१।*

खलीकओ– उपसर्गितः। *दशवै॰ ३७।*

खलीकुर्वन्ति– । *ओघ॰ ४५।*

खलीण– विषमभूमिः। *आव॰ ५६।* खलिनं-कविकम्। *दशवै॰ २८३।*

खलीणा– खलीना-आकाशस्था। *विपा॰ ४४।*

खलुंक– गलिरविनीत इति। *स्था॰ ३५०।* दुःशिष्यः। *उत्त॰ ५४८, ५५३।*

खलुंकिज्जं– खलुङ्कीयं, उत्तराध्ययनेषु सप्तविंशतितममध्यय-नम्। *उत्त॰ ९। सम॰ ६४।*

खलुंकीयं– उत्तराध्ययनस्य सप्तविंशतितममध्ययनम्। *उत्त॰ ५४८।*

खलु– विशेषणे विशेषेण-अत्यर्थम्। *आचा॰ १०५।* खलुनि-श्चतम्। *सूर्य॰ १४।* अपिशब्दार्थः। *आव॰ ५३०।*

खलुए– गले। *निशी॰ १३८ अ।* पादमणिबन्धः। *विपा॰ ७२।*

खलुकाः– जानुकादिसंधयः, जानुकादिसन्धिषु वातः। *बृह॰ १२३ आ।*

खलुखेत्तं– खलुक्षेत्रं-यत्र किमपि प्रायोग्यं लभ्यते। *व्यव॰ ३३५* आ।

खलुखेत्ता– खलुक्षेत्राणि-यत्राल्पो लोको भिक्षा प्रदाता। *बृह॰ २०६* आ।

खलुग– खलुकः-घुण्टकः। *बृह॰ २२३* अ। चरणगुल्फः। *बृह॰ २५२* अ।

खलुगमेत्तो– कद्दमो। *निशी॰ ७९* आ।

खल्लेज– स्खलयेयुः-निष्काशयेयुः। *उत्त॰ ३६४*।

खल्लए– कपर्द्दकाविशेषः। *ज्ञाता॰ २३५*।

खल्लका– पत्रपुटानि। *बृह॰ ९४* अ।

खल्लकादिः– चर्मकोशः, पार्ष्णित्रम्। *आचा॰ ३७०*।

खल्लग– खल्लकः चर्मपञ्चके द्वितीयो भेदः। *आव॰ ६५२*। खल्लकः। *स्था॰ २३४*।

खल्लाडो– खल्वाटः। *आव॰ ३१७*।

खल्लिता– खल्ल्यौ। *दशवै॰ ८९*।

खल्ली– खलतिः। *उत्त॰ १६५*।

खल्लीडो– खल्वाटः। *उत्त॰ १६५*।

खल्लूट– साधारणवनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा॰ २७*।

खल्लूर– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

खवए– क्षपको मासक्षपणादितपस्तप्यते। *बृह॰ ३५* आ। मासादिक्षपकः। *बृह॰ ३५* आ।

खवगा– क्षपकाः-उपवासिकाः। *ओघ॰ ९४*।

खवणं– क्षपणं-अप्रत्याख्यानादिप्रक्रमेण क्षपकश्रेण्यां मोहाद्य-भावापादनम्। *आचा॰ २९८*।

खवणा– क्षपणा-पापानां कर्मणां क्षपणहेतुत्वात् क्षपणेति। *स्था॰ ६*। क्षपणा श्रुतनाम। *दशवै॰ १६*।

खवणो– चउप्पगारं भवं खवेमाणो। जम्हा अप्पा कम्मं खयइ तम्हा वा। *दशवै॰ १४५*।

खवलिओ– आमन्त्रितः। *आव॰ १७५*।

खवल्लमच्छ– मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ३६*। *प्रज्ञा॰ ४३*।

खविउणं– क्षपयित्वा। *पिण्ड॰ १६७*।

खवियदंदा– क्षीणक्लेशाः। *चतु॰* ।

खस– खसः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*।

खसदुमो – नाम मिगराया। *व्यव॰ २२३* आ।

खसरः– खर्जूः। *जीवा॰ २८४*।

खसर– खशरः-कशरः। *भग॰ ३०८*। कसरः। *जम्बू॰ १७०*।

खसा– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ २३७*।

खसूची- मूर्खः। *सूत्र॰ २३७*।

खहं– आकाशम्। *स्था॰ ११५*। *उत्त॰ ६९८*।

खहयर– खचरजं-पुद्गलविशेषः। *आव॰ ८५४*। खचराः-वैताढ्यवासिनो विद्याधराः। *जम्बू॰ १६८*। खे-आकाशे चरन्तीति खचराः। *प्रज्ञा॰ ४३*।

खहे– खनने भुवो होने च त्याग यद्भवति तत् खहम्। *भग॰ ७७६*।

खाइं– अवश्यम्। *आव॰ ४०१*।

खाइ– कथय। *उत्त॰ ९८, १७४*। गच्छ, अवश्यं वा। *आव॰ २२०*। *भग॰ १७०*। तदा, अत्यन्तम्। *आव॰ ७०१*। पुनः। *भग॰ ३६८*।

खाइज्जा– खादेत्-भाषेत्। *दशवै॰ २३५*।

खाइणं– देशभाषया वाक्यालङ्कारे। *औप॰ ११५*।

खाइमं– खाद्यत्त इति खाद्यं-खर्जूरादि। *दशवै॰ १४९*। खादि-मफलादी। खं-आकाशं तच्चमुखविवरमेव तस्मिन् मातीति खादिमम्। *आव॰ ८५०*। खादिमं-त्रपुषफलादि। *आव॰ ८११*। खादिमं-पिण्डखर्जूरादि। *उत्त॰ ४१८*। खादनं खादस्तेन निवृत्तं खादनार्थं तस्य निर्वर्त्त्यमानत्वादिति। *स्था॰ २०९*। खाद्यत इति खादिमं-नालिकेरादि। *आचा॰ २६५*।

खाइयं– खातवलयम। *प्रश्न॰ १६०*।

खाई– ख्याति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयति-प्रकाशयति। *प्रज्ञा॰ ६००*।

खाओदया– खातायां भूमौ यान्युदकानि तानि खातोदकानि। *भग॰ ६९४*।

खाडखडे– नरकेन्द्रविशेषः। *स्था॰ ३६५*।

खाडहिला– कृष्णशुक्लपट्टाङ्कितशरीरा शून्यदेवकुलादिवा-सिन्यः *प्रश्न॰ ८*।

खाडहिल्ला– खाडहिल्ला। *आव॰ ४१७*।

खाणं– खादनम्। *आव॰ ११५*।

खाणतेणो– खत्तं खणंतो। *निशी॰ ३८* आ।

खाणी– खनिः। *आव॰ २७४*।

खाणु– स्थाणवः-कीलका ये छिन्नावशिष्टवनस्पतीनां शुष्का-वयवाः 'ठुठा' इति लोकप्रसिद्धाः। *जम्बू॰ ६६*। स्थाणुः-ऊर्ध्वकाष्ठम्। *जम्बू॰ १२४*। *दशवै॰ १६४*। स्थाणुः। *ज्ञाता॰ ६५, ७८, ७९*।

खाणुगं– उद्धाययट्ठियं कट्ठं खाणुगं भण्णति। *निशी॰ ६९।*

खाणू– स्थाणुः-कीलकः। *बृह॰ ७७* आ। *निशी॰ ३२* अ।

खातं– खातं, उभयत्रापि सममिति। *प्रज्ञा॰ ८६। नन्दी॰ १६४।* भूमिगृहकादि। *आव॰ ८२६।* उपरि विस्तीर्ण्णमधः सङ्कु-चितम्। राय॰ २।

खाति– । *भग॰ २२९।*

खातिका– अध उपरि च समखातरूपा। *अनुयो॰ १५९।*

खातिया– खातिका-परिखा। *प्रश्न॰ ८।* उपरि विस्तीर्णाऽधः सङ्कटखातरूपाः। *भग॰ २३८।*

खातोच्छ्रितम्– भूमिगृहस्योपरि प्रासादः। *आव॰ ८२६।*

खामिअविडसविआणं– क्षमितव्यवशमितानां-मर्षितत्वेनोप-शान्तानाम्। *सम॰ ३७।*

खामित– क्षामितानि-वचसा मिथ्यादुष्कृतप्रदानेन शमितानि। *बृह॰ २२१* अ।

खामियं– मिथ्यादुष्कृतेन शमितम्। क्षामितव्यम्। *बृह॰ २२२* अ।

खामेत्ता– क्षमयित्वा। *ज्ञाता॰ ७४।*

खायं– खातं-उपरि विस्तीर्णमधः सङ्कटम्। *ज्ञाता॰ २। औप॰ ३।* खातमध उपरि च समम्। *सम॰ १३७।* कूपादि। *अनुयो॰ १५४।* ख्यातं-प्रसिद्धम्। *आव॰ ५१४।* खातं-उभयत्रापि समम्। *जीवा॰ १५९। बृह॰ २८* अ। *जम्बू॰ ७६।* खातानि-पुष्करिण्यादिकानि। *जम्बू॰ २१०।*

खायजसो– ख्यातयशाः। *आव॰ ६१७।*

खायजाणए– खातज्ञायकः। *आव॰ ४२४।*

खार– कटुकम्। *प्रज्ञा॰ ३६५।* क्षारं-तिलक्षारादि। *प्रश्न॰ ५७।* तीक्ष्णम्। *जीवा॰ ३०३।* क्षारः-परस्परं मत्सरः। *जम्बू॰ १२५।* करीरादिप्रभवः। *दशवै॰ १३९।* परस्परमत्सरः। *भग॰ १९८।* क्षारः-भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः। *जीवा॰ ४०।* परस्परं-मात्स्र्यम्। *जीवा॰ २८३।* वस्तुलादिर्लवणं वा। *बृह॰ २७१* अ। यवक्षारादिः। *पिण्ड॰ ८।* वत्थुलमाती खारो। *निशी॰ १९२* आ। वत्थुलादिगो। *निशी॰ ३५६* अ। क्षाराः-क्षाररसामोरडप्रभृतयः। *व्यव॰ ६१* आ। क्षारः-तिलक्षारादिः। *ओघ॰ १३०।* क्षारो-भस्मादि। *स्था॰ ४९२।*

खारकडुयं– क्षारकटुकम्। *आव॰ ५५६।*

खारकाइए– क्षारकायिकी। *आव॰ २१७।*

खारगंधो– क्षारगन्धः-कटुकगन्धः विषगन्धः। *आव॰ ७२३।*

खारतंते– क्षरणं क्षारः, शुक्रस्य तद्विषयं तन्त्रं यत्र तत् क्षारत-न्त्रम्। *स्था॰ ४२७।*

खारतउसी– क्षारत्रपुषी कटुका त्रपुषी। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

खारतउसीफलं– कटुकात्रपुषी क्षारत्रपुषी तस्या एव फलं क्षारत्रपुषीफलम्। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

खारमेहा– क्षारमेघाः सर्जादिक्षारसमानरसजलोपेतमेघाः। *भग॰ ३०६।*

खारवावी– क्षारवापी-क्षारद्रव्यभृतवापी। *प्रश्न॰ २०।*

खारातणा– मण्वगोत्रविशेषः। *स्था॰ ३९०।*

खारिअ– सलवणानि। *ओघ॰ ९८।*

खारिया– क्षारितानि यानि लवणखरण्टितानि शालनकान्या-स्तानानीत्यर्थः। *व्यव॰ १४२* अ।

खारोदए– क्षीरोदकं-ईषल्लवणपरिणामम्। *जीवा॰ २५।* क्षारोदकं-ईषल्लवणस्वभावम्। *प्रज्ञा॰ २८।*

खासिए– कासितम्। *आव॰ ७७९।*

खासिय– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।* खासिकः-चिला-तदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

खिंखिएइ– खिङ्खिङ्करोति। *उत्त॰ १२१।*

खिंखिणि– किङ्किण्यः-क्षुद्रघण्टिकाः। *जम्बू॰ १०६।* किङ्किणी-क्षुद्रघण्टिकाः। *प्रश्न॰ १५९। जीवा॰ १८१। ज्ञाता॰ १६७।* क्षुद्रघण्टाः। *जीवा॰ १९२।*

खिंखिणिघंटाजालं– किङ्किणीघण्टाजालं-क्षुद्रघण्टासमूहः। *जीवा॰ ३६९।*

खिंखिणिजालेण– किङ्किणीजालेण क्षुद्रघण्टिकाः एकैकेन घण्टाजालेन। *जीवा॰ १८१।*

खिंखिणिस्सरे– किङ्किणि-क्षुद्रघण्टिकाः तस्याः स्वरो ध्वनिः किङ्किणिस्वरः। *स्था॰ ४७१।*

खिंखिणी– किङ्किणी-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ ३६९।* क्षुद्रघण्टाः। *जम्बू॰ २३। स्था॰ ४७२।*

खिंखिणीजालं– किङ्किणीजालं-क्षुद्रघण्टासंघातः। *जीवा॰ २०५।*

खिंसं– परोक्षे हीलना खिंसा। *आव॰ ५२८।*

खिंसण– खिंसनं-निन्दावचनं, अशीलोऽसावित्यादिवचनम्। *प्रश्न॰ १६०।* सूयया असूयया वा असकृदुष्टाभिधानं खिंसनम्। *दशवै॰ २५४।* जनसमक्षं निन्दा। *भग॰ २२७।*

खिंसणा– खिंसना-तान्येव लोकसमक्षम्। *औप॰ १०३*। परिभवः। *ओघ॰ २१५*। पुणोरदुघणियस्स भवइ थभा उ काहो उ वा हवेज्जा। *दशवै॰ १४०*। लोकसमक्षमेव जात्याद्युद्घट्टनम्। *अन्त॰ १८*।

खिंसणिज्ज– खिंसनीयो जनमध्ये। *ज्ञाता॰ ९६*।

खिंसंति– परस्परस्याग्रतः तद्दोषकीर्त्तनेन। *ज्ञाता॰ १४९*।

खिंसति– खरण्टयति। *बृह॰ ९८ आ*। निन्दति। *निशी॰ १०६ अ*। *आव॰ ७९९*। स्वसमक्षं वचनैः कुत्सन्ति। *भग॰ १६६*।

खिंसह– खिंसत, जनसमक्षं निन्दत। *भग॰ २१९*।

खिंसा– जुगुप्सा असमीक्षितभाषिणम्। *ओघ॰ ५३*।

खिंसिज्जमाणो– निन्द्यमानः। *आव॰ ८६३*।

खिंसितं– जन्मकर्माद्युद्घट्टनतः। *स्था॰ ३७१*।

खिंसितवयणे– जन्मकर्माद्युद्घट्टनवचनम्। *स्था॰ ३७०*।

खिंसिय– खिंसितः-निन्दापुरस्सरं शिक्षितः। *व्यव॰ १६९*।

खिइ– क्षितयः-धर्माद्या ईषत्प्राग्भारावसाना अष्टौ भूमयः। *आव॰ ६००*।

खिइपइट्ठिअं– क्षितिप्रतिष्ठितं नगरविशेषः। *आव॰ ११६*।

खिइपइट्ठितं– जितशत्रुराजधानी। *निशी॰ ६८ आ*।

खिइपइट्ठियं– क्षितिप्रतिष्ठितं, द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे प्रसन्नचन्द्र-राजधानी। *आव॰ ४८७*। आत्मसंयमविराधानदृष्टान्ते जित-शत्रुनगरम्। *आव॰ ७३२*। नगरविशेषः। *उत्त॰ ३१५*। *आव॰ ३७०*। मगधाया मूलराजधानी। *उत्त॰ १०५*। द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम्। *आव॰ ७२०*।

खिइपतिट्ठियं– क्षितिप्रतिष्ठितं-नगरविशेषः। *उत्त॰ ३०४*। *आव॰ ३८८*।

खिइपदिट्ठिअं– क्षितिप्रतिष्ठितं-नगरविशेषः। *आव॰ ११५*।

खिज्जणिया– खेदक्रिया। *ज्ञाता॰ ३०५*।

खिण्ण– श्रान्तः। *निशी॰ ९९ अ*।

खिति– क्षिति-क्षितिप्रतिष्ठितं, योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नगरम्। अपरनाम चणकपुरं वृषभपुरं राजगृहं च। *आव॰ ६७०*।

खितिखाणतो– उड्डमादी। *निशी॰ ४४ आ*।

खितिपतिट्ठिय– जितशत्रुराजधानी। *निशी॰ ३५१ आ*।

खित्त– क्षेत्रं-आकाशम्। *अनुयो॰ १८१*। क्षिप्तं-व्याप्तम्। राय॰ २८। क्षियन्ति-निवसन्ति तस्मिन्निति क्षेत्रं-आकाशम्। *उत्त॰ ६४५*। क्षेत्रं-शस्योत्पत्तिभूमिः। *आव॰ ८२६*। क्षेत्रं-यदाका-शखण्डं सूर्यःस्वतेजसा व्याप्नोति तत्। *जम्बू॰ ४५९*। इन्द्रकीलादिवर्जितं ग्रामनगरादि। *बृह॰ ३६ अ*। क्षियन्ति-निवसन्त्यस्मिन्निति क्षेत्रं-ग्रामारामादि सेतुकेतूभयात्मकं वा। *उत्त॰ १८८*।

खित्तचित्त– क्षिप्तचित्तः-पुत्रशोकादिना नष्ठचितः। *स्था॰ ३०५*। शोकेन। *स्था॰ ३१५*।

खित्तचित्ता– क्षिप्तं-नष्टं रागभयापमानैश्चित्तं यस्याः सा क्षिप्त-चित्ता। *बृह॰ २३० आ*। अपमानतया क्षिप्तं-नष्टं चित्तं यस्याः सा क्षिप्तचित्ता। *बृह॰ २१० अ*। अपमानेनोन्मत्ता। *बृह॰ २१० अ*।

खित्तवत्थुपमाणइक्कमे– क्षेत्र-शय्योत्पत्तिभूमिः, वास्तु अगारं, क्षेत्रवास्तूनां प्रमाणातिक्रमः क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रमः। *आव॰ ८२५*।

खिद्यमानार्थतया– प्रयोजनम्। *आचा॰ १०६*।

खिन्नो– खिन्नः विषण्णः। *प्रश्न॰ ६२*।

खिप्पंतो– क्षिप्यन्-प्रतीक्षमाणः। *दशवै॰ ५७*।

खिप्पामेव– शीघ्रमेव। *ज्ञाता॰ ३२*।

खिलभूमी– खिलभूमिः, हलैरकृष्टा भूमिः। *प्रश्न॰ ३९*।

खिलीभूय– खिलीभूतं-अनुभूतिव्यतिरिक्तोपायान्तरेण क्षपयितुमशक्यं निकाचितमित्यर्थः। *भग॰ २५१*।

खिल्लरं– पल्वलम्। *आव॰ ५६*।

खिल्लरबंधे–गोण्यदे। *निशी॰ १८ अ*।

खिल्लिउं– क्रीडितम्। *आव॰ ५६६*।

खिवेमाणे– क्षेपयन्-प्रेरयन्। *ज्ञाता॰ ८५*।

खीणकसातो– क्षीणकषायः। *उत्त॰ २५७*।

खीणभोगी– भोगो जीवस्य यत्रास्ति तद्भोगी -शरीरं तत्क्षीणं-तपोरोगादिभिर्यस्य सः क्षीणभोगी-क्षीणतनुर्दुर्बलः। *भग॰ ३११*।

खीणमोह– क्षीणमोहः क्षीणमोहनीयकर्म्म। *स्था॰ १७८*। क्षीणमोहः-श्रेणिपरिसमाप्तावन्तर्मुहूर्त्तं यावत्क्षीणवीतरागः। भूतग्रामस्य द्वादशं गुणस्थानम्। *आव॰ ६५०*।

खीणे– क्षीणः बालाग्राकर्षणात्क्षयमुपगतः। *भग॰ २७७*। *जम्बू॰ ९६*। क्षीणः-स चावशेषसद्भावे। *भग॰ ६७६*।

खीरं– क्षीरम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

खोर– क्षीरोदः-क्षीरवरद्वीपानन्तरं समुद्रः। *प्रज्ञा॰ ३०७*।

खीरकाओली– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

खीरकाकोलि– वल्लीविशेषः। *भग॰ ८०४*।

खीरगहण– क्षीराभ्यवहारम्। *ओघ॰ ४७*।

खीरघरं– खीरसाला। *निशी॰ २७२* आ।

खीरणि– एकमस्थिकं फलविशेषः। *भग॰ ८०३*।

खीरदुमा– वडउम्बरपिप्पला। *निशी॰ ३९* अ। क्षीरद्रुमाः, उदम्बरादयः। *ओघ॰ १२९*।

खीरदुमो – क्षीरद्रुमः, वटाश्वत्थादिः। *पिण्ड॰ ८*।

खीरधाती– धातीविसेसा। *निशी॰ ९३* आ। स्तन्यदायिनी। *ज्ञाता॰ ४१*।

खीरपूरए– क्षीरपुरं-क्वथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत् क्षीरम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

खीरपूरेइ– क्षीरपूरं-क्वथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत् क्षीरम्। *जम्बू॰ ३५*।

खीरप्पभो– क्षीरप्रभः क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३५३*।

खीरभुस– वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*। तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

खीरमेहे– क्षीरमेघा नामतो महामेघः। *जम्बू॰ १७४*।

खीरवरो– क्षीरवरः-द्वीपविशेषः। *जीवा॰ ३५२, ३४३*। *प्रज्ञा॰ ३०७*।

खीरवुट्ठी– क्षीरवृष्टिः। *भग॰ १९९*।

खीराइया– क्षीरकिताः-सञ्जातक्षीरकाः। *ज्ञाता॰ ११९*।

खीरामलएणं– अबद्धास्थिकं क्षीरमिव मधुरं यदामलकं तस्मा-दन्यत्र। *उपा॰ ३*।

खीरासव– क्षरन्ति ये ते क्षीराश्रवाः क्षीरवन्मधुरत्वेन श्रोतृणां कर्णमनः सुखकरं वचनमाश्रवन्ति। *औप॰ २८*। क्षीरमिव मधुरं वचनमाश्रवन्ति ये ते क्षीराश्रवाः, लब्धिविशेषवन्तः। *प्रश्न॰ १०५*।

खीरिज्ज– क्षीरिण्यः-गाव अत्र दुह्यन्ते। *आचा॰ ३३५*।

खीरिणि– क्षीरणी-एकास्थिकवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

खीरो– क्षीरः क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३५३*।

खीरोए– क्षीरमिवोदकं यस्य सः, क्षीरवन्निर्मलस्वभावयोः सुरयोः सम्बन्धि उदकं यत्रेति वा क्षीरोदः। *जीवा॰ ३५३*। समुद्रविशेषः। *जीवा॰ ३५३*।

खीरोद– क्षीरोदः, समुद्रविशेषः। *ज्ञाता॰ १२८*।

खीरोदए– क्षीरसमुद्रे क्षीरोदकम्। *प्रज्ञा॰ २८*। क्षीरोदकं क्षीरसमुद्रजलम्। *जीवा॰ २५*।

खीरोदा– क्षीरोदा, अन्तरनदी। *जम्बू॰ ३५७*।

खीरोयाओ– नदीविशेषः। *स्था॰ ८०*।

खील– कीलकः। *आव॰ ५७८*। कीलः-शङ्कुः। *प्रश्न॰ ८*।

खीलए– कीलकः, लोहकीलकः। *दशवै॰ ५९*।

खीलग– कीलकः। *आव॰ ४२०*।

खीलगसंठिते– कीलकसंस्थितं सातीनखत्तस्य संठाणं। *सूर्य॰ १३०*।

खीलगो– कीलकः। *ओघ॰ १७८*।

खीलच्छाया– छायाविशेषः। *सूर्य॰ ९५*।

खीलया– कीलिकाः। *आव॰ ३६०*।

खीलसंठितं– जं उविज्जं तं ण ठाति तं खीलसंठितं। *निशी॰ १२५* आ।

खुंखुणगा– घुर्घुरकाः-गुल्फाः। *आव॰ २०६*।

खुंदति– आस्कन्दति प्राप्नोतीत्यर्थः। *व्यव॰ १८७* आ। क्षोदयन्ति-विनाशयन्ति। *उत्त॰ ६२८*।

खुंभणं– क्षोभणम्। *प्रश्न॰ २४*।

खु– खुर्वाक्यालङ्कारे अवधारणे वा। *आचा॰ ८४*। अवधारणे। *आव॰ ५३२*। निश्चितं अवधारणे वा। *उत्त॰ ३६९*। निश्चिये। *जम्बू॰ २०१*। वाक्यालङ्कारे *प्रश्न॰ १२०*। क्षुत्-अष्टप्रकारं कर्म। *व्यव॰ ३९* आ।

खुइं– क्षुतिः छीत्कारादिशब्दविशेषः। *ज्ञाता॰ २२१*।

खुज्जं– यत्र शिरोग्रीवं हस्तपादादिकं च यथोक्तप्रमाणलक्ष-णोपेतं उरउदरादि च मण्डलं तत् कुब्जम्, पञ्चमं संस्थानम्। *जीवा॰ ४२*। कुब्जकरणी। *बृह॰ ३१४* अ। कुब्जः-यत्र शिरोग्रीवं हस्तपादादिकं च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेतं उरउदा-रादि च मडभं तत्। *प्रज्ञा॰ ४१२*। कुब्जः-वक्रः। *ओघ॰ ७४, ८२*। वक्रशरीरः। *बृह॰ २४२* आ। सर्वगात्रमेगपा-श्र्वहीनं कुब्जम्। *निशी॰ ४३* आ ०। अधस्तनकायम-डभं, इहाधस्तनकायशब्देन पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते, तद् यत्र शरीरलक्षणोक्तप्रमाणव्यभिचारि यत्पुनः शेषं तद्यथोक्तप्र-माणं तत् कुब्जम्। *स्था॰ ३५७*। कुब्जं-यत्र पाणिपादशि-रोग्रीवं समग्रलक्षणपरिपूर्णं शेषं तु हृदयोदरपृष्ठलक्षणं कोष्ठं लक्षणहीनं तत्। *अनुयो॰ १०२*। अधस्तनकायमडभं संस्थानम्। *आव॰ ३३७*।

कुब्जः-वक्रजङ्घः। *प्रश्न॰ २५*। कुब्जं-ग्रीवादौ हस्तपादयोश्चतुरस्र लक्षणयुक्तं सङ्क्षिप्तविकृतमध्यम्। *भग॰ ६५०*।

खुज्जत्तं– कुब्जत्वं-वामनलक्षणम्। *आचा॰ १२०*।

खुज्जबोरी– कुब्जबदरी। *ओघ॰ १००*।

खुज्जसंठाण– ग्रीवाहस्तपादाश्च समचतुरस्र लक्षणयुक्ता यत्र संक्षिप्तं विकृतं च मध्ये कोष्ठं तत् कुब्जसंस्थानम्। *सम॰ १५०*।

खुज्जा– कुब्जा। *आव॰ ६४*। *निशी॰ २७७* अ। कुब्जा कुब्जिकाः-वक्रजङ्घाः। *जम्बू॰ १९१*। *ज्ञाता॰ ४१*।

खुज्जियं– कुब्जं पृष्ठादावस्यास्तीति कुब्जी। *आचा॰ २३३*।

खुट्टं– त्रुटितम्। *आव॰ १४९*।

खुट्टिमा– गान्धारस्वरस्य द्वितीया मूर्छना। *जीवा॰ १९३*।

खुट्टुं – रयणिपमाणातो जं आरतो तं। *निशी॰ २१९*।

खुड्डंत– कीडंत। *निशी॰ ११५* अ।

खुड्ड– क्षुल्लः-लघुः। *जीवा॰ २००*। क्षुद्रः बालः-शीलहीनो वा पार्श्वस्थादि। *उत्त॰ ४७*। बालो। *निशी॰ ६८* आ। क्षुल्लः। *ओघ॰ १६०*।

खुड्डइ– त्रोटयति। *भग॰ ६६८*।

खुड्डए– क्षुल्लकः। *आव॰ १९५*।

खुड्डका– भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८*।

खुड्डखुड्डगा– क्षुल्लक्षुल्लका-अतिलघवः आयताश्च। *जम्बू॰ ४४*।

खुड्ड(खुंड)गं– मुद्रिका। *आव॰ ४१८*।

खुड्डग– मुद्रिका। *आव॰ ६७१*। *आव॰ ४१७*। क्षुल्लकः-द्रव्यभावबालः। *दशवै॰ १९५*। क्षुल्लकः, हास्ये दृष्टान्तः। *आव॰ ४०४*। क्षुल्लकः लघुः-बालकः। *उत्त॰ १०२*।

खुड्डगकुमारो– क्षुल्लककुमारः, योगसंग्रहे अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नीयशोभद्रायाः साध्व्यवस्थायां जातपुत्रः। *आव॰ ७०१*।

खुड्डगगणी– क्षुल्लकगणी, क्षुल्लकाचार्यः। *व्यव॰ २३७* आ।

खुड्डति– त्रोटयति। *भग॰ ६६७*।

खुड्डपाणा– क्षुद्रा-अधमा अनन्तरभवे सिद्ध्यभावात् प्राणा-उच्छ्वासादिमन्तः क्षुद्रप्राणाः। *स्था॰ २७३*।

खुड्डय– क्षुद्रका-वयसा श्रुतेन वाऽव्यक्ताः। *सम॰ ३६*।

खुड्डाग अङ्गुलीयकैः। *भग॰ ४५९*। क्षुल्लकः। *दशवै॰ ६१*। क्षुद्रकं-अङ्गुलीयकाकविशेषः। *जम्बू॰ १०५*। अङ्गुलीयकम्। *ज्ञाता॰ २७*।

खुड्डलए– स्वल्पकुटीरकः। *ओघ॰ ४९*। क्षुल्लकः। *आव॰ ३८८*। *ओघ॰ १६०*।

खुड्डा– क्षुद्राः-अखातसरस्यः। *जम्बू॰ ५०*। लघवः। *जीवा॰ १९७*। क्षुल्लं। लघु-स्तोकं च। *जीवा॰ ४४२*। क्षुद्राः-अधमाः। क्रूराः। *स्था॰ ३६६*।

खुड्डागंभवग्गहणं– क्षुल्लकभवग्रहणं-षट् पञ्चाशदधिकावलिकाश-तद्वयप्रमाणं समयोनम्। *जीवा॰ ४३४*।

खुड्डागंसव्वओभद्दं– क्षुद्रिकासर्वतोभद्रं, क्षुद्रिका-महत्यपेक्षया सर्वतः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च भद्रा-समसङ्ख्येति सर्वतो भद्रा तपोविशेषः। *अन्त॰ २९*।

खुड्डागं सीहनिक्कीलियं– क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडतं वक्षमाणम-हद-पेक्षया क्षुल्लकं-ह्रस्वं सिंहस्य निष्क्रीडितं-विह्रीतंगमन-मिति, तपोविशेषः। *अन्त॰ २८*।

खुड्डाग– क्षुल्लकः-लघुः *जीवा॰ १७७*। क्षुल्लकः-ह्रस्वः। *प्रज्ञा॰ ५९९*। *ज्ञाता॰ ११६*।

खुड्डागनियंठ– क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीमय, उत्तराध्ययनेषु षष्ठः। *भग॰ २५५*।

खुड्डागपयरेसु– क्षुल्लकप्रतरयोः सर्वलघुप्रदेशप्रतरयोः। *भग॰ ६०७*।

खुड्डागभवग्गहणं– क्षुल्लं लघु स्तोकं च क्षुल्लमेव क्षुल्लकं एकायु-ष्कसंवेदनकालो भवस्तस्य ग्रहणं भवग्रहणं क्षुल्लकं च तद्-भवग्रहणं च क्षुल्लकभवग्रहणम्। *जीवा॰ ४४२*।

खुड्डागसीहनिक्कीलियं– क्षुल्लकसिंहनिक्रीडितं वक्ष्यमाणमहा-सिंहनिक्रीडितापेक्षया क्षुल्लकं सिंहनिक्रीडितं सिंहगमनं तदिव यत्तपस्तत्। *औप॰ ३०*। *ज्ञाता॰ १२२*।

खुड्डियदुवारिया– क्षुद्रद्वाराः-सङ्कटद्वाराः। *आचा॰ ३२९*।

खुड्डिया– क्षुद्रिकाः लध्व्यः। *आचा॰ ३७०*।

खुड्डियाओ– क्षुल्लिकाः-लघवः। *जीवा॰ १९७*। अखात-सरस्यस्ता एव लघ्व्यः-क्षुल्लिकाः। *जम्बू॰ ४१*।

खुड्डीय– क्षुल्लकी। *निशी॰ १३२* आ।

खुण्णं– विषण्णं। *बृह॰ २०५* आ।

खुतिं– क्षुतं-तस्यैव सम्बन्धीशब्दः तच्चिह्नं वा। *ज्ञाता॰ ८५*।

खुत्तग– मनाङ् मग्नः केवलं तत उत्तरीतुमशक्तः। *औप॰ ८७*।

खुत्तो– निमग्नः। *प्रश्न॰ ६०*।

खुद्द– क्षुद्रकर्म्मकारित्वात् क्षुद्रः। *ज्ञाता॰ २३८*। क्षुद्रः-द्रोहकः अधमो वा। *प्रश्न॰ ५*।

खुद्दए– क्षुद्रकं-विनाशयितुं शक्यत इति क्षुद्रं तदेवानुकम्प्यतया क्षुद्रकं सोपक्रमम्। *उत्त॰ ६२८*।

खुद्दिमा– गान्धारग्रामस्य द्वितीया मूर्छा। *स्था॰ ३९३*।

खुद्दिया– क्षुद्रिका, जलाशयविशेषः। *प्रश्न॰ १६०*।

खुन्निय– भूपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि। *भग॰ ४६८*।

खुप्पंते– कर्दम एव निमज्जति। *ओघ॰ २९*।

खुप्पति– सचिक्खल्ले जले मज्जति। *निशी॰ ७९* अ।

खुप्पिज्ज– निमज्जनं। *ओघ॰ २९*।

खुप्पिलं– निमज्जकं। *तन्दु॰*।

खुब्भंति– क्षुभ्यन्ति राज्यविलोडनाय संचलन्ति। *व्यव॰ ३३* आ।

खुभाएज्ज– स्कभ्नीयात् क्षुभ्येत्। *भग॰ २६९*।

खुभिज्जा– क्षोभं यायात्, प्रकुप्येत्। *ओघ॰ ४०*।

खुभियं– कलहः। *बृह॰ १९* आ।

खुभियजल– क्षुभितजलः, क्षुभितं जलं यस्य सः। *जीवा॰ ३२१*। वेलावशात् क्षुभितजलः। *भग॰ २८२*।

खुम्मिया– भूमितपनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि। *ज्ञाता॰ ४८*।

खुर– चरणे येषामधोवर्त्त्यस्थिविशेषः। *उत्त॰ ३९९*। क्षुरम्-शस्त्रविशेषः। *प्रश्न॰ १४*। *आव॰ ३७०*। खुरः-शफः। *जीवा॰ ३८*। *प्रज्ञा॰ ४५*। खुराः-पादतलरूपा अवयवाः। *जम्बू॰ २३४*। शफः। *उपा॰ ४४*। क्षुरः-छूरः। *स्था॰ २७३*।

खुरखुरओ– चर्ममयं भाजनं वाद्यम्। *बृह॰ २३६* अ।

खुरदुगत्ता– चर्मकीटता। *सूत्र॰ ३५७*

खुरनिबद्धा– रासभबलिवर्द्दादयः। *पिण्ड॰ १०२*।

खुरपत्त– खुरपत्रं-छुरप्रम। *जीवा॰ १०६*। *विपा॰ ७१*।

खुरपत्ते– क्षुरपत्रं-छुरः। *ज्ञाता॰ २०४*।

खुरप्पं– क्षुरप्रं-प्रहरणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ८०*। *जीवा॰ १०३*।

खुरप्पसंठाणसंठितं– क्षुरप्रसंस्थानसंस्थितं, जिह्वेन्द्रियसं-स्थानम्। *प्रज्ञा॰ २९३*।

खुब्भंतं– क्षुभ्यन्तं, अधोनिमज्जन्तम्। *स्था॰ ३८५*।

खुरभंडं– क्षुरप्रादिभाजनम्। *दशवै॰ १०५*।

खुल– कर्कशक्षेत्रादयः। *बृह॰ २४३* आ।

खुलए– पादघुंटकः जानुरित्यर्थः। *बृह॰ १६२* आ।

खुलगो– उवरिकडीओ आरद्धा। *निशी॰ १८०* अ।

खुल्मइ– क्षुभ्यति-पृथिवीं प्रविशति क्षोभयति वा पृथिवीं। बिभेति वा। *भग॰ १८३*।

खुल्लग– क्षुल्लकः-कपर्दकः। *प्रश्न॰ ३७*।

खुल्ला– खुल्लाः-लघवः शङ्खाः सामुद्रशङ्खाकाराः। *प्रज्ञा॰ ४१*। *जीवा॰ ३१*।

खुवे– क्षुवो, ह्रस्यशिखः। *ज्ञाता॰ ६५*।

खुह– क्षुरादिदुःखहेतुत्वात् क्षुत्। *दशवै॰ २६१*।

खुहत्ते– प्रसह्य। *निशी॰ १०६* अ।

खुहा– क्षुधा, क्षुत्परीषहः, प्रथमपरीषहः। *आव॰ ६५६*।

खेज्जणा– खेदना-खेदसंसूचिका। *ज्ञाता॰ २३५*।

खेटकः– आवरणः सन्नाहः। *जम्बू॰ २५९*।

खेटन– कर्षणः। *जम्बू॰ २४३*।

खेटय– वाहय। *नन्दी॰ १५४*।

खेट्यन्ते– उत्त्रास्यन्ते। *उत्त॰ ६०५*।

खेडं– पांशुप्रकारनिबद्धं खेटम्। राय॰ ११४। *जीवा॰ २७९*। प्रकारोपेतं खेटम्। *स्था॰ २९४*। धूलीमयप्राकारोपेतम्। *अनुयो॰ १४२*। पांशुप्राकारबद्धम्। *आचा॰ २८५*। *प्रज्ञा॰ ४७*। *जीवा॰ ४०*। खेट्यन्ते-उत्त्रास्यन्तेऽस्मिन्नेव स्थितैः शत्रव इति खेटं पांशुप्राकारपरिक्षिप्तम्। *उत्त॰ ६०५*। खेटानि-प्रांसुप्राकारनिबद्धानि क्वचिन्नद्यद्रिवेष्टितानि। *जम्बू॰ १२१*। खेटं-धूलिप्राकारम्। *औप॰ ७४*। *भग॰ ३६*। *विपा॰ ३९*। *प्रश्न॰ ५२, ६९*। *सूत्र॰ ३०९*। धूलीप्राकारोपेतम्। *प्रश्न॰ ९२*। खेडं नाम धूलीपागारपरिक्खित्तं। *निशी॰ ७०* आ। धूलीपागारो जस्स तं। *निशी॰ २२९* आ।

खेडगं– खेटकं-फलकम्। *प्रश्न॰ ७०*।

खेडग– खेटकं-शस्त्रविशेषः। *आव॰ ३६०*।

खेडठाणं– खेटस्थानं-उल्लूका नद्या एकस्मिन् तीरे यत्। *आव॰ ३१७*।

खेडत्थाम– खेटस्थाम-उल्लूकायां द्वितीये तीरे नगरविशेषः। *उत्त॰ १६५*।

खेडमारी– खेटमारी-मारीविशेषः। *भग॰ १९७।*

खेडय– खेटकं वंशशलाकादिमयम्। *जम्बू॰ २०५।* आवरणविशेषः। *जीवा॰ १९३।*

खेडरुवं– खेटरूपम्। *भग॰ १९३।*

खेडाउ– क्रीडनकानि। *बृह॰ ४७ आ।*

खेडाति– धूलीप्राकारोपेतानि। *स्था॰ ८६।*

खेडाहारः– खेडग्रामस्य समासन्नो देशः परिभोग्यः खेडाहारः। *सूत्र॰ ३४३।*

खेडिय– खेटितम्। *दशवै॰ १०५।*

खेड्ड– द्यूतविशेषः *जम्बू॰ २६४।*

खेड्डा– क्रीडा। *आव॰ ३६०।*

खेत्त– क्षेत्रं-आकाशम्। *अनुयो॰ १८१। प्रज्ञा॰ ३२६।* क्षेत्रं-धान्यवपनभूमिः। *प्रश्न॰ ३९।* क्षिप्तचित्तता। *आव॰ ७३७।* क्षेत्रं-धान्यजन्मभूमिः। *जम्बू॰ १४९। औप॰ ३६।* क्षेत्रं-ग्रामादि कृषिभूमिर्वा। *प्रश्न॰ १२०।* क्षेत्रं-भौतादि भावितम्। *दशवै॰ ११५।* आर्यम्। *आव॰ ३४१।* क्षेत्रं-भार्या। *स्था॰ ५१६।* यदाकाशखण्डमादित्यः स्वतेजसा व्याप्नोति तत्। *भग॰ ३९३।*

खेत्तच्छेए– क्षेत्रच्छेदः बुद्ध्याप्रतरकाण्डविभागः। *जीवा॰ ९३।*

खेत्तते– क्षेत्रं भार्या तस्या जातः क्षेत्रजः। *स्था॰ ५१६।*

खेत्तपरमाणु– क्षेत्रपरमाणुः-आकाशप्रदेशः। *भग॰ ७८८।*

खेत्तपलिओवमे– क्षेत्रं-आकाशं तदुद्धारप्रधानं पल्योपमं क्षेत्रपल्योपमम्। *अनुयो॰ १८०।*

खेत्तमूढो– जं खेत्तं ण याणाति जम्मि वा खेत्ते मुज्झत्ति रातो वा परसंथारं अप्पणो मण्णति। *निशी॰ ४१ आ।*

खेत्तवत्थु– इह क्षेत्रमेव वस्तु क्षेत्रवस्तु, क्षेत्रं च वास्तु च गृहं क्षेत्रवास्तु। *उपा॰ ४।*

खेत्तवासी– क्षेत्रवर्षी-पात्रे दान श्रुतादीनां निक्षेपकः। *स्था॰ २७०।*

खेत्ताणि– क्षेत्राणि-क्षेत्रोपमानि पात्राणि। *उत्त॰ ३६१।*

खेत्तातिक्कंत– क्षेत्रातिक्रान्तः-क्षेत्रं सूर्यसम्बन्धि तापक्षेत्रं दिनमित्यर्थः, तदतिक्रान्तः तस्य आहारः। *भग॰ २९२।*

खेत्ताविचीमरणं– क्षेत्रावीचिमरणं-अवीचिमरणस्य द्वितीयो भेदः *उत्त॰ २३१।*

खेत्ते– क्षेत्रिके-क्षेत्रस्वामिनि, गणावच्छेदके आचार्ये वा। *व्यव॰ २६ आ।*

खेत्तोवक्कमे– क्षेत्रोपक्रमः-क्षेत्रस्य परिकर्म-विनाशकरणम्। *अनुयो॰ ४८।*

खेतोवसंपदा– उपसम्पदायाः भेदः। *निशी॰ २४१ अ।*

खेत्तोवाय– क्षेत्रोपायस्तु लाङ्गलादिना क्षेत्रोपक्रमणे भवति उपायभेदः। *दशवै॰ ४०।*

खेदियं– खिन्नं-खेदः। क्लेशो वा। *उत्त॰ ३५९।*

खेमं– क्षेमं, विषयः। *आव॰ ३४१।* क्षेमं परकृतोपद्रवरहितम्। *जीवा॰ १६०।* क्षेमं, तदुपद्रवाद्यभावापदनम्। *जीवा॰ २५५।* क्षेमं देशसौस्थ्यम्। *उत्त॰ १४५।* परचक्राद्युपद्रवाभावः। *बृह॰ १५१ अ।* लब्धस्य परिपालनं क्षेमः। *ज्ञाता॰ १०३।*

खेमंकरः– क्षेमङ्करः-पञ्चमः कुलकरः। *जम्बू॰ १३२।* अष्टाशीत्यां महाग्रहे नवषष्टितमः। *स्था॰ ७९।* तृतीयः कुलकरः। *स्था॰५१८।* चतुर्थः कुलकरः। *सम॰ १५३।* क्षेमङ्करः-अष्टाशीत्यां महाग्रहे सप्तषष्टितमः। *जम्बू॰ ५३५।*

खेमंधर– क्षेमन्धरः षष्ठः कुलकरः। *जम्बू॰ १३२।* चतुर्थ-कुलकरः। *स्था॰ ५१८।* पञ्चमकुलकरः। *सम॰ १५३।*

खेम– क्षेमं-शिवम्। *दशवै॰ २५८।* लब्धस्य च पारपालनं क्षेमम्। *उत्त॰ २८३।* क्षेमं-राजविड्वरशून्यम्। *दशवै॰ २२२।* सुस्थम्। *उत्त॰ ३१३।* व्याध्यभावेन क्षेमत्वम्। *उत्त॰ ५१०।* परचक्राद्युपद्रवरहितम्। *उत्त॰ ३५१।* क्षेमः-गुणोदाहरणे जितशत्रुराज्ञो मन्त्री। *आव॰ ८१९।*

खेम कुसल– क्षेमकुशलः-अनर्थानुद्भवानर्थप्रतिघातरूपः। *ज्ञाता॰ ८९।*

खेमते– क्षेमकः-अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य पञ्चममध्ययनम्। *अन्त॰ १८।* क्षेमकः-गाथापतिविशेषः। *अन्त॰ २३।*

खेमपया– क्षेपमदानि-रक्षणस्थानानि। *आचा॰ ४३०।*

खेमपुरा– खेमपुरा, राजधानी। *जम्बू॰ ३४५।*

खेमपुरीओ– महाविदेहे विजयराजधानी। *स्था॰ ८०।*

खेमल्लो– क्षेमिलो नाम शकुनज्ञाता। *आव॰ १९७।*

खेमा– क्षेमानाम्ना राजधानी। *जम्बू॰ ३४४।* क्षेमाणि-परकृतोपद्रवरहितानि। *जम्बू॰ ७६। प्रज्ञा॰ ८६।* क्षेमा अशिवाभावात्। *औप॰ २।*

खेमाओ– महाविदेहे विजयराजधानी। *स्था॰ ८०।*

खेमियं– क्षेमम्। *गणि०*।

खेय– खेदः श्रमः संसारपर्यटनजनितः अभ्यासः। *आचा० १३२*। संयमः, खेदयत्यनेन कर्मेति खेदः संयमः। *उत्त० ४१९*। खेदः-अग्निव्यापारः *आचा० ५३*।

खेयण्ण– अग्निव्यापारं यो जानातीति खेदज्ञः। *आचा० ५३*। निपुणः। *आचा० १५६, २७४*। जन्तुदुःखपरिच्छेत्तारः। *आचा० १७९*। क्षेत्रज्ञः-निपुणः। *आचा० ५३*। खेदज्ञः। *आव० ५५५*।

खेयन्न– खेदज्ञः-निपुणः। सूत्रः० *२५८*। खेदः-अभ्यासस्तेन जानातीति खेदज्ञः। *आचा० १३२*। खेदज्ञः-गीतार्थः। *ओघ० २०२*। ज्ञानी। *निशी० २०१* आ। सर्वज्ञः। *सूत्र० ३७०*। तीर्थकृत्। *सूत्र० २९९*। क्षेत्रज्ञः-संसक्तविरुद्धद्रव्यपरिहार्यकुलादिक्षेत्रस्वरूपपरिच्छेदकः। *आचा० १३२*।

खेयाणुगए– खेदयत्यनेन कर्मेति खेदः-संयमस्तेनानुगतो युक्तः खेदानुगतः। *उत्त० ४१९*।

खेल– श्लेष्मा। *ओघ० १८६*। *उत्त० २९१*। *स्था० ३४३*। *आव० ४७, ४३२, ५६४, ६१६, ७६५*। गोरसभाविता पोत्ता खेलो भण्णति। *निशी० १८* आ। निष्ठीवनः। *ओघ० १८६*। *भग० ८७*। *औप० २८*। *प्रश्न० १०५*। *सम० ११*। कफः। *जम्बू० १४८*। कण्ठमुखश्लेष्मा। *भग० १२२*। मुखविनिर्गतः श्लेष्मा। *उत्त० ५१७*। निष्ठीवनम्। *ज्ञाता० १०३*।

खेलइ– क्रीडति। *उत्त० १४७*।

खेलण– क्रीडा। *निशी० ११९* आ। खेलति क्रीडति। *व्यव० ८* अ।

खेलणगं– क्रीडनकम्। *आव० २९०*।

खेलन्ति– क्रीडन्ति। *आव० २०५*।

खेलमल्लय– श्लेष्ममल्लकः। *दशवै० ३७*।

खेलमल्लो– श्लेष्ममल्लकम्, श्लेष्मशरावः। *आव० ४३२*। श्लेष्मकुण्डिका। *आव० ३२१*।

खेलसिंघाण- श्लेष्मसिङ्घानम्। *आव० ८३२*।

खेलासव– खेलनिष्ठीवनं तदाश्रवति-क्षरतीति खेलाश्रवः। *ज्ञाता० १४७*।

खेलूडे– अनन्तकायभेदः। *भग० ३००*।

खेलेज्ज– खेलयेत्। *बृह० २३२* आ।

खेलौषधिः– औषधिविशेषः। *स्था० ३३२*।

खेल्लइ– क्रीडति। *आव० ४०१*।

खेल्लामो– क्रीडामः। *उत्त० ३८०*।

खेवणि– क्षेपिण्यः-हथनालिरिति लोकप्रसिद्धा। *जम्बू० २०६*।

खेवा– आरुहंतस्स उवरुवरिं हत्थालंबणे खेवा। *निशी० ६४* अ।

खेवियं– क्षिपितं-पापम्। *उत्त० ४५९*।

खेवो– क्षेपः, परहस्ताद्द्रव्यस्य प्रेरणम्। अधर्मद्वारस्य विंशति-तमं नाम। *प्रश्न० ४३*।

खोअ– इक्षुरसास्वादः समुद्रः। *अनुयो० ९०*।

खोअवर– इक्षुवरः, द्वीपविशेषः। *अनुयो० ९०*।

खोइय– क्षोभितः, विसंयोजितः। *उत्त० १००*।

खोओदए– क्षोदोदकम्, इक्षुरससमुद्रजलम्। *जीवा० २५*।

खोखरं– प्रदोतः कशा वा। *आव० २६१*।

खोखुब्भमाणो– क्षोक्षुभ्यमाणः, भृशं क्षुभ्यमाणः। *औप० ४७*।

खोटकक्षेप– हडीबन्धनम्। *प्रश्न० १६४*।

खोटकाः– समयप्रसिद्धाः स्फोटनात्मकाः। *उत्त० ५४१*।

खट्टिज्जिहि– क्षेप्स्यते। *आव० ८५*।

खोट्टेउं– खटत्कर्त्तुम्, पिट्टितुम्। *ओघ० १९४*।

खोड– कोणः। *आव० ७४२*। जं रायकुलस्स हिण्णादि दव्वं दायव्वं। *निशी० ८९* आ। प्रदेशः। *बृह० २३५* आ। खोटः-राजकुले हिरण्यादि द्रव्यदातव्यम्। *व्यव० ४५* अ।

खोडा– खोटकाः। *ओघ० १०९*। स्थाणौ। *निशी० ७२* आ। खोटका ते च त्रयस्त्रयः प्रमार्जनानां त्रयेण त्रयेणान्तरिताः – कार्या इति। *स्था० ३६१*।

खोडि– महाकाष्ठम्। *प्रश्न० ५७*।

खोडियं– नाशितम्। *आव० ६९४*।

खोडी– पेटा। *आव० २९८*।

खोडेयव्वा– निषेधयितव्या। *भग० ५८३*।

खोडेहामि– स्खलयिष्यामि। *आव० ३२२*।

खोड्डाहारा– क्षौद्राहाराः-मधुभोजिनः, क्षीणं वा-तुच्छादशिष्टं तुच्छधान्यादिकं आहारो येषां ते। *जम्बू० १७१*।

खोतोदए– इक्षुसमुद्रे क्षोदोदकम्। *प्रज्ञा० २८*।

खोद– क्षोदः-इक्षुरसः। *जीवा० १९८*। *जम्बू० ४२*।

खोद्दाहार– मधुभोजिनः भूक्षोदेन वाऽऽहारो येषां ते-क्षोदा-

हाराः।*भग॰ ३०९*।

खोभ– क्षोभः संभ्रमः। *आव॰ ७८४*।

खोभण– क्षोभः-वेदोदयरूपः। *पिण्ड॰ १६०*।

खोभिअ– क्षोभितः-स्वस्थानाच्चालितः। *जम्बू॰ ३७*।

खोभिए– क्षोभः आकस्मिकः संत्रासः। *ओघ॰ १९*।

खोभितो– क्षोभितः। *उत्त॰ १६८*।

खोभित्तए– क्षोभयितुं-एतान्येवं परिपालयाभ्युतोज्झामीति क्षोभविषयान् कर्त्तुं क्षोभयितुं संशयोत्पादनतः। *ज्ञाता॰ १३४*।

खोभियं– क्षोभितं-स्वस्थानाच्चालितः। *जीवा॰ १९२*।

खोभेति– क्षोभयति, ईषद्भूमिमुत्कीय तत्प्रवेशनेन। *ज्ञाता॰ ९४*।

खोम– क्षौमं-कार्पासिकम्। *जीवा॰ २६९*। *जीवा॰ २३२*। देववस्त्रम्। *आव॰ १८०*। दुकूलं, कार्पासिकं वस्त्रम्, *जम्बू॰ ५५*। क्षौमं, सामान्यतः कार्पासिकं अतसीमयम्। *जम्बू॰ १०७*।

खोमजुअलं– क्षौमयुगलम्। *आव॰ १२४*। कार्पासिकवस्त्रम्। *प्रश्न॰ १३४*।

खोमजुगलं– क्षौमयुगलम्। *आव॰ ५६२*।

खोमजुयलं– कार्पासिकवस्त्रयुगलम्। *उपा॰ ५*। क्षोमयुगलम्। *ज्ञाता॰ १२८*।

खोमिते– कार्प्पासिकाम्। *स्था॰ १३८*।

खोमिय– क्षौमिकं, सामान्यकार्पासिकम्। *आचा॰ ३९४*। क्षौमिकं-कार्पासिकं, वृक्षेभ्यो निर्गतं वा, अतसीमयं वा। *प्रश्न॰ ७१*। दुकूलं-कार्प्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रम्। *सूर्य॰ २९३*। कार्पासिकम्। *आचा॰ २९२*।

खोमियकप्पाय– क्षौमिककार्पासः। *स्था॰ ३३९*।

खोयरसघडए– इक्षुरसघटः। *आव॰ १४५*।

खोयरसो– क्षोदरसः-इक्षुरसः। *जीवा॰ ३६५, ३५१*।

खोयवरो– क्षोदवरः, द्वीपविशेषः। *जीवा॰ ३५५*।

खोरए– क्षोरकं-तापसभाजनम्। *दशवै॰ ५६*। क्षौरकम्। *आव॰ ६२५*।

खोरगं– द्रव्यभृतं भाजनम्। *निशी॰ १३६* आ।

खोरयं– रूप्यमयमहाप्रमाणभाजनविशेषः। *नन्दी॰ १५९*।

खोरा– भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

खोरुसताए– विरुद्धराज्यत्वेन। *निशी॰ १०* आ।

खोल– राजपुरुषविशेषाः। *आव॰ ८२१*। मद्यस्य किट्टविशेषः। *बृह॰ २६८* आ। मद्याधःकर्दमः। *आचा॰ ३४८*।

खोलपक्कस– मद्यकीट्टः। *निशी॰ ६६* आ।

खोला– खोलाः, हेरिकाः, गुप्तचराः। राज्ञा नियुक्ताः। *पिण्ड॰ ४९*। सीसखोला। *बृह॰ १०२* अ। गोरसभावितानि पोतानि। *बृह॰ १००* आ। *बृह॰ १२६* अ। गोरस-भाविता पेत्ता। *निशी॰ १८* आ।

खोल्लं– कोत्थरं। *निशी॰ १३३* अ। देशीशब्दत्त्वात् कोटरम्। *बृह॰ १५२* आ।

खोसियं– खोसितं-जीर्णप्रायम्। *पिण्ड॰ १००*।

ख्यातं– स्वसंवेदनतः प्रसिद्धम्। *उत्त॰ २५८*।

ख्यातसत्यवृत्ति– प्रसिद्धसत्यवृतिः। *नन्दी॰ १५६*।

- x - x - x -

ग

गंग– गङ्ग-यस्माद्वैक्रिया उत्पन्ना स आचार्यः। *आव॰ ३१२*। द्वैक्रियनिह्नवगुरुर्धनगुप्तशिष्यः। *आव॰ ३१७*। धनगुप्तस्य शिष्यः। द्वैक्रियविषयो निह्नवः, पञ्चमो निह्नवः। *स्था॰ ४१०*। गाङ्गः-पुरुषपुण्डरीकधर्माचार्यः। *आव॰ १६३*। गङ्गाचार्यः। *उत्त॰ १५३*।

गंगदत्त– मुनिविशेषः। *भग॰ ७०६*। *निर॰ २२, ३६*। षष्ठ-बलदेववासुदेवयोः पूर्वभविको धर्माचार्यः। *सम॰ १५३*। हस्तिनापुरे गृहपतिः। *भग॰ ७०७*। गङ्गादत्तः। कृष्णवासुदेव-पूर्वभवः। *सम॰ १५३*। *आव॰ १६३*। मंकातीगाहावतीए जेट्ठपुत्तो। *अन्त॰ १८*। वासुदेवपूर्वभवः। *आव॰ ३५८*। रागान्निदानकृत्। *भक्त॰* ।

गंगदत्ता– गङ्गदत्ता। सागरदत्तसार्थवाहपत्नी। *विपा॰ ७४*।

गंगदेवो– गङ्गदेवः-धननुप्तशिष्य आचार्यः। *उत्त॰ १६५*।

गंगा– गङ्गा नदीविशेषः, यत्र नन्दो नाम नाविकः। *आव॰ ३८९, १४३*। नदीविशेषः। *ज्ञाता॰ ६४*। *स्था॰ ७५*। हिमवद्वर्षधरपर्वतस्य पञ्चमं कूटम्। *स्था॰ ७१*। गङ्गा द्वैक्रियोत्पत्तिस्थानम्। विशे॰ ९३४।

गंगाकुंड– यत्र हिमवतो गङ्गा निपतति तद्गङ्गाकुण्डम्। *जम्बू॰ ८७*। कुण्डविशेषः। *नन्दी॰ २२८*।

गंगाकूलं– गङ्गाकूलं-गङ्गातटम्। *उत्त॰ १२९*।

गंगादीव– गङ्गाद्वीप इति नाम्ना द्वीपः। *जम्बू॰ २९३*।

गंगादेवीकूडे– गङ्गादेवीकूटम्। *जम्बू॰ २९६*।

गंगापवायद्दहे– गङ्गाप्रपातद्रहः-हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्तिपद्म-ह्रदस्य पूर्वतोरेण निर्गत्य क्रमेण यत्र प्रपतति सः। द्रहविशेषः। *स्था॰ ७४।*

गंगायडं– गङ्गातटम्। आ॰ ६८८।

गंगावत्तणकूडे– गङ्गावर्तननाम्नि कूटे। *जम्बू॰ २९०।*

गंगावालूआ– गङ्गावालूका-गङ्गापुलिनगतधूली। *अनुयो॰ १९२।*

गंगेए– पार्श्वापत्यः। *भग॰ ४३९।*

गंगेय– भगवत्यां नवमशतके द्वात्रिंशत्तम उद्देशकः। *भग॰ ४२५।* गङ्गापत्यः। *ज्ञाता॰ २०८।*

गंगेया– अणगारविशेषः। *भग॰ ४५५, ६१७।*

गंछिय– कारुजातिविशेषः। *जम्बू॰ १९४।*

गंज– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२। भग॰ ८०३।* गञ्जः-भोज्य-विशेषः। *प्रश्न॰ १५३।*

गंजसाला– जत्थ घण्णं दलिज्जति सा गंजसाला। गंजाजवा जत्थ अच्छंति सा गंजसाला। *निशी॰ २७२* आ।

गंजा– जवा। *निशी॰ २७२* आ।

गंठ– ग्रन्थः-शब्दसंदर्भः। *जीवा॰ २५५।*

गंठि– ग्रन्थिः-कार्षापणादिपुट्टलिका। *औप॰ २।* पर्वभङ्गस्थानं वा। *आचा॰ ५९।* पर्वग्रन्थिः। *जीवा॰ ३५५।* ग्रन्थिघनो रागद्वेषपरिणामः। *उत्त॰ ६५४।*

गंठिगो– ग्रन्थिकः-ग्रन्थिकसत्त्वः, ग्रन्थिभेदं कर्त्तुमसमर्थः। *सूत्र॰ ३७३।*

गंठिछेयओ– ग्रन्थिच्छेदकः। *आव॰ ७०४।*

गंठिभेए– ग्रन्थिं-द्रव्यसम्बन्धिनं भिन्दन्ति-घुर्घुरकाद्विकर्ति-कादिना विदारयन्तीति ग्रन्थिभेदाः। *उत्त॰ ३१२।*

गंठिभेओ– ग्रन्थिभेदः-चौरविशेषः। *प्रश्न॰ ३८।*

गंठिभेयणो– घुर्घुरादिना यो ग्रन्थीः छिन्दति सः ग्रन्थिभेदकः। *विपा॰ ५६।*

गंठिम– ग्रन्थिमं-ग्रन्थनेन निष्पन्नं मालावत्। *प्रश्न॰ १६०।* ग्रन्थिमं-यत्सूत्रेण ग्रथितम्। *जम्बू॰ १०४।* यद् ग्रथ्यते सूत्रादिना ग्रन्थिमम्। *ज्ञाता॰ ५६।*

गंठियसत्ता– ग्रन्थिगसत्त्वाः-ये ग्रन्थिप्रदेशं गत्वापि तद् भेदा-विधानेन न कदाचिदुपरिष्टाद् गन्तारः ते चाभव्या एव। *उत्त॰ ६४५।*

गंठी– ग्रन्थिं-पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थानम्। *बृह॰ १६१* आ। ग्रन्थिपिहितम्। *बृह॰ ८३* आ। *आव॰ ८४५।* गुल्म-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* ग्रन्थिः पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थानं वा। *प्रज्ञा॰ ३६।*

गंड– वराङ्गः। *जीवा॰ २१३। पिण्ड॰ १५४।* पुरस्सरः। *प्रज्ञा॰ २५४। जीवा॰ २८२।* काण्डं-समूहः, गण्डो वा दण्डः। *ज्ञाता॰ १२५।* गडु। *उत्त॰ ३३८।* गण्डः-कपोलः। *भग॰ १७४।* गंडमाला। *निशी॰ १८९* अ। व्रणविशेषः। *सूत्र॰ ९८।* गण्डं-अपद्रव्यम्। *सूत्र॰ १४८।* वातपित्तश्लेष्म-सन्निपातजं चतुर्द्धा गण्डं तदस्यास्तीनि गण्डी-गण्डमालावा-न्। *प्रश्न॰ १६१।* गोलम्। *जम्बू॰ ४२३।* व्याधिविशेषः। *आव॰ ६२३।* गण्डम्। *आव॰ ८२०।* गण्डः-हस्तः। *भग॰ ३१३।* स्तना। *निशी॰ १८०* अ। कपोलः। *आचा॰ ३८। प्रज्ञा॰ ८८।* गण्डः-कपोलैकदेशः। *प्रज्ञा॰ १०१।* अमिलनचामरदण्ड। *भग॰ ४८०।* गण्डः-गण्डीपदश्चतुष्पद-विशेषः। *जीवा॰ ३८।* कपोलः। *जीवा॰ १६२।* वारगः। *जम्बू॰ ५७।* स्तनः-कुचः। *पिण्ड॰ १२२। निशी॰ १२८।*

गंडइया– गण्डिका-नदीविशेषः। *आव॰ २१४।*

गंडओ– मरूकः। *आव॰ ३७२।* दंडपती। *निशी॰ १५८* आ। गण्डकः-नापितः। उद्घोषणाकारकः। *ओघ॰ २०२।*

गंडग– गंडकः-श्रवणे दृष्टान्तः। ग्रहणकाले प्राप्ते दृष्टान्तः। *आव॰ ७४५।*

गंडथणी– उण्णयथणी। *निशी॰ ९४* अ।

गंडभागः– कपोलदेशः। *जीवा॰ २७३।*

गंडमाणिया– गण्डयुक्ता माणिका। *राज॰ १४१।*

गंडय– वनजीवाः। *मरण॰ ।*

गंडरेहा– गण्डरेखा-कपोलपाली। *जम्बू॰ ११५। प्रश्न॰ ८४।*

गंडलीतोकाउं– खण्डीकृत्य। *उत्त॰ २१९।*

गंडलेहा– गण्डलेखा-कपोलपाली। *जीवा॰ २७६।* कपोलप-त्रवल्ली। *औप॰ १३।* कपोलविरचितमृगमदादिरेखा। *ज्ञाता॰ १३।*

गंडच्छासु– गण्डं-गडु, इह चोपचितपिशितपिण्डरूपतया गलत्पूतिरुधिरार्द्रतासम्भवाच्च तदुपमत्वाद्गण्डे कुचावुक्तौ ते वक्षसि यासां तास्तथाभूतास्तासु। *उत्त॰ २९७।*

गंडवाणिया– गण्डपाणिका-वंशमयभाजनविशेष एव यो

गण्डेन-हस्तेन गृह्यते डल्लातो लघुतरः। *भग॰ ३१३।*

गंडविव्वोयणे– सुपरिकर्मितगण्डोपधानम्। *भग॰ ५४०।*

गंडशैलः– ग्रावाणः। *नन्दी॰ १५३।*

गंडसेल– गण्डशैलः-उपलः। *उत्त॰ ६८९।*

गंडा– गण्डीपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गंडाग– गण्डको-नापितः। *आचा॰ ३२७।*

गंडाति– रोगविशेषः। *निशी॰ १८८* आ।

गंडिआ– गण्डिका-सुवर्णकाराणामधिकरणी (अहिगरणी) स्थापनी। *दशवै॰ २१८।*

गंडिक– गंडिकानुयोगः-यस्तु कुलकरादिवक्तव्यता गोचरः स गण्डिकानुयोगः। *स्था॰ २००।*

गंडिया– गण्डिका-खण्डविशेषः। *भग॰ ७०५।* एकवक्तव्य-तार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयः गण्डिकाः। *समः १३२।* एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिः। *नन्दी॰ २४२।* सुवण्णगारस्स भन्नइ, जत्थुसुवण्णगं कुट्टेइ। द॰ *१११।*

गंडियाणुयोगे– इक्ष्वादीनां पूर्वापरपरिच्छिन्नो मध्यभागो गण्डिका गण्डिकेव गण्डिका-एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिः, तस्या अनुयोगो गण्डिकानुयोगः। *नन्दी॰ २४२।* भरतनरप-तिवंशजानां निर्वाणगमनानुत्तरविमानवक्तव्यता व्याख्यानग्र-न्थः। *स्था॰ ४९१।*

गंडी– गण्डी-गण्डमालावान्। *प्रश्न॰ १६१।* अहिकरणविशेषः। *निशी॰ २२* अ। वातपित्तश्लेष्मसन्निपातजं चतुर्द्धा गण्डं, तदस्यास्तीति गण्डी। *आचा॰ २३४।* गण्डमस्यास्ती-ति गण्डी गण्डमालादि। *निशी॰ १४८* अ। गण्डम-स्यास्तीति गण्डी गण्डमालावान्। *आचा॰ २३३।* गण्डम-स्यास्तीति गण्डी। यदिवोच्छूनगुल्फपादः स गण्डी। *आचा॰ ३८९।* सुवर्णकारादीनामधिकरणी गण्डिका तद्वत्पदानि येषां ते तथा ते हस्त्यादयः। *स्था॰ २७३। निशी॰ १८१* अ। पञ्चपुस्तके प्रथमः। *स्था॰ २३३।* पद्मकर्णिका। *उत्त॰ ६९९।* तुल्यबाहल्यपृथक्त्वं पुस्तकम्। *बृह॰ २१९* आ। गण्डीपुस्तकं। यद् बाहल्यपृथक्त्वैस्तुल्यं दीर्घम्। *आव॰ ६५२।* गच्छति-प्रेरितः प्रतिपथादिना डीयते च कूर्दमानो विहायो गमनेनेति गण्डिः। दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा। *उत्त॰ ४९।*

गंडीतेंदुगो– गण्डीतिन्दुकः-वाणारस्यां तिन्दुकयक्षायतने यक्षः। *उत्त॰ ३५६।*

गंडीपद– व्याधिविशेषः। *आचा॰ ३९०।* चतुष्पदभेदः। *सम॰ १३५।*

गंडीपदा– गण्डीव-सुवर्णाकाराधिकरणीस्थानमिव पदं येषां ते गण्डीपदाः-हस्त्यादयः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गंडीपया– गण्डीपदाः हस्त्यादिकाः। *जीवा॰ २८।* गण्डीपद्म-कर्णिका तद्वृत्ततया पदानि येषां ते गण्डीपादाः-गजादयः। *उत्त॰ ६९९।*

गंडीपोत्थगो– दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्लो चउरंसो गंडीपोत्थगो। *निशी॰ ६०* आ।

गंडीव– सुवर्णकाराधिकरणीस्थानामिव। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गंडुवहाण– गण्डोपधानम्। अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके तृतीयो-भेदः। *आव॰ ६५२।* गण्डोपधानम्। *स्था॰ २३४।*

गंडुवहाणिगा– उवहाणगस्सोवरिगंडपदेसे जा दिज्जति सा गंडुवहाणिगा। *निशी॰ ६१* अ।

गंडूकः– पुष्पमलम्बूसकः। *जीवा॰ २५३।*

गंडूपदः– पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५।*

गंडूयलगा– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१। जीवा॰ ३१।*

गंडूलया– अलसाः। *प्रश्न॰ २४।*

गंडोवहाणं– गण्डोपधानं-गलमसूरिका। *बृह॰ २२०* अ।

गंडोवहाणियाओ– गण्डोपधानिकाः-गल्लमसूरिकाणि। *जम्बू॰ २८५।*

गंत– गत्वा। *उत्त॰ ५९७। भग॰ ९३।*

गंतव्वं– गन्तव्यं युगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः। *ज्ञाता॰ ६१।*

गंतुंपच्चागता– उपाश्रयान्निर्गतः सन्नेकस्यां गृहपङ्कतौ भिक्षमाणः क्षेत्रपर्यन्तं गत्वा प्रत्यागच्छन् पुनःद्वितीयायां गृहपङ्कतौ यस्यां भिक्षते सा गत्वा प्रत्यागता, गत्वा प्रत्यागतं यस्यामिति च। *स्था॰ ३६५। निशी॰ १२* अ।

गंतुकामं– योज्यमानम्। *बृह॰ ७९* आ।

गंतुकामा– गन्तुकामः यः सदैव गन्तुमना व्यवतिष्ठते। *आव॰ १००।*

गंत्रिका– युग्यविशेषः। *आचा॰ ६०।*

गंत्रीढञ्चनकं– इड्डरम्। *भग॰ ३१३।*

गंथ– ग्रन्थः ज्ञानादिः। *स्था॰ ४६५।* परिग्रहम्। *बृह॰ १३५* अ। ग्रथ्यते-बध्यते कषायवशगेनात्मनेति ग्रन्थः। अथवा

ग्रथ्नाति-बध्नात्यात्मानं कर्मणेति ग्रन्थः। *उत्त॰ २६०*। विप्रकीर्णार्थग्रन्थनाद् ग्रन्थः। *अनुयो॰ ३८*। ग्रन्थः-अष्ट प्रकारकर्मबन्धः। *आचा॰ ३८*। सूत्रकृताङ्गस्य प्रथम-श्रुत-स्कन्धे चतुर्दशमध्ययनम्। *सम॰ ३१*। *आव॰ ६५१*। ग्रन्थः-शालकादिसम्बद्धस्तद्भार्या तत्पुत्रादिः। *प्रश्न॰ १४०*। ग्रन्थः-ग्रथ्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वाऽर्थ इति ग्रन्थः। *आव॰ ८६*। ग्रन्थः-सूत्रकृताङ्गस्य चतुर्दशमध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४*। द्रव्य-भावभेदभिन्नः। इह तु ग्रन्थं द्रव्यभावभेदभिन्नं यः परि-त्यजति शिष्य आचारदिकं वा ग्रन्थः योऽधीतेऽसो अभिधी-यते। आदानपदाद् गुणनिष्पन्नत्वाच्च ग्रन्थः। *सूत्र॰ २४१*।

गंथा– ग्रन्थात्-महतो द्रव्यव्ययात्। *आचा॰ २७२*।

गंथिअसत्ता– ग्रन्थिकसत्त्वाः-अभिन्नग्रन्थयः। *उत्त॰ ७१३*।

गंथिभेयग– ग्रन्थिभेदकाः-न्यासकान्यथाकारिणः घुर्घुरका-दिना वा ये ग्रन्थीन् छिन्दन्ति। *ज्ञाता॰ २३९*।

गंथिम– ग्रन्थः-सन्दर्भः सूत्रेण ग्रन्थनं तेन निर्वृत्तं ग्रन्थिमं मालादि। *स्था॰ २८६*। ग्रन्थिमं-ग्रन्थननिर्वृत्त सूत्रग्रथित-मालादि। *भग॰ ४७७*। कौशलातिशयाद् ग्रन्थिसमुदाय-निष्पादितं रूपकम्। *अनुयो॰ १३*। ग्रन्थनं-ग्रन्थस्तेन निर्वृत्तं ग्रन्थिमम्। *जीवा॰ २५३*। यत्सूत्रेणग्रथितम्। *जीवा॰ २६७*। *ज्ञाता॰ १८०*।

गंथी– ग्रन्थिः-या दवरकस्यादौ बध्यते। *जीवा॰ २३७*।

गंथेहिं– ग्रन्थैः-अङ्गानङ्गप्रविष्टैः। *आचा॰ २९१*।

गंधंगं– गन्धाङ्गम्। *उत्त॰ १४२*।

गंध– गन्धः-विशोधिकोटिरूपः। *सूत्र॰ १४५*। गन्धः-कोष्ठ-पुटादिलक्षणः। *आव॰ १२९*। गन्धः वासादिः। *जम्बू॰ ४११*। गन्धः-गन्धाङ्गम्। *जीवा॰ १३६*। गन्धः-गन्धवा-सादिः। *जीवा॰ २४४*। वासः। *जीवा॰ २४५*। गन्धः-पट-वासादिः। *पिण्ड॰ ९६*। आमोदः। *उत्त॰ ३६९*। गन्ध्यते-आघ्रायत इति गन्धः। *अनुयो॰ ११०*। गन्धाः-वासाः। *जम्बू॰ १९१*। विशुद्धकोटिः। *बृह॰ ५१ अ*। नासिकेन्द्रियम्। गन्ध्यते-आघ्रायते शुभोऽशुभो वा गन्धोऽनेनेति गन्धः। *प्रज्ञा॰ ४९९*। गन्धः-कोष्ठपुटपाकः। *भग॰ २००*। कोष्ठपुटादिः। *दशवै॰ ९१*।

गंधकासाइ– गन्धकाषायी। *आव॰ १२३*।

गंधकासाइआ– गन्धकाषायिकी-सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिक-र्मिता लघुशाटिका। *जम्बू॰ १७५, ४२०*।

गंधकासाइए– गन्धप्रधानया कषायरक्तया शाटिकयेत्यर्थः। *भग॰ ४७७*।

गंधकासाई– गन्धप्रधाना कषायेण रक्ता शाटिका गन्धकषायी। *उपा॰ ४*।

गंधगृहणेन– पूतिर्गृह्यते। *आचा॰ १३१*।

गंधचंगेरी– भाजनविशेषः। *जीवा॰ २३४*।

गंधजुत्ती– गन्धानां-गन्धद्रव्याणां श्रीखण्डादीनां ल्हसणादीनां च युक्तयो गन्धयुक्तयः। *उत्त॰ ३०*।

गंधट्टए– गन्धाट्टकः-गन्धद्रव्यक्षोदः। *स्था॰ ११७*। गन्धद्र-व्याणामुपलकुष्ठादीनां 'अइओ' त्ति चूर्ण गोधूमचूर्ण वा गन्ध-युक्तम्। *उपा॰ ३*।

गंधणा– गन्धना-अमानी सर्पः। सर्पजातिविशेषः। *दशवै॰ ३७*। गन्धना-सर्पजातिविशेषः। *उत्त॰ ४९५*।

गंधद्धणि– गन्धघ्राणिः-यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्घ्राणेन्द्रियस्य तृप्ति-रूपजायते तावती पुद्गलसंहतिरूपचाराद् गन्धघ्राणिः। *जम्बू॰ ३०*। गन्धस्तेन या घ्राणिः-तृप्तिः गन्धघ्राणिः-गन्धो-त्कर्षः। *ज्ञाता॰ २६*। सुरभिगन्धगुणः। तृप्तिहेतुः। *ज्ञाता॰ १२६*। यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये गन्धघ्राणिरूपजायते तावती गन्धपुद्गलसंहतिरूपचारात् गन्धघ्राणिरित्युच्यते। *राज॰ ७*। यावद्भिर्गन्धपुद् गलैर्गन्धविषये घ्राणिरूपजायते तावती गन्धपुद् गलसंहतिरूपचाराद् गन्धघ्राणिः। *जीवा॰ १८९*।

गंथपलिआमं– गंधामं-गंधपलिआमं अंवयं आदिसद्दातो मातु-लुंगं वा पक्कं अण्णेसिं आमयाणं मज्झे छुब्भति तस्स गंधेणं तं अण्णे आमया पच्चंति जं तत्थ ण पच्चंति तं गंधामं भण्णति। *निशी॰ १२५ आ*। यदपक्वफलं तत् गंधप-र्यायामं। *बृह॰ १४३ आ*।

गंधपुडियाइ– गन्धपुटिकादि। *आव॰ १९८*।

गंधपुलागं– विकटपलांडुलसुणादिन्युत्कटगन्धिः। *बृह॰ २११ अ*।

गंथप्पिओ– गन्धप्रियः घ्राणेन्द्रियदृष्टान्ते कुमारविशेषः। *आव॰ ४०१*। *निशी॰ ११७ अ*।

गंधमादण– गन्धमादनः-गजदन्तकगिरिविशेषः। *प्रश्न॰ ११६*। पर्वतविशेषः। *स्था॰ ६८, ३२६*।

गंधमायण– पर्वतविशेषः। *प्रश्न॰ १६१। स्था॰ ७१।* गन्धेन स्वयं माद्यतीव दमयति वा तन्निवासिदेवदेवीनां मनांसि इति गन्धमादनः। *जम्बू॰ ३१५।* गन्धमादनः-वक्षस्कारगिरि। *जम्बू॰ ३१२।* गन्धमादनः वक्षस्कारपर्वतविशेषः। *जीवा॰ २६३।*

गंधमायणकूडे– गन्धमादनकूटम्। *जम्बू॰ ३१३।*

गंधमायणा– गजदन्तविशेषः। *स्था॰ ८०।*

गंधर्वकण्ठः– गन्धर्वकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा॰ २३४।*

गंधर्वानीकं– सैन्यविशेषः। *जीवा॰ २१७।*

गंधवट्टए– गन्धचूर्णम्। *विपा॰ ८६।*

गंधवट्टओ– गन्धवर्त्तकः। *आव॰ १२३।*

गंधवट्टयं– गन्धवर्त्तकं-गन्धद्रव्यचूर्णपिण्डम्। *जम्बू॰ ३९४।*

गंधवट्टि– गन्धवर्त्तिः-गन्धद्रव्याणां गन्धयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निर्वर्त्तितगुटिका। *सम॰ १३८।*

गंधवट्टिभूए– गन्धवर्त्तिभूतं-सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगुटि-काकल्पम्। *औप॰ ५।*

गंधवट्टिभूया– गन्धवर्त्तिभूतानि-सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्य-गुटिकाकल्पानि। *प्रज्ञा॰ ८७।* सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगु-टिकाकल्पाः। *जम्बू॰ ५१।*

गंधवर्त्तिभूए– गन्धवर्त्तिभूतः-सौरभ्यवर्त्तिभूतः। *जीवा॰ २०६।*

गंधवासा– गन्धवर्षः-कोष्ठपुटपाकवर्षणम्। *भग॰ २००।*

गंधवुट्ठी– गन्धवृष्टिः-कोष्ठपुटपाकवृष्टिः। *भग॰ १९९।*

गंधव्वं– गन्धर्व्व नाट्यादि। *जीवा॰ १९४।* गन्धर्वं-नृत्यं गीत-युक्तम्। *विपा॰ ४५।* गान्धर्व-गीतम्। *आव॰ ५६५।* गान्धर्व्वं नगरविकुर्वणम्। *आव॰ ७३५।* गन्धर्वं – मुरजादिध्वनिसनाथं गानम्। *भग॰ ३२३।* गन्धर्वैः कृतं गान्धर्वं नाट्यादि। *जम्बू॰ ३९।* पदस्वरतालावधानात्मकम्। *जम्बू॰ ३९।* गन्धर्वः-गन्धर्वजातीयो देवः। *प्रज्ञा॰ ९६। जीवा॰ १७२।* एकविंश-तितमो मुहूर्त्तः। *जम्बू॰ ४९१। सूर्य॰ १४६।* गान्धर्वः-विवाहविशेषः। *आव॰ १७४।*

गंधव्वगणो– गन्धर्वगणः-गन्धर्वसमुदायः। *प्रज्ञा॰ ९६।*

गंधव्वघरगं– गन्धर्वगृहकं-गीतनृत्याभ्यासयोग्यं गृहकम्। *जीवा॰ २००।*

गंधव्वघरगा– गीतनृत्याभ्यासयोग्यानि गृहकाणि। *जम्बू॰ ४५।*

गंधव्वछाया– गन्धर्वछाया। *प्रज्ञा॰ ३२७।*

गंधव्वणगरं– गन्धर्वनगरं-सुरसदनप्रासादोपशोभितनगरा-कारतया। तथाविधनभः परिणतपुद्गलराशिरूपम्। *जीवा॰ २८३। अनुयो॰ १२१।*

गंधव्वणागदत्तो– गन्धर्वनागदत्तः-कषायप्रतिक्रमणोदाहरणे गान्धर्वप्रियः श्रेष्ठिपुत्रः। *आव॰ ५६५।*

गंधव्वनगर– गन्धर्वनगरं-आकाशे व्यन्तरकृतं नगराकार-प्रतिबिम्बम्। *भग॰ १९६।*

गंधव्वनयर– गन्धर्वनगरं-यत् चक्रवर्त्त्यादिनगरस्योत्पातसू-चनाय संध्यासमये तस्य नगरस्योपरि द्वितीयं नगरं प्राकारा-ट्टलकादिसंस्थितं दृश्यते। *व्यव॰ २४१ अ।*

गंधव्वपन्नगो– गन्धर्वप्रज्ञकः। *आव॰ १४४।*

गंधव्वलिवी– लिपिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

गंधव्वसमय– गन्धर्वसमयः-नाट्यसमयः। *जीवा॰ २६६। जम्बू॰ १०१।*

गंधव्वा– नारुजातिविशेषः। *जम्बू॰ १९३।* वाणव्यन्तरभेद-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।*

गंधव्विया– गान्धर्विकाः-सङ्गीतकलानिपुणः। *दशवै॰ ४४, ४५।*

गंधसमिद्धो– गन्धसमृद्धः-गन्धिलावत्यां वैताढ्यपर्वते गान्धा-रजनपदे नगरविशेषः। *आव॰ ११६।*

गंधसमुग्गय– गन्धद्रव्यैरतिविशिष्टै परिपूर्णं भृतः समुद्गकः गन्धसमुद्गकः। *प्रज्ञा॰ ६००।*

गंधसमुद्धं– विद्यामन्त्रद्वारविवरणे धनदेवनगरम्। *पिण्ड॰ १४१*

गंधसयं– गन्धशतं-गन्धाङ्गशतम्। *जीवा॰ १३५।*

गंधहत्थी– गन्धहस्ती-हस्तीविशेषः। *भग॰ ७।* अनुयोगप्रका-ण्डः। *व्यव॰ २५८।*

गंधहस्ती– आचार्यविशेषः। *आचा॰ १।*

गंडहारग– गन्धहारकः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

गंधांगं– वालकप्रियङ्गुपन्नकदमनकत्वक्कन्दनोशीरदेवदार्वादि।

आचा॰ ६१। जातिकुसुमादिद्रव्यः। *आचा॰ ४१८*।

गंधा– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*। गंधयुक्तीकृता गंधा। *निशी॰ १४४* आ।

गंधापाति– नवमकूटः। *स्था॰ ७२*।

गंधावाती– गन्धापाती। *स्था॰ ७१*।

गंधारं– गान्धारं-जनपदविशेषः। *उत्त॰ २९९, ३०४*। गान्धारः-द्रव्यव्युत्सर्गे देशविशेषः। *आव॰ ७१६, ७२०*। गन्धो विद्यते यत्र स एव गन्धारो, गन्धवाहविशेषः। *स्था॰ ३९३*। गान्धारः गन्धो विद्यते यस्य स गन्धारः, स एव गान्धारः-। *अनुयो॰ २२७*। वीतभयनगरे श्रावकः। *उत्त॰ ९६*। जनपदविशेषः। *निशी॰ ३४८* आ।

गंधारओ– श्रावकविशेषः। *आव॰ २९८*।

गंधारगाम– सप्तस्वरे तृतीयः स्वरः, संगीते ग्रामविशेषः। *स्था॰ ३९३*।

गंधारजणवए– गान्धारजनपदः-गन्धिलावत्यां जनपदविशेषः। *आव॰ ११६*।

गंधारी– गान्धारी-बलकोट्टलघुभार्या। *उत्त॰ ३४५*। अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *अन्त॰ । १५*। कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी। *अन्त॰ १८*। चत्वारिमहाविद्यायां द्वितीया। *आव॰ १४४*।

गंधावई– गन्धापाती, वृत्तवैताढ्यम्। *जम्बू॰ ३७९*। गन्धा-पाती वृत्तवैताढ्यः हरिवर्षस्य पर्वतः। *जीवा॰ ३२६*।

गंधिए– गंधिकाः-गन्धावासाः। *भग॰ ४७७*।

गंधिला– विजयविशेषः। *स्था॰ ८०*।

गंधिलाइ– गन्धिलावत्याः-शीतोदोत्तरकूलवर्तिनोऽष्टमविजयः। *जम्बू॰ ३१४*।

गंधिलावई– गन्धिलावती विजयः। *जम्बू॰ ३५७*।

गंधिलावईकूडे– गन्धिलावतीकूटम्। *जम्बू॰ ३१३*।

गंधिलावती– धातकीखण्डे विजयविशेषः। *स्था॰ ८०*।

गंधिलावतीविजए– गन्धिलावतीविजयः। *आव॰ ११६*।

गंधिले– गन्धिलो विजयः। *जम्बू॰ ३५७*।

गंधोदय– गन्धः-आमोदस्तत्प्रधानमुदकं-जलं गन्धोदकम्। *उत्त॰ ३६९*। गन्धोदकं-कुङ्कुमादिमिश्रितम्। *जम्बू॰ ३९४*।

गंधोवरए– गन्धापवरकः। *दशवै॰ ९१*।

गंभीर– गम्भीरः-अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। *अन्त॰ १*। गम्भीरः-परैरलब्धमध्यो निरूपमज्ञानवत्त्वेऽपि रहः कृतपरदुश्चरितानामपरिस्रावित्वात् हर्षशोकादिकारणस-द्भावेऽपि तद्विकारादर्शनाद्वा। *जम्बू॰ १४९*। अलब्धमध्य-भागः। *जीवा॰ १८८*। अलब्धमध्यम्। *ज्ञाता॰ २*। अति-मन्द्रः। *जम्बू॰ ५२९*। अलक्ष्यदैन्यादिविकारः। *प्रश्न॰ १३३*। साणुणादि। *निशी॰ १०९* अ। अलक्ष्य-माणान्तर्वृत्तित्वम्। *प्रश्न॰ ७४*। चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*। *जीवा॰ ३२*। गाम्भीर्यः-अलब्धमध्यात्मको गुणः। *उत्त॰ ३५३*। भग्नत्वादिदोषवर्जितं, शेषजनेन च प्राये-णालक्षणीयमध्यभागं स्थानं गम्भीरम्। *व्यव॰ ६२* अ। अलब्धमध्यः। *उत्त॰ ५५४*। अलब्धस्ताघम्। *जीवा॰ १२३*। निपुणशिल्पिनिष्पादिततयाऽलब्धस्वरूपमध्यम्। *जीवा॰ २६९*। मन्मथोद्दीपि। *जीवा॰ २७६*। स्वरविशेषः। *निशी॰ २७८* अ। गम्भीरः-खेदसहः। *आचा॰ ३*। अतीवो-त्कटः। *जीवा॰ १०७*। *प्रज्ञा॰ ८१*। गम्भीरं-अप्रकाशम्। *दशवै॰ १७५, २०४*। अवनतम्। *ज्ञाता॰ १५*।

गंभीरमालिणी– अन्तरनदी, गम्भीरं जलं मलते-धारयतीति गम्भीरमालिनी। *जम्बू॰ ३५७*।

गंभीरमालिणीओ– नदीविशेषः। *स्था॰ ८०*।

गंभीरलोमहरिसो– गम्भीरः-अतीवोत्कटो रोमहर्षो-रोमोद्धर्षो-भयवशाद् यस्मात् सः गम्भीररोमहर्षः। *जीवा॰ १०७*।

गंभीरविजय– गम्भीरविजयः-गम्भीरप्रकाशं विजयः-आश्रयः। *दशवै॰ २०४*।

गंभीरशब्दं– गम्भीरशब्दं मेघस्येव। *सम॰ ६३*।

गंभीरसाणुणाए– गम्भीरसानुनादः-सामायिकदानस्य स्थानम्। *आव॰ ४७०*।

गंभीरा– अत्थाघा। *निशी॰ ३३६* अ।

गंमुणिग– फलविशेषः। *निशी॰ ११९* अ।

गइंद– गजेन्द्रः। *ज्ञाता॰ ६५*।

गइ– गतिः-पदवी। *आचा॰ २२४*। गत्यर्थानां ज्ञानार्थतया हिताहितलक्षणा स्वरूपपरिच्छितिः। *उत्त॰ ४७२*। गमनं गतिः-देशान्तरप्राप्तिः। *उत्त॰ ५५९*। गतिशब्देनमनुष्यगते-र्जीवापगमः। *जम्बू॰ १५४*। विहायोगतिनामोदयसम्पाद्या गतिरूपा। *भग॰ ६४३*।

गतिः-गतिनामकर्मोदयसम्पाद्यो जीवपर्यायः। *प्रश्न॰ ९८*। अनुकूलं गमनं गतिः। *आव॰ २८१*।

गइकाय– गतिकायः यो भवान्तरगतौ, स च तेजसकार्मण-लक्षणः। *दशवै॰ १३४*। गतिकायः-नारकतिर्यङ्नरामरलक्षणां चतुर्विधां गतिमाश्रित्य कायः। सर्वसत्त्वानामपान्तरालगतौ वा यः कायः। *आव॰ ७६७*।

गइचरमे– यः पृच्छासमये सामर्थ्यान्मनुष्यगतिरूपे पर्याये वर्त-मानोऽनन्तरं न किमपि गतिपर्यायमवाप्स्यति किन्तु मुक्त एव भविता सः गतिचरमः। *प्रज्ञा॰ २४५*।

गइतसत्त– नामकर्मोदयाभिनिवृत्तगतिलाभाद् गतित्रसत्वम्। *आचा॰ ६७*।

गइप्पवाए– गतेः प्रपातः गतिप्रपातः। गतिशब्दप्रवृत्तिरूपनि-पततीत्यर्थः। *प्रज्ञा॰ ३२८*।

गइप्पवायं– गतिः प्रोद्यते-परूप्यते यत्र तद्गतिप्रवादं गतेर्वा प्रवृतेः क्रियायाः प्रपातः-प्रपतनसम्भवः प्रयोगादिष्वर्थेषु वर्त्तनं गतिप्रपातस्तत्प्रदिपादकमध्ययनं गतिप्रपातं तत्। *भग॰ ३८०*।

गइरइया– गतौ रतिः-आसक्तिः प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिकाः। *सूर्य॰ २८१*।

गइरतिया– गतौ रतिः-आसक्तिः प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिकाः। *जीवा॰ ३४६*।

गइरागइ– द्वयोर्द्वयोः पदयोर्विशेषणं विशेष्यतयाऽनुकूलं गमनं गतिः, प्रत्यावृत्त्या प्रातिकूल्येनागमनमागतिः। गतिश्चागतिश्च गत्यागती। *आव॰ २८१*।

गइलक्खण– गमनं गतिः देशान्तर प्राप्तिः, लक्ष्यतेऽनेनति लक्षणं, गतिलक्षणमस्येति गति लक्षणः। *उत्त॰ ५५९*।

गइल्लएणं– गतेन। *बृह॰ २७ आ*।

गइसमावण्णे– गतिसमापन्नः-गतियुक्तः। *सूर्य॰ १९७*।

गई– तत्र गम्यते-नैरयिकादिगतिकर्मोदयवशादवाप्यते इति गतिः-नैरयिकत्वादिपर्यायपरिणतिः। *प्रज्ञा॰ २८५*। गमनं गतिः-प्राप्तिरिति। *प्रज्ञा॰ २३८*। गम्यते-तथाविधकर्मसचिवैः प्राप्यते इति गतिः-नारकत्वादिपर्यायपरिणतिः। *प्रज्ञा॰ ४६९*। तथापरिणामवृत्तिः। *दशवै॰ ७०*। गतिः-प्रवृतिः। *स्था॰ ४६४*। प्रज्ञापकस्थानापेक्षया मृत्वाऽन्यत्र गमनम्। *स्था॰ १३३*।

गए– गजः-अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्याष्टममध्ययनम्। *अन्त॰ ३*। गतः-व्यवस्थितः। *जीवा॰ २४२*।

गओ– गतः- स्वस्थानं प्राप्तः *ज्ञाता॰ १६९*।

गगणतलं– गगनतलं—अम्बरतलम्। *सूर्य॰ २६४*।

गगणवल्लभपामोक्खा– गगनवल्लभप्रमुखाः। *जम्बू॰ ७४*।

गगणवल्लभो– गगनवल्लभः। *आव॰ १४४*।

गग्गर– गग्गरकः-परिधानविशेषः। *जम्बू॰ ४२९*।

गग्गा– गौतमगोत्रस्य भेदः। *स्था॰ ३९०*।

गग्गे– गार्ग्यः गर्गसगोत्रः। *उत्त॰ ५५०*।

गच्छति– धावन्ति। *उत्त॰ ५०४*।

गच्छ– गच्छः-एकाचार्यपरिवारः। *औप॰ ४५*।

गच्छति– आरभते। *प्रज्ञा॰ ६०१*। प्रवर्तते। *उत्त॰ २४३*।

गच्छापागड्डित्तणं– गच्छप्रकर्षित्वम्। *बृह॰ ११९ अ*।

गच्छागच्छि– एकाचार्यपरिवारो गच्छः। गच्छेन गच्छेनभूत्वा गच्छागच्छी। *औप॰ ४५*।

गजचलनमलनं– अशुभकर्मफलविपाकविशेषः। *सम॰ १२६*।

गजदन्तः– वनस्पतिविशेषः। *जीवा॰ १९१*। *जम्बू॰ ३१४*।

गजसुकुमाल– सोमिलद्विजेन मारितो मुनिविशेषः। *अनुयो॰ १३७*। धरण्यां क्षिप्तो मुनिः। *संस्ता॰* । गजसुकुमालः-कृष्णभ्राता। *व्यव॰ १८८ आ*।

गजानीकं– सैन्यस्य भेदः। *जीवा॰ २११७*।

गज्ज– गद्यं-महूरं हेउनिजुत्तं गहियमपायं विरामसंजुत्तं, अपरिमियं चऽवसाणे कव्वं गज्जंति नायव्वं। *दशवै॰ ८७*। गद्यं-अच्छन्दो निबद्धम। *स्था॰ २८८*।

गज्जफलाणि– वस्त्रविशेषः। *आचा॰ ३९३*।

गज्जहाणुकूलवाए– गर्जभानुकुलवातः। *आव॰ ३८७*।

गज्जिते– गर्जितं-जीमूतध्वनिः। *स्था॰ ४७६*।

गज्जियाति– गर्जितानि-स्तनितानि। *भग॰ १९५*।

गज्जियकरणं– गर्जितकरणम्। *आव॰ ७३५*।

गड्डिए– तद्गतस्नेहतन्तुभिः सन्दर्भितः। *भग॰ २९२*।

गडु– गण्डम्। *उत्त॰ ३३८*।

गड्डुलं– आविलं आकुलं वा। *स्था॰ २७८। सम॰ ५३।*

गड्डं– गर्त्तः श्वभ्रम्। *भग॰ ६८३।* गर्त्ता-नीचैरुत्खातितो भूमि-भागः। *भग॰ १७४।*

गड्डरिका– ईतिः। *राज॰ ६।*

गड्डरिया– गड्डरिका ईतिविशेषः। *जम्बू॰ २९।*

गड्डा– गर्ता। *बृह॰ ९अ। ओघ॰ २०।* खड्डा। *निशी॰ ९८ अ।*

गड्डाइ– गर्ता-महती खड्डा। *जम्बू॰ १२४।*

गड्डाओ– गन्त्र्यः। *बृह॰ २८अ।*

गुड्डाहारा– क्षुद्राहारा। *जम्बू॰ १७१।*

गड्डी– गन्त्री। *ओघ॰ १४१। आव॰ १०३।* भंडी। *निशी॰ १८७अ।* दुचक्का। *ओघ॰ १४०।*

गढिए– ग्रथित आहारविषयस्नेहतन्तुभिः सन्दर्भितः। *भग॰ ६५०।* लोमतन्तुभिः सन्दर्भितः। *ज्ञाता॰ ८५।*

गढिते– मूर्छितः। *विपा॰ ३८।*

गढियगिद्धो– ग्रथितगृद्धः-अत्यन्तगृद्धिमान्। *प्रश्न॰ ३६।*

गण– मूलभेदो। *निशी॰ १५२आ।* गणः-एकसमाचार-जनसमूहः। *प्रश्न॰ ८६।* एकवाचनाचारक्रियास्थानां समुदायः सूत्रं वा। *आव॰ १३४।* कुलसमुदायः। *बृह॰ २६१ अ। स्था॰ २९९।* परिवारः। *जम्बू॰ ३२३।* एकवाचनाचार्य-समुदायः। *जम्बू॰ १५३।* समुदायः-निजज्ञातिः। *जम्बू॰ १६७।* शिष्यवर्गम्। *भग॰ २३२।*

गणए– गणकः-जोतिषिकः भाण्डागारिको वा। *औप॰ १४।*

गणओ– गणशो-बहुशोऽनेकशो वा। *सूत्र॰ ३८९।*

गणका– गणितज्ञा भाण्डागारिका इति। ज्योतिषिका इत्यपरे। *राज॰ १२१।*

गणग– गणकाः-गणितज्ञाः। भाण्डागारिकाः। *भग॰ ४६४।* गणकाः-ज्योतिषिकाः भाण्डागारिका वा। *भग॰ ३१८। जम्बू॰ १९०।*

गणचिंतगो– गणावच्छेदकादिः। *बृह॰ २४०आ।*

गणट्ठकरे– गणस्य-साधुसमुदायस्यार्थान्-प्रयोजनानि करो-तीति गणार्थकरः-आहारादिभिरुपष्टम्भकः। *स्था॰ २४१।*

गणणं– गणनं-एतावदधीतमेतावच्चाध्येतव्यमिति। *आव॰ ६८।* पाठे स्मृतौ वा गणनम्। *आव॰ ६८।*

गणणग्गं– गणानाग्रं-संख्या धर्म्मस्थानात् स्थानं, दशगुण-मित्यर्थः। *आचा॰ ३१८।*

गणणायग– गणनायकाः-प्रकृतिमहत्तराः। *राज॰ १४०।* गणनायकाः-मल्लादिगणमुख्याः। *जम्बू॰ १९०।* गणनायकः –गणनायकाः-प्रकृतिमहत्तरः। *औप॰ १४।*

गणणोवगं– गणनां-कराङ्गुलिरेखास्पर्शनादिनैकद्वित्रिसंख्या-त्मिकामुपगच्छति-उपयाति गणनोपगम्। *उत्त॰ ५४२।*

गणति– गणयति-प्रेक्षते, आलोचयति वा। *आव॰ ५३६।*

गणथेरा– ये गणस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्था कारिणस्तद्वङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते गणस्थविराः। *स्था॰ ५१६।*

गणधम्म– मल्लादिगणव्यवस्था जैनानां वा कुलसमुदायो गणः-कोटिकादिस्तद्धर्म्मः-तत्सामाचारी गणधर्म्मः। *स्था॰ ५१६।* गणधर्मः-मल्लादिगणव्यवस्था। *दशवै॰ २२।*

गणधर– जिनशिष्यविशेषः। आर्यिकाप्रतिजागरकः वा साधु-विशेषः। *स्था॰ १४३।* जिनशिष्यविशेषः। आर्यिकाप्रतिजा-गरको वा साधुविशेषः समयप्रसिद्धः। *स्था॰ २४४।* अनुत्त-रज्ञानदर्शनादिधर्मगणं धारयतीति गणधरः। *दशवै॰ १०। आव॰ ६१।*

गणधरता– लब्धिविशेषः। *स्था॰ ३३२।*

गणधरदेवकृतं– अङ्गप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थः। *नन्दी॰ २०३।*

गणनागुणे– द्विकादि। *आचा॰ ८६।*

गणनायग– गणनायकाः-प्रकृतिमहत्तराः। *भग॰ ३१८, ४६३।*

गणमूढो– जे गणे ता ऊणं अहियं वा मन्नति सो। *निशी॰ ४१आ।*

गणराजा– सेनापतिः। *आव॰ ५१६।*

गणराया– गणराजाः-सामन्ताः। *भग॰ ३१७। आचा॰ ३७७।* समुत्पन्ने प्रयोजने ये गणं कुर्वन्ति ते गणप्रधाना राजानो गणराजाः सामन्ता इत्यर्थः। *भग॰ ३१७।* विशालीनगर्यां शङ्खाभिधो गणराजः। *आव॰ २१४।*

गणसंठिति– गणसंस्थितिः-स्वगच्छकृता मर्यादा। *स्था॰ २४१।*

गणसंमया– गणसंमताः महत्तरादयः। *दशवै॰ १०३।*

गणासोभकरे– गणस्यानवद्यसाधुसामाचारीप्रवर्त्तनेन वादि-धर्मकथिनैमित्तिकविद्यासिद्धत्वादिना वा

शोभाकरणशीलो गणशोभाकरः। *स्था॰ २४१।*

गणसोहिकरे– गणस्य यथायोगं प्रायश्चित्तदानादिना शोधिं–शुद्धिं करोतीति गणशोधिकरः। *स्था॰ २४१।*

गणहर– यस्त्वाचार्यदेशीयो गुर्वादेशात् साधुगणं गृहीत्वा पृथग्विहरति स गणधरः। *आचा॰ ३५३।* गणं-गण-समूहं धारयति-आत्मन्यवस्थापयतीति गणधरः। *उत्त॰ ५५०।* निर्ग्रन्थीवर्त्तापकः। *बृह॰ २०३* आ। गणधरः-सूत्रकर्त्ता। *आव॰ ३१४।* गणधरः-आचार्यः। *प्रज्ञा॰ ३२७। आव॰ ६१।*

गणहरा– गणः-एकवाचनाचारयतिसमुदायस्तं धरन्तीति गणधराः, वाचनादिभिर्ज्ञानादिसम्पदां सम्पादकत्वेन गणा-धारभूता इति भावः। *जम्बू॰ १५४।* गणधराः-तन्नायका आचार्याः भगवतः सातिशयानन्तरशिष्याः। *स्था॰ ४३०।*

गणा– एकक्रियावाचनानां साधूनां समुदायाः। *स्था॰ ४३०, ४५२।* निवूढपइन्ना जोगा। *दशवै॰ १५८।* समानवाच-नाक्रियाः साधुसमुदायाः। *सम॰ १४।*

गणाभिओगो– गणाभियोगः। *आव॰ ८११।*

गणावच्छेइए– गणावच्छेदकः-गच्छकार्यचिन्तकः। *आचा॰ ३५३।*

गणावच्छेए– गणस्यावच्छेदो-विभागोऽ□शोऽस्यास्तीति, यो हि गणांशं गृहीत्वा गच्छोपष्टम्भायैवोपधिमार्गणादिनिमित्तं विहरति स गणावच्छेदकः। *स्था॰ १४४।*

गणावच्छेतितो– उवज्झाओ। *निशी॰ २१२* अ।

गणाहिवई– आर्यिकाणां गणधरः। *बृह॰ ३०९* अ।

गणि– परिच्छेदः। *नन्दी॰ १९३।* गणाधिपतिः, आचार्यः। *स्था॰ १७२।* अर्थपरिच्छेदः। *औप॰ ३४।* गणिशब्दः परि-च्छेदवचनः। *सम॰ १०७। प्रज्ञा॰ ३२७।* उवज्झाओ। *निशी॰ ३११* आ।

गणिअ– गणितं-सङ्ख्यानं, सङ्कलिताद्यनेकभेदं पाटीप्रसि-द्धम्। *जम्बू॰ १३७।* गणितं, अङ्कविद्या। *जम्बू॰ १३६।*

गणिआयरिओ– गणित्वमाचार्य्यत्वं च यस्यास्त्यसौ। *निशी॰ ३००* अ।

गणिका– भावस्याप्रशस्ते दृष्टान्तः। *स्था॰ १५५।* वाराङ्गना। *आव॰ ५५।*

गणितं– विष्कम्भपादाभ्यस्तः परिक्षेपः। *सम॰ १३०।*

गणितप्पहाणा– बावत्तरिकलासु प्रथमा कला। *ज्ञाता॰ ३८।*

गणितानुयोग– अर्हद्वचनानुयोगे द्वितीयभेदः सूर्यप्रज्ञप्त्यादिकः। *आचा॰ १। स्था॰ ४८१।*

गणित्तिय– माला। *आव॰ ४३३।*

गणिपिडग– गणिनः आचार्यस्य पिटकमिव पिटकं गणिपिटकम्। *सम॰ ५।* परिच्छेदसमूहो गणिपिटकम्, गुणानां गणोऽस्या-स्तीति गणी-आचार्यस्तस्य पिटकमिव पिटकं सर्वस्व भाजनं गणिपिटकम्। *सम॰ १०७।* गणिनः-आचार्यास्तेषां पिट-कमिव पिटकं-सर्वस्वाऽऽधारो गणिपिटकम्। *उत्त॰ ५१३।* द्वादशाङ्गी। *आव॰ ५७।* गुणगणोऽस्यास्तीति आचार्यस्तस्य पिटकं-सर्वस्वं गणिपिटकम्। *अनुयो॰ ३८।* परिच्छेदसमूहः। *नन्दी॰ १९३।* गणीनां-अर्थपरिच्छेदानां पिटकमिव पिटकं स्थानं गणिपिटकम्। *औप॰ ३४।* पिटकमिव वालञ्जकवा-णिजकसर्वस्वाधारभाजनविशेष इव यत्तत्पिटकं, गणिन आचार्यस्य पिटकं गणिपिटकं-प्रकीर्णकश्रुतादेशश्रुतनिर्यु-क्त्यादियुक्तं जिनप्रवचनम्। *औप॰ ३४।* गणिपिटकं-आचार्यसर्वस्वम्। *दशवै॰ १३।*

गणिम– गणणाए गणिज्जंति। *निशी॰ ८९* आ। *आव॰ १८९।* गणिमं-गण्यते संख्यायते वस्त्वनेनेति, एकादि रूपकादि। *अनुयो॰ १५१।*

गणियं– गणितं सङ्ख्यानम्। *आव॰ १२८। ज्ञाता॰ ३८। जीवा॰ ३२५।* गणितविषये बीजगणितादौ परं पारमुपगतः। *आचा॰ ३१९।* गणितं-संख्यानं सङ्कलितादि अनेकभेदं-प्राटीप्रसिद्धम्। *सम॰ ८४।* एकादि। *स्था॰ १९८।*

गणियधम्मो– गणितधर्मः-यद् बहु स्तोकेन गुण्यते। *प्रज्ञा॰ २७५।*

गणियपयं– गणितपदमित्येवंप्रकारस्य गणितस्य सञ्ज्ञा। *भग॰ ४२६।*

गणियलिवी– लिपिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

गणियविसए– गणितविषयः-गणितगोचरः गणितप्रमेयः। *भग॰ २७६।*

गणियसुहुमया– परिकम्मेसु गणियसुहुमया। *निशी॰ ६७।*

गणियसुहुमे– गणितसूक्ष्मं-गणितं सङ्कलनादि तदेव सूक्ष्मं सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वात्। *स्था॰ ४७८।*

गणियाघरविहेडिओ– गणिकागृहविनिर्गतः। *आव॰ ५७७।*

गणियापाडग– गणिकापाटकं-गणिकागृहविथिः। *दशवै॰ १०८।*

गणियायारा– गणिकाकाराः-समकायाः। *ज्ञाता॰ ६८।*

गणिविज्जा– गणि-आचार्य तस्य विद्या-ज्ञानम्, सबालवृद्धो गच्छो-गणः सोऽस्यास्तीति गणिविद्या। *नन्दी॰ २०५।*

गणिसंपइ– गणिसम्पदः-आचाराद्यष्टभेदभिन्ना, अष्टौ सम्पदः। *उत्त॰ ३८।*

गणी– गच्छाधिपः। *आचा॰ ३५३।* गणः-साधुसमुदाया यस्यास्ति स्वस्वामिसम्बन्धेनासौ गणी गणाचार्यः-गणना-यकः। *स्था॰ १४०।* उवज्झातो अन्नो व गच्छे वुढ्ढो। *निशी॰ ६३* आ। गणोऽस्यास्तीति गणी गणाचार्यः। *स्था॰ १४३, २४४।* गुणानां गणोऽस्यास्तीति गणी-आचार्यः। *सम॰ १०७।* आचार्यः। *अनुयो॰ ३८। नन्दी॰ १९३।* उपा-ध्यायः। *बृह॰ ९५* अ। *बृह॰ ३* अ। गणी-गणाधि-पतिः। *दशवै॰ २४२।* गणाचार्यः। *उत्त॰ १७।* आचार्यः। *आव॰ २।* अर्थ-परिच्छेदः। *भग॰ ७११।* गणी-उपाध्यायः। *व्यव॰ १७१* आ। गणी-गच्छाधिपतिः। *व्यव॰ १३७* अ। गणोऽस्या-स्तीतिगणी-गणावच्छेदकः। *व्यव॰ २३* अ। वृषभः। *व्यव॰ ३६७* आ। गणी-उपाध्यायः। *बृह॰ १७७* आ।

गणेइ– गणयति दृष्ट्या परिभावयति। *पिण्ड॰ ७८।*

गणेत्तिया– गणेत्रिका-कलाचिकाऽऽभरणविशेषः। *भग॰ ११३।* रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणम्। *ज्ञाता॰ २२०।* हस्ताभरणवि-शेषः। *औप॰ ९५।*

गण्डक– लम्बूसकः। *राज॰ १०४।*

गणडकादिः– शरीरोद्भवो व्रणविशेषादिः। *आव॰ ७६५।*

गण्डलेखा– कपोलविरचितमृगमदादिरेखा। *निर॰ २०७।* ज्ञानम्। *आचा॰ १६७।*

गतवाही– शुक्रमहाग्रहस्य द्वितीया विथि। *स्था॰ ४६८।*

गता– गदा। *जीवा॰ ११७।*

गतिचंचल– चञ्चलस्य प्रथमो भेदः। *बृह॰ १२४* अ।

गतिचपलः– द्रुतचारी। *उत्त॰ ३४६।*

गतिनामनिहत्ताउए– गतिर्नरकगत्यादिभेदाच्चतुर्द्धा सैवा नाम गतिनाम तेन सह निधत्तमायुर्गतिनामनिधत्तायुः। *प्रज्ञा॰ २१७।*

गतिपरिणाम– अजीवपरिणामे द्वितीयो भेदः। *स्था॰ ४७५।*

गतिपरियाए– चलनं मृत्वा वा गत्यन्तरगमनलक्षणः, यश्च वैक्रियलब्धिमान् गर्भान्निर्गत्य प्रदेशतो बहिः सङ्क्रामयति स वा गतिपर्यायः। *स्था॰ ६६।*

गतिपरियातो– गतिपर्यायः चलनं जीवत एव। *स्था॰ १३३।*

गतिप्पहाणं– प्रधानगतिं मुक्तिमिति। *उत्त॰ ४६६।*

गतिरतिया– गतौ रतिर्येषां ते गतिरतिकाः समयक्षेत्रवर्त्तिनः। *स्था॰ ५७।*

गतिश्चङ्क्रमणं– उपाश्रयान्तरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणम्। *सम॰ १०७।*

गतिसमावन्नगा– गतिं-गमनं समिति सन्ततमापन्नकाः प्राप्ताः गतिसमापन्नकाः, अनुपरतगतय इत्यर्थः। *स्था॰ ५८।*

गती– गमनं, गम्यत इति वा गतिः-क्षेत्रविशेषः। गम्यते वा अनया कर्म्मपुद्गलसंहत्येति गतिः-नामकर्मोतरप्रकृतिरूपा, तत्कृत्वा वा जीवावस्था। *स्था॰ ३४४।*

गत्त– गात्रं-अङ्गम्। *प्रश्न॰ ६०।* उरः। *ज्ञाता॰ ६६।* श्वभ्रम्। *भग॰ ३०७।* गात्रं-स्कन्धोरुपृष्ठादि। *अनुयो॰ १७७।* देहः। *भग॰ ७०५।*

गत्तगाइं– गात्राणि-ईषादीनि। *राज॰ ९३।*

गत्तपरिपुंछणं– गात्रपरिपुञ्छनं-पुच्छम्। *जम्बू॰ ५२९।*

गत्ता– गर्त्ता-महती खड्डा। *२८२।*

गत्ताइं– गत्राणि-ईषादीनि। *जम्बू॰ २८५।*

गत्ति– कृतिः-चर्म। *ओघ॰ ३४।*

गदतियातो– गहितं। *निशी॰ १९* अ।

गद्दतोय– चन्द्राभविमानवासी पञ्चमो लोकान्तिकदेवः। *भग॰ २७१। स्था॰ ४३२। आव॰ १३५।*

गद्दभा– एकखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गद्दभालि– गर्दभालिः-स्कन्दकचरिते श्रावस्तीनगर्यां स्कन्द-कपरिव्राजकस्य गुरुः। *भग॰ ११२।* अनगारविशेषः। *उत्त॰ ४३९, ४४२।*

गद्दभिया– गर्दभिका-शालिरत्नम्। *आव॰ ४३५।*

गद्दभो– यवराजस्य पुत्रः। *बृह॰ १९१* अ। गर्दभः-दृष्टान्त-विशेषः। *ओघ॰ ८४।* एकखुरचतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।*

गद्दा– गर्त्ता। *ज्ञाता॰ ६७।*

गद्यं– अच्छन्दोबद्धं शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत्। *जम्बू॰ ३५९।*

गब्भ– गर्भः-उदरसत्त्वः। *स्था॰ ४२३।* गर्भः-हंसनिर्वर्त्तितः कोसिकाकारः। *अनुयो॰ ३४।* गर्भः सजीवपुद्गलपिण्डकः। *भग॰ २१८।* गर्भो-मध्यभागः। *जम्बू॰ १८३।*

गब्भगडंडिया– रणपट्टगो। *निशी॰ २४५* आ।

गब्भगिहं– गर्भगृहं-गेहाकारद्रुमगणविशेषः। *जीवा॰ ३६९। उत्त॰ २१९।*

गब्भघर– गर्भगृहं-सर्वतो वर्तिगृहान्तरं, अभ्यन्तगृहम्। *जम्बू॰ १०६।*

गब्भघरए– मोहनगृहस्य गर्भभूतानि वासभवनानीति। *ज्ञाता॰ १२९।*

गब्भघरगा– गर्भगृहकाणि-गर्भगृहाकाराणि। *जीवा॰ २००। जम्बू॰ ४५।*

गब्भट्ठमे वासे– । *ज्ञाता॰ ३८।*

गब्भमासो– गर्भमासः। कार्तिकादिर्यावत् माघमासः। *व्यव॰ २४०* अ।

गब्भया– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४।*

गब्भवक्कंतिय– गर्भे-गर्भाशये व्युत्क्रान्तिः-उत्पत्तिर्येषां ते गर्भेव्युत्क्रान्तिका न संमूर्च्छिनजा इत्यर्थः। *सम॰ १३५।*

गब्भवक्कंतियमणुस्सा– गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

गब्भवक्कंतिया– गर्भे व्युत्क्रान्तिः-उत्पत्तिर्येषां ते, अथवा गर्भात्-गर्भावासाद् व्युत्क्रान्तिः-निष्क्रमणं येषां ते गर्भव्यु-त्क्रान्तिकाः। *जीवा॰ ३५। प्रज्ञा॰ ४४।*

गब्भवसही– गर्भवसतिः। *आव॰ ३२५।*

गब्भवासो– गर्भवासः-मध्यभागविस्तारः। *प्रश्न॰ ६२।*

गब्भसाडणा– गर्भशातनाः-गर्भस्य खण्डशो भवनेन पतन-हेतवः। *विपा॰ ४२।*

गब्भसारो– गर्भसारः। *आव॰ ४१३।*

गब्भाकरा– गर्भकरा गर्भाधानविधायिनी विद्या। *सूत्र॰ ३१९।*

गब्भिआ– गर्भिता-अनिर्गतशीर्षकाः। *दशवै॰ २१९।*

गब्भिजा– गर्भे भवाः। गर्भजाः-नौमध्ये उच्चावचकर्मकारिण। *ज्ञाता॰ १३७।*

गब्भिया– गर्भिना जातगर्भा डोभकिता इत्यर्थः। *ज्ञाता॰ १११।* जासिंण तावं सीसयं। *दशवै॰ ११२।*

गब्भुद्देसो– गर्भोद्देशके-गब्भसूत्रोपलक्षितोद्देशके सप्तदशपद-स्य षष्ठे सूत्रम्। *भग॰ ७६१।*

गब्भो– गर्भः-गर्भावासः। *प्रज्ञा॰ ४४।*

गम– सदृशपाठः कृतः। *स्था॰ १८३।* इहादिमध्यावसानेषु किञ्चिद्विशेषतो भूयोभूयस्तस्यैव सूत्रस्योच्चरणं गमः। *नन्दी॰ २०३।* अर्थगमाः-अर्थपरिच्छेदः। *नन्दी॰ २११।* गम्यते अनेन वस्तुरूपमिति गमः-प्ररूपणा। *उत्त॰ २४०।* प्रकारः। *बृह॰ १५२।* चतुर्विंशतिदण्डकादिः, कारणवशतो वा किञ्चद्विसदृशः सूत्रमार्गः। *आव॰ ५९३।* वाचनाविशेषः, पाठः। *ज्ञाता॰ ३६। जम्बू॰ २६६।* गमाः-तदक्षरोच्चा-रणप्रवणाभिन्नार्थाः। *दशवै॰ ८८।* गमकः-भङ्गः। *ओघ॰ ३५।* गमः-पाठः। *जम्बू॰ ३२८।* सदृशपाठः। *जम्बू॰ २१६।* योगः। *पिण्ड॰ १२४।* आगमो। *निशी॰ २०२।* सदृशः पाठः। *भग॰ ४५।*

गमग– गमकः-भङ्गः। *ओघ॰ ३५।*

गमणं– अवधावनम्। *बृह॰ २१८* आ। गमनम्-आसेवन-रूपतया प्रापणम्। *आव॰ ८२३।* संहितादिक्रमेण व्याख्यातुः प्रवर्त्तनम्। *उत्त॰ ११।* अन्यतोऽन्यत्र गमनम्। *दशवै॰ १५५।* अभिगमः, मैथुनासेवना वा। *आव॰ ८२५।* मैथुनासेवनम्। *उपा॰ ८।* वेदनम्। *स्था॰ ३४८।* वर्त्तनम्। *आचा॰ २६२।* भिक्षादानार्थमभ्यन्तरप्रवेशः। *ओघ॰ १६६।*

गमणगुण– गमनं गतिस्तद् गुणो-गतिपरिणामपरिणतानां जीव-पुद्गलानां सहकारिकारणभावतः कार्यं मत्स्यानां जीवस्येव यस्यासौ गमनगुणो गमने वा गुणः-उपकारो-जीवादीनां यस्मादसौ गमनगुण इति। *स्था॰ ३३३।* गतिसामर्थ्यः। *ज्ञाता॰ ३५।*

गमणपयार– गमनप्रचारः-गतिक्रियाव्रतिः। *ज्ञाता॰ ३५।*

गमणागमण– ईर्यापथिकी। *ज्ञाता॰ २००।*

गमयति– स्केटयति प्रापयति वा शिवम्। *नन्दी॰ २३।*

गमा– गमाः-अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छदाः। *सम॰ १०८।* वस्तुपरिच्छदप्रकाराः नामादयः। *उत्त॰ ३४२।* अर्थपरिच्छि-त्तिप्रकाराः। *उत्त॰ ७१३।* प्रकाराः-द्विरुच्चारणीयाणि पदानि। *बृह॰ १५९* आ। भङ्गगणितादयः-सदृशपाठा वा। *बृह॰ ११०* आ।

गमागमसंववहारो– गमागमसंव्यवहारः। *आव॰ ३९५*।

गमि– अयमनेकार्थत्वाद्धातूनामवस्थाने वर्त्तते। *दशवै॰ ७०*।

गमिओ– ज्ञापितः। *आव॰ ६२७*।

गमिकं– गमा अस्य विद्यन्त इति। *आव॰ २५*। दृष्टिवादः। *नन्दी॰ २०३*।

गमित्तए– गन्तुम्। *उत्त॰ ३४०*।

गमेइ– गमयति। *आव॰ १७२*।

गमेय– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

गमो– पकारो। *निशी॰ ११५* आ।

गम्मधम्म– गम्यधर्मः-यथा दक्षिणापथे मातुलदुहिता गम्या उत्तरापथे पुनरगम्यैव। *दशवै॰ २२*।

गम्मो– गम्मो गमनीयो वा अष्टादशानां कराणाम्, ग्रसते वा बु-द्ध्यादीन्गुणान्। ग्रामः। *बृह॰ १८१* अ। गम्यः-परिभव-स्थानम्। *प्रश्न॰ १२०*।

गय– गतः-स्थितः। *जीवा॰ १६४*। *प्रज्ञा॰ ९१*। गतः। *ज्ञाता॰ ११८*। चीर्णम्। *सूर्य॰ २२*। गजः। *प्रश्न॰ ७३*। प्रथमस्वप्ननाम। *ज्ञाता॰ २०*। गतः-आश्रितः। *भग॰ १९१*। गदा-लकुटविशेषः। *प्रश्न॰ २१*।

गयउर– गजपुरं नगरविशेषः। *उत्त॰ १०९, ३५४, ३५५*।

गयकंठ– गजकण्ठः-हस्तिकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा॰ २३४*।

गयकण्णो– गजकर्णः अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४*।

गयकन्नदीवे– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६*।

गयकन्ना– गयकन्नान्तर्द्वीपे मनुष्यविशेषः। *स्था॰ २२६*। गजकर्णनामा अन्तर्द्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

गयकलभे– गजकलभः-करिपोतः। *प्रज्ञा॰ ३६०*।

गयग्गपदगं– गजाग्रपदकं-योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते एडकाक्षनगरे पर्वतविशेषः। *आव॰ ६६९*।

गयग्गपदग्गो– गजाग्रपदकं-यत्र इन्द्रैरावणस्य पदानिदेवता-प्रभावेणोत्थितानि तेन प्रसिद्धं दशार्णकूटम्। *आव॰ ६६९*।

गयग्गपय– गजाग्रपदो दशार्णकूटवर्त्ती। *आचा॰ ४१८*।

गयग्गपादगो– गजाग्रपादकः दशार्णकूटापरानामा। *आव॰ ३५९*।

गयग्गोपवतो– पर्वतविशेषः। *निशी॰ ३४१* अ।

गयछाया– गजछाया। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

गयणंफुसे– गगनस्पर्शा-अतिप्रबलतया नभोऽङ्गणव्यापिना। *उत्त॰ ४९*।

गयण्हाण– गजस्नानम्। *दशवै॰ २२६*।

गयतालुए– गजतालुकम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

गयतेये– गततेजाः। *भग॰ ६८४*।

गयदंतसंठिते– गजदन्तसंस्थितम्। *सूर्य॰ १३०*।

गयनियत्त– अनुसंपन्ना एवात्मीयेन व्यक्तविहाडादिना समं गतास्तस्य च कालगततया प्रतिभग्नत्वादिना वा कारणेन प्रत्यागन्तव्यं नाभवततः प्रत्यागच्छन्तस्तं साधुपुत्रसंपद्यते। *व्यव॰ ३७९* अ।

गयपुरं– गजपुरं-कुरुजनपदे आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५*। कुरुज-नपदे नगरविशेषः। *आव॰ १४५*। शान्तिकुन्थूनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०*। पांडवानां राजधानी। *आव॰ ३६५*। यत्र धन-श्रीजीव इभ्यश्रावकशङ्खस्य दुहिता सर्वाङ्गसुन्दरी च्युता। *आव॰ ३९४*।

गयमच्छर– गतमत्सरः-परस्परासहनवर्जितो निर्मसको वा। *ज्ञाता॰ २३१*।

गयमागम– गतागमः। *व्यव॰ १५८* अ।

गयमारिणि– गुच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

गयविक्कमसंठिते– गजविक्रमसंस्थितम्। *सूर्य॰ १३०*।

गयसुकुमाल– गजसुकुमालः-अनगारविशेषः। *उत्त॰ ५८२*। वसुदेवपुत्रः। *आव॰ २७३*। प्रद्वेषविषये दृष्टान्तः। *आव॰ ४०४*। पितृवने श्वशुरदग्धः। *मरण॰* ।

गया– गदा-प्रहरणविशेषः। *औप॰ ३*। गता-स्थिता। *ज्ञाता॰ १७*।

गयागत– अव्यक्ता, अविहाडा, अदेशिका, अभाषिका वा अन्यं साधुमुपसंपद्यते, अस्माकममुकप्रदेशेन यथा वा यत्र तेषां गन्तव्यं तत्र ये विवक्षितसाधोरन्येऽव्यक्तविहाडादयो गन्तुका-मास्तान् ब्रुवते वयं युष्माभिः सह गमिष्यामस्तत्र यत्र गन्तु-कामास्ततो यदि प्रत्यागच्छन्ति तदैवत् गतागतम्। *व्यव॰ ३७९* अ।

गया(ज्ज)लं– उद्वेल्यमानं परिधीयमानं वा गर्जयति। *जीवा॰ २६९*।

गर– य आहारं स्तम्भयति कामर्णं वा गरः। *ओघ॰ १६९*।

गराद्यपरनाम। *जम्बू॰ ४९४*। गरः-विषम्। *भग॰ १८२*।

गरण– करणः-विपरिणामहेतुः। *भग॰ ६५*। विषम्। *उत्त॰ ४३९*।

गरलिगाबद्धं– णिक्खित्तं। *निशी॰ ८३* आ।

गरहं– गर्हा-निन्दा, जुगुप्सा। *उत्त॰ ६४*।

गरहइ– आत्मनैव गर्हते-निन्दति। *भग॰ ५८*।

गरहणय– गर्हणं-परसमक्षमात्मदोषोद्भावनम्। *भग॰ ७२७*।

गरहणा– कुत्सनान्येव च गर्हणीयसमक्षाणि। *औप॰ १०३*। गर्हणीयसमक्षं कुत्सा। *अन्त॰ १८*।

गरहणाते– कोकसमक्षदायकादिनिन्दा गर्हता। *प्रश्न॰ १०९*।

गरहणिज्जे– गर्हणीयः समक्षमेव। *ज्ञाता॰ ९६*।

गरहह– जनसमक्षं निन्दां कुरुत। *भग॰ २१९*।

गरहा– गुरुसाक्षिका आत्मनो निन्दा गर्हा। *स्था॰ २१४*।

गरहिए– गर्ह्याणि दास्यादि कुलानि। *आचा॰ ३२७*।

गरहिज्जा– गुरुसाक्षिका। *स्था॰ १३७*।

गरहित्तए– गर्हितु गुरुसमक्षं तानेव जुगुप्सितम्। *स्था॰ ५७*।

गरहित्ता– गर्हणं जनसमक्षं निन्दां विधाय। *भग॰ २२७*।

गराइ– गरादि गरं वा। *जम्बू॰ ४९३*।

गरिट्ठव– एकास्थिकभेदविशेषः। *भग॰ ८०३*।

गरिहंति– गर्हन्ते-कुत्सन्ति। *दशवै॰ १८८*।

गरिहा– आलोचना, विकटना, शुद्धिः, सद्भावदायणा णिंदणा गरहणा विउट्टणं सल्लुद्धरणं च। *ओघ॰ २२५*। गर्हा-जुगुप्सा। *दशवै॰ १४४*। गर्हणं गर्हा-दुश्चरितं प्रति कुत्सा। *स्था॰ ४३*। गर्हा-गर्हणं, परसाक्षिकी कुत्सा, षड्भेदभिन्नं प्रतिक्रमणमेव, प्रतिक्रमणस्य सप्तमं नाम। *आव॰ ५५२*।

गरिहाहि– गर्हणं गुरुसमक्षं निन्दनमेव। *ज्ञाता॰ २०६*।

गरिहिअ– गर्हितं निन्द्यम्। *आव॰ ४७८*। निन्दितः। *दशवै॰ १९७*।

गरिहिइ– गर्हति लोकसमक्षं कुत्सति। *भग॰ १६६*।

गुरु– अधःपतनहेतुरयोगोलकादिगतो गुरुः। *अनुयो॰ ११०*। गन्धद्रव्यविशेषः। *निशी॰ २७६* आ।

गरुडवूहो– गरुडव्यूहः कोणिकस्य युद्धे सैन्यरचना। *आव॰ ६८४*। गरुडाकारसैन्यविन्न्यासविशेषः। *प्रश्न॰ ४७*। सैन्यस्य व्यूहविशेषः। *भग॰ ३१७*।

गरुडवेगः– देवविशेषः। *जम्बू॰ ३५६*।

गरुयं– गुरुकं-बादरम्। *प्रश्न॰ ३६*।

गरुयनिवतितं– गुरुकनिपतितं विद्युदादिगुरुकद्रव्यनिपात-जनितध्वनिः। *प्रश्न॰ ५१*।

गरुल– गरुडः सुपर्णः। *प्रश्न॰ ८*। गरुडः-सुपर्णकुमारजातीयः वेणुदेवः। *स्था॰ ६९*। गरुडा गरुडध्वजाः सुपर्णकुमाराः। *प्रश्न॰ ६९*। गरुडलांछनत्वात् गरुडः। *सम॰ ६२*। गरुडाः-सुवर्णकुमाराः। *राज॰ १२३*। गरुडः गरुडध्वजः। *भग॰ १३५*। सुवर्णकुमाराः। *ज्ञाता॰ १०९*। गरुडध्वजाः-सुपर्ण-कुमारा इत्यर्थः। *सम॰ १५५*।

गरुलदेवे– गरुडदेवः-गरुडो गरुडजातीयो वेणुदेवनामा मता-न्तरेण गरुडवेगनामा वा देवः। *जम्बू॰ ४, ३५५*।

गरुलपक्खियं– एकत उभयतो वा स्कन्धोपरि वस्त्राञ्चला-नामारोपणरूपम्। *बृह॰ २५४* अ। एकत उभयतो वा स्कन्धोपरि कल्पाञ्चलानामारोपणरूपम्। *बृह॰ १२५* अ।

गरुलवूह– गरुडव्यूहम्। *निर॰ १८*।

गरुलासणं– गरुडासनं-यस्यासनस्याधोभागे गरुडो व्यव-स्थितिः सः। *जीवा॰ २००*।

गरुलोववाए– गरुडोपपातः-कालिकसूत्रविशेषः। *नन्दी॰ २०७*।

गर्जिकृत्– गर्जिता। *स्था॰ २७०*।

गर्त्तलङ्घन– दारुसंक्रमस्य भेदः। *आचा॰ २०२*।

गर्दभक– कुमदम्। *दशवै॰ १८५*। प्राणिविशेषः। *आचा॰ ३७६*।

गर्दभिल्लः– नृपतिविशेषः। *बृह॰ १५६* अ।

गर्भोत्पादनं– गर्भपातनम्। *व्यव॰ १६३* आ।

गलंतिया– गलन्तिका गर्गरी। *आव॰ ६९२*।

गल– गलं-बडिशम्। *विपा॰ ८०*। *प्रश्न॰ १३, ५७*। बिडिषम्। *ज्ञाता॰ २३४*। *आचा॰ ३८*। *उत्त॰ ४६०*। गलः। *ओघ॰ १८०*। दंडगस्स अतो लोहकंटगो कज्जति। *निशी॰ २१५* अ।

गलइ– अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *भग॰ ८०४*।

गलओ– गलः। *आव॰ ४०५*। ग्रीवा। *आव॰ २०३*।

गलओस– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

गलकः– स्वरभंगः। *बृह॰ ९१* अ।

गलकवोला– गलकपोलौ। *जीवा॰ २७५।*

गलकुक्कुटी– गल एव कुक्कुटी। *पिण्ड॰ १७३।*

गलगहिओ– गलगृहीतः। *आव॰ ३४६।*

गलच्छल्लं– गलगृहणम्। *प्रश्न॰ ५६।*

गलत्थल्ला– हस्तेन गलग्रहणरूपा। *ज्ञाता॰ १६८।*

गलयंत्रं– यन्त्रविशेषः। *दशवै॰ २७०।*

गललाय– गललातानि कण्ठे न्यस्तानि वरभूषणानि। *जम्बू॰ २६५।*

गलवृन्दं– शरीरान्तर्वर्धमानावयवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४७३।*

गलि– अविनीतः। *उत्त॰ ४८।* मरालः। *आव॰ ७९७।*

गलिगर्दहा– गलिगर्दभाः-दुःशिष्याः। *उत्त॰ ५५४।*

गलिच्चा– गलसत्कानि आभरणानि। *पिण्ड॰ १२४।*

गलियलंबणा– गलितलम्बना-आलम्बनाम् भ्रष्टा, लम्ब्यन्ते इति लम्बनाः-नड्गरास्ते गलिता यस्यां सा। *ज्ञाता॰ १५८।*

गली– गलिः दुष्टाश्चः। *उत्त॰ ६२।* गलित्येव केवलं न तु वहति-गच्छति वेति गलिः-दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा। *उत्त॰ ४९।*

गलेरवं– यो गलेनात्यन्तं रटति। *आव॰ ६६१।*

गल्ल– कपिः। *उपा॰ २१।*

गल्लोदए– गल्लोदकाः। *दशवै॰ १०४।*

गवं– मृगादिपशुः। *सूत्र॰ ७२।*

गवए– गवाकृतिराटव्यो जीवविशेषः। *बृह॰ १०६ अ।*

गवओ– गोणागिती गवओ। *निशी॰ ४७ आ।*

गवक्खए– गवाक्षः। *आव॰ ६७६।*

गवक्खजाल– गवाक्षजालं-गवाक्षाकृतिरत्नविशेषो दामसमूहः। *जीवा॰ १८१, २०५, ३६१। जम्बू॰ ५०।*

गवक्खसंठिओ– गवाक्षसंस्थितः-वातायनसंस्थितः। *जीवा॰ २७९।*

गवक्खो– गवाक्षः-वातायनः। *जीवा॰ २७९। प्रश्न॰ १३८। नन्दी॰ ७३।*

गवच्छ– आच्छादनम्। *जम्बू॰ ५८।*

गवच्छिता– गवच्छं-आच्छादनं गवच्छा सञ्जाता एष्विति गवच्छिकाः(ताः)। *राज॰ ७१।*

गवत्थिया– गवस्था-आच्छादनम्। *जीवा॰ २१४।*

गवय– वनगवः। *जम्बू॰ १२४।* आटव्यः पशुविशेषः। *प्रश्न॰ ३८।* गवयः द्विखुरश्चतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।* गवाकृतिर्वर्त्तुल-कण्ठः। *प्रश्न॰ ७।* द्विखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गवलं– महिषीशृङ्गम्। *आचा॰ २९। उत्त॰ ६५२। ज्ञाता॰ १०१।* माहिषं शृङ्गम्। *जीवा॰ १६४। प्रज्ञा॰ ९१।* माहिषं शृङ्गं रितनत्वग्भागापसारणे द्वष्टव्यम्। *प्रज्ञा॰ ३६०।* शृङ्गम्। *प्रश्न॰ २२।*

गवलगुलिया– तस्यैव माहिषशृङ्गस्य निबिडतरसारनिर्वर्तिना गुटिका गवलगुटिका। *जम्बू॰ ३२।* गवलगुलिका-महिषशृ-ङ्गगोलिका। *ज्ञाता॰ २६।* गवलं-महिष्यशृङ्गं गुलिका-नीली गवलस्य वा गुलिका गवलगुलिका। *ज्ञाता॰ १०१।*

गवलसामला– गवलं-महिषशृङ्गं तद्वत् श्यामलः। श्यामा। *ज्ञाता॰ २३१।*

गवलेइ– माहिषं शृङ्गं तदपि चापसारितोपरितनत्वग्भागं ग्राह्यम्। *जम्बू॰ ३२।*

गवाणी– सामान्येन गवादनी। *आचा॰ ४११।*

गवालीयं– गवालीकं-गोविषयमनृतम्। *आव॰ ८२०।*

गवासं– गावश्चाश्वाश्च गवाश्वं, गावो वाहदोहोपलक्षिताः अश्वाः-तुरगाः। *उत्त॰ १२९।*

गंवेल– गौः। *अनुयो॰ १२९।*

गवेलग– गवेलकः-उरभ्रः। *औप॰ १२। ज्ञाता॰ २।*

गवेलगा– गवेलकाः-ऊरणकाः। *अनुयो॰ १२९। स्था॰ ३९५।* गवेलकाः ऊरभ्राः। *भग॰ १३५।* गावश्चएलकाश्च ऊरणका गवेलकाः। *स्था॰ २९५।*

गवेषणा– व्यतिरेकधर्म्मालोचनम्। *नन्दी॰ १८७।*

गवेसओ– गवेषकः शोधकः। *आव॰ ४१८।* गवेषकः। *आव॰ ३५४।*

गवेसण– व्यतिरेकतो गवेषणम्। *भग॰ ६६३।* गवेषणं-व्यतिरे-कधर्मैरन्वेषणम्। *औप॰ ९५।* व्यतिरेकधर्मालोचनम्। *आव॰ ९९।* अनुपलब्भ्यमानस्य पदार्थस्य सर्वतः परिभावनम्। *पिण्ड॰ २९।* गवेष्यतेऽनेनेति गवेषणं तत ऊर्द्ध्वं सद्भूता - र्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मत्यागोऽ□ न्वयधर्माध्यासालोचनम्। *नन्दी॰ १७६।* गवेषणं-व्यतिरेकधर्मालोचनम्। *भग॰ ४३३।* इह शरीरकण्डूयनादयः पुरुषधर्माः प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपम्। *ज्ञाता॰ १२।*

गवेसणा– व्यतिरेकधर्मालोचना गवेषणा। *आव॰ १८।* *नन्दी॰ १८७।* गवेषणा-प्रार्थना। *सूत्र॰ ७२।* अदिट्ठे गवेषणा थुभि-याइचिंधेहिं गवेसणा। *निशी॰ १९९* अ।

गवेसति– गवेषयति। *आव॰ २००।*

गवेसमाणे– गवेषयन्-व्यतिरेकधर्मपर्यायलोचनतः बहुजनस्य। *ज्ञाता॰ ८१।*

गव्व– गर्वः-अभियोगः। *आव॰ ७७२।* गर्व-शौण्डीर्यम्। *भग॰ ५७२।*

गह– ग्रहः-उत्क्षेपः प्रारम्भरसविशेषः। *दशवै॰ ८८।*

गहगज्जिय– ग्रहगर्जितं-ग्रहचारहेतुकं गर्जितम्। *जीवा॰ २८२।* ग्रहसञ्चलादौ गर्जितं-स्तनितं ग्रहगर्जितम्। *भग॰ १९६।*

गहजुद्धं– ग्रहयुद्धं-यदेको ग्रहोऽन्यस्य ग्रहस्य मध्येन याति। *जीवा॰ २८२।*

गहण– गुविलं। *दशवै॰ १२०।* *नन्दी॰ ४२।* गहनं-सङ्कुलम्। *आव॰ ५६७।* वननिकुञ्जः। *दशवै॰ २२९* *बृह॰ ९* अ। अपूर्वस्य ग्रहणं ग्रहणम्। *व्यव॰ ३७६* अ। गहनः-गुपिलः। *उत्त॰ २९०।* वृक्षवल्लीलतावितानवीरुत्समुदायः। *भग॰ ९२।* सर्वांगीणं कराभ्यामादानम्। *बृह॰ २३०* अ। गहनं-वृक्ष-गह्वरम्। *विपा॰ ६२।* धवादिवृक्षैः कटिसंस्थानीयम्। *सूत्र॰ ८९।* गह्वरम्। *प्रश्न॰ ३९।* गहनमिव गहनं दुर्लक्ष्यान्तस्तत्त्वत्त्वात्। प्रथम अधर्मद्वारस्य विंशतितमं नाम। *प्रश्न॰ २७।* चद्सुरुवरागो गहणं भण्णति। *निशी॰ ७०* आ। गृह्यत इति ग्रहणम्। *प्रज्ञा॰ २६२।* ग्रहणकम्। *प्रश्न॰ ३०।* सम्ब-न्धनम्। *जीवा॰ ४४२।* सूत्रादेस्तत्प्रथमतया आदानम्। *आव॰ २६७।* भाषाद्रव्याणां कामयोगेन यत् ग्रहणम्। *दशवै॰ २०८।* सर्वाङ्गिकं तु ग्रहणम्। *स्था॰ ३२७।* ग्रहणं ग्रहस्य वस्तुनः परिच्छेदः। *अनुयो॰ २१६।* गृहस्थस्य गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहणं, यस्मात्प्रदेशाद्भण्डकं गृण्हाति तं प्रदेशम्। *ओघ॰ १६६।* गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहणं शरावसंपुटम्। *ओघ॰ १३९।* निर्जलप्रदेशोऽरण्यक्षेत्रं वा। *आचा॰ ३८२।* आक्षेपकम्। *उत्त॰ ६३०।* गृह्यत इति ग्रहणं ग्राह्यम्। *आव॰ ६३०।* स्वीकरणम्। *उत्त॰ ७११।* ज्ञानम्। *उत्त॰ ५०३।* ग्रहणं-परस्परेण सम्ब-न्धनम्। जीवेन वा औदारिकादिभिः प्रकारैर्ग्रहणम्। *भग॰ १४८।*

गहणकप्पा– सुत्तं अत्थं उभयं वा गेण्हंतेण भत्तिबहुमाणा अब्भुट्ठाणाइविणओ पयुंजियव्वो। *निशी॰ १४६* अ।

गहणगुण– ग्रहणं-औदारिकशरीरादितया ग्राह्यता इन्द्रिय-ग्राह्यता व वर्णादिमत्वात् परस्परसम्बन्धलक्षणं वा तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा। *स्था॰ ३३४।*

गहणजाय– यानि पुनर्द्रव्याणि समश्रेणिविश्रेणिस्थानि भाषात्वेन परिणतानि कर्णशष्कुलीविवरप्रविष्टानि गृह्यन्ते तानि चानन्त-प्रदेशिकानि, द्रव्यतः क्षेत्रतोऽसंङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि, कालत एकद्वित्र्यादियावदसङ्ख्येयसमयस्थितिकानि, भावतो स्पर्श-वन्ति, तानि चैवं भूतानि ग्रहणजातमित्युच्यन्ते। *आचा॰ ३८५।*

गहणविदुग्ग– एगजातीयअणेगजाईयरुक्खाउलं गहणविदुग्गं। *निशी॰ ७०* आ। *सूत्र॰ ३०७।* गहनविदुर्गः-पर्वतैक-देशावस्थितवृक्षवल्ल्यादिसमुदायः। *भग॰ ९२।*

गहणा– गह्वरा। *आव॰ ५९६।* दोषविशेषः। *निशी॰ २७२* आ।

गहणाई– ग्रहणादयः-ग्रहणबन्धनताडनादयः दोषाः। *पिण्ड॰ १६२।*

गहणागरिस– एकस्मिन्नेव भवे ऐर्यापथिककर्मपुद्गलानां ग्रहण-रूपो य आकर्षोऽसौ ग्रहणाकर्षः। *भग॰ ३८६।*

गहणी– ग्रहणी। *आव॰ ६४४।* गुदाशयः। *औप॰ १६।* *प्रश्न॰ ८२।* ग्रहणी-गुदाशयः। *जम्बू॰ ११७।*

गहदंडा– दण्डा इव दण्डाः-तिर्यगायताः श्रेणयः ग्रहाणांमङ्ग-लादीनां त्रिचतुरादिनां दण्डा ग्रहदण्डाः। *भग॰ १९५।*

गहदंडो– दण्डाकार व्यवस्थितो ग्रहो ग्रहदण्डः। *जीवा॰ २८२।*

गहन– महाटवी। वनम्। *सूत्र॰ २४५।* गह्वरम्। *ओघ॰ १८१,* *१६०।*

गहभिण्णं– ग्रहभिन्नं-मज्झेण जस्स गहो गतो तं गहभिण्णं। *निशी॰ ९९* अ।

गहभिन्नं– यस्य मध्येन ग्रहोऽगमत् तत् ग्रहभिन्नम्। *व्यव॰ ६२* अ।

गहमुसलं– ग्रहमुशलम्। *जीवा॰ २८२।* गृहमुशलं-

ऊर्ध्वायता श्रेणिः। *भग॰ १९६।*

गहयुद्ध– ग्रहयुद्धं ग्रहयोरेकत्र नक्षत्रे सम श्रेणितयाऽवस्थानम्। *भग॰ १९६।*

गहरा– लोमपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

गहरो– लोमपक्षीविशेषः। *जीवा॰ ४।*

गहसंघाडओ– ग्रहसङ्घाटकः-ग्रहयुग्मम्। *जीवा॰ २८२।*

गहसमं– प्रथमतो वंशतन्त्र्यादिभिर्यः स्वरो गृहीतस्तत्समं गीयमानं ग्रहसमम्। *अनुयो॰ १३२। स्था॰ ३९४।* गीतस्य तृतीयो भेदः। *निशी॰ १* अ।

गहसिंघाडग– ग्रहसिंघाटकं-ग्रहाणां सिङ्घाटकफलाकारेणा-वस्थानम्। *भग॰ १९६।*

गहसुसंपउत्त– यः प्रथमं वंशतन्त्र्यादिभिः स्वरो गृहीतस्तन्मा-र्गानुसारि ग्रहसुसंप्रयुक्तम्। *जीवा॰ १९५।* प्रथमतो वंशत-न्त्र्यादिभिर्यः स्वरो गृहीतस्तत्समेन स्वरेण गीयमानं ग्रहसुसं-प्रयुक्त। *जम्बू॰ ४०।*

गहा– ग्रहाः-अङ्गारकादयो गृह्यन्ते। *आव॰ ५१९।* ग्रहाः-ज्योतिष्कभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* ग्रहाः-सूर्यादिकेत्वन्ता नव, सोमस्याज्ञोयपातवचननिर्देशवर्त्तिनोदेवाः। *भग॰ १९५।*

गहाय– गृहीत्वा-सम्प्रधार्यः। *उत्त॰ २०६।*

गहावसव्व– गहापसव्वं-ग्रहाणामपसव्यगमनं, प्रतीपगमनम्। *भग॰ १९६।*

गहिंति– गमिष्यन्ति-ग्रहीष्यन्ति वा स्वीकारिष्यन्ति। *उत्त॰ १९४।*

गहिअ– गृहीतः-अनिक्षिप्तः। *ओघ॰ ५८।*

गहिए– धनिकः। *बृह॰ ४९* आ।

गहिओ– गृहीतः-अवधारितः। *आव॰ ४१५।*

गहियं– पडिबद्धं। *दशवै॰ १५१।* गृहीतम्। *प्रश्न॰ ३०।*

गहियगहणं– गृहीतग्रहणं-गृहीतं ग्रहणं-ग्रहणकं येन सः। *प्रश्न॰ ३०।*

गहियट्ठा– परस्मात्। *भग॰ ५४२।* अर्थावधारणात्। गृहीतार्थम्। *भग॰ १३५।*

गहियवलंजो– सेज्जातरो खेत्तस्य अंतोबहिं वा गहियवलंजो। *निशी॰ १५८* अ।

गहियाउपहरणे– गृहीतायुधप्रहरणः-गृहीतानि आयुधानि श-स्त्राणि प्रहरणाय-परेषां प्रहारकरणाय येन सः। *भग॰ ३१८।*

गहियो– विडम्बयितुं प्रारब्धः। *बृह॰ ४७* आ।

गहिल्लगवेस– ग्रहगृहीतवेषः भूतविष्ट इव विचित्रवेसवान्। *दशवै॰ १९।*

गहो– ग्रहः। *आव॰ ३९७।* राहुलक्षणः। *३९।*

गां– वृषभम्। *आचा॰ ३८४।*

गाइयव्वं– गातव्यम्। *ओघ॰ १५७।*

गाउअं– द्वे धनुःसहस्रे गव्यूतम्। *अनुयो॰ १५७।*

गाउयं– क्रोशद्वयं गव्यूतिः। *ओघ॰ २३।* गव्यूतं-द्विधनुः सहस्रप्रमाणम्। *प्रज्ञा॰ ४८। जीवा॰ ४०।* धनुःसहस्रद्वयप्र-माणम् कोशः। *भग॰ २७५।*

गागरं– स्त्रीपरिधानविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

गागरा– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४।*

गागरि– गर्गरी। *अनुयो॰ १५२।*

गागरी– बृहद्वर्तुलघटिका। *तन्दु॰।*

गागलि– शालमहाशालभागिनेयः। *उत्त॰ ३२४, ३२१।* गाङ्गलिः-तापसविशेषः। *दशवै॰ ५१।*

गागली– पृष्टिचम्पायां यशोमतीपुत्रः। *आव॰ २८६।*

गाढ– निबिडम्। *नन्दी॰ ४६।* अत्यर्थम्। *ओघ॰ १२७, ३२४।* गाढं-वाढम्। *भग॰ ३७।*

गाढीकय– गाढीकृतम्-आत्मप्रदेशैः सह गाढबद्धम्। *भग॰ २५१।*

गाणंगणिए– गणाद्गणं षण्मासाभ्यन्तर एव सङ्क्रामतीति गाणङ्गणिकः। *उत्त॰ ४३५।*

गाणंगणितो– णिक्कारणे गणातो अण्णं गणं संकमंतो गाणंग-णिओ। *निशी॰ ८०* आ।

गाणंगणिया– गाणंगणिकता-गणे गणे प्रविशतीत्येवं प्रवादल-क्षणा। *व्यव॰ ४९* अ।

गाणि– गानम्। *आव॰ ६७४।*

गातब्भंग– गात्राभ्यङ्गः-तैलादिनाऽङ्गम्रक्षणम्। *स्था॰ २४७।*

गातुच्छोलणाइं– गात्रोत्क्षालनं-अङ्गधावनम्। *स्था॰ २४७।*

गात्राणि– ईषादीनि। *जम्बू॰ ५५।*

गाधेन– उद्वेधेन। *स्था॰ ४८०।*

गामंतरं– ग्रामादन्यो ग्रामः ग्रामान्तरम्। *आव॰ १४।*

गामंतिय– ग्रामस्यान्तेः समीपे वसतीति ग्रामान्तिकः। *सूत्र॰ ३१५।*

गाम– ग्रसति बुध्यादीन् गुणानिति गम्यो वाऽष्टादशानां

कराणा-मिति ग्रामः। *आचा० २८५*। ग्रामाः-सङ्घाताः। *उत्त० ६१३*। ग्रसन्ति बुद्ध्यादीन्गुणानिति ग्रामाः। *आचा० २५४*। इन्द्रि-यग्रामो रूढेः। जनपदाश्रयः। *स्था० ५१६*। समूहः। *आव० ६५०*। ग्रसति गुणान् गम्यो वाऽष्टादशानां कराणामिति ग्रामः। *उत्त० ६०५*। ग्रामः-ग्रामशब्देन चात्र प्रतिश्रय उपलक्षितः। *आचा० २९१*। ग्रसते बुद्ध्यादीन्गुणानिति ग्रामः। *अनुयो० १४२*। ग्रसते बुद्ध्यादीन्गुणान् यदि वा गम्यः शास्त्र-प्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामः। *राज० ११४*। ग्रसतिबुद्ध्यादीन्गुणान् यदि वा गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानामष्टा-दशानां कराणामिति ग्रामः। *व्यव० १६८ अ*। करादियाण गम्मो गामो। *निशी० ७० आ*। *निशी० २२९ अ*। ग्रामः-जनपदप्रायजनाश्रितः। *प्रश्न० ३९*। दशकुलसाह-स्रिको ग्रामः। *ज्ञाता० ४४*। जनपदप्रायजनाश्रितः स्थानवि-शेषः। *भग० ३६*। इन्द्रियग्रामः। *उत्त० ११२*। इन्द्रियवर्गः। *प्रश्न० ६३*। जनपदाध्यासितः। *औप० ७४*। ग्रसति बुद्ध्यादीन्गुणान् गम्यो वा करादीनामिति ग्रामः। सन्निवेशविशेषः। *आव० ५९३*। ग्रसति बुद्ध्यादीन्गुणानिति यदिवा गम्यः-शास्त्रप्र-सिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामः। *जीवा० ४०, २७९*। ग्रसति बुद्ध्यादीन्गुणानिति ग्रामः, यदि वा गम्यः शास्त्र-प्रसिद्धानामष्टादशकराणामिति ग्रामः। *प्रज्ञा० ४७*। ग्रामः- इन्द्रियम्। *दशवै० २६७*। शालिग्रामादिः। *दशवै० २८१*। इन्द्रि-यसमूहः। *भग० १०१*। समूहः। *ज्ञाता० १*। ग्रसति बुद्ध्यादीन्गुणानिति ग्रामः। *दशवै० १४७*।

गामउड– गाममहत्तरो। *निशी० २०९ अ*। ग्राममहत्तरः। *बृह० २१२ आ*।

गामउडपुत्तो– ग्रामकूटपुत्रः। *आव० २०२*।

गामकंटए– इन्द्रियं तद्दुःखहेतुः कण्टकः स ग्रामकण्टकः। *दशवै० २६७*। ग्रामः-इन्द्रियग्रामस्तस्य कण्टका इव कण्टकाः ग्रामकण्टकाः-प्रतिकूलशब्दादयः। *उत्त० ११२*। ग्रामकण्ट-काः- नीचजनरूक्षालापाः। *आचा० ३११*।

गामघाए– ग्रामघातः। *ज्ञाता० २३६*।

गामघाय– ग्रामघातः। *सूत्र० ३०९*।

गामतेणो– गामतो हरंतो गामतेणो। *निशी० ३८ आ*।

गामथेरा– ये ग्रामनगरराष्ट्रेषु व्यवस्थाकारिणो बुद्धिमन्त आदेयाः। प्रभविष्णवस्ते तत्स्थविराः। *स्था० ५१६*।

गामधम्म– ग्रामधर्मः-विषयोपभोगगतो व्यापारः। *आचा० ३३१*। ग्रामा-जनतदाश्रयास्तेषां तेषु वा धर्म्मः समाचारो-व्यवस्थेति ग्रामधर्म्मः, अथवा ग्रामः-इन्द्रियग्रामो रुढेस्त-द्धर्मो-विषयाभिलाषः। *स्था० ५१५*। ग्रामधर्मः-प्रतिग्रामं-भिन्नः। *दशवै० २२*।

गामधम्मतित्ति– ग्रामधर्माः-शब्दादयः कामगुणास्तेषां तप्तिः-गवेषणं पालनं वा ग्रामधर्मतप्तिः, अब्रह्मणोऽष्टादशं नाम। *प्रश्न० ६६*।

गामधम्मा– ग्रामाः-इन्द्रियग्रामास्तेषां धर्माः-स्वभावा यथा स्वविषयेषु प्रवर्त्तनं ग्रामधम्माः। *आचा० २१८*। ग्रामधर्म्माः-विषयाः। *आचा० २७६*।

गामपिंडोलगं– ग्रामपिण्डोलकः-भिक्षयोदरभरणार्थं ग्राममा-श्रितः तुन्दपरिमृजो द्रमकः। *आचा० ३१४*।

गामभोइओ– ग्रामभोजिकः। *आव० ३५५*।

गाममहो– गामे महा गाममहो यात्री इत्यर्थः। *निशी० ७० आ*।

गाममारी– ग्राममारी। *भग० १९७*।

गामरट्ठमयहरो– ग्रामराष्ट्रमहत्तरः। *आव० ७३८*।

गामरोग– ग्रामरोगः। *भग० १९७*।

गामवधो– गामस्स वधो गामवधो ग्रामघातेत्यर्थः। *निशी० ७० आ*।

गामवाह– ग्रामवाहः। *भग० १९९*।

गामा– ग्रामाः-वृत्त्यावृत्ताः कराणां गम्या वा। *जम्बू० १२१*। ग्रामादीनां च जीवाजीवता प्रतीतैव, तत्र करादिगम्य ग्रामाः। *स्था० ८६*।

गामाणुगामं– एकस्माद् ग्रामादवधिभूतादुत्तरग्रामाणामनतिक्रमो ग्रामानुग्रामं ग्रामपरम्परा। *स्था० ३१०*। एक ग्रामाल्लघुपश्चाद् भावाभ्यां ग्रामोऽणुग्रामः। *स्था० ३१०*। मासकप्पो जत्थ कतो ततो जं गम्मइ तं गामाणुगामं। *निशी० १९१ अ*। ग्रामानुग्रामम्। *आव० १४२*।

गामाणुगामो– मासकप्पविहारगामाओ गच्छतो अण्णो अणुकूलो गामो गामाणुगामो। *निशी० २१९ अ*।

गामायं– ग्रामाकं नाम सन्निवेशः। *आव० २०८*।

गामायारा– ग्राम्याचाराः-विषयाः। *आव० १३४*।

गामिए– ग्राममहत्तरः। *निशी॰ १४१* आ।
गामिया– ग्रामिकाः-ग्रामधर्म्माश्रिताः। *आचा॰ ३०८*।
गामिल्लय– ग्रामेयकः। *आव॰ ४३५*।
गामील्लए– ग्रामेयकः। *आव॰ ५५४*।
गामेयगा– ग्रामेयकाः। *उत्त॰ २६३*।
गामेल्लग– ग्रामेयकः-ग्रामवास्तव्यः। *दशवै॰ ५९*। *आव॰ १०३*।
गामेल्लगत्तणं– ग्रामेयकत्वम्। *आव॰ ७२१*।
गामेल्लया– ग्रामवासीजनः। *ओघ॰ ४६*।
गामेल्लयपारद्धो– ग्रामेयकप्रारब्धः। *आव॰ ३५१*।
गायः– गात्रं-ईषादि। *जीवा॰ २३१*। कायः। *दशवै॰ ११७*। कायः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*।
गायकम्मं– गात्रकर्म-हस्तादिगात्रचम्पनरूपमङ्गपरिकर्म। *प्रश्न॰ १३७*।
गायगंठिभेय– गात्रान्-मनुष्यशरीरावयवविशेषान् कट्यादेः सकाशाद् ग्रन्थिकार्षापणादिपोट्टलिकां भिदन्ति-आच्छिन्द-न्तीति गात्रग्रन्थिभेदाः। *ज्ञाता॰ २*।
गायदाहं– जत्थ गाआ डज्झंति तं गायदाहं भण्णति। *निशी॰ १९२* आ।
गायाइं– गात्राणि भरतशरीरावयवाः। *जम्बू॰ २७५*।
गारं– अगारं गेहम्। *स्था॰ ३७१*।
गारत्थ– गृहस्थः-गृहधर्मवान्। *दशवै॰ १०*।
गारत्था– गिहत्था। *निशी॰ ४६* आ।
गारत्थिए– गृहस्थाः-पिण्डोपजीविनो धिग्जातिप्रभृतयः। *आचा॰ ३२४*।
गारत्थियवयण– अगारं-गेहं तद्वृत्तयो अगारस्थिता-गृहिणः तेषां-यत्तदगारस्थितवचनम्। *स्था॰ ३७०*।
गारव– गौरवं-आदरः। *प्रश्न॰ ३५*। गौरवं-यद्गौरवनिमित्तं वन्दते तत्, कृतिकर्मणि चतुर्दशो दोषः। *आव॰ ५४४*। गुरोर्भावः गौरवः। *आव॰ ५७९*। गौरवः गमनपर्यायः। *स्था॰ ४५३*। लब्धिमाहात्म्यम्। *बृह॰ २६०* अ। परिवारर्धि-धर्मकथाद्यष्टप्रकारोऽभिमानः। *व्यव॰ २५७*। गौरवः गर्वः *स्था॰ ४९६*।
गारवा– गौरवाणि-ऋद्धिरससातगौरवरुपाणि। *प्रश्न॰ ९७*।
गारविए– गर्वेण लब्धिसम्पन्नोऽहमितिकृत्वा एकाकी भवति। *ओघ॰ १५०*।
गारी– अगारी। *ओघ॰ ९९*।
गालणं– गालनं-छाणनम्। *प्रश्न॰ २५*। घनमसृणवस्त्रार्द्धान्तेन गालनम्। *आचा॰ ४२*।
गालणा– यैरूपायैर्गर्भो द्रवीभूय क्षरति। *विपा॰ ४२*।
गालियदहियस्स– गालितस्य दध्नः। *आव॰ ६२४*।
गालेमाणे– गालयन्-अतिवाहयन्। *भग॰ ४६२*।
गालो– वेगलो। *निशी॰ ६८* आ।
गाव– बलीवर्दसुरभयः। *प्रश्न॰ ३७*।
गाविकुविय– गोगवेषकः। *मरण॰* ।
गाविमग्गो– गोमार्गः। *आव॰ ४१९*।
गावी– गौ-त्रिपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम्। *आव॰ १६३*।
गासं– ग्रासं-कवलम्। *उत्त॰ ११७*।
गासैषणा– ग्रासैषणा। *आचा॰ २८३*।
गाह– गाथा। *आव॰ ७९३*। *ज्ञाता॰ ३८*। महान् निर्बन्धः। *बृह॰ २१* अ। ग्राहः-जलजन्तुविशेषः। *प्रश्न॰ ७*। ग्राहः-स्थूलदेहो जलजन्तुविशेषः। *आव॰ ८१९*।
गाहग– ग्राहक आचार्यः, ग्राहयतीति ग्राहकः, ग्राहको नाम शिष्यः गृण्हातीति ग्राहकः। *व्यव॰ २५७* अ। ग्राहकं-प्रतिपाद्यस्य विवक्षितार्थप्रतीतिजनकम्। *प्रश्न॰ १२०*। ग्राहकः-शिक्षयिता गुरुः। *उत्त॰ १४५*। गुरुः। *आव॰ ३४१*।
गाहणगिरा– ग्राहयतीति ग्राहिका, ग्राहिका चासौ गीश्च ग्राहकगीः। *आव॰ २३७*।
गाहगसुद्धं– ग्राहकशुद्धं-यत्र ग्रहीता चारित्रगुणयुक्तः। *विपा॰ ९२*।
गाहण– ग्राह्यते शिष्य एतदिति बाहुलकात् कर्मण्यनट् ग्राहणं-आचारादिसूत्रं आसेवना। *व्यव॰ २२९* अ।
गाहवतीओ– सुकच्छमहाकच्छविजयोर्विभागकारिणी नदी। *स्था॰ ८०*।
गाहा– गाथा-प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद् गाथा, गाथा वा तत्प्रतिष्ठाभूतत्वादीत मेरुनामसूत्रे गाथा श्लोकश्च। *सम॰ ३२*। गीयत इति गाथा, सा चेहार्थाद्धर्माभिधायिनी सूत्र-पद्धतिः। *उत्त॰ ३८५*। गीयते-शब्द्यते स्वपरसमयस्वरूपम-स्यामिति गाथा सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४*। गाहा-घरं गिहं वा। *व्यव॰ २८३* अ। गाहा गेहं तत्र ऋतौ-ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले वा पर्युषितः। *व्यव॰ २८३* अ। गाथा-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कंधे षोडशमध्ययनम्। *आव॰ ६५१*। गृह्णन्ति ग्राहाः जलचरविशेषाः। *उत्त॰ ६९९*। गाथा-

सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४*। संस्कृ-तेतरभाषानिबद्धा आर्या। *जम्बू॰ १३७*। प्रतिष्ठा निश्चितिश्च। *आव॰ ८०४*। गीयत इति गाथा-छन्दो विशेषरूपा। *उत्त॰ ३३४*। गृहम्। *बृह॰ ८६ अ*। ग्राहाः-जलचरपञ्चेन्द्रियति-र्यग्योनिकायां तृतीयो भेदः। *प्रज्ञा॰ ४३*। विक्षिप्ताः सन्त एकत्रमीलिता अर्था यस्यां सा गाथा, अथवा सामुद्रेण छन्दसा वा निबद्धा वा गाथा। गीयते-पठ्यते मधुराक्षरप्रवृत्त्या गायन्ति वा तामिति गाथा। *सूत्र॰ २६२*।

गाहावइ– गृहपतिः-गृहस्वामी। *बृह॰ ८६ अ*। गृहपतिः-गृही। *भग॰ २२८*। गृहपतिः-ऋद्धिमद्विशेषः। *उपा॰ १*। गृहपतयः-कुटम्बनायकाः। *भग॰ ५०२*।

गाहावइकरंडग– गृहपतिकरण्डकः-श्रीमत्कौटुम्बिककरण्डकः। *स्था॰ २७२*।

गाहावइकुंडे– गाहावत्या अन्तरनद्याः कुण्डं-प्रभवस्थानं ग्राहावतीकुण्डनाम कुण्डम्। *जम्बू॰ ३४५*।

गाहावइकुलं– गृहपतिकुलं-पाटकं रथ्यां ग्रामादिकं वा। *आचा॰ ३३७*। गृहपतिकुलं-गृहिगुहम्। *भग॰ ३७४*।

गाहावइदीवे– ग्राहवतीद्वीपः। *जम्बू॰ ३४६*।

गाहावइरयण– गृहपतिरत्नं-कौटुम्बिकरत्नम्। *जम्बू॰ २४३*।

गाहावई– गृहपतिः-माण्डलिको राजा। *भग॰ ७००*। गृहस्थः। *पिण्ड॰ ४*। गृहपतिः। *आचा॰ ३३५*। गृहस्य पतिः-गृह-पतिः, सामान्यतः प्राकृतपुरुषः। *सूत्र॰ ३६४*। ग्राहाः-तन्तु-नामानो जलचरा महाकायाः सन्त्यस्यामिति ग्राहावती महा-नदी। *जम्बू॰ ३४६*।

गाहावतिरयणे– गृहपतिः-कोष्ठागारनियुक्तः। *स्था॰ ३९८*।

गाहाविया– कृष्ठा। *आव॰ ६८७*।

गाहासोलसग– गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्य आरात्सप्त सूत्राणि, तत्र सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे षोडशाध्ययनानि तेषां च गाथाभिधानं षोडशमिति गाथाभिधानमध्ययनं षोडशं येषां तानि गाथाषोडशकानि। *समः ३२*। गाथाषोडशकः-गाथाख्यं षोडशमध्ययनं यस्मिन् श्रुतस्कन्धे सः, सूत्रकृता-ङ्गस्याद्यः श्रुतस्कन्धः। *सूत्र॰ ८*।

गाहासोलसमे– प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद् गाथा, सूत्र-कृताङ्गस्य षोडशमध्ययननाम। *समः ३१*।

गाहिंति– प्रज्ञापयन्ति। *बृह॰ १९४ आ*।

गाहिज्जंति– ग्राहयन्ते। *आव॰ १०१*।

गाहिति– ग्राहयति। *आव॰ ३४३*।

गाहिया– ग्राहिका-अक्लेशेनार्थबोधिका। *औप॰ ७८*।

गाहीकया– गाथीकृताः-पिण्डीकृताः। *सूत्र॰ २६२*।

गाहेंति– भावयंति। *निशी॰ ३३८ आ*।

गाहेहिंति– ग्राहयिष्यन्ति-प्रापयिष्यन्ति स्थलेषु स्थापयिष्य-न्तीत्यर्थः। *भग॰ ३०९*।

गिज्झंति– गृध्यन्ति प्राप्तस्यासन्तोषेणाप्राप्तस्यापरापरस्याका-ङ्क्षानन्तो भवन्तीति। *स्था॰ २९३*।

गिज्झ– गृद्धः-प्रतिबद्धः। *दशवै॰ २६८*।

गिज्झवओ– ग्राह्यवाक्यः। आदेयवाक्यः। *आव॰ २३६*।

गिज्झह– गृध्यत-गृद्धिं प्राप्तभोगेष्वतृप्तिलक्षणां कुरुत। *ज्ञाता॰ १४९*।

गिज्झिचव्वं- गर्द्धितव्यं अप्राप्तेष्वाकाङ्क्षाकार्या। *प्रश्न॰ १५६*।

गिज्झु– ग्राह्यः-संवेद्यः। *उत्त॰ ४०२*।

गिणिभमेत्तं– उदाहरणं। *निशी॰ २६९ आ*।

गिण्हमाणे– बाह्यादावङ्गे गृण्हन्। *स्था॰ ३२७*। गृण्हन्-ग्रीवा-दाववलम्बयन्। *स्था॰ ३५३*।

गिण्हित्तए– ग्रहीतुं-आदातुं विधातुमित्यर्थः। *ज्ञाता॰ १४९*।

गिण्हियव्वे– गृह्यते-उपादीयते कार्यार्थिभिरिति ग्रहीतव्यः कार्यसाधक इति। *उत्त॰ ६८*।

गिद्ध– गृध्रः-पक्षिविशेषः, गृद्धो वा मांसलुब्धः शृगालादिर्वा। *भग॰ १२०*। गृद्धः-प्राप्ताहारे आसक्तोऽतृप्तत्वेन वा तदाका-ङ्क्षावान्। *भग॰ ६५०*। विशेषाकाङ्क्षावान्। *भग॰ २९२*। आकाङ्क्षावान्। *ज्ञाता॰ ८५*। मूर्छितः। *विपा॰ ३८*। मूर्च्छितः, कांक्षावान्। *आव॰ ५८७*। गृद्धं-प्राप्तातृप्तिः *स्था॰ १४५*।

गिद्धपट्ठ– गृध्रैः स्पृष्टं-स्पर्शनं यस्मिंस्तद् गृध्रस्पृष्टं, यदिवा गृध्राणां भक्ष्यं पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च तद्भक्ष्यकरिकरभा-दिशरीरानुप्रवेशेन महासत्त्वस्य मुमूर्षोर्यस्मिंस्तत् गृध्रप्रष्ठम्। *स्था॰ ९३*।

गिद्धपट्ठाण– गृध्रपृष्ठस्थानानि-यत्र मुमूर्षवो

गृध्रादिभक्षणार्थं-रूधिरादिदिग्धदेहा निपत्यासते। *आचा० ४११।*

गिद्धपिट्ठ– गार्द्धपृष्ठं-अपरमांसादिहृदयन्यासाद् गृद्धादिनाऽऽत्म-व्यापादनम्। *आचा० २६०।* गृध्रैः स्पृष्टं-स्पर्शनं यस्मिंस्तत् गृध्रस्पृष्टम्, यदिवा गृध्राणां भक्ष्यं पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च मर्तुर्यस्मिंस्तद् गृध्रपृष्ठम्। *उत्त० २३४।*

गिद्धपिट्ठमरणं– गृध्रपृष्ठमरणं, मरणस्य चतुर्दशो भेदः। *सम० ३३। उत्त० २३०।*

गिद्धाइभक्खणं– गृद्धाः प्रतीतास्ते आदिर्येषां शकुनिकाशिवा-दिनां तैर्भक्षणम् गम्यमानत्वादात्मनः। तदनिवारणादिना तद्भक्ष्यकरिकरभादिशरीरानु प्रवेशेन च गृध्रादिभक्षणम्। *उत्त० २३४।*

गिद्धापिट्ठ– गृध्रस्पृष्टं गृध्रैः स्पर्शनं कडेवराणां मध्ये निपत्य गृध्रैरात्मनो भक्षणमित्यर्थः। *ज्ञाता० २०५।*

गिद्धि– गृद्धिः-गाद्ध्र्यंममत्वं वा। *सूत्र० १७१।*

गिद्धी– गृद्धिः-अभिकाङ्क्षा। *स्था० ४४७।*

गिम्ह– ग्रीष्मः-उष्णकालः। *ओघ० २१२।* ग्रीष्मः-ज्येष्ठादिः। *भग० ४६२।* ग्रीष्मः-उष्णकालः। *भग० २११।* ग्रीष्मः-षष्ठः ऋतुः। *सूर्य० २०९।* वैशाख-ज्येष्टौ। *ज्ञाता० १६१।* ग्रीष्मकालः-उष्णकाल इत्यर्थः। *सूर्य० ९१।*

गिम्हा– ग्रीष्मा-उष्णकालामासाः। *जम्बू० १५०।*

गिरा– गीः-वाणी। *बृह० २५५आ।*

गिरि– गिरयः-गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरयः-गौपालगिरिचित्रकूटप्रभृतयः। *भग० ३०७।* गिरि-शब्देन क्षुद्रगिरयो ग्राह्याः। *जम्बू० २२३।* गिरयः-दुर्गा-दिकरणार्थं जनावासयोग्याः पर्वताः। *जम्बू० २१०।* गृणन्ति-शब्दायन्ते जनं निवासभूतत्वेनेति गिरयः। *जम्बू० १६८।* गिरिः-महापाषाणः। *औप० ८८।*

गिरिकडग– गिरिकटकः-पर्वतनितम्बः। *ज्ञाता० २३८।*

गिरिकण्णइ– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा० ३२।*

गिरिगिह– गिरिगृहं-पर्वतोपरि गृहम्। *स्था० २९४। प्रश्न० १२७। भग० २००। आचा० ३६६।*

गिरिजण्णयं– अवरण्हसंखडी। *निशी० १५अ।*

गिरिजत्ता– गिरियात्रा-गिरिगमनम्। *ज्ञाता० ४६।*

गिरिजन्नो– गिरियज्ञः-उस्सूरं मत्तवालसंखडी वा। गिरियज्ञः-कोंकणादिदेशेषु सायाह्नकालभावीप्रकरणविशेषः। *बृह० ९५आ।*

गिरिणगरं– गिरिनगरं नगरविशेषः। *आव० ५२।* गिरिनगरं-परदारगमने पुरम्। *आव० ८२३।*

गिरिणयरं– गिरिसमीपे नगरं गिरिनगरम्। *अनुयो० १४९।*

गिरितडगं– गिरितटकं सन्निवेशविशेषः। *उत्त० ३७९।*

गिरिपक्खो– गिरिपक्षः-पर्वतपार्श्वः। *औप० ८८।*

गिरिपडणे– पर्वतपातः। *ज्ञाता० २०२।*

गिरिपुरं– नगरविशेषः। *उत्त० ३७९।*

गिरिप्पवात– गिरिप्रपातः। *आव० ३५०।*

गिरिफुल्लिगा– नगरीविशेषः। *निशी० १००आ।*

गिरिफुल्लिय– गिरिपुष्पितम्, मानपिण्डदृष्टान्ते नगरम्। *पिण्ड० १३३, १३४।*

गिरिमह– पर्वतमहः। *आचा० ३२८।*

गिरिराया– सर्वेषामपि गिरीणामुच्चैस्त्वेन तीर्थकरजन्माभिषे-काश्रयतया च राजा गिरिराजः, मेरुनाम। *जम्बू० ३७५।* गिरिराजः, *सूर्य० ७८।*

गिरिविडकादि– आभरणविशेषः। *आचा० ३९४।*

गिरिसरिउवला– गिरिसरिदुपला-गिरिसरित्पाषाणाः। *आव० ७५।*

गिरिसिद्धो– गिरिसिद्धः। *दशवै० ४४।*

गिरी– जत्थ पव्वए आरूढेहिं अहो पवायट्ठाणं दीसइ सो गिरी भण्णइ। *निशी० ५२अ।*

गिला– ग्लानिः। *व्यव० १८५अ।*

गिलाइ– ग्लायति ग्लानो भवति। *भग० १२६।* ग्लानिः-खेदः। *भग० २३२।*

गिलाए– ग्लानिः-खेदः। *भग० २१९।*

गिलाण– ग्लानः। *आव० ७८४।* ग्लानः-पञ्चमः कुडङ्गः। *आव० ८५६।* अनीरुजः। *आव० ८४३।* क्षीणहर्षः, अशक्त इत्यर्थः। *ज्ञाता० १८०।* अपगतप्रमोदः। *सूत्र० १३७।* ग्लानो नाम रोगाभिभूतः। *दशवै० ३१।* मन्दः। *ओघ० १४।* जरादि-गहितो विमुक्को वा। *निशी० १४आ।* विकृष्टतपसा कर्त्तव्यताऽशक्तो वातादिक्षोभेण वा ग्लानः। *आचा० २८१।* मन्दोऽपगतहर्षो वा। *उत्त० २४६।*

गिलाणभत्तं– गिलाणस्स दिज्जंति तं गिलाणभत्तं। *निशी० २७२आ।* ग्लानभक्तं-ग्लानस्य नीरोगतार्थं भिक्षुक-दानाय यत् कृतं तत् भक्तम्। *भग० २३१। भग० ४६७।* ग्लानः सन्नारोग्याय यद् ददाति तत्

ग्लानभक्तम्। *ज्ञाता० ५२। औप० १०१।* ग्लानो रोगोपशान्तये यद्ददाति ग्लानेभ्यो वा यद् दीयते तत्। *स्था० ४६०।*

गिलायं– ग्लानं-पर्युषितम्। *बृह० ३१२* आ।

गिलायंति– ग्लायन्ति-श्राम्यन्ति। *स्था० १३५।*

गिलासणिं– भस्मको व्याधिः। *आचा० २३५।*

गिलासिणि– रोगविशेषः। *निशी० १४८* अ।

गिल्लि– वाहनविशेषः। *उत्त० ४३८। भग० २३७।* हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुषं गिलतीव। *अनुयो० १५९। जीवा० २८१।* पुरुषद्वयोत्क्षिप्ता डोलिका। *जम्बू० १२३।*

गिल्ली– पुरुषद्वयोक्षिप्ता झोल्लिका। *सूत्र० ३३०। भग० २३७।*

गिल्लीओ– हस्तिन् उपरि कोल्लराकाराः। *भग० ५४७।*

गिहंतरं– गिहं चेव अंतरं गिहं। *दशवै० ५१।*

गिहंतरनिसिज्जा– गृहान्तरनिषद्या-गृहमेव गृहान्तरं गृहयोर्वा अपान्तरालं तत्रोपवेशनम्। *दशवै० ११७।*

गिह– गृहं-पाशकल्पाः पुत्रकलत्रादयः। *दशवै० २७३।* गृहं-शरणं, लयनम्। *जीवा० २६९।* सकुड्डंगिहं। *निशी० २६५* अ। वणरायमंडियं भवणं तं चेव वणविवज्जियं गिहं। *निशी० ७०* अ। गृहं-अस्मद्गृहकल्पम्। *जीवा० २७९।* गृहं–अपवरकादिमात्रम्। *स्था० २९४।* अवस्थित प्रसादरूपम्। *उत्त० ३६८।* गृहं-सामान्यवेश्म। *उत्त० ३०८।*

गिहकम्म– गृहनिष्पत्त्यर्थं कर्म गृहकर्म इष्टकामृदानयानादि। *उत्त० ६६५।*

गिहत्थ– गृहस्थः-गृहलिंगे तिष्ठतीति गृहस्थः। *व्यव० २७।*

गिहत्थसंसट्ठं– गृहस्थसंसृष्टम्। *आव० ८५४।*

गिहदुवारं– अग्गदारं पावेसितं तं गिहदुवारं भण्णति। *निशी० १९२* अ।

गिहमुहं– अग्गिमालिंदयो छद्दारुआलिंदो एतभ दो वि गिहमुहं । *निशी० ११२* अ।

गिहवइ– गृहपतिः धनाधिपः। *आव० २९४।* गृहपतिः अवग्रहे तृतीयो भेदः। *आचा० ४०२।* गृहपतिः-सामान्यमण्डलाधि-पतिः। *बृह० १०८* अ।

गिहवती– शय्यादाता। *स्था० ३४०।*

गिहवास– गृहमेव वा पारवश्यहेतुतया पाशः गृहपाशः। *उत्त० ६६४।* गृहवासं-गृहावस्थानम्। *उत्त० ६६४।*

गिहापत्तणं– गृहेष्वागमनं गृहापतनम्। *जीवा० ३४४।*

गिहाययणं– गृहेषु तेषामायातनं गमनं गृहायतनम्। *जीवा० २७९।*

गिहि– गृही-भद्रकः। *ओघ० ५७, १०५।* असंयतः। *दशवै० २३६।* सकलत्रः। *दशवै० २६०।*

गिहिचेतियं– पडिमा। *निशी० ६९* आ।

गिहिजोग– गृहियोगः-गृहसम्बन्धं तद्वालग्रहणादिरूपः गृहि-व्यापारो वा प्रारम्भरूपः। *दशवै० २३१।* गिहीहिं समं जोगं-संसग्गि, गिहिकम्मं जोगो वा। *दशवै० १२२।*

गिहिणिसेज्जा– पलयंकादी। *निशी० ६५* अ।

गिहिधम्म– गृहस्थधर्म श्रेयानित्याभिसंधाय तद्यथोक्तचारिणो गृहिधर्म्माः। *अनुयो० २५।* गृहिधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धेर्दे-वातिथिदानादिरूपगृहस्थधर्मानुगताः। *औप० ९।* गृहिधर्मा-गृहस्थधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी। *ज्ञाता० १९५।*

गिहिभायणं– गृहिभाजनं स्थाल्यादिः। *सम० ३६।*

गिहिमत्तो– घंटीकरगादि। *निशी० ६४* आ। गृहिमात्रं-गृहस्थभाजनम्। *दशवै० ११७।*

गिही– गृद्धि-अभिष्वङ्गलक्षणा। *आव० ६५८।* अधाभद्रकः। *निशी० १४७* अ।

गिहेलुगं– गिहेलुकः-उम्बरः। *आचा० ३९७।*

गीअं– गीतिका-पूर्वार्द्धसदृशाऽपरार्धलक्षणा आर्या। *जम्बू० १६८।*

गीई– गीतेन सूत्रेण केवलेन कम्यक् पठितेन गीतमस्यास्तीति गीति। *बृह० ११२* अ।

गीतत्थो– गृहीतार्थ। *निशी० ७९* आ।

गीतयशसः– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०।*

गीतरतयः– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ७०।*

गीतरती– गन्धर्वेन्द्रः। *उत्त० ४२५। स्था० ८५।*

गीतिया– गीतिका-गानविशेषः। आ० *५५७।*

गीय– गीतं-स्वरग्रामानुगतगीतिकानिबद्धम्, शब्दितम्। *उत्त० २८७।* गीतं-गानमात्रम्। *भग० ३२३। ज्ञाता० ३८।* रागगी-त्यादिकम्। *जम्बू० ३९।*

गीयजसे– गीतयशः-उत्तरनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्रः। *भग० १५८। स्था० ८५।*

गीयत्थ– गीतार्थः-
वस्त्रपात्रपिंडैषणाध्ययनादिच्छेदसूत्राणि च सूत्रतोऽर्थतस्तदुभयतो वा येन सम्यगधीतानि स गीतार्थः। *व्यव॰ २४* आ। स्वयं व्यवहारमवबुद्ध्यते प्रतिपद्यमानो वा प्रतिपद्यते व्यवहारं सः गीतार्थः। *व्यव॰ ९* आ। सूत्रार्थ-तदुभयविदः, अन्यथा हेयोपादेयपरिज्ञानयोगात् ते एतादृशा एवंविधा गीतार्था गणावच्छेदिनः। *व्यव॰ १७२* अ।

गीयरइपिय– गीतरतिप्रियः-गीतेन या रती-रमणं क्रीडा सा प्रिया येषां गीतरतयो वा लोकाः प्रिया येषां ते। *औप॰ ९२*।

गीयरई– गीतरतिः-दक्षिणनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्रः। *भग॰ १५८*।

गीयसद्दं– गीतशब्दं-पञ्चमादिहुङ्कृतिरूपम्। *स्था॰ ४०६*।

गीया– गीतार्था-वृषभाः। *व्यव॰ २५१*।

गुंगुयंता– कान्दिशीकाः। *उत्त॰ १७९*।

गुंजंत– गुञ्चन्तः शब्दविशेषं विदधानाः। *जीवा॰ १८८*। शब्दायमानाः। *ज्ञाता॰ २७*।

गुंज– गुञ्जा–रक्तिका। *जम्बू॰ ३४*।

गुंजद्धरागे– गुञ्जा तस्या अर्धरागो गुञ्जार्धरागः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

गुंजा– गुञ्जा-भम्मा। *आचा॰ ७४*। आतोद्यविशेषः। *प्रश्न॰ ५१*। चणोठिया। *अनुयो॰ १५५*।

गुंजालिका– सारिण्येव वक्रा। *अनुयो॰ १४९*।

गुंजालिकाः– दीर्घा गम्भीराः कुटिलाः श्लक्ष्णाः जलाशयाः। *आचा॰ ३८२*।

गुंजालिया– गुञ्जालिकाः वक्रसारिण्यः। *भग॰ २३८*। *औप॰ ९३*। वक्रा नदी। *प्रज्ञा॰ २६७*। वक्रसारणी। *प्रश्न॰ ६०*। वक्रसारिणी। *ज्ञाता॰ ६७*। नद्य एव वक्रा गुञ्जालिकाः। *प्रज्ञा॰ ७२*। अन्नेऽन्ने कवाडसंजुत्ताओ गुंजालिया भन्नंति। *निशी॰ ७०* आ।

गुंजालियाओ– सारण्यस्ता एव वक्राः गुञ्जालिकाः। *जम्बू॰ ४१*।

गुंजावाए– गुञ्जा-भम्मा तद्वत् गुञ्जन् यो वाती स गुञ्जावातः। *आचा॰ ७४*। यो गुञ्जन्-शब्दं कुर्वन् वाति गुञ्जावातः। *जीवा॰ २९*। *प्रज्ञा॰ ३०*।

गुंजावाता– ये गुञ्जतो वान्ति। *उत्त॰ ६९४*।

गुंजावाय– गुञ्जन् सशब्दं यो वाति स गुञ्जवातः। *भग॰ १९६*।

गुंजिए– गुञ्जितं-निर्घातविकारो गुञ्जावद्गुञ्जितो महाध्वनिः। *आव॰ ७३६*।

गुंजितं– निर्घातः-तस्सेव विकारो गुंजावत्। गुंजमानो महाध्वनिः। *निशी॰ ७०* आ।

गुंजीवल्ली– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

गुंज्जित– गुंजावत् गुंजमानो महाध्वनिर्गुंजितम्। *व्यव॰ २४१* आ।

गुंठा– मायाविनः। *व्यव॰ २५५*। गुंठा-माया। *व्यव॰ २५६*।

गुंठो– वाहणा गुंठादि गुंठो घोडगो। *निशी॰ ३७* आ। घोटको महिषो वा। *बृह॰ १२५* आ।

गुंडिज्जइ– गुण्डयते। *आव॰ ६२५*।

गुंडिय– गुण्डित-परिकरिता। *प्रश्न॰ ४७*। गुण्डितः। *ज्ञाता॰ ६१*।

गुंद– वृक्षफलविशेषः। *आव॰ ८२८*।

गुग्गुलभगवं– गुग्गुलभगवान्। *आव॰ ७१२*।

गुच्छ– वृन्ताकीप्रभृतिः। *जीवा॰ २६, १८८*। गुच्छः-वृन्ताकीसल्लकीकर्पास्यादिकः। *आचा॰ ३०*। पत्रसमूहः। *भग॰ ३७*। *जम्बू॰ २५*। गुच्छाः-वृन्ताकीप्रभृतयः। *भग॰ ३०६*। *जम्बू॰ ३०*। *जीवा॰ २६*।

गुच्छगलइअंगुलिओ– अङ्गुलिभिर्लातो-गृहीतो गोच्छको येन सोऽयमङ्गुलिलातगोच्छकः। *उत्त॰ ५४०*।

गुच्छय– गोच्छकं-पात्रकोपरिवर्त्त्युपकरणम्। *उत्त॰ ५४०*।

गुच्छा– वृन्ताक्यादयः। *औप॰ ८*। गुच्छाः-वृन्ताकीप्रभृतयः। *प्रज्ञा॰ ३०*। *ज्ञाता॰ २८*। पल्लवसमूहाः। *ज्ञाता॰ २८*।

गुच्छिय– सञ्जातगुच्छम्। *भग॰ ३७*।

गुज्झ– गुह्यं-रहस्यम्। *विपा॰ ४०*। लज्जनीयव्यवहारगोपि-तम्। *ज्ञाता॰ १२*। गुह्यं गोपनीयत्वात्, अब्रह्मणस्य चतुर्वि-शतितमं नाम। *प्रश्न॰ ६६*। गुह्यःबहिर्जनाप्रकाशनीयः। *राज॰ ११६*। गुह्यं-लज्जनीयव्यवहारगोपनम्। *भग॰ ७३९*।

गुज्झकिखणी– स्वामिनी। *बृह॰ १७१* आ।

गुज्झगं– गुह्यकम्। *ओघ॰ १६०*।

गुज्झगा– गुह्यकः। भवनवासिनः। *दशवै॰ २४९*।

गुज्झखगो– गुह्यकः-देवः। *आव॰ ६३४*। देवविशेषः। *पिण्ड॰ १३१*। वैमानिकः। *आव॰ ८१३*।

गुज्झदेसो– गुह्यदेशः। *जीवा॰ २७०।*

गुज्झाणुचरिअ– गुह्यानुचरितं सुरसेवितमित्यर्थः। *दशवै॰ २२३।*

गुट्ठ– स्तम्बः। *उपा॰ २२।*

गुट्ठी– गोष्ठी-दत्तवासुदेवनिदानकारणम्। *आव॰ १६३।*

गुडपसात्थं– गुडशस्त्रं-नगरविशेषः। *आव॰ ४११।*

गुडा– तनुत्राणविशेषः। *प्रश्न॰ ४७।* महॉस्तनुत्राणविशेषः। *विपा॰ ४६।*

गुण– गुण्यते-भिद्यते विशेष्यतेऽनेन द्रव्यमिति गुणः। *आचा॰ ९९।* आत्मा वा शब्दाद्युपयोगानन्यत्वाद् गुणः। *आचा॰ ९९।* रसना। *आचा॰ ३६३।* स्वभावः यथोपयोगस्वभावः। *सम॰ ११२।* गुणशब्दोंऽशपर्यायः। *अनुयो॰ १११।* ज्ञानादिः-रूपादिश्च। *अनुयो॰ १०५।* ज्ञानम्। *उत्त॰ ७०। आचा॰ ८०। अनुयो॰ २६९।* प्रशस्तता। *ज्ञाता॰ १२।* कटिसूत्रम्। *ज्ञाता॰ ३५।* कान्तिलक्षणः। *ज्ञाता॰ ३५।* क्षान्त्यादिः। *आव॰ ४९।* विविधार्थसंवादनलक्षणः। *सम॰ १२४।* उत्तरगुणो भावनादि-रूपः। *प्रज्ञा॰ ३९९।* स्वाध्यायध्यानादिः। *आव॰ २६५।* कडीसुत्तयं। *निशी॰ २५४* आ। निरवद्यानुष्ठानरूपः। *आचा॰ ३३।* सौभाग्यादिकः। *भग॰ ११९।* गुणः-गुणव्रतम्। *भग॰ १३६।* प्रियभाषित्वादिः। *ज्ञाता॰ ४३।* सौन्दर्यादिः। *ज्ञाता॰ २२०।* संयमगुणः। *भग॰ १३६।* कार्यं दाक्षिण्यादिः। *भग॰ १४८।* निर्जराविशेषः। *ज्ञाता॰ ७३।* गुणः-शब्दादिकः। *आचा॰ ६२।* गुणः-ज्ञानादिः। *सूर्य॰ ५।* अनन्तगम-पर्यायवत्त्वमुच्चारणं वा। *सूत्र॰ ७।* मूलोत्तरगुणभूतः। *सूत्र॰ ४००।* उपकारः। *प्रश्न॰ ३६।* गुणव्रतम्। *औप॰ ८२।* सहवर्त्ती। *औप॰ ११७।* पर्यायः विशेषः। धर्मश्च। *प्रज्ञा॰ १७९।* रक्तसूत्ररूपः। *जीवा॰ २०५।* क्षान्त्यादिः। *जीवा॰ २७४।* वर्णादिः सहभागी धर्म्म एव। *प्रश्न॰ ११७।* ऐहिकामुष्मिकोपकाराः। *प्रश्न॰ १२३।* निर्विभागो भागः। *जम्बू॰ १२९।* धर्म्मः। *स्था॰ ३३४।* गुणाः-संयमगुणाः। *निर॰ २।* गुणाः-रूपादयः। *उत्त॰ ५५७।* गुणं-गुणव्रतम्। *भग॰ ३२३।*

गुणओ– गुणतः-कार्यतः-कार्यमाश्रित्येत्यर्थः। *स्था॰ ३३३।*

गुणकरणं– गुणानां करणं गुणकरणं, गुणानां कृतिः। *आव॰ ३६६।* तपकरणं-अनशनादि संयमकरणं च पञ्चाश्रवविरम-णादि गुणकरणमुच्यते। *उत्त॰ २०५।*

गुणकरो– गुणकारः-गुणाः-ज्ञानादयस्तत्करणशीलः, भाव-करणविशेषः। *आव॰ ४९९।*

गुणकारोत्ति– गुणकारस्तेन यत्सङ्ख्यानं तत्तथैवोच्यते। तच्च प्रत्युपन्नमिति लोकरूढम्, अथवा यावतः कुतोऽपि तावत एव गुणकराद्यादृच्छिकादित्यर्थः। *स्था॰ ४९७।*

गुणचंद– गुणचन्द्रः-चन्दावतंसकराज्ञः प्रियदर्शनाराज्ञो ज्येष्ठः पुत्रः। *आव॰ ३६६।* आधाकर्मानुमोदनायां श्रीनिलयनगरे राजा। *पिण्ड॰ ४९।* आधाकर्मपरिभोगे शतमुखपरे श्रेष्ठी *पिण्ड॰ ७४।* गोचरविषयोपयुक्तायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः। *पिण्ड॰ ७८।* उत्कृष्टमालापहृतविवरणे साधुः। *पिण्ड॰ १०९।* मानपिण्डोदाहरणे क्षुल्लकः। *पिण्ड॰ १३४। प्रज्ञा॰ ४४१।*

गुणचूडः– गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठीपुत्रः। *पिण्ड॰ ७८।*

गुणट्ठीए– गुणार्थी-रन्धनपचनप्रकाशातापनाद्यग्निगुणप्रयोजन-वान्। *आचा॰ ५३।*

गुणतत्तिला– गुणाग्राहका। *नन्दी॰ ६४।*

गुणदेशः– गुणोद्देशा। *प्रश्न॰ १०२।*

गुणना– परावर्तना। *बृह॰ २३३* अ।

गुणनिप्फन्नं– गुणनिष्यन्नम्। *ज्ञाता॰ ४१।*

गुणभूई– गुणभूतिः-अचिन्त्या गुणसम्पत्। *आव॰ २३७।*

गुणमह– गुणैर्महान्-उपशमकः। *आव॰ ८३।*

गुणमित्रः– आधाकर्मण अभोज्यतायां उग्रतेजसः पुत्रः। *पिण्ड॰ ७१।*

गुणयारो– गुणकारः। *सूर्य॰ ११४।*

गुणरयणं– गुणरत्नं तपःकर्मः। *अनुयो॰ १।* गुणरत्नसंवत्सराभि-धस्तपोविशेषः, तपोविशेषः। *अन्त॰ ३, १८।*

गुणरयणचच्चिका– गुणरत्नचाकचिक्याः-गुणरत्नमण्डिताः। *चतु॰।*

गुणरयणसंवच्छरं– गुणानां-निर्जराविशेषाणां रचनं करणं संवत्सरेण सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तपसि तद् गुणरचनसंव-त्सरम्, गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्नः संवत्सरो यत्र यद् गुणरत्नसंवत्सरं तपः। *भग॰ १२५। ज्ञाता॰ ७३।*

गुणवंतो– गुणवन्तः-पिण्डविशुद्ध्याद्युत्तरगुणोपेताः। *आचा॰ ३५०*।

गुणवती– गुणचन्द्रस्य राज्ञी। *पिण्ड॰ ४९*।

गुणविरियं– जं ओसहीण तित्तकडुयकसायअंबिलमहुरगुणताए रोगावणयणसामत्थं एतं गुणविरियं। *निशी॰ १९ अ*।

गुणव्वत– गुणव्रतः-दिग्व्रतोपभोगपरिभोगव्रतलक्षणः। *स्था॰ २३६*।

गुणशतकलितः– प्रश्नयादिगुणोपेतः सूरिः। *आचा॰ ३*।

गुणशेखरः– गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः। *पिण्ड॰ ७८*।

गुणसंकर– गुणसमुदायरूपः। *ज्ञाता॰ १६८*।

गुणसमिय– गुणयुक्तोऽप्रमत्ततया यतिः गुणसमितः। *आचा॰ २१७*।

गुणसमृद्धं– महाबलराजधानी। *पिण्ड॰ ४७*।

गुणसागरः– गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणचन्द्रपुत्रः। *पिण्ड॰ ७८*।

गुणसिद्धी- गुणसिद्धिः-अन्वर्थसम्बन्धः। *दशवै॰ ७१*।

गुणसिलं– गुणशिलं राजगृहे चैत्यविशेषः। *उत्त॰ १५८*। *उपा॰ ४८*। *विपा॰ ८९*। गुणशिलं राजगृहनगरे चैत्यम्। *भग॰ ६, ३२३, ३७९, ५०२, ७३९, ७५०*। *ज्ञाता॰ ३९*। *आव॰ ३२५*। *अनुत्त॰ १७७*। *अन्त॰ १८*। गुणशिलः-वर्धमान-स्वामिनः समवसरणस्थानम्। उद्यानविशेषः। *व्यव॰ १७४*।

गुणसिलयं– राजगृहे चैत्यम्। *आव॰ ३१४*।

गुणसिला– गुणशिला-स्कन्दकचरित्ते राजगृहनगरे चैत्यम्। *भग॰ ११२*।

गुणसेढीयं– गुणश्रेणी-क्षपणोपक्रमविशेषरूपा। सामान्यतः किल कर्मबहवल्पमल्पतरमल्पतमं चेत्येवं निर्जरणाय रचयति, यदा तु परिणामविशेषात् तत्र तथैव रचिते कालान्तरवेद्यमल्पं बहू बहुतरं बहुतमं चेत्येवं निर्जरणाय तदा सा गुणश्रेणीत्यु-च्यते। *औप॰ ११३*।

गुणसेन– गोचरविषयोपयुक्तायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः। *पिण्ड॰ ७८*।

गुणा– सौभाग्यादयः, अथवा लक्षणव्यञ्जनयोर्ये गुणाः। *स्था॰ ४६१*। चारित्रविशेषरूपाः। *सम॰ ४६*। शेषमूलगुणाः उत्तर-गुणाश्च। *सम॰ १२७*। ज्ञानादयः। *सम॰ १२४*। प्रभावाः। *सम॰ १२५*। साधनभूता उपकारकाः। *उत्त॰ ४१९*। पिण्डविशुद्ध्यादयः।*उत्त॰ ५६७*। *विपा॰ ४५*। सन्तः-मुनयः पदार्था वा। *आव॰ ७६०*। रसादिकाः संयमगुणा वा। *आव॰ ८५०*। कार्याणि। *प्रश्न॰ ७४*। गुणव्रतानि। *सम॰ १२०*। *भग॰ ३६८*। महर्द्धिप्राप्त्यादयः शकन्ध्वादिदर्शनात्। *सम॰ १५७*। पर्यवाः धर्म्माः विशेषा वा। *भग॰ ८८९*। गुणा-करुणादयः। *औप॰ ३३*। क्षान्त्यादयः। *जम्बू॰ ११३*। गुणाः-सप्तविंशतिरनगारगुणाः। *प्रश्न॰ १४५*।

गुणागुणे– ऋजुता। *आचा॰ ८६*।

गुणाणं विराहणा– गुणानां विराधना हिंस्यप्राणिगतगुणानां हिंसकजीवचारित्रगुणानां वा विराधना-खण्डना। *प्रश्न॰ ६*।

गुणालयं– गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तस्य वास्तव्यपुरम्। *पिण्ड॰ ७८*।

गुणिता– अधीता। *ओघ॰ ५३*।

गुणत्तर– भवत्थकेवलिसुहं। *निशी॰ २४ आ*।

गुणत्तरतरं– मोक्खसुहं। *निशी॰ २४ आ*।

गुणत्तरधरो– गुणेषूत्तराः-प्रधाना गुणोत्तराः ज्ञानादयस्तान् धारयतीति गुणोत्तरधरः। *उत्त॰ ३५७*।

गुणुद्देसो– गुणोद्देशः-गुणदेशः। *प्रश्न॰ १०२*।

गुण्यते– भिद्यते। *आचा॰ ९९*।

गुत्त– गुप्तं-युक्तम्। *प्रश्न॰ १३४*। वृत्त्या फलहकेन वा वृत्तम्। *बृह॰ १८१ आ*। गुप्तः-अभेदवृत्तिः। *भग॰ १९४*। प्राकाराद्यावृता। *भग॰ ३१३*। न स्वामिभेदकारिणः। पराप्रवे-श्या। *जीवा॰ २६०*। गुप्तिभिः-वसत्यादिभिः। *जम्बू॰ १४८*। तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः। *सूत्र॰ २९८*। संमूढः। *ओघ॰ ११९*। प्रविष्टः। *निशी॰ १७२ आ*। गां त्रायत इति गोत्रं-साधुत्वम्। *सूत्र॰ ४१३*। प्राकारवेष्टितत्वाद् गुप्तम्। *स्था॰ ३१२*। गोत्रं-कुलम्, नामानि। *स्था॰ २९४*।

गुत्तदुवारा– गुप्तद्वारा-कपाटादियुक्तद्वारा। *भग॰ ३१३*।

गुत्तदुवारे– द्वाराणां स्थगित्वाद् गुप्तद्वारम्। *स्था॰ ३१२*।

गुत्तपालिय– गुप्तपालिकाः-तदन्यतो व्यावृत्तमनोवृत्तिका मण्डलिकाः। *भग॰ १९४*। गुप्ता-पराप्रवेश्या पालिः-सेतुर्यस्य सः। *जीवा॰ २६०*।

गुत्तबंभचारी– वसत्यादिनवब्रह्मचर्यगुप्तियोगात्।

ज्ञाता० १०३।

गुत्ता– गुप्ता-पराप्रवेश्या। राजा० *११३।* वृत्त्या कुड्येन वा परिक्षिप्ता। *बृह० ३१०* अ।

गुत्तागुत्तिंदिय– गुप्तागुप्तेन्द्रियः-गुप्तानि शब्दादिषु रागादिनि-रोधाद् अगुप्तानि च आगमश्रवणेर्यासमित्यादिष्वनिरोधादि-न्द्रियाणि येषां ते। *औप० ३५।*

गुत्तिंदिय– गुप्तेन्द्रियः शब्दादिषु रागादिरहितः इत्यर्थः। *औप० ३५।*

गुत्ति– रक्षाः। *बृह० १२९* आ। गोपनं गुप्तिः-सम्यग् योगनिग्रहः। प्रवचनविधिना मार्गव्यवस्थापनमुन्मार्गगमननि-वारणं गुप्तिः। *उत्त० ५१४।*

गुत्तिसेण– गुप्तिसेनः। *सम० १५३।*

गुत्ती– गुप्तिः-प्रविचाराप्रविचाररूपा। *आव० ५७२। सूत्र० २४४।* मनोगुप्त्यादिः वसत्यादिर्वा। *प्रश्न० १३४।* अशुभानां मनःप्रभृतीनां निरोधः, अहिंसायास्त्रिचत्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९।*

गुत्तीओ– गुप्तयः मनोवाक्कायलक्षणा अनवद्यप्रविचाराप्रविचा-ररूपाः। *प्रश्न० १४२।*

गुत्तीतो– गुप्तयः-रक्षाप्रकाराः। *स्था० ४४५।* गोपनानि गुप्तयः-मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्ति करणानि चेति। *सम० ९।* गोपनं गुप्तिः-मनःप्रभृतीनां कुश-लानां प्रवर्तनमकुशलानां च निवर्त्तनमिति। *स्था० ११२।*

गुदं– अपानम्। *नन्दी० १५२।*

गुपिलं– गहनम्। *नन्दी० ४२।*

गुप्फ– गुल्फः-घुटिकः। *जम्बू० ११०।*

गुब्भंगं– मृगीपदम्। *निशी० २११* अ।

गुम्मं– गुल्मं-वृन्दमात्रम्। *औप० ४९।* वंशजालिप्रभृतिः। *ज्ञाता० ३६।* समूहः-समुदायः *बृह० २९०* अ। गुच्छै-कदेशः-उपाध्यायाधिष्ठितः। *औप० ४५।* गुल्मः-नवमालि-काप्रभृतिः। *भग० ३०६। प्रज्ञा० ३०। जीवा० २६।* गुल्मः-नवमालिकादिः। *औप० ८। जीवा० १८८। जम्बू० ३०।* लतासमूहः। विशे० *९०४।*

गुम्मइअ– गुल्मितं-घूर्णितचेतनम्। *बृह० २३१* आ। गुल्मयितं-मूढम्। *औप० ६४।*

गुम्मा– गुल्मा नामह्रस्वस्कन्धबहुकाण्डपत्रपुष्पफलोपेताः। *जम्बू० ९८।* गुल्मा-पुष्करिणी नाम। *जम्बू० ३६०।*

गुम्मिय– गुल्मेन-समुदायेन चरन्तीति गौल्मिकाः। *व्यव० १३५* अ। गुल्मं-स्थानं तद्रक्षपाला गुल्मिकाः। *ओघ० ८०।* स्थानकरक्षपालाः। *ओघ० ८२।*

गुम्मी– शतपदी त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *उत्त० ६९६।*

गुमुंगुमती– गुमगुमायमाना। *आव० ५१४।*

गुरु– स्वप्रयोजननिष्ठः। *उत्त० ६३१।* पूज्यास्तीर्थकृद्गणभृ-दादय। *उत्त० २३१।* यथावच्छास्त्राभिधायकाः। *उत्त० ६२२।* अधोगमनहेतुः। *स्था० २६।* स्पर्शस्य चतुर्थो भेदः। *४७३।* गरुणां-मात्रादिकानां। *जम्बू० १६९।* गुणन्ति शा-स्त्रार्थमिति गुरुः-धर्मोपदेशदाता। *आव० ११९।* धर्मोपदेश-कः। *ज्ञाता० १२३।* पितामहादिलक्षणः। *आव० ५१६।* आचार्यः। *दशवै० ४५।* सारोपेतम्। *दशवै० २६३।* तीर्थकरादिः। *पिण्ड० ११४।* मातापितृधर्म्माचार्याः। *स्था० ३९९।* गौर-वार्हः। *उत्त० ४४।* वैद्यः। *बृह० १४१* अ। गुरुः-धर्मा-चार्यः। *उत्त० १५२।* आचार्यः। *बृह० ९५* अ। धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मप्रवर्त्तकः। सत्त्वेभ्यो धर्मशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते। *प्रज्ञा० १६३।* आयरियो। *निशी० १६४* अ। दीक्षाद्याचार्यः। *भग० ७२७।* चैत्यसाधुः। *उपा० १३।*

गुरुअब्भुट्ठाणं– गुर्वभ्युत्थानम्। *आव० ८५३।*

गुरुअमुई– गुर्वमोची-निष्ठुरं निर्भर्त्सितोऽपि गुरुणाममोचन-शीलः। *बृह० १२१* आ।

गुरुए– गुरुकः-भगवत्त्याः प्रथमशतके गुरुकविषयो नवम उद्देशः। *भग० ६।*

गुरुओ- गुरुकर्मा। *सूत्र० १९७।*

गुरुक– गुरुकः-षण्मासः। *व्यव० ६। स्था० १४५। बृह० ४९* अ।

गुरुकलं– गुरोः कुलं गुरुकुलं-गुरुसान्निध्यम्। *आचा० २०३।*

गुरुगतराग– गुरुतरकः-चतुर्मासपरिमाणः। *व्यव० १८७।*

गुरुगती– भावप्रधानत्वान्निर्द्देशस्य गोरवेण ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्ग-मनस्वभावेन या परमाण्वादीनां स्वभावतो गतिः सा गुरुगतिः। *स्था० ४३४।*

गुरुगो– गुरुको नाम व्यवहारो मासो मासपरिमाणः।

व्यव॰ १८७ अ।

गुरुजणं– गुरुजनः-गुणस्थसुसाधुवर्गः। *आव॰ ५१९*।

गुरुतप्पओ– गुरुतल्पकः दुर्विनीतः। *प्रश्न॰ ३६*।

गुरुनिओगविणयरहिया– गुरुषु मात्रादिषु नियोगेन अवश्यंतया यो विनयस्तेन रहिताः गुरुनियोगविनयरहिताः। *भग॰ ३०८*।

गुरुनिग्गहो– गुरुनिग्रहः। *आव॰ ८११*।

गुरुपरिओसगए– गुरुपरितोषगतः-गुरुपरितोषजातः। *आव॰ २६९*।

गुरुपरिभासिय– गुरुन् परिभाषते विवदते गुरुपरिभाषिकः। *उत्त॰ ४३४*।

गुरुपर्वक्रमलक्षणः– केवलश्रद्धानुसारिणः प्रति। *प्रज्ञा॰ २*।

गुरुमहत्तरएहिं– गुर्वोः-मातापित्रोर्महत्तराः-पूज्याः, अथवा गौरवार्हत्वेन गुरुवो महत्तराश्च वयसा वृद्धत्वाद्ये ते गुरुमह-त्तराः। *स्था॰ ४६३*।

गुरुयत्ता– गुरुकता-विस्तीर्णता। *भग॰ २१५*।

गुरुलहुपज्जव– गुरुलघुद्रव्याणि-बादरस्कन्धद्रव्याणि-औदा-रिकवैक्रियाहारकतेजसरूपाणि तत्पर्यवाः। *जम्बू॰ १३०*।

गुरुवायणोवगयं– गुरुप्रदत्तया वाचनया उपगतं-प्राप्तं गुरुवा-चनोपगतं न तु कर्णाघाटकेन शिक्षितम्। *अनुयो॰ १६*।

गुरुविषयं– गुराविदं करणं गुरुकरणम्। *आव॰ ४७१*।

गुरुसम्भारियत्ता– गुरोः सम्भारिकस्य च भावो गुरुसम्भारिकता गुरुता सम्भारिकता चेत्यर्थः। अतिप्रकर्षावस्था। *भग॰ ४५६*।

गुरुणां– आलोचनार्हाणामाचार्यादीनाम्। *उत्त॰ २३३*।

गुर्जरः– देशविशेषः। *अनुयो॰ १३९*।

गुलं– गुडम्। *अनुयो॰ १५४*। गुल्मं-लतासमूहः। *भग॰ ३७*।

गुलइय– गुल्मवान्। *औप॰ ७*।

गुलगुलाइअ– गुलगुलावित रूपेण। *जम्बू॰ १४४*।

गुलदव– गुलद्रवं नाम यस्यां कवल्लिकायां गुड उत्काल्यते तस्यां-यत्तप्तमतप्तं वा पानीयं तद्गुडोपलिप्तं गुडद्रवम्। *बृह॰ २५३* अ।

गुलपाणिय– गुलो जीए कवल्लीए कड्ढिज्जति तत्थ जं पाणीयं कयं तत्तमतत्तं वा तं गुलपाणियं भण्णति। *निशी॰ २०४* अ।

गुलया– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

गुललावणिका– गुडपर्पटिका। *स्था॰ ११८*।

गुललावणिया– गुडलावणिका-गुडपर्प्पटिका गुडधाना वा। *सूर्य॰ २९३*। *भग॰ ३२६*। *प्रश्न॰ १६३*।

गुलवंजणी– मोदती। *निशी॰ ६४* अ।

गुलिका– तुवरवृक्षचूर्णगुटिका। *बृह॰ १००* आ, *१०२* अ। पिटकं बुसपुञ्जो वा पिण्डका वा। *बृह॰ ९४* आ।

गुलिगा– लोलगा। *निशी॰ १४* आ।

गुलिय– गुटिका। *आव॰ २९९*।

गुलियविरेयणपीओ– पीतविरेचनगुलिकः। *उत्त॰ ३७९*।

गुलिया– गुटिका-द्रव्यवटिकाः। *विपा॰ ४१*। द्रव्यसंयोग-निष्पादितगोलिकाः। *ज्ञाता॰ १८३*। *आव॰ ६७६*। हरिता-लिकासारनिर्वर्त्तिता गुटिका। *जम्बू॰ ३४*। वक्कलाणि। *बृह॰ १०२* आ। गुटिका वटिका। *उत्त॰ १४३*। मुखे प्रक्षेप-कस्य स्वरूपपरावर्त्तादिकारिका गुटिका। *पिण्ड॰ ९६*। गुलिकाः-पीठिकाः। मनोगुलिकापेक्षया प्रमाणतः क्षुल्लाः। *जीवा॰ ३६३*। नीली। *ज्ञाता॰ १०१*। पीठिकाः। *जीवा॰ ३५९*। गुलिकाः-वर्णद्रव्यविशेषः। *औप॰ ११*।

गुलियासहस्सं– गुलिकासहस्रम्। *जीवा॰ २३३*।

गुलुकः– गुल्फः। *जीवा॰ २७०*।

गुलुम्मातितो– सङ्गाभिलाषी। *निशी॰ ३४८* आ।

गुलू– गुरुः-आचार्यः। *बृह॰ २८३* अ।

गुल्मं– स्थानम्। *ओघ॰ ८१*।

गुल्मः– रोगविशेषः। *बृह॰ १७०* अ।

गुल्मकं– लतासमूहः। *जम्बू॰ २५*।

गुल्मिका– गोत्तिपालाः। *ओघ॰ २२३*।

गुवंति– गुप्यन्ति-व्याकुलीभवन्ति। *भग॰ ६७०*।

गुवल– गुप्तः। *निशी॰ ४०* आ।

गुविते– गुप्येत-व्याकुलो भवेत् क्षुभेद्। *स्था॰ १६२*।

गुविलं– व्याप्तम्। महाप॰।

गुविला– गम्भीरा। *बृह॰ २१* अ।

गुविलो– गहणो। *निशी॰ १४९* अ।

गुहा– कन्दरा। *भग॰ २३७*। *प्रश्न॰ २०*। सुरङ्गाः। *जम्बू॰ २०९*। लयनम्। *उत्त॰ ४९३*। तिमिश्रागुहादयः। *नन्दी॰ २२८*। उष्ट्रिकाकृतिर्नरकविशेषः। *सूत्र॰ १३०*।

गुह्यापवरकः– मन्त्रगृहादि रहःस्थानम्। *दशवै॰ १६६*।

गूढं– मांसलत्वादनुद्धतम्। *जीवा॰ २७०*। अनुपलक्षम्।

प्रश्न॰ ८०।

गूढगब्भा– गूढगर्भा। *आव॰ २१२।*

गूढदंत– जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिष्यति उत्सर्पिण्यां तृतीय-श्चक्रवर्ती। *सम॰ १५४।* गूढदन्तः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। *अनुत्त॰ २।* अन्तरद्वीपवि-शेषः। *जीवा॰ १४४।*

गूढदंता– गूढदन्तनामा अन्तरद्वीपविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

गूढदंतदीवे– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६।*

गूढमुत्तोलिं– गूढगोणीं। *तन्दु॰।*

गूढसामत्थो– गूढसामर्थ्यः। *आव॰ ६४९।*

गूढसिरागं– गूढशिराकं-अलक्ष्यमाणशिराविशेषम्। *प्रज्ञा॰ ३७।*

गूढा– गूढा-बहिःसंवृत्तिमन्तः। *उत्त॰ ५२६।*

गूढावत्ते– गूढश्चासावावर्त्तश्चेति गूढावर्त्तः। *स्था॰ २८८।*

गूथं– वर्चः। *ओघ॰ १२३।*

गूहग– विष्ठा। *तन्दु॰।*

गूहणं– किंचिकहणं। *दशवै॰ १२४।* सति बलपरक्कमे अकरणं गूहणं। *निशी॰ १८अ।* गूहनं-किञ्चित्कथनम्। *दशवै॰ २३३।*

गूहे– गूहयेत्। *दशवै॰ २३२।*

गृहकोलिका– गृहगोधिका। *दशवै॰ २३०।*

गृहजातः– दासः। *उत्त॰ २६५।*

गृहजामाता– गृहस्थाता दुहितृपतिः। *नन्दी॰ १६२।*

गृहपतिः– माण्डलिको राजा। *आव॰ १५६।* गृहस्थः। *आचा॰ ३२१।*

गृहपत्यवग्रहः– अवग्रहपञ्चके तृतीयो भेदः। *आचा॰ १३४।* माण्डलिकावग्रहः। *आव॰ १५६।*

गृहिव्यापारः– गृहियोगः-प्रारम्भरूपः। *दशवै॰ २३१।*

गृहस्थो– भिक्षां प्रयच्छन्ती गृहस्थी। *ओघ॰ १६२।*

गृहस्थोपसम्पत्– उपसम्पतौ प्रथमो भेदः। *आव॰ २६७।* यत्पुनरवस्थाननिमित्तं गृहिणामनुज्ञापनं सा गृहस्थविषया। *बृह॰ २२२अ।*

गृहाचारः– गार्हस्थ्यं-आगारधर्मः। *उत्त॰ ५७८।*

गृहीतव्यः– निश्चेतव्यः। *व्यव॰ २०५अ।*

गृहे– गृहलिंगे। *व्यव॰ २७आ।*

गेंदुए– गेन्दुकः-पुष्पलम्बूसकः। *जम्बू॰ २७५।*

गेज्जं– गद्यं-यत्र स्वरसञ्चारेण गद्यं गीयते। *जम्बू॰ ३९।*

गेण्हितुं– गृहीत्वा। *आव॰ ८२७।*

गेद्धावरंखी– भोयणकाले परिवेसणाए इतो बाहिति भणितो ताहे गेद्धो इव रिखंतो भायणं उड्डेति। *निशी॰ १०१अ।*

गेधी– सदोसुवलद्धेवि अविरमो गेधी। *निशी॰ ७१।*

गेयं– गन्धव्यो रीत्या बद्धं गानयोग्यम्। *जम्बू॰ २५९।* गीयत इति गेयं-तंतिसमं तालसमं वण्णसमं गहसमं लयसमं च कव्वं। तु होइ गेयं पंचविहं गीयसन्नाए। *दशवै॰ ८७। स्था॰ ३९७।*

गेरुअ– गैरिका-धातुः। *दशवै॰ १७०।*

गेरुआ– परिवाययां। *निशी॰ ९८अ।*

गेरुक– मृत्तिकाभेदः। *आचा॰ ३४२।*

गेरुय– गौरिकः-मणिविशेषः। *प्रज्ञा॰ २७।* गेरुअः-मणिभेदः। *उत्त॰ ६८९।*

गेलन्न– ग्लानत्वम्। *ओघ॰ ८९।* ग्लान्यं-ग्लानत्वम्। *स्था॰ ३१३।*

गेल्लि– हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुषं गिलतीव। *भग॰ १८७।*

गेविज्जं– ग्रैवेयकं-ग्रीवा बन्धनम्। *प्रश्न॰ १९।* ग्रैवेयं ग्रीवाभर-णविशेषः। *जम्बू॰ १०५।* ग्रीवात्राणं ग्रीवाभरणं वा। *जम्बू॰ २१९।* ग्रेवेयकं-कण्ठलम्। *औप॰ ५५।* ग्रैवेयं-ग्रीवाभरणम्। *जीवा॰ २५९।*

गेविज्जगा– ग्रैवेयकाः। *प्रज्ञा॰ ६९।*

गेविज्जन– लोकपुरुषस्य ग्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि। *स्था॰ १७९।*

गेविज्जा– ग्रेवेया-देवावासास्तन्निवासिनो देवा अपि। *उत्त॰ ७०२।*

गेवेज्ज– ग्रैवेयकं-ग्रीवाभरणम्। *भग॰ १९३।* लोकपुरुषस्य ग्रीवाविभागे भवानि विमानानि। *अनुयो॰ ९२।*

गेहं– गृहम्। *उत्त॰ ३२०।*

गेहसंठिया– गेहस्येव वास्तुविद्योपनिबद्धस्य गृहस्यैव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा गेहसंस्थिता। *सूर्य॰ ६९, ७०।*

गेहागारा– गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः। *सम॰ १८।* गेहाकारा-नामद्रुमगणाः। *जम्बू॰ १०६। स्था॰ ५१७।*

गेहागारो– गेहाकारः द्रुमविशेषः। *जीवा॰ २६९।* गृहाकारः-

षष्ठः कल्पवृक्षः। *आव॰ १११।*

गेहावणसंठिय– गृहयुक्त आपणो गृहापणो-वास्तुविद्याप्रसि-द्धस्तस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्या सा गृहापणसंस्थिता। *सूर्य॰ ६९।*

गेहावणाइ– गेहेषु आयतनानि आपतनानि वा उपभोगार्थमाग-मनानि। *जम्बू॰ ११९।*

गेहावणो– गृहयुक्त आपणो वास्तुविद्याप्रसिद्धः गृहापणः। *सूर्य॰ ६९।*

गेही– गृद्धिः-अप्राप्तार्थाकाङ्क्षा। *प्रश्न॰ ९७।* अप्राप्तस्य प्राप्ति-र्वाञ्छा। *प्रश्न॰ ४४।* विषयाभिकाङ्क्षा। *उत्त॰ २६४।*

गेहिए– गेहकः-भर्त्ता। *उत्त॰ १३७।*

गेही– गृद्धिः-प्राप्तार्थेष्वासक्तिः। *भग॰ ५७३।*

गोंड– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।*

गोंफा– गुल्फौ-घुण्टकौ। *प्रश्न॰ ८०।*

गो– पुरित्थगतो लोगं तं गच्छतीति। *दशवै॰ १०३।* गोश-ब्देन गावोबलिवर्दाः। *बृह॰ १५७* आ। गो-गाविओ। *निशी॰ १३७* अ।

गोअ– गोत्रं-गुणनिष्पन्नाभिधानम्। *औप॰ ५७।*

गोअम– विचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापयुक्तवराटकमालिका-दिचर्चितवृषभकोपायतः कणभिक्षाग्राहिणो गोतमाः। *अनुयो॰ २५।* गौतमः। *आचा॰ ३५९।* गौतमः-आगम प्रसिद्धो गणधरविशेषः। *आव॰ ४१३।*

गोअरे– सामायिकत्वाद् गोरिव चरणं गोचरः। *दशवै॰ १८।*

गोउरं– गोभिः पूर्यत इति गोपुरं-पुरद्वारम्। *जीवा॰ २७९।* प्रतोली कपाटो वा, पुरद्वारम्। *प्रश्न॰ ८।* गोपुरं-नगरप्रतोली पुरद्वारम्। *भग॰ २३८।*

गोउलं– घोसं। *निशी॰ ७०* आ।

गोकण्णो– गोकर्णः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४।* द्विखु-रचतुष्पदविशेषः। *प्रश्न॰ ७।* *जीवा॰ ३८।*

गोकन्न– द्विखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गोकन्नदीवे– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६।* गोकर्णनामा-न्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

गोकर्ण– मृगभेदः। श्रृङ्गवर्णादिविशेषः। *जम्बू॰ १२४।*

गोकलिंज– डल्ला। *जम्बू॰ ५८।* गोकलिञ्जं नाम यत्र गोभक्तं प्रक्षिप्यते। *राज॰ १४१।* गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं तद्गोकलिञ्जं डल्लेति। *उपा॰ २०।*

गोकुलं– परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे ग्रामविशेषः। *पिण्ड॰ १२७।*

गोक्षुरकं– त्रिकण्टकम्। *ओघ॰ १२४।*

गोखीरफेणो– गोक्षीरफेनः। *जीवा॰ २७२।*

गोघायको– गोघातकः। *आव॰ ३९१।*

गोचरः– विषयः। *आव॰ ५८९।*

गोच्छ– भाजनवस्त्रविशेषः, वक्ष्यमाणलक्षणं प्रमार्जयति। *ओघ॰ ११७।*

गोच्छओ– गोच्छकः-पात्रवस्त्रप्रमार्जनहेतुः कम्बलशकलरूपः। *प्रश्न॰ १५६।* कंबलमयो बद्धपात्रोपरि। *बृह॰ २३७* अ।

गोच्छकः– यः पात्रकस्योपरि दीयते सः। *ओघ॰ १९९।*

गोच्छिया– जातगुच्छाः। *ज्ञाता॰ ५।*

गोजलोया– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१।* *जीवा॰ ३१।*

गोजिब्भा– गोजिह्वा। *प्रज्ञा॰ ३६७।*

गोजूतिं– गोचरं। *निशी॰ १४४* अ।

गोज्ज– नर्त्तकः। *दशवै॰ ४९।*

गोज्झपेक्खिया– नृत्यविशेषप्रेक्षिका। *आव॰ ९२।*

गोट्ठं– गोष्ठं-गोकुलम्। *आव॰ ७१९।*

गोट्ठामाहिल– गोष्ठमाहिलः यः स्पृष्टाबद्धप्ररूपकः। *उत्त॰ १५३।* अर्थाज्ञाविराधनायां दृष्टान्तः। *नन्दी॰ २४८।* गोष्ठा-माहिलः यस्मादबद्धिका उत्पन्नाः स आचार्यः। *आव॰ ३१२।* गोष्ठमाहिलः-गच्छप्रधानः श्रावकः। *आव॰ ३०८।* *निशी॰ ३३५* आ।

गोट्ठि– समवयसां समुदायो गोष्ठी। *दशवै॰ २२।* जनसमुदाय-विशेषः। *ज्ञाता॰ २०६।*

गोठ– गोष्ठः-गोष्ठामाहिलः-अभिनिवेशे दृष्टान्तः। *व्यव॰ १७९* अ।

गोट्ठिदासी– गोष्ठादासी। *आव॰ २०१।*

गोट्ठिधम्मो– गोष्ठीधर्मः-गोष्ठीव्यवस्था। *दशवै॰ २२।*

गोट्ठिलए– गोष्ठीकः। *आव॰ ९२।* *विपा॰ ५५।*

गोट्ठी– गोष्ठी-जनसमुदायः। *ज्ञाता॰ २०६।* *आव॰ ८२२, ८२४।* *उत्त॰ ११२।* महत्तरादिपुरुषपञ्चकपरिगृहीता। *बृह॰ २००* अ।

गोडंडेणालिया– । *निशी॰ ४६* आ।

गोड– गोडः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*।

गोड्ड– पौल्यं-गौल्यरसोपेतं मधुररसोपेतमितियावत्। *भग॰ ७४८*।

गोण– बलीवर्दः। *बृह॰ २४७* आ। *ओघ॰ ९७*। *आव॰ २२६*। गौणं-गुणनिष्पन्नम्। *प्रश्न॰ ६*। गोणाः-गावः। *जम्बू॰ १२४*। *प्रश्न॰ ७*। गोणः-गौः। *प्रज्ञा॰ २५२*। गौः। *ओघ॰ २०१*। *निशी॰ २* अ। गवः। *आव॰ १९०, ८२९*।

गोणपोतलओ– गोपेतः। *आव॰ १९८*।

गोणपोयए– गोणपोतकौ-गोपुत्रकौ। *उपा॰ ४९*।

गोणसं– गोनसं-सर्प्पजातिविशेषम्। *व्यव॰ २३* अ।

गोणस– गोणसः-निष्फणादिविशेषः। *प्रश्न॰ ७*।

गोणसखइयं– गोनसभक्षितम्। *आव॰ ७६४*।

गोणसहा– गोधरेकः। *उत्त॰ ६९९*।

गोणसा– मुकुली-अहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

गोणा– बलीवर्दाः। *उत्त॰ ५४८*। गोणा-द्विखुरचतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८*। *प्रज्ञा॰ ४५*। गावः। *प्रश्न॰ ३८*।

गोणाई– गवादीनि। *ओघ॰ १४२*।

गोणादिचमढणा– बलीवर्दादिपादप्रहारादिः। *ओघ॰ ८१*।

गोणी– गौः। *आव॰ ९६*।

गोण्णं– गुणादागतं गौणं, व्युपत्तिनिमित्तं द्रव्यादिरूपं गुणमधि-कृत्य यद्वस्तुनि प्रवृत्तं नाम तद् गौणनाम। *पिण्ड॰ ४*। गुणनिष्पन्नम्। *बृह॰ २४८* अ।

गोण्णनाम– गुणैर्निष्पन्नं गौणं तच्च तन्नामं च गौणनाम। *आचा॰ १९६*।

गोतम– भक्तिकर्तव्यतायां दृष्टान्तः। *व्यव॰ १७२* आ।

गोतमगोत्ते– गौतमगोत्रम्। *सूर्य॰ १५०*।

गोतमा– गोतमस्यापत्यानि गौतमाः क्षत्रियादयः। *स्था॰ ३९०*। गौतमः-प्रथमो गणधरः। *अनुत्त॰ ३*। *ज्ञाता॰ ११४*।
लघुतराक्षमालाचर्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवद् वृष-भकोपायतः कणभिक्षाग्रही। *ज्ञाता॰ १९५*।

गोतित्थं– गोतीर्थं-तडागादिष्विव प्रवेशमार्गरूपो नीचो नीचतरो भूदेशः। *जीवा॰ ३०८*। क्रमेण नीचो नीचतरः प्रवेशमार्गः। *जीवा॰ ३२३*। *प्रज्ञा॰ ४१३*। गवांतीर्थं-तडागादाववतार-मार्गो गोतीर्थं, ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं-अवतारवतीभूमिः। *स्था॰ ४८०*।

गोतित्थसंठाणसंठिए– गोतीर्थसंस्थानसंस्थितः-क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरमुद्वेधस्य भावात्। *जीवा॰ ३२५*।

गोतिपाला– गुल्मिकाः। *ओघ॰ २२३*।

गोत्त– गूयते-शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैर्यत् तद् गोत्रं-उच्चनीचकुलोत्पत्तिलक्षणः पर्यायविशेषः,
तद्विपाकवेद्यं कर्मापि गोत्रम्,
यद्वाकर्मणोऽपादानविवक्षा गूयते शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैरात्मा यस्मात् कर्म्मणः उदयाद् गोत्रम्। *प्रज्ञा॰ ४५४*। प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम्। *जम्बू॰ ५००*। सञ्ज्ञा। *आव॰ २७९*। अभिधानम्, कर्मवि-शेषः। *स्था॰ ४५५*। गां-वाचं त्रायते-अर्थाविसंवादनतः पालयतीति, समस्तागमाधारभूतः। *सूत्र॰ २३५*। गोत्रशब्दो नाम-पर्यायः। *उत्त॰ १८१*। गौतमगोत्रादि। *ज्ञाता॰ २२०*।
प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानतस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम्। *सूर्य॰ १५०*।

गोत्ता– इतराणि त्वितराणि नामानि। *स्था॰ ३८९*। तथावि-धैकैकपुरुषप्रभवा मनुष्यसन्तानाः उत्तरगोत्रापेक्षया। *स्था॰ ३९०*।

गोत्तासए– गोत्रासकः-हस्तिनापुरे भीमकूटग्राहिदारकः। *विपा॰ ५०*।

गोत्थुभ– गोस्तुभः-लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजा-वासपर्वतः। *भग॰ १४४*।

गोथुभत्ति– कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेषः। *सम॰ १५८*।

गोथूभा– गोस्तूपा-दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्यां शक्र-देवेन्द्रस्य नवमिकाऽग्रमहिष्या राजधानी। *स्था॰ २३१*। *जीवा॰ ३६५*। पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य अपरस्यां दिशि पुष्करिणीविशेषः। *जीवा॰ ३६४*।
पाश्चात्याञ्जनपर्वतस्य पाश्चात्यायां पुष्करिणीविशेषः। *स्था॰ २३०*।

गोथूभे– गोस्तुभः-प्राच्यां लवणसमुद्रमध्यवर्त्तिनो वेलन्धरना-गराजनिवासभूतपर्वतस्य पौरस्त्याच्चरमान्तादपसृत्य वडवा-मुखस्य महापातालकलशस्य पाश्चात्यश्चरमान्तो येन व्यवधा-नेन भवति। *सम॰ ७१*। वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वतः। देवविशेषः। *स्था॰ २२६*। श्रेयांसनाथस्य

प्रथमः। शिष्यः। *समः १५२।*

गोथूभो– गोस्तूपः-भुजगेन्द्रस्यावासपर्वतः। *जीवा० ३११।* प्रथमो वेलन्धरनागराजः, भुजगेन्द्रो भुजगराजः। *जीवा० ३११।*

गोदत्ता– ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्ये द्वितीया। *उत्त० ३७९।*

गोदासे– गणविशेषः। *स्था० ४५१।*

गोदुह– गोदोहिका। *स्था० २९९।*

गोदोहिका– गोर्दोहनं गोदोहिका। *स्था० ३०२।*

गोदोहिकासनं– आसनविशेषः। *उत्त० ६०७।*

गोदोहिया– गोदोहिका। *आव० २२७।*

गोदोही– गोदोहिका। *आव० ६४८।*

गोधंमो– अनाचारः। *निशी० ११३* आ।

गोध– अलसः। *उत्त० २६२।* व्यवहारी। *दशवै० ५६।*

गोधणं– गोधनं-गवादिद्रव्यम्। *आव० ८२५।*

गोधा– गोधा। *प्रश्न० ८।* म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५।*

गोधिका– वाद्यविशेषः। *स्था० ३९५।*

गोधूमजंतगं– गोधूमयन्त्रकम्। *उत्त० २२३।*

गोधूमो– गोधूमः-धान्यविशेषः। *आव० ८५५।*

गोधेरकः– गोणसहा। *उत्त० ६९९।*

गोनिषधिका– यस्यां तु गोरिवोपवेशनं सा। *स्था० २९९।* उपवेशनविशेषः। *बृह० २००* अ।

गोपालओ– गोपालकः-अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतलघुपुत्रः। *आव० ६९९।*

गोपालगिरि– गिरिविशेषः। *जम्बू० १६८। भग० ३०७।*

गोपुच्छसंठाणसंठिया– गोपुच्छस्येव संस्थानं गोपुच्छसंस्थानं तेन संस्थिता गोपुच्छसंस्थानसंस्थिताऊर्ध्वीकृतगोपुच्छा-कारा। *जीवा० १७८।*

गोपुट्ठए– गोपृष्ठाद्यत्पतितम्। *भग० ६८०।*

गोपुर– प्राकारद्वारम्। *जीवा० २५८।* गोपुरं-पुरद्वारम्। *सूर्य० ६९। औप० ३। प्रश्न० ८। जीवा० २६९।* प्रतोली। *ज्ञाता० २२२।* प्रतोलीद्वाराणां परस्परतोऽन्तराणि। *अनुयो० १५९।* गोभिः पूर्यन्त इति गोपुराणि प्रतोलीद्वाराणि। *उत्त० ३११।*

गोपुरसंठिओ– गोपुरसंस्थितः। *जीवा० २७९।*

गोपुरसंठिया– गोपुरस्येव-पुरद्वारस्येव-संस्थितं संस्थानं यस्याः सा गोपुरसंस्थिता। *सूर्य० ६९।*

गोपेन्द्रवाचकः– द्रव्यानुयोगे परपक्षनिवर्तकः। *दशवै० ५३।*

गोप्पतं– गोष्पदं-तत्कल्पं देशविरत्यादिकमल्पतमम्। *स्था० २७९।*

गोप्पहेलिया– गोप्रहेल्या। *आचा० ४११।*

गोफण– गोफणः-प्रस्तरप्रक्षेपकोदवरकगुम्पितः शस्त्रविशेषः। *आव० ६१३।*

गोफणा– चम्मदवरगमया। *निशी० १०५* आ। चर्मदव-रकमयी। *बृह० ६८* अ।

गोबर– गोमयः। *बृह० २७०* आ।

गोबहुल– शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेषः। *भग० ६६०।* गोबहु-लः-प्रचुरगोमान् शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेषः। *आव० १९९।*

गोब्बरगाम– गूर्बरग्रामः-मगधाविषये ग्रामः। *आव० ३५५।* गोर्बरग्रामः-ग्रामविशेषः। *आव० २१२।* वइरिसगामासन्नं। *बृह० २१७* आ। सन्निवेशः, इन्द्राग्निवायुभूतिगणधराणां जन्मभूमिः। *आव० २५५।*

गोभत्तं– गोभक्तं छगणादि। *आव० ९१।*

गोभत्तकलंदयं– । *निशी० ९१* आ।

गोभूमी– सदा गावश्चरति यत्र तेन गोभूमिः। *आव० २११।*

गोमंडलं– गोवर्गः। *बृह० १५७* आ।

गोमए– गोमयं-छगणम्। *भग० २१३।*

गोमड– गोमृतः-मृतगोदेहः। *जीवा० १०६।*

गोमयं– गोकरिसो गोमयं। *निशी० २६५* आ।

गोमयकीडगो– गोमयकीटकः-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३२।*

गोमयकीडा– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा० ४२।*

गोमाणसिआ– गोमानस्यः-शय्यारूपाः स्थानविशेषाः। *जम्बू० ३२६।*

गोमाणसिया– गोमानस्यः शय्याः। *जीवा० २०४, ३५९। राज० ६२।* गोमानसिकाः शय्यारूपाः-स्थानविशेषाः। *जीवा० २३०।*

गोमाणसीओ– शय्याः। *जम्बू० ४९।*

गोमाणुसी– गोमानुषी-शय्यारूपा। *जीवा० ३६३।*

गोमाणुसी– गोमानुषी-शय्यारूपा। *जीवा० ३६३।*

गोमायुः– शृगालः। *प्रज्ञा० २५४। आचा० १६७।*

गोमिज्जए– गोमेज्जकः-मणिभेदः। *प्रज्ञा० २७। उत्त०*

६८९।

गोमिनि– गोमिनि-नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमामन्त्र-णवचनम्। *दशवै॰ २१६*।

गोमिय– गोमिकः-गोमान्। *प्रश्न॰ ३८*। गोम्मिक-गौल्मिकः-गुप्तिपालः। *प्रश्न॰ ५६*।

गोमिया– सुंकिया। *निशी॰ १४०* अ। दंडपासिया। *निशी॰ १९४* अ। ठाणइल्ला। *निशी॰ ११* आ।

गोमुत्तिअदड्ढ– गोमूत्रदग्धः-गोमूत्रसहितं स्थानम्। *ओघ॰ ५४*।

गोमुत्तियवूहो– गोमूत्रिकाव्यूहः-गोमूत्रिकाकारसैन्यविन्यासवि-शेषः। *प्रश्न॰ ४७*।

गोमुत्तिया– गोचर्यामभिग्रहविशेषः। *निशी॰ १२* अ। *उत्त॰ ६०५*।

गोमुह– गोमुखनामा अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*। गोमुखः अन्त-रद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४*।

गोमुहदीव– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६*।

गोमुहिए– गोमुखवदुरःप्रच्छाकत्वेन कृतानि गोमुखितानि। *ज्ञाता॰ २३७*।

गोमुहो– गोमुखी-काहिला-यस्या मुखे गोशृङ्गादिवस्तु दीयत इति। *अनुयो॰ १२९*। काहला। *स्था॰ ३९५*।

गोमूत्रिका– यस्यां तु वामग्रहाद्दक्षिणगृहे दक्षिणगृहाच्च वामगृहे भिक्षां पर्यटति सा गोमूत्राकारत्वात् गोचरभूमिरपि। *बृह॰ २५७* अ। *प्रज्ञा॰ ४७३*।

गोमूत्रिकाबन्धः– मुद्रिकाबन्धः। *ओघ॰ १४५*।

गोमेज्ज– गोमेयकः-रत्नविशेषः। *जीवा॰ २०४*।

गोमेज्जए– गोमेज्जकः। *जीवा॰ २३*। गोमेदकः-पृथिवी भेदः। *आचा॰ २९*।

गोमेयकं– रत्नविशेषः। *उत्त॰ ४५१*।

गोम्मिए– गौल्मिकः-शुल्कपालः। *बृह॰ २२८* अ।

गोम्मिय– गुप्तिपालकः। *प्रश्न॰ ३७*।

गोम्मिया– बद्धस्थाना आरक्षकाः। *बृह॰ १०६* आ। बद्धस्थाना मार्गरक्षकाः। *बृह॰ ८३* अ। गुल्मेन समुदायेन चरन्तीति गौल्मिकाः स्थानरक्षपालः। *बृह॰ २९०* अ०। गौल्मिकाः ये राज्ञः पुरुषाः स्थानकं बद्ध्वा पन्थानं रक्षन्ति। *बृह॰ ८३* अ।

गोम्ही– कर्णश्रृगाली। *अनुयो॰ २१४*। कण्णसियाली। *निशी॰ १६३* अ। त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*। *जीवा॰ ३२*। कर्णसियालिया। *प्रज्ञा॰ ४२*।

गोय– गास्त्रायत इति गोत्रं-मौनं वाक्संयमः, जन्तूनां जी-वितम्। *सूत्र॰ २४९*। गीयते-शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैः कु-लालादिव मृद्द्रव्यमत आत्मेति गोत्रम्। *उत्त॰ ६४१*। गुण-निष्पन्नम्। *भग॰ ११५*। अन्वर्थिकम्। *भग॰ ५६१*। गोत्रं-गुणनिष्पन्नः। *निर॰ ७*। गोत्रं-अन्वर्थः। *राज॰ १३*। सरीरं। *दशवै॰ ५९*। गोत्रं-आन्वर्थिकीसञ्ज्ञा। *विपा॰ ४२*।

गोयम– प्रथमो गणधरः। *निशी॰ ७७* अ। स्थविर विशेषः। *निशी॰ २०७* आ। गौतमं-रोहीणिगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००*। गौतमः-अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य प्रथमम-ध्ययनम्। *अन्त॰ १*। कुमारविशेषः। *अन्त॰ २*। भक्तिबहुमाने तृतीयभङ्गे दृष्टान्तः। *निशी॰ ८* अ। ह्रस्वोबलिवर्दस्तेन गृहीतपादपतनादिविचित्रशिक्षेण जनचित्ताक्षेपदक्षेण भिक्षामट-न्ति ये ते गौतमः। *औप॰ ८९*। एषणासमितिदृष्टान्ते धिग्जा-तीयश्चक्रकरः। *आव॰ ६१६*। प्रतीच्यां दिशि लवणसमुद्राधि-पसुस्थितनामदेवावासभूतो द्वीपविशेषः। *प्रज्ञा॰ ११४*। गोव्र-तिका गृहीतशिक्षं लघुकायं वृषभमुपादाय धान्याद्यर्थं प्रतिगृह-मटन्ति ते गौतमाः। *सूत्र॰ १५४*। *निशी॰ ३५२*।

गोयमकेसिज्जं– उत्तराध्ययनेषु त्रिंशत्तममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

गोयमदीव– गौतमद्वीपः-द्वीपविशेषः। *सम॰ ७९*।

गोयमसामी– गौतमस्वामी, प्रथमो गणधरः,। *आव॰ ६५*। *ज्ञाता॰ १७०*, *१७१*, *१७८*, *२२६*। *अन्त॰ २२*।

गोयर– गोचरः-भिक्षाग्रहणविधिलक्षणः। *सम॰ १०७*। *नन्दी॰ २१०*। भिक्षाटनम्। *ज्ञाता॰ ६१*। गोचरः-भिक्षाटनम्। *भग॰ १२२*। गोरिव चरणं गोभरः। *उत्त॰ ११६*। गोरिव चरणं गोचरः-उत्तमाधममध्यम कुलेष्वरक्तद्विष्टस्य भिक्षाटनम्। *दशवै॰ १६३*।

गोयरग्गपविट्ठो– गोरिव चरणं गोचरस्तस्याग्र्य-प्रधानं तस्मिन् प्रविष्टः गोचराग्रप्रविष्टः। *उत्त॰ ११६*।

गोयरचरिया– गोश्चरणं गोचरः चरणं-चर्या गोचर इव चर्या गोचरचर्या-भिक्षाचर्या। *आव॰ ५७५*।

गोयरतिअ– गोचरत्रिकं-त्रिकालभिक्षाटनम्। *ओघ॰ ६५*।

गोयारिया– गोचरचर्या। *निशी॰ ९* अ।

गोयावरी– गोदावरी-नदीविशेषः। *व्यव॰ १९३* अ।

गोरक्खरा– एकखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

गोरखुरो– गोरखुरः-एकखुरचतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।*

गोरव– गौरवं-अशुभाध्यवसायविशेषः। *प्रश्न॰ ६२।* ऊर्ध्वा-धस्तिर्यग्गमनस्वभावः। *स्था॰ ४३४।*

गोरस– गोरसं-गोभक्तादि। *आव॰ ९१।* गोरसः। *आव॰ ३४३। सूत्र॰ २९३।*

गोरसकुंड– गोरसकुण्डः। *आव॰ ६४१।*

गोरसदवा– गोरसद्रवः-दध्यादिपानकम्। *पिण्ड॰ १५०।*

गोरसधोवणं– गोरसधावनम्। *आव॰ ६२४।*

गोरहत्ति– गोरहकः-कल्होटकः। *आचा॰ ३९१।*

गोरहग– गोरथकः-कल्होडः। *दशवै॰ २१७।* कल्होडकः। *बृह॰ १३८* आ।

गोरहसंठितो– पासातो। *निशी॰ ६९* आ।

गोरा– नदीपाषाणश्रृङ्गिका। *बृह॰ १६२* आ। गोधूमा। *निशी॰ २७* आ।

गोरी– गौरी-कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी। *अन्त॰ १८।* अन्तकृद्द-शानां पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *अन्त॰ १५।* चत्वारि-महाविद्यायां प्रथमा। *आव॰ १४४।* बलकोट्टज्येष्ठभार्या। *उत्त॰ ३४५।*

गोरीपाडलगोरा– गौरी या पाटला पुष्पजातिविशेषस्तद्वद्ये गौरास्ते गौरीपाटलागौराः। *ज्ञाता॰ २३१।*

गोरुवं– गौः। *आव॰ १८९।*

गोरे– गौधूमः। *बृह॰ १२६* अ।

गोल– देशान्तरेऽवज्ञासंसूचकः। *आचा॰ ३८८।* गोलः-तत्त-द्देशप्रसिद्धितो नैष्ठुर्यादिवाचकोऽयं शब्दः श्वा वा। *दशवै॰ २१५।* साधोरुपमानम्। *दशवै॰ १९।* गोले-नानादेशापेक्षया गौरवकु-त्सितादिगर्भमन्त्रणवचनमिदम्। *दशवै॰ २१६। ज्ञाता॰ १६७।* वृत्तपिण्डः। *स्था॰ २७२।* गोलकः-वर्तुलः पाषाणादिमयः। *अनुत्त॰ १४।*

गोलगो– गोलकः-जन्तुमयो वर्त्तूलाकारः। *आव॰ ४१९। आव॰ ४२२।*

गोलछाया– गोलमात्रस्य छाया गोलच्छाया। *सूर्य॰ ९५।*

गोलपुंजछाया– गोलानां पुञ्जो गोलपुञ्जो गोत्कर इत्यर्थः, तस्य छाया गोलपुञ्जच्छाया। *सूर्य॰ ९५।*

गोलय– गोलकः-वृत्तोपलः। *जम्बू॰ ३२६।* पिण्डकः। *उत्त॰ ५३०।*

गोलव्वायणं– गोलव्यायनं-अनुराधागोत्रम्। *जम्बू॰ ५००।*

गोलांगूल– गोलाङ्गूलं-वानरः। *भग॰ ५८२।*

गोलाकारे– गोलाकारः-वृत्ताः। *सूर्य॰ २६७।*

गोलावलिछाया– गोलनामावलिर्गोलावलिस्तस्याः छाया गोलावलिच्छाया। *सूर्य॰ ९५।*

गोलिकाः– भण्डिकाः। *स्था॰ ४१९।*

गोलिगि– महियविक्कया। *निशी॰ ४५* अ।

गोलियधणुयं– गोलिकधनुः। *उत्त॰ २४५।*

गोलिया– गोलिका-गन्धप्रधाना शाला। *व्यव॰ २४८।* आ। मथितविक्रायकाः। *बृह॰ १५४* आ।

गोलियालिंगं– अग्नेराश्रयविशेषः। *जीवा॰ १२३।*

गोलोममेत्तो– अहस्तप्राप्या-गोलोममात्रा। *निशी॰ ३५४।*

गोलोमा– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३१। प्रज्ञा॰ ४१।*

गोल्लविसओ– गोल्लविषयः-गोल्लदेशः। *आव॰ ४३३।* गौडविषयः-गौडदेशः। *आव॰ ८३०।*

गोल्हाफलं– बिम्बफलम्। *प्रश्न॰ ८१। जीवा॰ २७२।*

गोवगो– गोपः। *आव॰ ३९०।*

गोवग्गं– गोरूपाणि। *स्था॰ ५०२।*

गोवच्छय– गोवत्सः। *उत्त॰ ३०३।*

गोवती– गोपतिः-गवेन्द्रः। *ज्ञाता॰ १६१।*

गोवतीते– गोव्रतिकः-गोश्चयानुकारी। *ज्ञाता॰ १९५।*

गोवल्लं– गोवल्लायनं-पूर्वाफाल्गुन्या गोत्रम्। *जम्बू॰ ५००।*

गोवल्लायणसगोत्ते– पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रस्य गोत्रम्। *सूर्य॰ १५०। जम्बू॰ ५००।*

गोवाटादि– कर्द्दमः। *स्था॰ २१९।*

गोवालो– यो गाः पालयति गोपालः। *उत्त॰ ४९५।* गोपालः। *आव॰ ४१८।*

गोवलकंचु– गोवालकञ्चुकम्। *बृह॰ १०९* अ।

गोवालकंचुगो– गोवालकञ्चुकः। *बृह॰ २१७* अ।

गोवालगमाया– गोपालकमाता शिवा, श्रुगालिनी। *आव॰ ६७५।*

गोवाला– गोपालाः-राजा। *नन्दी॰ १५१।*

गोवाली– गोपाली-संवरोदाहरणे श्रीपार्श्वस्वामिसाध्वी। *आव॰ ७१४।* वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

गोविंद– गोविन्दः। *आव॰ ७१३।* भिक्षुविशेषः। नि॰ ३९ अ। श्रावकविशेषः। *व्यव॰ १७९* अ।

गोविंददत्त– गोपेन्द्रदत्तः-सद्व्यवहारकाचार्यः। तगरायामा-चार्यस्याष्टमः शिष्यः। *व्यव॰ २५६* अ।

गोविंदनिज्जुत्ति– हेतुशास्त्रभेदः। *बृह॰ १४२* अ।

गोविंदवायगो– मिच्छादिट्ठी व्रतेसु पच्छा समत्तपडिवत्तस्स सम्मं आउट्ठस मूलं। *निशी॰ १२६* अ। *निशी॰* पृ॰ *८३* अ। गोविन्दवाचकः-मूलप्रायश्चित्ते दृष्टान्तः। *व्यव॰ १०३* आ। वाचकविशेषः। *निशी॰ २९३*। आ।

गोवृषः– बलीवर्दविशेषः। *बृह॰ २१३* अ।

गोव्रतिकाः– गोचर्यानुकारिणः। *अनुयो॰ २५*।

गोशालः– आजीविकमतप्रवर्त्तकः। *नन्दी॰ २३९*।

गोशालकः– जिनोपसर्गकारीनिह्नवः। *विपा॰ ६४*। *सूत्र॰ ३८६*। *ज्ञाता॰ १६२*। *उत्त॰ ४७*।

गोशीर्ष– चन्दनविशेषः। *सम॰ १३८*।

गोशीर्षचन्दनं– चन्दनविशेषः। *ज्ञाता॰ १२८*।

गोसंखी– गोशङ्खी-कौटुम्बिक आभीराणामधिपतिः। *आव॰ २१२*।

गोसंखो(ख)डी– उज्जूहिगा। *निशी॰ ७१* अ।

गोसंधिओ– गोसन्धिकः-गोष्ठाधिपः। *आव॰ ८६३*।

गोस– गोषः-प्रत्यूषः। *आव॰ ७८१*। प्रातः। *व्यव॰ २३६*।

गोसाल– मङ्खलिपुत्रः। *भग॰ ६५९, ६६०*। *आव॰ १९९*।

गोसालसिस्सा– आजीवगा। *निशी॰ ९८* अ।

गोसाला– गोणादि जत्थ चिट्ठंति सा गोसाला। *निशी॰ २६५* अ।

गोसीस– गोशीर्ष-उत्तमचन्दनविशेषः। *प्रश्न॰ १३५*। चन्दन-विशेषः। *जीवा॰ २२७*। गोशीर्षनामकचन्दनम्। *प्रज्ञा॰ ८६*।

गोसीसचंदणं– गोशीर्षचन्दनम्। *आव॰ ११६*।

गोसीसावलिसंठिते– गोशीर्षावलिसंस्थितं-गोःशीर्षं गोशीर्षं तस्यावली-तत्पुद्गलानां दीर्घरूपा श्रेणिः तत्समं संस्थानम्। *सूर्य॰ १२९*।

गोसे– प्रातः। *व्यव॰ २३५*। उदयमादिच्चे। *निशी॰ ७७* अ।

गोषो– प्रत्यूषः। *आव॰ ३५१*।

गोस्तूपा– समुद्रमध्यवर्त्तिनः पर्वतविशेषाः। *प्रश्न॰ ९६*।

गोष्ठानि– घोषाः। *स्था॰ ८८*।

गोष्ठामाहिलः– मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्तः। *आव॰ ५७९*। स्वाग्रहग्रस्तः कश्चित्। *सूत्र॰ २३३*। गोष्ठामाहिलः। *आचा॰ २०९*।

गोह– राजपुरुषः। *उत्त॰ १७९*। गोधः-आरक्षः। *आव॰ २९९, ३१६*। *उत्त॰ १६२*। अधमः। *आव॰ ४१५*। गोहः-जारः। *ओघ॰ ४६*। दण्डिकः-आरक्षकः। *आव॰ ६९२*। कर्मकरः। *दशवै॰ १८१*। प्राकृतः। *आव॰ ३०१*। उपपतिः। *नन्दी॰ १४५*। गोधः। *दशवै॰ ८९*।

गोहा– गोधा। *उत्त॰ ६९९*। गोधा-भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः। *जीवा॰ ४०*।

गोहिआ– चर्मावनद्धवाद्यविशेषः। दर्दरिकेत्यपरनाम्ना प्रसिद्धा। *अनुयो॰ १२९*।

गोहिका– भाण्डानां कक्षाहस्तगतातोद्यविशेषः। *आचा॰ ४१२*।

गोहुम– गोधूमः-धान्यविशेषः। *ज्ञाता॰ २३१*। *दशवै॰ १९३*। औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

गोहे– गोधा-सरीसृपविशेषः। *भग॰ ३५६*। गोधा। *आव॰ ९६*। व्यवहारी। *दशवै॰ ५९*।

गौतमः– रागद्वेषादिसहभावविरहितो गणधरविशेषः। *उत्त॰ २४१*।

गौतमस्वामी– प्रथमगणधरः। *आचा॰ २१*।

गौतमादिः– सूत्रत आत्मागमवान् *आव॰ ५७*।

गौरवं– ऋद्धा नरेन्द्रादिपूज्याचार्यत्वादिलक्षणया। *सम॰ ९*।

गौरीपुत्रा– भिक्षाकाः। *जम्बू॰ १४२*।

गौर्गलिः– असञ्जातकिणस्कन्धः। *आचा॰ ८७*।

ग्रन्थः– ग्रन्थ-काव्यं धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थनिबद्धं संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसंकीर्णभाषानिबद्धं, गद्यपद्यगेयचौर्ण-पदबद्धं वा। *जम्बू॰ २५९*।

ग्रन्थविच्छेदविशेषः– वस्तु। *नन्दी॰ २४१*।

ग्रहगृहीतः–उन्मत्तः-दृप्तः। *पिण्ड॰ १६३*।

ग्रहणकं–सूचकम्। *उत्त॰ २४२*।

ग्रहणशिक्षा– प्रथा शिक्षा। *नन्दी॰ २१०*। ग्रहणाभ्यासः। *आव॰ ८३३*। *बृह॰ ६४*।

ग्रहणा–शिक्षा आसेवनात्मिका। *उत्त॰ २८२*।

ग्रहदण्डाः– दण्डाकारव्यवस्थिता ग्रहा-ग्रहदण्डाः ते चानर्थौ-पनिपातहेतुतया प्रतिषेध्या न स्वरूपतः। *जीवा॰ २८२*।

ग्रहगर्जितानि– ग्रहचारहेतुकानि गर्जितानि, इमानि स्वरूपतो-ऽपि प्रतिषेध्यानि। *जीवा॰ २८२*।

ग्रामकूटः– ग्रामे महत्तरः। *निशी॰ १७६* आ।

ग्रामणीः– आधाकर्मपरिहरणे वणिग्। *पिण्ड॰ ७२*।

ग्रामभोगिकः– ग्रामनगरपतिः। *ओघ॰ ४६*। ठक्कुरः। *आव॰ २३८*।

ग्रामरक्ष–त्रिकचत्वारादिव्यवस्थितं शक्तिकुन्तादिहस्ता उपचर-न्ति। *आचा॰ ३०८*।

ग्रामेण– जनसमूहेन। *सम॰ ५३*।

ग्रामेयकः– ग्राम्यः। *नन्दी॰ १४९*।

ग्राहः– अभिलाषः। *आव॰ ८१४*।

ग्राहणाकुशलः– यो बहवीभिर्युक्तिभिः शिष्यान् बोधयति, व्याख्याप्रायोग्यः सूरिः। *आचा॰ ३*।

ग्राह्यवाक्यः– सर्वत्रास्खलिताज्ञः, व्याख्याप्रायोग्यः सूरिः। *आचा॰ २*।

ग्रीवा– लोकपुरुषस्य त्रयोदशरज्जूपरिवर्त्तीप्रदेशः। *उत्त॰ ७०२*। कोटा। *प्रश्न॰ ५६*। *आचा॰ ३८*।

गैवेयकाणि–लोकपुरुषग्रीवास्थाने भवानि विमानानि। *आव॰ ४०*।

-x - x - x -

घ

घंघसालगिहे– घङ्घशालागृहेः। *पिण्ड॰ १०५*।

घंघशाला– शालाविशेषः। *आचा॰ ३०९, ४०२*। *सम॰ ३८*। घङ्घशाला- अनाथमण्डपम्। *ओघ॰ २००*। बृहच्छाला। *आव॰ ६५४*। घट्टनं धर्मकथनं वा तत्राव्यतिरिक्ता बहुकार्प-टिकासेविता वसतिर्घंघशाला। *व्यव॰ २५* अ।

घंटलोह– घंटालोहः-यस्मिन्नेव दिने यत्र लोहे घंटाकृता तल्लोहं तस्मिन्नेव दिने विनष्टम्। *व्यव॰ २०२* अ।

घंटा– सियालो। *बृह॰ ११९* अ। किङ्किण्यपेक्षया किञ्चिन्म-हत्यो घण्टाः। *जीवा॰ १८१*। *जम्बू॰ २३*।

घंटाजालं– किङ्किण्यपेक्षया किञ्चन्महती घण्टा तज्जालम्। *जीवा॰ १८१*।

घंटापासगा– घण्टापार्श्वा-घण्टैकदेशविशेषाः। *जम्बू॰ ५३*।

घंटापासो– घण्टापार्श्वः। *जीवा॰ २०७*।

घंटिआ– घण्टिकाः-घण्टावादकाः। *जम्बू॰ १८२*। घण्टिका-घर्घरिकाः। *जम्बू॰ १०६*।

घंटिकयक्षः– कुलदेवता। *बृह॰ २१५* अ।

घंटिक्करग– स्थालः। *निशी॰ ९१* अ।

घंटिया–घण्टिकाः। *प्रश्न॰ १५९*। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*। क्षुद्रघण्टाः। *जम्बू॰ ५२९*।

घंटियाजाल–घण्टिकाजालं किङ्किणीवृन्दम्। *भग॰ ४७८*।

घंतु– घातुकः-हननशील इति। *उत्त॰ ४३९*।

घंसण– चन्दनस्येव घर्षणम्। *आव॰ २७३*।

घंसिका– अनुरङ्गा यानविशेषः। *बृह॰ १२५* आ।

घंसित्ता– घृष्ट्व। *आव॰ ८३१*।

घंसियगा– घर्षितकाश्चन्दनमिव द्वषदि। *औप॰ ८७*।

घओदए– घृतोदकं-बादरः अप्कायिकविशेषः। *प्रज्ञा॰ २८*।

घटकः– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६*।

घटकारः– स्वविज्ञानप्रकर्षप्राप्तः। *नन्दी॰ १६५*।

घटखर्प्पर – कपालः। *आचा॰ ३११*।

घटना– अप्रात्प्रानां संयमयोगानां प्राप्तये घटना। *भग॰ ८४८*।

घटाभोज्यं– महत्तरानुमहत्तरादिर्बहिरावासितः। *व्यव॰ ३६२* अ।

घटिकालयादीनि– येष्वतिसम्पीडिताङ्गा दुःखमाकृष्यमाणाः-बहिर्निष्क्रामन्ति जन्तवः। *उत्त॰ २४७*।

घट्टइ– सर्वदिक्षु चलति, पदार्थान्तरं वा स्पृशति। *भग॰ १८३*। घट्टते-परस्परं संघट्टमाप्नोति। *जीवा॰ ३०७*।

घट्टए– लिप्तपात्रमसृणताकारकः पाषाणः। *बृह॰ २५३* अ।

घट्टग– घट्टकः येन पाषाणकेन पात्रं नवलेपं मसृणं क्रियते। *ओघ॰ १४४*। पाषाणकः येन पत्रिकं सद् घृष्यते । *ओघ॰ १३०*। घट्टकः। *स्था॰ ३३९*।

घट्टगरइतं– घट्टकेन रचितं-मसृणितं-घृष्टम्। *ओघ॰ १४५*।

घट्टण– घट्टनं खञ्जागतिः। *प्रज्ञा॰ ३२९*। *आव॰ ७९१*। चालकम्। *दशवै॰ १५२*। *पिण्ड॰ १७१*। चलनम्। *ओघ॰ १३६*। आहननम्। *ओघ॰ ५२*। घट्टनं- मिथश्चालनम्। *दशवै॰ २२८*। सजातीत्यादिन चालनम्। *दशवै॰ १५४*। घट्टनानिजालादीनि चलनानि। *ओघ॰ १८१*। *आव॰ ५४०*।

घट्टणया– वङ्कगतेः प्रथमो भेदः। घट्टनता। *प्रज्ञा॰ ३२८*। घट्टनता-अक्ष्णि रजः प्रविष्ठं मर्दित्वा दुःखयितुमारब्धम्, स्वयमेवाक्ष्णि गले वा किञ्चत्सा लुकादि उत्थितं घट्टयति। *आव॰ ४०५*।

घट्टणा– घट्टना-चलनम्। *ओघ॰ २२*।

घट्टनता– अक्षिकणुकादेः। *आचा॰ २५५*।

घट्टना– कदर्थना। *आचा॰ २६३*।

घट्टयंतं– वस्त्वन्तरं स्पृशन्तम्। *स्था॰ ३८५*।

घट्टिओ– घट्टितः-मुद्रितः। *दशवै॰ ९२।*

घट्टित– घट्टितः-प्रेरितः। *प्रश्न॰ ५९।* सुष्ठुतरं परितापितः। *बृह॰ ९१* आ।

घट्टितघट्टनं– घट्टितानि-संबद्धानि घट्टनानि जालादीनि चल-नानि यस्य सः। *आव॰ ५४०, ५४६। ओघ॰ १८१।*

घट्टिय– घट्टितः-सुविहितोपायः। धीवरादिकृत उपायः। *पिण्ड॰ १७१।* घट्टितः-स्पष्टः। *प्रश्न॰ ६०।* परस्परं घर्षयुक्ता। *जम्बू॰ ३७।*

घट्टे– घट्टयति अङ्गुल्या मसृणानि करोति। *ओघ॰ १४३।*

घट्टेइ– घट्टयति स्पृशति। *ओघ॰ २११।* हस्तस्पर्शनेन घट्टय-ति। *ज्ञाता॰ ९६।*

घट्टेउं– घट्टयित्वा-तिरस्कृत्य। *ओघ॰ १९२।*

घट्टं– घृष्टं पाषाणादिना उपरि घर्षिते। *सूर्य॰ २९३। जीवा॰ १६०।*

घट्ठा– घृष्टानीव घृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमावत्। *सम॰ १३८। प्रज्ञा॰ ८७।* घृष्टा इव घृष्टा खरशाणया पाषाणवत्। *जम्बू॰ २०।* येषां-जङ्घे श्लक्ष्णीकरणार्थं फेनादिना घृष्टे भवतस्तेऽवयवावयविनोरभेदोपचारात् धृष्टाः। *अनुयो॰ २६।* घृष्टा इव घृष्टा खरशाणया प्रतिमेव। *औप॰ १०।* घृष्टाजङ्घासु दत्तफेनका। *ओघ॰ ५५।* घृष्टा। *स्था॰ २३२।*

घड– घटकारः-कर्म्मजायां बुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६५।* घटा-समुदायरचना। *भग॰ २१५।*

घडओ– घटः। *आव॰ ४२३।* घटकः। *आव॰ ५५९।*

घटक– घटकः। *अनुयो॰ १५२।*

घडणं– घटनं-अप्राप्तसंयमयोगप्राप्तये यत्नः। *प्रश्न॰ १०९।*

घडण– घटकः-लघुर्घटः। *जम्बू॰ १०१।*

घडणजयणप्पहाणी– घटनं-संयमयोगविषयं चेष्टनं यतनं-तत्रैवोपयुक्ततत्त्वं ताभ्यां प्रधानः-प्रवरः घटनयतनप्रधानः। *उत्त॰ ५२२।*

घडदास– घटदास। *आचा॰ ३८८।*

घडदासी– घटदासी-जलवाहिनी। *सूत्र॰ २४५।*

घडभिंगारो– घटभृङ्गारः-जलपरिपूर्णः कलशभृङ्गारः। *औप॰ ६९।*

घडमुह– घटमुखं, घटकमुखमिव मुखं तुच्छदशनच्छदत्वात्। *भग॰ ३०८।*

घडमुहपवत्तिए– घटमुखेनेव कलशब्दनेनेव प्रवर्त्तितः प्रेरितः घटमुखप्रवर्त्तितः। *सम॰ ८५।*

घडा– गोष्ठी। *बृह॰ १८८* आ। गोट्ठी। *निशी॰ १५६* आ। महत्तरानुमहत्तरादिगोष्ठीपुरुषसमवायलक्षणा। *बृह॰ ९* आ। घटा-समुदायः। *भग॰ ८३।*

घडाविओ– योजितः। *आव॰ ६८८।*

घडिगा– घटिका-मृन्मयकुल्लडिका। *सूत्र॰ ११८।*

घडितव्वं– घटितव्यं-अप्राप्तु योगः कार्यः। *स्था॰ ४४१।*

घडिय– घटितं-संयोगो जातः। *आव॰ ८२४।* कूपितम्। *दशवै॰ ११५।*

घडियनाती– घटितज्ञातिः-दृष्टाभाषितः। *व्यव॰ ८५* अ।

घडियल्लय– घटितः। *आव॰ ४१०।*

घडियव्वं– अप्तानां संयमयोगानां प्राप्तये घटना कार्या। *भग॰ ८४८।* अप्राप्तप्राप्तये घटना कार्या। *ज्ञाता॰ ६०।*

घडीमत्तयं– घटीमात्रकं-घटीसंस्थानं मृन्मयभाजनविशेषः। *बृह॰ २६* आ।

घडेंति– घटयन्ति संयोजयन्ति। *जम्बू॰ ३९४।*

घडेमि– घटयामि। *आव॰ ४२०।*

घणंगुले– घनाङ्गुलम्। *अनुयो॰ १७३।* प्रतरश्च सूच्या गुणितो दैर्घ्येण विष्कम्भतः पिण्डतश्च समसङ्ख्यं घनाङ्गुलम्। *अनुयो॰ १५८।*

घणं– अन्यान्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशतो निबिडा। *जीवा॰ १८७।* घनं-वादित्रविशेषः। *जम्बू॰ ४१२।* घनम्। *आव॰ २०८, ८४८।* घनं-कांस्यतालादि। *जीवा॰ २६६।* निविडा। *ओघ॰ ३०।* निश्छिद्रम्। *ज्ञाता॰ २।* घनं-कंसकादि। *जीवा॰ २४७।* देवविमानविशेषः। *सम॰ ३७।* कोट्ठगपुडगादिगंधा। *निशी॰ १* अ। कलुषः। *बृह॰ १३८* अ। घनः- यस्य राशेर्यो वर्गः स तेन राशिना गुण्यते ततो घनो भवति। *प्रज्ञा॰ २७५।* निविडप्रदेशोपचयः। *सूर्य॰ २८६।* घनाकारं वादित्रम्। *सूर्य॰ २६७।* व्याप्ताः। *प्रज्ञा॰ ३६।* घनः-सङ्ख्यानं यथा द्वयोर्घनोऽष्टौ। *स्था॰ ४९६।* घनः-बहुलत्तरः। *जीवा॰ २०७।* स्त्यानीभूतोदकः पिण्डभूतो वा। *जीवा॰ ९१।* घनं-कांश्यतालादिकम्। *भग॰ २९७। जम्बू॰ १०२।* चतुःषष्टिपदात्मकं तपः घनतपः। *उत्त॰ ६०१।*

घणकडियकडिच्छा– अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद् बहलनिरन्त-रच्छायः। *भग॰ ६२८।*

घणकडियकडिच्छाए– अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद् बहुल निरन्तरच्छायः। *औप॰ ६*।

घणकरणं– घनकरणं-यथायोगं निधत्तिरूपतया निकाचना-रूपतया वा व्यवस्थापनम्। *पिण्ड॰ ४१*।

घणकुड्डा– घनकुड्या-पक्वेष्टकादिमयभित्तिकाः। *बृह॰ ३१०* आ।

घणगणियभावणा– घनगणितभावना। *जीवा॰ ३२५*।

घणघणाइय– घनघनायितः घणघणायितः घणघणायितरूपः। *जम्बू॰ १४४*।

घणदंतदीवे– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६*।

घणदंता– घनदन्तनामा अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

घणदन्तो– घनदन्तः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४*।

घणमुइं– जस्स मुइंगस्स घणसद्दसारित्थो सद्दो सो घणमुइं। *निशी॰ १७१* आ।

घणमुइंग– मेघसदृशध्वनिर्मुरजः। *जम्बू॰ ६३*।

घणमुयंगो– घनमृदङ्गः-घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः। *जीवा॰ २१७*। पटुना पुरुषेण प्रवादितः घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः। *जीवा॰ १६२*।

घणवट्टे– सर्वतः समं घनवृत्तम्। *भग॰ ८६१*।

घणवाए– घनवातः-घनपरिणामो वातो रत्नप्रभापृथिव्याद्य-घोवर्त्ती। *जीवा॰ २९*। घनवातो-घनपरिमाणो रत्नप्रभापृथि-व्याद्यभोवर्त्ती। *प्रज्ञा॰ ३०, ७७*।

घणवाय– घनवातः-अत्यन्तघनः पृथिवाद्याधारतया व्यव-स्थितः हिमपटलकल्पः। *आचा॰ ७४*।

घणवाया– रत्नप्रभाद्यधोवर्तिनां घनोदधिनां विमानानां वाऽऽधारा हिमपटलकल्पा वायवो घनवातः। *उत्त॰ ६९४*।

घणसंताणिया– घनस्तानिका-घनतन्तुका। *ओघ॰ ११८*।

घणसंमद्दे– घनसम्मर्दः-यत्र चन्द्रः सूर्यो वा ग्रहस्य नक्षत्रस्य वा मध्ये गच्छति स योगः। *सूर्य॰ २३३*।

घणोदधिवलए– घनोदधिवलयः-वलयाकारघनोदधिरूपः। *जीवा॰ ९५*।

घत्तह– यतध्वम्। *तन्दु॰*।

घत्तामो– क्षिमापः-दिशो दिशि विकीर्णसैन्यं कुर्म्मः *जम्बू॰ २३३*।

घत्तिय– प्रेरितः। *ओघ॰ १३७*।

घत्तिहामि– यतिष्ये। *विपा॰ ८३*।

घत्तेह– प्रक्षिपत। *जम्बू॰ २४०*।

घत्थं– ग्रस्त-अभिभूतम्। *आव॰ ५८८*।

घत्थे– गृहीताः। *पिण्ड॰ ४७*।

घत्थो– ग्रस्तः। *मरण॰* ।

घन– घनतपः। *उत्त॰ ६०१*। स्त्यानो हिमशिलावत्। *स्था॰ १७७*। वाद्यकशब्दविशेषः। *स्था॰ ६३*। हस्ततालकं साला-दि। *आचा॰ ४१२*।

घनकडियकडच्छाए– कटः सञ्जातोऽस्येति कटितः-कटान्त-रेणोपरि आवृत इत्यर्थः कटितश्चासौ कटश्च कटितकटः घना-निविडा कटिततटस्येवाधो भूमौ छाया घनकटितकटच्छायः। *जीवा॰ १८७*।

घनतपः– षोडशपदात्मकः प्रतरः पदचतुष्टयात्मिकया श्रेण्या गुणितो-घनो भवति, आगतं चतुःषष्ठिः *६४* स्थापना तु पूर्विकैव नवरं बाहल्यतोऽपि पदचतुष्टयात्मकत्वं विशेषः, एतदुपलक्षितं तपो घनतप उच्यते। *उत्त॰ ६०१*।

घनपरिमंडलं– चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं चत्वारिंशत्परमाण्वात्मकं च, तत्र तस्या एव विंशतेरुपरि तथैवान्या विंशतिरवस्थाप्यते। *प्रज्ञा॰ १२*।

घनोदधि– धनः-स्त्यानो हिमशिलावत् उदधिः-जलनिचयः स-चासौ चेति घनोदधिः। *स्था॰ १७७*।

घनोपलः– करकः। *प्रज्ञा॰ २८*।

घम्मपक्कं– धर्मपक्वम्। *विपा॰ ८०*।

घम्मो– घर्मः। *आव॰ ३४९*।

घय– घर्मः। *आव॰ ३४९*।

घय– घृतवरः-क्षीरोदसमुद्रानन्तरं द्वीपः। *प्रज्ञा॰ २०७*। द्वीप-विशेषः। *अनुयो॰ ९०*। घृतं-आज्यम्। *दशवै॰ १८०*। घृतवि-क्रयी, कर्म्मजायां बुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६५*।

घयउरा– घृतपूर्णाः। *उत्त॰ २१०*।

घटकुडो– घृतकुटः-घृतकुम्भः। *आव॰ ३१०*।

घयणं– भाण्डः, औत्पत्तिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १५३*।

घयणो– घृतान्नः। *आव॰ ४१९*। भाण्डः। *बृह॰ २१३*।

घयपुण्णो– घृतपूर्णाः। *उत्त॰ २०९*।

घयमंडो– घृतमण्डः-घृतसारः। *जीवा॰ ३५४*।

घयमेहे– घृतवत् स्निग्धो मेघो घृतमेघः। *जम्बू॰ १७४*।

घयवरो– घृतवरः द्वीपविशेषः, घृतोदकवाप्यादियोगाद् घृतवर्णदेवस्वामीकत्वाच्च द्वीपः। *जीवा॰ ३५४*।

घयविक्किणओ– घृतविक्रायकः। *आव॰ ४२७*।
घरंतरं– घरंतरा उपरेण जंतं घरंतरं। *निशी॰ १८७*।
घर– गृहाणि सामान्यजनानां सामान्यानि वा। *अनुयो॰ १५९*। गृहम्। *आव॰ ५८१, ८४५*। गृहं-सामान्यम्। *प्रश्न॰ ८*।
घरओ– गृहम्। *आव॰ ३९१*।
घरकुटीए– बहिरवस्थितं घनकादि, अथवा तत्कलहिकान्त-र्गतकुट्यां वा निवसति। *आव॰ ५७*।
घरकोइल– गृहगोधिका। *पिण्ड॰ १०३*।
घरकोइलओ– गृहकोकिलः-गृहगोधा। *आव॰ ३८९*।
घरकोइलिआ– गृहकोकिलिका-घरोलिका। *ओघ॰ १२६*।
घरकोइलिया– गिहिकोइला। *निशी॰ १८२* आ। गृह-कोकिला-गृहगोधिका। *आव॰ ७११*।
घरकोइलो– गृहकोकिला। *आव॰ ६४१*।
घरघरओ– घरघरकः-कण्ठाभरणविशेषः। *जम्बू॰ ५२९*।
घरचिडओ– चटकः। *निशी॰ ३३* आ।
घरछाइणिया– गृहच्छादनिका। *उत्त॰ १४७*।
घरछादणिया– गृहच्छादनिका। *आव॰ ३४३*।
घरजामाउ– गृहजामाता। *ज्ञाता॰ २०१*।
घरट्ट– घंटी, यन्त्रविशेषः। *ओघ॰ १६५*। भ्रमणकल्पम्। *दशवै॰ ११४*।
घरणी– गृहिणी। *आव॰ २२४*।
घरवइ– गृहाणां वृतिः। *बृह॰ १८४* अ।
घरवगडा– गृहवगडा-गृहवृतिपरिक्षेपः। *बृह॰ ३०९* आ।
घरसमुदाणिया– गृहसमुदानं-प्रतिग्रहम्। *औप॰ १०६*।
घरा– गृहाणि सामान्यतः *जम्बू॰ १०७*। गृहाणिप्रसादाः। *दशवै॰ १९३*। गृहाणि सामान्यजनानां सामान्यं वा। *भग॰ २३८*।
घरास– घरावासो। *निशी॰ २०५* आ। गृहवासः। *बृह॰ २०७* अ।
घरोइला– भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।
घरोलिका– गृहकोकिलिका। *ओघ॰ १२६*।
घरोलिया– भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः। *जीवा॰ ४०*।
घर्मा– आद्यभूमिः। *आव॰ ६००*।
घसा– जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो सलइ सा। *दशवै॰ १०२*। शुषिरभूमिः। *दशवै॰ २०५*।
घसिरं– ग्रसिता-बहुलक्षी। *बृह॰ २४८* अ।
घसिरो– बहुभक्खगो। *ओघ॰ ९८*। *निशी॰ २०१* अ।
घसो– भूराजिः। *जीवा॰ २८२*। स्थलादधस्तादवतरणम्। *आचा॰ ३३८*।
घाए– घातः-गमनम्। *सूर्य॰ ८, ४९*।
घाओ– घाताः-प्रमाराः। *ज्ञाता॰ ६९*। संपीडनम्। *ओघ॰ १३६*।
घाड– घाटः-मस्तकाययवविशेषः। पुरुषादिवधः। *ज्ञाता॰ १३८*।
घाडामुह– घाटामुखं-शिरोदेवविषयः। *भग॰ ३०८*। घाटा-मुखं-कृकाटिकावदनम्। *जम्बू॰ १७०*।
घाडिए– मित्रम्। *निशी॰ ७८* अ।
घाडिय– सहचारी। *ज्ञाता॰ ८९*। मित्रम्। *निशी॰ १२७*।
घाणं– तिलपीडनयन्त्रम्। *पिण्ड॰ १७*। घ्राणं-गन्धः। *प्रज्ञा॰ ६०१*। घ्राणो-गन्धो गन्धोपलम्भक्रिया वा। गन्धगुणः। *भग॰ ७५३*।
घाणामाड– घ्राणमयात्। *स्था॰ ३६९*।
घाणिंदिए– घ्राणेन्द्रियम्। प्रणा॰ २९३।
घात– हन्यन्ते प्राणिनः स्वकृतकर्मविपाकेन यस्मिन् घातः-नरकः। *सूत्र॰ १२८*।
घातिकर्म– वेदनीयादिकर्म। *प्रज्ञा॰ ५६५*।
घातो– घातः-देशतो घातनम्। *प्रश्न॰ १३७*।
घाय– घात्यन्ते-व्यापाद्यन्ते नानाविधैः प्रकारैर्यस्मिन् प्राणिनः स घातः-संसारः। *सूत्र॰ १६१*।
घायए– चातकः-योऽन्येन घातयति। *जम्बू॰ १२३*।
घायओ– घातकः-योऽन्येन घातयति। *जीवा॰ २८०*।
घायणा– घातना-प्राणवधस्य षष्ठः पर्यायः। *प्रश्न॰ ५*।
घालती– गृहीतभाण्डाः। *निर॰ २५*।
घास– ग्रासम्-आहारम्। *उत्त॰ ६०६*। ग्रासम्। *उत्त॰ २९४*। घासाः-बृहत्यो भूमिराजयः। *आचा॰ ४११*। ग्रस्यत इति ग्रासः-आहारः। *सूत्र॰ ४९*। *औप॰ ३८*।
घिंसिसिखासे– ग्रीष्मकाले, शिशिरकाले, वर्षाकाले। *ओघ॰ २०५*।
घिंसु– ग्रीष्मे। *उत्त॰ १२३*।
घिणा– घृणा-पापजुगुप्सालक्षणा। *प्रश्न॰ ५*। *आव॰ २५१*।
घिणीअण्णो– जीवदयालु। *निशी॰ १२०* अ।
घीरोलिय– गृहकोकिलिकाः-गृहगोधिकाः। *प्रश्न॰ ८*।
घुंटकः– गुल्फः। *प्रश्न॰ ८०*।

घुंटिउ– पीत्वा। *तन्दु॰* ।
घुट्टंति– पिबन्ति। *नन्दी॰ ६३।*
घुट्टग– घुट्टकः-लेपितपात्रमसृकारकः पाषाणः। *पिण्ड॰ ९।*
घुणः– काष्ठनिश्रितो जीवविशेषः। *आचा॰ ५५।*
घुणकीटकः– सचित्ताचित्तवनस्पतिशरीरेऽपि कीटविशेषः। *सूत्र॰ ३५७।*
घुणक्खर– घुणाक्षरः-न्यायविशेषः। *दशवै॰ १११।*
घुणखइयं– घुणखादितं-कालवासः। *आव॰ ६५६।*
घुणाक्षरकरणं– न्यायविशेषः। *दशवै॰ १५८।*
घुणितं– घुणाणं आवासो घुणितं काष्टमित्यर्थः। *निशी॰ २५५* आ।
घरघरायमाणं– अन्तर्नदन्तं-गलमध्ये रवं कुर्वन्तम्। *सम॰ ५२।*
घुलति– भ्राम्यति। *उत्त॰ १५०।*
घुल्ला– घुल्लिका। *जीवा॰ ३१।* घुल्लाः-घुल्लिकाः द्वीन्द्रिय-जीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१।*
घूय– घूकः-कौशिकः। *ज्ञाता॰ १३८।*
घूरा– जङ्घा खलका वा। *सूत्र॰ ३२४।*
घृत– स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत्। *प्रज्ञा॰ १०।*
घृतपूपः– घृतनिष्पन्नः पूपः। *आव॰ ४५८।*
घृतपूर्ण– सुपक्ववस्तुविशेषः। *उत्त॰ ६१।* अशनम्। *आव॰ ८११।*
घृतोदः– घृतवरद्वीपानन्तरं समुद्रः। *प्रज्ञा॰ ३०७।* घृतरसा-स्वादः समुद्रः। *अनुयो॰ ९०।*
घेच्चिओ– पिट्टितः। *आव॰ २०६।*
घेच्छति– ग्रहीष्यति। *आव॰ २३४।*
घेत्थिहि– ग्रहीष्यति। *आव॰ २९३।*
घोच्छामो– गर्हिताः स्म। *आव॰ ९०।*
घोड– घोटकः। *गच्छा॰* । घोटा डं(डिं)गराः। *व्यव॰ २३३।*
घोडए– घोटकः-अश्वः। *प्रज्ञा॰ २५२।*
घोडओ– घोटकः। सामान्योऽश्वः। *जीवा॰ २८२।*
घोडगा– एकखुरचतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।*
घोडगो– घोटकः-अश्वः। आसुव्व विसमपायं गायं ठावित्तु ठाइ उस्सगे। *आव॰ ७८९।* बलीवर्दः। *निशी॰ ३७* आ।
घोडमादी– असंखंडीदोषविशेषः। *निशी॰ ३३२* अ।
घोडयगीवो– घोटकग्रीवः। *आव॰ १७६।*
घोडा– घोट्टा-चट्टा जूअकारादिधुत्ता। *निशी॰ २०७* आ। चट्टा। *बृह॰ ९९* आ। *बृह॰ ३११* अ। *बृह॰ ३०* आ।
घोडो– घोटः-एकखुरचतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८।*
घोण– नासा। *प्रश्न॰ ८२।*
घोणसो– सर्पः। *आव॰ ४२६।*
घोणा– नासिका। *जम्बू॰ २३६।*
घोर– घोरः-अतिनिर्घृणः, परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमा-श्रित्य निर्दयः, आत्मनिरपेक्षः। *भग॰ १२।* घोरः-निर्घृणः परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमधिकृत्य निर्दयः, अन्यैर्दुरनु-चरो वा। *सूर्य॰ ५।* घूर्णयतीति घोरः-निरनुकम्पः। *उत्त॰ २१७।* प्राणसंशयरूपम्। *आचा॰ १९४।* आत्मनिरपेक्षम्। *स्था॰ २३३।* घोरं-हिंस्त्रा। *भग॰ १७५।* रौद्रम्। *दशवै॰ १९७।* घोरो-निर्घृणः परिषहेन्द्रियकषायाख्यानां रिपूणां विनाशे कर्त्तव्ये। अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरम्। *ज्ञाता॰ ८।*
घोरगत्त– घोरगात्रम्। *उत्त॰ ३०३।*
घोरगुणे– घोराः-अन्यैर्दुरनुचरा गुणा ज्ञानादयो यस्स स। *सूर्य॰ ४।* अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य सः। *भग॰ १२।*
घोरतवस्सी– घोरतपस्वी-घौरैस्तपोभिस्तपस्वी। *भग॰ १२।* *सूर्य॰ ४।*
घोरपरक्कमो– घोरपराक्रमः-कषायादिजयं प्रति रौद्रसामर्थ्यः। *उत्त॰ ३६५।*
घोरबंभचेरवासी– घोर-दारूणं अल्पसत्वैर्दुरनुचरत्वात् ब्रह्मचर्यं यत्तत्र वस्तु शीलं यस्य सा घोरब्रह्मचर्यवासी। *सूर्य॰ ३।* *भग॰ १२।*
घोरमहाविसदाहो– घोरा-रौद्रा महाविषा-प्रधानविषयुक्ता। दंष्ट्रा-आस्यो यस्य स घोरमहाविषदंष्ट्रः। *आव॰ ५६६।*
घोरविसं– परम्परया पुरुषसहस्रस्यापि हननसमर्थविषम्। *भग॰ ६७२।*
घोरव्वओ– घोरव्रतः-घृतात्यन्तदुर्धरमहाव्रतः। *उत्त॰ ३६५।*
घोरा– झगिति जीवितक्षयकारिणी औदारिकवतां, परिजीवि-तानपेक्षा वा। *प्रश्न॰ १७।*
घोरासमं– घोराश्रमः-गार्हस्थ्यम्। *उत्त॰ ३१५।*
घोलण– घोलनं-अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसञ्चाल्यमानयूकाया इव। *आव॰*

२७३।

घोलिओ– घूर्णितः। *आव॰ ३०३*।

घोलिययया– घोलितका दधिघट इव पट इव वा। *औप॰ ८७*।

घोषविशुद्धिकरणता– उदात्तानुदात्तादिस्वरशुद्धिविधायिता। *उत्त॰ ३९*।

घोषातकी- कटुकवल्ली विशेषः। *नन्दी॰ ७७*।

घोसं– नर्दितम्। *ज्ञाता॰ १६१*। देवविमानविशेषः। *सम॰ १२, १७*। *ज्ञाता॰ २५१*। गोउलं। *निशी॰ ७०* आ। घोषः-गोकुलम् *उत्त॰ ६०५*। *बृह॰ १८१* आ। *बृह॰ १८३* अ। घोषः-शब्दः। *उपा॰ २५*। उदत्तादिः। *भग॰ १७*। घोषः-अनुनादः। *जम्बू॰ ११७*। गोष्ठः। *स्था॰ ८५*।

घोषः– दशमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। *भग॰ १५७*। *जीवा॰ १७०*। स्तनितकुमाराणामधिपतिः। *प्रज्ञा॰ ९४*। निनादः। *जीवा॰ २०७*।

घोसगसद्दो– घोषकशब्दः। *आव॰ ४२४*।

घोसण– घोषणं। *आव॰ ११५*।

घोसवई– घोषवती सेनाविशेषः। *आव॰ ५१४*।

घोसवती– घोषवती-प्रद्योतराज्ञो वीणा। *आव॰ ६७४*।

घोससमं– घोषा-उदात्तादयस्तैर्वाचनाचार्याभिहितघोषैः समं-घोषसमम्। *अनुयो॰ १५*।

घोसा– निनादः। *जम्बू॰ ५३*।

घोसाइ– घोषा-गोष्ठानि। *स्था॰ ८६*।

घोसाडइ– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

घोसाडए– घोषातकी। *प्रज्ञा॰ ६३४*।

घोसाडयं– घोषातकम्। *प्रज्ञा॰ ३७*।

घोसाडिफलं– घोषातकीफलम्। *प्रज्ञा॰ ३६४*।

घोसाडियाकुसुमं– घोषातकीकुसुमम्। *जम्बू॰ ३४*। *जीवा॰ १९१*।

घोसेह– घोषयत-करुत। *ज्ञाता॰ १०३*।

घ्राणं– पोथः। *जम्बू॰ २३७*।

- x- x - x -

च

चंकमंत– चङ्क्रममाणः। *ज्ञाता॰ २२१*।

चंकमणं– चङ्क्रमणं-गमनम्। *आव॰ ५२९*।

चंकमणगं– प्रचङ्क्रमणकं-भ्रमणम्। *ज्ञाता॰ ४१*।

चंकमणिया– चङ्क्रमणिका-गतागतादिका। *आव॰ ५५८*।

चंगबेरे– चङ्गबेरा-काष्ठपात्री। *दशवै॰ २१८*।

चंगिकं– औदारिकम्। *ओघ॰ ९०*।

चंगेरी– चङ्गेरी-ग्रथितपुष्पसशिखाकरूपा। *प्रज्ञा॰ ५४२*। महतीकाष्ठापात्री बृहत्पट्टलिका वा। *प्रश्न॰ ८*।

चंगोडए– नाणककोष्ठागारम्। *बृह॰ ९३* आ।

चंचरिकः– भ्रमरः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

चंचलायमाणं– चञ्चलायमानं सौदामिनीयमानं कान्तिझा-त्कारेणेत्यर्थः। *जम्बू॰ २०२*।

चंचले– चञ्चलः-अनवस्थितचेतः। *प्रज्ञा॰ ९६*। विमुक्त-स्थैर्यम्। *ज्ञाता॰ १३८*।

चंचा– सप्तमदशा। *निशी॰ २८* आ।

चंचु– चञ्चुः-शुकचञ्जुः। *जम्बू॰ ३६५*।

चंचुच्चियं– चञ्चुरितं-कुटिलगमनं, अथवा चञ्चुः-शुकचञ्चुस्त-द्वद्वक्रतयेत्यर्थः, उच्चितं-उच्चिताकरणं-पादस्योत्पादनं चंचुच्चितम्। *जम्बू॰ २६५*। चञ्चुरितं-कुटिलगमनम्। शुक-चञ्चुस्तद्वद्वक्रतयेत्यर्थः, उच्चितं-उच्चताकरणं पादस्य उच्चितं वा-उत्पाटनं पादस्यैवं चञ्चूच्चितम्। *औप॰ ७०*। *जम्बू॰ ५३०*। चञ्चुरितं-कुटिलगमनम्। चञ्चुः-शुकचञ्चु-स्तद्वद्वक्रतया उच्चितं-उच्चताकरणं पादस्योत्पाटनं वा (शुक) पादस्येवेतिचञ्चूच्चितम्। *भग॰ ४८०*।

चंचुमालइय– पुलकिता। *भग॰ ५४१*। पुलकितः। *औप॰ २४*।

चंड– रौद्रः। *भग॰ ४८४*। चण्डः-कोपनः परुषभाषी वा। *उत्त॰ ४९*। चण्डः-चारभटवृत्त्याश्रयणतः। *उत्त॰ ४३४*। क्रोधः। *भक्त॰*। चण्डं-झगिति व्यापकत्वात्। *ज्ञाता॰ १६२*। चण्डारौद्रा। *भग॰ १६७, २३१, ४२७*। चण्डत्वं संरम्भा-रब्धत्वात्। *ज्ञाता॰ ९९*। चण्डः उत्कटरोषत्वात्। *ज्ञाता॰ २३८*।

चंडकोसिओ– चण्डकौशिकः। *आव॰ १९६*। प्रद्वेषे सर्प-विशेषः। *आव॰ ४०५*। चंडकौशिकः-येन कर्म्मणां क्षये कृतेऽवाप्तं सामायिकम्। *आव॰ ३४७*। दृष्टिविषसर्पविशेषः। *आचा॰ २५५*। *नन्दी॰ १६७*।

चंडगं– समूहः। *आव॰ ६७१*।

चंडतिव्व– चण्डतीव्रः अत्यर्थतीव्रः। *ज्ञाता॰ १६२*।

चंडपिंगल– मोहान्निदानकृत्। *भक्त॰*। चण्डपिङ्गलः-अर्थोदा-हरणे चोरः। *आव॰ ४५२*।

चंडप्रद्योतः– उज्जयिन्यधिपतिः। *नन्दी॰ १६६*। *प्रश्न॰ ९०*।

चंडमेहो– चण्डभेघः-अश्वग्रीवराज्ञो दूतः। *आव॰ १७४*।
चंडरुद्दो– चण्डरुद्रः-कायदण्डोदाहरणे उज्जयिन्यामाचार्यः। *आव॰ ५७७*। चण्डरुद्रः-परुषवचने उदाहरणम्। *बृह॰ २१८ अ*। साधुविशेषः। *ओघ॰ ३८*।
चंडरुद्राचार्यः– खरपरुषवचने दृष्टान्तः। *व्यव॰ ११८ अ*।
चंडवडंसओ– चन्द्रावतंसकः-साकेतनगरे राजा, यो माघमासे प्रतिमयास्थितः सन् कालगतः। *आव॰ ३६६*।
चंडवडिंसओ– चन्द्रावतंसकः-कोशलदेशे साकेतनगरे नृपतिः। *उत्त॰ ३७५*।
चंडविसं– दष्टकनरकायस्य झगिति व्यापकविषम्। *भग॰ ६७२*।
चंडा– वेगवती-झटित्येव मूर्च्छोत्पादिका। *स्था॰ ४६१*। चण्डा-चमरासुरेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत्। *जीवा॰ १६४*। चमरस्य द्वितीया पर्षत्, तथाविधमहत्त्वाभावेनेषत्कोपादिभा-वाच्चण्डा। *भग॰ २०२*। चण्डौ क्रोधनत्वात्। *ज्ञाता॰ ९९*। *स्था॰ १२७*। चण्डा-शक्रदेवेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत्। *जीवा॰ ३९०*।
चंडाए– चण्डया-रौद्रयाऽत्युत्कर्षयोगेन। *ज्ञाता॰ ३६*।
चंडाल– चाण्डालः-ब्रह्मस्त्रीशूद्राभ्यां जातः। *आचा॰ ८*।
चंडालरूवे– चण्डालस्येव रूपं-स्वभावः यस्य सः। *ज्ञाता॰ ८०*।
चंडालियं– चण्डेनाऽऽलमस्य चण्डेन वा कलितश्चण्डालः, स चातिक्रूरत्वाच्चण्डालजातिस्तस्मिन् भवं चाण्डालिकम्। *उत्त॰ ४७*। चण्डः-क्रोधस्तद्वशादलीकं-अनृतभाषणं चण्डालिकम्। *उत्त॰ ३७*।
चंडिक्कं– चाण्डिक्यं-रौद्ररूपत्वम्। प्रश्न॰ १२०। चाण्डिक्यम्। *सम॰ ७१*।
चंडिक्किए– चाण्डिकितः-सञ्जातचाण्डिक्यः प्रकटितरौद्ररूपः। *भग॰ ३२२*। *ज्ञाता॰ ६८*। चाण्डिक्यः-रौद्ररूपः। *जम्बू॰ २०२*। चाण्डिक्यितः-दारूणीभूतः। *विपा॰ ५३*।
चंडिक्किय– प्रकटितरौद्ररूपः। *भग॰ १६७*।
चंडी– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।
चंडीदेवगा– चण्डीदेवकाः-चक्रधरप्रायाः। *सूत्र॰ १५४*।
चंद– तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *निर॰ २१*। चन्द्रः। *निर॰ ३६*। धर्मकथाश्रुतस्कन्धेऽष्टमवर्गे देवः। *ज्ञाता॰ २५३*। *स्था॰ ३४४*। चन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ३६१*। चान्द्रः-प्रथमो द्वितीयश्चतुर्थश्च युगसंवत्सरः। *सूर्य॰ १५४*। चन्द्रोवक्षस्कार-पर्वतः। *जम्बू॰ ३५७*। चन्द्रः-चन्द्राकारमर्द्धदलम्। *प्रज्ञा॰ ४११*। देवविशेषः। *जीवा॰ २९२*। द्वीपविशेषः। *जीवा॰ ३१७*। देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।
चंदऊडू– चन्द्रर्तुः। *सूर्य॰ २०९*।
चंदकंतं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।
चंदकंता– द्वितीकुलकरस्य भार्या। *सम॰ १५०*। *आव॰ १२*। *स्था॰ ३९८*।
चंदकूडं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।
चंदग– चन्द्रकः चक्राष्टकोपरिवर्त्तिपुत्तलिकायामाक्षिगोलकः। *बृह॰ १०० अ*।
चंदगविज्झं– राधावेधोपमम्। आउ ०।
चंदगविज्झयं– चन्द्रावेध्यकं-प्रकीर्णकविशेषः। *आव॰ ७४०*।
चंदगवेज्झं– चक्राष्टसुपरिपुतलिकाक्षिचंडिकावेधयत्। *निशी॰ १७ आ*।
चंदगवेज्झो– चन्द्रकवेधः। *ओघ॰ २२७*।
चंदगुत्त– चन्द्रगुप्तः। *दशवै॰ ९१*। *नन्दी॰ १६७*। विमर्शदृष्टान्ते राजा। *आव॰ ४०५*। प्रशंसाविषये पाटलीपुत्रराजा। *आव॰ ८१८*। चूर्णद्वारविवरणे कुसुमपरे राजा। *पिण्ड॰ १४२*। *निशी॰ ६ अ*। बिन्दुसारपिता। *बृह॰ ४७ अ*। *निशी॰ २४३ अ*। पाडलिपूत्ते राया। *निशी॰ १०२ अ*। *बृह॰ ४७ अ*। अशोकस्य पितामहः। *बृह॰ १५४ अ*।
चंदगोमी– चन्द्रगोमी-व्याकरणकर्त्ता कोऽपि। *सूर्य॰ २९२*।
चंदघोसे– चन्द्रघोषः-चन्द्रध्वजः संवेगोदाहरणे आरक्षुराभि-धप्रत्यन्तनगरे मित्रप्रभमनुष्यः। *आव॰ ७०९*।
चंदच्छाए– चन्द्रच्छायः। *ज्ञाता॰ १२४, १३२*।
चंदच्छाये– चन्द्रच्छायः-अङ्गजनपदराजश्चम्पानिवासी। *स्था॰ ४०१*।
चंदजसा– चन्द्रयशाः कुलकरपत्नी। *आव॰ ११२*। संवेगोदा-हरणे चन्द्रध्वजभगिनी। *आव॰ ७०९*। विमलवाहनकुलकरस्य भार्या। *सम॰ १५०*। *स्था॰ ३९८*।
चंदज्झयं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।
चंदण– चंदणं मलयजम्। *प्रश्न॰ १६२*। चन्दनं-उपकारकम्। *प्रश्न॰ १५७*। *भग॰ ८०३*। चन्दनः-

मणिभेदः। *उत्त॰ ६८९*। द्रव्यविशेषः। *निशी॰ २७६* आ।

चंदणकंथा– चन्दनकन्था-गोशीर्षचन्दनमयी भेरी। *आव॰ ९६*।

चंदणकयचच्चागा– चंदनकृतचर्चाकः-चन्दनकृतोपरागः। *जीवा॰ २०५*।

चंदणकलसा– चन्दनकलशाः-मांगल्यघटाः। *जम्बू॰ ४९, ४२०*। *औप॰ ५*। *जीवा॰ २०५*। चन्दनकलशाः-माङ्गल्य-कलशाः। *प्रज्ञा॰ ८६*। *जीवा॰ १६०*।

चंदणग– चन्दनकः-अक्षः। *प्रश्न॰ २४*।

चंदणघडो– चन्दनघटः-चन्दनकलशः। *जीवा॰ २२७*।

चंदणज्जा– महावीरस्वामिनः प्रथमशिष्या। *सम॰ १५२*।

चंदणथिग्गलिया– चन्दनथिग्गलिका। *आव॰ ९८*।

चंदणपायवे– चन्दपादपः-मृगग्रामनगरे उद्यानविशेषः। *विपा॰ ३५*।

चंदणपुड– गन्धद्रव्यविशेषः। *ज्ञाता॰ २३२*।

चंदणा– चन्दनकाः-अक्षाः। *उत्त॰ ६९४*। चन्दना-शीलच-न्दनाया द्वितीयं नाम। *आव॰ २२५*। चन्दनकाः-अक्षाः, द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

चंदणि– वर्चोगृहम्। *आव॰ ६८१*।

चंदणिउदय– आचमनोदकप्रवाहभूमिः। *आचा॰ ३४१*।

चंदणिका– चन्दनिका-वर्चोगृहम्। *उत्त॰ १०६*।

चंदणिया– वर्चोगृहम्। *आव॰ ३५८, ६९६*।

चंदणो– चन्दनकः-अक्षः, द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *जीवा॰ ३१*।

चंददहे– द्रहविशेषः। *स्था॰ ३२६*।

चंददिण– चन्द्रदिनं-प्रतिपदादिका तिथिः। *सम॰ ५०*।

चंददीवो– चन्द्रद्वीपः-जन्बूद्वीपसत्कचन्द्रस्य द्वीपः। *जीवा॰ ३१७*।

चंददह– चन्द्रह्रदः, चन्द्रह्रदाकाराणि चन्द्रह्रदवर्णानि चन्द्रश्चात्र देवः स्वामीति चन्द्रह्रदः। *जम्बू॰ ३३०*।

चंददं– चन्द्रार्द्धं-अष्टमीचन्द्रः। *जीवा॰ २०७*।

चंदन– चंदन-मणिविशेषः। *जीवा॰ २३*। काष्ठविशेषः। *जीवा॰ १३६*। गन्धद्रव्यविशेषः। *जीवा॰ १९१*।

चंदनकं– अक्षम्। *ओघ॰ १३५*।

चंदनघड– चन्दनघटः, चन्दनकलशः। *प्रज्ञा॰ ८६*।

चंदपडिमा– चन्द्राकारा प्रतिमा चन्द्रपतिमा। *व्यव॰ ३५६*।

चंदपरिवेस– चन्द्रपरिवेषः-चन्द्रसमन्ताज्जायमानः कुण्डला-कारस्तेजः परिधि। *भग॰ १९५*।

चंदपरिवेसो– चन्द्रस्य परितो वलयाकारपरिणतिरूपः। *जीवा॰ २८३*।

चंदपव्वत– वक्षस्कारपर्वतविशेषः। *स्था॰ ३२६, ८०*।

चंदपुत्तो– चन्द्रपुत्रः। *आव॰ ३९७*।

चंदप्पभ– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*। मथुरायां गाथापती। *ज्ञाता॰ २५३*। चन्द्रप्रभा-सुराविशेषः। *आव॰ ६९५*। शीत-लनाथजिनस्य शिबिकानाम। *सम॰ १५१*। चन्द्रकान्तः। *जम्बू॰ ५१*। *जीवा॰ २३४*। चन्द्रप्रभः। *प्रज्ञा॰ २७*। चन्द्रप्रभः-एकोरुकद्वीपे द्रुमविशेषः। *जीवा॰ १४६*। चन्द्रकान्तः। मथु-रानगर्यां भिण्डवडेंसकोद्याने गाथापती। *ज्ञाता॰ २५३*। धर्मकथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे देवीचन्द्रप्रभाया सिंहासनम्। *ज्ञाता॰ २५३*।

चंदप्पभा– चन्द्रस्येवप्रभा-आकारो यस्याः सा चन्द्रप्रभा सुराविशेषः। *जीवा॰ ३५१*। *जम्बू॰ १००*। चन्द्रस्य ज्यो-तिषेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *जीवा॰ ३८४*। चन्द्रस्येव प्रभा-आकारो यस्याः सा चन्द्रप्रभा मद्यविधिविशेषः। *जीवा॰ २६५*। चन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। *जम्बू॰ ५३२*। शिबिकाविशेषः। *आव॰ १८४*। *भग॰ ५०५*। चन्द्र-प्रभा-चन्द्रस्येव प्रभा-आकारो यस्याः सा। *प्रज्ञा॰ ३६४*। वर्धमानजिनस्य शिबिकानाम। *सम॰ १५१*। चन्द्रस्येव प्रभा-आकारो यस्याः सा चन्द्रप्रभा। *जम्बू॰ १००*। धर्मकथायाः अष्टमाध्ययने प्रथममध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२, २५३*। मथुरानगर्यां चंद्रप्रभगाथापतेर्दारिका। *ज्ञाता॰ २५३*। धर्म-कथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे प्रथमाध्ययने देवी। *ज्ञाता॰ २५३*।

चंदप्पह– चन्द्रप्रभः-मणिभेदः। *उत्त॰ ६९८*। पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*। चन्द्रस्येव प्रभा-ज्योत्स्ना सौम्याऽस्येति, अष्टमजिनः, यस्मिन् गर्भगते देव्याश्चन्द्रपाने दोहदः चन्द्रसदृ-शवर्णश्च तेन चन्द्रप्रभः। *आव॰ ५०३*।

चंदमग्गा– चन्द्रमार्गाः-चन्द्रमण्डलानि। *सूर्य॰ ९*। चन्द्रस्य मार्गाः-चन्द्रस्य मण्डलगत्या परिभ्रमणरूपा मण्डलरूपा वा मार्गा आख्याता इति चन्द्रमार्गाः। *सूर्य॰ १३७*।

चंदमसं– चान्द्रमसं-सौम्यापरनाम, मृगशिरोदेवता। *जम्बू॰ ४९९*।

चंदलेसं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदलेहिकं– आभरणविशेषः। *निशी॰ २५५* अ।

चंदवडिंसयं– चन्द्रावतंसकं-चन्द्रविमानम्। *जम्बू॰ ५३३*।

चंदवडिंसो– नियमस्थिरो नृपः। *मरण॰*।

चंदवण्णं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदसंवच्छर– चन्द्रसंवत्सरः 'ससिसमगे' त्यादिलक्षणगाथा। *सूर्य॰ १६८, १७१*।

चंदशाला– चन्द्रशाला। *आव॰ १२३*।

चंदसालिआ– चन्द्रशालिका-शिरोगृहम्। *जम्बू॰ १०७*।

चंदसालिय– चन्द्रशालिका-प्रासादोपरितनशाला। *प्रश्न॰ ८*।

चंदसालिया– चन्द्रशालिका। शिरोगृहम्। *जीवा॰ २६९*।

चंदसिगं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदसिट्ठं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदसिरी– भथुरानगर्यां चन्द्रप्रभगाथापतेर्भार्या। *ज्ञाता॰ २५३*।

चंदसूरदंसणं– चन्द्रसूरदर्शनं। अन्वर्थानुसारी तृतीयदिवसो-त्सवः। *विपा॰ ५१*।

चंदसूरदंसणिय– चन्द्रसूर्यदर्शनं-उत्सवविशेषः। *ज्ञाता॰ ४१*। चन्द्रसूर्यदर्शनिकाभिधानं सुतजन्मोत्सवविशेषः। *औप॰ १०२*।

चंदसूरपरिवेसा– चन्द्रादित्ययोः परितो वलयाकारपुद्गल-परिणतिरूपाः सुप्रतीता। *अनुयो॰ १२१*।

चंदसूरोवरागा– चन्द्रसूर्योपरागाः-राहुग्रहणानि। *अनुयो॰ १२१*।

चंदा– चन्द्रः-चन्द्रमाः सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्ती देवः। *भग॰ १९५*। चन्द्राः-चन्द्रराजधानी। जंबू॰ ५३३। चन्द्राः-ज्योतिष्कभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९*।

चंदाणण– जम्बूद्वीपे ऐरावतक्षेत्रे प्रथमो जिनः। *सम॰ १५३*। चन्द्राननं-चन्द्रप्रभजन्मभूमिः। *आव॰ १६०*।

चंदाणणा– शश्वती प्रतिमानाम। *स्था॰ २३०*। चन्द्राननाच-न्द्राननप्रतिमा। *जीवा॰ २२८*।

चंदाभ– देवविमानविशेषः। *सम॰ १४*। चन्द्राभः-कुलकर-नाम। *जम्बू॰ १३२*। पञ्चमं लोकान्तिकविमानम्। *भग॰ २७१*। *स्था॰ ४३२*।

चंदायण– चान्द्रायणः-अभिग्रहविशेषः। *व्यव॰ ३३४* आ।

चंदालगं– चन्दालकं-देवतार्चनिकाद्यर्थं ताम्रमयं भाजनम्। *सूत्र॰ ११८*।

चंदावत्तं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदावली– चन्द्रावली-तडाकादिषु जलमध्यप्रतिबिम्बितचन्द्र-पङ्क्ति। *जीवा॰ १९१*। तटागादिषु जलमध्ये प्रतिबिम्बिता चन्द्रपङ्क्तिः। *जम्बू॰ ३५*।

चंदिमा– चन्द्रमा-ज्ञातायां दशममध्ययनम्। *सम॰ ३६*। *उत्त॰ ६९४*। *ज्ञाता॰ १०*। *आव॰ ६५३*। अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य षष्ठमध्ययनम्। *अनुत्त॰ २*।

चंदुत्तरवडिंसगं– देवविमानविशेषः। *सम॰ ८*।

चंदोत्तरणं– कोशाम्ब्यामुद्यानविशेषः। *विपा॰ ६८*।

चंदोदयं– चन्द्रोदयं-चन्द्राननापुर्यां चन्द्रावतंसराज्ञ उद्यानम्। *पिण्ड॰ ७६*।

चंदोयरणंसि– उद्दंडपुरनगरे चैत्यविशेषः। *भग॰ ६७५*।

चंदोवतरणे– कौशाम्बीनगर्यां चैत्यविशेषः। *भग॰ ५५६*।

चंदोवराग– चन्द्रोपरागः-चन्द्रग्रहणम्। *जीवा॰ २८३*। *भग॰ १९६*।

चंदोवराते– चन्द्रस्य-चन्द्रविमानस्योपरागो-राहुविमानतेज-सोपरञ्जनं चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थः। *स्था॰ ४७६*।

चंपं– चम्पा-यत्र वासुपूज्यस्वामिपादमूले तरुणधर्मा पद्मरथो राजा प्रव्रजितुं गतः। *आव॰ ३९१*। नगरीविशेषः। *आव॰ २१३, २२५*।

चंपकच्छल्ली– सुवर्णचम्पकत्वक्। *जीवा॰ १९१*।

चंपकदमनक– गन्धद्रव्यविशेषः। *जीवा॰ १९१*।

चंपकपट्टं– फलकविशेषः। *उत्त॰ ४३४*।

चंपकप्पिओ– चम्पकप्रियः-पार्श्वस्थदृष्टान्ते कुमारः। *आव॰ ५२०*।

चंपकभेद– सुवर्णचम्पकच्छेदः। *जीवा॰ १९१*।

चंपकलया– लताविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०*।

चंपगकुसुमं– चम्पककुसुमं-सुवर्णचम्पककुसुमम्। *जीवा॰ १९१*।

चंपगजीइ– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

चंपगपट्ट– फलयविसेसो। *निशी॰ ३५७* आ।

चंपगपुड– पुष्पजातिविशेषः। गन्धद्रव्यविशेषः। *ज्ञाता॰ २३२*।

चंपगवण– चम्पकवनं, वनखण्डनाम। *जम्बू॰ ३२०*। *स्था॰ २३०*।

चंपगलया– लताविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

चंपगेइ– चम्पमः-सामान्यतः सुवर्णचम्पको वृक्षः। *जम्बू॰ ३४।*

चंपगो– चम्पकः-वृक्षविशेषः। *जीवा॰ २२२।*

चंपतो– किंपुरुषाणां चैत्यवृक्षः। *स्था॰ ४४२।*

चंपय– मुनिसुव्रतस्वामिजिनस्य चैत्यवृक्षः। *सम॰ १५२।*

चंपयकुसुमं– चम्पककुसुमं-सुवर्णचम्पकवृक्षपुष्पम्। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

चंपयछल्ली– चम्पकछल्ला-सुवर्णचम्पकत्वक्। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

चंपयभेदे– चम्पकभेदः सुवर्णचम्पकस्य भेदो द्विधाभावः। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

चंपयवडिंसए– चम्पकावतंसकः। *भग॰ १९४।*

चंपयवणं– चम्पकवनम्। *भग॰ ३६। आव॰ १८६।*

चंपरमणिज्ज– चम्परमणीयः-उद्यानविशेषः। *आव॰ २०२।*

चंपा– चम्पापुरी। *उत्त॰ ३७९, ३८०।* जितशत्रुराजस्य नगरी। *ज्ञाता॰ १७३। उत्त॰ ९२।* क्षितिप्रतिष्ठितस्य पञ्चमं नाम। *उत्त॰ १०५।* पालितसार्थवाहवास्तव्या नगरी। *उत्त॰ ४८२।* कपिलवासुदेवस्य नगरी। *ज्ञाता॰ २२२। उत्त॰ ३२१, ३२४।* नगरी, दत्तराजधानी। *विपा॰ ९५।* संवेगोदाहरणे नगरी। *आव॰ ७०९।* सङ्गपरिहरणविषये नगरी। *आव॰ ७२३।* आर्जवोदाहरणे नगरी। *आव॰ ७०४।* स्त्रीलोलुपसुवर्णकारवास्तव्यानगरी। *आव॰ ६५।* द्रव्यव्युत्सर्गे दधिवाहन-नगरी। *आव॰ ७१६।* वासुपूज्यस्वामिनो जन्मभूमिः। *आव॰ १६०।* चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते नगरी। *आव॰ ३९९।* नगरी-विशेषः। *आव॰ २१२।* कुमारनन्दीवास्तव्या नगरी। *आव॰ २९६।* इहलोके कायोत्सर्गफलदृष्टान्ते पुरी। *आव॰ ७९९।* जिनदत्तस्य पुत्रीसुभद्रोदाहरणे नगरी। *दशवै॰ ४६।* कुणि-कराज्ञो राजधानी। *भग॰ ३१६।* अङ्गेषु आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५। अन्त॰ १।* कोणिकराजधानी। *ज्ञाता॰ १। अन्त॰ २५।* ज्ञात॰ २५२। *भग॰ ४८४, ६१८, ६२०।* धन्नसार्थवाहवास्तव्या नगरी। *ज्ञाता॰ १९३।* चम्पा। *ज्ञाता॰ १२५, १३२।* माकन्दीसार्थवाहवास्तव्या नगरी। *ज्ञाता॰ १५६।* सागरदत्तसार्थवाहवास्तव्या नगरी। *ज्ञाता॰ २००, २०५।* कुणिकराजधानी। *निर॰ ४, १९।* नगरीविशेषः। *उपा॰ १९।* जितशत्रुराज्ञो नगरी। *उपा॰ १९।* सुभद्रावास्तव्या नगरी। *व्यव॰ ११७* अ। अनंगसेनसुवर्णकारवास्तव्यं नगरम्। *बृह॰ १०८* आ। अनङ्गसेनवास्तव्यं नगरम्। *निशी॰ ३४५* अ। खंधगरायरायहाणी। *निशी॰ ४४* अ। योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मदृष्टान्ते नगरी। *आव॰ ६६७।* सुनन्दवणिग्वास्तव्या नगरी। *उत्त॰ १२३।* दधिवाहनराज-धानी। *उत्त॰ ३००, ३०२।* शय्यम्भवसूरिविहारभूमिः। *दशवै॰ ११।* रविविषयप्रश्ननिर्णये नगरी। *भग॰ २०६।* लोभपिण्डदृष्टान्ते पुरी। *पिण्ड॰ १३३, १३९।* कोणिकराजधानी। *विपा॰ ३३। प्रश्न॰ १। भग॰ ६७५।*

चंपाप्रविभक्ति– त्रयोदशनाट्यभेदः। *जम्बू॰ ४१७।*

चंपे– चम्पकः-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

चंमं– चर्ममयं तूलिकाद्युपकरणम्। *बृह॰ १०० आ।*

चंमतियं–
आस्तरप्रावरणोपवेशनोपयोगिकृत्तितूलिकावर्धरूपं वा। *बृह॰ २५३ अ।*

च– प्रकृतमनुकर्षति। *उत्त॰ १९७।* वा। *उत्त॰ २०९। जम्बू॰ ४५९।* चशब्दश्चेदित्येतस्यार्थे वर्त्तते। *भग॰ ४९८।* उक्तसमुच्चयार्थः। *आव॰ ८।* एवकारार्थः। *आव॰ १०।* चः-आधिक्यार्थे। *आचा॰ ५५।* पूरणार्थः *आव॰ १२।* च शब्दः-समाहारेतरेतरयोगसमुच्चयान्वाचयावधारणपादपूरणाधिक-वचनादिष्विति। *स्था॰ ४९५।* अपिशब्दार्थः। *उत्त॰ ४७६।*
आभिनिबोधिकश्रुतज्ञानयोस्तुल्यकक्षतोद्भावनार्थः। *आव॰ ७।* पृथक् पृथक्
अवग्रहादिस्वरूपस्वातन्त्र्यप्रदर्शनार्थः। *आव॰ ९।* इवादेशः। *जम्बू॰ २००।* अधिकवचनः। *आचा॰ १०२।*

चइओ– त्याजितः। *ओघ॰ ६०।*

चइत्ता– त्यक्त्वा, अथवा च्युत्वा, कृत्वा। *भग॰ १२९।* चित्वा कृत्वेति। *औप॰ १०१।*

चइय– च्यावितः-स्वत एवायुष्कक्षयेण भ्रंशितः। *भग॰ २९३।* त्याजिता-भोज्यद्रव्यात् पृथक्कारिता दायकेन। *भग॰ २९३।* च्यावितः ताभ्य एवायुःक्षेयेण भ्रंशितः। त्याजितः-देयद्रव्या-त्पृथक्कारितो दायकेन। *प्रश्न॰ १०८।*

चइया– त्याजिताः। *ओघ॰ १५८।*

चउक्क– चतुष्कं-रथ्याचतुष्कमेलकम्। *औप॰ ४।* रथ्याच-तुष्कमीलकः। *औप॰ ५७। आव॰ १३६, २०७।* रथ्या-चतुष्कमीलनस्थानम्। *भग॰ १३७, २००, २३८। प्रश्न॰ ५८।* चतुष्पथयुक्तम्। *ज्ञाता॰ २८। जीवा॰ २५८।* प्रभूत-गृहाश्रयश्चतुरस्रो भूभागः चतुष्पथसमागमो वा चतुष्कम्। *अनुयो॰ १५९।* यत्र रथ्याचतुष्टयम्। *स्था॰ २९४।*

चउक्का– । चक्रे। *निशी॰ १२१* आ।

चउचरणगवी– चतुश्चरणगौः। *आव॰ १०३।*

चउजमलपय- चतुर्यमल पदं-द्वात्रिंशदङ्कस्थानलक्षणं, चतुर्विं-शतेरङ्कस्थानानामुपरितनाङ्काष्टकलक्षणं वा। *अनुयो॰ ३०६।*

चउजायग– चतुर्जातकं-त्वगेलाकेसराख्यगन्धद्रव्यमरिचा-त्मकम्। *जीवा॰ ३५५।*

चउत्थं– चत्वारि भक्तानि यत्र त्यज्यन्ते तच्चतुर्थं, इयं चोपवासस्य संज्ञा। *ज्ञाता॰ ७३।* चतुर्थं भक्तं यावद् भक्तं त्यज्यते यत्र तच्चतुर्थं, उपवासस्य संज्ञा। *भग॰ १२५।* मेहुणं। *निशी॰ १६९* आ।

चउत्थगं– चतुर्थं-एकमुपवासम्। *ओघ॰ १३९।*

चउत्थभत्त– चतुर्थभक्तं-केवलं एकं पूर्वदिने द्वे उपवास दिने चतुर्थं पारणकदिने भक्तं-भोजनं परिहरति यत्र तपसि तत् चतुर्थभक्तम्। *स्था॰ १४७।* चतुर्थभक्तं एकदिनान्तरितः। *जम्बू॰ १३२।*

चउत्थभत्तस्स– चतुर्थभक्ते एकस्मिन् दिवसेऽतिक्रान्ते इत्यर्थः। *प्रज्ञा॰ ५०५।*

चउदसभत्तं– चतुर्दशभक्तं-षड्रात्रोपवासः। *आव॰ १६८।*

चउदसरुवी– चतुर्दशोपकरणधारी। *बृह॰ २३७* आ।

चउदिसि– चतुर्दिक्-चतस्रो दिशः समाहृताः। *जीवा॰ २२२।*

चउपुरिसपविभत्तगती– चतुःपुरुषप्रविभक्तगतीः-चतुर्द्धा पुरु-षाणां प्रविभक्तगतिः, विहायोगतेश्चतुर्दशो भेदः। *प्रज्ञा॰ ३२७।*

चउप्पडोआरे– चतुर्षु-पूर्वापरविदेहदेवकुरुत्तरकुरुरुपेषु क्षेत्र-विशेषेषु प्रत्यवतारः-समवतारः, चतुर्विधस्य पर्यायो वा। *जम्बू॰ ३१२।*

चउप्पडोयारे– चतुर्षु भेदलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेषु पदार्थेषु प्रत्यवतारः-समवतारो विचारणीयत्वेन यस्य तच्चतुष्प्रत्य-वतारः। *भग॰ ९२६।*

चउप्पय– चतुष्पदं-नवमं करणम्। *जम्बू॰ ४९३।* चत्वारि पदानि येषां ते चतुष्पदाः-अश्वादयः। *प्रज्ञा॰ ४४। जीवा॰ ३८।*

चउप्पाइय– चतुष्पादिकः-भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः। *जीवा॰ ४०।*

चउप्फलं– कप्पं। *निशी॰ १९१* आ।

चउप्फाला– । *ज्ञाता॰ ५३।*

चउफास– चतुःस्पर्श-सूक्ष्मपरिणामम्। *भग॰ ९६।*

चउब्भाइय– घटकस्य-रसमानविशेषस्य चतुर्थभागमात्रो-मानविशेषः। *भग॰ ३१३।*

चउब्भागपलिओवमं– चतुर्भागमात्रं पल्योपमं चतुर्भागपल्यो-पमम्। *जम्बू॰ ५३६।*

चउब्भागमंडलं– चतुर्भागमण्डलम्। *सूर्य॰ २१, २७।*

चउभाइया– चतुष्षष्ठिपलमाना चतुर्भागिका। *अनुयो॰ १५२।*

चउभागपल्लोवमं– चतुर्भागः पल्योपमस्य चतुर्भागपल्योपमम्। *जीवा॰ ३८५।*

चउमासिआ– चतुर्थी भिक्षुप्रतिमा। *सम॰ २१।*

चउमुहं– चतुर्मुखम्। *आव॰ १३६।*

चउम्मुह– चतुर्मुखं-देवकुलादि। *स्था॰ २९४। भग॰ २३८।* चतुर्मुखदेवकुलिकादि। *अनुयो॰ १५९।* तथाविधदेवकुलकादि। *औप॰ ५७। प्रश्न॰ ५८।* चतुर्द्वारं देवकुलादि। *भग॰ २३८, औप॰ ४।* यस्माच्चतसृष्वपि दिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति। *जीवा॰ २५८।* चतुर्मुखम्। *भग॰ २००।*

चउरंगं– अश्वा गौः सगड पाइक्का। *निशी॰ ८९* आ।

चउरंगिज्जं– चतुरङ्गीयं-उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम्। *उत्त॰ ९।*

चउरंतं– चतुरन्तं-चतुर्विभागम्। *प्रश्न॰ ६३।* चतुरन्तं-दानादिभेदेन चतुर्विभागं, चतसृणां वा नरकादिगतीनामन्त-कारित्वाच्चतुरन्तम्। *भग॰ ७।*

चउरंतगमाइया– चतुरन्तगमादिका, शारिपट्टादिका। *आव॰ ५८१।*

चउरंतचक्कवट्टी– चतुरन्तचक्रवर्ती-त्रिसमुद्रहिमवत्परिच्छिन्नेषु चतुर्ष्वन्तेषु चक्रेण वर्त्तितुं शीलं यस्यासौ। *जीवा॰ २७८।*

चउरंस– चतुरस्रं-चतुष्कोणम्। *जीवा॰ २७६*। चतुरस्रः। *भग॰ ८५८*। चतुरस्रः-संस्थानविशेषः। *प्रज्ञा॰ २४२*।

चउरंससंठाणपरिणया– चतुरस्रसंस्थानपरिणताः। *प्रज्ञा॰ ११*।

चउर– चतुरः-दक्षः। *स्था॰ ३९७*। *अनुयो॰ १३३*।

चउरग– चकोरकः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

चउवग्गो– णामवत्थव्वा संजयासंजत्तीओ वि आगंतुगा संजता संजतीओ य। *निशी॰ १५५* आ।

चउवीसइत्थय– चतुर्विंशतिस्तवः-आवश्यकसूत्रे द्वितीयम-ध्ययनम्। *आव॰ ४९९*।

चउसट्ठिआ– चतुष्पलप्रमाणा-चतुषष्ठिका। *अनुयो॰ १५१*।

चउसट्ठिकला– चतुःषष्ठिकला। *आव॰ ५५*।

चउसट्ठिगुणा– चतुःषष्ठिगुणा। *उत्त॰ ४८४*।

चउसट्ठिया– चतुषष्ठिका-पलं मानविशेषः, तस्यैव चतुषष्ठि-तमांशस्वभावापलमिति तात्पर्यम्। *भग॰ ३१३*।

चउसरणगमण–
अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणकरणम्। *चतु॰*।

चउसाले– *निशी॰ २६०* अ।

चउसालयं– चतुःशालकम्। *जीवा॰ २६९*।

चउसुवग्गेसु– संजतिसंजयसावगसाविगाण य एते। *निशी॰ २२७* आ।

चओ– चयः-स्तोकतरा वृद्धिः। *पिण्ड॰ ४१*। पिण्डनेत्यर्थः। *निशी॰ २०* आ।

चओवचइयं– चयापचयिकं-वृद्धिहान्यात्मकम्। *आचा॰ ६६*।

चकार-छकार-जकार-झकार-ञकार-प्रविभक्तिनाम-
षोडशो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४७*।

चक्क– चक्रं-सुदर्शनम्। *उत्त॰ ३५०*। अरघट्टयन्त्रिकाच-क्राणि। *ज्ञाता॰ २*। रथाङ्गम्। *सूर्य॰ ६९*। रथाङ्गं अरघट्टाङ्गं वा। *औप॰ ३*। चक्रम्। *आव॰ ८२९*। *ओघ॰ १३*। प्रहरण-विशेषः। *आव॰ ४८७*। *जीवा॰ ११७*। प्रहरणम्। *आव॰ ५८५*। रायचिंधसहियं स-चक्कं। *निशी॰ ३५८* अ। चक्रं-तिलयन्त्रम्। *बृह॰ १९९* आ। तिलपीडनयन्त्रम्। *बृह॰ २२१* अ। तिलपीलगं। *निशी॰ ६१* आ। चक्रः-रत्नभूतप्रहरणविशेषः। *स्था॰ ९९*। चक्रः-वैश्रम-णस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ २००*। चक्रं-धर्मचक्रम्। *ओघ॰ ६०*। *सम॰ ६१*। चक्रं-आज्ञा। *व्यव॰ २२८* अ। चक्रं-अरम्। *प्रश्न॰ ४८*।

चक्कग– चक्रकं-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*। चक्रकं-चक्राकारः-शिरोभूषणविशेषः। *जम्बू॰ १०६*।

चक्कझया– चक्रालेखरूपचिह्नोपेताः ध्वजाः। *जम्बू॰ ६०*।

चक्कद्धचक्कवालसंठिया– चक्रार्द्धचक्रवालसंस्थिताः। *सूर्य॰ ३६*।

चक्कद्धया– चक्रध्वजाः-चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजाः। *जीवा॰ २१५*।

चक्कपुरं– चक्रपुरं-कुन्थुजिनस्य प्रथमपारणकस्थानम्। *आव॰ १४६*। पुरुषपुण्डरीकपुरम्। *आव॰ १६२*।

चक्कपुरा– चक्रपुरा-राजधानी। *जम्बू॰ ३५७*। *स्था॰ ८०*।

चक्कमंतो– चङ्क्रम्यमाणः। *आव॰ ४१२*।

चक्कमज्झभूमी– चक्रमध्यभूमिः। *आव॰ ४१७*।

चक्कयरो– चक्रकरः। *आव॰ ६१६*।

चक्करयणे– चक्रवर्तेरेकेन्द्रियं प्रथमं रत्नम्। *स्था॰ ३९८*।

चक्कला– पादानामधःप्रदेशः। *जम्बू॰ ५५*। *जीवा॰ २१०*।

चक्कलिकाभिन्नं– तिर्यक्बृहत्कत्तलिकाकृतम्। *बृह॰ १७५*।

चक्कलिय– चक्रम्। *निशी॰ १२४* आ।

चक्कवट्टिविजय– पुष्कलावर्त्ते सप्तमो विजयः स एव चक्रव-र्त्तिविजेतव्यत्वेन चक्रवर्तिविजयः। *जम्बू॰ ३४९*।

चक्कवट्टि– ऋद्धिप्राप्तार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५५*। चक्रवर्त्तिनः चतु-र्दशरत्नाधिपाः, षट्खण्डभरतेश्वराः। *आव॰ ४८*। चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशेषेण वर्त्तितुं शीलं येषां ते चक्रवर्त्तिनः। *स्था॰ ९९*।

चक्कवाग– चक्रवाकः-रथाङ्गः। *प्रश्न॰ ८*।
लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*।

चक्कवालं– चक्रवालं विशेषस्य सामान्येऽनुप्रवेशात्। समच-क्रवालम्। *जम्बू॰ ३६७*। मण्डलम्। *प्रज्ञा॰ ६००*। *सूर्य॰ ६९*। *जीवा॰ १७८*। चक्रवालं-सर्वं परिमण्डलरूपम्। *जीवा॰ २६६*। चक्रवालं-सर्वतः परिमण्डलरूपम्। *जम्बू॰ १०२*। चक्रवालः-नगरविशेषः। *आव॰ १४४*। चक्रवालं-चक्रम्। *भग॰ १८८*। चक्रम्। *आतु॰*। चक्रवालं-जलपरिमा-ण्डल्यम्। *सम॰ १२७*।

चक्कवालविक्खंभ– चक्रवालविष्कम्भः-वृत्तव्यासः, इदं च प्रमाणयोजनमवसेयम्। *सम॰ ६*।

चक्कवालसामायारि– सामाचारीविशेषः। *निशी॰ २६३* आ। *निशी॰ ३९* आ।

चक्कवाला– चक्रवाला-वलयाकृतिः। *स्था॰ ४०७*। मण्ड-लबन्धेन स्थिताः। *ओघ॰ ५५*। चक्रवालं-मण्डलं ततश्च यया मण्डलेन परिभ्रम्य परमाण्वादिरुत्पद्यते सा चक्रवाला। *भग॰ ८६६*।

चक्कवालानि– पृष्ठस्योपरिमण्डललक्षणानि। *व्यव॰ २३*अ।

चक्कवूह– चक्रव्यूहः-चक्राकारः सैन्यविन्यासविशेषः। *प्रश्न॰ ४७*। *ज्ञाता॰ ३८*।

चक्काइट्ठगो– चक्राविद्धः। *आव॰ २१७*।

चक्कागं– चक्राकं-चक्राकारं-एकान्तेन समम्। *प्रज्ञा॰ ३६*। चक्राकारः सम इत्यर्थः। *बृह॰ १६१* आ। चक्रकं-चक्राकारः-समच्छेदो मूलकन्दादिनां भङ्गः। *आचा॰ ५९*। पक्षिविशेषः। *ज्ञाता॰ २३१*। लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*। जस्स चक्कागारा भंगो समोत्ति वुत्त भवति। *निशी॰ १४१* अ।

चक्कारबद्ध– चक्रारबद्धं गन्त्र्यादि। *दशवै॰ १९३*।

चक्किकयंति– सक्किज्जति। *निशी॰ ७९* अ।

चक्किकया– चाक्रिकाः-चक्रप्रहरणाः कुम्भकारतैलिकादयो वा। *औप॰ ७३*। चक्रिकाः-चक्रप्रहरणाः कुम्भकारादयो वा *भग॰ ४८१*। कुम्भकारतैलिकादयः। *ज्ञाता॰ ५९*। शक्नुयात्। *भग॰ ३२५*।

चक्कलेंडा– चक्रौ लण्डिका-द्विमुखसर्पः। *आव॰ ३५७*।

चक्खल्लाउडुओ– दतिको येन तीर्यते। *ओघ॰ ३३*।

चक्खिंदिअत्थोवगहे– चक्षुषः प्रथममेव स्वरूपद्रव्यघुणक्रिया-कल्पनातीतमनिर्देश्यसामान्यमात्रस्वरूपार्थावग्रहणं चक्षुरर्था-वग्रहः। *प्रज्ञा॰ ३११*।

चक्खिंदिए– चक्षुरिन्द्रियम्। *प्रज्ञा॰ २९३*।

चक्खिय– दृष्ट्वा। *आव॰ ४१७*।

चक्खु– चक्षुः विशिष्ट-आत्मधर्मः तत्त्वावबोधनिबन्धनः श्रद्धा-स्वभावः। *राज॰ १०९*। चक्षुःशब्दोऽत्र दर्शनपर्यायः। *आचा॰ ३०२*। चक्षुः-ज्ञानम्। *आचा॰ २०८*। चक्षुरिव चक्षुः-श्रुत-ज्ञानम्। *सम॰ ४*। लोचनम्। *भग॰ ७३९*। चक्षुः-श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात्। *भग॰ ७*।

चक्खुकंता– पञ्चमकुलकरस्य भार्यानाम। *सम॰ २५०*। *आव॰ ११२*। *स्था॰ ३९८*। चक्षुःकान्तः-कुण्डलसमुद्रेऽपरार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

चक्खुदंसणं– सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि चक्षुषा दर्शनं-रूपसामान्यपरिच्छेदः चक्षुदर्शनम्। *जीवा॰ १८*।

चक्खुदंसणि– चक्षुदशनी-चक्षुदशनलब्धिमान्। *अनुयो॰ २२०*।

चक्खुदए– चक्षुर्दयः-चक्षुरिव चक्षुः-श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थवि-भागकारित्वात्तद्दयते इति चक्षुर्दयः। *सम॰ ४*।

चक्खुदये– चक्षुरिव चक्षुः श्रुतज्ञानं दयत इति चक्षुर्दयः। *भग॰७*।

चक्खुदो– चक्षुरिव चक्षुः-विशिष्ट आत्मधर्मस्तत्त्वावबोधनिब-न्धनं श्रद्धास्वभावः तद् ददातीति चक्षुदः। *जीवा॰ २५५*।

चक्खुप्फास– चक्षुस्पर्शः-दृष्टिस्पर्शः। *भग॰ ७७*। चक्षुः-स्पर्श स्थूलपरिणतिमत्पुद्गलद्रव्यम्। *उत्त॰ १९६*। चक्षुःस्पर्शः-चक्षुर्विषयः। *आचा॰ ३०*। *जम्बू॰ ४४१*। दृष्टिपातः। *भग॰ १३८*। दर्शनम्। *ज्ञाता॰ ४६*। *औप॰ ६०*। *सूर्य॰ ६१*। चक्षुःस्पर्शे दृग्गोचरे चक्षुःस्पर्शगो वा दृग्गोचरगतः। *उत्त॰ ५९*।

चक्खुभीया– चक्षुशब्दोऽत्र दर्शनपर्यायः दर्शनादेव भीता दर्शनभीताः। *आचा॰ ३०२*।

चक्खुम– चक्षुष्मान्-द्वितीयः कुलकरनाम। *सम॰ १५०*। *जम्बू॰ १३२*। *स्था॰ ३९८*। *आव॰ १११*।

चक्खुमेंटा– एक्कं अत्थिं उम्मल्लेति बितियं णिमिल्लेति। *निशी॰ १२४* आ।

चक्खुविक्खेवो– चक्षुर्विक्षेपः-चक्षुर्भ्रमः। *भग॰ १७५*।

चक्खुसुभो– चक्षुःशुभः-कुण्डलसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

चक्खुसे– चाक्षुषः चक्षुरिन्द्रियग्राह्यः। *दशवै॰ २०२*।

चक्खुहरं– चक्षुर्हरति आत्मवशं नयति विशिष्टरूपातिशय-कलितत्वाच्चक्षुर्हरम् यत्तत्। *जीवा॰ २५३*। चक्षुर्हरं, चक्षुर्द्धरं चक्षुरोधकम्। *जम्बू॰ २७५*। चक्षुर्हरं-लोचनानन्ददायक-त्वात्। चक्षू रोधकं वा घनत्वात्। *भग॰ ४७७*।

चक्खू– चक्षुः-विशिष्टआत्मधर्मस्तत्त्वावबोधनं श्रद्धास्वभावः। *जीवा॰ २५५*।

चक्रवाल– प्रत्युपेक्षणादि नित्यकर्म्मा। *बृह॰ २२१* अ।

चक्रवालसामाचारी– सामाचारीविशेषः। *आव॰ ८३३*। प्रतिदिनक्रियाकलापरूपा। *बृह॰ २०७* आ।

चक्रार्द्धचक्रवालं– चतुर्थनाट्यविशेषः। *जम्बू॰ ४१५*।

चक्षुर्म्मेलः– यदेकं चक्षुरुन्मीलयति। *व्यव॰ १०१* आ।

चच्चपुडा– चच्चपुटाः-आघातविशेषाः। *जम्बू॰ २३६*।

चच्चरं– चत्वरं-सीमाचतुष्कम्। *उत्त॰ १०९*। त्रिपथभेदि चत्वरम्। *ज्ञाता॰ २८*। स्थानविशेषः। *विपा॰ ५७*। *आव॰ १३६, ४०२*। चत्वरं-बहुतररथ्यामीलनस्थानम्। *भग॰ १३७*। चत्वरम्। *भग॰ २००, २३८*। चतुष्पथसमागमः, षट्पथसमागमो वा चत्वरम्। *अनुयो॰ १५९*। रथ्याष्टकमध्यम्। *स्था॰ २९४*।

चच्चरसिवंतरितो– चत्वरशिवान्तरितः। *उत्त॰ २२१*।

चच्चागा– उपरागाः। *जम्बू॰ ४९*। चर्चाकाः-चन्दनकृतोपरागाः। *राज॰ ६४*।

चच्चिअ– चर्चितं-समण्डनकृतम्। *जम्बू॰ २७८*।

चटकसूत्रं– कोशकारभवं सूत्रम्। *अनुयो॰ ३४*।

चटुल– चन्टुलः-विविधवस्तुषु क्षणे क्षणे आकाङ्क्षादिप्रवृत्तेः। *प्रश्न॰ ३०*।

चटुलीः– पर्यन्तज्वलिततृणपूलिका। *नन्दी॰ ८४*।

चट्टवेसो– विप्रवेषः-चक्षुरिन्द्रियान्तर्द्दष्टान्तः। *आव॰ ३९९*।

चट्टा– जूअकारादिधुत्ता। *निशी॰ २०७* आ।

चट्टो– विप्रः। *आव॰ ४००*।

चडंतो– आरुहन्। *निशी॰ १३३* आ।

चडकर– चटकरप्रधानः-विस्तरवान्। *विपा॰ ३६*। चटकरं-वृन्दम्। *जम्बू॰ १४५*।

चडगर– चटकरं-आडम्बरः। *बृह॰ १३०* अ। विस्तारवृन्दं (देशीशब्दः)। *जम्बू॰ १९६*। विस्तारवन्तः। *जम्बू॰ २००*। चटकरप्रधानं-विच्छर्द्दप्रधानम्। *ज्ञाता॰ ३६*। समु-दायः। *ज्ञाता॰ २००*। चटकरः-विस्तारवान्। *भग॰३१९*।

चडगरत्तण– चडकरत्त्वं-अतिप्रपञ्चकथनम्। *दशवै॰ ११५*।

चडत्ति– झटिति। *आव॰ ३५७*।

चडप्फडंत– कम्पमानम्। *उत्त॰ ५२२*।

चडप्फड– प्रलपसि। *निशी॰ १३२* अ।

चडप्फाडेंतो– करपादौ भूमौ आस्फोटयन्। *निशी॰ २६*।

चडवेला– चपेटाः। *प्रश्न॰ ५७*।

चडावणा– आरोपणा। *स्था॰ ३२५*। जं दव्वादि पुरिसविभागेण दाणं सा आरोवणा। *निशी॰ ८५* अ।

चडाविओ– आरोहितः। *आव॰ ४३४*।

चडाविज्जइ– चटाप्यते। *ओघ॰ ८४*।

चडाविया– चटापितः। *आव॰ ५०६*।

चडुगे– अपवृत्य। *व्यव॰ ३०२* आ।

चण– चणकं-चणकक्षेत्रं, योगसंग्रहे शिक्षा दृष्टान्ते यद् वास्तु-पाठकैश्चणकाभिधनगरं निवेशितम्। अपरनाम क्षितिप्रतिष्ठितं, वृषभपुरं, कुशाग्रपुरं, राजगृहं च। *आव॰ ६७०*।

चणगपुरं– चणकपुरं-क्षितिप्रतिष्ठितस्य द्वितीयं नाम। *उत्त॰ १०५*।

चणगा– चणकाः-धान्यविशेषाः। *अनुयो॰ १९२*।

चणगो– चणकाः, पारिणामिकीबुद्धौ गोल्लविषये चणकग्रामे ब्राह्मणः, श्रावकः। *आव॰ ४३३*।

चणयग्गामो– चणकग्रामः, गोल्लविषये ग्रामः। *आव॰ ४३३*।

चतुरंगः– सेना। *आव॰ ७६७*।

चतुरय– चतुरकाः-सभाविशेषाः, ग्रामप्रसिद्धाः। *सम॰ १३८*।

चतुर्विधशब्दः– चतुष्प्रत्यवतारम्। *भग॰ ९२६*।

चतुष्कल्पसेकसिक्तः– चत्वारः कल्पाः सेकविषया रसवती-शास्त्राभिज्ञेभ्यो भावनीयाः। *जीवा॰ २६८*।

चतुःकल्याणकं– तत्र चत्वारि चतुर्थभक्तानि चत्वार्यायाम्लानि चत्वारि एकस्थानानि चत्वारि पूर्वार्द्धानि चत्वारि निर्वृतिकानि च भवन्ति। *बृह॰ १२८* अ।

चत्त– जेण सरीरविभूसादिणि निमित्तं हत्थपादपक्खालगादीहिं परिकम्म वदंति तं। *दशवै॰ १५०*। त्यक्तं-निर्दयतया दत्तम्। *बृह॰ २००* आ। च्युतः-जीववत् क्रियातो भ्रष्टः। *२९३*।

चत्तदेह– त्यक्तदेहः-परित्यक्तजीवसंसर्गजनिताहारप्रभवोप-चयः। *भग॰ २९३*। परित्यक्तजीवसंसर्गसमुत्थशक्तिजनिताहारादिपरिणामप्रभवोपचयः। *प्रश्न॰ १०८, १५५*।

चत्तरं– चत्वरं-बहुरथ्यापात्तस्थानम्। *जीवा॰ २५८*। *औप॰ ४*। यत्र बहवो मार्गा मिलन्ति। *औप॰ ५७*।

अनेकरथ्यापत-नस्थानम्। *प्रश्न॰ ५८।*

चत्ता– स्वयमेव दायकेन त्यक्ता-देवद्रव्यात्पृथक्कताः। *प्रश्न॰ १०८।* स्वयमेव दायकेन त्यक्ता भक्ष्यद्रव्यात्पृथक्कृता। *भग॰ २९३।*

चनिकः– मतविशेषः। *बृह॰ १७३* आ। *आचा॰ १४६।*

चन्द्रः– रत्नविशेषः। *जीवा॰ १९१।*

चन्द्रकान्तः– चन्द्रप्रभः। *जीवा॰ २३४।*

चन्द्रकान्ताद्याः– मणयः। *सम॰ १३६। स्था॰ २६३।*

चन्द्रगुप्तः– चाणक्यस्थापितो राजा। *व्यव॰ १४०* आ। नृपतिर्नाम। *जम्बू॰ २६३। स्था॰ २८१।*

चन्द्रनखा– खरदूषणपत्नी। *प्रश्न॰ ८७।*

चन्द्रप्रतिमं– प्रकीर्णतपोविशेषः। *उत्त॰ ६०१।*

चन्द्रप्रभः– मणिविशेषः। *जीवा॰ २६।*

चन्द्रभागा– नदीविशेषः। *स्था॰ ४७७।*

चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति– चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति-सूर्यमण्डलप्रवि-भक्ति-नागमण्डलप्रविभक्ति-जक्षमण्डलप्रविभक्ति-भूतम-ण्डलप्रविभक्त्यभिनयात्मकामण्डलप्रविभक्तिनामा दशमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रमासः– मुहूर्त्तपरिमाणमष्टौ शतानि पञ्चाशीत्यधिकानि। *सूर्य॰ ११।*

चन्द्रमुखा– मूलद्वारविवरणे धनदत्तपत्नी। *पिण्ड॰ १४४।*

चन्द्ररुद्र– जो पुण खरफरुसं भणतो आयरिओ। *निशी॰ १३५* अ।

चन्द्रहासं– परमासवविशेषः। *जीवा॰ १९८।*

चन्द्रागमनप्रविभक्ति– चन्द्रागमन-सूर्यागमन-प्रविभक्त्यभिन-यात्मक-आगमनागमनप्रविभक्तिनामा सप्तमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रादि– गच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १२६।*

चन्द्राानना– आज्ञाऽऽराधनखण्डनादोषदृष्टान्ते पुरीविशेषः। *पिण्ड॰ ७६।* मूलद्वारविवरणे धनदत्तनगरी। *पिण्ड॰ १४४।*

चन्द्रावतंसः– आज्ञाराधनखण्डनादोषदृष्टान्ते राजा। *पिण्ड॰ ७६।*

चन्द्रावरणप्रविभक्ति– चन्द्रावरणप्रविभक्ति-सूर्यावरणप्रविभ-क्त्यभिनयात्मक-आवरणावरणप्रविभक्तिनामा अष्टमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रावलि- प्रविभक्ति - पञ्चमो नाट्यभेदः। *जम्बू॰ ४१६।* चन्द्रावलिप्रविभक्ति-सूर्यावलि प्रविभक्तिसूर्यावलि प्रविभक्ति-वलयावलि प्रविभक्ति हंसावली प्रविभक्ति तारावलि प्रवि-भक्ति-मुक्तावलि प्रविभक्ति रत्नावलि प्रविभक्ति पुष्पावलि प्रविभक्ति-नामापञ्चमो नाट्यविधि। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति– चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति-सूर्यास्तम-यनप्रविभक्त्यभिनयात्मकः-अस्तमयनास्तमयनप्रविभक्ति-नामा नवमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रिका– आधाकर्मपरिभोगे गुणचन्द्रश्रेष्ठिनः स्त्री। *पिण्ड॰ ७४।*

चन्द्रोद्गमपविभक्ति– चन्द्रोद्गमप्रविभक्ति-सूयोद्गमप्रविभ-क्त्यभिनयात्मकः-उद्गमनोद्गमनप्रविभक्तिनामा षष्ठो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६।*

चन्द्रोद्योतः– द्वीपः समुद्रोऽपि च। *प्रज्ञा॰ ३०७।*

चपलकाः– आलिसन्दकाः। *जम्बू॰ १२४।*

चपलितः– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६।*

चप्पडए– चप्पलकाः-चतुष्पलाः। *बृह॰ २०३* अ।

चप्पडग– चप्पडकः-काष्टयन्त्रविशेषः। *प्रश्न॰ ५७।*

चप्पुटिका– अप्सरो निपातो नाम चप्पुटिका। *प्रज्ञा॰ ६००। जीवा॰ १०९।* अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुलिकृतः आस्फोटः। *भग॰ २६९।*

चप्पुडिया– चप्पुटिका। *आव॰ ५३६।* अप्सरो निपातोचप्पु-टिका। *जीवा॰ ३९९।* चप्पुटिका अङ्गुलीद्वयोत्थः शब्दः। *उत्त॰ १०८।*

चप्फलिगाइय– कौतूहलिकं-आशीर्वादः। *आव॰ ४३२।*

चप्रलापः– नकुलः। *उत्त॰ ६९९।*

चमक्कं– चमत्कारं। *गच्छा॰ ।*

चमढण– प्रवचनोक्तैर्वचनैः खिंसनं करोति। *ओघ॰ ४३।* निर्भर्त्सनम्। *बृह॰ २१५* आ।

चमढने– मर्दने। *ओघ॰ १२६।*

चमढिउं– मर्दित्वा। *आव॰ ४०५।*

चमढियं– विनाशितम्। *व्यव॰ १८४* अ।

चमढेत्ता– तिरस्कृत्य। *आव॰ २०४।*

चमढ्यते– कदर्थ्यन्ते। *ओघ॰ ९६।*

चमर– द्विखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।* चमरः-प्रथमो दक्षिणनि-कायेन्द्रः। *भग॰ १५७।* पञ्चमतीर्थकरस्य प्रथमः शिष्यः। *सम॰ १५२।* दक्षिणात्यासुरकुमाराणामधिपतिः। *स्था॰८४। जीवा॰ १७०। प्रज्ञा॰ ९४। ज्ञाता॰ १९१।*

चमरचञ्चा– देवस्थानविशेषः। *भग॰ १४३।* चमरेन्द्रराजधानी। *सम॰ ३२। जम्बू॰ ३३९। स्था॰ ५२४।* चमरचञ्चा-चमरेन्द्रराजधानी। *भग॰ १७१। जम्बू॰ ४०७। भग॰ ६१७।* दाक्षिणात्यस्यासुरनिकायनायकस्य चञ्चा-चञ्चाख्या-नगरी चमरचञ्चा। *स्था॰ ३७६।*

चमरा– चमरा-आरण्यगौः। *प्रश्न॰ ७।* आटव्यो गावः। *जम्बू॰ ४३।*

चमरी– चमरी-द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८।* गोविशेषः। *प्रश्न॰ ७६।*

चमरुप्पातो– चमरस्य-असुरकुमारराजस्योत्पतनं-उर्ध्वगमनं चमरोत्पातः। *स्था॰ ५२४।*

चमसो– चमसः-दर्विका। *औप॰ ९४।*

चम्म– चर्म-अङ्गुष्ठाङ्गुल्योराच्छादनरूपम्। *जीवा॰ २६०। राज॰ ११३।* पुद्गलविशेषः। *आव॰ ८५४।* सिंहादीनां चर्माणि। *दशवै॰ १९३।* स्फुरकः। *भग॰ १९४।* त्वक्। *प्रश्न॰ ८।*

चम्मए– चर्मकृति-छवडिया। *ओघ॰ २१७।*

चम्मकडे– चर्मकटः-कटस्य तृतीयभेदः। *आव॰ २८९।* वर्द्धव्यूतमञ्चकादिः। *स्था॰ २७३।*

चम्मकारा– पदकारा। *निशी॰ ४३ आ ८।*

चम्मकिड्डं– चर्म्मव्यूतं-खट्वादिकम्। *भग॰ ६२८।*

चम्मकोसए– चर्मकोशकः। *ओघ॰ २१७।* चर्मकोशः-पाष्णित्रं खल्लकादिः। *आचा॰ ३७०।*

चम्मखंडं– चर्मखण्डम्। *निशी॰ २२७ आ।*

चम्मखंडिअ– चर्मपरिधानाश्चर्मखण्डिकाः, अथवा चर्ममयं सर्वमेवोपकरणं येषां ते चर्मखण्डिकाः। *अनुयो॰ २५।*

चम्मखंडिए– चर्मखण्डकः-चर्मपरिधानः चर्मोपकरण इति। *ज्ञाता॰ १९५।*

चम्मचडिया– चर्मचटकाः-चर्मपक्षिणः। *उत्त॰ ६९९।*

चम्मच्छदन– चर्मच्छेदः-वर्द्धपट्टिका, चर्मच्छेदनकं पिष्पल-कादि। *ओघ॰ २१८।*

चम्मज्झामे– चर्मध्यामं-चर्म च तद्ध्यामंच-अग्निना ध्याम-लीकृतं-आपादितपर्यायान्तरम्। *भग॰ २१३।*

चम्मट्ठिल– चर्मास्थिलः-चर्मचटकः। *प्रश्न॰ ८।*

चम्मपक्खी– चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ तौ विद्येते येषां ते चर्म-पक्षिणः। *प्रज्ञा॰ ४९।* चर्मरूपौ पक्षौ विद्येते यस्य स चर्मपक्षी। *जीवा॰ ४१।*

चम्मपट्टो– चर्मपट्टः-वर्द्धः। *विपा॰ ७१।*

चम्मपणयं– चर्मपञ्चकं-अजैडकगोमहिषमृगाजिनलक्षणम्। *आव॰ ६५२।*

चम्मपाय– चर्मपात्रं-स्फुरकः खड्गकोशको वा। *भग॰ १९१।*

चम्मयरु– श्रेणिविशेषः। *जम्बू॰ १९४।*

चम्मरयणे– चक्रवर्तेरेकेन्द्रियं तृतीयं रत्नम्। *स्था॰ ३९८।*

चम्मरुक्ख– वृक्षविशेषः। *भग॰ ८०३।*

चम्मिय– चर्मणि नियुक्ताश्चार्म्मिकाः। *भग॰ ३१७।*

चम्मे– चर्म्मपक्षिणः-चर्मचटकाप्रभृतयः, चर्मरूपा एव हि तेषां पक्षा इति। *उत्त॰ ६९९।*

चम्मेट्ठ– लोहमयः प्रतलायतो लोहादिकुट्टनप्रयोजनो लोहका-राद्युपकरणविशेषः। *भग॰ ६१७।* चर्मेष्टः-चर्मनद्धपाषाणः। *प्रश्न॰ ४८।* चर्मेष्टः-चर्मवेष्टितपाषाणविशेषः। *प्रश्न॰ २१।*

चम्मेट्ठग– चर्मेष्टकं-चर्मपरिणद्धकुट्टनोपगरणविशेषः। *जम्बू॰ ३८७।* चर्मेष्टिका-इष्टकाशकलादिभृतचर्मकुतपरूपा यदाक-र्षणेन धनुर्धरा व्यायामं कुर्वन्ति। *उपा॰ ४७।* चर्मेष्टकम्। *राज॰ २२।* चर्मेष्टका। *अनुयो॰ १७७।* चर्मेष्टकम्। *जीवा॰ १२१।*

चयं– अधिकत्वेन वृद्धिः। *सूर्य॰ १६।* शरीरम्। *भग॰ १२९।*

चयइ– ददाति। *भग॰ २८९।* त्यजति-विरहयति। *भग॰ २८९।*

चयणं– वैमानिकज्योतिष्कमरणम्। *स्था॰ ४६६।* चयनं-कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम्। *प्रज्ञा॰ २९२।*

चयति– च्यवते। *जीवा॰ ११०।* चीयते-सामान्यतश्चयमा-गच्छति। *प्रज्ञा॰ २२८।*

चयनं– व्याख्यानान्तरेणासकलनम्। *स्था॰ ४१७।* कषाय-परिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम्। *स्था॰ १९५।* कषा-

यादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम्। *स्था॰ १०१, ५२७*।

चयमाणे– च्यवमानः-जीवमानः जीवन्नेव मरणकाल त्यजन् इत्यर्थः। *भग॰ ८६*।

चयिका– पीठिका। *पिण्ड॰ १०७*।

चयो– चीयते चयनं वा चयः, परिग्रहस्य तृतीयं नाम। *प्रश्न॰ ९२*।

चयोवचयं– चयोपचयं-चयेन अधिकत्वेन वृद्धिरपचयेन हीन-त्वेनापवृद्धिः। *सूर्य॰ १३*।

चरः– उपचरकः। *आचा॰ ३७७*।

चरंतं– चरत्-विश्वं व्याप्नुवत्, अब्रह्मणस्तृतीयं नाम। *प्रश्न॰ ६६*।

चरंतमेसणं– परिशुद्धाहारादिना वर्त्तमानम्। *आचा॰ ४२९*।

चरंति– आचरन्ति। *प्रश्न॰ ९५*। चरन्ति-प्रवर्तन्ते। *जम्बू॰ २२७*। भिक्षानिमित्तं पर्यटन्ति। *उत्त॰ ३६२*। आसेवन्ते। *उत्त॰ ३६३*।

चरंतिअ– चरन्ति यस्यां दिशि तीर्थंकरादयो यावद् युगप्रधाना विहरन्ति सा दिक्। आवा॰ *४७०*।

चरंतिया– सा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्ज-वणाणी ओहिणाणी चोद्दसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा जुगपहाणो आयरियो जत्तो विहरति ततो हुत्तो पडिच्छति। *निशी॰ ९९* आ।

चरंती– विहरन्ति। *व्यव॰ ६२* आ।

चर– सूचामात्रत्वादस्य चरमशब्दोपलक्षितोऽपि चरणः-प्रथम उद्देशकः। *भग॰ ६३०*।

चरइ– चरति-करोति। *सम॰ ९६*। आचरति। *सम॰ १६, २१*। चरति-अटित्वा आनीतं भुङ्क्ते। *दशवै॰ २५३*।

चरए– धाटिभिक्षाचरः। *ज्ञाता॰ १९५*।

चरकः– मतविशेषः। *उत्त॰ २४१*। *जीवा॰ १४३*। *निशी॰ १८६* अ।

चरग– चरकः-धाटिभिक्षाचरः। *जम्बू॰ २३६*। चरकः-मतविशेषः। *आव॰ ८५६*। चरतीति चरकः-दंशमशकादिः। *सूत्र॰ ६५*। चरकः-कच्छोटकादयः। *भग॰ ५०*। कच्छोट-कादिकः। *प्रज्ञा॰ ४०५*।

चरगपरिव्वायग– चरकपरिव्राजकः-धाटिभैक्ष्योपजीविनस्त्रि-दण्डी, अथवा चरकः-कुच्छोटकादिः परिव्राजकस्तु कपिल-मुनिसूनुः। *भग॰ ५०*।

चरगपरिव्वायय– चरकपरिव्राजकः-धाटिभैक्ष्योपजीवी त्रिदण्डी। *प्रज्ञा॰ ४०५*।

चरगा– धाटिवाहकाः सन्तो ये भिक्षां चरन्ति ते, ये च भूञ्जा-नाश्चरन्ति वा ते चरकाः। *अनुयो॰ २५*। कणदाः, धाटिवाहका वा। *बृह॰ २४२* आ।

चरण– चारित्रं-क्रिया। *व्यव॰ ४५७* आ। चतुर्वेदब्राह्मणः। *बृह॰ ५६* अ। गमनम्। *आव॰ ५५२*। गवेषणम्। *प्रश्न॰ १०६*। नित्याऽनुष्ठानम्। *ओघ॰ ७*। व्रतश्रमणधर्मसंयमा-द्यनेकविधम्। *सम॰ १०९*। महाव्रतादि। *ज्ञाता॰ ७*। *औप॰ ३३*। विशिष्टं गमनम्, गमनम्। *नन्दी॰ १०६*। उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशतममध्ययनम्। *उत्त॰ ९*। व्रतादि। *भग॰ १२२*। *ज्ञाता॰ ६१*। *उत्त॰ ५६७*। उच्चावचकुलेष्वविशेषेण पर्य-टनम्। *उत्त॰ ६०७*। गतिचरणं भक्खणाचरणं, आचरणाचरणं च। *निशी॰ १* अ। आचारः। *उत्त॰ ५३२*। चारित्रं, सच्चेष्टेतियावत्। *उत्त॰ ५१९*। चरणं-व्रतश्रमणधर्मादि। *भग॰ १३६*। चारित्रं-समग्रविरतिरूपम्। *दशवै॰ ११०*।

चरणकरणपारविऊ– चर्यत इति चरणं मूलगुणाः, क्रियत इति करणं-उत्तरगुणास्तेषां पारं-तीरं पर्यन्तगमनं तद्वेत्तीति चरणकरणपारवित्। *सूत्र॰ २९८*।

चरणकरणानुयोगः– अर्हद्वचनानुयोगस्य चतुर्थो भेदः, आचा-रादिकः। *आचा॰ १*। अनुयोगस्य प्रथमो भेदः। *स्था॰४८१*।

चरणगुणट्ठिओ– चरणगुणस्थितः-सर्वनयविशुद्धः। *उत्त॰ ६९*। चर्यत इति चरणं-चारित्रं, गुणःसाधनमुपकारकमित्यनर्था-न्तरं, ततश्च चरणं चासौ गुणश्च निर्वाणात्यन्तोपकारितयाः चरणगुणस्तस्मिन् स्थितः-तदासेवितया निविष्टः। *उत्त॰६९*।

चरणगुणा– चरणान्तर्गता गुणाः, चरणं-व्रतादि गुणाः पिण्ड-विशुद्ध्यादयश्चरणगुणाः।*उत्त॰ ५६७*।

चरणग्गो– चरणेन अग्रः-प्रधानः चरणाग्रः। *पिण्ड॰ ४१*।

चरणमालिया– चरणमालिका-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*।

चरणरिया– चरणेर्या-चरतेर्भावे ल्युट् चरणं तद्रुपेर्या चरणेर्या, चरणं गतिर्गमनमित्यर्थः। *आचा॰ ३७५*।

चरणविही– उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशत्तममध्ययनम्। *समः ६४।*

चरति– उपपद्यते। *सूर्य० ११।*

चरमंतपएस– चरमाण्येवान्तवर्त्तित्वात् अन्ताश्चरमान्तास्तत्प्र-देशश्च चरमान्तप्रदेशः। *प्रज्ञा० २२९।*

चरमं– चरमं-पर्यन्तवर्त्तिः। *प्रज्ञा० २२८।* चरमम्। *प्रज्ञा० २३४।* चरमेभ्योऽल्पस्थितिकेभ्यो नारकादिभ्यः परमामहा-स्थितयो महाकर्म्मतरा इत्याद्यर्थप्रतिपादनार्थः। एकोनविंश-तितमशतके पञ्चम उद्देशकः। *भग० ७६१।* प्रान्तं पर्यन्त-वर्त्ति। *भग० ३६५। आव० ८५२।* शैलेशीकालान्त्यसमय-भावी। *प्रज्ञा० ३०३।* अर्वाग्भागवर्त्ति स्थित्यादिभिः। *भग० ६३०।* चरमः-यस्य चरमो भवो भविष्यति स चरमः। *भग० २५९।*

चरमअचरिमसमय– चरमास्तथैव अचरमसमयाश्च प्रागुक्तयु-क्तेरेकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथमसमयवर्त्तिनो ये ते चरमाचर-मसमयाः। *भग० ९६९।*

चरमचरमनामनिबद्धनाम– चरमपूर्वं मनुष्यभव-चरमदेवलोक-भव-चरमच्यवन-चरमगर्भसंहरण-चरमभरतक्षेत्रावसर्प्पिणी-तीर्थकरजन्माभिषेक-चरमबालभाव-चरमयौवन-चरमकाम-भोग-चरमनिष्क्रमण-चरमतपश्चरण-चरमज्ञानोत्पाद-चरम-तीर्थप्रवर्त्तन-चरमपरिनिर्याणाभिनयात्मकः, द्वात्रिंशत्तमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७।*

चरमचरमसमय– चरमाश्च ते विवक्षितसङ्ख्यानुभूतेश्चरमसम-यवर्त्तित्वात् चरमसमयाश्च प्रागुक्तस्वरूपा इति चरमचरम-समयाः। *भग० ९६९।*

चरमनिदाघकालसमओ– चरमनिदाघकालसमयः-ज्येष्ठमास-पर्यन्तः। *जीवा० १२२।*

चरमपाहडिआ– चरमप्राभृतिका-बादरा। *दशवै० १६२।*

चरमप्रदेशजीवप्ररूपी– जीवप्रदेशो निह्नवः। *आव० ३११।*

चरमसमय– चरमसमयशब्देनैकेन्द्रियाणां मरणसमयो विवक्षितः स च परभवायुषः प्रथमसमय एव तत्र च वर्त्तमानाश्चरमस-मयाः। *भग० ९६९।*

चरमसमयनियंठो– यश्चरमे-अन्तिमे समये वर्त्तमानः सः चर-मसमयनिर्ग्रन्थः। *उत्त० २५७।*

चरमाइं– चरमाणीति प्रश्नमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात्, प्रज्ञापनाया दशमं पदम्। *प्रज्ञा० ६।*

चराइं– चराणि अनियततिथिभावित्त्वात्। *जम्बू० ४९४।*

चरामि– आसेवयामि। *आव० ५६७।*

चरि– चारिः-आजीविका। *उत्त० ११९।* अचारिच्चरित्वा च। *उत्त० ४४८।*

चरिअ– चरिका-नगरप्राकारान्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः-द्वारं व्यक्तम्। *जम्बू० १०६।* गृहाणां प्राकारस्य चान्तरेऽष्टहस्त-विस्तारो हस्त्यादि सञ्चारमार्गश्चरिकाः। *अनुयो० १५९।*

चरिअकामो– चरितुं कामः-भक्षयितुं कामः। *ओघ० ३९।*

चरिआ– ग्रामादिष्वनियतविहारित्वम्। *समः ४१।* चरिका संदेशकारीणी दासी। *आव० ३४९।* चरिका-परिव्राजिका। *ओघ० १९४।*

चरित्त-चारित्रं– विरतिपरिणामरूपेण क्षायिकभावापन्नम्। *जम्बू० १५१।* चर्यते-मुमुक्षुभिरासेव्यते तदिति, चर्यते वा गम्यते अनेन निर्वृत्ताविति चरित्रं, अथवा चयस्य कर्मणां रिक्तीकर-णाच्चरित्रं निरुक्तन्यायादिति, चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूपः परिणामः। *स्था० २४।* चर्यते आसे-व्यते यत्तेन वा चर्यते-गम्यते मोक्ष इति चरित्रं-मूलोत्तरगुण-कलापः। *स्था० ५२।* चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चारित्रम्। *अनुयो० २२१।* चरन्तिगच्छन्त्यनेन मुक्तिमिति चरित्रम्। *उत्त० ५५६।* चारित्रं चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमोपशमजो जीवप-रिणामः। *भग० ३५०।* मूलोत्तरगुणरूपम्। *बृह० १७२अ।* चारित्रं-बाह्यं सदनुष्ठानम्। *राज० ११९।* चारित्रं-सावद्ययो-गनिवृत्तिलक्षणम्। *प्रश्न० १३२।* चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम्। *ओघ० ९।* चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं क्षयोपशमरूपं तस्य भावः। इहान्यजन्मोपाताष्टविधकर्मसञ्चयापचयाय चरणं चारित्रं, सर्वसावद्ययोगनिवृत्तिरूपा क्रियेत्यर्थः। *आव० ७८।* चारित्रम्। *आव० ७९३।* चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं क्षयो-पशमरूपं तस्य भावः चारित्रं अशेषकर्म्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थः। *दशवै० २३।* अनुष्ठानम्। *ज्ञाता० ८१।*

चरित्तकसायकुसील– यः कषायाच्छापं प्रयच्छति स

चारित्रे कुशीलः। *भग॰ ८९०।*

चरित्तधम्मे– चयरिक्तीकरणाच्चारित्रं तदेव धर्म्मश्चारित्रधर्म्मः। *स्था॰ ५१५।* चरित्रधर्म्मः-क्षान्त्यादिश्रमणधर्मः। *स्था॰ १५४।*

चरित्तधम्मो– चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं-क्षयोपशमरूपं तस्य भावश्चारित्रं अशेषकर्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थः, ततश्चारित्रमेव धर्मः चारित्रधर्मः। *दशवै॰ २३।* प्राणातिपातादिनिवृत्तिरूपः। *दशवै॰ १२०।*

चरित्तपज्जवे– चरित्रपर्यवाः-चारित्रभेदाः क्षायोपशमिका इति। *उत्त॰ ५९२।*

चरित्तपुलाए– पुलाकस्य तृतीयो भेदः, मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनया चारित्रं विराधयति। *भग॰ ८९०।*

चरित्तपुलात– चारित्रपुलाकः-पुलाकस्य तृतीयो भेदः। चारि-त्रनिस्सारत्वं य उपैति स पुलाकः। *उत्त॰ २५६।* मूलोत्तर-गुणप्रतिसेवनातश्चरणपुलाकः। *स्था॰ ३३७।*

चरित्तभावभासा– चारित्रभावभाषा-भावभाषाभेदः, चारित्रं प्रतीत्योपयुक्तैर्या भाष्यते सा। *दशवै॰ २०८।*

चरित्तविणओ– चारित्राद्विनयः, चारित्रविनयः। *दशवै॰ २४१।*

चरित्तवीरियं– असेसकम्मविदारणसामत्थं खीरादिलद्धुप्पाद-णसामत्थं च। *निशी॰ १९अ।*

चरित्तसंकिलेसे– चारित्रस्य सङ्क्लेशः अविशुद्धमानता स चारित्रसङ्क्लेशः। *स्था॰ ४८९।*

चरित्तायारे– चारित्राचारः-समितिगुप्तिभेदोऽष्टधा। *स्था॰ ३२५।* समितिगुप्तिरूपोऽष्टधा। *स्था॰ ६५।*

चरित्तिंदे– चरित्रेन्द्रः-यथाऽऽख्यातचारित्रः। *स्था॰ १०४।*

चरिमंत– चरमान्तः-अपान्तरालक्षणः। *जीवा॰ ९४।* चरम-रूपः पर्यन्तः। *जीवा॰ २८६।*

चरिमंतपएसा– चरिमाण्येवान्तवर्त्तित्वादन्ताश्चरिमान्तास्तेषां प्रदेशाः चरिमान्तप्रदेशाः। *भग॰ ३६६।*

चरिम– चरमोऽनन्तरभावी भवो यस्यासौ चरमः। *राज॰ ४७।* चरमः-यस्य चरमो भवः संभवी योग्यतयाऽपि सः, भव्यः। *प्रज्ञा॰ १४३।* चरमो भवो भविष्यति यस्य सोऽभेदाच्चरमो भव्यः। *प्रज्ञा॰ ३९५।* चरमसमयभावी-चतुर्थसमयभावीति। *प्रज्ञा॰ ५९९।* चरमभववान् भव्यविशेषः। *जीवा॰ ४४४।*

चरिमभव– चरमभवः-पश्चिमभवः। *प्रज्ञा॰ १०८।*

चरिमभवत्थ– चरमभवस्थः-भवचरमभागस्थः। *भग॰ १८१।*

चरिमा– वद्धमाणसामिणो सिस्सा। *निशी॰ ३५३अ।*

चरिमाचरमो– नारकभवेषु स एव भवो येषां ते चरमाः, नारक-भवस्य वा चरमसमये वर्त्तमानाश्चरमाः। *भग॰ ६००।*

चरिय– चरिका-नगरप्राकारयोरन्तरमष्टहस्तो मार्गः। *सम॰ १३७।* चरिका-अष्टहस्तप्रमाणो मार्ग्गः। *राज॰ ३।* चरितं-चेष्टनम्। *प्रश्न॰ ६२।* चरितः-सेवितः। *प्रश्न॰ ५१।* चरितं-यद्वृत्तम्। *दशवै॰ ३४।*

चरियव्वगं– चरणं-तृणादनम्। *आव॰ २२६।*

चरिया– चरणं चर्या ग्रामानुग्रामविहरणात्मिका। *उत्त॰ ८३।* नवमः परिषहः वर्जितालस्यो ग्रामनगरकुलादिष्वनियतव-सतिर्निर्ममत्वः प्रतिमासं चर्यामाचरेदिति। *आव॰ ६५६।* विहितक्रियासेवनम्। *उत्त॰ ८१।* दशविधचक्रवालसामाचारी इच्छामिच्छेत्यादिका। *सूत्र॰ ८८।* चरिका-नगरप्रकारयोर-न्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः। *प्रश्न॰ ८।* अष्टहस्तप्रमाणो नगर प्राकारान्तरालमार्गः। *औप॰ ३।* *जीवा॰ २५८, २६९।* *ज्ञाता॰ २।* चरिका। *आव॰ ६४०।* चरिका-परिव्राजिका। *व्यव॰ २०५आ।* ग्रहप्राकारान्तरो हस्त्यादिप्रचारमार्गः। *भग॰ २३८।* नगरप्राकारान्तराले हस्ताष्टकमानो मार्गः। *बृह॰ ५३अ।*

चरियाचरिए– चारित्राचारित्रं-देशविरतिः स्थूलप्राणातिपाता-दिनिवृत्तिलक्षणम्। *आचा॰ ६८।*

चरियारए– चर्यारताः-निरोधासहिष्णुत्वाच्चङ्क्रमणशीलाः। *आचा॰ ३६९।*

चरिसामि– चरिष्यामि-अनुष्ठास्यामि। *उत्त॰ ४०९।*

चरु– बलम्। *निर॰ २७।* स्थालीविशेषः। *औप॰ ९४।* चरुः-भाजनविशेषः। *भग॰ ५२०।*

चरे– चरेः-आसेवस्व। *उत्त॰ ३४१।* चरेत्-आसेवेत। *उत्त॰ ५९।* चरति-आचरति। *दशवै॰ २५५।* चरेत्-उद्युक्तो भवेत्। *आचा॰ १२२।* विदध्यात्। *आचा॰ १८०।* चरेत्-गच्छेत्। प्रवर्त्तेतेतियावत्। *उत्त॰ ४३०।*

चरेज्ज– चरेत्-सेवेत। *भग॰ ३६८।*

चर्चः– संहितादि चर्चः। *स्था॰ ३८।*

चर्मकारकोत्थः– क्रोधविशेषः। *आव॰ ३९१।*

चर्मदलं– चतुर्थं क्षुद्रकुष्ठम्। *आचा॰ २३५। प्रश्न॰ १६१।*

चर्म्मपक्षिणः– चर्ममयपक्षाः पक्षिणः, वल्गुलिप्रभृतयः। *स्था॰ २७३।* खचरप्रथमो भेदः। *सम॰ १३५।*

चर्मपक्षौ– चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ। *प्रज्ञा॰ ४९।*

चर्या– वहनं गमनमित्यर्थः। *स्था॰ २४०।*

चलंतं– स्वस्थानादन्यत्र गच्छन्। *स्था॰ ३८५।*

चलंतसंधि– चलन्तः-शिथिलीभवन्तः सन्धयो यस्मिंस्तत्। *उत्त॰ ३३४।*

चलं– श्लथम्। *स्था॰ २०९।* गन्तुं पथि प्रवृत्तः। *ओघ॰ २३।* अनियतविहारित्वात्। *आचा॰ २५८।* अवधिः, अनवस्थि-तश्च। *आव॰ २८।* गमनाभिमुखम्। *ओघ॰ १४१।* चलः-गमनक्रियायोगात् हारादिः। *आव॰ १८५।* चलो वायुराशुग-त्वात्। *जम्बू॰ २६५।*

चलइ– चलति-कम्पते। *जीवा॰ ३०७।* स्थानान्तरं गच्छति। *भग॰ १८३।*

चलचल– तवए पढमं जं घयं खित्तं तत्थ अण्णं घयं अप-क्खिवंती आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलचलेति। *निशी॰ १९६* आ।

चलचवलं– चलचपलं-अतिशयेन चपलम्। *प्रज्ञा॰ ९६। जीवा॰ १७२।*

चलणं– चलनं-मोटनम्। *ओघ॰ १७७।* चलनः-चलन-विषयको भगवत्याः प्रथमशतके प्रथमोद्देशकः। *भग॰ ५।*

चलणमालिआ– चरणमालिका-संस्थानविशेषकृतं पादाभरणं लोके पगडां इति प्रसिद्धम्। *जम्बू॰ १०६।*

चलणाओ– चलनकः, भगवत्याः प्रथमशतकदशमोद्देशः। *भग॰५।*

चलणाहण– पारिणामिकबुद्धौ षोडशो दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६५।*

चलणि– चलनप्रमाणः कर्दमश्चलनीत्युच्यते। *भग॰ ३०७।*

चलणिगा– मल्लचलणाकृतिः। *निशी॰ १७९* आ।

चलणी– चलनी। *ओघ॰ २०९।* चरणमात्रस्पर्शी कर्दमः। *जीवा॰ २८२।*

चलत– ईषत्कम्पमानम्। *जीवा॰ १८८।*

चलतोरणं– जेण वामं दक्खिणं वा चालिज्जति सो चल-तोरणं। *निशी॰ ६३* आ।

चलनकालः– उदयावलिका। *भग॰ १५।*

चलमाणे– चलत्-स्थितिक्षयादुदयमागच्छत् विपाकाऽभिमु-खीभवद्यत्कर्मेति प्रकरणगम्यं तत्। *भग॰ १५।*

चलसत्ते– चलं-अस्थिरं परीषहादिसम्पाते ध्वंसात् सत्त्वं यस्य स चलसत्त्वः। *स्था॰ २५१।*

चलहत्थो– णाम कंपणवाउणा गहितो। *निशी॰ १०१*अ।

चलाचल– चलाचलं-अप्रतिष्ठितम्। *दशवै॰ १७५।*

चलिः– परिस्पन्दनार्थः। *दशवै॰ ७०।*

चलिअ– चलितं-विलासवद्गतिः। *जम्बू॰ २६५।*

चलिए– चलनं-अस्थिरत्वपर्यायेण वस्तुन उत्पादः। *भग॰ १८।*

चलेमाणे– गच्छन्। *आचा॰ २६५।*

चवइ– च्यवते-अपयाति-चरति। *आचा॰ ४०९।*

चवणं– च्यवनं-पातः। *आचा॰ १६३।* उद्वर्त्तना। *जीवा॰ १३५।*

चवल– चपलं-उत्सुकतयाऽसमीक्षितम्। *प्रश्न॰ ११९।* चप-लत्वं कायस्य। *ज्ञाता॰ ९९।* चञ्चलम्। *ज्ञाता॰ १३८।* हस्तिग्रीवादिरूपकायचलनवत्। *प्रश्न॰ १२९।* चापल्यं-कायौत्सुक्यम्। *जम्बू॰ ३८८।* चपला कायतोऽपि। *ज्ञाता॰ ३६।* चपलः। *आव॰ १८५।*

चवलगं– चपलकम्। *आव॰ ६२२।*

चवलगा– धान्यविशेषः। *निशी॰ १४४* आ।

चवला– चपला-कायचापलोत्पेता। *भग॰ १६७।*

चवलाए– चपलया-कायचापल्येन। *भग॰ ५२७।*

चवलिअ– चपलितः। *जम्बू॰ १०१।*

चवेडा– चपेटा-करतलाघातः। *उत्त॰ ६२।* चपेटा-पञ्चाङ्गु-लीप्रहारः। *उत्त॰ ४६१।*

चव्वायं– चार्वाकः-रोमन्थायमाणः। *व्यव॰ २५५।*

चषकः– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६।*

चसक– चषकः-सुरापानपात्रम्। *जम्बू॰ १०१।*

चसूरि– विस्तारः। *भग॰ ७६०।* विस्तरः। *ओघ॰ ५। अनुयो॰ १३९। नन्दी॰ ३३।*

चाइया– शकिताः। *उत्त॰ ६२७।*

चाई– त्यागी-सङ्गत्यागवान्। *भग॰ १२२।* सर्वसङ्गत्यागः, संविग्नमनोज्ञसाधुदानं वा। *प्रश्न॰*

१५७।

चाउक्कालं– चतुष्कालं-दिवसरजनीप्रथमचरमप्रहरेष्वित्यर्थः। *आव॰ ५७६*।

चाउग्घंट– चतस्रो घण्टा अवलम्बमाना यस्मिन् सः। *ज्ञाता॰ ४५*। चतस्रो घण्टाः-पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च यस्य सः। *ज्ञाता॰ १३२*।

चाउजामो– चातुर्यामः-निर्वृत्तिधर्म एव। *आव॰ ५६३*।

चाउज्जामा– चतुर्महाव्रतानि। *भग॰ १०१*। चातुर्यामः-महा-व्रतचतुष्टयात्मको यो धर्मः। *उत्त॰ ४९९*।

चाउज्जायग– चातुर्जातकं-सुगन्धद्रव्यविशेषः। *उत्त॰ २१९*।

चाउज्जायगा– सुगंधदव्वं। *निशी॰ ३१८* आ।

चाउत्थजरो– चातुर्थज्वरः। *आव॰ ५५९*।

चाउत्थहिय– चातुर्थाहिकः-ज्वरविशेषः। *भग॰ १९८*।

चाउद्दसी– चतुर्दशी तिथिः। *ज्ञाता॰ १३९*।

चाउप्पायं– चतुष्पदा-भिषग्भैषजातुरप्रतिचारकात्मकचतुर्भा-(त्मकगा)ग चतुष्टयात्मिका। *उत्त॰ ४७५*।

चाउम्मासियं– चातुर्मासिकं-चतुर्मासातिचारनिर्वृत्तं प्रतिक्र-मणम्। *आव॰ ५६३*।

चाउरंगिज्जं– उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम्। *सम॰ ६४*। *निशी॰ ९* अ। चातुरङ्गीयम्। *दशवै॰ १०५*।

चाउरंत– चातुरन्तं-चतुर्गतिकम्। *प्रश्न॰ ९१*। चतुर्विभागं-संसारः। *ज्ञाता॰ ८९*। चतुरन्तः संसारः। *आव॰ ५४६*। चतुरन्तः-चतसृष्वपि दिक्ष्वन्तः-पर्यन्तः, एकत्र हिमवानन्यत्र च दिक्त्रये समुद्रः स्वसम्बन्धितयाऽस्येति। चतुर्भिर्वा हयग-जरथनरात्मकैरन्तः-शत्रुविनाशात्मको यस्य स। *उत्त॰ ३५०*। चतुर्विभागं नरकादिगतिविभागेन। *स्था॰ ४४*।

चाउरंतचक्कवट्टि– चतुर्षु-दक्षिणोत्तरपूर्वापररूपेषु पृथिवीप-र्यन्तेषु चक्रेण वर्तितुं शीलं यस्य स चातुरन्तचक्रवर्त्ती। *जम्बू॰ ५८*।

चाउरंतचक्कवट्टी– दिक्त्रयभेदभिन्नसमुद्रत्रयहिमवत् पर्वतपर्य-न्तसीमाचतुष्टयलक्षणा ये चत्वारोऽन्तास्तांश्चतुरोऽपि चक्रेण वर्त्तयति पालयतीति-चतुरन्तचक्रवर्त्ती-परिपूर्णषट्खण्ड-भरतभोक्ता। *अनुयो॰ १७१*।

चाउरंतमुक्ख– चतुरन्तमोक्षः-संसारविनाशः। *आव॰ ५४६*।

चाउरक्क– चातुरक्यं चतुःस्थानपरिणामपर्यन्तम्। *जीवा॰ २७८, ३५३*।

चाउलं– तन्दुलधावनम्। *बृह॰ २४६* आ।

चाउलणा– जहा आफासुयं अणेसणिज्जंति तेसिं चाउलणा कहिज्जतिं। *निशी॰ १४८* आ।

चाउलपलंवं– अर्द्धपक्वशाल्यादि कणादिकमित्येवमादिकम्। *आचा॰ ३४२*। तन्दुलाः-शालिव्रीह्यादेः त एव चूर्णीकृता-स्तत्कणिका वा। *आचा॰ ३२३*।

चाउललोट्टो– रोट्टः। *ओघ॰ १३७*।

चाउला– तन्दुलाः-शालिव्रीह्यादेः। *आचा॰ ३२३*।

चाउलोदग– तण्डुलोदकम्। *पिण्ड॰ १०*। तन्दुलोदकं-अट्ठिकरकम्। *दशवै॰ १७७*।

चाउलोदयं– तन्दुलधावनोदकम्। *आचा॰ ३४६*।

चाउवण्णं– चातुर्वर्ण्यं-ब्राह्मणादिलोकः। *भग॰ ६९०*।

चाउवन्न– चत्वारो वर्णाः-प्रकाराः श्रमणादयो यस्मिन् स तथा स एव स्वार्थिकाण्विधानाच्चातुर्वर्णः। *स्था॰ ३२१*।

चाउव्वण्णाइण्णे– चत्वारो वर्णाः-श्रमणादयः समाहृता इति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेनाकीर्णः-आकुलश्चातुर्वर्ण्याकीर्णः, अथवा चत्वारो वर्णाः-प्रकारा यस्मिन् स तथा, दीर्घत्वं प्राकृत्वात्, चतुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिभिर्महागुणैरिति चतुर्वर्णाकीर्णः। *स्था॰ ५०३*।

चाउव्वण्णाइन्ने– चातुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिगुणैरिति चातुर्वर्णाकीर्णः। *भग॰ ७११*।

चाउवेज्ज– चातुर्वैद्यः। *आव॰ १०३, ६९५*।

चाउव्वेज्जभत्तं– चातुर्वैद्यभक्तम्। *आव॰ ८२४*।

चाउसालए– चतुःशालकं-भवनविशेषः। *जम्बू॰ ३९१*।

चाउस्सालं– चतुःशालम्। *ओघ॰ ४६*। गृहम्। *बृह॰ १४८*।

चाएइ– शक्नोति। *आव॰ ७०३*।

चाक्रिकः– यान्त्रिकः। *ओघ॰ ७५*।

चाटुयार– चाटुकरः-मुखमङ्गलकरः। *प्रश्न॰ ३०*।

चाडु– चाटु। *आव॰ ९३*।

चाटुकर– चाटुकरः। *प्रश्न॰ ५६*।

चाडुयं– हावभावम्। *जीवा॰ ६९६*।

चाणक्क– चाणक्यः-कौटिल्यः। *दशवै॰ ५२, ९१*। पाशके

दृष्टान्तः। *आव॰ ३४२*। चन्द्रगुप्तमन्त्री। *निशी॰ ४* आ। नीतिकारः-कौटिल्यः। चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तमन्त्री। *पिण्ड॰ १४२*। उपायेनार्थोपार्जनकारको ब्राह्मणः। *दशवै॰ १०७*। विमर्शदृष्टान्ते नीतिकारो द्विजन्मा। *आव॰ ४०५*। प्रशंसाविषये पाटलीपुत्रे चन्द्रगुप्तराजमन्त्री। *आव॰ ८१७*। गोब्बरग्रामे सुबन्धुना दग्धः। *मरण०*। सुबन्धुप्रदीपितः। *भक्त०*। पाडलीपुत्ते मंती। *निशी॰ १०२*। *निशी॰ ११९*। चाणक्यः-पाटलीपुत्रनगरे मन्त्री। *व्यव॰ १४०* आ। चाणक्यः-शचुदग्धोऽनशनी। *संस्ता०*। चाणक्यः-संन्यासे दृष्टान्तः। *व्यव॰ २५६*। *स्था॰ २८२*। पारिणामिकबुद्धौ द्वादशो दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६७*।

चाणूरः– कंसराजसम्बन्धी एतदभिधानो मल्लः। *प्रश्न॰ ७४*।

चातुरंतसंसारकंतारो– चातुरंतसंसारकान्तारः। *आव॰ ७९३*।

चामरगंडा– चामरदण्डाः। *ज्ञाता॰ ५८*।

चामरच्छायं– चामरच्छायनं-स्वातीगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००*।

चामरधारपडिमाओ– चामरधारप्रतिमाः। *जम्बू॰ ८१*।

चारंचरइ– चारञ्चरति-मण्डलगत्या परिभ्रमति। *जीवा॰ ३७७*।

चार– चरन्ति-भ्रमन्ति, ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो-ज्योतिश्चक्रक्षेत्रं समस्तमेव। *स्था॰ ५८*। नियुक्ताः। *निशी॰ १०६* अ। चरणं चारः-अनुष्ठानम्। *आचा॰ २१२*। विहारः। *भग॰ ३*। ज्योतिषामवस्थानक्षेत्रम्। *भग॰ ३९४*। *स्था॰ ५८*। चारः-ज्योतिश्चारस्तद्विज्ञानम्। *जम्बू॰ १३९*। मण्डलगत्यापरिभ्रमणम्। *जीवा॰ ३७८*। *जम्बू॰ ४६२*। चरणम्। *प्रश्न॰ ९५*। फलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२८*। चारं-परिभ्रमणम्। *सूर्य॰ ११*। चारः। *ज्ञाता॰ ३८*।

चारग– चारकः-गुप्तिः। *प्रश्न॰ ६०*। *औप॰ ८७*। गुप्तिगृहम्। *प्रश्न॰ ५६*। बन्धनगृहम्। *आव॰ ११४*।

चारगपरिसोहणं– चारगशोधनम्। *ज्ञाता॰ ३७*।

चारगपाले– चारकपालः-गुप्तिपालकः। *विपा॰ ७१*।

चारगबंधणं– चारकबन्धनम्। *सूत्र॰ ३२८*।

चारगभंडे– चारकभाण्डः-गुप्त्युपकरणम्। *विपा॰ ७१*।

चारगभडिया– चारकभट्टिनी, भर्तृका। *आव॰ ९३*।

चारगवसहि– चारकवसति-गुप्तिगृहम्। *प्रश्न॰ ५६*।

चारट्ठिइए– चारस्य-यथोक्तस्वरूपस्य स्थितिः-अभावो यस्य स चारस्थितिकः-अवगतचारः। *सूर्य॰ २८१*।

चारट्ठिइओ– चारकस्थितिकः-चारस्य स्थितिः-अभावो यस्य सः, अपगतचारः। *जीवा॰ ३४६*।

चारट्ठितीया– चारे-ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषां ते चार-स्थितिकाः-समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय इत्यर्थः। *स्था॰ ५७*।

चारणगणे– नव गणे चतुर्थो गणः। *स्था॰ ४५१*।

चारणा– अतिशयचरणाच्चारणाः-विशिष्टाकाशगमनलब्धि-युक्ताः। *प्रश्न॰ १०५*। चारणाः-जङ्घाचारणादयः। *ज्ञाता॰ १००*। चरणं-गमनमतिशयवदाकाशे एषामस्ति इति चारणाः। *भग॰ ७९४*। ऋद्धिप्राप्तार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५५*। जङ्घाचारणा विद्याचारणाश्च। *समः ३४*। चारणा-जङ्घाचारणविद्याधराः। *जीवा॰ ३४४*। चरणं-गमनं तद्विद्यते येषां ते चारणाः। *प्रज्ञा॰ ४२४*।

चारणिका– अनेकशो भिन्नाः। *ओघ॰ २६*।

चारते– चारकं-गुप्तिगृहम्। *स्था॰ ३९८*।

चारपुरिसो– चारपुरुषः। *उत्त॰ २१४*।

चारभट– सूर। *प्रश्न॰ ११६*। भटः, बलात्कारप्रवृत्तिः। *औप॰ २*। शूरः। *उत्त॰ ३४९*, *४३४*। *आचा॰ ३५३*।

चारभड– अबलगकादयः। *ओघ॰ ९२*। चारभटः। *प्रश्न॰ ३०*, *५६*। औघ० *१६३*।

चारभडओ– चारभटः। *आव॰ ८३१*।

चारभडा– स्वामिभटाः। *पिण्ड॰ १११*। सेवगा। *निशी॰ ३५८* अ। चारभटाः-राजपुरुषाः। *बृह॰ ३११* अ।

चारविसेसे– चारविशेषः। *सूर्य॰ २७६*।

चारवृक्षः– यस्मिन् चारकुलिका उत्पद्यन्ते। *अनुयो॰ ४७*।

चारस्थितिकाः– समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतयः। *स्था॰ ५८*।

चारा– हेरिकाः। *भग॰ ४*।

चारि–तृणाति। *आव॰ १८९*। चारिकः। *आव॰ २०२*। चरः। *उत्त॰ १२२*। हेरिकः। *बृह॰ ४०* आ।

चारिए– चारिकः। *आचा॰ ३८८*।

चारिगा– चारिका। *उत्त॰ १६२*।

चारित– चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं-क्षयोपशमरूपं तस्य भावः चारित्रं,

इहान्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्मसञ्चयाय चरण-भावश्चारित्रं, सर्वसावद्ययोगविनिवृत्तिरूपा क्रिया वा। *आव॰ ५९२*। अण्णणोवचियस्स कम्मचयस्स रित्तीकरणं चारित्तं। *निशी॰ १८* आ। चयस्य-राशेः प्रस्तावात्कर्मणां रिक्तं-विरेकोऽभाव इतियावत् तत्करोतीत्येवंशीलं चयरिक्त-करं चारित्रम्। *उत्त॰ ५६९*। चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम्। *ओघ॰ ९*। बाह्यं सदनुष्ठानम्। *ज्ञाता॰ ७*।

चारित्तबलिय– चारित्रबलिकः। *औप॰ २८*।

चारित्तभट्ठो– चारित्रभ्रष्टः-अव्यवस्थितपुराणः। *आव॰ ५३३*।

चारित्र– आर्यभेदः। *सम॰ १३५*। *स्था॰ ३३७*।

चारित्रतः– शापं ददत् चारित्रतः। *स्था॰ ३३७*।

चारित्रधर्मः– चारित्रसम्बन्धी धर्मः। *आव॰ ७८८*।

चारित्रधर्माङ्गिनि– संयमात्मप्रवचनानि। *भग॰ ९*।

चारित्रभेदाः– क्षपणवैयावृत्त्यरूपाः। *स्था॰ ३८१*।

चारित्रर्द्धिः– निरतिचारता। *स्था॰ १७३*।

चारित्रसमाधिप्रतिमा– समाधिप्रतिमाया द्वितीयो भेदः। *सम॰ ९६*। *स्था॰ ६५*।

चारित्रोपसम्पत्– वैयावृत्यकरणार्थं क्षपणार्थं चोपसम्पद्यमा-नस्य। *स्था॰ ५०१*। वैयावृत्त्यविषया क्षपणविषया च। *आव॰ २६८*।

चारिय– चारिकः-हैरिकः। *प्रश्न॰ ३०*। प्रणिधिपुरुषः। *प्रश्न॰ ३८*।

चारिया– चारिका। *आव॰ ३१६*।

चारी– चीर्णवान्-विहृतवान्। *आचा॰ ३१०*।

चारीभंडिय– चारीभण्डिकः। *ओघ॰ १४८*।

चारु– चारुः-प्रहरणविशेषः। *राज॰ ११३*। प्रहरणविशेषः। *जीवा॰ २६०*।

चारुदत्त– यो वेत्रवतीं नदीमुत्तीर्य परकुलं गतः। नामविशेषः। *सूत्र॰ १९६*। चारुदत्तः-ब्रह्मदत्तपत्न्या-वच्छयाः पिता। *उत्त॰ ३७९*।

चारुपीणया– चारुपीनका। *जम्बू॰ १०१*।

चारुपीनकः– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६*।

चारुवण्णो– चारुवर्णः सत्कीर्त्तिः गौराद्युदात्तशरीरवर्णयुक्तः सत्प्रज्ञो वा। *औप॰ ३३*।

चारू– चारुः-शोभनः। *सूर्य॰ २९४*। *सम॰ १५२*।

चारोपपन्नकाः– ज्योतिष्काः। *स्था॰ ५८*।

चारोवगो– चारोपगः-चारुयुक्तः। *जीवा॰ ३४०*।

चारोववन्नगा– ज्योतिश्चक्रचरणोपलक्षितक्षेत्रोपपन्नाः। *भग॰ ३९४*। चरन्ति-भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो-ज्योतिश्चक्रक्षेत्रं समस्तमेव। तत्रोपपन्नकाश्चारोपपन्नकाः- ज्योतिष्काः। *स्था॰ ५७*।

चारोववन्नो– चारः-मण्डलगत्या परिभ्रमणमुपपन्नाः-आश्रि-तवन्तश्चारोपपन्नः। *जीवा॰ ३४६*।

चार्वाकिः– यथा वृषनेत्रं वृषसागारिकं नीरसमरो वृषभश्चर्वयति एवं यः कार्यः रोमन्थायमाणो निष्फलं रचयन् तिष्ठन्-चर्वण-शीलः चार्वाकिः। *व्यव॰ २५६* अ।

चालणा– क्वचित्किञ्चिदनवगच्छन् पृच्छति शिष्यः कथमेत-दिति इयमेव चालना। *दशवै॰ २१*। दूषणं चाल्यते-आक्षिप्यते यया वचनपद्धत्या सा चालना। *बृह॰ १३६* अ। सूत्रार्थ-गतदूषणात्मिका। *उत्त॰ २०*।

चालना– सूत्रस्य अर्थस्य वा अनुपपत्त्युद्भावनं चालना। *अनुयो॰ २६३*।

चालनी– यया कणिक्कादि चाल्यते चालनी। *आव॰ १०२*।

चालित्तए– भङ्गकान्तरगृहीतान् भङ्गकान्तरेण कर्त्तुम्। *ज्ञाता॰ १३९*।

चालिया– चालिताः-इतस्ततो विक्षिप्ता। *जम्बू॰ ३७*।

चालेति– चालयति-स्थानान्तरनयनेन। *ज्ञाता॰ ९४*।

चालेमाणो– चलन्-शरीरस्य मध्यभागेन सञ्चरन्। *जीवा॰ १२०*।

चाव– चापाः-कोदण्डः। *जम्बू॰ २०६*। चापं-धनुः। *जीवा॰ २७३*।

चाववंसे– पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

चावियं– च्यावितं-आयुःक्षणेयं भ्रंशितम्। *प्रश्न॰ १५५*।

चास– पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ६५२*। चाषः-पक्षिविशेषः। *आव॰ ६८७*। *प्रज्ञा॰ ३६०*। किकिदीवी। पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

चासपिच्छए– चासस्य पत्रम्। *प्रज्ञा॰ ३६०*।

चासा– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

चिंचइअं– (देशी०) खचितम्। *आव॰ १८०*।

चिंचणिकामयी– अम्बिलिकामयी। *ओघ॰ ३०*।

चिंचतिया– दीप्ताः। *निशी॰ ३४८* अ।

चिंचापाणग– पानकविशेषः। *आचा॰ ३४७*।

चिञ्चापानकम्। *बृह॰ २५३* अ।

चिंचियंत– चिंचिकुर्वन् सर्पेण ग्रस्यमानः शब्दायमानो मण्डुकः। *उत्त॰ ५२२*।

चिंचियायंतं– चिंचिमिति कुर्वन्तम्। *उत्त॰ ५२१*।

चिंतनिका– परिभावनीयः। *स्था॰ ३४९*।

चिंता– चिन्ता-पूर्वकृतानुस्मरणम्। *भग॰ १८०*। मनश्चेष्टा। *आव॰ ५८३*। ततो मुहुर्मुहुक्षयोपशमविशेषतः स्वधर्मानुगत-सद्भूतार्थविशेषचिन्तनं चिन्ता। *नन्दी॰ १७६*। कथमिदं भूतं कथं चेदं सम्प्रति कर्त्तव्यं कथं चैतद्भविष्यतीति पर्यायलोच-नम्। *नन्दी॰ १९०*।

चिंतापसंग– चिन्ताप्रसंगः-चिन्तासातत्यम्। *प्रश्न॰ ६१*। *औप॰ ४६*।

चिंतासुविणे– जाग्रदवस्थस्य या चिन्ता-अर्थचिन्तनं तत्संद-र्शनात्मकः स्वप्नश्चिन्तास्वप्नः। *भग॰ ७०९*।

चिंतिए– चिन्तितः-स्मरणरूपः। *भग॰ ११५, ४६३*। चिन्तितः। *विपा॰ ३८*। चिन्तितः चिन्तारूपश्चेतसोऽनव-स्थितत्वात्। *जम्बू॰ २०३*।

चिंतिय– चिन्तितं-अपरेण हृदि स्थापितम्। *ज्ञाता॰ ४१*।

चिंतियाइओ– चिन्तितवान्। *आव॰ १५२*।

चिंतेमि– चिन्तयामि-युक्तिद्वारेणापि परिभावयामि। *प्रज्ञा॰ २४६*।

चिंधं– चिह्नं स्वस्तिकादि। *आव॰ ३२१*। लाञ्छनम्। *ज्ञाता॰ २२२*।

चिंधत्थी– चिह्न्यते-ज्ञायतेऽनेनेति चिह्नं स्तननेपथ्यादिकं, चिह्नमात्रेण स्त्री चिह्नस्त्री, अपगतस्त्रीवेदछद्मस्थः केवली वा, अन्यो वा स्त्रीवेषधारी। *सूत्र॰ १०२*।

चिंधद्धय– चिह्नध्वजः-चक्रादिचिह्नप्रधानध्वजः। *भग॰ ३१९*।

चिंधपट्ट– चिह्नपट्टः-योधतासूचको नेत्रादिवस्त्ररूपः-सौवर्णो वा पट्टो येन सः। *भग॰ १९३*। ध्वजपटः। *ज्ञाता॰ २७*। चिह्नपट्टः योधचिह्नपट्टः। *भग॰ ३१८*। नेत्रादिमयः। *विपा॰ ४७*। नेत्रादिचीवरात्मकः। *प्रश्न॰ ४७*।

चिंधपुरिसे– पुरुषचिन्हैः-श्मश्रुप्रभृतिभिरुपलक्षितः पुरुषश्चि-ह्नपुरुषः। *स्था॰ ११३*।

चिंधिअ– दर्शितः। *आव॰ ९२*।

चिंधे– चिंधपुरिसे-चिह्नपुरुषः। अपुरुषोऽपि पुरुषचिह्नोपल-क्षितः। *आव॰ २७७*।

चिह्नं– केतम्। *आव॰ ८४१*।

चिअं– चितं-इष्टिकादिरचितं प्रासादपीठादि। *अनुयो॰ १५४*।

चिअत्ते– मनःप्रणिधानम्। *दशवै॰ १८०*।

चिइ– कुशलकर्मणश्चयनं चितिः, रजोहरणाद्युपधिसंहतिः। *आव॰ ५११*।

चिइया– चितिका-शस्त्रविशेषः। *आव॰ ६५१*।

चिई– चयनं चितिः-प्रवेशनम्। *आव॰ ४७४*। चियन्ते मृतक-दहनाय इन्धनानि अस्यामिति चितिः-काष्ठरचनात्मिका। *उत्त॰ ३८९*।

चिउरंगरागो– चिकुराङ्गरागः-चिकुरसंयोगनिमितो वस्त्रादौ रागः। *जीवा॰ १९१*।

चिउरंगराते– चिकुराङ्गरागः-चिकुरसंयोगनिर्मितो वस्त्रादौ रागः। *राज॰ ३३*।

चिउर– चिकुरः-रागद्रव्यविशेषः। *जम्बू॰ ३४*। *जीवा॰ १९१*। पीतद्रव्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६१*। चिकुरो-रागद्रव्य-विशेषः। *राज॰ ३३*।

चिउररागे– चिकुररागः-चिकुरनिष्पादितो वस्त्रादौ रागः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

चिए– चयः-प्रदेशानुभागादेर्वर्धनम्। *भग॰ ५३*।

चिक्कण– अन्योन्यानुवेधेन गाढसंश्लेषरूपः। *पिण्ड॰ २७*। चिक्कणं-दुर्विमोचम्। *प्रश्न॰ २२*। दारुणम्। *दशवै॰ २०६*।

चिक्कणिका– नोकर्मद्रव्यलोभः, आकारमुक्तिः। *आव॰ ३९७*।

चिक्कणीकय– चिक्कणीकृतं-सूक्ष्मकर्मस्कन्धानां सरसतया परस्परं गाढसम्बन्धकरणतो दुर्भेदीकृतम्। *भग॰ २५१*।

चिक्खल– सकर्दमः प्रदेशः। *ओघ॰ २१९*।

चिक्खलगोलए– कर्दमगोलः। *दशवै॰ ९४*।

चिक्खल्ल– शुष्कः। *ओघ॰ २९*। यत्र निमज्जनं स्यातु सः चिक्खल्लः। *ओघ॰ २९*। चिदिति करोति खल्लं च भवतीति चिक्खल्लम्। *अनुयो॰ १५०*। कर्दमः संसार पक्षे विषयधनस्व-जनादिप्रतिबन्धः। *सम॰ १२७*। कर्दमः। *दशवै॰ ८७*। *उत्त॰ १२८*। *प्रज्ञा॰ ८०*। *आव॰ १९९, ६२१, ६२४*। *व्यव॰* ९ आ।

चिच्चं– चिच्चं नाम च्युतं वानमित्यर्थः, विशिष्टवानम्। *जीवा॰ २३१*। चिच्चं नाम व्यूतं विशिष्टं वानमित्यर्थः। *जम्बू॰ २८५*।

चिच्ची– चित्कारः। *विपा॰ ५०*।

चिज्जंति– चीयन्त बन्धनतः, निधत्ततो वा। *भग॰ २५३*।

चिट्ठं– भृशमत्यर्थम्। *आचा॰ १८४*।

चिट्ठइ– तिष्ठति-ऊद्र्ध्वस्थानेन वर्तते। *जीवा॰ २०१*।

चिट्ठा– चेष्टा-व्यापाररूपा। *आव॰ ७८५*।

चिट्ठित्तु– स्थातुं-कायोत्सर्गं कर्त्तुम्। *आव॰ २७१*।

चिट्ठियव्वं– शुद्धभूमौ ऊद्र्ध्वस्थानेन स्थातव्यम्। *ज्ञाता॰ ६१*।

चिट्ठिस्सामो– स्थास्यामः-वर्त्तिष्यामः। *ज्ञाता॰ १५९*।

चिट्ठे– तिष्ठन्-ऊर्ध्वस्थानेनासमाहितो हस्तपादादि विक्षिपन्। *दशवै॰ १५६*। स्थातव्यम्। *ओघ॰ २२*।

चिट्ठेज्जा– तिष्ठेत्-ऊर्ध्वस्थानेनाऽवतिष्ठेत्। *प्रज्ञा॰ ६०६*।

चिट्ठेमाणे– चेष्टयन्-व्यापारयन् चेष्टमानो वा। *भग॰ ५४*।

चिडगा– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*। *प्रज्ञा॰ ४९*।

चिडिग– चिटिकाः-कलम्बिकाः, पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

चिण– आसंकलनतः चितवन्तः। *स्था॰ १७९*।

चिणविसए– देशविशेषः। *निशी॰ २५५अ*।

चिणाइ– अनुभागबन्धापेक्षया निधत्तावस्थाऽपेक्षया वा। *भग॰ १०२*।

चिणिंसु– तथाविधापरकर्म्मपुद्गलैश्चित्तवन्तः-पापप्रकृतीर-ल्पप्रदेशा बहुप्रदेशीकृतवन्तः। *स्था॰ २८९*।

चितं– बद्धम्। *ओघ॰ १८०*।

चिति– चयनं चितिः, इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचयः। *उत्त॰ ३०९*। चितिः भित्यादेश्चयनं, मृतकदहनार्थं दारुविन्यासो वा। *प्रश्न॰ ८*।

चितीकया– चैत्यत्वेन स्थापिता। *बृह॰ २६ आ*।

चित्तंग– चित्राङ्गाः-पुष्पदायिनः। *सम॰ १८*।

चित्तंगओ– चित्राङ्गकः-द्रुमगणविशेषः। *जीवा॰ २६७*।

चित्तंगा– चित्रस्य-अनेकविधस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य कारणत्वाच्चित्राङ्गाः। *स्था॰ ३४८, ५१७*। चित्रस्य अने-कप्रकारस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य अङ्गं-कारणं तत्स-म्पादकत्वाद् वृक्षा अपि चित्राङ्गाः। *जम्बू॰ १०४*। *आव॰ १११*।

चित्तंतरलेसागा– चित्रमन्तरं लेश्या च प्रकाशरूपा येषां ते चित्रान्तरलेश्याकाः। *सूर्य॰ २८१*। *जीवा॰ ३४१*।

चित्तं– चित्रं-अद्भुतम्। *जीवा॰ १६४*। आश्चर्यभूतम्। *जीवा॰ १७५*। आलेखः। *जीवा॰ १८९, २१४*। चित्रं-नानारूपम्। *जीवा॰ २०५*। इत्थीमादीरूवं दट्ठुं तदंगावयवसरुवचिंतणं चित्तं। *निशी॰ १*। किलिञ्जादिकं वस्तु। *अनुत्त॰ ५*। चैतन्यम्। *सम॰ १८*। मनोविज्ञानं च। *अनुयो॰ ३९*। भावमनः। *औप॰ ६०*। चित्रं-अनेकरूपवत् आश्चर्यवद्वा। *सूर्य॰ २६३*। एगतरवण्णुज्जलं। *निशी॰ २५३*। चित्रः-श्रीदामराज-स्यालङ्कारिविशेषः। *विपा॰ ७०*। चित्रकूटः – पर्वतविशेषः। *प्रश्न॰ ९६*। शङ्खराजभागिनेयः। *आव॰२१४*। नानारूपः आश्चर्यवान् वा। *जीवा॰ २०९*। पर्वतविशेषः। *जम्बू॰ ३५४*। वाराणस्यां ब्रह्मदत्तजीवसंभूतचण्डालज्येष्ठभ्राता। *उत्त॰ ३७६*। चित्रः-कर्बुरः। *उत्त॰ ३०५*। प्रदेशीराज्ञो मन्त्रि। *निर॰ ९, १५, ४०*। चित्रं-अनेकविधः। *स्था॰ ५१७*। चित्रः ब्रह्मदत्तराज्ञीविद्युन्मालाविद्युन्मतीपिता। *उत्त॰ ३७९*। चित्तं-सामान्योपयोगरूपम्। *भग॰ ८९*। प्रदेशीराज्ञः सारथिनाम। *राज॰ ११५*। चित्तं-त्रिकालविषयं-ओघतोऽ–तीतानागतवर्तमानग्राहि। *दशवै॰ १२५*। चित्रं-आलेखः। *जम्बू॰ ३२*। *स्था॰ १९७*। चेतयति येन तच्चित्तं-ज्ञानम्। *आचा॰ ६६*। चित्रकूटपर्वतः। *भग॰ ६५४*।

चित्तकम्मे– चित्रकर्म्म-चित्रलिखितं रूपकम्। *अनुयो॰ १२*।

चित्तकणगा– द्वितीया विद्युत्कुमारीमहत्तरिकाया नाम। *स्था॰ १९८*। चित्रकनका। *जम्बू॰ ३९१*। विदिग्रुचकवास्तव्या-विद्युत्कुमारीस्वामिनी। *आव॰ १२२*।

चित्तकम्माणि– चित्रकर्माणि। *आचा॰ ४१४*।

चित्तकरसेणी– चित्रकरश्रेणिः। *आव॰ ५५८*।

चित्तकारे– चित्रकारः-शिल्पभेदः। *अनुयो॰ १४९*।

चित्तकूड– चित्रकूटः-पर्वतविशेषः। *आव॰ ८२७*। चित्रकूट-पर्वतः। *जम्बू॰ ३०८, ३५४*। *स्था॰ ८०*। सीतामहानद्यः उत्तरे द्वितीयो वक्षस्कारपर्वतः। *स्था॰ ३२६*। चीत्रकूटम्। *जम्बू॰ ३४४*। पर्वतनाम। *स्था॰ ७४, १२६*। गिरिवि-

शेषः। *जम्बू॰ १६८। भग॰ ३०७।* विजयविभागकारिणः पर्वतविशेषः। *प्रश्न॰ ९६।*

चित्तगरसेणी– चित्रकृच्छ्रेणि। *आव॰ ६४।*

चित्तगा– सनखपदचतुष्पदविशेषाः। *प्रज्ञा॰ ४५।* चित्रकाः-सनखपदचतुष्पदविशेषाः, आरण्यजीवविशेषाः। *जीवा॰ ३८।*

चित्तगुत्ता– चित्रगुप्ता-दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२।* दक्षिणरुचकवास्तव्या सप्तमी दिक्कुमारीमह-त्तरिका। *जम्बू॰ ३९१। भग॰ ५०३। स्था॰ २०४।*

चित्तघरगं– चित्रगृहकं-चित्रप्रधानं गृहकम्। *जीवा॰ २००।*

चित्तघरगा– चित्रप्रधानानि गृहकाणि। *जम्बू॰ ४५।*

चित्तजीवो– चित्तमंतो। *दशवै॰ ६०।*

चित्तनिवाई– चित्तं-आचार्याभिप्रायस्तेन निपतितुं-क्रियायां प्रवर्त्तितुं शीलमस्येति चित्तनिपाती। *आचा॰ २१५।*

चित्तपक्खा– चतुरिन्द्रियजीवविशेषाः। *जीवा॰ ३२। प्रज्ञा॰ ४२। स्था॰ १९७।*

चित्तपडयं– चित्रपटकम्। *आव॰ ६७७।*

चित्तपत्तए– चतुरिन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९६।*

चित्तफलयं– चित्रफलकम्। *आव॰ १९९।*

चित्तभित्ति– चित्रभित्तिः-चित्रगता स्त्री। *दशवै॰ २३७।*

चित्तमंत– चित्रमात्रा-स्तोकचित्तेत्यर्थः। *दशवै॰ १३८।* चित्तवान्-आत्मवान्। *दशवै॰ १४०।*

चित्तरक्खट्ठा– चित्तरक्षार्थं-मनोऽन्यथाभावनिवारणार्थं दाक्षि-ण्याद्युपेतः। *पिण्ड॰ ४६।*

चित्तरसा– चित्रो-मधुरादिभेदभिन्नत्वेनानेकप्रकार आस्वाद-यितृणामाश्चर्यकारी वा रसो ये ते। *जम्बू॰ १०४।* चित्रा-विविधा मनोज्ञा रसा-मधुरादयो येभ्यस्ते चित्तरसा भोज-नाङ्गा इति भावः। *स्था॰ ५१७।* भोजनदायिनः। *सम॰ १८। आव॰ १११।* चित्रा-विचित्रारसा मधुरादयो मनोहारिणो येभ्यः सकाशात् सम्पद्यन्ते ते चित्ररसाः। *स्था॰ ३९९।* चित्ररसः-द्रुमगणविशेषः। *जीवा॰ २६८।*

चित्तलंग– चित्तलाङ्गाः-कर्बुरावयवाः। *भग॰ ३०८।*

चित्तलगा– सनखपदश्चतुष्पदविशेषाः। आरण्यजीवविशेषाः। *जीवा॰ ३८।*

चित्तलया– विविधवर्णवस्त्राणि। *गच्छा॰।*

चित्तलिणो– मुकुली-अहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।*

चित्तविचित्त– चित्रविचित्रं-मनोहारिचित्रोपेतम्। *जीवा॰ १९२।* एगतरेण वा णणण्णउज्जलो विचित्तो दोहिं वण्णेहिं चित्तवि-चित्तो। *निशी॰ २२९ अ।*

चित्तविभ्रमः– चित्तविलुप्तिः। *ओघ॰ २११।*

चित्तविलुत्ती– चित्तविलुप्तिः-चित्तविभ्रमः। *ओघ॰ २११।*

चित्तसंभूइ– चित्रसंभूतिः-उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम्। *उत्त॰ ९।*

चित्तसंभूयं– उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम्। *सम॰ ६४।*

चित्तसभा– चित्रसभा-चित्रकर्मवन्मण्डपः। *प्रश्न॰ ८। आव॰ ६३।*

चित्तसालं– चित्रशालम्। *जीवा॰ २६९।*

चित्तसालयघर– चित्रशालगृहं-चित्रकर्मवद्गृहम्। *जम्बू॰ १०६।*

चित्तसेणओ– चित्रसेनकः-ब्रह्मदत्तपत्न्या भद्रायाः पिता। *उत्त॰ ३७९।*

चित्तसुद्धे– चैत्रशुक्लः। *ज्ञाता॰ १५४।*

चित्ता– नानारूपा आश्चर्यवन्तो वा। *जम्बू॰ ५४।* चित्राविदि-ग्रुचकवास्तव्याविद्युतकुमार्यः स्वामिनी। *आव॰ १२२।* मुसिता। *निशी॰ ४०* आ। चित्रा-चित्रवन्तः आश्चर्य-वन्तो वा। *सम॰ १३९। भग॰ ५०५।* चित्रा-द्वादशं नक्षत्रम्। *स्था॰ ७७। सूर्य॰ १३०।* प्रथमा विद्युत्कुमारीमहत्तरिका। *स्था॰ १९८, २०४।* चित्रा। *जम्बू॰ ३९१।* कर्बुरा। *ज्ञाता॰ १३९।*

चित्ताचिल्लडय– आरण्यो जीवविशेषः। *आचा॰ ३३८।*

चित्ताणुय– चित्तानुगः-चित्तं-हृदयं प्रेरकस्यानुगच्छति-अनु-वर्त्तयतीति। *उत्त॰ ४९।*

चित्तानुशयः– मनःप्रद्वेषः। *उत्त॰ ३६८।*

चित्तामूलं– चित्रमूलम्। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

चित्तारा– शिल्पार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

चित्तावरक्खा– चित्तावरक्षा। *आव॰ २२१।*

चित्रक– एकवर्णः। *निशी॰ पं॰ २२९ आ।*

चित्रक्षुल्लकः– लब्धकामार्थे दृष्टान्तः। *आचा॰ २०१।*

चित्रा– त्वाष्ट्रीत्यपरनाम। *जम्बू॰ ४९९।*

चिद्ध– चिह्नं-पिशाचकेतुः। *ज्ञाता० १३८।*

चिन्नं– चीर्णम्। *सूर्य० २१।*

चिपिड– चिपटा-निम्ना। *ज्ञाता० १३८।*

चिप्पिउं– चिप्पित्वा-कुट्टयित्वा। *बृह० २०३* अ।

चिप्पित– कुट्टिया। *निशी० ६३* आ।

चियं– चित्तं-उत्तरोत्तरस्थितिषु प्रदेशहान्या रसवृद्ध् याऽव-स्थापितः। *प्रज्ञा० ४५९।* चित्तः-शरीरे चयं गतः। *भग० २४।* चितः-धान्येन व्याप्तः। *अनुयो० २२३।*

चियगा– चितिः। *प्रश्न० ५२।* चितिका। *आव० ६७५।*

चियट्ठाणं– चितस्थानम्। *आव० ५६०।*

चियत्त– लक्षणोपेततया संयतः। *भग० ९२४।* त्यक्तः, प्रीति-विषयो वा। *भग० ४९८।* संयमोपकारकोऽयमिति प्रीत्या मलिनादावप्रीत्यकरणं वा। *स्था० १४९।* प्रीतिकरः, नाप्री-तिकरः। *राज० १२३।* नाप्रीतिकरः। *ज्ञाता० १०९।* *औप० १००।* *आव० ७९३।* प्रीतिकरं त्यक्तं वा दोषैः। *औप० ३८।* लोकानां प्रीतिकरः, नाप्रीतिकरः। *भग० १३५।* त्यक्तः। *भग० १३६।* संयमीनां संमतः उपधिः-रजोहरणादिकः। *स्था० १४९।*

चियत्तकिच्च– प्रीतिकृत्यं वैयावृत्यादि। *स्था० २००।* त्यक्त-कृत्यः-परित्यक्तसकलसंयमव्यापारः। *बृह० २५७* आ।

चियलोहिए– चित्तं-उपचयप्राप्तं लोहितं-शोणितमस्येति चित्तलोहितः। *उत्त० २७५।*

चियाए– त्यागः। अशनादेः साधुभ्यो दानं त्यागः। *स्था० २३४।* त्यजनं त्यागः-संविग्नैकसाम्भोगिकानां भक्तादि-दानम्। *स्था० २९७।* त्यागो-दानधर्म्म इत। *स्था० ४७४।* त्यागः-यतिजनोचितदानम्। *ज्ञाता० १२३।*

चियाग– त्यागः-संयतेभ्यो वस्त्रादिदानम्। *आव० ६४६।*

चिरं– वारिसितो। *निशी० ६५* अ।

चिरंतणं– चिरन्तनं आचार्यपरम्परागतम्। *बृह० २४१* आ।

चिरट्ठितीए– चिरस्थितिकः। *भग० १३२।*

चिरपरिचिअ– चिरपरिचितः-सहवासादिना स पूर्वो यः। *उत्त० ३२२।*

चिरपव्वइओ– चिरप्रव्रजितः। *बृह० ६२* अ।

चिरपोराण– चिरपुराणं-चिरप्रतिष्ठितत्वेन पुराणम्। *भग० २००।*

चिररायं– चिररात्रं-प्रभूतकालं यावज्जीवमित्यर्थः। *आचा० २४५।*

चिरसंसट्ठ– चिरं-प्रभूतकालं संसृष्टः-स्वस्वाम्यादिसम्बधेन सम्बद्धो यः। *उत्त० ३२२।*

चिराणओ– चिरन्तनः। *आव० ४२१।*

चिराणयं– चिरन्तनम्।

चिराणो– चिरन्तनः। *निशी० ३३* अ।

चिरिक्का– छटा। *निशी० ४४* आ। छटाः। *उत्त० ११६।*

चिरुएहिं– वृकैः। *बृह० ११८* आ।

चिर्पितः– नपुंसकभेदः। *उत्त० ६८३।*

चिर्भटिका– त्रपुषी। *नन्दी० १४९।*

चिलाइपुत्त– उपशमादिपदत्रयीवान्। *मरण०।* उपशमविवेकसंव-रपदत्रयवान्। *भक्त०।*

चिलाइया– चिलाता-धनसार्थवाहदासी। *आव० ३७०।* चिलाती-अनार्यदेशोत्पन्ना। *ज्ञाता० ४१।*

चिलाए– चिलातः-मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे नगरे म्ले-च्छाधिपतिः। *आव० ७१५।* धनसार्थवाहस्य दासचेटः। *ज्ञाता० २३५।*

चिलातपुत्रः– मुनिविशेषः। *आचा० २९४।* *सूत्र० १७२।*

चिलातिपुत्तो– कीटिकाभक्षितो मुनिः। *संस्ता०।*

चिलातीपुत्रः– रागे दृष्टान्तविशेषः। *व्यव० १२* अ। संक्षेप-रुचिस्वरूपनिरूपणे दृष्टान्तः। *उत्त० ५६५।* *नन्दी० १६६।* भूतभावनानायां यस्य दृष्टान्तः। *आव० ५९५।*

चिलातो– किरातः। *आव० १५०।*

चिलाय– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५।*

चिलायगो– चिलातकः-धनसार्थवाहदासीचिलातायाः पुत्रः। *आव० ३७०।*

चिलायपुत्त– चिलातीपुत्रः-त्यक्तदेहे दृष्टान्तः। *व्यव० ४३२* आ।

चिलायविसय– चिलातविषयः-म्लेच्छदेशः। *प्रश्न० १४।*

चिलाया– म्लेच्छविशेषाः। *प्रज्ञा० ५५।*

चिलिचिल्ल– चिलीचिविलः(ल्लः) चिलीनः। *प्रश्न० ४९।*

चिलिणे– चिलीनं-अशुचिकम्। *ओघ० ८१।*

चिलिमिणिपणगं– पोते वाले रज्जु कडग डंडमती। *निशी० १८०* आ।

चिलिमिणि– यवनिका। *ओघ० ४३, ८२।*

चिलिमिलि– चिलिमिलिः। *आव० ७५६।* जवनिका सा

दवर-कमयी इतरा वा दृष्टव्या। *व्यव॰ २९९* अ।

चिलिमिलिणी– जवनिका। *ओघ॰ ७५*।

चिलिमिली– चिलिमिलिः। *ओघ॰ १६*। यमनिका। *आचा॰ ३७०*।

चिलिमिलीए– यवनिकाव्यावधानं कृत्वा। *ओघ॰ ४३*।

चिलिमिलीपणगं– वालवल्ककटसूत्रदणुमय्यः चिलिमिल्यः पञ्चः। *बृह॰ २५३* अ।

चिलीए– चिलिमिलिका। *बृह॰ १८१* अ।

चिल्लग– शिशुः। *आव॰ ६७०*। लीनं दीप्यमानं वा। *प्रश्न॰७१*।

चिल्लणा– श्रेणिकनृपस्य पट्टराणी। *बृह॰ ३१* अ।

चिल्लल– आरण्यकः पशुविशेषः। *जीवा॰ २८२*। चित्तलः-नाखरविशेषः। चित्रलः-हरिणाकृतिर्द्विखुरविशेषः। *प्रश्न॰ ७०*। चिल्ललं-चिक्खिल्लमिश्रः। *ज्ञाता॰ ६७*। चिक्खलमिश्रोदको जलस्थानविशेषः। *भग॰ २३८*। म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

चिल्ललए– चिल्ललकः। आरण्यपशुविशेषः। *प्रज्ञा॰ २५४*।

चिल्लालएसु– छिल्लराणि-अखाताः स्तोकजलाश्रयभूता भूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा। *प्रज्ञा॰ ७२*।

चिल्ललग– देदीप्यमान्। *राज॰ ४९*। *प्रज्ञा॰ ९६*। दीप्यमानम्। *ज्ञाता॰ २१९*। सनखपदचतुष्पदविशेषाः। *प्रज्ञा॰ ४५*। आरण्यजीवविशेषः। *ज्ञाता॰ ७०*।

चिल्लिआ– दिप्यमानाः (देशी) *जम्बू॰ १०२*।

चिल्लिका– लीनाः-दीप्यमाना वा। *प्रश्न॰ ७७*।

चिल्लिय– दीप्यमानम्। *भग॰ ५४०*। *सूर्य॰ २९३*। लीनं दीप्तं वा। *औप॰ ५१*।

चिल्लिया– दीप्यमानाः। *जीवा॰ २६७*। दीप्यमाना लीना वा। *भग॰ ४७८*। *औप॰ ६८*। *भग॰ ८०२*।

चिल्ली– हरितभेदः। *आचा॰ ५७*।

चिल्लोद्रं– हट्टद्रव्यम्। *निशी॰ ११६* आ।

चिवड– चिपटा-निम्ना। *ज्ञाता॰ १३८*।

चिहुर– केशः। *व्यव॰ १२५* आ।

चीडं– जूवयं। *निशी॰ १९* अ।

चीडा– कुन्दुरुक्कः। *सम॰ १३८*। *प्रज्ञा॰ ८७*।

चीणंसुए– कोशीरः चीनविषये वा यद् भवति। *स्था॰ ३३८*।

चीणंसुय– सुहुमतरं चीणंसुयं भण्णति, चीणविसए वा जं तं चीणंसुयं। *निशी॰ २५५* अ। चीनांशुकम्। *भग॰४६०*।

चीणंसुयाणि– चीनांशुकादीनि। *आचा॰ ३९३*।

चीण– चीनः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*। चीनः-ह्रस्वः। *ज्ञाता॰ १३८*।

चीणअंसुअ– वल्कस्य यान्यभ्यन्तरहीरिभिर्निष्पाद्यन्ते सूक्ष्मा-न्तराणि भवन्ति तानि चीनांशुकानि। *जम्बू॰ १०७*।

चीणपिट्ठ– सिन्दूरम्। *दशवै॰ ४७*। चीनपिष्टं-सिन्दूरम्। *जम्बू॰ ३४*।

चीणापिट्ठ– चीनपिष्टम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

चीत्कारः– घोषः-ध्वनिविशेषः। *जम्बू॰ २१२*।

चीनपट्टः– चीनांशुकम्। *नन्दी॰ १०२*।

चीनांशुकः– वस्त्रनामविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०७*। चीनदेशोद्भवं अंकुशम्। *दशवै॰ ९१*। चीनदेशोत्पन्नपतङ्गकीटजम्। *अनुयो॰ ३५*। दुकूलविशेषरूपम्। *जीवा॰ २६९*।

चीनांशुकादि– विकलेन्द्रियनिष्पन्नम्। *आचा॰ ३९२*।

चीनांसुए– कोशिकारः तद्वस्त्रं चीनदेशोद्भवं वा जाङ्गमिकम्। *बृह॰ २०१* आ।

चीयइ– चीयते-चयमुपगच्छति। *जीवा॰ ३०६, ३२२,४००*।

चीरं– वस्त्रम्। *ओघ॰ ५३*। चीरमास्तीर्य। *ओघ॰ ५३*। घणं। *निशी॰ २२७* आ।

चीराजिण– चीराणि च-चीवराणि अजिनं च-मृगादिचर्म चीराजिनम्। *उत्त॰ २५०*।

चीरिए– चीरिकः-रथ्यापतितचीवरपरिधानः चीरोपकरण इति। *ज्ञाता॰ १९५*।

चीरिका– स्फोटकः। *आव॰ ६८०*।

चीरिग– रथ्यापतितचीरपरिधानाश्चीरिकाः, येषां चीरमयमेव सर्वमुपकरणं ते चीरिकाः। *अनुयो॰ २५*।

चीरिय– चीरिकः-मतविशेषः। *आव॰ ८५६*।

चीवराणि– सङ्घाट्यादिवस्त्राणि। *उत्त॰ ४९३*।

चुंबण– चुम्बनं-चुम्बनविकल्पः, सम्प्राप्तकामस्य अष्टमो भेदः। *दशवै॰ १९४*।

चुंबनं– मुखेन चुम्बनम्। *निशी॰ २५६* आ।

चुआचुअसेणियापरिकम्मे– च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्म। *सम॰ १२८*।

चुए– च्यवेत्-भ्रश्येत्। त्यजेत्। *सूत्र॰ ३४*। च्युतः-निर्गतः। *जम्बू॰ १५५*। च्युतं-विनष्टः। *आचा॰ १६*।

चुओ– च्युतः-आयातः। *ओघ॰ ५०*।

चुक्क– विस्मृतम्। *बृह॰ १०२*आ। *व्यव॰ ५२*अ। *मरण॰*। भ्रष्टः। *आव॰ ३५१*। विस्मृतः। *निशी॰ २९६*।

चुक्कइ– भ्रश्यति। *आव॰ ३३०, ८३४*।

चुक्कखलिता– अच्चत्थं खरंटेति चुक्कखलिता ण वा अव-राहपदछिद्दाणि गेण्हति सेय गुरूणं कहेति पच्छते गुरवो मे खरिंटेति, अहवा अणाभोगं चुक्कखलिता भण्णंति। *निशी॰ ९३*अ।

चुक्किहिसि– भ्रश्यसि (देशी०)। *आव॰ २६२, ५०९*।

चुचूयआमेलगा– चुचुकामेलकौ-स्तनमुखशेखरौ। *प्रश्न॰ ८४*।

चुचूया– चुचुकाः-स्तनाग्रभागाः। *राज॰ ९५*।

चुच्चुआ– चुञ्चुकाः-स्तनाग्रभागाः। *जम्बू॰ ८१*।

चुच्चुओ– चुञ्चुकः-स्तनाग्रभागः। *जीवा॰ २३४*।

चुञ्चुय– चुञ्चुकः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰१४*।

चुडण– जीर्यन्ते। *ओघ॰ १३१*। वाससां वर्षाकालादर्वागप्य-धावने वर्षासु जीर्णता भवति शाटो भवतीत्यर्थः। *पिण्ड॰१२*।

चुडलि– प्रदीप्ततृणपूलिका। *भग॰ ४६६*।

चुडली– भूरेखा। *निशी॰ ४०*अ। उल्का-अग्रभागे ज्वलत्काष्ठम्। *बृह॰ १३*आ। अलातम्। *तन्दु॰*।

चुडलीए– चुडिलिका-संस्तारकभूमिः। *बृह॰ १३०*अ।

चुडुलि– चुडली-ज्वलत्पूलिका। *उत्त॰ ३३०*। कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोषः। *आव॰ ५४४*।

चुडुली– उल्का। *जीवा॰ २९*।

चुड्डलि– उल्कामिव पर्यन्ते गृहीत्वा रजोहरणं भ्रमयन् वन्दते, कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोषः। *आव॰ ५४४*।

चुड्डली– उल्का। *आव॰ ५६६*।

चुड्डल्ली– उल्का। *प्रज्ञा॰ २९*।

चुण्ढी– अखातात्पोदकविदरिका। *ज्ञाता॰ ३६*।

चुण्ण– चौर्ण-अत्थबहुलं महत्थं हेउनिवाओवसग्गभीरं। बहु-पायमवोच्छिन्नं गमणयसुद्धं च चुण्णपयं। *दशवै॰ ८७*। मोदका-दिखाद्यकचूरिः। *बृह॰ १२९*अ। चूर्णम्। *प्रश्न॰ ५९*। चूर्णः-गन्धद्रव्यसम्बन्धी। *भग॰ २००*। चूर्ण-रजः। *आचा॰ ५९*। चूर्णपिण्डः-वशीकरणाद्यर्थं द्रव्यचूर्णादवाप्तः। उत्पाद-नायाः चतुर्दशो भेदः। *आचा॰ ३५१*। चूर्णो यवादीनाम्। *आचा॰ ३६३*।

चुण्णघणो– तंदुलादी चुण्णो घणीक्कतो लोलीकृत इत्यर्थः। *निशी॰ १४१*अ।

चुण्णचंगेरी– चूर्णचङ्गेरी। *जीवा॰ २३४*।

चुण्णजोए– द्रव्यचूर्णानां योगः स्तम्भनादिकर्म्मकारी। *ज्ञाता॰ १८८*।

चुण्णपडलयं– चूर्णपटलकम्। *जीवा॰ २३४*।

चुण्णा– वसीकरणादिया चुण्णा। *निशी॰ १०२*अ।

चुण्णिओ– चूर्णितः-श्लक्ष्णीकृतः। *उत्त॰ ४६१*।

चुण्णियभेदे– चुर्णिकाभेदः-क्षिप्तपिष्टादिकः। *प्रश्न॰ २६७*।

चुण्णियभेय– चूर्णिकाभेदः-तिलादिचूर्णवत् यो भेदः। *भग॰ २२४*।

चुण्णियाभाग– चुर्णिकाभागः-भागभागः। *जम्बू॰ ४४२*। *सूर्य॰ ५६, ११५*।

चुण्णो– बदिरादियाण चुण्णो। *निशी॰ २३*अ। चूर्णः-पटवासादिकः। *सूर्य॰ २९३*।

चुन्नं– चूर्ण-रजः। *प्रज्ञा॰ ३६*। सौभाग्यादिजनको द्रव्यक्षोदः। *पिण्ड॰ १२१*।

चुन्नग– चूर्णः-ताम्बूलचूर्णो गन्धद्रव्यचूर्णो वा। *भग॰ ५४८*।

चुन्नयं– सन्त्रस्तम्। *विपा॰ ४७*।

चुन्नवासा– चूर्णवर्षः-गन्धद्रव्यचूर्णवर्षणम्। *भग॰ २००*।

चुन्नवुट्ठी– चूर्णवृष्टिः-गन्धद्रव्यवृष्टिः। *भग॰ १९९*।

चुन्निय– चूर्णितं-चणक इव पिष्टम्। *प्रश्न॰ १३४*।

चुन्निया– चूर्णयित्वा। *भग॰ ६५४*।

चुन्नो– गन्धद्रव्यक्षोदैः चूर्णः। *प्रश्न॰ १३७*।

चुय– च्युतः-जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः। *प्रश्न॰ १५५*। च्युतः जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः। मृतः स्वतः परतो वा। *प्रश्न॰ १०८*। च्युतः-मृतः। *भग॰ २९३*। कुतोऽप्यनाचारात् स्वपदात् पतितः। *ज्ञाता॰ ११८*।

चुलकप्पसुयं– एकमल्पग्रन्थमल्पार्थं च। *नन्दी॰ २०४*।

चुलणिसुए– चुलनीसुतः-ब्रह्मदत्तः कौरव्यगोत्रः। *जीवा॰ १२१*।

चुलणीपिया– उपासकदशानां तृतीयमध्ययनम्। *उपा॰ १*। वाणारसीनगर्यां गृहपतिनाम। *उपा॰ ३१*।

चुलनी– द्रुपदराजपत्नी, द्रौपदीमाता। *प्रश्न॰ ८७*। *ज्ञाता॰ २०७*। ब्रह्मराजस्य पट्टराज्ञी। *उत्त॰ ३७६*।

चुलसीइ– चतुरशीतं-चतुरशीत्यधिकम्। *सूर्य॰ ८*।
चुलसीयं– चतुरशीतम् । *सूर्य॰ ११*।
चुल्ल– क्षुल्लः, क्षुद्रः, लघुः। *जम्बू॰ २८१*। महदपेक्षया लघुः। *स्था॰ ७०*। चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्यायस्तेन क्षुल्लो-महाहि-मवदपेक्षाया लघुः। *जम्बू॰ ६६*।
चुल्लकंवस्तु– वस्तुग्रन्थविच्छेदविशेषः तदेव लघुतरं चुल्लकं-वस्तु। *नन्दी॰ २४१*।
चुल्लपिउ– चुल्लपिता-चुल्लबप्पः, पितृव्यः। *दशवै॰ २१६*।
चुल्लपिउए– लघुपिता-पितुर्लघुभ्रातेति। *विपा॰ ५७*।
चुल्लपिता– पित्तियओ। *दशवै॰ १०९*।
चुल्लवप्प– पितृव्यः। *दशवै॰ २१६*।
चुल्लमाउगा– लघुमाता। *आव॰ ६७५*।
चुल्लमाउया– लघुमाता-पितृलघुभ्रातृजाया, मातुर्लघुसपत्नी वा। *विपा॰ ५७*। क्षुल्लमातृका-कोणिकराजपत्नी। *अन्त॰ २५*। लघुमाता। *ज्ञाता॰ ३०*। *अन्त॰ २५*। चुल्लजननी-लघुमाता। *निर॰ ४*।
चुल्लसयए– उपासकदशानां पञ्चममध्ययम्। *उपा॰ १*। आल-भियानगर्यां गृहपतिनाम। *उपा॰ ३६*। महाशतकापेक्षया लघुः शतकः-चुल्लशतकः। *स्था॰ ५०९*।
चुल्लहिमवंतकूडे– क्षुल्लहिमवद्गिरिकुमारदेवकूटम्। *जम्बू॰ २९६*।
चुल्लहिमवंत– क्षुल्लकहिमवान्। *आव॰ १२३*। क्षुल्लहिमवान्। *आव॰ २९५*। चुल्लो-महदपेक्षया लघुर्हिमवान् क्षुल्लहिमवान्। *स्था॰ ७०*।
चुल्लु– चुल्ली। *पिण्ड॰ ८४*।
चुल्ल्यादीनि– मानुषरन्धनानि। *आचा॰ ४११*।
चूअवण– चूतवनम्। *आव॰ १८६*। आम्रवनं वनखण्डनाम। *जम्बू॰ ३२०*।
चूए– चूतः-आम्रवृक्षः। *जीवा॰ २२*।
चूचुय– चूचुकः। *जीवा॰ २७५*।
चूचुसाए– चूचुशाकः। *उपा॰ ५*।
चूडा– उक्तानुक्तार्थसङ्ग्राहिकाः। *आचा॰ ३१८*। उद्योत-साधनम्। *आचा॰ ६१*। *समः १३१*।
चूडामणि– चूडामणिः। *जम्बू॰ २१३*। परममङ्गलभूत आभ-रणविशेषः। *राज॰ १०४*। चूडामणिः-शिरोऽलङ्काररत्नम्। *उत्त॰ ४९०*। मुकुटरत्नम्। *प्रज्ञा॰ ८७*। मुकुटे रत्नविशेषः। *जीवा॰ १६१*। भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*। चूडाम-णिर्नाम सकलपार्थिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्रमनुष्येन्द्रमूर्द्धकृत-निवासो
निःशेषापमङ्गलाशान्तिरोगप्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेतः परममङ्गलभूत आभरणविशेषः। *जीवा॰ २५३*।
चूडोवनयणं– चूडोपनयनं-शिरोमुण्डनम्। *जीवा॰ २८१*।
चूण्णं– वशीकारकद्रव्यसंयोगः। *बृह॰ १०* आ।
चूत– वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०*।
चूतलता– लताविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।
चूतवणं– चूतवनं-आम्रवनम्। *भग॰ ३६*। *स्था॰ २३०*।
चूय– चूतः-सहकारतरुः, आम्रवृक्षः। *भग॰ ३०६*। आम्र-वृक्षः। *उत्त॰ ६९२*।
चूयफलं– चूतफलं-फलविशेषः। *सूर्य॰ १७३*।
चूर्णभेदः– चूर्णनम्। *स्था॰ ४७५*।
चूर्णि– अर्थस्य पञ्चमो भेदः। *समः १११*। *भग॰ २*।
चूलणी– चुलनी-ब्रह्मदत्तमाता। *आव॰ १६१*।
चूलणीपिय– चुलनीपितृनाम्ना गृहपतिः। *स्था॰ ५०९*।
चूला– सिहा। *निशी॰ २२* आ। इह चूला शिखरमुच्यते, चूला इव चूला दृष्टिवादे
परिकर्मसूत्रपूर्वानुयोगेऽनुक्तार्थसङ्ग्र-हपरा ग्रन्थपद्धतयः, श्रुतपर्व्वते चूला इव राजन्ते इति चूला इत्युक्ताः। *नन्दी॰ २४६*। उक्तशेषानुवादीनी चूडा। *आचा॰ ६*।
चूलामणि– चूडामणिर्नाम सकलनृपरत्नसारो नरामरेन्द्रमौलि-स्थायी अमङ्गलामयप्रमुखदोषहृत् परममङ्गलभूत आभरण-विशेषः। *जम्बू॰ १०६*।
चूलिअंगे– चूलिकाङ्गं-चतुरशीत्यालक्षैः प्रयुतैः। *अनुयो॰ १००*।
चूलिआ– चुलिका-चतुरशीत्या लक्षैश्चूलिकाङ्गैः। *अनुयो॰ १००*। चूडा। *दशवै॰ २६९*।
चूलिआवत्थू– चूलावस्तुनि त्वचाराग्रवदिति। *स्था॰ ४३४*।
चूलिए– चूलिकाः। *सूर्य॰ ९१*। *भग॰ ८८८*।
चूलिका– द्वादशाङ्गस्य पञ्चमो भेदः। *समः ४१*। उक्तानुक्तार्थ-सङ्ग्रहात्मिका ग्रन्थपद्धतिः। *नन्दी॰*

२०६।

चूलियंग– चतुरशितिर्नयुतशतसहस्राणि एकं चूलिकाङ्गम्। *जीवा० ३४५*। चूलिकाङ्गः। *सूर्य० ९१*। *भग० ८८८*।

चूलिय– चूलिकः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४*।

चूलिया– चूलिका-सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानम्। *सम० ७३*। दृष्टिवादस्य पञ्चमो भेदः। *सम० १२८*। चूलिका। *भग० २७५*। कालमानविशेषः। *भग० २१०*। चतुरशीतिश्चू-लिकाङ्गशतसहस्राणि एका चूलिका। *जीवा० ३४५*।

चूलियागिहं– चूलिकागृहं-समुद्रकः। *जम्बू० ४८*।

चेइअ– चैत्यं-व्यन्तरायतनम्। *सम० ११७*। चैत्याः-चित्ता-हलादकाः। *जम्बू० १६३*। चैत्यः-सन्निवेशविशेषः। *आव० १७१*।

चेइअकडं– वृक्षस्याधो व्यन्तरादिस्थलकम्। *आचा० ३८२*।

चेइअथूभे– चैत्याः-चित्ताहलादकाः स्तूपाश्चैत्यस्तूपाः। *जम्बू० १६३*।

चेइए– चितेः-लेप्यादिचयनस्य भावः कर्म वा चैत्यं, तच्च संज्ञाशब्दत्वाद्देवताप्रतिबिम्बे प्रसिद्धं, ततस्तदाश्रयभूतं यद्दे-वताया गृहं तदप्युपचाराच्चैत्यमुच्यते। *जम्बू० १४*। चयनं चितिः-इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचयः, तत्र साधुरित्यन्ततः प्रज्ञादेराकृतिगणत्वात् स्वार्थिकेऽणि चैत्यं उद्यानम्। *उत्त० ३०९*। उद्यानम्। *उत्त० ४७२*।

चेइज्ज– चेतयेत्-कुर्यात्। *आचा० ३६१*।

चेइदुमं– चैत्यद्रुमं-अशोकवृक्षम्।

चेइय– चैत्यं-इष्टदेवताप्रतिमा। *सूर्य० २६७*। देवतायतनम्। *औप० २*। व्यन्तरायतनम्। *विपा० ३३*। *ज्ञाता० ३*। *औप० ५*। इष्टदेवप्रतिमा। *औप० ५८*। चैत्यम्। *आव० २८७*। ज्ञातम्। *दशवै० ९८*। चैत्यवृक्षः। *प्रश्न० ९५*। जिनबिम्बानि। *बृह० २६९ अ*। प्रतिमालक्षणम्। *आव० ७८७*। चितेर्ले-प्यादि चयनस्य भावः कर्म्म वेति चैत्यं-सञ्ज्ञाशब्दत्वाद् देवबिम्बं, देवबिम्बाश्रयत्वात्तद् गृहमपि च। *भग० ६*। इष्टदेव-प्रतिमा। *भग० ११५*। चितिः-इष्टकादिचयस्तत्र साधुः-योग्यः चित्यः, स एव चैत्यः-अधोबद्धपीठिके उपरिचोच्छि-पताकः। *उत्त० ३०९*। ढौकितम्। *बृह० २०० आ*। चैत्यं इष्टदेवतायतनम्। *जम्बू० १२३*। चैत्यं-जिनायतनम्। *व्यव० २०३ आ*। चैत्यं-प्रतिमा। *राज० १२१*।

चेइयक्खंभ– चैत्यस्तम्भः। *सम० ६४*। चैत्यवत् पूज्यः स्तम्भः चैत्यस्तम्भः। *जम्बू० ५३३*।

चेइयघरं– चैत्यगृहम्। औघ० *३९*।

चेइयथंभो– चैत्यस्तम्भः। *जीवा० २३१*।

चेइयथूभो– चैत्यस्तूपः। *जीवा० २२८*।

चेइयभत्ति– चैत्येषु भक्तिः चैत्यभक्तिः। *आव० ५३५*।

चेइयमहो– चैत्यमहः-चैत्यसत्क उत्सवः। *जीवा० २८१*।

चेइयरुक्खा– चैत्यवृक्षाः-व्यन्तरदेवानां चैत्यवृक्षाः तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलङ्कृता भवन्ति। *सम० १४*। चैत्यवृक्षाः –सुधर्मादिसभानां प्रतिद्वारं पुरतो मुखमण्डपप्रेक्षामण्डपचै-त्यवृक्षमहाध्वजादिक्रमतः श्रूयन्ते। *स्था० ११७*। चैत्यवृक्षा-मणिपीठिकानामुपरिवर्त्तिनः सर्वरत्नमया उपरिच्छत्रध्वजादि-भिरलङ्कृताः सुधर्मादिसभानामग्रतो ये श्रूयन्ते त एत इति। *स्था० ४४३*। बद्धपीठवृक्षा येषामधः केवलान्युत्पन्नानीति। *सम० १५६*। चैत्य-वृक्षः। *जीवा० २२८*।

चेइयवंदगो– चैत्यवन्दकः। *आव० ४२१*।

चेइयाइं– चैत्यानि-भगवद्बिम्बानि। *बृह० १५५ आ*। महान्ति कृतानि। *आचा० ३६६*। भगवद्बिम्बानि जिनभव-नानि वा। *बृह० ४ अ*।

चेइयाणि– चैत्यानि-अर्हत्प्रतिमालक्षणानि। *उपा० १३*।

चेइस्सामो– चेतयिष्यामः-संकल्पयिष्यामः, निर्वर्तयिष्यामः। *आचा० ३५०, ३९५*।

चेए– चेतयते-जानाति, चेष्टते, करोति, अभिलषयतीति। *ओघ० ११४*।

चेएइ– चेतयते-अनुभवरूपतया विजानाति-वेदयति करोति वा। *आव० २६६*। चेतयति-करोति। *ज्ञाता० २०६*। ददाति। *आचा० ३२५*। साधवे ददाति। *आचा० ३६१*।

चेच्चं– च्यूतं विशिष्टं वानमित्यर्थः। *जम्बू० ५५*।

चेच्चा– त्यकत्वा। *उत्त० ४४८*।

चेटक– मन्त्रसाधनोपाय शास्त्राणि। *सम० ४९*। *राज० १२१*।

चेटिका– मन्त्राधिष्ठितदेवविशेषः। *प्रश्न० १०९*।

चेट्ठा– चेष्टा। *आव॰ ७७१।*

चेट्ठियं– चेष्टितं-सकाममङ्गप्रत्यङ्गावयवप्रदर्शनपुरस्सरं प्रियस्य पुरतोऽवस्थानम्। *सूर्य॰ २९४।* चेष्टनं-सकाममङ्गप्रत्यङ्गोप-दर्शनादि। *जीवा॰ २७६।* हस्तन्यासादि। *प्रश्न॰ १३९।*

चेड– चेटाः-पादमूलिकाः। *राज॰ १४०।* दारिकः। *आव॰ २१२।* चेटकः-बालकः। *आव॰ ९३।* चेटाः-पादमूलिकाः। *भग॰ ३१८, ४६४।*

चेडओ– चेटकः-शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसंम्भूतो वैशा-लिकः। *आव॰ ६७६।*

चेडग– चेटकः-वैशाल्यां राजा। *भग॰ ३१६।* वैशालिराजः। *भग॰ ५५६।* बालकः। *नन्दी॰ १५७।* वैशालिनगरे राजा। *व्यव॰ ४२६* अ। वैशालानगर्याः राजा। *निर॰ ८।*

चेडगधूया– चेटकदुहिता। *आव॰ २२३।*

चेडयकारिणो– वत्थसोहगा। नि॰ *४३* आ।

चेडरूवं– चेटकरूपः। *दशवै॰ ९७। ओघ॰ १६३। आव॰ २०५।* पुत्रः। *आव॰ ३५४।*

चेडा– चेटाः-पादमूलिकाः, दासा वा। *जम्बू॰ १९०।* चेटाः – पादमूलिकाः। *औप॰ १४।*

चेडि– चेटी। *आव॰ ३५७।*

चेडी– चेटी-राजकन्या। *आव॰ १७४।* दासी, प्रत्याख्यान-विधौ उदाहरणः। *आव॰ ९६। ओघ॰ १६३।*

चेडो– चेटः। *आव॰ ६५।* पुत्रः। *आव॰ ८२४।*

चेतितं– चैत्यं जिनादिप्रतिमेव चैत्यं, श्रमणम्। *स्था॰ १११।* देवकुलम्। *निशी॰ २६९* अ।

चेतितथूभा– चैत्यस्य-सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्नाः स्तूपाः-प्रतीताश्चैत्यस्तूपाश्चित्ताह्लादकत्वाद्वा चैत्याः स्तूपाः चैत्य-स्तूपाः। *स्था॰ २३०।*

चेतियं– चैत्यं-प्रतिमा। *प्रश्न॰ ८, १६१।* सामान्येन प्रतिमा। *ज्ञाता॰ ४६।*

चेतियघरं– चैत्यगृहम्। *आव॰ ३५५।*

चेतेमाणे– चेतयन्तः-कुर्वन्तः। *स्था॰ ३१४।*

चेत्तो– वंसभेओ। *निशी॰ २२८* आ।

चेदो– जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।*

चेयकड– चेतः-चैतन्यं जीवस्वरूपभूता चेतनेत्यर्थः ते कृता-निबद्धानि चेतःकृतानि। *भग॰ ७०१।*

चेयण– चेतनं चेतना-प्रत्यक्षवर्तमानार्थग्राहिणी चेतना। *दशवै॰ १२५।*

चेरं– चरणं। *निशी॰ १* अ।

चेरो– पव्वावितो। *निशी॰ २८* अ।

चेल– वस्त्रम्। *प्रज्ञा॰ ३५९।* चेलं-वस्त्रम्। *दशवै॰ १५४।* वस्त्राणि। *सम॰ ४१।* वासांसि। *स्था॰ ३४३।*

चेलकण्ण– चेलकर्णः-वस्त्रैकदेशः। *दशवै॰ १५४।* द्रव्यशस्त्र-विशेषः। *आचा॰ ७५।*

चेलगोलं– वस्त्रात्मकं कन्दुकम्। *सूत्र॰ ११८।*

चेलणा– श्रेणिकराज्ञी। *ज्ञाता॰ २४७।*

चेलपेडा– वस्त्रमञ्जूषा। *ज्ञाता॰ १४। भग॰ ६९४।*

चेलमयं– । *निशी॰ १* आ।

चेलवासिणो– वल्कलवाससः। *भग॰ ५१९। औप॰ ९१।*

चेला– चेटिका। *औप॰ ७७।*

चेलुक्खेवो– चेलोत्क्षेपकः-ध्वजोच्छायः। *जम्बू॰ ४१९।*

चेल्लए– कलभः। *आव॰ ६८२।* शिष्यः। *दशवै॰ ३७।*

चेल्लओ– क्षुल्लकः। *आव॰ ३६७, ४१९। दशवै॰ ८९।* क्षुल्लकः –शिष्यः। *आव॰ ४१२, ४३७, ४८४।*

चेल्लग– चेल्लकः। *ओघ॰ ६४। निशी॰ १५* अ। क्षुल्लकः। *उत्त॰ १००।*

चेल्लणा– चेल्लना-श्रेणिकराजपत्नी। *आव॰ ९५।* शिक्षायोग-दृष्टान्ते हैहयकुलसंभूतवैशालिकचेट सप्तमी पुत्री। *आव॰ ६७६।* कूणिकजननी। *निर॰ ४।*

चेल्ललकं– देदीप्यमानम्। *जीवा॰ १७३।*

चेव– यथार्थः। *प्रश्न॰ १३४।* चैवेत्यखण्डमव्ययं समुच्चयार्थं, अपिचेत्यादिवत्। *जम्बू॰ ७०।*

चेष्टा– ईहा। *दशवै॰ १२५।*

चैत्यवन्दनं– प्रतिमावन्दनम्। *नन्दी॰ १५७।*

चैत्यविनाशो– लोकोत्तमभवनप्रतिमाविनाशः। *बृह॰ ६०* आ।

चोंवालय– मालः। *दशवै॰ ९८।*

चोअं– गन्धद्रव्यम्। *जम्बू॰ ३५, १००।* त्वग्नामकं गन्ध-द्रव्यम्। *जम्बू॰ ६०।*

चोअअ– चौयआ-फलविशेषः। *अनुयो॰ १५४।*

चोइअ– चोदित-विद्धः। *दशवै॰ २५०।*

चोइओ– चोदितः-स्खलनायाम्। *आव॰ ७९३।*

चोओ– गन्धद्रव्यम्। *प्रज्ञा॰ ३६५।*

चोक्ख– चोक्षं-स्वच्छम्। *आव॰ ६३१* चोक्षः-

लेपसिक्थाद्य-पनयेनेनात एव परमशुचिभूतः। *भग॰ १६४*। अहिंसायाः चतुष्पञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*।

चोक्षाः– पिशाचभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

चोज्जपसंगी– चौर्यप्रसक्तः-आश्चर्येषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थः। *ज्ञाता॰ २३८*।

चोदना– प्रोत्साहकरणम्। *व्यव॰ २०* आ।

चोद्दहजण– तरुणलोकः। *ज्ञाता॰ २१९*।

चोप्पडं– स्नेहः। *ओघ॰ १४५*।

चोप्पालगो– चोप्पालको नाम प्रहरणकोशः। *जीवा॰ २५७*।

चोप्पाले– प्रहरणकोशः। *भग॰ १७२*। प्रहरणकोशः-प्रहरण-स्थानम्। *राज॰ ९३*।

चोप्फाल– चोप्फालं नाम मत्तपारणम्। *जम्बू॰ १२१*।

चोयं– ण्हारुणिभागाशे जे केसरा तं चोयं भण्णति। *निशी॰ १२४* आ। भिन्नं चउभागादि तया चोयं भण्णति, नक्खादिभिः अक्खुं अंबसालमित्यर्थः। *निशी॰ १२४* आ। वंसहीरसंठितो चोयं भण्णति। *निशी॰ २३* अ। त्वक्। *बृह॰ १२६* अ। गन्धद्रव्यम्। *जीवा॰ २६५, ३५१*। त्वक्। *प्रश्न॰ १६२*। *भग॰ ७१३*।

चोयगं– गन्धद्रव्यम्। *जीवा॰ १९१*।

चोयगसमुग्गयं– चोयकसमुद्रकम्। *जीवा॰ २३४*।

चोयगो– पीलितेक्षुच्छोदिका। *आचा॰ ३५४*।

चोयना– स्खलितस्य पुनः शिक्षणं चोदना। *व्यव॰ ७२*आ।

चोयपुड– त्वक्पुटं पत्रादिमयं तद्भाजनम्। *ज्ञाता॰ २३२*।

चोयासव– चोयो-गन्धद्रव्यं तत्सारः आसवश्चोयासवः। *जीवा॰ ३५१*। चोओ-गन्धद्रव्यं तन्निष्पाद्य आसवः चोयासवः। *प्रज्ञा॰ ३६४*।

चोरकहा– चौरकथा-गृहीतोऽद्य चौरं इत्थं च कदर्थितः इत्या-दिका। *दशवै॰ ११४*।

चोरग्गाहो– चोरग्राहः-आरक्षकः। *आव॰ ४३५*। *दशवै॰ ५२*। *उत्त॰ २१८*।

चोरपलिकोट्टं– कोलिन्दकोट्टं। *निशी॰ १२८* अ।

चोरपल्लि– चौरपल्ली। *आव॰ ३७०*।

चोरवंदपागड्ढिको– चौरवृन्दप्रकर्षकः-तत्प्रवर्त्तकः। *प्रश्न॰ ५०*।

चोराय– चोराकं नाम सन्निवेशः। *आव॰ २०६*। चौरा। *आव॰ २०२*।

चोरिक्कं– चोरणं चोरिका सैव चौरिक्यं, अधर्मद्वारस्य प्रथमं नाम। *प्रश्न॰ ४३*।

चोरियं– चौर्यम्। *आव॰ ३५४*।

चोरी– चौरी। *दशवै॰ ४१*।

चोरोद्धरणिक– देसरक्खिओ। *निशी॰ १९५* आ।

चोल– चोलपट्टकः। *ओघ॰ १११*।

चोलक– बालचूडाकर्म, शिखाधारणमिति। *प्रश्न॰ १४०*।

चोलकादीनि– संघातिमानि। *आचा॰ ४१४*।

चोलगं– चूडापनयनं-बालकप्रथममुण्डनम्। *प्रश्न॰ ३९*।

चोलपट्टको– चोलपट्टकः-परिधानवस्त्रः। *प्रश्न॰ १५६*।

चोलपट्टागारो– चोलपट्टाकारः। *आव॰ ८५४*।

चोला– चूडा-बालानां चूडाकर्म। *आव॰ १२९*।

चोलोयणगं– चूडाधरणम्। *भग॰ ५४४*।

चोलोवणयं– चूडापनयनं-मुण्डनम्। *ज्ञाता॰ ४१*।

चोल्लए– भोजनम्। *उत्त॰ १४५*।

चोल्लक– मनुष्यभवदृष्टान्ते ब्राह्मणविशेषः। *आव॰ ३४१*।

चोल्लगं– परिपाटीभोजनम्। *उत्त॰ १४५*।

चोल्लग– चोल्लकं-भोजनम्। *पिण्ड॰ ११३*। *निशी॰ २६९* अ। भोजनम्। *आव॰ ३४१*।

चौद्दसम– चतुर्दशं-उपवासषट्कम्। *जम्बू॰ १५८*।

चौपग– चरः। *निशी॰ ३२६* अ।

चौर्णं– बाहुलकविधिबहुलं, गमपाठबहुलं, निपातबहुलं, निपा-ताव्ययबहुलं ब्रह्मचर्याध्ययनवत्। *जम्बू॰ २५९*।

- x - x - x -

छ

छंटेउं– छण्टयति। *आव॰ ८००*।

छंद– छन्द-गुर्वभिप्रायः। *आव॰ १००*। अभिप्रायः। *दशवै॰ १७१*। स्वाभिप्रायः। *आचा॰ ७८*। अभिप्रायोबोधः। *भग॰ ५०२*। अभिप्पाओ। *निशी॰ २१७* आ। आयारो। *निशी॰ ३४* अ। गम्यागम्यविभागः। *गणि॰ २१०*। देशछ-न्दः-देशेष्टं, गम्यागम्यादिविचारः, देशकथायाः प्रथमभेदः। *आव॰ ५८१*। प्रार्थनाऽभिलाषः, इन्द्रियाणां स्वविषयाभि-लाषो वा। *सूत्र॰ १९१*। तत्तद्वस्तुविषयाभिलाषात्मिका इच्छा वा। *उत्त॰ २२३*। पद्यवचनलक्षणशास्त्रम्। *औप॰ ९३*। छन्दः-पद्यवचनलक्षणनिरूपकः। *ज्ञाता॰ ११०*। पद्यलक्षण-शास्त्रम्। *भग॰ ११२*। छन्दनं छन्दः-परानुवृत्त्या भोगाभि-प्रायः। *आचा॰ १२७*। छन्दात-स्वकीयादभिप्रायविशेषात्। *स्था॰ ४७४*।

छंदए– छन्दयति-निमन्त्रयति। *बृह॰ २२८* आ।

छंदणा– छन्दना प्राग्गृहीतेनाशनादिना कार्या। *स्था॰ ४९९। आव॰ २५९।* पूर्वगृहीतेनाशनादिना गुर्वाज्ञया यथार्हाणां निमन्त्रणं एषा ज्ञेया विशेषविषयेति छन्दना। *स्था॰ ४९९।* छन्दना पूर्वगृहीतेन भक्तादिना। *भग॰ ९२०।* पूर्वानीताशना-दिपरिभोगविषये साधूनामुत्साहना छन्दना। *अनुयो॰ १०३।*

छंदणिरोहे– छन्दो-वशस्तस्य निरोधः छन्दोनिरोधः-स्वच्छ-न्दतानिषेधः। *उत्त॰ २२२।* छन्दसा वा-गुर्वभिप्रायेण निरोधः-आहारादिपरिहाररूपः छन्दोनिरोधः। *उत्त॰ २२३।*

छदतो– परिया। *निशी॰ १२५* आ।

छदयति– आमन्त्रयति। *ओघ॰ १४३।*

छंदाणुवत्तणं– छंदोऽनुवर्त्तनं-अभिप्रायानुवृत्तिः। *सम॰ ९५। ज्ञाता॰ ९२।*

छंदिअ– छन्दित्वा-निमन्त्र्य। *दशवै॰ २६६।*

छंदिओ– णिमंतितो। *निशी॰ ३२* अ। छन्दितः-अनुज्ञातः। *ओघ॰ १३९।*

छंदिता– णिमंतिता। *निशी॰ १५६* अ।

छंदिया– निमंतेऊण जति पडिग्गाहिता। *दशवै॰ १४९।*

छंदेणं– स्वाभिप्रायेण यथेष्टमित्यर्थः। *भग॰ ६८४।* छंदसा। *बृह॰ ७७* आ। छन्देन-द्वादशावर्त्तवन्दने गुरुवाक्यमेतत्। *ओघ॰ १३९।*

छंनंति– छिप्तंति-क्षिप्यन्ते, हिंस्यन्ते। *दशवै॰ २०४।*

छउमं– छादयतीति छद्म-पिधानम्। ज्ञानादीनां गुणानामावार-कत्वात्-ज्ञानावरणादिलक्षणं घातिकर्म। *आव॰ ५८३।* छद्मकर्म। *आव॰ १३४।* शठत्वं, आवरणं वा। *भग॰ ७।* छादयतीति छद्म-ज्ञानावरणादिकर्म। *उत्त॰ १२९।* छादय-तीति आवरयतीति छद्म-घातिकर्मचतुष्टयम्। *जीवा॰ २५६।* छाद्यते येन तच्छद्म-ज्ञानावरणादिघातिकर्मचतुष्टयम्। *स्था॰ ३०५।* छादयत्यात्मस्वरूपं यत्तच्छद्म। *स्था॰ ५३।* छद्म-शठत्वमावरणं वा। *सम॰ ४।* छद्म-ज्ञानदर्शनावरणीयमोह-नीयान्तरायात्मकम्। *आचा॰ ३१५।* छादयन्तीति छद्म-घातिकर्मचतुष्टयम्। *राज॰ ११०।*

छउमत्थ– छद्मस्थः-अवधिज्ञानरहितः। *भग॰ ६६।* छद्म-स्थोनिरतिशयज्ञानयुक्तः। *औप॰ १०९।* विशिष्टावधिज्ञान-विकलः। *प्रज्ञा॰ ३०३।* छद्मस्थः-छद्मनि स्थितः छद्मस्थः-अनतिशयी। *निशी॰ १५२* अ। छादयतीति छद्मज्ञा-नावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः। *स्था॰ १७१।* अके-वली। *स्था॰ ५३।* ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः सकषाय इत्यर्थः। *स्था॰ ३०५।* ज्ञाना-वरणादिघातिकर्म्म-चतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः-अनु-त्पन्नकेवलज्ञानदर्शनः। *स्था॰ ४०४।* छद्मस्थ-इह निरतिशय एव दृष्टव्यः। *स्था॰ ५०६।*

छउमत्थमरणं– छद्मस्थमरणं-मरणस्यैकादशो भेदः। *उत्त॰ २३०।* अकेवलिमरणम्। मरणस्यैकादशो भेदः। *सम॰ ३३।*

छए– क्षतः-परवशीकृतः। *सूत्र॰ ७२।*

छकोडीए– षट्कोटीकः। *जीवा॰ २३१।*

छक्कट्ठक– षट्काष्ठकं-गृहस्थाबाह्यालन्दकं षट्दारुकं, द्वारम् *ज्ञाता॰ १४१।*

छक्कमरयं– षट् कर्माणि यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्र-तिग्रहात्मकानि तेषु रतौ-आसक्तौ षट्कर्मरतौ। *उत्त॰ ५२१।*

छक्कायविउरमणं– षट्कायानां विराधनम्। *ओघ॰ १२७।*

छक्कायविओरमणं– षट्कायव्युपरमणम्। *ओघ॰ १२७।*

छक्केहिंसमज्जिया– एकत्रसमये येषां बहुनि षट्कानि उत्प-न्नानि ते षट्कैः समर्जिताः। *भग॰ ७९७।*

छक्कोडि– षट्कोटि शुद्धं नाम यत् स्वभावतः षट्स्वपि दिक्षु शुद्धम्। *बृह॰ ५८* अ।

छगं– पुरीषम्। *ओघ॰ ४१।*

छगणधम्मिय– छगणधार्मिकः-गोमयोपलक्षितो धार्मिको दृष्टान्तः। *पिण्ड॰ ८२।*

छगणियछारो– गोमयछारेण तत्पात्रकं गुण्डयते। *ओघ॰ १४४।*

छगडिया– गौमयप्रतरः। *अनुत्त॰ ५।*

छगमुते– छगणमूत्रे-पुरीषप्रश्रवणे। *बृह॰ २१४* अ।

छगलगगलवलया– छगलकस्य पशोर्गलं-ग्रीवां वलयन्ति-मोटयन्ति ये ते छगलकगलवलकाः। *पिण्ड॰ ९८।*

छगलपुरं– सिंहगिरिराजधानी। *विपा॰ ६५।*

छगलयं– छगलकम्। *आव॰ २१२।*

छज्जइ– राजते। *जम्बू॰ २०२।*

छज्जीवकायसंजमु– षण्णां जीविनिकायानां पृथिव्यादिलक्ष-णानां संयमः-सङ्घट्टनादिपरित्यागः षड् जीवकायसंयमः। *आव॰ ४९२।*

छज्जीवणियज्झयणं– षड्जीवनिकाध्ययनं, दशवैकालिके चतुर्थमध्ययनम्। *दशवै॰ १२०।*

छट्ठं– षष्ठं-उपवासद्वयरूपम्। *जम्बू॰ १४५।*

छट्ठण्णकालिओ– षष्ठान्नकालिकाः। *आव॰ ३५२।*

छट्ठभत्तं– षष्ठभक्तम्। *आव॰ ३५२।*

छट्ठाण– पासत्थो उसण्णो कुसीलो संसत्तो अहाछंदोणितितो य। *निशी॰ २९१* अ।

छड्डणं– छर्दनं वातादिद्रव्यप्रयोगकृतम्। *विपा॰ ८१।* परित्यागः। *ओघ॰ ४९।* छर्दनम्। *ओघ॰ १५२।* छर्दनं-वमनम् ऊद्-र्ध्वादिदोषः। *ओघ॰ १३६।* वमनम्। *ओघ॰ १६४।* उज्झनं –क्षालनजलत्यागः। *दशवै॰ २०३।* परित्यागः। *ओघ॰ ४९।*

छड्डणाइं– छर्द्यादयः। *ओघ॰ ४९।*

छड्डणिका– छर्दने-परिष्ठापने। *बृह॰ ८६* आ।

छड्डन– प्रोज्झनम्। *ओघ॰ १६२।*

छड्डावण– छड्डावेति-त्याजयति। *ओघ॰ १४९।*

छड्डाविओ– त्याजितः। *आव॰ २१२।*

छड्डिअ– छर्दितं-गृहस्थैर्दत्तम्। *अनुयो॰ २१६।*

छड्डिय– परिशाटवत्। दशम एषणादोषः। *आचा॰ ३४५।* छर्द्दितं भूमावावेडितं, दशम एषणादोषः। *पिण्ड॰ १४७।*

छड्डी– छर्दी-व्याधिविशेषः। *आचा॰ ३६२।*

छड्डे– त्यजति। *आव॰ ६४९।*

छड्डेऊण– त्यक्त्वा। *आव॰ २२६।*

छड्डेज्ज– छर्दि विद्ध्यात्। *आचा॰ ३३०।*

छड्डेति– त्यजेत्। *आव॰ ३६५।*

छड्डेत्ता– त्यक्त्वा। *आव॰ ३२४।*

छण– जत्थ विसिट्ठं भत्तपाणं उवसाहिज्जति। *निशी॰ १४* आ। इन्द्रोत्सवादिलक्षणः। *भग॰ ४७३।* ऊसवो। *निशी॰ २००* आ। जत्थ एकंतविसेसे कज्जति सो छणो। *निशी॰ १६२* अ। क्षणं-इन्द्रमहादि। *व्यव॰ ३४२* आ। *ज्ञाता॰ ५६।* क्षणः उत्सवः। *ओघ॰ ४९। ज्ञाता॰ ९९।* क्षणनं क्षणः-हिंसनम्। *आचा॰ १४८।* अवसरः। *आचा॰ १४८।* क्षणः। *आव॰ २२०, २७३, ६९२।* क्षणः-बहुलो-कभोजनदानादिरूपः। *ज्ञाता॰ ८१।*

छणदिवस– क्षणदिवसः-क्षणमात्रदिवसः। *आव॰ ६९२।*

छणपए– क्षणपदः-हिंसास्पदेन प्राण्युपमर्दजनितः। *आचा॰ १४७।*

छणिए– छगलीविशेषः। *विपा॰ ६५।*

छणूसवे– क्षणः-प्रतिनियतः कौमुदीशक्रमहादिकः, उत्सवः-पुनरनियतो नामकरणचूडाकरणपाणिग्रहणादिकः, अथवा यत्र पक्वान्नविशेषः क्रियते स क्षणः, यत्र तु पक्वान्नं विनाऽपरो भक्तविशेषः स उत्सवः। *बृह॰ १०४* अ।

छणुसवियं– छणो ऊसवो छणूसवो तम्मि जं परिहिज्जति तं छणूसवियं। *निशी॰ १६२* अ।

छण्णं– अभ्यन्तरम्। *ओघ॰ ९१।* प्रछन्नम्। *स्था॰ ४८४।*

छण्णकडए– छिन्नकटके। *आव॰ ३५०।*

छण्णमंडवं– जस्स गामस्स णगरस्स वा उग्गहे सव्वासु दिसासु अण्णो गामो नत्थि गोकुलं वा तं छण्णमंडवं। *निशी॰ ३४१* आ।

छण्णालए– षण्नालकानि त्रिकाष्ठिकाः। *औप॰ ९५।* छण्णालकः-त्रिकाष्ठिका। *ज्ञाता॰ १०५।*

छतिपुत्तो– छातीसुतः-दाढादालः। *जीवा॰ १२१।*

छत्तंतिय– छत्रवती। *बृह॰ ५९* आ।

छत्तंतिया– छत्रान्तिका। *बृह॰ ६०* आ।

छत्त– छत्रं-आचार्यः। *बृह॰ १८४* आ। छादयतीति छत्रं-वर्षाकल्पादि। *आचा॰ ४०३।* छत्रं-आतपत्रम्। *दशवै॰ ११७।* छत्रं-छत्राकारो योगः। *सूर्य॰ २३३।* कउगो। *निशी॰ २८४* अ। *ज्ञाता॰ ३८।*

छत्तइल्लो– छत्रवान्। *उत्त॰ ९७।*

छत्तकारे– छत्रकारः-शिल्पभेदः। *अनुयो॰ १४९।*

छत्तग्गा– छत्राग्रा-जितशत्रुराजधानी। *आव॰ १७७।*

छत्तछाया– छत्रच्छाया। *आव॰ ३४१। प्रज्ञा॰ ३३७।*

छत्तज्झया– छत्रध्वजाः-छत्रचिह्नोपेता ध्वजाः। *जीवा॰२१५।*

छत्तधारो– छत्रधरः। *आव॰ २०४।*

छत्तपलासए– छत्रपलाश-स्कन्दकचरिते 'कयंगला' नगर्यां चैत्यम्। *भग॰ ११२, १२३।*

छत्तयं– छत्रकम्। *आव॰ ३०५।* आतपत्रम्। *भग॰ ११३।*

छत्तरयणे– चक्रवर्तिन एकेन्द्रियं द्वितीयं रत्नम्। *स्था॰*

३९८।

छत्तसंठिआ– छत्रसंस्थिताः। *जीवा॰ २७९*।

छत्तसंठिया– छत्रं-आतपत्रं तत्संस्थितमिव संस्थितं संस्था-नमस्या इति छत्रसंस्थिताः। *उत्त॰ ६८५*।

छत्ताइछत्ता– छत्रातिच्छत्राणि-उपर्युपरिस्थितातपत्राणि। *सूर्य॰ २६३*।
छत्राल्लोकप्रसिद्धादेकसंख्याकाद् अतिशायीनि द्विसङ्ख्यानि त्रिसङ्ख्यानि वा छत्राणि छत्रातिच्छत्राणि। *जम्बू॰ ४४*।
छत्रादुपर्यन्यान्यच्छत्रभावतोऽतिशायि छत्रं छत्रातिछत्रं तदाकारो योगः। *सूर्य॰ २३३*।

छत्तागारसंठिता– छत्राकारसंस्थिताः। *सूर्य॰ ३६*।

छत्तारा– छत्रकाराः, शिल्पार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५६*।

छत्ति– दोषाच्छादनम्। *आव॰ ७८२*।

छत्तीसमट्ठिया– षट्त्रिंशच्छोघकाः। *मरण॰*।

छत्तोए– कुहुणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

छतोह– छत्रोपगः, वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। *भग॰ ८०३*।

छत्रकं– वंशमयमातपत्रम्। *बृह॰ २५३ अ*।

छदिसाअरो– षड्दिशाचरः। *आव॰ २१४*।

छद्दि– छर्दिः-दोषविशेषः। *आव॰ ८६०*।

छद्दोसो– षड् दोषाः। *स्था॰ ३९४*।

छद्मस्थवीतरागः– जिनः। *आव॰ ५०१*।

छन्नं– माया। *सूत्र॰ ६९*। स्वदोषाणां परगुणानां वाऽऽवरणम्। *प्रश्न॰ २७*। प्रतिच्छंन्नं-अतिलज्जालुतयाऽव्यक्तवचनम्। *भग॰ ९१९*।
दर्भादिभिरुछादितः। *आचा॰ ३६१*। छन्नं-व्याप्तः। *जीवा॰ १८८*।

छन्नपदं– छद्मपदं-कपटजालम्। *सूत्र॰ १०५*। गुप्ताभिधानं वा। *सूत्र॰ १०५*।

छन्नपदोपजीवी– मातृस्थानोपजीवी। *सूत्र॰ ३९८*।

छन्नपरिछन्ना– अत्यन्तमाच्छादिताः। *जम्बू॰ ३०*।

छन्ना– व्याप्ताः। *जम्बू॰ ३०*।

छन्नालयं– षड्नालकम् त्रिकाष्ठिका। *भग॰ ११३*।

छपत्रिक– आभरणविशेषः। *निशी॰ २५५ अ*।

छप्पइ– षट्पदिका-यूका। *आव॰ ५७४*।

छप्पओ– षट्पदः-भ्रमरः। *जीवा॰ १९८*।

छप्पतिगिल्ले– यस्याः षट्पदिकाः प्राचुर्येण सम्मूच्छन्ति स षट्पदिकावान्। *बृह॰ २२२ अ*।

छप्पय– षट्पदः-भ्रमरः। *जीवा॰ १२३*।

छप्पया– षट्पदिका-यूका। *आव॰ २१३*।

छप्पाए– पुच्छेन। *ओघ॰ १८०*।

छप्पुरिमं– पुव्वं दायव्वं। *निशी॰ १८२ अ*।

छप्पुरिमा– तत्र वस्त्रे प्रसारिते सति चक्षुषा निरूप्य तदर्वा-ग्भागं तत्परावर्त्त्य निरूप्य च त्रयः पुरिमाः कर्त्तव्याः, प्रस्फो-टका इत्यर्थः। *स्था॰ ३६१*।

छब्ब– छब्बकम्। *पिण्ड॰ १५५*।

छब्बए– वंशपिटकं शकुनिगृहकं वा। *ओघ॰ १८४*।

छब्बगं– छब्बकं-पटलिकादिरूपम्। *पिण्ड॰ ९०*।

छब्बगवारगमाई– छब्बकवारकादिकमनेकविधं भाजनं पर-स्थानम्, छब्बकं पटलिकादिरूपं वारकः-लघुर्घटः।

छब्भागे– षड्भागः-षष्ठोभागः। *जम्बू॰ ४५६*।

छब्भामरी– वीणाविशेषः। *ज्ञाता॰ २२९*।

छम– क्ष्मा-भूमिः। *दशवै॰ २७५*।

छमासिआ– षण्मासिकी षष्ठिभि, क्षुप्रतिमा। *ज्ञाता॰ ७२*। *सम॰ २१*।

छम्मं– छद्म। *आव॰ १७३*।

छम्मा– भूमि। *दशवै॰ १५७*।

छम्माणि– षण्माणी ग्रामविशेषः। *आव॰ २२६*।

छाया– जलादौ प्रतिबिम्बलक्षणा शोभा वा। *ज्ञाता॰ १७०*।

छरु– त्सरुः खड्गादिमुष्टिः। *प्रश्न॰ ८०*। *जीवा॰ २७०*।

छरुप्पगयं– त्सरुप्रगतं क्षुरिकादिमुष्टिग्रहणोपायजातम्। *प्रश्न॰ ९७*।

छरुप्पवायं– त्सरुः खड्गमुष्टिस्तदवयवयोगात् त्सरुशब्देनात्र खड्गा उच्यते, अवयवे समुदायोपचारः, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत्त्सरुप्रवादं, खड् गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः। *जम्बू॰ १३९*। *ज्ञाता॰ ३८*।

छरुहा– थासकाः-आदर्शगण्डप्रतिबद्धप्रदेशाः।
आदर्शगण्डानां मुष्टिग्रहणयोग्याः प्रदेशाः। *जम्बू॰ ५७*।
छरुकोमुष्टिग्रहण-स्थानम्। *ज्ञाता॰ २१९*।

छर्दितं– उज्झितं, त्यक्तम्। *पिण्ड॰ १६९*।

छलं– छलं-वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या, सूत्रदोषविशेषः। *आव॰ ३७५, ५५७*।
अनिष्टस्यार्थान्तरस्य सम्भवतो विव-क्षितार्थोपघातः कर्तुं शक्यते तत्। *अनुयो॰ २६१*।

छलओ– छलितो-व्यंसितोऽनर्थं प्राप्तः। *ज्ञाता॰ १६९।*

छलणं– छलनं प्रक्षेपणं। *आचा॰ ३७५।*

छलणा– छलना। *आव॰ ८५५।* अशुद्धभक्तादिग्रहणरूपा। *पिण्ड॰ ७०।*

छलदोस– दोषषट्कम्। *मरण॰।*

छलायतणं– छलं-नवकम्बलो देवदत्त इत्यादिकं छलायतनम्, षडायतनं वा-उपादानकारणानि आश्रवद्वाराणि श्रोत्रेन्द्रिया-दीनि यस्य कर्मणस्तत् छलायतनम्। *सूत्र॰ २१६।*

छलिअकहा– षट्प्रज्ञकगाथाः। *ओघ॰ ५५।*

छलिए– स्खलितम्। *ओघ॰ २२५।*

छलिकमार्ग– गीतकलायाः द्वितीयो भेदः। *सम॰ ८४।*

छलिय– छलितानि शृङ्गारकथाकाव्यानि। *बृह॰ ५१ आ।*

छलुए– द्रव्यगुणकर्म्मसामान्यविशेषसमवायलक्षणषट् पदार्थप्र-रूपकत्वाद् गोत्रेण च कौशिकत्वाद् षडुलुकः। *स्था॰ ४१३।* षडुलूकः। *दशवै॰ ५८।*

छलुग– षट्पदार्थप्रणयनाद् उलूकगौत्रत्वाच्च षडुलूकः। *उत्त॰ १५३। निशी॰ ९८ आ।* षडुलूकः-यस्मात्त्रैराशिका उत्पन्ना स आचार्यः। *आव॰ ३२१।*

छलुगा– षडुलूकात् त्रिराशिकानामुत्पत्तिस्थानम्। *आव॰ ३१२।*

छलेज्जा– छलेत्। *आव॰ ६३३।*

छल्लि– अभ्यन्तरं वल्कम्। *स्था॰ १८६।*

छल्ली– ब्राह्या त्वक्। *बृह॰ १६२ अ।* छल्लिः-रोहिणी-प्रभृतिः। *विपा॰ ४१। ज्ञाता॰ १८३।* छल्ली-वल्कलरूपा। *प्रज्ञा॰ ३६।*

छल्लेउं– निस्त्वचीकृत्य। *उत्त॰ २१९।*

छल्ल्यः– त्वचः। *प्रज्ञा॰ ३१।*

छवडिया– चर्म। *ओघ॰ २१७।*

छवि– अलङ्कारविशेषः। *अनुयो॰ २६२।* शरीरम्। *आव॰ ८१९।* त्वक्। *उत्त॰ २५१।* त्वक् छाया वा। *जीवा॰११४।* शरीरम्। *स्था॰ ३३७।* छविः-शरीरम्। *भग॰ २१८।* शरीरत्वग्। *भग॰ ३०८।* छविदोषः-छविः-अलङ्कारविशेषस्तेन शून्यं, सूत्रस्य त्रयोविंशतितमो दोषः। *आव॰ ३७४।* छवी-शरीर-त्वक्। *प्रश्न॰ ६०।* त्वक्तद्योगादौदारिकशरीरं तद्वती नारी तिरश्ची वा तद्वान्नरस्तिर्यग्वा छविरिति उच्यते। *स्था॰ १९३।* क्षयिः-व्यवस्थाविशेषः। *स्था॰ ४०९।* क्षपिः-स्वपरयोरायासः। *भग॰ ९२५।*

छविअद्दं– यत् स्निग्धत्वग्द्रव्यं मुक्ताफलरक्ताशोकादिकं तत्। *सूत्र॰ ३८६।*

छविग्गहिते– षड्विग्रहिकः। *जीवा॰ २३१।*

छविच्छदो– हस्तपादनासिकादिच्छेदः। *स्था॰ ३९९।*

छविच्छेए– छविच्छेदः-शरीरपाटनम्। *आव॰ ८१८।*

छविच्छेओ– छविच्छेदः-शरीरच्छेदनम्, प्राणवधस्यैकविंश-तितमः पर्यायः। *प्रश्न॰ ६।*

छविच्छेद– शरीरच्छेदः। *भग॰ २१८।*

छवित्ताणं– छविः-त्वक्त्रायते-शीतादिभ्यो रक्ष्यतेऽनेनेति छवित्राणं वस्त्रकम्बलादि। *उत्त॰ ८८।*

छविदोसो– छविः-अलङ्कारविशेषस्तेन शून्यं छविदोषः, सूत्रस्य त्रयोविंशतितमो दोषः। *अनुयो॰ २६२।*

छविपत्ता– छविः प्राप्ता जातेत्यर्थः। *स्था॰ ६७।*

छविपव्वा– छवि-मतुब्लोपाच्छविमन्ति-त्वग्वन्ति पर्वाणि सन्धिबन्धनानि छविपर्वाणि। *स्था॰ ६७।*

छविमत्यः– औषधिविशेषाः। *आचा॰ ३७१।*

छवियत्ता– छवियोगाच्छविः स एव छविकः, स चासौ 'अत्त' त्ति आत्मा-शरीर छविकात्मा। *स्था॰ ६७।*

छवी– छविमान्, उदात्तवर्णया सुकुमारया च त्वचा युक्तः। *जीवा॰ ७७।* कलमादिसेंगा। *निशी॰ २७३ आ।*

छव्विया– छर्विकाः-कटादिकाराः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

छाउद्देसे– छायोद्देशः। *सूर्य॰ ९६।*

छाए– सदृशः। *भग॰ ७५४।*

छाएउ– छदित्वा, ढंकिउं। *आव॰ ६६१।*

छाएल्लय– छायार्थी। *उत्त॰ ११९।*

छाओ– बुभुक्षितः। *ओघ॰ १८९।* छातः-बुभुक्षितः। *पिण्ड॰ १७६।*

छाण– छादनं-दर्भादिमयं पटलमिति। *भग॰ ३७६।* छाणं-आच्छादनम्। *जीवा॰ १८०। निशी॰ ७ अ।*

छाणपिंडो– छगण (गोमय) पिण्डः। *आव॰ ४२२।*

छाणविच्छुय– छगणवृश्चिकः, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

छाणविच्छुया– चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

छाणिय– क्षालितो-गालितः। *बृह॰ ८१ अ।*

छातो– क्षुधितः। *निशी॰ ३५४ अ।*

छादयति– आवरयति। *जीवा॰ २५६*।

छायंत्ति– प्राकृत्त्वात् छायावन्तः शोभमानशरीराः। *समः १५६*।

छाय– क्षुधितः। *निशी॰ २८६* अ।

छायणं– छादनं-स्थगनम्। *आव॰ २६४*। दर्भादिपटलकरणम्। *प्रश्न॰ १२७*। छज्जकरणं छायणं। *निशी॰ २३०* आ।

छायणओ– छादनतः-अनुष्ठानभेदः। *आचा॰ ३६८*।

छाया– शङ्कछाया। *बृह॰ ४२* अ। प्रभया आतपाभावलक्षणया युक्ता। *समः १५५*। आकारः। *राज॰ ७४*। प्रतिबिम्बम्। *उपा॰ २६*। छारा(ताः) कसघातव्रणाङ्कितशरीराः। *दशवै॰ २४८*। दीप्तिः। *जीवा॰ १६१*। प्रभा। *बृह॰ १५४* आ। सन्निभा। *उत्त॰ ६५२*। समुदायशोभा। *प्रज्ञा॰ ८८*। आकारः-छायाशब्दआतपप्रतिपक्षवस्तुवाची। *जीवा॰ १८७*। *जम्बू॰ २८*। कीर्त्तिः। *निशी॰ १३४* आ। दीप्तिः। *औप॰ १६*। शोभा। *भग॰ १३२*। *औप॰ ५०*। छयति छिनत्ति वाऽऽतपमिति छाया। *उत्त॰ ३८*। आतपवारण-लक्षणा। *प्रश्न॰ ७६*। *औप॰ ६७*। दीप्तिः। *समः १४०*। शरीरप्रभा। *जीवा॰ २७७*। प्रकृतिः। *भग॰ ६८३*। शैत्यगुणा। *उत्त॰ ५६१*। कान्तिः। *जम्बू॰ ५७*।

छायागती– छायामनुसृत्य तदुपष्टम्भेन वा समाश्रयितुं गतिः छायागतिः-विहायोगतेर्नवमो भेदः। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

छायाणुमाणप्पमाणं– छायानुमानप्रमाणम्। *सूर्य॰ ९८*।

छायाणुवातगती– छायायाः स्वनिमित्तपुरुषादेरनुपातेन-अनुसरणेन गतिः छायानुपातगतिः, विहायोगतेर्दशमो भेदः। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

छायाणुवादिणी– छायानुवादिनी। *सूर्य॰ ९५*।

छायालीसं– षट्चत्वारिंशत्। *पिण्ड॰ १७६*।

छारं– क्षारं-रक्षा। *ओघ॰ १४२*। *आव॰ ३०८, ६२१*। भस्म। *आव॰ २१८*। क्षारम्। *आव॰ ३०८*। भूतिः। *ओघ॰ १४३*। क्षारः-भूतिः। *ओघ॰ १४०*। क्षारः भस्मः। *बृह॰ ८०* अ।

छारकयार– भस्मकचवरः। *आव॰ २१८*।

छारा– भोया। *निशी॰ १०४* अ। क्षाराः-क्षारावगुण्ठितवपुषः। *पिण्ड॰ ९८*।

छारिए– क्षारकं-भस्म। *भग॰ २१३*।

छारिय– क्षारराशिः। *दशवै॰ १६४*।

छारुज्झियं– क्षारोष्ट्रिकां-भस्मपरिष्ठापिकाम्। *ज्ञाता॰ ११७*।

छारो– अभिणवडड्ढं अपुंजकयं छारो। *निशी॰ १९२* अ।

छावट्टे– षट्षष्टिः। *सूर्य॰ ११*।

छावण– छादनं-दर्भादिभिराच्छादनम्। *बृह॰ ९२* अ।

छाहि– छाया। *आव॰ ७०६*।

छाही– छाया। *आव॰ ४१५, ६२४*।

छिंडिका– गृहद्वायान्तरस्थः प्रलम्बगमनमार्गः। *पिण्ड॰ १०५*।

छिंडिया– छिण्डिका। *आव॰ ३४९*। छिण्डिका-वृत्तिच्छिद्ररूपा। *ज्ञाता॰ ७७*।

छिंदंति– व्यवस्थां स्थापयन्ति। *बृह॰ ११०* अ।

छिंद– छिन्द-द्विधाकुरु। *ज्ञाता॰ २३८*।

छिंदइ– छेदं करोति। *भग॰ १७५*।

छिंदति– छिनत्ति-करोति। *अन्त॰ १६*।

छिंदावेमि– छेदयामि। *आव॰ २२४*।

छिंदिज्ज– छिन्द्यात्-मार्जारीमूषकादिभिर्वा पुरतो यायात्। *आव॰ ७८४*।

छिंपक– कारुकजातिविशेषः। *प्रश्न॰ ३०*।

छिंपाय– कारुकजातिविशेषः। *जम्बू॰ १९४*।

छिइए– क्षुतम्। *आव॰ ७७९*।

छिक्क– स्पष्टः। *आव॰ ४१८*। *पिण्ड॰ ७०*। स्पष्टवान्। *बृह॰ ६२* आ। *निशी॰ ३४५* अ। हतः। *आव॰ ४१७*।

छिक्का– स्पृष्टा। *आव॰ २०२*।

छिक्कोवणा– शीघ्रकोपनः। *बृह॰ २२५* अ।

छिज्जमाणे छिन्ने– कुठारादिना लतादिविषयच्छेदः। *भग॰१९*।

छिज्जेज्ज– संश्छिद्येत-द्विधा क्रियते। *अनुयो॰ १६१*।

छिड्डं– छिद्रं महत्तरं रन्ध्रम्। *भग॰ ८३*। अल्पपरिवारत्वम्। *विपा॰ ७३*। छिद्रः-छेदनस्यास्तित्वच्छिद्रम्। *भग॰ ७७६*।

छिड्डकुडे– छिद्रकुटः। *आव॰ १०१*।

छिड्डविच्छिड्डं– बृहल्लघुच्छिद्रांकितम्। (*तन्दु॰*)

छिड्डाइं– छिद्राणि। *आव॰ ६६*।

छिड्डाणि– छिद्राणि-अल्पपरिवारादीनि। *निर॰ १२*।

छिण्ण– स्त्यान-कठिन मदीयात्यन्तानुकूलचरितादवीकृत-हृदयत्वात्। *ज्ञाता॰*

१६७।

छिण्णछेदयणवत्तव्वया– छिन्नच्छेदकवक्तव्यता। *आव॰ ३१६*।

छिण्णछेयणयं– छिन्नच्छेदनकं-अनुप्रवादपूर्वे वक्तव्यताविशेषः। *उत्त॰ १६३*।

छिण्णद्धाण– छिन्नाध्वा। *आव॰ २०८*।

छिण्णब्भं– एगं अब्भयं। *निशी॰ १४६* आ।

छिण्णसम्मं– तथाऽधिकमांसादिच्छेदाच्छिन्नसम्यक्। *आचा॰ १७६*।

छिण्णसोए– छिन्नश्रोताः-छिन्नसंसारप्रवाहः, छिन्नशोको वा। *जम्बू॰ १४६*।

छिण्णसोय– छिन्नशोकः, छिन्नश्रोता वा। *प्रश्न॰ १५७*।

छिण्णा– छिन्ना। *आव॰ ३५८*।

छिण्णो– तंदुलघयादि जत्थ परिमाणपरिच्छिण्णा दिज्जंति सो छिण्णो भण्णति। *निशी॰ १०६* आ।

छिण्णोवसंपय– या आवलिका सा छिन्ना यतस्तस्यां यो लाभ आदित आरभ्य परम्परया छिद्यमानोऽन्तिमेऽभिधार्थेऽन्यमन-भिधारयति विश्राम्यति सा छिन्नोपसम्पत्। *व्यव॰३७७*अ।

छित्त– स्पृष्टः। *आव॰ २७४*।

छित्तरा– छित्वराणि वंशादिमयानि छादनाधारभूतानिकिलि-ञ्जानि। *भग॰ ३७६*।

छित्ता– छित्वा-विभज्य। *सूर्य॰ २२, २३३*।

छित्तिकाऊण– थूत्कृत्य। *उत्त॰ ३५६*।

छित्ते– क्षेत्रे। *बृह॰ ९८* आ।

छिद्द– छिद्रं-अवसरः। *आव॰ ६८२*। *प्रश्न॰ ५३*। राजपरि-वारविरलत्वम्। *विपा॰ ५३*। प्रदेशद्वारम्। *प्रश्न॰ ४२*। जं पुण आभोगओ असामायारिं करेइ तं छिद्दं भण्णति। *निशी॰ ९३* अ। छिद्रः-प्रविरलपरिवारत्वादिः, चौरप्रवेशावकाशः। *ज्ञाता॰ ८१*।

छिन्न– उर्द्धम्। *उत्त॰ ४६०*। छेदनं छिन्नं वसनदशनदार्वादीनां, तद्विषयशुभाशुभनिरूपिका विद्याऽपि छिन्नम्। *उत्त॰ ४१६*। छेदनं-कर्मणो दीर्घकालानां स्थितीनां ह्रस्वताकरणम्। *भग॰ १६*। निर्द्वारितः। *बृह॰ १०२* अ। छिन्नः-खण्डितः। *उत्त॰ ४६०*। छिन्दनम्। *ओघ॰ २०४*। छिन्नं-नियमितम्। *पिण्ड॰ ७९*। निपुष्पकम्। *पिण्ड॰ १०१*। परिश्वादिभिर्वृक्षात् पृथक्स्थापितम्। *दशवै॰ १५५, १७६*। विभक्तः। *ज्ञाता॰ २३८*।

छिन्नकडए– छिन्नकटकम्। *उत्त॰ ४९६*। *दशवै॰ ९९*।

छिन्नकहंकहे– छिन्ना अपनीता कथं-कथमपि या कथाराग-कथादिका विकथारूपा येन स छिन्नकथंकथः, यदिवा कथ-महमिङ्गितमरणप्रतिज्ञां निर्विहिष्ये इत्येवंरूपा या कथा सा छिन्ना येन स छिन्नकथंकथः। *आचा॰ २८६*।

छिन्नग्गंथे– मिथ्यात्वादिभावग्रन्थिच्छेदः। *ज्ञाता॰ १०४*।

छिन्नच्छेयणइयाईं– इह यो नयः सूत्रं छिन्नं छेदेनेच्छति स छिन्नछेदनयः। *सम॰ ४१*।

छिन्नमूलो– छिन्नमूलः। *उत्त॰ २७९*।

छिन्नरुहो– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

छिन्नसोआ– छिन्नशोकाः छिन्नश्रोतसो वा, छिन्नसंसारप्रवाहाः। *औप॰ ३५*।

छिन्नसोय– छिन्नशोकः-छिन्नानि वा श्रोतांसीव श्रोतांसिमि-त्यादर्शनादीनि येनासौ छिन्नश्रोताः। *उत्त॰ ४८७*।

छिन्ना– कन्दलीकृताः। *आचा॰ ३२३*। छिन्ना हस्तादिषु। *ज्ञाता॰ २३९*।

छिन्नाले– तथाविधदुष्टजातिः। *उत्त॰ ५५१*।

छिन्नावाय– छिन्नः-अपगतः आपातः-अन्यतोऽन्यत आगम-नात्मकः अर्थाज्जनस्य येषु ते छिन्नापाताः। *उत्त॰ ८९*।

छिन्नावाय– छिन्ना आपाताः सार्थगोकुलादीनां यस्यां सा। *स्था॰ ३१४*।

छिपाः– नन्तिक्ताः। *व्यव॰ ४१९* आ।

छिप्पतूरं– द्रुततूर्यम्। *विपा॰ ५९*। क्षिप्ततूर्यः। *ज्ञाता॰ २३९*।

छिया– छिव श्लक्ष्णलोहकुशा। *जम्बू॰ १४७*।

छिरा– शिरा-धमन्यः। *सम॰ १५०*। शिराः-धमनिनाडयः। *जीवा॰ ३४*।

छिरारुहिरं– शिरारुधिरं-नाडीरुधिरम्। *आव॰ ४०२*।

छिरिया– अनन्तकायभेदः। *भग॰ ३००*।

छिल्लर– पल्वलम्। *दशवै॰ १९*।

छिवा– श्लक्ष्णकषः। *प्रश्न॰ ५७*। श्लक्ष्ण-कषः। *ज्ञाता॰*

८७।

छिवाडि– वल्लादिफलिका। *प्रज्ञा॰ ३६३*। मुद्गादेः फलिः। *आचा॰ ३२३*। मुद्गादिफलिः। *दशवै॰ १८५*।

छिवाडिआइ– छेवाडीनाम वल्लादिफलिका सा च क्वचिद्देश-विशेषे शुष्का सती अतीव शुक्ला भवति। *जम्बू॰ ३५*।

छिवाडी– तनुपत्र उच्छ्रितरूपः, अथवा अल्पबाहल्यः प्रथुलः पुस्तकः। *बृह॰ २१९* आ। सृपाटिका यत्तनुपत्रोच्छित-रूपम्। *आव॰ ६५२*। छेवाडी-वल्लादिफलिका। *जीवा॰ १९१*।

छिवाडीय– सृपाटिका-तनुपत्रोच्छितरूपा। *स्था॰ २३३*।

छिहलि– शिखा। *आव॰ ६४७*।

छिहली– शिखा। *आव॰ ६२६*। *बृह॰ १०१* आ। सिहं। *निशी॰ ३५* आ। छीए-क्षुतम्। *आव॰ ७७९*।

छीअ– क्षवणं-क्षुतम्। *आव॰ २५*।

छीत्कृतं – क्षुतिः। *भग॰ ६६४*।

छीर– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

छीरल– क्षीरलः भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

छीरालि– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

छीरिविरालिया– अनन्तकायभेदः। *भग॰ ३००*। भुजपरि-सर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

छुक्कारेति– छूत्कारं करोति। *जीवा॰ २४७*।

छुट्टा– छुटिताः। *आव॰ २२४*।

छुड्ड– सुष्ठु। *उत्त॰ २४५*।

छुड्डिया– क्षुद्रिका-आभरणविशेषः। *प्रश्न॰ १५९*।

छुन्नमुहो– छुन्नमुखः-क्लीबमुखः। *पिण्ड॰ १२५*।

छुन्ना– छिन्नाः। (*संस्ता॰*)

छुपंतु– स्पृशन्तु भवन्तित्यर्थः। *भग॰ १२२*।

छुप्पेज्ज– क्षिपतु। *आव॰ ८२५*।

छुब्भइ– प्रक्षिप्यते-प्रवेश्यते। *बृह॰ १७५* अ। क्षुभ्यते-जातमहाऽद्भुतशक्तिकः सन् ऊर्द्धमितस्ततो विप्रसरति। *जीवा॰ ३०७*।

छुभंति– प्रक्षिपन्ति। *आव॰ १२८*।

छुरं– क्षुरप्रम्। *आव॰ ६२७*।

छुरघरगसंठिते– क्षुरगृहकसंस्थितम्। *सूर्य॰ १३०*।

छुरमुंडो– क्षुरमुण्डः। *आव॰ ६४७*।

छुरय– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

छुरिय– क्षुरिका। *आव॰ ५७८*। शस्त्रविशेषः। *निशी॰ १०५* अ।

छुरिया– क्षुरिका। *उत्त॰ ७११*।

छुहति– क्षिपति। *आव॰ २२६*।

छुहाइएहिं– क्षुधार्त्तयोः। *आव॰ ३६६*।

छुहाकुडुं– सुधाकुड्यं सुधामाष्टर्यं कुड्यम्। *ओघ॰ १२७*।

छुहातिया– क्षुधार्दिता। *आव॰ ३२३*।

छुहापरद्धो– क्षुधापरिगतः। *आव॰ ८१४*।

छुहालुया– क्षुधालुकाः। *दशवै॰ ४२*।

छुहिय– बुभुक्षितः। *ज्ञाता॰ १९२*।

छूढाणि– क्षिप्तानि। *आव॰ ६३*।

छूढो– क्षिप्तः। *प्रश्न॰ ६०*।

छूहालू– क्षुधार्त्तः। *आव॰ ३६६*।

छे– छेकं, निपुणं, हितं, कालोचितम्। *दशवै॰ १५७*।

छेइत्ता– छित्वा-परित्यज्य। *भग॰ १२८*।

छेए– छेकः-अवसरज्ञः, द्विसप्ततिकलापण्डित इति। *औप॰ ६५*। कलापण्डितः। *जम्बू॰ ३८८*। छेकः-प्रयोगज्ञः। *अनुयो॰ १७७*। *भग॰ ६३१*।

छेओ– छेकः असांव्यवहारिकः। *आव॰ ५२७*।

छेओवट्ठावणं– छेदोपस्थापनं-छेदश्चोपस्थापनं च यस्मिंस्तत्, पूर्वपर्यायस्य छेदो महाव्रतेषु चोपस्थापनमात्मनो यत्र तत्। *आव॰ १९*।

छओवट्ठावणिय– छेदे-प्राक्तनसंयमस्य व्यवच्छेदे सति यदुप-स्थापनीयं-साधावारोपणीयं तच्छेदोपस्थापनीयं, पूर्वपर्याय-च्छेदेन महाव्रतानामारोपणमित्यर्थः। *भग॰ ३५०*।

छेओवट्ठावणीयं– छेदोपस्थापनीयम्। *उत्त॰ २५८*।

छेगे– छेकः-द्वासप्ततिकलापण्डितः। *जीवा॰ १२२*।

छेज्जं– छेद्यम्। *सूर्य॰ ११३*। छेद्यं पत्रछेद्यादि। *दशवै॰ ८७*। छेदनकर्म्म-द्विधा करणम्। *दशवै॰ २७०*।

छेज्जाछेयाणि– गच्छचिंतायां प्रमाणभूतानि स्थेयानि-अनेकशः प्रीतिकराणि। *व्यव॰ २४१*।

छेत्तं– क्षेत्रं स्थानम्। *औप॰ ४*। *ज्ञाता॰ ३*। क्षेत्रम्। *ओघ॰ १६३*।

छेत्तुडोअ– दव्वी। *निशी॰ १२८* आ।

छेत्तूण– छित्वा-द्विधा विधाय। *उत्त॰ २७३*।

छेद– करपत्रादिभिः पाटनम्। *आव॰ ८१९*। प्रव्रज्यापर्याय-

यहस्वीकरणम्। *भग॰ ९२०*। छेदः-तपसा दुर्दमस्य श्रमण-पर्यायच्छेदनम्। *आव॰ ७६४*। जीवादिद्रव्यस्य विभागः। *स्था॰ ३४६*। *व्यव॰ ३४१* आ।

छेदन– क्षपणम्। *उत्त॰ ५९३*।

छेदनकः– उदकाश्रितजीवः। *आचा॰ ४६*।

छेदारिहं– छेदार्हं दिनपञ्चकादिना क्रमेण पर्यायच्छेदनम्। *औप॰ ४२*। प्रव्रज्यापर्यायह्रस्वीकरणार्हम्। *भग॰ ९२०*।

छेदेत्ता– छित्वा-व्यवच्छेद्य। *ज्ञाता॰ ७७*।

छेदोदइए– छेदश्च व्यय औदयिकश्च लाभः छेदौदयिकम्। *बृह॰ २३* आ।

छेदोवट्ठावण– छेदः-पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतेषु यस्मिन् चारित्रे तच्छेदोपस्थापनम्। *प्रज्ञा॰ ६४*।

छेदोवट्ठावणिय– छेदश्च पूर्वपर्यायस्योपस्थानं च व्रतेषु यत्र तत्छेदोपस्थानं तदेव छेदोपस्थापनिकं, ते वा विद्येते यत्र तच्छेदोपस्थापनिकमथवा पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थाप्यते, आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्रं तच्छेदोपस्थापनीयम्। *स्था॰ ३२३*। पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीयं-आरोपणीयं छेदोपस्थापनीयं, व्यक्तितो महाव्रतारोपणम्। *स्था॰ १६८*।

छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठितो– पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीयं आरो-पणीयं व्यक्तितः महाव्रतारोपणं तत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसु स्थानकेष्ववश्यं पालनलक्षणा। *स्था॰ १६८*।

छेप्पं– पुच्छम्। *विपा॰ ४९*।

छेय– छेकः। *औप॰ ४*। छेदः-पुष्पफलादेः खण्डनम्। *पिण्ड॰ १६१*। छेकः-दक्षः। *आव॰ ७०*। *ज्ञाता॰ ५८*। अपच्छेदः। औघ॰ ७२। छेकः-निपुणः। *ज्ञाता॰ २२१*। *स्था॰ २००*।

छेयकरे– छेदनकरम्। *आचा॰ ४२५*।

छेयगं– छेदकम्। *सूर्य॰ ११३*।

छेयण– छेदनं-कर्मणः स्थितिघातः। *स्था॰ २१*। विभजनम्। *स्था॰ ३४६*। विरहः। *स्था॰ ३४६*। छेदनं-उत्तरोत्तरशु-भाध्यवसायारोहणात्स्थितिह्रासजननम्। *आचा॰ २९८*।

छेयणग– छेदनकं-राशेरर्द्धीकरणम्। *अनुयो॰ २०७*।

छेयणयं– छेदनकम्। *प्रज्ञा॰ २८१*।

छेयसारहि– छेकसारथिः दक्षप्राजिता। *भग॰ ३२२*।

छेयसुय– छेदश्रुतानि-प्रकल्पव्यवहारादीनि। *व्यव॰ ११५* अ। *निशी॰ २८१* अ।

छेया– छेदाः-अर्थच्छेदाः। *व्यव॰ ९०* आ। छेकाः-प्रस्तावज्ञाः। *उपा॰ ४६*। छेका-निपुणा। *भग॰ १६७, ५२७*। *ज्ञाता॰ ३६*।

छेरित्ता– हदित्वा। *उत्त॰ १६९*। *आव॰ ३१९*।

छेला– छगलकः। *उत्त॰ १३८*।

छेलावणय– छेलापनकं-उत्कृष्टबालक्रीडापनं, सेण्टिताद्यर्थ-वाचकम्। *आव॰ १२९*।

छेलिअ– सेंटितं हर्षोत्कर्षेण सीत्कारकरणम्। *जम्बू॰ २०६*।

छेलिय– सेंटितं-सीत्कारकरणम्। *प्रश्न॰ ४९*। मुखवादित्रम्। *बृह॰ २४७* आ।

छेव- छेवकं-अशिवम्। *बृह॰ १५९* आ।

छेवइओ– अशिवगृहीत। *बृह॰ १५०* आ।

छेवग– असिवं। *निशी॰ ७५* आ। मारि। *व्यव॰ १२६* अ।

छेवट्टिया– छेवट्टिका, संहननविशेषः। *ओघ॰ २२७*।

छेवट्ठं– यत्रास्थीनि परस्परं छेदेन वर्त्तन्ते न किलिकामात्रेणापि बन्धस्तत् छेदवर्त्ति। *जीवा॰ १५, ४२*।

छेवतितो– असंविग्गहितो। *निशी॰ २९३* आ।

छेवाडिया– छेवाडिनाम वल्लादिफलिका। *राज॰ ३३*।

छेवाडी– दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पबाहल्लो छेवाडी अहवा तनुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी। *निशी॰ ६१* अ।

छोटियं– छोटितं-स्फोटितम्। *औप॰ १७*।

छोडिओ– छोटितः। *आव॰ ३९९*।

छोडिज्जति– छणिज्जति। *निशी॰ १९२* अ।

छोडियं– छोटितं-घट्टितम्। *प्रश्न॰ ८२*।

छोडियपडियं– छोटितपतितम्। *आव॰ २१८*।

छोढुं– छोटयित्वा। *निशी॰ ३७* अ। निक्षिप्य। *आव॰ २९५*। स्थापयित्वा। *आव॰ १९६*।

छोता– विदारणं। *निशी॰ ५६* आ।

छोभ– अभ्याख्यानम्। *बृह॰ १६४* आ। *बृह॰ ३१* अ।

छोभगं– कलङ्कम्। *निशी॰ २५२* अ। अब्भक्खाणं। *निशी॰ ९४* आ। अभ्याख्यानम्। *व्यव॰ २०४* अ।

छोभगदिन्नो– अभ्याख्यानं दत्तं यस्मिन् स छोभगदत्तः। *व्यव॰ २०६* आ।

छोभयं– अपमानम्। *दशवै॰ ४७*।

छोभवंदणं– आरभट्या छोभवन्दनं क्रियते। *आव॰ ५२४*।

छोभिय– क्षोभितः कदर्थीकृतः। *दशवै॰ ५८*।

छोभो– निस्सहायः क्षोभणीयो वा। *प्रश्न॰ ६४*।

छोय– छोकः लघुः। *भग॰ ३१८*।

छोल्लेति– निस्तुषीकरोति। *ज्ञाता॰ ११६*।

- x - x - x -

ज

जं– यत् उद्देशवचनम्। *आव॰ ४३८*। यदा। *आव॰ ३५८*।

जंकयसुकया– यदेव कृतं शोभनमशोभनं वा तदेव सुष्ठुकृत-मित्यभिमन्यते पितृपौरादिभिर्यस्याः सा यत्कृतसुकृता। *अन्त॰ १९*।

जंकिंचिमिच्छ–
खेलसिंघानाविधिनिसर्गाभोगानाभोगसहसा-कारादयसंयमस्वरूपं यत्किञ्चिन्मिथ्या-असम्यक् तद्विषयं मिथ्येदमित्येव प्रतिपूर्वकं मिथ्यादुष्कृतकरणं यत्किञ्चिन्मिथ्या प्रतिक्रमणमिति। *स्था॰ ३८०*।

जंकिंचिमिच्छा– यत्किञ्चिन्मिथ्या-यत्किञ्चिदाश्रित्य मिथ्या। *आव॰ ५४८*।

जंकिंचिमिच्छामि– यत्किञ्चनानुचितं तन्मिथ्या-विपरीतं दुष्ठु मे-मम इत्येवं वासनागर्भवचनरूपा एकाऽन्या गर्हा। *स्था॰ २१५*।

जंगंधं– यद्गन्धं-यादृशगन्धवत्। *ओघ॰ २२३*।

जंगल– निर्जलः। *बृह॰ १७५ आ*।

जंगला– जङ्गलाः-जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

जंगिते– जङ्गमाः-त्रसास्तदवयवनिष्पन्नं जाङ्गमिकं-कम्ब-लादि। *स्था॰ ३३८*। जंगमजमौर्णिकादि। *स्था॰ १३८*।

जंगियं– जङ्गमोष्ट्राद्यूर्णानिष्पन्नम्। *आचा॰ ३९३*। त्रसावयव-निष्पन्नं वस्त्रम्। *बृह॰ २०१ अ*।

जंगोलं– विषघातक्रियाऽभिधायकं जङ्गोलं-अगदं तत्तन्त्रं तद्धि सर्प्पकीटलूतादष्टविनाशार्थं विविधविषसंयोगोपशमनार्थं चेति आयुर्वेदपञ्चमाङ्गम्। *विपा॰ ७५*।

जंगोली– विषविघाततन्त्रमगदतन्त्रमित्यर्थः। *स्था॰ ४२७*।

जंघा– अङ्गविशेषः। *आचा॰ ३८*। संपूर्णजंघाच्छादकं चर्म। *बृह॰ २२२ आ*। जान्वधोवर्ती खुरावधिरवयवः। *जं॰२३४*।

जंघाचारणा– अतिशयचरणाच्चारणाच्चारणाः-विशिष्टाकाश-गमनलब्धियुक्ताः ते च जङ्गाचारणाः। *प्रश्न॰ १०६*। ये चारि-त्रतपोविशेषप्रभावतः समुद्भूतगमनविषयलब्धिविशेषास्ते जङ्घाचारणाः। *प्रज्ञा॰ ४२५*। शक्तितः किल रुचकवरद्वीपग-मनशक्तिमान्। *आव॰ ४७*।
जङ्घाव्यापारकृतोपकाराश्चारणा जङ्घाचारणाः। *भग॰ ७९३*।

जंघापरिजिय– मूलद्वारविवरणे साधुः।
जंघापरिजितनामा साधुः। *पिण्ड॰ १४४*।

जंघाबलपरिहीणो– परिक्षीणजङ्घाबलः। *आव॰ ५३६*।

जंजुका– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३०*।

जंत– यन्त्रम्। *उत्त॰ ११६*। प्रपञ्चः। *जीवा॰ १९९*। *३५९*। उच्चाटनाद्यर्थाक्षरलेखनप्रकारः, जलसङ्ग्रामादियन्त्रं वा। *प्रश्न॰ ३८*। यन्त्रं-अरघट्टादि। *प्रश्न॰ ८*। नानाप्रकारम्। *जीवा॰ १६०*। अरकोपरिफलकचक्रवालम्। *जीवा॰ १९२*। पाषाणक्षेपयन्त्रादि। *औप॰ १२*। यन्त्रशाला गुडादिपाकार्था। यन्त्रशालासु गुडादिनामुत्सेचनार्थमलाबूनि धार्यन्ते। *बृह॰ २४६ अ*। यन्त्रं-सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपम्। *जम्बू॰ २९२*। चारकोपरि फलकचक्रवालः। *जम्बू॰ ३७*। यन्त्रं-कोल्हकादिघाणकविषयम्। *पिण्ड॰ ११३*। यन्त्रिकाः। *ओघ॰ ७५*। यन्त्रं-व्रीह्यादिदलनोपकरणम्। *पिण्ड॰ १०९*। गच्छन्। *आव॰ ४२०*।

जंतकम्म– यन्त्रकर्म्म-बन्धनक्रिया। *भग॰ ३२२*।

जंतग– मट्टियादी। *दशवै॰ ७९*। यातः-यायी। *आव॰ ४३१*।

जंतणा– यन्त्रणा-पीडा। *आव॰ २३४*।

जंतपत्थर– यन्त्रप्रस्तरः-घरट्टादिपाषाणः, यन्त्रमुक्तपाषाणो वा। *प्रश्न॰ २०*। गोफणादिपाषाणः। *प्रश्न॰ ४८*।

जंतपासय– यन्त्रपाशकः। *आव॰ ३४२*।

जंतपीलग– श्रेणिविशेषः। *जम्बू॰ १९४*।

जंतपीलणकम्म– यन्त्रपीडनकर्म। *आव॰ ८२९*।

जंतलट्ठी– यन्त्रयष्टि-कृषिकर्मोपयुक्ता। *दशवै॰ २१८*।

जंतवाडचुल्ली– इक्षुयन्त्रपाटचुल्ली। *स्था॰ ४१९*। यन्त्रपाट-चुल्ली-इक्षुपीडनयन्त्रं तत्प्रधानः पाटकस्तस्मिन् चुल्ली। *जीवा॰ १०४*।

जंताणि– पाषाणक्षेपणयन्त्राणि। *सम॰ १३८*।

जंतिओ– यन्त्रितः। *आव॰ २२७।*

जंतुगं– जन्तुकं-जलाशयजं तृणविशेषं पर्णमित्यर्थः। *प्रश्न॰ १२८।*

जंतुगा– वनस्पतिविशेषः। *सूत्र॰ ३०७।*

जंतुयं– जन्तुकं-तृणविशेषोत्पन्नम्। *आचा॰ ३७२।*

जंदिट्ठं– यदाचार्यादिना दृष्टमपराधजातं तदेवालोचयति। *भग॰ ९१९। स्था॰ ४८४।*

जंनतो– यज्ञयाजिनः। *निर॰ २५।*

जंपानं– युगम्। *अनुयो॰ १५९।*

जंपियं– जल्पितं-मन्मनोल्लापादि। *उत्त॰ ६२६।*

जंबवइ– जाम्बवती, अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य षष्ठमध्ययनम्। *अन्त॰ १५।*

जंबवई– जम्बूमती। *अन्त॰ १८।*

जंबवती– जाम्बूमती, कृष्णवासुदेवराज्ञी। *अन्त॰ १८।*

जंबालः– कर्दमः। *स्था॰ १४५।*

जंबुडालं– जम्बूशाखा। *आव॰ ३१८।*

जंबुद्दीवे– नवमशतके जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषयः प्रथमोद्देशकः। *भग॰ ४२५।* जम्ब्वुपलक्षितस्तत्प्रधानो वा द्वीपो जम्बूद्वीपः। *आव॰ ७८८।*

जंबुफलकालिया– जम्बूफलवत् कालेव कालिका जम्बूफल-कालिका। *प्रज्ञा॰ ३६४।*

जंबुवत्– सुग्रीवराजस्य मन्त्री। *प्रश्न॰ ८९।*

जंबुवती– नारायणराज्ञी। *बृह॰ ३० आ।*

जंबू– वृक्षविशेषस्तदाकारा सर्वरत्नमयी या सा जम्बूः। *स्था॰ ४३७।* सुधर्मस्वामिनः शिष्यः। *सूत्र॰ ७२। प्रज्ञा॰ २२।* जम्बूः-अपरनामसुदर्शना, वृक्षविशेषः। *उत्त॰ ३५२।* जम्बूः –उत्तमतरुविशेषः। *प्रश्न॰ १३६।* स्थविरः। *बृह॰ १६६ अ।* सत्पुरुषत्वे दृष्टान्तः। *बृह॰ २३० अ।* सुहम्मस्स सिस्सो। *निशी॰ २४३ अ।* जम्बुणामेण पितापव्वा-वितो। *निशी॰ २९ आ।* एकास्थिवृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१। भग॰ ८०३। ज्ञाता॰ १।*

जंबूणय– जाम्बूनदं-रक्तसुवर्णम्। *जम्बू॰ ३७४।* सुवर्णम्। *जम्बू॰ ५९।*

जंबूणया– जम्बूनदं-ईषद्रक्तस्वर्णम्, सिरिनिलयम्। *जम्बू॰ २८४।*

जंबूणयामय– जाम्बूनदमयौ-सुवर्णनिर्वृत्तौ। *भग॰ ४५९।*

जंबूदीवंतो– जम्बूद्वीपान्तः-जम्बूद्वीपदिक्। *जीवा॰ ३१५।*

जंबूद्दीवे– जम्बूवृक्षोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपः। *अनुयो॰ ९०।* जम्ब्वा वृक्षविशेषेणोपलक्षितो द्वीपः जम्बूद्वीपः। *स्था॰ ३५।* सर्वद्वीपसमुद्राणामभ्यन्तरवर्ती द्वीपः। *प्रज्ञा॰ ३०७।* जम्ब्वा-सुदर्शनापरनाम्नाऽनादृतदेवावासभूतयोपलक्षितो द्वीपः जम्बू-द्वीपः। *जम्बू॰ ४।*

जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति– जम्ब्वा-सुदर्शनापरनाम्न्याऽनादृतदेवावास-भूतयोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपस्तस्य प्रकर्षेण-निःशेषकुतीर्थिकसार्थागम्य यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञप्तिः- ज्ञापनं यस्यां ग्रन्थपद्धतौ ज्ञप्तिर्ज्ञान वा यस्याः सकाशात् सा, अथवा जम्बूद्वीप प्रान्ति पूरयन्ति स्वस्थित्येति जम्बूद्वीपप्राः जगतीवर्षवर्षधराद्यास्तेषां ज्ञप्तिर्यस्याः सकाशात् सा। *जम्बू॰ ४।*

जंबूपेठे– जम्बूपीठम्। *जम्बू॰ ३३०।*

जंबूफलं– जम्बूफलं फलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

जंबूफलकलिका– रिष्ठाभा या मदिरा सा। *जम्बू॰ १००।*

जंबूफलकालिवरप्रसन्ना– सुराविशेषः। *जीवा॰ ३५१।*

जंबुवई– जम्बूवती। *आव॰ ९५।*

जंबूवणं– जम्बूवनं-जम्बूवृक्षा एव समूहभावेन यत्र स्थिता-स्तत्। *जम्बू॰ ५४०।*

जंबूसंडं– जम्बूखण्डं-ग्रामविशेषः। *आव॰ २०७।*

जंभका– जृम्भकाः तिर्यग्लोकवासिनो देवविशेषः। *प्रश्न॰ ११६।*

जंभगो– जृम्भकः-व्यन्तरः। *आव॰ १८०।*

जंभया– जृम्भन्ते विजृम्भन्ते स्वच्छन्दचारितया चेष्टन्ते ये ते जम्भकाः-तिर्यग्लोकवासिनो व्यन्तरदेवाः। *भग॰ ६५४।*

जंभा– जृम्भा मत्स्यबन्धविशेषः। *विपा॰ ८१।*

जंभाइए– जृम्भितं-विवृतवदनस्य प्रबलपवननिर्गमः। *आव॰ ७७९।*

जंभायंतं– विजृम्भमाणं-शरीरचेष्टाविशेषं विदधानम्। *ज्ञाता॰ १६।*

जंभियगामं– जृम्भिकाग्रामम्। *आव॰ २२६, २२७।*

जंपिय– यापितः-कालान्तरप्रापितः। *ज्ञाता॰ २३१।*

जंपियतिलकीडगा– यापिताः कालान्तरप्रापिता ये तिलाः-

धान्यविशेषास्तेषां ये कीटकाः-जीवविशेषास्तद्वद् ये वर्ण-साधर्म्यात् ते तथा तांश्च यापिततिलकीटकाः। *ज्ञाता० २३०।*

जं समयं– यस्मिन् समये। *जीवा० १४३।*

जइ– यतिः उत्तमाश्रमी प्रयत्नवान् वा। *दशवै० २६२।*

जइच्छा– यदृच्छा-अनभिसन्धिपूर्विकाऽर्थप्राप्तिः। *प्रश्न० ३५।*

जइण– जयिनी जयित्री। *भग० १६७।* गमनान्तरजयवतीज-विनी वा वेगवती। *औप० ७०।* जविनं-शीघ्रम्। *भग० ६३१। अनुयो० १७७।* जयिनः-शीघ्रो वेगवतां मध्येऽतिशीघ्रः। *औप० ६८।* जविनी-वेगवती। *ज्ञाता० २३२।*

जइणतरो– जवनतरः-शीघ्रतरः। *आव० ६०२।*

जइणवेगं– जयी-शेषवेगवद्वेगजयी वेगो यस्य तत्। *भग० १७५।*

जइणवायाम– जविनव्यायामः-शीघ्रव्यापारः। *उपा० ४७।*

जइत– जयिकः-राजादीनां विजयकारिः शकुनः। *ज्ञाता० १२५।*

जइत्तो– जित्वा, याजयित्वा। *उत्त० ३१४।*

जइत्थ– जितवान्। *भग० ३१७।*

जइयव्वं– प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्नः कार्यः। *भग० ४८४।*

जइया– यदा च दुर्भिक्षादौ। *आव० ५३९।*

जउ– जतु-लाक्षादारुमृतिके प्रसिद्धे इति। *स्था० २७२।*

जउण– यमुनः योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते द्रव्यापद्वान् मथुरायां राजा। *आव० ६६७।*

जउणराया– मथुराए राया। *निशी० ४१ अ।*

जउणा– नदीविशेषः। *स्था० ४७७।*

जउणावंकं– यमुनावक्रं मथुरायामुद्यानविशेषः। *आव० ६६७।*

जए– जयः-विमलजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव० १४७।* जयः –सामान्यो विघ्नादिविषयः। *औप० २३।* परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च। *राज० २३। जीवा० २४३।* जयः-परानभिभ-वनीयत्वरूपः। *जम्बू० १८७।* जगत् जीवसमूहः जङ्गमाभि-धानः। *भग० ५७५।*

जओ– यतः यत्नवान्। *उत्त० ५५।*

जकारचकारादिभिः– अपरैः प्रकारैः प्रकथ्य निन्दां विधत्ते। *आचा० २४२।*

जकारमकारादि– असभ्यम्। *आव० ५८८।*

जक्ख– श्वानः। *निशी० ९९ अ।*

जक्खकद्दमो– यक्षकर्दमो नाम कुङ्कमागुरुकर्पूरकस्तूरिकाच-न्दनमेलापकः। *जीवा० ३१४।*

जक्खगाह– यक्षग्रहः-उन्मत्ततताहेतुः। *भग० १९८। जीवा० २८४।*

जक्खघरमंडविया– यक्षगृहमण्डपिका। *आव० १९५।*

जक्खदिन्ना– यक्षदत्ता-कल्पकवंशप्रसूतशकटालस्य द्वितीया पुत्री। *आव० ६९३।*

जक्खदीत्तगं– यक्षदीप्तकं-नभसि दृश्यमानाग्निसहितः पिशाचः। *जीवा० २८३।*

जक्खभद्दो– यक्षभद्रः-यक्षे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३७०।*

जक्खभूय– यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ। *ज्ञाता० ४६।*

जक्खमह– यक्षमह-व्यन्तरविशेषस्य प्रतिनियत दिवसभावी उत्सवः। *जीवा० २८१। आचा० ३२८।*

जक्खमहाभद्दो– यक्षमहाभद्रः-यक्षे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३७०।*

जक्खमहावरो– यक्षमहावरः-यक्षे। समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३७०।*

जक्खरुवं– यक्षरूपं-श्वाकृतिः। *पिण्ड० १३१।*

जक्खवरो– यक्षवरः-यक्षे समुद्रे पूर्वार्द्धादिपतिर्देवः। *जीवा० ३७०।*

जक्खसिरि– चंपायां सोमभूतीमाता ब्राहमणस्य भार्या। *ज्ञाता० १९६।*

जक्खहरिलो– यक्षहरिलः-ब्रह्मदत्तपत्नीनां नागदत्ताऽऽदिकानां पिता। *उत्त० ३७९।*

जक्खा– व्यन्तरभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ६९।* यक्षा-कल्पकवंश प्रसूतशकटालस्याद्या पुत्री। *आव० ६९३।*

जक्खादित्तं– यक्षोद्दीप्तमाकाशे भवति। *आव० ७३५।*

जक्खालितं– यक्षाद्दीप्तमाकाशे भवति एतेषु स्वाध्यायं कुर्वता क्षुद्रदेवता छलनां करोति। *स्था० ४७६।*

जक्खालित्तया– यक्षोदीप्तानि आकाशे व्यन्तरकृतज्वलनानि। *भग० १९६।*

जक्खिणी– यक्षिणी। *अन्त० १७। सम० १५२।*

जक्खीए– यक्ष्या-अशुच्या (शुल्या)। *बृह० २४० अ।*

जक्खो– यक्षः-द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३२१, ३७०*। यक्षः। *दशवै॰ ९८*। इज्यते पूज्यत इति, याति वा तथाविधर्द्धिनमुदयेऽपि क्षयमिति यक्षः। *उत्त॰ १८७*।

जग– यकम्। *बृह॰ १४६* अ। जगत्-औदारिकजन्तुग्रामः। *सूत्र॰ ५१*। यकृत्-दक्षिणकुक्षौ मांसग्रन्थिः। *प्रश्न॰ ८*। जगन्ति-प्राणिनः। *दशवै॰ १७६*। जगः-जन्तुः। सूत्र-*१६२*। जगच्छब्देन सकलचराचरपरिग्रहः, सकलचराचररूपः, सकलप्राणीगणपरिग्रहः। *नन्दी॰ १३*। जगच्छब्देन सञ्ज्ञिपञ्चे-न्द्रियपरिग्रहः। *नन्दी॰ १२*। लोकालोकात्मकम्। *नन्दी॰ २३*। जगद्-धर्म्माधर्म्माकाशपुद्गलास्तिकायरूपम्। *नन्दी॰ २३*।

जगइ– जगती-जम्बूद्वीपकोट्टम्। *जम्बू॰ ३०३*।

जगई– जगती-प्राकारकल्पा। *जम्बू॰ २८४*।

जगईपव्वया– पर्वतविशेषाः। *जम्बू॰ ४४*।

जगच्चन्द्राः– आचार्यविशेषाः। *जम्बू॰ ५४३*।

जगद्दभासी– जगदर्थभाषी-जगत्यर्था-जगदर्था ये यस्य व्य-वस्थिताः पदार्थास्तानाभाषितुं शीलमस्येति। कुष्ठिनं कुष्ठी-त्यादि यो यस्य दोषस्तं तेन खरपरुषं ब्रूयात् यः सो वा। जयार्थभाषी यथैवाऽऽत्मनो जयो भवति तथैवाविद्यमानमप्यर्थं भाषते तच्छीलश्च-येन केनचित्प्रकारेणासदर्थभाषणेनाप्या-त्मनो जयमिच्छतीति। *सूत्र॰ २३४*।

जगडिज्जंता– कदर्थ्यमाना। *गच्छा॰* ।

जगडितो– प्रेरितो। *निशी॰ ७७* अ।

जगती– जम्बूद्वीपस्य प्राकारकल्पा पालीति। *सम॰ १४*। वेदिकाधारभूता पाली। *स्था॰ ४३९*।

जगतीपव्वयं– जगतीपर्वतकः-पर्वतविशेषः। *जीवा॰ २००*।

जगतीसमिया– जगत्याः समा-समाना सैव जगतीसमिका। *जीवा॰ १८०*।

जगनिस्सिए– जगन्निश्रितः-चराचरसंरक्षणप्रतिबद्धः। *दशवै॰ २३१*।

जगय– यकृतः-दक्षिणकुक्षिगतोदरावयवविशेषः। *भग॰ ५००*।

जगारमगारं– जन्ममर्मकर्म। *गच्छा॰* ।

जगारि– । *बृह॰ २५७* अ।

जग्गण– जागरणं-रात्रौ प्रहरकप्रदानम्। *बृह॰ २९०* अ।

जग्गहो– यद्ग्रहः। *आव॰ २२३*।

जग्गावइ– जागरयति-कुशलानुष्ठाने प्रवर्त्तयति। *आचा॰३०७*।

जघन्यं– अधमम्। *आव॰ ५८५*।

जघन्यः– नैश्चयिकः। *आव॰ ११*।

जघन्यस्थितिका– जघन्या-जघन्यसङ्ख्या समयापेक्षया स्थितिर्येषा ते-एकसमयस्थितिकाः। *स्था॰ ३५*।

जच्च– जात्यः-प्रधानः। *ज्ञाता॰ २६*। *जीवा॰ २७१*। जात्यः उत्कृष्टः। *आव॰ १८३*। जात्यः-काम्बोजादिदेशोद्भवः। *ज्ञाता॰ ५८*।

जच्चकणगं– जात्यकनकं-षोडशवर्णककाञ्चनम्। *जम्बू॰ १४८*।

जजुव्वेद– यजुर्वेदः-चतुर्णां वेदानां द्वितीयः। *भग॰ ११२*।

जज्जरिते– झर्झरितो जर्जरितो वा सतन्त्रीककरटिकादि वाद्यशब्दवत्। *स्था॰ ४७१*।

जज्जिवं– यावज्जीवम्। *व्यव॰ २५१*।

जज्जीवं– यावज्जीवं-जीवितपर्यन्तम्। *पिण्ड॰ १४५*। यावज्जीवम्। *व्यव॰ २८* आ।

जट्टि– प्रहारविशेषः। *निशी॰ ३२* अ।

जडालो– जटालः-अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयपञ्चाशत्तमः। *जम्बू॰ ५३५*।

जडिज्जइ– बध्यते। *आव॰ ६२१*।

जडियाइल्लए– अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चपञ्चाशत्तमः। *स्था॰७९*।

जडिल– जटावती-वलितोद्वलिता। *भग॰ ७०५*।

जडिलए– जटिलकः-पञ्चदशभेदेषु कृष्णपुद्गलेषु द्वितीयभेदः। *सूर्य॰ २८७*। राहुदेवस्य द्वितीयनाम। *सूर्य॰ २८७*।

जडी– जटित्वम्। *उत्त॰ २५०*।

जड्ड– स्वहितपरिज्ञानशून्यत्वात् जड्डः। *आव॰ ९१७*। हस्ती। *बृह॰ २४७* आ। *बृह॰ १०६* अ। *बृह॰ २३९* आ। *पिण्ड॰ ११५*। हत्थी। *निशी॰ ४७* आ। *निशी॰ २००* आ। *निशी॰ १०६* आ। *ओघ॰ ९७*।

जड्डतरी– बहलतरी। *निशी॰ १४१* अ।

जड्ढो– शून्यः। महाप॰ ।

जढं– रहितम्। *व्यव॰ २४९* आ। परित्यक्तः। *ओघ॰ ८४*। *बृह॰ १४४* आ।

जढा– त्यक्ताः। *ओघ॰ ४९, १७८*। परित्यक्ताः। *दशवै॰*

२०५। बृह० २१३ अ।

जण– जनः-सामान्यो जनः। *दशवै० ८३।* लोकः। *उत्त० १९३।* जायत इति जनः-लोकः। *उत्त० २४४।* नगरीवास्तव्यलोकः। *ज्ञाता० १। औप० २।* जायत इति जनः। *आव० ४९। नन्दी० १११।* जनः-नगरीवास्तव्यो लोकः। *सूर्य० २।* परिजनः। *दशवै० ८६।* प्राणी। *दशवै० ६४।* नगरवास्तव्यलोकः। *भग० ७।* जनः-नगरीवास्तव्यलोकः। *जम्बू० ७५।*

जणक्खया– लोकमरणानि। *भग० १९७।*

जणग– जनकः-मिथिलायामधिपतिः। *आव० २२१।* मिथि-लानगर्यां राजा। *प्रश्न० ८६।* जायते इति जनः लोकः स एव जनकः। *सूत्र० १७७।*

जणगा– जनकाः-मातापित्रादयो जना वा। *आचा० २३९।*

जणजंपणयं– जनहेला। *गच्छा०।*

जणणी– जनयति-प्रादुर्भावयत्यपत्यमिति जननी। *उत्त० ३८।*

जणत्ता– जनता। *आव० ५५९।*

जणवूहे– जनव्यूहः-चक्राद्याकारो जनसमुदायः। *भग० ११३, ४६३।*

जणमणणयणाणंदो– जनमनोनयनानन्दः। *आव० ३५८।*

जणमारि– जनमारि। *आव० ६३।*

जणवओ– जनपदः-विशिष्टलोकसमुदायो वा ग्रामादिवास्त-व्यजनसमुदायः। *बृह० १९९ आ।*

जणवतो– जनपदः-जनवृन्दम्। *उत्त० ११३।* देशः। *आव० ३१७।*

जणवय– जनपदः-देशः। *स्था० ४८९।* जनपदे भवाः जानपदाः-कालप्रष्टादयो राजादयो वा मगधादिजनपदा वा। *आचा० १६३।*

जणवयकहा– रम्यो मध्यदेश इत्यादिरूपा जनपदकथा। *दशवै० ११४।*

जणवयकुलं– जनपदकुलं-लोकगृहम्। *प्रश्न० ५२।*

जणवयवग्ग– जनपदवर्गः-देशसमूहः। *भग० १९३।*

जणवयसच्च– जनपदसत्यं नानादेशभाषारूपमप्यविप्रतिपत्या यदेकार्थप्रत्यायनव्यवहारसमर्थम्। *दशवै० २०८।*

जणवयसच्चा– जनपदसत्या-पर्याप्तिकसत्याभाषायाः प्रथमो भेदः। तं तं जनपदमधिकृत्येष्टार्थप्रतिपत्तिजनकतया व्यवहारहेतुत्वात् सत्या जनपदसत्या। *प्रज्ञा० २५६।*

जणवह– जनवधः जनव्यथा वा। *भग० ३२२।*

जणवाए– जनवादः-जनानां परस्परेण वस्तुविचारणम्। *औप० ५७।*

जणवायं– जनवादं-द्यूतविशेषम्। *जम्बू० १३७।*

जणवूहं– जनव्यूहः-चक्राद्याकारः समूहस्तस्य शब्दस्तद्भे-दाज्जनव्यूहः। *विपा० ३६।*

जणसंनिवाए– जनसन्निपातः-अपरापरस्थानेभ्यो जनानां मीलनम्। *भग० ११५।*

जणसंमद्दे– जनसम्मर्दः उरो निष्पेषः। *भग० ११३।*

जणहियाकारणए– जनहितस्याकर्त्तेत्यर्थः। *ज्ञाता० ८१।*

जण्ण– यज्ञः-प्रतिदिवसं स्वस्वेष्टदेवतापूजा। *जम्बू० १२३।*

जण्णजत्ता– यज्ञयात्रा। *आव० ५७८।*

जण्णजसो– यज्ञयशाः सत्यो (शौचो)दाहरणे समुद्रविजयराज्ये उच्छवृत्तिस्तापसः। *आव० ७०५।*

जण्णदत्तो– यज्ञदत्तः। *उत्त० १११।*

जण्णवाडं– यज्ञवाटः, यज्ञपाटः वा। *उत्त० ३५८।*

जण्णिए– यज्ञेन यजति लोकानिति याज्ञिकः। *आव० २४०।*

जण्णुयं– जानु। *आव० ६७०।*

जण्णू– यज्ञः-नागादिपूजारूपः। *आव० १२९।*

जतणं– यजनं-अभयस्य दानं यतनं वा-प्राणिरक्षणं प्रयत्नः। अहिंसाया अष्टचत्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९।*

जति– यतिः-प्रव्रजितः। *ओघ० ११६।* यतिदोषः-अस्थानविच्छेदः, तदकरणं वा, सूत्रदोषविशेषः। *आव० ३७४।* यतन्ते उत्तरगुणेषु विशेषत इति यतयो-विचित्रद्रव्याद्यभिग्र-हाद्युपेताः साधवः। *राज० ४६।*

जतिणं– जयनीत्वं शेषकूर्म्मगतिजेतृत्वात्। *ज्ञाता० ९९।*

जतिणा– जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन। *ज्ञाता० ३६।*

जतुगृहं– लाक्षागृहम्। *उत्त० ३७८।*

जतो– जयः-अपगमः। *व्यव० २२ आ।*

जत्त– यात्रा-सङ्ग्रामयात्रा। *निर० १७।* यतः। *आचा० ५३।* यात्रा। *आव० १७३।* वन्दनके चतुर्थस्थानम्। *आव० ५४८।* यत्। *उत्त० ५५।*

जत्ता– यात्रा-तपोनियमादिलक्षणा, क्षायिकमिश्रोपशमिकभा-वलक्षणा वा। *आव॰ ५४७*। यात्रा-विग्रहार्थं गमनम्। *ज्ञाता॰ १४९*। यात्रा। *आव॰ २१९, २२५*। संयमयात्रा। *उत्त॰ ५५*।

जत्ताभयगो– दसजोयणाणि मम सहाएण एगागिणा वा गंतव्यं एत्तिएण धणेण, ततो परं ते इच्छा, अन्ने उभयं भणंति-गंतव्यं कम्मं च से कायव्वंति। *निशी॰ ४४ अ*।

जत्तासिद्धो– यो द्वादश वाराः समुद्रमवगाहय कृतकार्य आग-च्छति सो। यात्रासिद्धः। *आव॰ ४१४*।

जत्थऽत्थमिए– यो यत्रैवास्तमुपैति सविता तत्रैव कायोत्सर्गा-दिना तिष्ठतीति यत्रास्तमितः। *सूत्र॰ ६५*।

जन– अस्यास्मन्मित्रविग्रहस्य परित्राणं मत्तो भविष्यति इत्या-दिकरूपम्। *स्था॰ १५२*। तिर्यग्नरामरा एव, जायन्त इति जनाः। *आचा॰ २५५*।

जनपदाः– जनानां-लोकानां पदानि अवस्थानानि येषु ते जनपदाः-अवन्त्यादयः साधुविहरणयोग्याः अर्द्धषड् विंशति-र्देशाः। *आचा॰ २५४*।

जनाः– जीवाः। *नन्दी॰ १११*।

जनार्दनः– कृष्णः। *व्यव॰ १८८ आ*। *बृह॰ २३० आ*।

जन्न– यज्ञः-पूजा। *बृह॰ १९९ आ*। यज्ञः-नगादिपूजा। *भग॰ ४७३*। *ज्ञाता॰ ५६*। *प्रश्न॰ १४०, १५५*। भावतो देवपूजा। अहिंसायाः षट्चत्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*। यागः। *प्रश्न॰ ३९*।

जन्नइ– यज्ञयाजिनः। *भग॰ ५११*।

जन्नइज्जं– याज्ञीयं-उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम्। *उत्त॰ ९*।

जन्नई– यज्ञयाजिनः। *औप॰ ९०*।

जन्नतिज्जं– उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

जन्नदत्तो– यज्ञदत्तः-सत्यो(शौचो)दाहरणे यज्ञयशः सौमित्र्योः पुत्रः। *आव॰ ७०५*।

जन्नवाड– यज्ञपाटः। *आव॰ २२९*। *उत्त॰ ३५८*।

जन्नोवइए– यज्ञोपवीतम्। *आव॰ ३०५*।

जन्म– लोकः। *प्रश्न॰ ८६*।

जप– मन्त्र्याद्याभ्यासः। *अनुयो॰ २९*।

जपा– गुच्छविशेषः। *आचा॰ ५७*।

जपाकुसुमं– पुष्पविशेषः। *जीवा॰ १९१*।

जप्प– परिगृह्यं सिद्धान्तं प्रमाणं च छलजातिनिग्रहस्थानपरं भाषणं यत्र जल्पः। *निशी॰ २४० अ*। वाद एव छल-जातिनिग्रहस्थानपरो जल्पः। *सम॰ २४*। सम्यग्हेतु दृष्टान्तैर्यो वादः। *सूत्र॰ ९३*। वाद एव विजिगीषुणा सार्धं छलजातिनि-ग्रहस्थानसाधनोपालम्भः। *सूत्र॰ २२६*।

जम– यमो-दक्षिणदिक्पालः। *जम्बू॰ ७५*। यमाः-प्राणाति-पातविरमणादयः। *ज्ञाता॰ ११०*।

जमईए– यमकीयं-यमकनिबद्धसूत्रम्। *सम॰ ३१*।

जमईयं– यदतीतं-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे पञ्चदशमध्ययनम्। *आव॰ ६५१*।

जमकाइय– यमकायिकः। *भग॰ १९७*। यमकायिकः-दक्षिण-दिक्पालदेवनिकायाश्रितोऽसुरः अम्बादिः। *प्रश्न॰ १९*।

जमग– यमकः-शकुनिविशेषः। *जीवा॰ २८६*।

जमगपव्वए– पर्वतविशेषः। *भग॰ ६५४*।

जमगप्पभं– यमकप्रभं यमकः-शकुनिविशेषस्तत्प्रभं तदाका-रम्। *जीवा॰ २८६*।

जमगवरा– यमकवरौ-निलवद्वर्षधरप्रत्यासन्नो शीताभिधान-महानद्युभयतटवर्तिनो पर्वतौ। *प्रश्न॰ ९६*।

जमगसंठाणसंठिआ– यमकौ-यमलजातौ भ्रातरो तयोर्यत्सं-स्थानं तेन संस्थितौ परस्परं सदृशसंस्थानौ, अथवा यमका नाम शकुनिविशेषास्तत्संस्थानसंस्थितौ। *जम्बू॰ ३१६*।

जमगसमग– यमकसमकं-युगपत्। *विपा॰ ४०*। *जम्बू॰ १९२*। यमकसमकं एककालम्। *राज॰ २४*। यौगपद्येनेत्यर्थः। *उपा॰ ३५*। युगपत्। *ज्ञाता॰ १४९*।

जमगा– यमकाः-शकुनिविशेषाः। *जम्बू॰ ३१९*। यमकौ। *जम्बू॰ ३१६*। यमकौ-उत्तरकुरौ पर्वतविशेषौ। *जम्बू॰ ३१६*। पर्वतविशेषौ। *जीवा॰ २८६*।

जमगाणं– यमकदेवाभिलापेन। *जम्बू॰ ३१९*।

जमतीयं– यदतीतं-सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशमध्ययनम्। *सूत्र॰ २५३*।

जमदग्गिओ– जामदग्न्यः-परशुरामः। *आव॰ ३९१*।

जमदग्गिजडा– जमदग्निजटा-वालकः। *उत्त॰ १४२*।

जमदग्गिसुओ– जमदग्निसुतः-परशुरामः। *जीवा॰ १२१*।

जमदग्नि– परशुरामपिता स। *सूत्र॰ १७०, १७८*।

जमदेवकाइय– यमदेवताकायिकः-यमसत्कदेवतानां सम्ब-न्धिनः। *भग॰ १९७।*

जमलं– सहवर्त्ति। *भग॰ ६७२।* यमलं-समसंस्थिद्वयरूपम्। *ज्ञाता॰ २।* यमलं-समश्रेणिकम्। *जीवा॰ १९९, २०७, ३५९।* यस्मिन् द्वौ द्वौ वर्गौ समुदितौ एकं तत्। *प्रज्ञा॰ २८०।*

जमलजणणीसरिच्छा– यमलजननीसदृशः। *ओघ॰ १८५।*

जमलजुगलं– यमलयुगलं-समश्रेणिकयुगलरूपौ। *जीवा॰ २७५।*

जमलजुगलजीहालो– यमं लाति-आदत्त इति यमला, यमला युग्मजिह्वा यस्य सः यमलयुग्मजिह्वः। *आव॰ ५६६।*

जमलजुयल– यमलयुगलं-समश्रेणिकं युगलम्। *राज॰ २२।* *जीवा॰ १२२।* यमलयुगलं-द्वयम्। *भग॰ ३१८।*

जमलज्जुणा– यमलार्जुनौ-कृष्णपितृवैरिणौ विकुर्वितवृक्षरूपौ विद्याधरौ। *प्रश्न॰ ७५।*

जमलपयं– समयपरिभाषयाऽष्टानामष्टानामङ्कस्थानानां यमल-पदमिति सञ्ज्ञा। *प्रज्ञा॰ २८०।* कालतवा। *निशी॰ ६०* आ।

जमलपया– तपःकालयोः सञ्ज्ञा। *बृह॰ ९३* आ।

जमलपाणिणा– मुष्ठिना। *भग॰ ७६७।*

जमला– यमं लाति-आदत्त इति यमला। *आव॰ ५६६।*

जमलिय– यमलतया समश्रेणितया तत्तरूणां व्यवस्थितत्वात् संजातयमलत्वेन यमलितम्। *भग॰ ३७।* यमलतया समश्रे-णितया व्यवस्थिताः। *ज्ञाता॰ ५।*

जमलियाओ– यमलं नाम समानजातीययोर्लतयोर्युग्मं तत्स-ञ्जातमास्विति यमलिताः। *जम्बू॰ २५।*

जमलोइया– यमलौकिकात्मनः अम्बष्र्यादयः। *सूत्र॰ २२१।*

जमालिः– सम्यक्शास्त्रार्थपरिज्ञानविकलः। *बृह॰ २१६* आ। निह्नवविशेषः। *सूत्र॰ ६८।* *आव॰ ५२३।* *उत्त॰ १८।* *नन्दी॰ २४८।* मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्तः। *आव॰ ५७९।* प्रथमो निह्नवः। *स्था॰ ४१०।* *भग॰ ६१९, ६२०।* यस्मा-द्बहुरता उत्पन्नाः स आचार्यविशेषः। *आव॰ ३११।* प्रथमो निह्नवः। *व्यव॰ १७९* अ। *भग॰ ५४८।* निर्गमे दृष्टान्तः। *ज्ञाता॰ १५२।*

जमालिपभवो– जमालिप्रभवः-बहुरतः। *आव॰ ३११।*

जमाली– राजकुमारनाम। *निर॰ ४०।* अश्रद्धायां दृष्टान्तः। *निशी॰ १२७* आ। *भग॰ ५४८।* जमालिः-भगवद्भा-गिनेयः। *विपा॰ ९०।* बहुरतविषयो निह्नवः, सुदर्शनासुतः। *उत्त॰ १५३।* क्षत्रियकुण्डग्रामे कुमारविशेषः। *भग॰ ४६१।*

जमिगाओ– यमिके नाम राजधान्यौ। *जम्बू॰ ३१९।*

जम– चमरेन्द्रस्य द्वितीयो लोकपालः। *स्था॰ १९७।* अहिं-सादिर्यमः। *प्रश्न॰ १३२।*

जम्बूलए– जम्बूलकाः। *उपा॰ ४०।*

जम्बूस्वामी– गुरूपर्वक्रमलक्षणसम्बन्धोपदर्शने सुधर्मस्वामि-शिष्यः। *भग॰ ६।* अनन्तरागमवान्। *आव॰ ५७।* सुधर्म-स्वामिनः शिष्यः। *नन्दी॰ ११४।* *अनुयो॰ २१९।* *आचा॰ २५।*

जम्मं– जन्म-सम्भूतिलक्षणम्। *जीवा॰ ६०।*

जम्मणमहो– जन्ममहः-जन्मोत्सवः। *आव॰ १२१।*

जम्मणसंतिभावं– जन्म-उत्पादः सद्भावश्चविवक्षितक्षेत्रादन्यत्र तत्र वा जातस्य तत्र चरणभावेनास्तित्वम्। *भग॰ ८९५।*

जम्मा– यमा। *स्था॰ १३३।*

जम्मो– यमः तापसपल्ल्यां तापसविशेषः। *आव॰ ३९१।*

जयंत– विमानविशेषः। *आचा॰ २१।* जयन्तः-पश्चिमदिग्वर्ति-जम्बूद्वीपस्य द्वारः। यतमानः-उद्गमादिदोषपरिहारी। *आचा॰ ३६०।* *सम॰ ८८।* जम्बूद्वीपस्यचतुर्द्वारे तृतीयम्। *स्था॰ २२५।* भाविप्रथमो विष्णुः। *सम॰ १५४।* जयन्तः-अनुत्तर-विमानपञ्चके पश्चिमदिग्वर्ति। *ज्ञाता॰ १२४।*

जयंतपवर– जयन्तप्रवरं-जयन्ताभिधानं प्रवरमनुत्तरविमानम्। *ज्ञाता॰ १४९।*

जयंतपुरं– मालापहृतद्वारविवरणे नगरम्। *पिण्ड॰ १०८।*

जयंत– जयन्त पश्चिमदिग्वर्ति जम्बूद्वीपस्य द्वारम्। *जम्बू॰ ३०९।*

जयंता– अनुत्तरोपपातिकभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* जयन्ता-उत्तरदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी। *जीवा॰ ३६४।*

जयंति– जयन्ती पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२।* नवमी रात्रि नाम। *जम्बू॰ ४९१।* *सूर्य॰ १४७।* वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

जयंती– सयाणीयभगिणी। *बृह॰ १६८* अ। जयन्ती राजधानी। *जम्बू॰ ३५७*। वैजयन्ती राजधानी। *जम्बू॰३५७*। उत्कृष्टमालापहृते सुरदत्तस्य वास्तव्यापुरी। *पिण्ड॰ १०९*। *सम॰ १५१*। *स्था॰ २३१, २०४*। महाग्रहस्य तृतीयाऽग्र-महिषी। *भग॰ ५०५, ५५६*। जयन्ती। *जम्बू॰ ३९१, ५३२*। नन्दनबलदेवमाता। *आव॰ १६२*। उत्पलभगिनी। *आव॰ २०२*। अकम्पितमाता। *आव॰ २५५*।

जय– पराभिभवः। *स्था॰ २५०*। यतः-प्रयत्नवान्। *आव॰ २८६*। यतं-गवाक्षकादीनामवलोकयन्। *दशवै॰ २३१*। चक्र-वर्तिविशेषः। *उत्त॰ ४४८*। यतः-यत्नवान्। *ओघ॰ ३७*। यतं-तदुद्वेगमनुत्पादयन्। *दशवै॰ १८४*। अत्वरितम्। *दशवै॰ १७८*। जयनामा एकादशचक्रवर्ती। *आव॰ १५९*।

जयई– यजन्ताम्। *उत्त॰ ३७१*।

जयकुञ्जर– कुञ्जरमुख्यः। *भग॰ १*।

जयघोस– जयघोषः-ब्रह्मगुणनिरूपेण विप्रः। *उत्त॰ ५२०*।

जयणं– यतनं-प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्न-उद्यमः। *प्रश्न॰ १०९*।

जयणा– तिपरिखा अ लंभे पछा पणगहाणी। *बृह॰ १५९* आ। तिपरियट्टं काऊण अप्पदुप्पणो पच्छा पणगादि पडिसेवणा पडिसेवति एस जयणा। *निशी॰ ३७* आ। *निशी॰ १३६* अ। जहा जीवोवघातो न भवतीत्यर्थः। *निशी॰ १८९* अ। असड्ढभावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्प-पडिसेवणे जोगो तत्थिमं रागदोसवियुत्ततत्तणं सा जयणा। *निशी॰ १४८* आ। यतना-बहुदोषत्यागेनाल्पदोषाश्रयणम्। *औप॰ ४८*। *उत्त॰ ५१५*। प्रयत्नकरणलक्षणा। *दशवै॰ ७४*। पृथिव्यादिष्वारम्भपरिहारयत्नरूपा। *दशवै॰ १२०*।

जयणाए– जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन। *भग॰ ५२७*।

जयति– कर्मक्षपण उद्यतः। *ओघ॰ २२०*। इन्द्रियविषयकषा-यघातिकर्मपरिषहोपसर्गादिशत्रुगणपरिजयात् सर्वानप्यतिशेते तं (प्रति प्रणतोऽस्मि)। *नन्दी॰ ३*।

जयद्दह– हस्तीनागपुरे राजकुमारः। *ज्ञाता॰ २०८*।

जयनंदा– जगन्नन्द जगत्समृद्धिकर। *जम्बू॰ १४३*।

जयसंधी– जयसन्धिः-अलोभोदाहरणेऽमात्यः। *आव॰ ७०१*।

जयसुन्दरी– गर्भाधानपरिरूपमूलद्वारविवरणे सिन्धुराजपत्नी। *पिण्ड॰ १४५*।

जयहत्थि– जयहस्ती-पट्टहस्ती। *आव॰ ७१६*।

जयहत्थी– जयहस्ती। *उत्त॰ ३००*।

जया– यस्मादर्थे। *दशवै॰ १५७*। औषधिविशेषः। *उत्त॰ ४९०*। जया-वासुपूज्यमाता। *आव॰ १६०*। *सम॰ १५१, १५२*।

जर– जरा-वयोहानिलक्षणा। *प्रज्ञा॰ ३*।

जरकुमार– जराकुमारः-कृष्णवधकः। *अन्त॰ १६*। वसुदेव-पुत्रः। *निशी॰ १९४* आ।

जरग्गहिया– ज्वरग्रहिताः-सामायिकलाभे दृष्टान्तः। *आव॰ ७५*।

जरढं– जरठम्। *जीवा॰ १८८*। पुराणम्। *औप॰ ७*। जरठानि, पुराणत्वात् कर्कशानि। *जम्बू॰ २९*।

जरते– जरकः। *स्था॰ ३६५*।

जरला– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः। *जीवा॰ ३२*।

जरा– जरा-वयोहानिलक्षणा। *दशवै॰ २३३*। वार्द्धक्यम्। *भग॰ १९७*। वयोहानिलक्षणा। *आव॰ १४८*।

जराउ– जरायुः-गर्भवेष्टनम्। *प्रश्न॰ ९०*।

जराउय– जरायुवेष्टिता जायन्त इति जरायुजाः, गोमहिष्य-जाविकमनुष्यादयः। *दशवै॰ १४१*। मनुष्यादयः। *प्रश्न॰ ९०*।

जराकुणिम– जराकुणपश्च-जीर्णताप्रधानशब्दः। *भग॰ ४६९*।

जराकुमार– वासुदेवजेट्ठ भाऊ। *बृह॰ ११३* अ।

जराजुण्णा– जराजीर्णाः। *व्यव॰ २९९* अ।

जराघुणियं– जराघुर्णितम्। *उत्त॰ ३२९*।

जरासन्ध– नृपविशेषः। *प्रश्न॰ ९०*। जरासन्धः। *आव॰ ३६५*। राजविशेषः। *दशवै॰ ३६*। राजगृहनगरनायको नवमः प्रतिवा-सुदेवः। *प्रश्न॰ ७५*। अप्रमादविषये राजगृहनगरे राजा। *आव॰ ७२१*।

जरासिंधु– जरासिन्धः-राजगृहे नृपति। *उत्त॰ ४९०*। *ज्ञाता॰ २०९*। जरासिन्धुः-कृष्णवासुदेवशत्रुः, नवमः प्रतिवासुदेवः। *आव॰ १५९*।

जरु– जरायुः। *आव॰ ७४२*।

जरुला– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

जरो– ज्वरः। *प्रश्न॰ १६*।

जलंति– ज्वलन्ति-ज्वालारूपा भवन्ति भास्वराग्नितां प्रतिप-द्यन्त इत्यर्थः। *जम्बू॰ ४१९।*

जलंतो– जलान्तः-जलपर्यन्तः, जलस्योपरि प्रकटः। *जीवा॰ ३१५।*

जल– सामायिकलाभे दृष्टान्तः। *आव॰ ७५।* जलकान्तेद्रस्य प्रथमो लोकपालः। *स्था॰ १९८।*

जलइ– ज्वलति-ज्वालामालाकुलो भवति। *जीवा॰ २४८।*

जलइत्तइ– ज्वालयितुं-उत्पादयितुं वृद्धिं वा नेतुम्। *दशवै॰ २०१।*

जलकंत– जलकान्तः-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९।* उदधिकु-माराणामधिपतिः। *प्रज्ञा॰ ९४। जीवा॰ १७०। स्था॰ ८४, २०५।* जलकान्तेद्रस्य लोकपालः। *स्था॰ १९८।* मणि-भेदः। *उत्त॰ ६८९।* सप्तमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। *भग॰ १५७।* जलकान्तः-मणिविशेषः। *जीवा॰ २३। आव॰ ३५५। प्रज्ञा॰ २७।*

जलकारी– चतुरिन्द्रियजीवः। *उत्त॰ ६९६।*

जलकीड– देहशुद्धावपि जलेनाभिरतिः। *निर॰ २६।*

जलचर– जलचरः मत्स्यादिः। *दशवै॰ ५५।*

जलचारिया– चतुरिन्द्रियविशेषाः। *जीवा॰ ३२। प्रज्ञा॰ ४२।*

जलज– पद्यम्। *जीवा॰ १३६।* जलजं-पद्यम्। *भग॰ ३०६।*

जलणं– ज्वलनं शैत्यापनोदाय वैश्वानरस्य ज्वलनं शोधनार्थं वा प्रकाशकरणाय वा दीपप्रबोधनम्। *प्रश्न॰ १२७।* ज्वलयति –दहतीति ज्वलनः-क्रोधः। *सूत्र॰ ५२।*

जलणसिहा– ज्वलनशिखा-आचारविषये हुताशनब्राह्मणभार्या। *आव॰ ७०७।*

जलणाइभयं– ज्वलनादिभयम्। *आव॰ ४०७।*

जलणो– ज्वलनः-आचारविषये हुताशनब्राह्मणज्येष्ठपुत्रः। *आव॰ ७०७।*

जलधरा– वृषणौ। *बृह॰ ९८* आ। *निशी॰ ३२* अ।

जलनं– ज्वलनं-दीपनम्। *उत्त॰ ७११।*

जलपट्टणं– जलेण जस्स भंडं आगच्छति। *निशी॰ ७०* आ। जलपट्टणं पुरिमाती। *निशी॰ २२९* अ। जलपत्तनं – यत्र जलपथेन भाण्डानामागमस्तदाद्यम्। *प्रश्न॰ ३८।*

जलपत्तनं– जलमध्यवर्ति पत्तनम्। *उत्त॰ ६०५। आचा॰ २८५।*

जलप्पभ– जलप्रभः-उत्तरनिकाये सप्तम इन्द्रः। *स्था॰ ८४। जीवा॰ १७१। भग॰ १५७।* उदधिकुमाराणामधिपतिः। *प्रज्ञा॰ ९४।*

जलमलं– मालिन्यम्। *ज्ञाता॰ ३५।* जलमूगो-जहा जले निब्बुड्डो उल्लावेति 'बुडबुडे' ति वा जलं एव जलमूगो। *निशी॰ ३६* आ।

जलमूय– जलमूकः-जलप्रविष्टस्येव 'बुडबुड' इत्येवं रूपो ध्वनिर्यस्य सः। *प्रश्न॰ २५।*

जलमूयओ– जलमूकः-जले ब्रूडित इव भाषमाणः। *आव॰ ६२८।*

जलयं– जलजं-पद्मादि। *जम्बू॰ ३९०।*

जलयर– जलचरजं-पुट्टालविशेषः। *आव॰ ८५४।* जले चरन्ति-पर्यटन्तीति जलचराः। *प्रज्ञा॰ ४३।* जलचरः-तन्दुलमत्स्यप्रभृतिः। *जीवा॰ १२९।* जले चरन्ति गच्छन्ति चरेर्भक्षणमित्यर्थ इति भक्षयन्ति चेति जलचराः। *उत्त॰ ६९८।*

जलरत– जलप्रभेन्द्रस्य लोकपालः। *स्था॰ १९८।*

जलराक्षसाः– राक्षसभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

जलरुह– जलरुहः-द्वीपः समुद्रोऽपि च। *प्रज्ञा॰ ३०७।* जले रुहन्तीति जलरुहाः-उदकावकपनकादयः। *प्रज्ञा॰ ३०। जीवा॰ २६।* जले रुहन्तीति पद्मादयः। *उत्त॰ ६९२।*

जलवासिणो– जलनिमग्नाः। *भग॰ ५१९।* ये जलनिषण्णा एवासते। *निर॰ २५।*

जलविच्छुय– जलवृश्चिकः-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२। जीवा॰ ३२।*

जलवीरिए– जलवीर्यः। *स्था॰ ४३०।*

जलाभिसेयं– जलक्षरणम्। *भग॰ ५२०।*

जलाभिसेयकढिणगायभूता– तत्र जलाभिषेककठिनगात्रभूताः प्राप्ता ये ते। ये स्नात्वा न मुञ्जते, स्नात्वा स्नात्वा पाण्डुरी-भूतगात्रा इति। *निर॰ २५।*

जलुगा– जलौका-जलजन्तुविशेषः। *आव॰ ६२३।*

जलूगा– जलौका-अनेषणा प्रवृत्तदायकस्य मृदुभावनिवार-णार्थसूचकत्वात् साधोरूपमानम्। *दशवै॰ १८।* जलजन्तुवि-शेषः। *आव॰ १०२।* जलौकसः-दुष्टरक्ताकर्षिण्यः। *उत्त॰ ६९५।*

जलोया– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषाः। *प्रज्ञा॰ ४१। जीवा॰ ३१।* चर्मपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१। जीवा॰ ४१।*

जलौका– जन्तुविशेषः। *दशवै॰ १४१।*

जल्ल– शरीरमलः। *ज्ञाता॰ २०३*। जल्लाः-राज्ञः स्तोत्र-पाठकाः। *राज॰ २*। कमढीभूतो। *निशी॰ १०८*। मलथिग्गलं जल्लो। *निशी॰ १९०*। मलः। *भग॰ ३९०*। *उत्त॰ ८३*। *औप॰ २८*। *आव॰ ४७*। *स्था॰ ३४३*। जल्लः-वरत्राखेलकः, राजस्तोत्रपाठको वा। *जीवा॰ २८१*। *आव॰ ६१६*। *औप॰ ३*। वरत्राखेलकः। *प्रश्न॰ १३७, १४१*। *अनुयो॰ ४६*। *दशवै॰ ११४*। *जम्बू॰ १२३*। शुष्क-प्रस्वेदः। *सूत्र॰ ८२*। चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*। रजोमात्रम्। *औप॰ ८६*। मलविशेषः। *प्रश्न॰ १३७*। याति च लगति चेति जल्लः-पृषोदरादित्वान्निष्पत्तिः, स्वल्प-प्रयत्नापनेयः। *जीवा॰ २७७*। शरीरमलः। *प्रश्न॰ १०५*। *जम्बू॰ २४८*। जल्लः-रजोमात्रम्। *भग॰ ३७*। देहमलः। *सम॰ ११*।

जल्लकहा– जल्लकथा-वरत्राखेलकसम्बन्धिनीकथा। *दशवै॰ ११४*।

जल्लखउरियं– मलकलुषितम्। *पिण्ड॰ ९३*।

जल्लगंद्धो– मलगन्धः। *आव॰ ८१५*।

जल्लपरीसहे– शरीरवस्त्रादिमलस्य परीषहः, अष्टादशः परी-षहः। *सम॰ ४०*।

जल्लिय– जल्लो-मलः। *उत्त॰ ५१७*। यल्लितः-यानलगनध-र्मोपेतमलयुक्तः। *भग॰ २५४*।

जल्लूसत– जलोदरः-व्याधिविशेषः। *आव॰ ६११*।

जल्लेसाइं– या लेश्या येषां द्रव्याणां तानि यल्लेश्यानि यस्या लेश्यायाः सम्बन्धिनीत्यर्थः। *भग॰ १८८*।

जव– यवाः-धान्यविशेषः। *दशवै॰ १९३*। औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। उज्जेणीनयरे राया। *बृह॰ १९१ अ*। यवः। *आव॰ ८५५*। जवः-वेगः। *आव॰ ६१८*। यवराजर्षिः-खंडश्लोकाध्येता। *भक्त॰*।

जवजव– यवयवः-यवविशेषः। *भग॰ २७४*।

जवजवा– औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

जवजवाइ– यवविशेषः। *जम्बू॰ १२४*।

जवण– जवनं-अतिशीघ्रगतिः। *जीवा॰ १२२*। यवनः चिला-तदेशवासी म्लेच्छजातिविशेषः। *प्रश्न॰ १४*।

जवणट्ठं– यापनार्थं-शरीरनिर्वाहणार्थम्। *उत्त॰ २९५*।

जवणट्ठया– यापनार्थं-संयमभरोद्वाहिशरीरपालनाय। *दशवै॰ २५३*।

जवणा– यापना-वन्दके पञ्चमं स्थानम्। *आव॰ ५४८*। म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

जवणाणिया– लिपिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६*।

जवणिज्जं– यापनीयम्। *आव॰ २१९*।

जवणिया– यवनिका-तिरस्करिणी। *आव॰ ३९८*। अन्तः पट्टः। *आव॰ ६७४*। यवनिका-काण्डपटम्। *ज्ञाता॰ २४*।

जवणीदीवं– यवनद्वीपं, द्वीपविशेषम्। *जम्बू॰ २२०*।

जवनालउ– जवनालकः-कन्याचोलकः, कुमार्या ऊर्ध्वं सरकञ्चुकः। *नन्दी॰ ८९*।

जवनालका– कुमार्या ऊर्ध्वं सरकञ्चुकः। *नन्दी॰ ८८*। कन्या-चोलकम्। *प्रज्ञा॰ ५४२*।

जवमज्झ– यवस्येव मध्यं मध्यभागो यस्य विपुलत्वसाधर्म्या-त्तद् यवमध्यं यवाकारमित्यर्थः। *भग॰ ८६०, २७५*। अष्टौ यूका एकं यवमध्यम्। *जम्बू॰ ९४*। यवमध्या। *व्यव॰ ३५६ आ*। *निशी॰ ३०६ आ*।

जवमज्झा– यवस्येव मध्यं यस्यां सा यवमध्या। *औप॰ ३२*।

जवस– यवसः। *आव॰ ४१६*। यवसः-घ्रास। *आव॰ २६१*।

जवसए– गृच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

जवसजोगासणं– यवसयोगासनम्। *उत्त॰ २२३*।

जवितं– यावकम्। *आव॰ ३०२*।

जसंसी– यशस्वी-शुद्धपारलौकिकयशोवान्। *दशवै॰ २०७*। ख्यातिमन्तः। *भग॰ १३६*।

जसंसे– सिद्धार्थराजस्य तृतीयं नाम। *आचा॰ ४२२*।

जस– यशः-पराक्रमकृतं गृह्यते, तदुत्थसाधुवाद इत्यर्थः। *आव॰ ४९९*। बहुसमरसंघट्टनिर्वहणशौर्यलक्षणं यशः। *सूत्र॰ १८२*। पराक्रमकृता सर्वदिग्गामिनी वा प्रख्यातिर्यशः। *औप॰ १०५*। ख्यातिः। *ज्ञाता॰ २४०*। *जीवा॰ २१७*। *प्रज्ञा॰ ६००*। श्लाघा। *सूर्य॰ २५८*। यशोहेतुत्वाद्यशः संयमो विनयो वा। *उत्त॰ १८६*। यशः पराक्रमकृतं सर्वदिग्गामिनी प्रसि-द्धिर्वा। *प्रश्न॰ १३६*। चतुर्दशजिनस्य प्रथमः शिष्यः। *सम॰ १५२*। यशः सर्वदिग्गामी। *प्रश्न॰ ८६*। सकलभुवनव्यापि। *जीवा॰ २९९*। सर्वदिग्गामिनीप्रसिद्धिः। *बृह॰ ३६ आ*। संजमो। *दशवै॰ ८८*। समयपरसमयविसारत्तणेण लोगे लोगुत्तरे य जसो। *निशी॰ २९० अ*। यशो जीवितम्। *आव॰ ४८०*। यशः-संयमः। *दशवै॰ १८८*। यशः-सर्वदि-ग्गामिप्रसिद्धिविशेषः। *ज्ञाता॰ १८*।

जसकर– यशस्करः-पराक्रमकृतं यशस्तत्करणशीलः। *आव॰ ४९९।*

जसकारी– यशःकारी। *आव॰ ५३९।*

जसघाई– यशोघातिनः-यशोऽभिनाशकाः। *आव॰ ५३९।*

जसधरे– यशोधरः। *जम्बू॰ ४९०।*

जसभद्द– यशोभद्रः-शय्यम्भवप्रधानशिष्यः। *दशवै॰ २८४।* यशोभद्रः-चतुर्थदिवसनाम। *जम्बू॰ ४९०। सूर्य॰ १४७।* अलोभोदाहरणे युवराजः। *आव॰ ७०१।*

जसभद्दा– यशोभद्रा-अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नी। *आव॰ ७०१।*

जसम– यशस्वी नवमः कुलकरनाम। *जम्बू॰ १३२।* तृतीयः –कुलकरनाम। *सम॰ १५०। आव॰ १११। स्था॰ ३९८।*

जसमती– यशोमती-अमोघरथरथिकभार्या। *उत्त॰ ३१३।*

जसवइ– यशोमती-यक्षहरिलस्य द्वितीया सुता, ब्रह्मदत्तराज्ञी। *उत्त॰ ३७९।*

जसवई– यशोमती-तृतीया रात्रितिथिनाम। *जम्बू॰ ४९१।* सगरमाता। *आव॰ १६१। आचा॰ ४२२।*

जसवती– यशोमती-शालमहाशालभगिनी। *उत्त॰ ३२३।* शालमहाशालयो राजयुवराजयोर्भगिनी। *आव॰ २८६।* तृतीया रात्रि-तिथिनाम। *सूर्य॰ १४८।* सगरचक्रवर्त्तिनो माता। *सम॰ १५२।*

जससा– यशसा-प्रसिद्ध्या। *सम॰ ४३।*

जसहर– अचलपुरकुटुंबीगुरुः। *मरण॰ ।*

जसा– यशा-काश्यपभार्या। *उत्त॰ २८६।* वसिष्ठगोत्रभृगु-पुरोहितभार्या। *उत्त॰ ३९५।*

जसोआ– यशोदा-राजकन्यानाम। *आव॰ १८२।*

जसोकामी– यशस्कामी-यो यशः कामयते अहो अयमिति प्रवादार्थ वा। *दशवै॰ १८७।*

जलोधर– यशोधरः-पञ्चमदिवसनाम। *सूर्य॰ १४७। स्था॰ ६०२, ४५३।*

जसोधरा– यशोधरा-चतुर्थी रात्रिनाम। *सूर्य॰ १४७।*

जसोया– वर्द्धमानस्वामिनो भार्या। *आचा॰ ४२२।*

जसोहरा– यशोधरा-चतुर्थी रात्रिनाम। *जम्बू॰ ४९१।* दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२।* दक्षिण-रुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१।* यशः-सकलभुवनव्यापि धरतीति यशोधरा, जम्ब्वाः सुदर्शनायाश्चतुर्थं नाम। *जीवा॰ २९९।* सकलभुवनव्यापकं यशो धरतीति यशोधरा। *जम्बू॰ ३३६।*

जस्स– यस्य-मुमुक्षोः। *आचा॰ १८०।*

जस्समम्हि– यस्य प्रभावेण इहागतोऽस्मि-भवामीतियोगः। *भग॰ १८०।*

जहक्खाय– यथा सर्वस्मिन् लोके ख्यातं-प्रसिद्धं अकषायं भवति चारित्रमि'ति तथैव यद् तद् यथाख्यातम्। *प्रज्ञा॰ ६८।*

जहणवरं– जघनवरं-वरजघनम्। *जीवा॰ २७५।*

जहण्णकसिणं– जस्सद्वारसरूवया मुल्लं तं जहण्णकसिणं। *निशी॰ १३९* आ।

जहण्णेणं– जघन्यतः। *अनुयो॰ १६३।*

जहन्न– हानं-त्यागः। *भग॰ ९०४।* जघन्यं सर्वस्तोकम्। *आव॰ २९।*

जहन्नए कुंभे– जघन्यकः कुम्भः-आढकषष्टिनिष्पन्नः। *अनुयो॰ १५१।*

जहन्नजोगी– जघन्ययोगी-सर्वाल्पवीर्यः। *प्रज्ञा॰ ६०८।*

जहन्नपएसिया– जघन्याः-सर्वाल्पाः प्रदेशाः परमाणवस्ते सन्ति येषां ते जघन्यप्रदेशिकाः। *स्था॰ ३५।*

जहा– यथा दृष्टान्तार्थोऽयं शब्दः। *भग॰ ८२।*

जहागयपहिय– यथागतपथिकः। *उत्त॰ ११७।*

जहाजायं– रजोहरणं चोलपट्टकश्च। *ओघ॰ ७५।*

जहाजायपसुभूय– यथाजातपशुभूतः-शिक्षारक्षणादिवर्जित-पशुसदृशः। *प्रश्न॰ ५५।*

जहाणुपुव्वी– यथानुपूर्वी-यथाऽनुक्रमम्। *भग॰ २०२।*

जहातच्चं– यथातथ्यं-यथावस्थितम्। *सूत्र॰ १७७।*

जहाथामं– यथास्थामं-यथासामर्थ्यम्। *दशवै॰ १०६।*

जहानामए– यथानामकः-यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थः अथवा 'यथा' इति-दृष्टान्तार्थः 'नाम' इति-संभावनायां 'ए' इति वाक्यालंकारे। *भग॰८२।* यथानामकः-अनिर्दिष्टनामकः कश्चित्। *जीवा॰ १२१।*

जहाभागं– यथाभागं-यथाविषयम्। *दशवै॰ १६६।*

जहाभावो– यथाभावः। *आव॰ ९६।*

जहाभूतं– यथाभूतं-यथावृत्तं अवितथं नत्वन्यथाभूतम्। *ज्ञाता॰ ३४।*

जहाभूयं– यथाभूतम्। *आव॰ ४२३।*

जहारायणियं– यथारात्निकं-यथाज्येष्टम्। *प्रश्न॰ १११।*

जहावत्तं– यथावृत्तम्। *आव॰ ३६८।*

जहासमाही– यथासमाधि-यथासामर्थ्यम्। *आव॰ ८४६।*

जहाहिय– यथाहितं-हितानतिक्रमेण। यथाऽधीता वा गुरु-सम्प्रदायागतवमनविरेचकादिरूपा। *उत्त॰ ४७५।*

जहिं– अद्यम्। *उत्त॰ ४०४।*

जहिच्छं– इच्छाया अनतिक्रमेण यथेच्छं यदवभासत इति। *उत्त॰ ५०१।*

जहिच्छियं– यथेच्छितम्। *आव॰ २१३।*

जहित्ता– हित्वा। *उत्त॰ ३१५।*

जहियं– यत्र। *आव॰ ६१८।*

जाइ– जातिः-प्रसूतिः। *आचा॰ १५९।* जातिः-मालती। *जम्बू॰ ४५।* जातिः-नारकादिप्रसूतिः। *आव॰ ३२५।* पुष्प-विशेषः। *उत्त॰ ६५४। दशवै॰ १७४।* तापस्व्यम्, बुद्धिः। *दशवै॰ २३३।*

जाइआसोविस– जात्या-जन्मनाऽऽशीविषा जात्याशीविषा। *भग॰ ३४१।*

जाइउं– यातुम्। *बृह॰ २७* आ।

जाइकहा– ब्राह्मणीप्रभृतीनामन्यतमाया या प्रशंसा निन्दा वा सा जात्या जातेर्वा कथेति जातिकथा। *स्था॰ २०९।*

जाइकुसुम– जातिकुसुमम्। *दशवै॰ १००।*

जाइतए– याचितः। *आव॰ ४२६।*

जाइत्तु– गत्वा। *आव॰ २०९।*

जाइनामं–
एकेन्द्रियादीनामेकेन्द्रियत्वादिरूपसमानपरिणाम-लक्षणमेकेन्द्रियादिशब्दव्यपदेशभाक् यत्सामान्यं सा जाति-स्तज्जनकं नाम जातिनाम। *प्रज्ञा॰ ४६९।*

जाइनामनिहत्ताउए– जातिः-एकेन्द्रियजात्यादिः पञ्चप्रकारा सैव नाम नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषरूपं जातिनाम तेन सह निधत्तं-निषिक्तं यदायुस्तज्जातिनामनिधत्तायुः। *प्रज्ञा॰ २१७।*

जाइपह– जातिपन्थाः-द्वीन्द्रियादिजातिमार्गः। *दशवै॰ २४४।*

जाइफलं– स्वादिमफलविशेषः। *निशी॰ ६०* अ।

जाइमंता– जातिमन्तः-सुजातयः। *आचा॰ ३९१।*

जाइमरण– जातिमरणः-संसारः। *दशवै॰ २५८।*

जाइमा– लुणणपायोग्गाओ कीरइ। *दशवै॰ १११।*

जाई– मत्स्यकच्छपविशेषः। *जीवा॰ ३२१।* गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* जातिमदः-यज्जातेर्मानम्। *आव॰ ६४६।* जातिः-क्षत्रियाद्या, जननं वा क्षत्रियादिजन्म। *उत्त॰ १८१।* ब्राह्मणादिका। *पिण्ड॰ १२९।* जातिभेदः। *जीवा॰ १३६।* मातृसमुत्था। *आव॰ ३४१। पिण्ड॰ १२९। उत्त॰ १४५। सूत्र॰ २३६।* जातिकुसुमवर्ण मद्यम्। *विपा॰ ४९।* मातृकः पक्षः। *प्रश्न॰ ११७।* ज्ञातिः-लोकैषणाबुद्धिः। *आचा॰ १८०।*

जाईकुलकोडी– जातिप्रधानं कुलं तस्य कोटिः जातिकुल-कोटिः। *जीवा॰ ३७२।*

जाउ– क्षीरपेया। *पिण्ड॰ १६८।*

जाउकण्णियसगोत्ते– पूर्वाभाद्रपदगोत्रम्। *सूर्य॰ १५०।*

जाउकण्णे– जातुकर्ण-पूर्वाभाद्रपदगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००।*

जाउगा– यातरः-ज्येष्ठदेवरजायाः। *बृह॰ २७०* अ।

जाउयाओ– देवराणां जाया भार्या इत्यर्थः। *ज्ञाता॰ १९९।*

जाउलग– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

जाए– जातं-स्तम्बीभूतम्। *दशवै॰ १५५।*

जाएल्लओ– जातोऽभवत्। *आव॰ १८८।*

जाओ– जातः-प्रकारः उत्पन्नश्च। *आव॰ ५२४।*

जागरओ– जागरणम्। *आव॰ २०४।*

जागरा– जाग्रतीति जागराः-असुप्ता जागरा इव जागराः। *स्था॰ ३२०।*

जागरिय– जागृतं षष्ठीरात्रिजागरणप्रधानमुत्सवम्। *विपा॰ ५१।* रात्रिजागरिका। *औप॰ १०२।*

जागरूका– । *आचा॰ १५२।*

जागरे– जाग्रत्। *प्रज्ञा॰ ४९१।*

जाच्चबाहलो– जात्यबाल्हीकः-अश्वजातिविशेषः। *आव॰ २६१।*

जाण– यानं-गन्त्रीविशेषः। *प्रश्न॰ ९१, १६१।* गन्त्र्यादि। *भग॰ १३५। जीवा॰ २८१।* रथादिकम्। *प्रश्न॰ १५२।* शकटादि। *औप॰ ४।* शकटम्। *भग॰ १८७, १८८, २३७।* रथादि। *औप॰ ५४।* यानं हास्यादि। *आव॰ ३४६। उत्त॰ १४३।* शिबिकादि। *आचा॰ ६०।* युग्यादि। *दशवै॰ २१८।* यानम्। *आव॰ २३४।*

जाणअं– यानकम्। *आव॰ २२१।*

जाणए– ज्ञायकः। *आव॰ ४२८।*

जाणग– ज्ञापकः-तीर्थकृत्। *आचा॰ २२०।*

जाणगसरीरं– ज्ञायकस्तस्य शरीरं ज्ञायकशरीरम्। ज्ञो वा तस्य शरीरं ज्ञशरीरम्। *उत्त॰ ७२।*

जाणणा– ज्ञानशुद्धिः, प्रत्याख्यानशुद्ध्या द्वितीयो भेदः। *आव॰ ८४७।*

जाणरहो– यानार्थं रथो यानरथः। *जीवा॰ २८१।*

जाणवए– जानपदः-जनपदभवास्तत्रायाताः सन्तो यत्र तत्। *भग॰ ७।*

जाणवत्तं– यानपत्रम्। *आव॰ २९७।*

जाणवया– जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाताः सन्तो यत्र सा जानपदाः। *सूर्य॰ २।* जानपदाः-जनपदभावाः। *जम्बू॰ ७५।* जानपदाः। *औप॰ २।* जानपदाः-जनपदभवास्तत्रा-याताः। *ज्ञाता॰ १।* जानपदाः विषयलोकाः। *आव॰ २२९।* जानपदा जनपदे भवा जानपदाः-अनार्याऽऽचरिणो लोकाः। *आचा॰ ३१०।*

जाणविमाण– यानानि-शकटविशेषाः विमानानि-ज्योतिष्क-वैमानिकदेवसम्बन्धिगृहाणि। यानविमानानि-पुष्पकपालका-दीनि। *प्रश्न॰ ९५।* यान विमानम्। *आव॰ १२१।*

जाणविही– गमनविधिः। *बृह॰ २३३* अ।

जाणसंठिया– यानसंस्थिता। *आव॰ ३९८।*

जाणसण्णा– ज्ञानसंज्ञाः-मत्याद्याः। *आचा॰ १२।*

जाणसाला– यानशाला। *आव॰ ५७८।* रथादिगृहम्। *प्रश्न॰ १२७।*

जाणसालिओ– यानशालिकः। *आव॰ ८९।*

जाणा– यानानि-शकटादीनि। *ज्ञाता॰ ४३।*

जाणाइ– शकटादीनि। *भग॰ ५४७।* यानानि-गन्त्र्यादीनि। *जम्बू॰ १२३।*

जाणियं– ज्ञातम्। *आव॰ १४६।*

जाणुओ– ज्ञायकः-केवलशास्त्रकुशलः। *विपा॰ ४०।*

जाणुकोप्परे– जानुकूर्परः। *उत्त॰ ११८।*

जाणुकोप्परमाता– जानुकूर्पराणामेव माता-जननी जानुकूर्पर-माता। *निर॰ ३०।*

जाणुकोप्परमाया– जानुकूर्पराणामेव माता-जननी जानु-कूर्प्पर-माता, एतान्येव शरीरांशभूतानि तस्याः स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थः। अथवा जानुकूर्पराण्येव मात्रापरप्रणोदे साहाय्ये समर्थ उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्र-लक्षणः। सा जानुकूर्परमात्रा। *ज्ञाता॰ ८०।* जानुकूर्परमाता। *आव॰ २१०।*

जाणुयपुत्ता– ज्ञायकपुत्रः-केवलशास्त्रकुशलपुत्रः। *विपा॰ ४०।*

जाणुया– ज्ञायकाः-शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः। *ज्ञाता॰ १८०।*

जाणू– जानुनी-अष्ठीवन्तौ। *जीवा॰ २७०।* गदिता। *स्था॰ १७४।*

जाणूकं– जानु-बाहुजङ्घासन्धिरूपोऽवयवः। *जम्बू॰ २३४।*

जात– प्रकारवाचकः। *निशी॰ १५१* अ। भेदवाचकः। *निशी॰ ८४* आ। प्रकारवाची। उप्पण्णवाची। *निशी॰ ९३* अ। उत्पत्तिधर्म्मकं, व्यक्तिवस्तु। *स्था॰ १८४।* प्रकारः। *आव॰ २६१।* सणिसेज्जं रयोहरणं मुहपोत्तिया चोलपट्टो य। *निशी॰ ४६* आ।

जातकम्मं– जातकर्म्म-प्रसवकर्म्म नालच्छेदननिखननादिकम्। *ज्ञाता॰ ४१।* *निर॰ ३२।*

जाततेए– जाततेजाः-वह्निः। *प्रश्न॰ १५८।*

जातयः– वर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि। *सम॰ ६४।*

जातरूपं– स्वर्णम्। *उत्त॰ ५२७।* रूप्यम्। *उत्त॰ ६६६।*

जातरूवे– जातरूपकाण्डं-जातरूपाणां विशिष्टो भूभागः। *जीवा॰ ८९।*

जातविम्हयं– जातविस्मयः। *आव॰ ३५९।*

जाति– तिर्यग्जातिः। *जीवा॰ १३४।* आसन्नलब्धप्रतिभो जातिः। *दशवै॰ ६।* आर्यभेदः। *सम॰ १३५।*

जातिआसीविसा– जातित आशीविषा जात्याशीविषाः-वृश्चिकादयः। *स्था॰ २६५।*

जातिकथा– जातेः प्रशंसनं द्वेषणं वा। स्त्रीकथायाः प्रथमभेदः। *आव॰ ५८१।*

जातिकहा– जातिकथा-ब्राह्मणादिजातिसम्बन्धेन कथा। *प्रश्न॰ १३९।*

जातिकुम्भी– यस्य सागरिकं भ्रातृद्वयं वा वातदोषेण शूनं महा-प्रमाणं भवति स जातिकुम्भी। *बृह॰ १०० अ।*

जातितः–जातितो वृश्चिकमण्डू-कोरगमनुष्यजातयः। *आव॰ ४८।*

जातिथेरा– जातिस्थविराः-षष्ठिवर्षप्रमाणजन्मपर्यायाः। *स्था॰ ५१६।*

जातिपत्रं– पत्रविशेषः। *जीवा॰ १३६*।

जातिपुष्पं– पुष्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३७*।

जातिफलं– फलविशेषः। *जीवा॰ १३६*।

जातिवंझा– जातेः-जन्मत आरभ्य वन्ध्या-निर्बीजा जाति-वन्ध्या। *स्था॰ ३१३*।

जातिसंपन्ने– उत्तममातृकपक्षयुक्तः। *ज्ञाता॰ ७*।

जातिस्मरणं– आभिनिबोधिकविशेषः। *आचा॰ २०*। मति-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ५१*।

जातिहिंगुले– जात्यः-प्रधानो हिङ्गुलकः जात्यहिंगुलकः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

जाती– याति-प्रवर्त्तते-अवबुध्यते। *बृह॰ १९७अ*। गन्धद्रव्यविशेषः। *जीवा॰ १९१*।

जातीगुम्मा– जातिगुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

जातीसरणं– जातिस्मरणं-मतिज्ञानभेदः। *आव॰ ११०*।

जात्यसुवर्णमय– सुवर्णविशेषः। *नन्दी॰ १५७*।

जात्यहिंगुलकः– पुष्पविशेषः। *जीवा॰ १९१*।

जानाति– अवायधारणापेक्षयाऽवबुध्यते। *भग॰ ३५७*।

जानु– अङ्गविशेषः। *आचा॰ ३८*।

जामा– याम्या-दक्षिणदिक्। *आव॰ २१५*।

जामि– यामि। *आव॰ २९९*।

जामेय– यामेव। *सूर्य॰ ३*।

जाय– बीयाणि चेव यवीभूयाणि। *दशवै॰ ६९*। यागं-पूजाम्। *ज्ञाता॰ ८३*। यागं-पूजा यात्रा वा। *विपा॰ ७७*। यातं-अपगतम्। *आव॰ ८४४*। जातं-प्रकारः। *प्रश्न॰ १२४*। जातः पुत्रः। *उत्त॰ ३९९*। जातः-प्रवृत्तः। *सूर्य॰ ५*। जातं-जातिः प्रकारो वा। ठाणां॰ *४९२*।

जायइ– जायते-कल्पते। *आचा॰ १४०*।

जायकुंभी– वायदोषेण जस्स सागारियं वसणं वा सुज्जति सो जायकुंभी रोगीत्यर्थः। *निशी॰ ३३अ*।

जायकोउहल्ले– जातं कुतूहलं यस्य स जातकुतूहलः-जातौ-त्सुक्यः। *राज॰ ५८*। *ज्ञाता॰ १*।

जायक्खंधे– जातः-अत्यन्तोपचितीभूतः स्कन्ध एवास्येति जातस्कन्धः। *उत्त॰ ३४९*।

जायणं– यातनं-कदर्थनम्। *प्रश्न॰ ३७*।

जायणजीविणो– याचनेन जीवनं-प्राणधारणमस्येति याचन-जीवनम्। *उत्त॰ ३६०*।

जायणा– याचनं-मार्गणम्, चतुर्दशः परीषहः। *आव॰ ६५६*।

जायणावत्थं– जं मग्गिज्जइ कस्सेयंति अपुच्छिय कस्स छड्डा कडंति अगवेसिय। *निशी॰ १६२अ*।

जायणि– असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २१०*।

जायणिया– याचना। *आव॰ ६७७*।

जायणी– याचनी कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गणं, असत्या मृषाभाषायास्तृतीयो भेदः। *प्रज्ञा॰ २५६*।

जायतेअ– जाततेजः-अग्निः। *दशवै॰ २०१*।

जायतेय– वह्निः। *भग॰ १८४*।

जायधामे– जातस्थामा-अङ्गीकृतमहाव्रतभारोद्वहने जात-सामर्थ्यः। *प्रश्न॰ १५८*।

जायमाण– यान्-गच्छन्। *भग॰ १८६*।

जायनिंदुया– जातानि उत्पन्नान्यपत्यानि निर्द्रुतानि-निर्यातानि मृतानि यस्याः सा जातनिर्द्रुता। *विपा॰ ५१*।

जायभेदे– जातभेदः-उपचितचतुर्थधातुः। *उत्त॰ २७३*।

जायरूव– जातरूपं-सुवर्णम्। *भग॰ १३५*। *जीवा॰ २०४, २२८*। रूप्यम्। *जम्बू॰ ३२४*। जातरूपः-सुवर्णविशेषः। *जम्बू॰ २३*। जातरूपं-सुवर्णम्। *स्था॰ ४२२*। *जम्बू॰ ६२*।

जायरुववडिंसए– जातरूपावतंसकः-उत्तरस्यामवतंसकः। *जीवा॰ ३९१*। *भग॰ २०३*।

जायसड्ढे– जाता-प्रवृत्ता श्रद्धा-इच्छाऽस्येति जातश्रद्धः। *ज्ञाता॰ ९*।

जायसूयग– जातसूतकं नाम जन्मानन्तरदशाह्नि यावत्। *व्यव॰ ७आ*।

जाया– हे पूत्र। *ज्ञाता॰ ५०*। जाता-अभियोगकृता विषकृता च। *व्यव॰ ३१५आ*। जाता-मूलगुणैः प्राणातिपातादि-भिरशुद्धा। *ओघ॰ १९३*। चमरासुरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत्। *जीवा॰ १६४*। यात्रा-संयमनिर्वहणनिमित्तम्। *उत्त॰ २९४*। जाता-प्रकृतिमहत्त्ववर्जितत्वेनास्थानकोपादीनां जातत्वा-ज्जाता, चमरस्य तृतीया पर्षत्। *भग॰ २०२*। शक्रदेवेन्द्रस्य बाह्या पर्षद्। *जीवा॰ ३९०*। या दोषात्परित्यागार्हाहारविषया सा जाता। *आव॰ ६४१*। यात्रा-संयमयात्रा। *भग॰ १२२*। चमरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत्। *स्था॰ १२७*।

जायाइ– अवश्यं यायजीति यायाजी। *उत्त॰ ५२२*। जाताः। *आचा॰ ३४८*।

जायामायावित्ती– संयमयात्रामात्रार्थं वृत्तिः-भक्तग्रहणं-यात्रा-मात्रावृत्तिः। *औप॰ ३७*।

जायाहि– याचस्व। *उत्त॰ ५३२।*

जार– जारः-नाय्यविशेषः। *जम्बू॰४१४।* मणिलक्षणविशेषः। *जीवा॰ १८९। जम्बू॰ ३१। निशी॰ २९६ अ।*

जारु– अनन्तकायवनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

जारेकण्हा– वाशिष्ठगोत्रस्यावशेषः। *स्था॰ ३९०।*

जालं– आनायम्। *उत्त॰ ४०७।* जालं-मत्स्यबन्धनम्। *प्रश्न॰ १३।* मत्स्यबन्धनविशेषः। *विपा॰ ८१।* जालकम्। *प्रज्ञा॰ ९९। सूर्य॰ २६४। जीवा॰ १७५।*

जालंधर– गोत्रविशेषः। *आचा॰ ४२१।*

जाल– जालं-सच्छिद्रो गवाक्षविशेषः। *ज्ञाता॰ १४।* जालः-गवाक्षः। *जम्बू॰ १८८।* मूलाग्निप्रतिबद्धा ज्वाला। *दशवै॰ १५४।* जालः-समूहः। *उत्त॰ ४६०।*

जालकडए– जालानि-जालकानि भवनभित्तिषु प्रसिद्धानि तेषां कटकः-समूहः जालकटकः, जालकाकीर्णा रम्यसंस्थानप्र-देशविशेषपङ्क्तिः। *जीवा॰ १७८।*

जालकडगा– जालकाकीर्णो रम्यसंस्थानौ, प्रदेशविशेषौ। *जम्बू॰ ५२।*

जालकिड्डगंतरेण– जालकटकान्तरे। *आव॰ ६३।*

जालगं– जालकं-चरणाभरणविशेषः। *औप॰ ५५।*

जालगंठिया– जालं-मत्स्यबन्धनं तस्येव ग्रन्थयो यस्यां सा जालग्रन्थिका-जालिका। *भग॰ २१४।* सङ्कलिका-मात्रम्। *भग॰ २१५।*

जालगा– द्वीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९५।*

जालघरगं– जालगृहं-जालकान्वितम्। *ज्ञाता॰ ९५।* जालगृ-हकं-जालकयुक्तं ग्रहम्। *जीवा॰ २००।* दार्वादिमयजालक-प्रायकुड्यं यत्र मध्यव्यवस्थितं वस्तु वहिः-स्थितैर्दृश्यते। *ज्ञाता॰ १२९।*

जालघरगा– जालयुक्तानि गृहकाणि। *जम्बू॰ ४५।*

जालपंजर– जालपञ्जरं-गवाक्षम्। *जीवा॰ २०५, ३६०।* गवाक्षः *जम्बू॰ ४९।* गवाक्षापरपर्यायाणि। *राज॰ ६२।*

जालयं– जालकं-छिद्रान्वितो गृहावयवविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

जालवंदं– जालवृन्दं-गवाक्षसमूहः। *जीवा॰ २६९।*

जालविंद– जालवृन्दः-गवाक्षसमूहः। *जम्बू॰ १०७।*

जालांतररयणं– जालानि-जालकानि। तानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्तं रत्नानि यत्र तत् जालान्तररत्नम् । *जीवा॰ ३७९।*

जाला– सुभूमचक्रवर्त्तिनः माता। *सम॰ १५२।* ज्वालाछिन्न-मूलानङ्गारप्रतिबद्धा। *आचा॰ ४९।* महापद्ममाता। *आव॰ १६१।* ज्वाला-अनलसंबद्धा। *जीवा॰ १०७।* अनलसंबद्धा दीपशिखा वा। *जीवा॰ २९।* ज्वाला-जाज्वल्यमानखादि-रादिज्वाला अनलसंबद्धा दीपशिखा। *प्रज्ञा॰ २९।* ज्वाला-अग्निशिखा। *स्था॰ ३३६।* छिन्नमूला-ज्वलनशिखा। *उत्त॰ ६९४।* ज्वाला-इन्धनच्छिन्ना। *ज्ञाता॰ २०४।*

जालाउया– द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१।*

जालाणि– बन्धनविशेषरूपाण्यात्मनोनर्थहेतून्। *उत्त॰ ४०७।*

जालायुसा– द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *जीवा॰ ३१।*

जालि– वंशसमूहः। *नन्दी॰ १५५।* जालिः-अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *अन्त॰ १४।* अनुत्तरोपपा-तिकदशानां प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । *अनुत्त॰ १।*

जालिग– जालिकं-देशकथाविशेषः। *आव॰ ५८१।*

जालिया– जालिका-लोहकञ्चुकः। *प्रश्न॰ ४७।*

जाली– जाली। *आव॰ ४२१।*

जालो– जालः-विच्छत्तिच्छिद्रोपेतगृहावयवविशेषः। *औप॰६५।*

जावं– यावत्-अवधिवाचकः। *जम्बू॰ ३८९।*

जावंतिया– यावन्तो भिक्षाचरा आगमिष्यन्ति तावतां दातव्य इति अभिप्रायेण यस्यां दीयते सा यावन्तिका। *बृह॰ १४० अ।* यावद्भिक्षुकाणां दानाय संखडी। *बृह॰ १४० अ।*

जावंते– यावान्-भगवत्याः प्रथमशतके षष्ठ उद्देशः। *भग॰ ६।*

जाव– यावत्-ऐदम्पर्यार्थः। *भग॰ २६९।* यावत्-सम्पूर्णः। *जम्बू॰ २४३।* यावच्छब्दो न संग्राहकः किन्त्ववधिमात्र-सूचकः। *जम्बू॰ ३३८।* यावच्छब्दो न गर्भगतसंग्रहसूचकः संग्राहापदाभावात्, किन्तु सजातीयभवनपतिसूचकः। *जम्बू॰ १६१।*

जावई– कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।*

जावऊसासो– यावदुच्छ्वासः-यावदायुः। *आव॰ ८४३।*

जावए– यापयति-वादिनः कालयापनां करोति। *स्था॰२६१।*

जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञापकः। *समः ४।*

जावग– यापकः-विकल्पभेदः। *दशवै॰ ५७।*

जावज्जीवाए– यावज्जीव-आप्राणोपरमादित्यर्थः। *दशवै॰ १४३।*

जावणिज्जा– यापनीया-यथाशक्तियुक्ता। *आव॰ ५४७।*

जावताव– यावद्वयम्। *भग॰ ४६८।*

जावति– वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

जावतियं– आचडाला। *निशी॰ २३० आ।*

जावसिआ– यावसिका-घासवाहिकाः। *ओघ॰ ९७।*

जावसिया– यवसः-तत्प्रायोग्यमुद्गमाषादिरूप आहारस्तेन तद्वहनेन चरन्तीति यावसिकाः। *बृह॰ २४७* आ। जवस वहति जे ते जावसिया। *निशी॰ २०० आ।*

जाविंत– यापयन्। *आव॰ ५३८।*

जासुमणकुसुमे– जपाकुसुमम्। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

जासुमणा– जासुमणा नाम वृक्षः। *भग॰ ६५६।*

जासुमि(म)णा– जपा वनस्पति विशेषस्तस्याः सुमनसः पुष्पाणि। *अन्त॰ ९।*

जासुवण– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

जाहओ– जाहकः-तिर्यग्विशेषः। *आव॰ १०३।*

जाहग–जाहकः। *व्यव॰ ३९३।* अ। जाहकाः-कण्टकावृतशरीराः। *प्रश्न॰ ८।*

जाहाडिता– सगर्भाजाता। *बृह॰ २५७ अ।*

जाहिति– भविष्यति। *आव॰ ४२२।*

जाहो– भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः। *जीवा॰ ४०।*

जिंघणा– जिघ्रणम्। *ओघ॰ १३८।*

जिअ– जिता-परिचिता। *दशवै॰ २३५।*

जिअनिद्दं– जिता निद्रा-आलस्य येन तत् जितनिद्रं-त्यक्ता-लस्यम्। *जम्बू॰ २३७।*

जिअसत्तु– जितशत्रुः-अजितपिता। *आव॰ १६१।* काकन्दी-नगर्यधिपतिः। *अनुत्त॰ २।*

जिइंदिए– जितेन्द्रियः-संयमी। *भग॰ १२२।*

जिच्चं– जीयते-हार्यते अतिरौद्रैरिन्द्रियादिभिः आत्मा तदिति जेयम् जीयेत्-हार्येत। जीयते-हार्यते। *उत्त॰ २८२।*

जिच्चमाणो– जीयमानो-हार्यमाणः। *उत्त॰ २८२।*

जिच्चा– जित्वा-पुनः पुनरभ्यासेन परिचितान् कृत्वा। *उत्त॰ ८१।*

जिज्जूहइ– निष्काश्यते। *बृह॰ ४।*

जिज्झगारा– तुन्नाकविशेषः, शिल्पार्यभेदः। *प्रज्ञा॰ ५६।*

जिट्ठयं– ज्येष्ठकं-अतिशयप्रशस्यमतिवृद्धं वा। *उत्त॰ ४९०।*

जिट्ठा– ज्येष्ठा-सुदर्शना, अनवद्याङ्गी। *निशी॰ ४६ अ।*

जिट्ठामूले– ज्येष्ठामूलः-ज्येष्ठः। *उत्त॰ ५३७।*

जिणंतस्स– जयतः-अभिभवतः। *दशवै॰ १६०।*

जिणंदासे– जिनदासः-विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे पञ्चममध्ययनम्। *विपा॰ ८९।*

जिण– जिनः-रागादिजेता। *भग॰ ६७।* जयति-निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिनः। रागादिजयः। *भग॰ ९।* रागादीनां जेता, यद्वा मनःपर्यवज्ञानी। *जम्बू॰ १३६।* जिनः –तीर्थङ्करः। *आव॰ ६६२।* हिताप्त्यनिवर्त्तकयोगसिद्धो गणधारी। *जीवा॰ ३।* हिताप्त्य-निवर्त्तकयोगः, हितप्रवृत्त-गोत्रविशुद्धोपायाभिमुखापायविमुखादिको वा। गोत्रविशुद्धो-पायाभुमुखहितप्रवृत्तादिभेदः। *जीवा॰ ४।* जयति-निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिनः। *समः ४।* सयोगीकेवली। *स्था॰ २०२।* विशिष्टश्रुतधरः, श्रुतजिनः अवधिजिनः, मनःपर्यायज्ञानजिनः, छद्मस्थवीतरागश्च। *आव॰ ५०१।*

जिणइ– जयति। *आव॰ ५०२।*

जिणकप्पट्ठिति– जिनाः-गच्छनिर्गतसाधुविशेषास्तेषां कल्प-स्थितिः जिनकल्पस्थितिः। *स्था॰ १६९, ३७४।*

जिणकप्पिय– जिनकल्पिकः। *आव॰ ३२३।*

जिणकप्पिया– कल्पिकविशेषः। *निशी॰ ३३८ आ।*

जिणति– जयति। *आव॰ ३४२।*

जिणदत्त– जिनदत्तः-चम्पायां सुश्रावकः। *दशवै॰ ४७।* लोभो-दाहरणे पाटलीपुत्रे श्रावकः। *आव॰ ३९७।* परलोकनमस्का-रफलविषये मथुरायां श्रावकः। *आव॰ ४५४।* इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते श्रेष्ठी सुभद्रापिता। *आव॰ ७९९।* चम्पायां सार्थवाहः। *ज्ञाता॰ २००।*

जिणदत्तपुत्त– जम्पायां सार्थवाहपुत्रः। *ज्ञाता॰ ९१।*

जिणदासो– जिनदासः-मनोगुप्तिदृष्टान्ते श्रेष्ठीसुतः श्रावकः। *आव॰ ५७८।* महेश्वरविशेषः। *आव॰ ३९६।* मथुरायां श्राद्धविशेषः। *आव॰१९७।* परलोकफलविषये कुलपुत्रमित्रम्। *आव॰ ८६३।* रायपुरे श्रावकविशेषः।

महाचन्द्राभिधकुमारस्य सुतः। *विपा॰ ९५*।

जिणदेवो– जिनदेवः-भावप्रणिधिविषये भृगुकच्छे आचार्यः। *आव॰ ७१२*।
आत्मदोषोपहारविषयेऽर्हमित्रश्रेष्ठिपुत्रः। *आव॰ ७१४*।
मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे श्रावकः। *आव॰ ७१५*।
सङ्गपरिहरणविषये चम्पायां सार्थवाहः श्रावकः। *आव॰७२३*।

जिणधम्म– कांचनपुरश्रेष्ठी यत्पृष्ठि स्थालीदग्धा द्विमासपर्यायः। *मरण॰*।

जिणपडिमा– जिनप्रतिमा। *जीवा॰ २२८*।

जिणपसत्थं– जिनप्रशस्तं-जिनप्रशासितम्। *प्रश्न॰ १४७*।

जिणपालिए– चंपायां माकन्दीभद्रायाः पुत्र। *ज्ञाता॰ १५६*।

जिणमय– जिनाः-तीर्थकरास्तेषां आगमरूप प्रवचनम्। *आव॰ ५८८*। आगमः। *दशवै॰ २५५*।

जिणरक्खिरा– चंपायां माकन्दीभद्रायाः पुत्रः। *ज्ञाता॰ १५६*।

जिणलिंगं– अचेलकत्वम्। *बृह॰ ५५* आ।

जिणवयणं– जिनवचनं-वाच्यवाचकयोरभेदोपचाराज्जिनवच-नाभिहितमनुष्ठानम्। *उत्त॰ ७०८*।

जिणवयणबाहिरो– जिनवचनबाह्यः-यथावस्थितागमपरिज्ञा-नरहितः। *आव॰ ५३३*।

जिणसकहा– जिनसकथा-जिनसक्थीनि। *जम्बू॰ ५३३*।

जिणसकहाओ– जिनसक्थीनि-जिनास्थिनि। *भग॰ ५०५*। जिनसक्थीनि-तीर्थकराणां मनुजलोकनिर्वृतानां सक्थीनि अस्थीनि। *सम॰ ६४*।

जिणसासण– जिनशासनं-जिनागमम्। *उत्त॰ ८८*। जिन-शासनं। क्रोधविपाकप्रतिपादकं वीतरागवचनम्। *दशवै॰ २३२*।

जिणा– रागद्वेषमोहान् जयन्तीति जिनाः-सर्वज्ञाः। *स्था॰ १७४*। ये जिनकल्पं प्रतिपत्स्यन्ते ते जिनाः। *बृह॰ २२९* आ। जिनकल्पिकाः। *ओघ॰ २०८*। गच्छनिर्गताः साधु-विशेषाः। *बृह॰ २५१* अ।

जिणित्ता– जित्वा। *उत्त॰ ३१३*।

जिणियव्वं– जेतव्ययम्। *आव॰ ३४२*।

जिणियाइओ– जितवान्। *आव॰ ५०२*।

जिणुस्सेहो– जिनोत्सेधः-जिनानां उत्कर्षतः पञ्चधनुःशतानि जघन्यतः सप्तहस्ताः। *जीवा॰ २२८*।

जिण्णकूवो– जीर्णकूपः। *आव॰ १५२*।

जिण्णुज्जाणे– जीर्णोद्यानम्। *ज्ञाता॰ ७८*।

जितं– परावर्त्तनं कुर्व्वतः परेण वा क्वचित् पृष्टस्य यच्छीघ्रमा-गच्छति तज्जितम्। *अनुयो॰ १५*।

जितशत्रुः– छत्रानगर्यां नृपः। *आव॰ १७७*। मिथिलानगर्यां राजा। *सूर्य॰ २*। सहसम्मत्यादिदृष्टान्ते वसन्तपुरे राजा। *आचा॰ २१*।

जितसत्तू– जितशत्रुः-पञ्चालजनपदे राजा काम्पिल्यनगर-नायक इति। *स्था॰ ४०१*। जितशत्रुः-भद्दिलपुराधिपतिः। *अन्त॰ ४*। *बृह॰ २३१* अ। जितशत्रुः-कौशाम्बीनृपतिः। *उत्त॰ २८७*। चम्पायां नरपतिः। *ज्ञाता॰ १७३*।

जितारो– आनन्दपुरनगरे राजा। *बृह॰ १०७* आ।

जितारीराया– आनंदपुरे राया। *निशी॰ ४२* अ।

जिनकल्पिकः– साधुभेदविशेषः। *भग॰ ४*।

जिनकल्पिकादिसमाचारः– कल्पः। *भग॰ ६१*।

जिनदत्तः– आधासम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे श्रावकः। *पिण्ड॰ ६३*।

जिनदासः– आच्छेद्यद्वारविवरणे वसन्तपुरे श्रावकः। *पिण्ड॰ १११*।

जिनप्रभसूरिः– आचार्यविशेषः। *जम्बू॰ ५४३*।

जिनमतिः– आधोसम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे जिनदत्तभार्या। *पिण्ड॰ ६३*।

जिनमुद्राः– मुद्राभेदः। *भग॰ १७४*।

जिनाः– जिनकल्पिकादयः। *ओघ॰ १६७*।
गच्छनिर्गतसाधु-विशेषाः। *स्था॰ १६९*।

जिनेश्वरः– अभयदेवसूरीणां गुरुः। *औप॰ ११९*। *ज्ञाता॰ २५४*।

जिब्भाडं– अतीवगिद्धो। *निशी॰ १३५* आ।

जिब्भिंदिए– जिह्वेन्द्रियम्। *प्रज्ञा॰ २९३*।

जिब्भिआ– जिह्विका, प्रणाला। *जम्बू॰ २९१*।

जिमिंत– जिमत्। *आव॰ ३५३*।

जिम्मइ– जिम्यते। *आव॰ १५०*।

जिम्ह– माया। *व्यव॰ २४६* आ।

जिम्ह– लज्जनीयं। *निशी॰ २९६* अ। *बृह॰ ७३* आ। परवञ्चनाभिप्रायेण। *भग॰ ५७३*। जिह्मः। *स्था॰२७०*।

जैम्हम्। *सम॰ ७१*।

जिम्हजढ– मायारहितः। *व्यव॰ २४६* आ।

जियंतए– हरितविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

जिय– जीतव्यवहारः। *उत्त॰ ६४*।

जियकप्प– जीतकल्पः-जिनप्रतिबोधनलक्षणः आचरितकल्पः *स्था॰ ४६३*। *निशी॰ १०२* अ।

जियपडिमा– जीवप्रतिमा। *आव॰ ६६८*।

जियसत्तु– द्वितीयतीर्थङ्करस्य पितृनाम। *सम॰ १५०*। जितशत्रुः-राजा। *आव॰ ३७२*। मिथिलायां नृपतिः। *जम्बू॰ १*। शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रत्यन्तनगराधिपतिः। *आव॰६७८*। इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते वसन्तपुरेऽधिपतिः। *आव॰ ७९९*। क्षितप्रतिष्ठितनगरस्य राजा। *पिण्ड॰ ३०*। जितशत्रुर्नाम नरपतिः। *व्यव॰ १८८* आ। श्रावस्त्यां नगर्यां राजा। *राज॰ ११६*। वाणिजग्रामनगरे राजा। *उपा॰ १*। खितिपतिट्ठिनयरे राया। *निशी॰ ६८* आ। *निशी॰ ३५९* आ। सावत्थिनयरे राया। *बृह॰ १५२* आ। वणवासीनगरीए राया। *बृह॰ ११३* आ। जितशत्रुः चम्पा-नगर्यामधिपतिः। *उत्त॰९२*। *ज्ञाता॰१९३*। अचलपुरे नृपतिः। *उत्त॰ १००*। श्रावस्तिनगर्यां राजा। *उत्त॰ ११४*। मथुरायां नृपतिः। *आव॰ ३९८*। *उत्त॰ १२०*। *उत्त॰ १४८*। उज्जयिन्यां नृपतिः। *उत्त॰१९२, २१३*। सर्वतोभद्रनगरा-धिपतिः। *विपा॰ ६८*। नृपतिः। *विपा॰ ९५*। वसन्तपुरे नृपतिः। *आव॰ ३७२, ३७८, ३९३*। *ओघ॰ १५८*। जितशत्रुः-लोहार्गलराजधान्या राजा। *आव॰ २१०*। तुरु-मिणीनगर्यां राजा। *आव॰ ३६९*। मृगकोष्ठकनगरे राजा। *आव॰ ३९१*। पाटलीपुत्रे राजा। *आव॰ ३९७*। स्पर्शेन्द्रि-यदृष्टान्ते वसन्तपुरे राजा। *आव॰ ४०२*। शिल्पसिद्धदृष्टान्ते पाटलिपुत्रे राजा। *आव॰ ४०९*। परलोके नमस्कारफलविषये वसन्तपुरनगरे राजा। *आव॰ ४५३*। योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठित-नगरे राजा। *आव॰६७०*। तितिक्षोदाहरणे मथुरायामधिपतिः। *आव॰ ७०२*। आत्मसंयमविराधनादृ-ष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठित-नगरेऽधिपतिः। *आव॰ ७३२*। राजाभियोगविषये हस्तिनाग-पुरनृपतिः। *आव॰ ८११*। गुणोदाहरणे पाटलिपुत्रे राजा। *आव॰ ८१९*। द्रव्यातङ्कोदा-हरणे राजगृहे राजा। *आचा॰ ७५*। पाञ्चालाधिपती। *ज्ञाता॰ १२४*। आम्लकल्पायां नरपतिः। *ज्ञाता॰ २४८*।

जिया– जिता-अभ्यस्ता उचिता वा अनुष्ठीयमाना। *आव॰ ५९४*।

जियारी– सम्भवजिनपिता। *सम॰ १५०*। जितारिः-सम्भव-पिता। *आव॰ १६१*।

जिवसंथव– जिनसंस्तवः 'लोगस्सुज्जोअगरे' इत्यादिरूपः। *दशवै॰ १८०*।

जिह्वा– रसना। *आचा॰ ३८*।

जीअं– जीतं-कल्पः, आचारः। *जम्बू॰ १५९*। कल्पः। *जम्बू॰ २५२*।

जीअलोगं– जीवलोकं-वर्त्तमानभवादन्यं भवं पृथिवीकायिका-दिक, अपमृत्युं प्राप्नुतेत्यर्थः। *जम्बू॰ २४६*।

जीए– प्रभूतानेकगीतार्थकृता मर्यादा तत्प्रतिपादको ग्रन्थोऽ–प्युचारात् जीतम्। *व्यव॰ ५* अ। जीतः-व्यवहारः। *व्यव॰ ३६३*।

जीतं– स्थितिः कल्पो मर्यादा (सूत्र) व्यवस्था च। *नन्दी॰ ४९*। *भग॰ ३८४*। द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिषेवानुवृत्त्या संहनन-धृत्यादिपरिहाणिमवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदानं यो वा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्तः कारणतः प्रायश्चित्तव्यवहारः प्रवर्त्तितो बहुभिर-न्यैश्चानुवर्त्तितस्तज्जीतमिति। *स्था॰ ३१८*।

जीभुमणा– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

जीमूत– जीमूतः-बलाहकः। *जीवा॰ १८९*। *स्था॰ २७०*। जीमूतः-प्रावृट्प्रारम्भसमयभावीजलभृतः, बलाहकः। *प्रज्ञा॰ ३६०*।

जीयंति– जीयन्ते-हार्यन्ते। *उत्त॰ २७८*।

जीय– जीतं-दुष्टनिग्रहविषयमाचरितम्। *प्रश्न॰ ५८*। जीत-जीवितं, अवश्यं, अव्यवच्छित्तिनयाभिप्रायतः सूत्रमेव वा। *आव॰ ६८*। जीवः-जीवितं, जीतं-कल्पतः। *प्रश्न॰ १३*।

जयदंडो– जीतदण्डः-रूढदण्डः, जीवदण्डो वा-जीवित-निग्रहलक्षणः। *प्रश्न॰ ५८*।

जीया– जीवा-प्रत्यञ्चा। *ज्ञाता॰ २२२*।

जीरंतो– जीर्यन्। *आव॰ ५६९*।

जीरकं– रसविशेषः। *सूर्य॰ २९३*। हरितकविशेषः। *२९३*।

जीरु– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

जीर्णः– हानिगतदेहः। *भग॰ ७०५।*

जीर्णकर्पटः– कुचेलः। *औप॰ ७४।*

जीवंजीवा– चर्मपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

जीवजीवेण– जीवजीवेन-जीवबलेन गच्छति न शरीरबले-नेत्यर्थः। *भग॰ २१६। ज्ञाता॰ ७६।* जीववीर्येण न तु शरीर-वीर्येणेत्यर्थः। *अनुत्त॰ ७।*

जीवंजीवेन– जीवबलेन न शरीरबलेनेत्यर्थः। *अन्त॰ २७।*

जीवंजीवी– चर्मपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।*

जीवंतिया– अजीविष्यत्। *आव॰ ३६८।*

जीव– आयुःप्राणादिमान्। *अनुयो॰ २४२।* जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीवः-प्राण-धारणधर्मा आत्मा। *स्था॰ १९।* जीवसामान्यम्। जीवनिति प्राणान् धारयनित्यर्थः। जीवनपर्यायविशिष्टः। *जीवा॰ १४०।* प्राणो भूतः सत्त्वो विज्ञो वेदयिता। *भग॰१९२।* जीवाप्रत्यञ्चा। *जम्बू॰ २०१।* प्राणधारणम्। *स्था॰ ११९।* जीतम्। *व्यव॰ ३६३* आ। जीवः। *भग॰ २२९।* ज्ञानाद्युपयोगः। *भग॰ ३२५।* जीवाः-गर्भव्युत्क्रान्तिकसम्मूर्च्छनजौपपातिक-पंचेन्द्रियाः। *आचा॰ ७१।*

जीवअजीवमीसग– जीवाजीवमिश्रा-सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २०९।*

जीवअपच्चक्खाणकिरिया– जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादिर्व्यापारः सा जीवाप्रत्याख्यानक्रिया। *स्था॰ ४१।*

जीवआरंभिया– यज्जीवानारभमाणस्य-उपमृग्दतः कर्मबन्धनं सा जीवारम्भिकी। *स्था॰ ४१।*

जीवइ– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

जीवकप्पो– बहुशोऽनेकवारं प्रवृत्तः महाजनेन वानुवर्तित एष पञ्चमको जीतकल्पः। *व्यव॰ ४४१* अ।

जीवकिरिया– जीवस्य क्रिया-व्यापारो जीवक्रिया। *स्था॰ ४०।*

जीवगाहो– जीवग्राहम्। *उत्त॰ ५१।*

जीवग्गाहो गिण्हंति– जीवतीति जीवस्तं जीवन्तं गृह्णान्ति। *ज्ञाता॰ ८७।*

जीवघणो– जीवघनः-निचितीभूतजीवप्रदेशरूपः। *प्रज्ञा॰ ६१०।*

जीवजढं– आहाकम्म। *बृह॰ १०६* अ।

जीवजीवक– जीवजीवकः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

जीवणं– जीवनं-तथैवाजन्मापि प्रवृत्तिः। *प्रश्न॰ १०६।*

जीवदय– जीवनं जीवो भावप्राणधारणममरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयत इति जीवदयो, जीवेषु वा दयः यस्य स जीवदयः। *सम॰ ४।*

जीवदिट्ठिया– अश्वादिदर्शनार्थं गच्छतः या सा जीवदृष्टिका। *स्था॰ ४२।*

जीवनं– स्थितिः-आयुः कर्मानुभूतिरिति। *प्रज्ञा॰ १६९।*

जीवनिव्वत्ती– निर्वर्त्तनं निर्वृत्तिर्निष्पत्तिर्जीवस्यैकेन्द्रियादि तया निर्वृत्तिः जीवनिर्वृत्तिः। *भग॰ ७७२।*

जीवनेसत्थिया– राजादिसमादेशाद्यदुदकस्य यन्त्रादिभिर्नि-सर्जनं सा जीवनैसृष्टिकी। *स्था॰ ४३।*

जीवपएसा– जीवः प्रदेशा एव येषां ते जीवप्रदेशाः। *स्था॰ ४१०।* जीवः-प्रदेश एवैको येषां मतेन ते जीवप्रदेशाः। *औप॰ १०६।*

जीवपतेसिता– जीवः प्रदेश एव येषां ते जीवप्रदेशास्त एव जीवप्रादेशिकाः, अथवा जीवप्रदेशो जीवाभ्युपगतो विद्यते येषां ते, चरमप्रदेशजीवप्ररूपिणः। *स्था॰ ४१०।*

जीवपरिणामे– जीवस्य-परिणामो जीवपरिणामः। *प्रज्ञा॰ २८४।*

जीवपाउसिया– जीवे प्रद्वेषाज्जीवप्राद्वेषिकी। *स्था॰ ४१।*

जीवपाओगिअं– जीवप्रायोगिकं जीवप्रयोगेन निर्वृत्तं प्रायोगि-कप्रथमभेदः। *आव॰ ४५७।*

जीवपाओसिया– जीवस्य-आत्मपरतदुभयरूपस्योपरि प्रद्वेषाद् या क्रिया प्रद्वेषकरणमेव वा जीवप्रद्वेषिका। *भग॰ १८२।*

जीवपारिग्गहिया– जीवान् परिगृह्णाति जीवपारिग्रहिकी, पारि-ग्रहिकी क्रियायाः प्रथमो भेदः। *आव॰ ६१२।*

जीवफुडा– जीवेनस्पृष्टानि-व्याप्तानि जीवस्पृष्टानि। *स्था॰ २५२।*

जीवभावं– जीवभावः-जीवत्वं, चैतन्यम्। *भग॰ १४९।*

जीवमीसए– जीवविषयं मिश्रं सत्यासत्यं जीवमिश्रम्। *स्था॰ ४९०।*

जीवमीसग– जीवमिश्रा सत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २०९।*

जीवमीस्सिया– प्रभूतानां जीवतां स्तोकानां च मृतानां शङ्ख-शङ्खनकादीनामेकत्र राशौ दृष्टे यदा कश्चिदेवं

वदति अहो ! महान् जीवराशिरयमिति तदा सा जीवमिश्रिता। *प्रज्ञा॰२५६*।

जीवलोग– जीवलोक-ब्रह्माण्डम्। *जम्बू॰ २०६*। जीवलोकः –जीवाधारः-क्षेत्रम्। *प्रश्न॰ ११५*।

जीवविप्पजढं– आत्मना विप्रमुक्तम्। *ज्ञाता॰ ८५, १९८*।

जीववेयारणिया– जीवं विदारयति-स्फोटयतीति, अथवा जीवं पुरुषं वितारयति-प्रतारयति वञ्चयतीत्यर्थः। *स्था॰ ४३*।

जीवसामंतोवणिवाइया– जीवसामन्तोपनिपातिकी-समन्ताद-नुपततीति सामन्तोपनिपातिकीक्रिया, तस्याः प्रथमो भेदः। *आव॰ ६१३*।

जीवसाहत्थिया– यत् स्वहस्तगृहीतेन जीवेन जीवं मारयति सा जीवस्वाहस्तिकी। *स्था॰ ४२*।

जीवा– जीविता इत्यर्थः। *व्यव॰ १६२अ*। प्राणधारणम्। *उपा॰ ४*। जीवाः-जीवन्ति जीविष्यन्ति जीवितवन्त इति। *अनुयो॰ ७४*। पञ्चेन्द्रियाः। *ज्ञाता॰ ६१*। *प्रज्ञा॰ १०७*। *स्था॰ १३६*। *जम्बू॰ ५३९*। जीवन्ति जीविष्यन्ति अजीविषुरिति जीवाः-नारकतिर्यग्नरामरा लक्षणाश्चतुर्गतिकाः। *आचा॰१७९*। प्रत्यञ्चा-दवरिकेत्यर्थः। *सूर्य॰ २१, २३३*। *उत्त॰ ३११*। जीवाऋज्वी सर्वान्तिमप्रदेशपङ्क्तिः। *जम्बू॰ ६८*।

जीवाओ– जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य वर्षाणां वर्षधाराणां ऋज्वीसीमा जीवोच्यते। *सम॰ ४३*।

जीवाजीवमिस्सिया– मृतजीवतिजीवराशौ एतावन्तोऽत्र जीवन्त एतावन्तोऽत्र मृता इति नियमेनावधारयतो विसंवादे जीवाजी-वमिश्रिता। *प्रज्ञा॰ २५६*।

जीवाजीवमीसए– जीवाजीवविषयं मिश्रकं जीवाजीवमिश्रकम्। *स्था॰ ४९०*।

जीवाजीवविभत्ति– जीवाजीवविभक्तिः-उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिं-शत्तममध्ययनम्। *उत्त॰ ९*।

जीवाजीवविभत्ती– उत्तराध्ययनेषु षट् त्रिंशत्तममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

जीवानां– संयमजीवितेन जीवतां जिजीविषूणां च। *आचा॰ २५६*।

जीवाभिगमे– जीवानां ज्ञेयानां अवध्यादिनैवाभिगमो जीवा-भिगमः। *स्था॰ १३३*।

जीविआरिहं– जीवितार्हं-आजीविकायोग्यम्। *जम्बू॰ १८८*।

जीविऊसविए– जीवितमुत्सूते-प्रसूति इति जीवितोत्सवः स एव जीवितोत्सविकः। जीवितविषये वा उत्सवो-महः स इव यः स जीवितोत्सविकः। *भग॰ ४६८*।

जीविए– असमयजीवितः। *उत्त॰ २९६*। *आचा॰ १०७, १२३*। यद्यस्य स्वकार्यं साधनं प्रति समर्थं रूपं तत्तस्य जीवितमिति रूढम्। *उत्त॰ २२९*।

जीवियंतकरणो– जीवितान्तकरणः प्राणवधस्य द्वाविंशतितमः पर्यायः। *प्रश्न॰ ६*।

जीविय– असंयमाख्यः। *आचा॰ २५१*। जीवितम्-कर्मणो दीर्घा स्थितिः। *भग॰ २८९*। जीविकायै। *उत्त॰ ४७८*।

जीवियकारणं– जीवितकारणं-असंयमजीवितहेतुः। *दशवै॰९६*।

जीवियकिच्छ– कृच्छ्रजीविता। *बृह॰ २४२अ*।

जीवियरसहे– साधारण बादर वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

जीवियववरोवणं– जीवितव्यपरोपणम्। *ओघ॰ १५६*।

जीविया– जीवस्य-देहस्य सम्बन्धी अधिष्ठातृत्वादात्मा जीवात्मा पुरुषः, जीवात्मा तु सर्वभेदानुगामि जीवद्रव्यं, जीवस्यैव स्वरूपम्। *भग॰ ७२४*।

जीवियाइओ– जीवितवान्। *बृह॰ २८अ*।

जीवियारिहं– आजन्मनिर्वाहयोग्यम्। *ज्ञाता॰ २४*।

जीवियासंसप्पओगे– जीवितं-प्राणधारणं तत्राभिलाषप्रयोगः-यदि बहुकालं जीवेयमिति जीविताशंसाप्रयोगः। *आव॰८३९*।

जीवे– जीवेत्-अविकृत आस्ते। *सूत्र॰ २७८*। जीविते। *स्था॰ ५२०*।

जीवेजीवे– जीवेजीवे-इह एकेन जीव शब्देन जीव एव गृह्यते द्वितीयेन च चैतन्यम्। *भग॰ २८५*।

जीवो– जीवनं जीवः-भावप्राणधारणं, अमरणधर्मत्वमित्यर्थः। *औप॰ १५*।

जीहा– जिह्वा-रसना। *जीवा॰ २७३*।

जुंगमच्छा– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४*।

जुंगिओ– जात्यङ्गहीनः। *स्था॰ १६५*।

जुंगियंग– जुङ्गिताङं-कत्तितहस्तपादाद्यवयवः। *पिण्ड॰ १३१*। व्यङ्गितः। *स्था॰ ३४२*।

जुंजकं– तृणविशेषः। *जीवा॰ २६*।

जुंजणाकरणं– योजनाकरणं मनःप्रभृतीनां व्यापारकृतिः।

आव॰ ४६६।

जुंजुंति– युञ्जति-परिसमापयन्ति। *सूर्य॰ १७२।*

जुंजुकं– तृणविशेषः। *उत्त॰ ६९२।*

जुंजे– युञ्यात्-सङ्घट्टयेत्। *उत्त॰ ५४।*

जुअणद्धे– युगनद्धः-युगमिव नद्धो-योगः, यथा युगं वृषभ-स्कन्धयोरारोपितं वर्तते तद्वत् योगोऽपि यः प्रतिभाति स युगनद्ध इत्युच्यते। *सूर्य॰ २३३।*

जुअल– युगलं-सजातीयविजातिययोर्लतयोर्द्वन्द्वम्। *जम्बू॰ २५।*

जुआणा– जुवाणा। *निशी॰ २५८ अ।*

जुइ– युतिः, मेलः। *जम्बू॰ १९२।*

जुई– युक्तिः इष्ट परिवारादियोगः। *उपा॰ २६।* शरीरगता आभरणगता च। *जीवा॰ २१७।* युतिः-इष्टार्थसंयोगः। *भग॰ १३२।* शरीराभरणाश्रिता। *सूर्य॰ २५८।* विवक्षितार्थयोगः। *औप॰ ५०।* शरीराभरणविषया। *सूर्य॰ २८६। प्रज्ञा॰ ६००।* द्युतिः-आन्तरं तेजः। *ज्ञाता॰ १४०।*

जुइए– आभरणादिसम्बन्धिन्या युक्त्या वा उचितेषु वस्तुघटना लक्षणया। *विपा॰ ८६।* द्युतिः-शरीरगता आभरणगता च। *जम्बू॰ ६२।* द्युतिः-दीप्तिः शरीराभरणादिसम्पत् तस्याः-युतिर्वा इष्टपरिवारादिसंयोगलक्षणा तस्याः। *जम्बू॰ २०२।*

जुउ– पृथक्। *निशी॰ २४३ अ।*

जुए– युगं-पञ्चसंवत्सरमानम्। *भग॰ २११।*

जुगंतरं– यूपप्रमाणभूभागः युगान्तरं। *प्रश्न॰ ११०।*

जुगं– बदिल्लाणखंधे आरोविज्जति। *निशी॰ ११७ आ।* युगं-यूपः। *भग॰ १४०। प्रश्न॰ ८१। विपा॰ ३७।* सुषमदु-ष्षमादिकालः। *जीवा॰ १२१।* युगम्। *आव॰ ३४५।* चन्द्रा-दिसंवत्सरपञ्चात्मकम्। *सूर्य॰ ९१।* युगः-कालः। *व्यव॰ २५६ आ।* शरीरम्। *दशवै॰ ७४।* चतुर्हस्तम्। *अनुयो॰ १५४।* पञ्चसंवत्सरिकम्। *जम्बू॰ ९१, ४९५।* पञ्चसंवत्स-रम्। *जीवा॰ ३४४। सम॰ ९८। भग॰ ८८८।* यूपः। *स्था॰ ४५०।* युगानि पञ्चवर्षमानानि कालविशेषाः। लोक प्रसिद्धानि वा कृतयुगादीनि। पट्टपद्धतिपुरुषाः। *जम्बू॰ १५५।*

जुगप्पहाण– युगप्रधानः। *आव॰ ३०२। निशी॰ ३४०।*

जुगबाहु– सुविधिनाथस्य पूर्वभवनाम। *सम॰ १५१।*

जुगबाहू– युगबाहुः-महाविदेहे तीर्थकरः। *विपा॰ ९४।* सत्यो (। शोचो।)दाहरणे वासुदेवः। *आव॰ ७०६।*

जुगमच्छो– युगमत्स्यः, मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ३६।*

जुगमाया– युगमात्रा दृष्टिः। *भग॰ ७५४।*

जुगयं– पृथक्। *दशवै॰ ४७।*

जुगलं– युगलं-द्वन्द्वम्। *जीवा॰ १९९।* सजातीयविजातीययो-र्लतयोर्द्वन्द्वम्। *जीवा॰ १८२।*

जुगलजीहो– युग्मजिह्वः-आत्मोत्कर्षपराभिभवजिह्वाद्वययुक्तः। *आव॰ ५६६।*

जुगवं– युगं-कालविशेषः तत्प्रशस्तमस्यास्तीति युगवान्। *उपा॰ ४६।* युगं-सुषमादुष्षमादिकालः स स्वेन रूपेण यस्यास्ति न दोषदुष्टः स युगवान्। *राज॰ २२।* युगं सुषम-दुष्षमादिकालः सोऽदुष्टो निरूपद्रवो विशिष्टबलहेतुर्यस्या-स्त्यसौ युगवान्। *अनुयो॰ १७५।*

जुगसंवच्छरे– पञ्चसंवत्सरात्मकं युगं तदेकभुदेशभूतो वक्ष्यमा-णलक्षणश्चन्द्रादिर्युगसंवत्सरः। *स्था॰ ३४४।* युगं-पञ्चवर्षा-त्मकं तत्पूरकः संवत्सरो युगसंवत्सरः। *सूर्य॰ १५३।*

जुगसन्निभ– युगसन्निभः-वृत्ततया आयततया च यूपतुल्यः। *जीवा॰ २७१।*

जुगाति– युगानि-पञ्चसंवत्सराणि। *स्था॰ ८६।*

जुगुछितो– कोलिगजातिभेदो। *निशी॰ ४३ आ।*

जुगुप्सना– परिस्थापना। *उत्त॰ ४७८।*

जुगुप्समानः– निन्दन्परिहरन्। *आचा॰ ११४।*

जुगुप्से– निन्दामि। *आव॰ ४५६।*

जुगुप्सितानि– चर्मकारकुलादीनि। *आचा॰ ३२७।*

जुगेइ– षण्णवतिरङ्गुलानि युगम्। *जम्बू॰ ९४।*

जुग्ग– युग्यं-गोल्लविषयप्रसिद्धं द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभितं जम्पानम्। *औप॰ ४। जीवा॰ १८९।* गोल्लविषयप्रसिद्धं द्विहस्तप्रमाणं चतुरस्रवेदिकोपशोभितं जम्पानम्। *जीवा॰ २८१। अनुयो॰ १५१।* पुरुषोत्क्षिप्तमाकाशयानम्। *सूत्र॰३३०।* वाहनं, गोल्लदेशप्रसिद्धजम्पानविशेषः। *प्रश्न॰ ९१।* वाहनमात्रं, गोल्लकदेशप्रसिद्धो वा जम्पानविशेषः। *प्रश्न॰ १५२।* वाहनं-गोल्लदेशप्रसिद्धं वा जम्पानम्। *भग॰ ५४७। प्रश्न॰ १६१।* योग्यं-सर्वोपाधिशुद्धम्। अनुरूपम्। *आव॰ ४७०।* समनु-रूपम्। *आव॰ ५२४।* युग्यं-गोल्लविषय प्रसिद्धं जम्पानं द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभितम्। *भग॰ १८७।*

गन्त्रिकादि। *आचा॰ ६०*। युग्यं पुरुषोत्क्षिप्तमाकाशयानं जम्पानमित्यर्थः। *जम्बू॰ १२३*। युग्यानि-गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्त-प्रमाणानि चतुरस्रवेदिकायुतानि जम्पानानि। *जम्बू॰ ३०*।

जुग्गछिड्डं– युगछिद्रम्। *आव॰ ३४५*।

जुग्गायरिय– युग्यस्य चर्या वहनं गमनमित्यर्थः। युग्याचार्यः। *स्था॰ २४०*।

जुज्जसि– युज्यसे-अर्हसि। *ज्ञाता॰ १६७*।

जुण्णंतेपुरं– ण्हसिय जोव्वणाओ अपरिभुज्जमाणीओ अञ्छति एयं जुण्णंतेपुरं। *निशी॰ २७१* आ।

जुण्णकुमारी– शरीरजरणाद् वृद्धा सैव जीर्णत्वापरिणत्वाभ्यां जीर्णकुमारी। *ज्ञाता॰ २५०*।

जुण्णथेरी– जीर्णस्थविरा। *आव॰ ३४२*।

जुण्णा– जीर्णा-चिरकालप्रव्रजिता। *व्यव॰ २४८*। जूर्णाः-जीर्णाः। *ओघ॰ ७१*। स्थविरा। *बृह॰ २५४* आ। जीर्णा-शरीरजरणाद्वृद्धेत्यर्थः। *ज्ञाता॰ २५०*।

जुण्णो– जीर्णः। *आव॰ १०१*।

जुत्त– धर्माविरुद्धम्। *निशी॰ ३२७* अ। युक्तम्। *भग॰ ३२२*। *ओघ॰ १४१*। परस्परसम्बन्धः। *भग॰ १९४*। थोवं। *निशी॰ २२०* अ। युक्तः-युक्त्युपपन्नः। *सूत्र॰ ७*। देशकालोपपन्नः। *सूर्य॰ २९४*। सेवकगुणोपेततयोचितः। परस्परं बद्धो न बृहदन्तरालः। *जीवा॰ २६०*। *ज्ञाता॰१८५*।

जुत्तगती– मिदुगती न शीघ्रं गच्छतीति। *निशी॰ ३८* अ।

जुत्तपालिया– युक्तपालिका-निरन्तरमण्डलीकाः। *भग॰१९४*। युक्तः-सेवकगुणोपेततयोचिताः, परस्परं बद्धा न तु बृहदन्त-राला पालिर्येषां ते युक्तपालिकाः। *जीवा॰ २६०*।

जुत्तफुसिएणं– उचितबिन्दुपातेन। *सम॰ ६१*।

जुत्ति– युक्तिः-मीलनम्। *जम्बू॰ १००*।

जुत्तिलेवो– युक्तिलेपः। *बृह॰ ८२* अ।

जुत्तिसेणं– एरवते अष्टमः तीर्थंकरनाम। *सम॰ १५३*।

जुत्ती– युक्तिः-मीलनम्। युक्तिसुवर्णम्। *दशवै॰ २६३*। *जीवा॰ २६५*। योजनं-समविषमविभागनीतिर्वा। *उत्त॰ ३०*। चतुर्थ-वर्गस्य षष्ठमध्ययनम्। *निर॰ ३९*।

जुत्तीया– युक्त्या आकाशसंयोगेन। *ज्ञाता॰ २७०*।

जुद्धंगं– युद्धाङ्गम्। *उत्त॰ १४३*। यानावरणप्रहरणयुद्धकुशलत्व नीतिदक्षत्वव्यवसायशरीरारोग्यरूपम्। *उत्त॰ १४३*।

जुद्ध– युद्धं-बाहुयुद्धादिकं लावकादीनां वा तत्। *आव॰ १२९*। अड्डियपच्छड्डियादिकरणेहिं जुद्धं। *निशी॰ ७१* अ। युद्धं कुर्कुटानामिव। *जम्बू॰ १३९*। युद्धं-आयुधयुद्धम्। *ज्ञाता॰ २२०*।

जुद्धणिजुद्धं– पुव्वं जुद्धेण जुद्धिउं पच्छा संधी विक्खोहिज्जति जत्थ तं जुद्धणिजुद्धं। *निशी॰ ७१* अ।

जुद्धसज्जा– युद्धसज्जाः युद्धप्रागुणाः। *ज्ञाता॰ ५९*।

जुद्धातिजुद्धं– युद्धातियुद्धं-खड्गादिप्रक्षेपपूर्वकं महायुद्धं यत्र प्रतिद्वन्द्विहतानां पुरुषाणां पातः स्यात्। *जम्बू॰ १३९*।

जुद्धिक्कओ– युद्धीयः। *आव॰ ७१९*।

जुन्नइत्तो– जीर्णवान्। *आव॰ ४१८*।

जुन्ना– जीर्णा इव जीर्णाः। *ज्ञाता॰ १७२*। जूर्णानि पुराणानि। *ओघ॰ १३८*।

जुम्मपएसिए– समसङ्ख्यप्रदेशनिष्पन्नम्। *भग॰ ८६१*।

जुम्मपएसे– समसङ्ख्यप्रदेशः। *भग॰ ८६०*।

जुम्मा– सञ्ज्ञाशब्दत्वाद्राशिविशेषाः। *भग॰ ८७३*। गणित-परिभाषया समो-राशियुग्मम्। *भग॰ ७४४*।

जुम्मो– युग्मः-समः। *सूर्य॰ १५६*।

जुयंतकरभूमी– इह युगानि-कालमानविशेषास्तानि च क्रम-वर्त्तीनि तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषास्तेऽपि युगानि तैः प्रमिताऽन्तकरभूमिः युगान्तकर-भूमिः। *ज्ञाता॰ १५४*।

जुय– यूपः-युगम्। *प्रश्न॰ ८*।

जुयगं– पृथक्। *आव॰ ७९९, ८१३*।

जुयगो– सन्ध्याप्रभाचन्द्रप्रभयोर्मिश्रत्वमिति भावः। *स्था॰ ४७६*।

जुययं– घरं कथां सा सूणंत्ति। *दशवै॰ २३*।

जुयलं– युगलं-बालवृद्धरूपम्। *बृह॰ १००* अ। युगलं। *आव॰ ३०५*। युगल-द्वयम्। *ज्ञाता॰ २२१*।

जुवरज्जं– जुवरायाणां णाभिसिंचति ताव तं। *निशी॰ ११* अ।

जुवराइ– युवराजः। *आव॰ ७०२*।

जुवराए– अनभिषिक्तयुवराजपदं राज्यम्। नाभिषिक्तो राजा। *बृह॰ ८२* अ।

जुवराय– युवराजः-राज्यचिन्ताकारी राजप्रतिशरीरम्। *प्रज्ञा॰ ३२७*। उत्थिताशनः। *जीवा॰ २८०*।

जुवराया– आस्थानिकामध्यगतः सन् कार्याणि प्रेक्षते चिन्त-यति स युवराजः। *व्यव॰ १६९* आ।

जुवलं– बालवुड्ढा। *निशी॰ १०१* आ।

जुवलगं– युग्मम्। *आव॰ ४२३*।

जुवलय– युगलम्। *आव॰ ३४१*। युगलतया तत्तरूणां संजातत्वेन युगलितम्। *भग॰ ३७*। युगलितया स्थितः। *औप॰ ७*।

जुवाणो– युवा-यौवनस्थः प्राप्तवया एव इत्येवं अणतिव्य-पदिशति लोको यमसौ निरुक्तिवशात् युवानः। *अनुयो॰ १७७*।

जुसिए– प्रीते। *स्था॰ ३४२*।

जुसिय– जूषितः-क्षपितः। *भग॰ १२७*।

जुहि– युधि। *आव॰ ४०७*।

जुहिगपुप्फा– पुष्पविशेषः। *निशी॰ १४१* आ।

जुहिट्ठिलो– युधिष्ठिरः। *आव॰ ३६५*।

जुहिट्ठिल्ल– युधिष्ठिरः। *ज्ञाता॰ २०८*।

जुहुणामि– जुहोमि-अन्येभ्यो ददामि। *स्था॰ ३८१*।

जुहोमि– आसेवाम्यनुतिष्ठामि। *स्था॰ ३८२*।

जूइगारो– द्युतकारः। *उत्त॰ २१८*।

जूईकरा– द्यूतकराः। *प्रश्न॰ ४६*।

जूए– यूपः-द्विपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम्। *आव॰ १६३*। *भग॰ २७५*।

जूतं– द्यूतम्। *आव॰ ३४२*।

जूतिकरो– द्यूतकारः। *आव॰ ४२१*।

जूय– द्यूतम्। *आव॰ ५०२*। द्यूतम्। *उत्त॰ १४७*। यूपः-यज्ञस्तम्भः। *जम्बू॰ १८३*। यूपः-युगम्। *प्रश्न॰ ५६*।

जूयए– सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद्युगपद् भवतस्तत्। *स्था॰ ४७६*।

जूयक– पातालकलशविशेषः। *स्था॰ ४८०*।

जूयखलयाणि– द्यूतखलकानि-द्यूतस्थण्डिलानि। *ज्ञाता॰८१*।

जूयगो– यूपकः। *जीवा॰ २८३*।

जूयपसंगी– द्यूतप्रसङ्गी-द्यूतासक्तः। *ज्ञाता॰ ८१*।

जूया– पासंतादी। *निशी॰ ७१* अ। त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*। यूका-अष्टलिक्षाप्रमाणा। *भग॰ २७५*।

जूयारो– द्यूतकारः। *आव॰ ४१७*।

जूरणं– वयोहानिरूपम्। *सूत्र॰ ३६८*।

जूरति– जूरयति-गर्हति। *सूत्र॰ ३२५*।

जूरह– कदर्थयथ। *सूत्र॰ ९७*।

जूरावणा– शोकातिरेकाच्छरीरजीर्णता प्रापणा। *भग॰ १८४*।

जूवए– पातालकलशविशेषः। *स्था॰ २२६*।

जूवगो– यूपकः-सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च येन युगपद्भवतः, अमोघो वा। *आव॰ ७३५*। संज्झप्पभा चंदप्पभा य जेण जुगवं भवंति तेण जुवगो। *निशी॰ ७०* अ।

जूवय– जुवयं णाम चीडं, पाणियपरिक्खित्तं। *निशी॰ १९* अ। शुक्लपक्षे प्रतिपदादिदिनत्रयं यावद्यैः सन्ध्याछेदा आव्रीयन्ते ते यूपकाः। *भग॰ १९६*।

जूस– जूषो-मुद्गतन्दुलजीरककटुभाण्डादिरसः। *स्था॰ ११८*। *प्रश्न॰ १६३*। जूषः। औघ॰ ६७। यूषः-मुद्गतण्डुलजीरककडुभाण्डादिरसः। *सूर्य॰ २९३*।

जूसणा– जोषणा-सेवा तल्लक्षणधर्म इत्यर्थः। *स्था॰ ५७*। जोषणा सेवानालक्षणो यो धर्मः। *स्था॰ २३७*। सेवा। *भग॰ १२७*। क्षपणा-सेवना। *सूत्र॰ ४२१*।

जूसिते– जुष्टः-सेवितः, क्षपितः। *स्था॰ २३७*।

जूसिया– सेविताः-तद्युक्ताः। *स्था॰ ५७*।

जूह– युथः-वानरादिसम्बन्धिः। *ज्ञाता॰ ३६*।

जूहवई– युथपतिः तत्स्वामी। *ज्ञाता॰ ६७*।

जूहवतित्तं– यूथपतित्वम्। *आव॰ ३४८*।

जूहाहिवती– यूथस्य-गवां समूहस्याधिपतिः-स्वामी यूथाधिपतिः। *उत्त॰ ३४९*। यूथस्य-साध्वादिसमूहस्याधिपतिः- आचार्यपद्वीं गतः यूथाधिपतिः। *उत्त॰ ३४९*।

जूहिआगुम्मा– यूथिकागुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

जूहिया– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

जे– निपातः। *प्रश्न॰ १२४, १२८, १४१*। पादपूर्तौ। *आव॰ ६१७*। निपातः सर्वत्र पूरणे। *उत्त॰ ४५७*।

जेट्ठ– ज्येष्ठ इति प्रथमः। *सूर्य॰ ४*। परियायजाइसुण घेत्तव्वो, सुणेत्ताण जो गहणधारणाजुत्तो समत्ते वक्खाणे जो भासती, पडिभणतीत्यर्थः सो जेट्ठो। *निशी॰ ८१* अ।

जेट्ठमहाजण– जेष्ठार्यसमुदायः। *बृह॰ २३८* आ।

जेट्ठा– षोडशो नक्षत्रः। *स्था॰ ७७*। ज्येष्ठा-स्वामिदुहित्ता।

आव॰ २५५, ३१२। शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूत-वैशालिकचेटकपञ्चमी पुत्री। *आव॰ ६७६*।

जेट्ठानक्खत्ते– ज्येष्ठानक्षत्रम्। *सूर्य॰ १३०*।

जेट्ठामूल– जेष्ठा मूलं वा नक्षत्रं पौर्णमास्यां यत्र स्यात् स जेष्ठामूलः जेष्ठ इति। *औप॰ ९५*। जेष्ठः। *ज्ञाता॰ ६७*।

जेट्ठमौली– ज्येष्ठामौली। *सूर्य॰ ११९*।

जेट्ठोग्गहो– ठवणा। वासावासासु चत्तारि मासा तम्हा उदुब-द्धियाओ वासे उग्गहो जेट्ठो भवति। *निशी॰ ३३६* आ।

जेण– यया। *उत्त॰ १३४*।

जेणेव– येनेति यस्मिन्नित्यर्थे। *सूर्य॰ ६*।

जेमण– जेमनम्। *ओघ॰ १६३*। जेमनानि वटकपूरणादीनि। *उपा॰ ५*।

जेमणिगा– भोजनम्। *निशी॰ १०७* अ।

जेमेंतो– जेमन्। *आव॰ ३०३*।

जेया– जितः। *आव॰ १५७*।

जोइ– ज्योतिः-शरावाद्याधारो ज्वलन्नग्निः। *नन्दी॰ ८४*। ज्योतिः-अग्निः। *सम॰ १८*। *भग॰ ३१३*। *दशवै॰ ११७*। वण्हिः। *भग॰ ३०७*। देवविशेषाणामालयः। *आव॰ १८४*।

जोइक्कं– ज्योतिष्कं-ज्योतिश्चक्रम्। *जीवा॰ १७५*। ज्योति-ष्कदेवविमानरूपम्। *सूर्य॰ २७४*।

जोइक्खं– ज्योतिः। *आव॰ ६२१*। ज्योतिष्कम्। *आव॰ ८४५*। ज्योतिष्कस्पर्शः। *ओघ॰ २०४*।

जोइक्खे– दीपः। छाइल्लयं दीवं मुणेज्जाहि। *व्यव॰ २५४*।

जोइजसा– ज्योतिर्यशा-आर्जवोदाहरणे वत्सपालिका। *आव॰ ७०४*।

जोइयं– दृष्टम्। *आव॰ ५६१*। अवलोकितम्। *दशवै॰ ९९*।

जोइरसा– ज्योतिरसं नाम रत्नम्। *जम्बू॰ २३*। *ज्ञाता॰३४*।

जोइस– ज्योतिषं-ज्योतिश्चकम्। *सम॰ २१*। *प्रश्न॰ ९५*। *जीवा॰ ३७७*। नक्षत्रचन्द्रयोगादिज्ञानोपायशास्त्रम्। *प्रश्न॰ १०९*। ज्योतिषदेवविमानरूपम्। *जीवा॰ ३३६*। ज्योत्सनः-शुक्लः। *जीवा॰ ३३९*। ज्योतिः-चन्द्रः। *उत्त॰ १५०*। ज्योतिष्कशब्देन तारकाः। *प्रश्न॰ १६*। नवमशतके ज्योति-ष्कविषयो द्वितीय उद्देशः। *भग॰ ४२५*। ज्योतिः-अग्निः। *जम्बू॰ ७४*। द्योतयन्तीति ज्योतीषि विमानानि। *उत्त॰ ७०१*।

जोइसामयणं– ज्योतिषामयनं-ज्योतिः शास्त्रम्। *औप॰ ९३*।

जोइसि– ज्योतीषि-विमानानि। देवाः सूर्यादयः। *प्रज्ञा॰ ७०*। ज्योतीषि ज्योतिष्का देवास्त एव ज्योतिषिकाः। *जम्बू॰ १०३*।

जोइसिअ– ज्योतिषिकः-सूर्यः। *जम्बू॰ १०३*।

जोइसिआ– ज्योतिष्काः-द्योतयन्ति-प्रकाशयन्ति जगदिति ज्योतीषि विमानानि, तेषु भवा ज्योतिष्काः। यदिवा द्योतय-न्ति-शिरोमुकोटोपगूहिभिः प्रभामण्डलकल्पैः सूर्यादिमण्डलैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो-देवाः सूर्यादयः। *प्रज्ञा॰ ६९*। ज्योतिषिका नाम द्रुमगणाः। *जम्बू॰ १०३*।

जोइसिया– ज्योतिषिकः-द्रुमविशेषः। *जीवा॰ २६७*।

जोई– योगः-धर्मशुक्लध्यानलक्षणः स येषां विद्यत इति योगिनः साधवः। *आव॰ ५८२*। योगिनः-अध्यात्मशास्त्रानु-ष्ठायिनः। *औप॰ ९१*।

जोईरसं– ज्योतीरसं-रत्नविशेषः। *जीवा॰ १८०*।

जोईसर– योगेश्वरः-युजयन्त इति योगाः-मनोवाक्काय व्यापारलक्षणास्तैरीश्वरः-प्रधानः। *आव॰ ५८२*। योगीश्वरः-युज्यते वाऽनेन केवलज्ञानादिना आत्मेति योगः-धर्मशुक्ल-ध्यानलक्षणः स येषां विद्यत इति योगिनः-साधवस्तैरीश्वरः। *आव॰ ५८२*। योगिस्मर्यः-योगिचिन्त्यः योगिध्येयो वा। *आव॰ ५८२*।

जोएइ– (देशी०) निरुपयति। *व्यव॰ २०* आ।

जोएति– पश्यति। *निशी॰ २०५* आ।

जोएमि– गवेषयामि। *निशी॰ १७८* अ।

जोएह– पश्यत। *आव॰ ९८*। पश्य। *ओघ॰ १६१*।

जोक्कारो– जोत्कारः। *आव॰ ९०*।

जोगंधरायणो– योगन्धरायणः, शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रद्योतराज्ञो मन्त्री। *आव॰ ६७४*।

जोग– योगः-सम्बन्धः। उपायोपेयभावलक्षणः। अवसरल-क्षणः। योग्यः। *स्था॰ १*। योगो-लब्धस्य परिपालनम्। *ज्ञाता॰ १०३*। सम्बन्धः-अवसरः। *जम्बू॰ ३*। योगः-सामर्थ्यम्। *दशवै॰ २३१*। वशीकरणादि। *दशवै॰ २३६*। सम्बन्धः। *प्रज्ञा॰२५८*। *स्था॰ ४८९*। व्यापारः। *निशी॰ ९१*। जोगः- आकाशगमनादिफलो द्रव्यसङ्घातः। *पिण्ड॰ २१*। योगः- अन्तःकरणादिः। *दशवै॰ १७*। बीजा-

धानोद्भेदपोषणकरणम्। *जीवा॰ २५५*। क्षीराश्रवादीलब्धि-कलापसम्बन्धः। *सूत्र॰ ७*। दिग्योगः। *जम्बू॰ ४९६*। मिथ्यात्वादिः। *आव॰ ४७८*। द्रव्योपचारः। *आव॰ ५६९*। मनोवाक्कायव्यापारलक्षणः धर्मशुक्लध्यानलक्षणो वा। *आव॰ ५८२*। औदारिकादिशरीरसंयोगसमुत्थ आत्मपरिणामविशेष-व्यापारः। *आव॰ ५८३*। ज्ञानादिभावनाव्यापारः, सत्त्वसू-त्रतपः प्रभृतिर्वा। *आव॰ ५९३*। मनःप्रभृति। *आव॰ ६०७*। प्रत्युपेक्षणादिरूपसंयमयोगः। *पिण्ड॰ १६७*। भावाध्ययन-चिन्तनादिशुभव्यापारः। *उत्त॰ ८*। मनोवाक्कायव्यापारः। *प्रज्ञा॰ ३८२*। किरिया। *निशी॰ ७९ आ*। दो घयपला मधुपलं दहियस्स य आढयं मिरियवासा खंडगुलदभागास-डसालूनि च, विद्वेसणवसीकरणाणि वा। *दशवै॰ १२६*। श्रुताध्ययननिबन्धनतपोविशेषः। *बृह॰ ११८*।

जोगच्छेयपलिभागा– योगः-मनोवाक्कायविषयं वीर्यं तस्य केवलिप्रज्ञाच्छेदेन प्रतिविशिष्टा निर्विभागा भागाः योगच्छेद-प्रतिभागाः। *अनुयो॰ २४०*।

जोगजुंजणा– योगयोजनाः-वशीकरणादि योगाः। *प्रज्ञा॰ ९५*।

जोगजुत्तया– योगयुक्तता-संयमयोगयुक्तता। पंचविंशतितमोऽ–नगारगुणः। *आव॰ ६६०*।

जोगधूवधूविओ– योगधूपधूपितः। *आव॰ ११६*।

जोगपरिवुड्ढी– योगपरिवृद्धिः-अभिगृहीतेतरतपसोर्वृद्धिः। *बृह॰ १५० अ*।

जोगपरिव्वाइया– योगपरिव्राजिका-समाधिप्रधानव्रतिनी-विशेषः। *ज्ञाता॰ १५८*।

जोगभूमी– विरायणजोगभूमीए वि जे केति दिवसा सेसा जोग-भूमयन्तो भण्णति। *निशी॰ १९७ आ*।

जोगवड्ढी– जाव दिणे दिणे आहारेओ जोगवड्ढीए इमा जोगवड्ढी। *निशी॰ ३४२ अ*।

जोगवहणं– योगवहनम्। *दशवै॰ १०८*।

जोगवाही– योगवाही। *आव॰ ८५४*।

जोगविही– योगविधिः। *ओघ॰ १७८*।

जोगसंगहा– युज्यन्त इति योगाः-मनोवाक्कायव्यापाराः, ते चाशुभप्रतिक्रमणात्प्रशस्ता एव गृह्यन्ते, तेषां शिष्याचार्यगता-नामालोचनानिरपलापादिना प्रकारेण सङ्ग्रहणानि योगस-ङ्ग्रहाः। *आव॰ ६६३*। योगानां प्रशस्तव्यापाराणां सङ्ग्रहाः योगसङ्ग्रहाः। *प्रश्न॰ १४६*। योगसंग्रहः। *दशवै॰ १०७*। योग-सङ्ग्रहः-मनोवाक्कायव्यापारसङ्ग्रहः। *आव॰ ६६३*।

जोगसंलीणया– योगसंलीनता-अपसत्थाण निरोहो जोगाण-मुदीरणं च कुसलाणं। कज्जंमि य विहिगमणं जोए संलीणया भणिआ ।।१।। *दशवै॰ २९*। मनोयोगादीनामकुशलानां निरोधः – कुशलानामुदीरणमित्येवंभूता योगसंलीनता। *दशवै॰ २९*।

जोगसच्च– योगसत्यं नाम छत्रयोगाच्छत्री दण्डयोगाद्दण्डी-त्येवमादि। *दशवै॰ २०९*।

जोगसच्चा– पर्याप्तिकसत्यभाषाया नवमो भेदः। योगः सम्बन्धः तस्मात् सत्या योगसत्या। *प्रज्ञा॰ २५६*।

जोगहाणी– योगहानिः-प्रत्युपेक्षणादिरूपसंयमयोगभ्रंशः। *पिण्ड॰ १६७*।

जोगहीणं– योगहीनं-योगरहितं-सम्यग्कृतयोगोपचारम्। *आव॰ ७३१*।

जोगा– योगाः-आवश्यकव्यापाराः। *बृह॰ १४६ आ*। दुगमादिदव्वनियरा विद्वेसणवसीकरणउच्छादण रोगावण-यणकरा व जोगा। *निशी॰ ४४ अ*। योगाः-वशीक-रणादिप्रयोजनाः। *प्रश्न॰ ११६*।

जोगाणुजोगे– वशीकरणादियोगाभिधायकानि हरमेखलादि-शास्त्राणि। *सम॰ ४९*।

जोगाणुभावजणियं– योगानुभावजनितं-मनोयोगादिगुण-प्रभवम्। *आव॰ ५६८*।

जोगियं– यौगिकं-यदेतेषामेव द्वयादिसंयोगवत्। *प्रश्न॰ ११७*।

जोगी– वेज्जो। *निशी॰ १३९ अ*।

जोग्गं– युग्यं-गोल्कदेशप्रसिद्धो द्विहस्तप्रमाणो वेदिकोपशो-भितो जम्पानविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

जोग्गा– योग्या-मण्डलीकरणाभ्यासः। *जम्बू॰ २३५*। योग्या। *पिण्ड॰ ३३*। गुणनिका। *औप॰ ६५*।

जोणए– जोनकः-म्लेच्छविशेषः। *जम्बू॰ २२०*।

जोणगं– योनकम्। *आव॰ १४७*।

जोणि– योनिः-गर्भनिर्गमनद्वारम्। *भग॰ २९८, ४९६*।

जोणिप्पमूहं– योनिप्रमुखं-योनिप्रवाहम्। *जीवा॰ ३७२*।

जोणिब्भूए– योनिभूतं-अविध्वस्तयोनि, प्ररोहसमर्थम्।

दशवै॰ १४०।

जोणिसूल– योनिशूलम्। *भग॰ १९७।*

जोणी– योनिः-प्रज्ञापनाया नवमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* युवन्ति तैजसकार्मणशरीरवन्तः सन्त औदारिकादिशरीरप्रायोग्य- पुद्गलस्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्त्यस्यामिति योनिः- उत्पत्तिस्थानम्। *प्रज्ञा॰ २२५।* उप्फत्तिट्ठाणं। *निशी॰ ५६* आ। योनिः-यौति-मिश्रीभवति कार्मणशरीरिण औदा-रिकादि शरीरैरस्यां, जन्तवो जुषन्ते सेवन्त इति वा। *उत्त॰ १८३।*

जोणीओ– यौति-मिश्रीभवत्यौदारिकादिशरीरवर्गणापुद् गलैर-सुमान् यस्यां ता योनयः- प्राणिनामुत्पतिस्थानानि। *आचा॰ २४।*

जोणीपमुहं– योनिप्रमुखं-योनिप्रवाहम्। *जीवा॰ १३४।*

जोणीपयं– योनिपदं-प्रज्ञापनायां नवमं पदम्। *भग॰ ४९६।*

जोणीपोसगो– योनिपोषकः। *आव॰ ८३०।*

जोणीसंगहे– योनिः उत्पत्तिहेतुर्जीवस्य तया सङ्ग्रह अनेके-षामेकशब्दाभिलाप्यत्वं योनिसङ्ग्रहः। *भग॰ ३०३।* योन्या सङ्ग्रहणं योनिसङ्ग्रहो योन्युपलक्षितं ग्रहणम्। *जीवा॰१३३।*

जोण्हा– ज्योत्स्ना-चन्द्रिका। *ज्ञाता॰ १६१।*

जोण्हिया– चिलातदेशोत्पन्नम्लेच्छविशेषः। *भग॰ ४६०।*

जोण्हे– ज्योत्स्नः-शुक्लपक्षः। *सूर्य॰ १४९।* शुक्लः। *सूर्य॰ १७९।*

जोति– ज्योतिः-अग्निः। सौम्यप्रकाशः। *स्था॰ ५१७।*

जोतिरसे– ज्योतिरसकाण्डं-ज्योतरसाणां विशिष्टो भूभागः। *जीवा॰ ८९।*

जोतिष्मती– तैलविधानोपयोगे वनस्पतिविशेषः। *आव॰ ६१।*

जोतिसामयणे– ज्योतिषामयनं-ज्योतिः शास्त्रम्। *भग॰११२।*

जोती– उद्दित्तं। *निशी॰ ४८* अ।

जोत्तं– योत्रम्। *सूत्र॰ ३१२।* योक्त्रं-यूपे वृषभसंयमनम्। *प्रश्न॰ १६४।* योक्त्रं-कण्ठबन्धनरज्जू। *उपा॰ ४४।*

जोत्तयं– योक्त्रकम्। *जम्बू॰ ५२७।*

जोनिक्यः– जोनकनामकदेशजः। *जम्बू॰ १९१।*

जोयइ– योजयति। *आव॰ ६५४।*

जोयण– चत्वारि गव्यूतानि योजनम्। *अनुयो॰ १५६। जीवा॰ ४०। भग॰ २७५। प्रज्ञा॰ ४८।*

जोयणणीहारि– योजननिर्हारि-योजनव्यापि। *आव॰ २३४, २३७।*

जोयणनीहारिणा सरेण– योजनातिक्रामिणा शब्देन। *उपा॰२८।*

जोयणनीहारी– योजनातिक्रमी स्वर इति। *सम॰ ६२।*

जोयसा– सतिसामत्थो, जं पमाणं भणितं तो पमाण उणहा-णमहि वा। *दशवै॰ १२१।*

जोयाविया– दर्शिताः। *बृह॰ ५७* अ।

जोवणं– शकटे गवादेर्योजनम्। *बृह॰ ५०* अ। धान्य-प्रकारः। *ओघ॰ ७५।*

जोव्वण– यौवनम्। *आव॰ ५६९।* यौवनं-तारुण्यम्। *ज्ञाता॰ २०।* परमस्तरुणिमा। *प्रज्ञा॰ ५५१।*

जोसेमाणे– जुषन्-आचरन्। *आचा॰ २६५।*

जोह– योधः-अतिशयशौर्यवान्। *भग॰ ११५।*

जोहा– योधाः-भटेभ्यो विशिष्टतराः। सहस्रयोधादयः। *औप॰ २७।*

जोहारो– जुहारः-जयोत्कारः। *आव॰ १०१।*

जोहिट्ठिल्लो– युधिष्ठिरः-पाण्डवपञ्चकानां मध्ये ज्येष्ठः। *अन्त॰ १५।*

ज्झ– ध्याननिर्देशे। *आव॰ ४४९।*

ज्झामि– ध्यामं-ध्यामलीकृतं- आपादितपर्यायान्तरमित्यर्थः। *भग॰ २१३।*

ज्झामिय– ध्यानमितं-श्यामीकृतम्। *भग॰ २१३।*

ज्झुक्खुरं– शाखा। *आव॰ ५१३।*

ज्झूसिय– सेवितं-शोषितम्। *भग॰ ११३।*

ञप्तिः– ज्ञापनं-ज्ञानम्। *जम्बू॰ ४।*

ञा– संवित्तिः। *आव॰ २८२।*

ञातं– उदाहरणम्। *नन्दी॰ २३०।* अध्ययनम्। *प्रश्न॰ २।*

ञातपुत्रीयम्– महावीरसम्बन्धि। *आचा॰ ४६।*

ञाता– महावीरशान्तिजिनपूर्वजाः। *स्था॰ ३५८।*

ञातिः– लोकैषणाबुद्धिः। *आचा॰ १८०।*

ञान– चेतना। *आव॰ २४। सम॰ १३५।*

ञानपिण्डो– ज्ञानं स्फातिं नीयते येन। *ओघ॰ १४७।*

ञानविसंवादयोगः– अकालस्वाध्यायादिना। *आव॰ ५८०।*

ञानशुद्धं– यस्मिन् काले यत्प्रत्याख्यानं मूलगुणेषूत्तरगुणेषु वा कर्त्तव्यं भवति तत् जानाति

तज्ज्ञानशुद्धम्। *स्था॰ ३५०।*

ज्ञानसंज्ञा– संज्ञाभेदः। *जीवा॰ १५।*

ज्ञानोपसम्पत्– सूत्रार्थयोः पूर्वगृहीतयोः स्थिरीकरणार्थं तथा। वित्रुटितसन्धानार्थं तथा प्रथमतो ग्रहणार्थमुपसम्पद्यते। *स्था॰ ५०१। आव॰ २७०।*

ज्ञापकम– अनुमानम्। *नन्दी॰ १६५।*

ज्येष्ठामूले– ज्येष्ठमास इत्यर्थः। *ओघ॰ १५९।*

ज्योतिः– नक्षत्रः। *स्था॰ ६६।* उद्योतः। *ओघ॰ २०१।*

- x - x - x -

झ

झंख– झषः-वारंवारं जल्प। *पिण्ड॰ ९२।*

झंझकरे– येन तेन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करो, येन वा गणस्य मनोदुःख समुत्पद्यते तद्भाषी, अष्टादशमसमाधि-स्थानम्। *सम॰ ३७।* झञ्झाकरः-येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करी, येन च गणस्य मनोदुःखमुत्पद्यते तद्भाषी। *प्रश्न॰ १२५।*

झंझकारी– झञ्झकारी-यो येन तेन गणस्य भेदो भवति सर्वो वा गणो झञ्झितो वर्त्तते तादृशं भाषते करोति वा। अष्टादश-मसमाधिस्थानम्। *आव॰ ६५५।*

झंझडिया– झंझडिया-रिणे अदिज्जंते वणिएहिं अणेगप्पका-रेहिं दुव्ययणेहिं झडिया। *निशी॰ ४३* अ। झंझडिया-लतकसादिएहिं वा झडिता। *निशी॰ ४३* अ।

झंझविओ– झञ्झितः-उद्विग्नः। *आव॰ ६५५।*

झंझा– झञ्झा-कलहः। *आव॰ ६६२।* तृष्णा। *सूत्र॰ ३२६।* क्रोधो माया वा। *सूत्र॰ २३५।* माया लोभेच्छा वा। *आचा॰ २१०।* कलहः। *बृह॰ १९* अ। विप्रकीर्णा कोपविशेषाद्व-चनपद्धतिः अणत्थ बहुप्पलावित्तं। *भग॰ ९२४।*

झंझाए– व्याकुलितमतिर्भवेत, व्याकुलतां परित्यजेत्। *आचा॰ १७०।*

झंझाकारित्वम्– गणस्य चित्तभेदकारित्वं मनोदुःखकारिवचन-भाषित्वं वा। अष्टादशमसमाधिस्थानम्। पञ्चमाधर्मद्वारेऽष्टाद-शमसमाधिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४।*

झंझावाए– झञ्झावातः-यः सवृष्टिको वातः, अशुभनिष्ठुरो वा। *जीवा॰ २९।* झञ्झावातः-सवृष्टिरशुभनिष्ठुरः। *प्रज्ञा॰ ३०।*

झंझावाया– झञ्झावाताः-अशुभनिष्ठुरा वाताः। *भग॰ १९६।*

झंपित्ता– झंपयित्वा-अनिष्टवचनावकाशं कृत्वा। *सम॰ ५३।*

झगिति– झटिति कृत्वा। *भग॰ १७५।*

झडिज्झति– क्लिश्यति। *आव॰ २६२।*

झडिति– झटिति। *आव॰ ६९०।*

झडियंगा– क्षपिताङ्गः। *मरण०।*

झड्डरविड्डरं– कण्डलविण्टलादि। *व्यव॰ २४६।*

झत्ति– झटितीकृत्वा। *भग॰ १७५।* झटिति। *उत्त॰ २२३।*

झय– ध्वजाः-सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षिता बृहत्पट्टरूपा। *जम्बू॰ १८८। ज्ञाता॰ २०।*

झयसंठिओ– ध्वजसंस्थितः। *जीवा॰ २७९।*

झया– ध्वजा-गरुडादिध्वजा। *प्रश्न॰ ४८। विपा॰ ४६।*

झरंति– स्वाध्यायं कुर्वन्ति। *बृह॰ १७६* अ।

झरए– झरति-परावर्तयति। *व्यव॰ १०८* आ।

झरओ– स्मारकः। *आव॰ ३०७।*

झरित– क्षरितः-पतितः। *ओघ॰ २२२।*

झरिय– स्थितसारः। *व्यव॰ २५७।* ज्ञातं निश्चितम्। *मरण०।*

झलज्झला– उदकशब्दविशेषः। *ओघ॰ १६७।*

झल्लरि– झल्लरी-चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयाकारा। *राज॰ २५, ४९।* झल्लरिः-वलयाकारो वाद्यविशेषः। *भग॰ २१७।* झल्लरी-चतुरङ्गुलनालिः करटीसदृशी वलयाकारा। *जम्बू॰ १९२।* अल्पोच्छया महामुखा चर्म्मवनद्धा। *भग॰ ४७६।*

झल्लरी– वल्लयाकारा। *औप॰ ७३।* चर्मावनद्धविस्तीर्ण वलया-कारा आतोद्यविशेषरूपा। *प्रज्ञा॰ ५४२।* चर्मावनद्धा विस्ती-र्णवलयाकारा। *जीवा॰१०५।* चर्मावनद्धाविस्तीर्णा वलयरूपा। *जीवा॰ २४५।* चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यवि-शेषरूपा। *नन्दी॰ ८८।* चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषः। *आव॰ ४१।*

झल्लरीसंठिय– झल्लरीसंस्थितः-आवलिकाबाह्यस्य विंशतितमं संस्थानम्। *जीवा॰ १०४।*

झवंति– विध्यापयन्ति। *बृह॰ १२* अ।

झविया– क्षपिताः-निर्मूलिताः। *उत्त॰ ४३८।*

झस– झषः-मत्स्यः। *ज्ञाता॰ १६८।* अरुणशिखेनाहतोऽन-शनी मत्स्यः। *मरण०।* झषः-मत्स्यविशेषः। *प्रश्न॰ ७।*

जीवा॰ २७०।

झसोदरो– झषो-मत्स्यस्तदुदरमिव तदाकारतयोदरं यस्या सौ झषोदरः। *उत्त॰ ४९०।*

झाइ– ध्यायति-प्रज्वलयति। *बृह॰ २०१ अ।*

झाएज्ज– प्रज्वलेत्। *बृह॰ ११३ आ।*

झाटनं– इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्ततः षण्णां मासानुपरि-यान् मासानापन्नोऽपराधी तेषां क्षपणं-अनोरोपणं, प्रस्थे चतुःसेतिकातिरिक्तधान्यस्येव। *स्था॰ ३२६।*

झाटयन्– प्रस्फोटनं कारयन्। *स्था॰ ३२९।*

झाणं– अभ्यन्तरतपभेदः। *भग॰ ९२२।* ध्यानं-एकाग्रतया करणम्। *बृह॰ १४७ आ।* ध्यानं-दृढमध्यवसानं, एकाग्रस्य चिन्तानिरोधश्च। *दशवै॰ १४।* ध्यातिर्ध्यानमिति भावसाधनः। *आव॰ ५८१।* चित्त-निरोधलक्षणं धर्मध्याना-धिकम्। *सूत्र॰ १७५।* चित्त-निरोधरूपम्। *प्रश्न॰ १०७।* चित्तनिरोधः। *प्रश्न॰ १२८।* एकाग्रतालक्षणम्। आर्त्तरौद्रध-र्म्मशुक्लाभिधानकम्। *प्रश्न॰ १४३।*

झाणंतरिआ– अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका, अथवा अन्तरमेवान्तर्यं, ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका-आरब्ध-ध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम्। *जम्बू॰ १५०।*

झाणंतरिया– ध्यानान्तरिका। *आव॰ २२७।* आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम्। *जम्बू॰ १५१।* अन्तरस्य, विच्छेदस्य करणमन्तरिका ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका –आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणमित्यर्थः। *भग॰ २२१।*

झाणणिग्गहो– ध्याननिग्रहः। *उत्त॰ ३३२।*

झाणसंताणो– ध्यानसन्तानः-ध्यानप्रवाहः। *आव॰ ५८४।*

झाणसंवरजोगे– ध्यानमेव संवरयोगः ध्यानसंवरयोगः। द्वात्रिं-शद्योगसङ्ग्रहेऽष्टाविंशतितमो योगः। *आव॰ ६६४।*

झात्कारं– झल्लरीशब्दः। *नन्दी॰ १७१।*

झापं– ध्यायं-स्वाध्यायम्। *बृह॰ १४५ आ।*

झाम– ध्यामं-दग्धच्छायम्। *जीवा॰ ११४।* दग्धम्। *आचा॰ ३२२।* ध्यामः-अनुज्ज्वलच्छायः। *प्रश्न॰ ४१।*

झामलं– ध्यामलम्। *आव॰ १४९।*

झामवन्ना– ध्यामवर्णाः-अनुज्ज्वलवर्णाः। *भग॰ ३०८।*

झामिअं– ध्मातम्। *आव॰ ९१।*

झामिता– दग्धा। *आव॰ ३४५।*

झामिया– दड्ढा। *निशी॰ ११० अ।* ध्माता-दग्धा। *उत्त॰ १५०।*

झामेह– ध्मापयत-स्ववर्णत्याजनेन वर्णान्तरमापादयत। अग्निसंस्कृतानि कुरुत। *जम्बू॰ १६२।*

झावण– ध्यापनं दाहः-भस्मसात्करणमिन्धनैः। *आचा॰ ६१।*

झावणया– प्रदीपनकम्। *ओघ॰ ११२।*

झावणा– घ्मापना-अग्निसंस्कारः। *आव॰ १२९।*

झिंखिता– झिंखित्वा-प्रभाष्य। *आव॰ ५५।*

झिंगिरा– त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२। जीवा॰ ३२।*

झिंगिरिडा– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

झिंझिए– बुभुक्षार्त्तः। *बृह॰ १५६ आ।*

झिज्जिए– क्षितः क्षीणशरीरः। *जीवा॰ १२२।*

झिज्झिरी– वल्लीपलाशः। *आचा॰ ३४८।*

झिमियं– जाड्यता सर्वशरीरावयवानामवशित्वमिति। *आचा॰ २३५।*

झियाइ– ध्यायति-चिन्तयति। *भग॰ १७५।*

झियायंति– ध्यायन्ति इन्धनैर्दीप्यन्त इति। *स्था॰ ४२०।*

झियायमाण– ध्यायमानः, ध्मायन् वा दह्यमान इत्यर्थः। *भग॰ १२२।*

झिल्लिया– त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२। जीवा॰ ३२।*

झिल्लिरी– मत्स्यबन्धनविशेषः। *विपा॰ ८१।*

झिल्ली– झिल्लिका-वनस्पतिविशेषरूपा। *प्रज्ञा॰ ३७।*

झुंझिय– बुभुक्षितः। *प्रश्न॰ ५२।*

झुसिर– झुषेःशोषस्य दानात् शुषिरम्। *भग॰ ७७६।* शुषिरम्। *आव॰ ६२५।* शुषिरं-शुषिरशतकलितम्। *जीवा॰ ११४।* वादित्रविशेषः। *जम्बू॰ ४१२।* शुषिरं-अन्तःसाररहितम्। *दशवै॰ १७५।* पलालादिच्छन्नम्। *ओघ॰ १२३।* शुषिरं-वंशादिकम्। *भग॰ २१७।* शुषिरः-असारकायः। *प्रश्न॰ ४१।* शुषिरं-वंशादिकम्। *जम्बू॰ १०२।* शुषिरः। *गच्छा॰ ।*

झूसणं– जोषणं-सेवनम्। *आव॰ ८४०।*

झूसणा– जोषणा-सेवणा। *उपा॰ १२।*

झूसिए– जुष्ठः-सेवितः। झूषितः-क्षपितः। *जम्बू॰ २८०।*

झूसिया– झूषिताः-क्षीणा वा। जुष्टाः सेवितः। *औप॰ ९६*।

झोडा– झोडः-पत्रादिशाटनं, तद्योगात्तेऽपि झोडाः। *ज्ञाता॰ १७३*।

झषिः– इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्ततः षण्णां मासाना-मुपरि यान् मासानापन्नोऽपराधी तेषां क्षपणं अनारोपणं, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव जाटनमित्यर्थः। *स्था॰ ३२५*।

झोसित्ता– क्षपयित्वा। *ज्ञाता॰ ७७*। झोषिताः-क्षपिताः क्षपितदेहाः। *स्था॰ ५७*।

झोसइ– झोषयति-शोषयति, क्षयं नयति। *आचा॰ १६२*।

झोसणं– जोषणाः-सेवनाः कारणानि। *सम॰ १२०*।

झोसमाणे– झोषयन्-क्षपयन्। *आचा॰ २०४*।

झोसिए– झोषितः-क्षपितः। *आचा॰ २०९*।

झोसिओ– सेवितः। *आचा॰ २०९*। क्षपितः। *आचा॰ २२४*।

झोसेथ– गवेषयत(देशी०)। *बृह॰ १६२*आ।

- x - x - x -

। इति द्वितीयो विभागः समाप्तः ।

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोषः २

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]